CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ

(सातवीं रासि से नौवीं रासि तक)

जिल्द 4

भाई संतोख सिंह

भाषा विभाग पंजाब

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Shri Gur Partap Suraj Granth Vol. IV (Hindi)

by

Bhai Santokh Singh

*Transliterated & annotated by* :

Shri Piara Singh Padam

प्रथम संस्करण

मूल्य : 11-05

प्रकाशक :

भाषा विभाग, पंजाब
पटियाला

मुद्रक :

स्वैन प्रिंटिंग प्रेस,

अड्डा टांडा, जालन्धर शहर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ

जिल्द 4

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# प्राक्कथन

पंजाब को भारत की खड्ग भुजा कहा जाता है। यह ठीक भी है। किन्तु पंजाब को मात्र शक्ति एवं सम्पन्न प्रदेश कहना या समझना भ्रामक है। भारतीय साहित्य व संस्कृति के कोष को भी पंजाब ने जगमगाते रत्नों से भरा-पूरा है। इस भ्रान्ति का कारण काफ़ी हद तक तालमेल की कमी तथा हमारी परतन्त्रता थी। इन्हीं कारणों से भारतीय अपने साहित्य और संस्कृति से कट गए और पाश्चात्य साहित्य के अध्ययन और अनुसंधान को ही अपने जीवन की इति श्री मान बैठे। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् हमारी भाषाओं और साहित्य ने भी करवट ली और इस दशा में नवजागरण हुआ। इसका प्रभाव यह हुआ कि हम अपने प्रति जागरूक होकर उपने साहित्य और संस्कृति की ओर मुड़े। फलत: जहाँ देशीय भाषाओं में नव साहित्य का सृजन प्रारम्भ हुआ वहाँ हमारी दृष्टि उस भूले-बिसरे साहित्य की ओर भी गई जो किन्हीं कारणों से जनता के सम्मुख नहीं आ पाया था

भाषा विभाग, पंजाब ने ऐसे साहित्य को प्रकाश में लाने का बीड़ा उठाया है और अब तक कई दुर्लभ ग्रंथ यथा गुरु नानक प्रकाश, कथा हीर रांझणि की, पंचनद, ज्ञान त्रिवेणी इत्यादि हिन्दी जगत् को भेंट कर चुका है।

प्रस्तुत ग्रंथ 'श्री गुर प्रताप सूरज' एक महान् रचना है। कवि चूड़ामणि भाई संतोख सिंह जी ने इस अपूर्व काव्य ग्रंथ का सृजन बीस वर्ष की निरन्तर साहित्य साधना के पश्चात् किया। कवि का जन्म गाँव नूरदी, तहसील तरनतारन, जिला अमृतसर में भाई देवा सिंह जी के घर 1785 ई० में हुआ। भाई देवा सिंह जी, जिन्हें अपने काम-धंधे के लिए प्राय: अमृतसर आना पड़ता था, ने अपने सुपुत्र संतोख सिंह की शिक्षा-दीक्षा का भार ज्ञानी संत सिंह जी के हाथों सौंप दिया। इनके यहाँ रह कर भाई संतोख सिंह ने गुरुमत विद्या, संस्कृत और ब्रजभाषा का गहन अध्ययन किया। लगभग दस वर्ष तक 'बूड़िए' गाँव में रहने के पश्चात् वे कुछ समय के लिए पटियाला दरबार में आ गए। मगर महाराज राम सिंह के यहाँ वे बहुत दिन टिक न सके। इसके पश्चात् वे श्री उदे सिंह, कैथल नरेश, के राज्य आश्रय में आ गए जहाँ उनको सादर रखा गया :—

उदे सिंह बड भूप बहादुर।
कवि बुलाए राखिउ ढिग सादर।

(गरब गंजनी)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और फिर 1829 से जीवन पर्यन्त अर्थात् अक्तूबर, 1845 तक वहीं दरबारी कवि रहे और इस काल में उन्होंने प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की। इससे पूर्व वे नामकोश, गुरु नानक प्रकाश, गरब गंजनी, बाल्मीकि रामायण का काव्यानुवाद, आत्म पुराण आदि रचनाएँ लिख चुके थे।

वस्तुत: गुरु नानक प्रकाश भी "श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" का ही एक अंग है। गुरु नानक प्रकाश, जिसे पिछले वर्ष हम पाठकों के सम्मुख भेंट कर चुके हैं, में श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-वृत्त काव्य में लिखा गया है। भाई संतोख सिंह जी इसी प्रकार अन्य गुरुओं के जीवन काव्य लिखना चाहते थे। इसी आशा को फलीभूत करने के लिए उन्होंने गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ की रचना की। उन्होंने स्वयं लिखा है :—

श्री गुरु को इतिहास जगत महि, रलमिल रह्यो एक थल सम नाहि
जिम सकता महिं कंचन मिले, बीन डावला ले तिह भले,
तथा जगत ते मैं चुनि लेऊँ कथा समसत सु लिख कर देऊँ।
बानी सफल बरन के कारण, करिहौ सत गुरु सु जस उचारन।
जिम दधि बिखै घ्रित मिल रहै, करहि कथन नीके शुभ लहै,
तिम जग महि बाद बिवादु, गुरु जस संची दे अहिलादु।

(गु० प्र० सू० अंशु 5)

भाई संतोख सिंह जी ने गुरु-काव्य लिखने का बीड़ा उठाया। मगर यह कार्य कोई सरल नहीं था। गुरुओं के जीवन पर प्रकाश डालने के लिए उन्हें कोई भी प्रमाणिक सामग्री उपलब्ध न हुई। फिर भी उन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब, दशम ग्रंथ, वारां भाई गुरदास, बाले वाली जन्म साखी, पंज सौ साखी, भक्त माल, ज्ञान रत्नावली, महिमा प्रकाश आदि ग्रंथों का गहन अध्ययन तथा अनुशीलन किया। ऐतिहासिक तथ्यों को अपनी कल्पना एवं प्रतिभा का रंग चढ़ा कर इन्होंने अपने अद्‌भुत काव्य-भवन का निर्माण कर डाला।

इस वृहद् काव्य रचना का नाम उन्होंने गुरु प्रताप सूरज रखा था, इसलिए संपूर्ण कथानक को सूर्य की गति के आधार पर 12 राशियों, 6 ऋतुओं और 2 अयनों अर्थात् कुल बीस बड़े भागों में विभक्त किया है। पुन: सूर्य की किरणों के आधार पर अध्यायों को अंशुओं की संज्ञा प्रदान की गई है। इसलिए रचना के नामकरण तथा इसके रचना विधान में एक सुन्दर रूपक की कल्पना की गई है। सूर्य की भाँति गुरुओं का जीवन भी अंधकार को दूर करता है।

बारह राशियों में गुरु नानकोत्तर गुरुओं की जीवन गाथा है, छः ऋतुओं और अयनों में संत सिपाही श्री दशमेश जी का जीवन वृत दिया गया है। इस संपूर्ण रचना के कुल 1150 अध्याय हैं जिनका विवरण निम्न अनुसार है :—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूरज गुर प्रताप ते, वरनी द्वादश रासि,
अपट साच पातशाह के, बरनों वर गुण रास । (15)
दछणाइने उतराइणे, अयन बनैंगे दोइ,
बदनत रितु जो खषट शुभ, तिम पर बरनन होइ (16)
प्रथम कही कविता रुचिर, श्री नानक प्रकाश,
पूरबारध उतरारध इम, बर बरने गुण लास । (17)
अब कलगीधर की कथा, खषट रुतन पर होइ,
गुरु प्रताप सूरज भयो, या ते सभ गति जोइ । (18)
(गु० प्र० रु० 1, अंशु 1)

केवल परिमाण और आकार की दृष्टि से देखें तो पंजाब के इस हिन्दी कवि की इस अद्वितीय रचना की तुलना में विश्व भर के किसी अन्य कवि की रचना नहीं ठहर पाती । पंजाब के प्रत्येक गुरुद्वारे में सायंकाल इस ग्रंथ की विधिवत् एवं नियमित कथा की जाती है ।

भाई साहिब व्रजभाषा के विद्वान् कवि होने के साथ-साथ, संस्कृत, पंजाबी तथा अन्य कई भाषाओं के महान् पण्डित थे । बाल्मीकि रामायण तथा आत्म पुराण जैसे संस्कृत ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद इसके ज्वलन्त उदाहरण कहे जा सकते हैं । यह तो गुरु प्रताप सूरज के प्रारम्भ में दिए गए, 'मंगलाचरण' से भी भली-भांति स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें भिन्न-भिन्न भारतीय भाषाओं पर कितना अधिकार प्राप्त था ।

कवि की काव्य प्रतिभा को परखने के लिए हमारे पास उनके दो ग्रंथ हैं, गुरु नानक प्रकाश और गुरु प्रताप सूरज । इनमें ऐसा काव्य सौष्ठव है कि हर पंक्ति पर कवि की काव्य प्रतिभा को देखकर चकाचौंध हो जाना पड़ता है । भाव और भाषा दोनों को दृष्टि से ही ये अनुपम काव्यत्व के स्वामी ठहरते हैं ।

सोहलवीं-सत्तारहवीं शती में हिन्दी साहित्य में भक्ति-भाव की काव्य रचना का बाहुल्य था । इस धारा के शिरोमणि कवि गोस्वामी तुलसीदास (1532—1625) और सूरदास (1473-1563) थे । गोस्वामी तुलसीदास जी और सूरदास के काव्य मृदुलता और मधुरता के लिए अद्वितीय हैं और लोक कल्याण की भावना से भी इनका काव्य ओत-प्रोत हैं । कुछ ऐसी ही बात चूड़ामणि भाई संतोख सिंह जी के समूचे काव्य-जगत के बारे भी कही जा सकती है । चाहे इनकी रचना भक्ति भावना प्रधान है फिर भी यह भक्ति काल के अन्तर्गत नहीं आती ।

इस ग्रंथ के हिन्दी में प्रकाशित होने से आलोचक इसका तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे और अन्य हिन्दी कवियों के परिप्रेक्ष्य में पंजाब के इस मेधावी हिन्दी-सेवी का यथोचित स्थान निर्धारित कर पायेंगे । कवि ने इसमें पौराणिक शैली को अपनाया है । इस रचना को इसी दृष्टि से देखना उपयुक्त होगा । भाई संतोख सिंह का काव्य गुणों का गुलदस्ता है जिसकी महक के बारे में किसी समकालीन कवि ने लिखा है :—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कविता अपार है कि गुन को पहार है,
कि माधुरी आगार है, कि भाव कवि कोश है।
भूखन है कवि के कि दूखन हा कवि के,
बिदूखन के बीच भी प्रसिद्ध हरि दोष है।
बानी ही उतंग है सु अंक हीऊ रंग हैं,
अनग अंग भंग के बिसूत्रन निसेस है।
नानक अरथ जोऊ कीनो कली कल सोऊ,
नाम तो संतोख सिंह धीयवर कोश है।

प्रस्तुत ग्रंथ को आठ जिल्दों में प्रकाशित किया जा रहा है। चौथी जिल्द का लिप्यन्तर श्री प्यारा सिंह पद्म ने किया है। इसमें भाई गुरदास का प्रसंग, श्री गुरु तेग बहादुर जी की सगाई, श्री गुरु हरि राइ जी को गद्दह प्राप्ती होना तथा श्री गुरु हरिगोविन्द जी का परलोक गमन के प्रसंग हैं। संज्ञा कोश तथा टीका भी पाठकों का सुविधा के लिए इसके साथ ही दे दिए गए हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी जगत् पंजाब के इस महा कवि की महान् रचना का भव्य स्वागत करेगा।

रजनीश कुमार
निदेशक,
भाषा विभाग, पंजाब

पटियाला,
अक्तूबर, 1974

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# विषय सूची

राशि सातवीं



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राशि नौवीं



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# सप्तम रासि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १

# सूरज मल्ल सगाई प्रसंग

### दोहरा

माया सो सबल[1] जु भयो जिति किति ब्यादि समान ।
सार असार संसार करि सच्चिदानंद महान ।। १ ।।
सदा सारदा सार दा[2] सारद चन्द मनिंद ।
पारद बरनी[3] पार दा बिघन बिनाशन ब्रिंद ।। २ ।।

### इष्ट गुरु मंगल

### चित्र पदाछंद

पार परे जग सागर ते उर ते परदा भ्रम को सभि पारि ।
पारद के सम जो मन चंचल तां महिं मूल बिकार उपारि ।
पारन प्रेम करो गुरू नानक जे शरणागत के प्रतिपारि ।
पारस ज्यों छुइ जाति जिनै सम लोह जु कंचन होइ अपारि ।। ३ ।।

### इष्ट गुरु मंगल

### दोहरा

बंद न परहि सबंध हुइ श्री अंगद पद बंदि ।
बंदि हाथ शरणी परे बिघन बिनाशन ब्रिंद ।। ४ ।।

### इष्ट गुरु मंगल

परम ब्रिद्ध श्री अमर जी परम उदार सदीव ।
परम बखश करि सेवकनि, परम उधारक थीव ।। ५ ।।

### इष्ट गुरु मंगल

रामदास श्री सतिगुरू दासन त्रास बिनाशि ।
निज पर जन बिस्वास लखि बखशति हैं सुख रास ।। ६ ।।

---

1. माया संयुक्त हो कर। 2. तत्त्व प्रदान करने वाली 3. उज्ज्वल।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

### इष्ट गुरु मंगल

भारी उपकारी सदा, ध्रित धारी[1], गुनखान ।
श्री अरजन पद पदम को नमो जोरि जुगपान ॥ ७ ॥

### इष्ट गुरु मंगल

श्री गुरु हरि गोबिन्द जी चन्द मनिंद बलिंद ।
दासन कुमद अनन्द दा शत्रु ब्रिन्द अरबिंद ॥ ८ ॥

### इष्ट गुरु मंगल

श्री हरि राय सो हरति हैं दासन के दुख जाल ।
हर इच्छा को देति हैं, हरि ज्यों होइ दियाल ॥ ९ ॥

### इष्ट गुरु मंगल

श्री सतिगुरू हरि क्रिशन जी दिहु गुरमति उप जाइ ।
उर बिकार को परिहरिहु सत्तिनाम लिव लाइ ॥ १० ॥

### इष्ट गुरु मंगल

तेग बहादुर श्री गुरु परम बहादुर धीर ।
सादर परउपकार हित त्रिण सम दीउ शरीर ॥ ११ ॥

### इष्ट गुरु मंगल

### कबित्त

आदि तिमरलंग[2] ते अनेक पातिशाह भये केती कुलि वीति गई अमल चलाइके ।
देश ते बिदेश चारों चक्क सभि निवें आये कहूं न मवाखी भट दिये बिचलाइके ।
अनगन सैन, कोष[3] दीरघ, दुरग भारी, राज की समाज कौन सकै सु मिनाइके ।
श्री गुविन्द सिंह के सरूप पंथ खालिसा को कौन जाने दैंगे पातशाहत खपाइके ॥११॥१२॥

### दोहरा

सतिगुर दस पतिशाह के पद पंकज सुखकंद ।
रचौं रासि अबि सपतमी कर बंदन को बंद ॥ १३ ॥
गुरसिख सन्तन नमो करि सभि कै चरन मनाइ ।
उचरौं सतिगुर सुजस को मनबांछति फल पाइ ॥ १४ ॥

### चौपई

श्री हरिगोविन्द बैठि क्रिपाल । सिख संगति को करहिं निहाल ।
अनिक कामना पाइ सिधारैं । को मुख सुन्दर निकटि निहारैं ॥ १५ ॥

---

1. धैर्यवान् । 2. तैमूर जिसने 1398 ई० भारत पर आक्रमण किया । 3. खजाना ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जनम पदारथ करनि क्रितार्थ। जिस ते होय सदा शुभ स्वारथ[1]।
सांईदास रह्यो तबि पास। करहिं ताहिं सों बाक् बिलास ॥ १६ ॥
दीपमाला को मेला आयो। जित कित ते सिख गन उमडायो।
मुक्ख्य मसंद[2] संगतां ल्यावैं। दरब संचि गन आप सुहावें ॥ १७ ॥
अटलराय की सुधि को पाए। यांते चलि आये समुदाए।
दरब संचि गन अपर बिसाला। पहुंचे सकल आइ तिस काला ॥ १८ ॥
पूरब सतिगुर के ढिग जावैं। अटलराय के हेतु बुलावैं।
पुनहिं उपाइन को अरपावैं। गुर ते खुशी बंदि कर पावैं ॥ १९ ॥
श्री गुर तखत अकाल सुहाए। धरहिं उपाइन जे सिख ल्याये।
अधिक भीर चहुं दिशि महिं होवै। खरे हजारहुं दरशन जोवैं ॥ २० ॥
महां मसन्द ब्रिन्द थिति पास। खरो मेवरो[3] करि अरदास।
सुभटनि को बड लग्यो दिवान। बीच बिराजहिं श्री भगवान ॥ २१ ॥
चमर चारु सिर पर शुभ ढुरैं। हंसन की समसरता धरैं।
शसत्र आनि जो अरपति आगै। तिसहिं गहैं कबि, हेरनि लागैं ॥ २२ ॥
बिधीचंद जेठादिक और। परवारति[4] सोढी सिरमौर।
कबि गुरदास संग कहिं बैन। कबहुं करहिं संगति दिशि नैन ॥ २३ ॥
श्री गुरदित्ता निकटि सुहाए। एक दिशि सूरज मल दुति पाए।
अणीराइ बैठे गुर तीर। आवहिं जाहिं संगतां भीर ॥ २४ ॥
शबद रबाबी गावति आगे। सुनति सिक्ख समुझति बडभागे।
दास अंक श्री तेग बहादर। बैठे सतिगुर के ढिग सादर ॥ २५ ॥
करहिं कामना पूरन ब्रिंद। सभ्रि बिधि सभिनि अनंद बिलंद।
प्रेमचन्द इक खत्री आयो। सहत पुत्र सतिगुर दरसायो ॥ २६ ॥
कंन्या हुती ताहिं घर मांही। बर खोजति कित पायो नांही।
तिस पिखि कै अभिलाखा धरी। चहति सगाई गुर सुत[5] करी ॥ २७ ॥
हाथ जोरि हुइ खरो अगारी। गुर सनमुख थित गिरा उचारी।
'महांराज ! मेरी अरदास। पूरन करहु दीन की आस ॥ २८ ॥
श्री करतारपुरे को वासी। जाति सिलि[6] जग बिखै प्रकाशी।
नव बरखन की कंन्या मेरी। चहौं करनि सूरज-मल चेरी ॥ २९ ॥
इही कामना पूरन करीअहि। दासनि दासनि दास बिचरीअहि'।
सतिगुर को रुख बिधीए पायो। दे धीरज तिह निकटि बिठायो ॥ ३० ॥

1. प्रयोजन। 2. भेंट। 3. सेवक। 4. चहुं ओर बैठ रहे हैं। 5. गुरु पुत्र के साथ। 6. खत्रियों का एक गोत्र।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'जिम चाहहि करिवो तिम ठानि। गुर घरि अहै निमाननि मान।
दरब आदि इह पिखहिं न कोई। चहहिं सुकरहिं प्रेम जुति होई' ॥ ३१ ॥
प्रेमचन्द सुनि धीरज पायो। बोलि गणिक को समो सुधायो।
जोतिक रीति सुधारनि करी। चौंकी पर विठाइ शुभ घरी ॥ ३२ ॥
लघु दीरघि दुंदभि बजवाए। संग नकीरनि राग मिलाए।
गुर के महिल नारिगन आई। गुर त्रिय त्रै[1] को देति बधाई ॥ ३३ ॥
भयो सदन ढोलक बजवाइ। पिक बैनी[2] मिलि गीतनि गाइ।
मंगल महां करयौ तिह समैं। बैठे सतिगुर जग पग नमैं ॥ ३४ ॥
प्रेमचंद लखि भाग भलेरे। भयो बिलंद अनंद तिस बेरे।
आइ गुरू को वन्दन कीनि। निकटि विठायो आदर दीन ॥ ३५ ॥
पांधे[3] तबि सभि विधि करिवाई। ग्रिह नत्र गनपति विशनु पुजाई।
आज्ञा पाइ उठयौ हरखायो। प्रेमचंद गुर प्रथम मनायो ॥ ३६ ॥
सूरजमल मुख खारक दीनो। कुकंम तिलक भाल मैं कीनो।
मंगल भयो अनेक प्रकारे। मोदक[4] मोदति ले तिस बारे ॥ ३७ ॥

सभनि विखै बहुते बरताए। पिखि उतसव को उर हरखाए।
जाचक गन को धन बहु दीनि। ले ले सभिनि सुजसु को कीनि ॥ ३८ ॥
प्रेमचंद सगरी विधि करिकै। गमन्यो सदन अनंद को धरिकै।
जाइ तहां उत्सव को कीना। कहि कुटुंब को हरख सु दीना ॥ ३९ ॥
इत सतगुरू मेला करि आछे। सहत मसंद[5] बिसरजति पाछे।
जत्था जोग दै दै सिरपाउ। तिसी देश भेजे करुनाउ ॥ ४० ॥
सकल अनंद पाइ जसु कहैं। गमने सभि देशनि जिम कहैं।
संगति निज निज सदन सिधारी। जहि कहि कीरति गुरु उचारी ॥ ४१ ॥

रामो[6] सहत जु साई दास। हाथ जोरि कीनसि अरदास।
'दिहु रज़ाइ करुना को ठानि। रहे दिवस बहु, करहिं पयान ॥ ४२ ॥
आप अगवन होइ तिस देश। तहिं दरशन को चहिति अशेष'।
तबि सतगुर निज सारि जानि। मुख मुसकावति कीनि बखानि ॥ ४३ ॥
'प्रथम रहे तुम घर चिरकाल। बहुर आइ हम बसहि बिसाल।
रहहु प्रतीखति[7], निशचा ऐहैं। तुमरो प्रेम रहनि नहिं दै है' ॥ ४४ ॥

---

1. गुरु की तीनों सुपतनियों को। 2. कोयल जैसी मधुर भाषिणी। 3. पुरोहत। 4. लड्डू। 5. प्रमुख नेता। 6. गुरु साहिब की साली तथा उसका पति। 7. प्रतीक्षा करते रहना।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्रै दमोदरी आदिक जेई। मिलि करि सभिहि नर्महिं करि सेई।
गये डरोली को सुख पाइ। नित सतगुर सिमरहिं चित पाइ॥ ४५॥

श्री गुरदित्ते पित रुख जानि[1]। आइसु पाइ तिआरी ठानि।
नत्तीं धीरमल ले गोद। सभि सासनि संग मिली प्रमोद॥ ४६॥

नमस्कार करि स्यंदन[2] चरी। श्री करतार पुरे मग परी।
श्री गुरदित्ता पहुंचयो जाइ। बसे तहां ही सुख उपजाइ॥ ४७॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तम रासे '**सूरज मल्ल सगाई प्रसंग**' नाम प्रथमो अंशु॥ १॥

---

1. पिता की इच्छा समझकर। 2. रथ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २

# भाई गुरदास प्रसंग

**दोहरा**

कुछकु कथा गुरदास की सुनहु सकल गुरदास।
गुर माया दुश्तर महां करि लीजहि निरजास ॥ १ ॥

**चौपई**

एक दिवस गुर सभा मझारे। सिदकि सिख बैठ मुद धारे।
भगतू बहिलो आदिक थिरे। जेठा विधीआ शुभ मत्ति करे ॥ २ ॥
बैठ्यो ढिग प्रबीन गुरदास। सिक्खी के हुइ बाक बिलास।
कहति भये, 'गुर करुणा धरैं। माया ते सु बचावनि करैं ॥ ३ ॥
मन ठहिरावैं चरण मझारा। सहै कसौटी सो सिक्ख भारा।
गुरु के चरित न जाहिं बिचारे। पिखि करि भ्रमहिं सिक्ख बिचारे' ॥ ४ ॥
सभि महिं तबि बोल्यो गुरदास। 'जे करि होय सिक्ख गुर पास।
सिक्खी को निरबाहनि करै। ज्यों क्यों करि उर भरम न धरै ॥ ५ ॥
जेकरि सांग अरम्भै परखनि[1]। धारैं रूप बिप्रजै[2] कुछ तन।
किधौं गिरा कहिं और प्रकारी। कै सुभाव बिप्रीतै धारी ॥ ६ ॥
किधों अजोग करावहिं कैसे। आगे कही करी नहिं जैसे।
सिक्ख सिदक अपनो द्रिढ़ राखै। सहै कसौटी मन को गाखै ॥ ७ ॥
अपनी कविता बिखै बनाई। सो तुक पठि करि सभिनि सुनाई।
'जे गुर सांग कछू बरतारैं। द्रिढ़ सिख रहै सिदक नहिं हारैं ॥ ८ ॥
सुनि सिक्खनि पुन भनी सो बानी। 'है ऐसे तुम जथा बखानी।
तऊ बिसाल प्रबल गुर माया। कौन कौन नहिं इनहिं भ्रमाया ॥ ९ ॥
सिदक राखिबौ मुशकल अहे। जिनहुं करे तप कानन[3] रहे।
मुनि जन सुर गंध्रब को गिनीयहि। जिनहुं गिने को अन्त न भनीअहि ॥ १० ॥

---

1. परीक्षा के लिए स्वांग। 2. विपर्य्य-उलट। 3. वन।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रभु माया ने धने भ्रमाए। तरी न किमबिन गुरू सहाए।
सुनिकै पुनि गुरदास बखानी। करि हुती जो अपनी बानी ॥ ११ ॥

### दोहरा

'अंबर पाटे थिग्गली लाइ करहि कूड़िआर[1]।'
इत्यादक नर अलप जे देति सिदक को टारि ॥ १२ ॥

### चौपई

नर सिक्खी महिं गाढो जोइ। गुरु सिदक मन राखि परोइ।
ज्यो क्यों करि मति को थिर गहै। हुइ गाढो हलिबो नहिं लहै' ॥ १३ ॥

सुनि सिक्खनि की चरचा चारू। श्री हरिगोबिंद रिदै बिचारू।
अपर सरब गुर श्रा चहैं। निज बिसास गुरदासहि कहैं ॥ १४ ॥

यांते बीज मात्र अहंकार। है इस बिखै सु बुरो बिकार।
रहिबो सदा समीप हमारे। चहिअहि उर ते मूल उखारे ॥ १५ ॥

इम हंकार बिनास्यो जे न। तउ हम को चहीयति इति देनि।
देहिं कसौटी, सहै कि नांही। करहिं क्रिति कुछ परखन मांही ॥ १६ ॥

गरवति चित, 'मैं सिक्ख बिसाल।' जानयो परै, परखिबे काल।
इम सतिगुर उर में ठहराई। कितिक समै मैं सभिनि सुनाई ॥ १७ ॥

'कहूं तुरंग जि होहिं बिकाऊ। चाहति लीए आइ मन भाऊ।
हित अपने भी हम असु[2] लैवे। अरु जोधान कितिक हैं दैवे' ॥ १८ ॥

सुनि सतिगुर ते सिख समुदाय। 'धंनि धेय[3] देश बहु पाइ'।
इत्यादिक गन थान बताए। 'आनहुं खोजि खोजि जो जाए ॥ १९ ॥

निज निज मति अनुसार बताई। नहीं बात कुछ गुर मनभाई।
एक सुभट पश्चिम दिशि बासी। कर को जोरति गिरा प्रकाशी ॥ २० ॥
'जस तुरंग चाहहु गुर पूरे। तस काबल महि प्रापति रूरे[4]।
रावर केर अरुढनि जोग। आनहिं, पठहु सुमति जुति लोग ॥ २१ ॥
जो आछे परखहिं गुन अंग। होवहिं चपल सवेग तुरंग।
बडी बडी कीमत के अहैं। दे धन करि पसंद को लहैं' ॥ २२ ॥
श्री हरिगोबिंद सुनि करि मानी। निशचै तहां तुरंग गुनखानी।
जो किकान[5] बउ कीमत केरा। सो पशचम दिशि को ही हेरा ॥ २३ ।

---

1. फटे आकाश को थिगड़ी झूठे ही लगाया करते हैं। 2. घोड़े। 3. पश्चिमी पंजाब का एक इलाका। 4. सुंदर। 5. घोड़ा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तबि गुरदास दिशा गुर देखा। कह्यो कि 'तुम ते कौन बिशेखा।
ब्रिद्ध बैस गुर पास बिताई। सकल भांति की शुभमति पाई॥ २४॥
उभै तुरंगम हेतु हमारे। ल्याओ सवेग चपल बल भारे।
सुभटन हेतु अपर पिखि आनहु। लेहु संग धन गत प्रसथानहु॥ २५॥
प्रथम पुचावहु पास हमारे। परखि लेहिंगे जिम गुन भारे।
तुम तहिं टिकहु सिक्ख जब जाइ। तबि दीजहि धन, मोल बताइ॥ २६॥
इम आयसु को सुनि करि मानी। 'मैं जौ हौं, असु लयाउं' बखानी।
तबि बेसर[1] लादी धन साथ। दे पंचास हज़ार सु नाथ॥ २७॥
नर केतिक तिह संग पठाए। हित तकराई धन समुदाए।
करि गुर बन्दन पंथ पधारा। निस बिसरामहिं श्रम बिखारा॥ २८॥
दिवस पयानहिं पशचम ओरे। बूझति जाति 'होहिं कित घोरे?'।
ऐरावती[2] उलंघति चाला। चन्द्रभगा[3] तरि गयो बिसाला॥ २९॥
पुनरि बिदसता[4] ते हुइ पारा। चलति सिंधु नद जाए तिहारा।
तजि पशौर को आगे गयो। काबल जाइ बिलोकनि भयो॥ ३०॥
डेरा करि घोरे पुन बूझे। नरनि बताए जिहि बिधि सूझे।
अगले दिवस जाइ करि हेरे। फेरे चपल सवेग बडेरे॥ ३१॥
दरब मोल पंचास हज़ार। पुन करि लीनि एव तकरार[5]।
'ले हम लीए दरब तुव देहैं। एक वेर गुर निकटि पठैहैं॥ ३२॥
सुनि गुर ते जबि नर को आवै। तत छिन दरब[6] सरब ही पावै।
सुनति सुदागर बाक् बखाने। 'बलि बिएँव तुरंग महाने॥ ३३॥
गुर ढिग पठहु न संसा कोई। पीछे लेहिं मोल जो होई'।
करि तकरार क़िकात पठाए। मग को उलंघ सुधासर[7] आए॥ ३४॥
सतिगुर पिखि करि उर हरखाये। चढ़ि करि फेर धवाइ फंधाए।
खास तबेले सो बंधवाए। पठ्यो सिक्ख तिस दिश सहिसाए॥ ३५॥
जाइ बात गुरदास सुनाई। 'घोरे सतिगुर लीए बंधाई।
बहुत पसंद अए मन भाए। —देहु दरब को—भाखि पठाए'॥ ३६॥
सुनि गुरदास हरख को पायो। ततछिन पठि नर निकटि बुलायो।
करि सनमान बिठावनि कीना। 'लेहु मोल गुर ने कहि दीना'॥ ३७॥
सौदागर तम्बू दर थिरिओ। बिच गुरदास जाइ तबि वरिओ।
तारी[8] लाइ खोलि करि तारो। दरब निकासनि को कर डारो॥ ३८॥

1. खच्चर। 2. रावी। 3. चनाब। 4. जेहलम दरिया। 5. इकरार से भाव है। 6. द्रव्य, धन। 7. अमृतसर। 8. चाबी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भई ठीकरी जितिक रजतपन[1]। वहिर निकारी पिखि विसमयो मन।
पंचहु खच्चर पर दस भारे। खोलि खोलि सो सकल निहारे ॥ ३९ ॥
दिरबी ठीकरी सभि महिं तैसे। चिन्ता अधिक बिचारति ऐसे।
इह क्या कारन लख्यो न जाई ?। किधौं गुरू नैं इहै पठाई ॥ ४० ॥
कै कारन कुछ होयहु और। कै इहु दरब लीनि किन चोरि।
राज तुरक को, गहहि उजागर। हटहि न, धन अबि लेहि सौदागर ॥ ४१ ॥
जे अबि भाग चलौं उठि चोरी। बनहि न गमन मिलिन गुर ओरी।
निकस्यो तबि तम्बू ते वहिर। कह्यो सुदागर सों, कुछ ठहिर ॥ ४२ ॥
गिनि करि सगरे अबि ले आऊं। लगहि बिलम कुछ, शीघ्र गिनाऊँ।
अपर थान ढिग ताँहि बिठायो। आप बहुर तम्बू प्रविशायो ॥ ४३ ॥
दर को पिखति सुदागर थिर्यो। लखहि—गिनहि धन अन्तर बर्यो।
अपर उपाव न कुछ बनि आयो। तम्बू पाड़ पिछै निकसायो ॥ ४४ ॥

इक दुइ मंज़ल बडेरी करिकै। —गुर तजि कांशी चलौं बिचरि कै।
तन संतन को भेख बनावा। कोइ न करै चिनारी पावा[2] ॥ ४५ ॥
केतिक दिन महिं प्रविशयो आइ। कांशी महिं सहि चिन्त बसाइ।
तहां सुदागर दर को हेरति। बित्यो समां बहु, पुन सो टेरति ॥ ४६ ॥
'अंतर ते अवाज़ नहिं आई। बैठ्यो डेढक जाम[3] बिताईं।
उठि करि अंतर हेरनि कर्यो। सो नहिं, दरब खुल्यो तहिं पर्यो ॥ ४७ ॥
जो गुरदास संग नर अहैं। तिनहि बुलाइ दिखाइ सु कहै।
'पर्यो दरब, नहिं देवनहारा। क्यों तजि भाजयो? कहां बिचारा ?॥ ४८ ॥
सगरे निकटि खरे तबि कीने। हय को मोल सुधन गन लीने।
बाकी सौंप दिए तिन पास। 'कित गुरदास ?' कहति सभि दास ॥ ४९ ॥
सरब समाज संभारन कीना। दासन गुर दिशि को मग लीना।
'जान्यो परै नहीं, क्या होवा ?। धन धरि गयो आप नहिं जोवा' ॥ ५० ॥
आइ मिले सतिगुर के पास। सरब वारता करी प्रकाश।
'नहिं जान्यो कित गा गुरदास। तजि करि तम्बू महिं धन रास ॥ ५१ ॥
सतिगुर तबि जानी निज माया। —गयो भाजि सो रिदा भ्रमाया।
भई ठीकरी जितिक रजतपन। भाज्यो देखति हुइ अधीर मन ॥ ५२ ॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'भाई गुरदास प्रसंग'** बरननं नाम द्विीतीय अंशु ॥ २ ॥

---

1. रुपए। 2. पहचान। 3. डेढ़ पहर।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३

# भाई गुरदास प्रसंग

**दोहरा**

निकस्यो डेरा त्याग करि हिम रितु थी तिस काल।
चलति पंथ नित चरण करि श्रम को लहति बिसाल ॥ १ ॥

**चौपई**

अधिक बसत्र बिन सीत न जावै। हुतो जो ढिग, तिह कौन उठावै।
कित भोजन प्रापति, कित नाहीं। नितप्रति गमनति मारग मांही ॥ २ ॥
महां खेद ते दुर्बल होयो। नहिं आगै अस संकट जोयो।
पाइनि परे छालरे[1] घने। चलति पंथ नित श्रम के सने ॥ ३ ॥
नीठ नीठ करि[2] प्राप्ति होवा। कितिक दिवस महिं शिवपुरि जोवा[3]।
किस थल जाई कीनि बिसरामू। तहिं गुर संगति के बहुधामू ॥ ४ ॥
जो सिख दरशन के हित आए। तिनहुं पछान लीनि हरखाए।
सभिनि जोरि कर सेवा ठानी। चरन पखारे ताते पानी ॥ ५ ॥
चांपति हैं चित चौंप करंते। स्वादल भोजन करि अचवंते।
जो तबि हुतो पुरी महिपाला[4]। सिक्ख गुरू को प्रति बिसाला ॥ ६ ॥
सुनि महिमा इस की बुलवायो। कहि ऊचासनि पर बैठायो।
बूझति भयो गुरू की गाथा। तबि गुरदास भनी त्रिप साथा ॥ ७ ॥
'सतिगुर थिरे सुधासर राजैं। जपैं नाम, दरशन, दुख भाजैं।
निज बानी महिं गुर जस गायो। करि बहु बिधि महिपाल सुनायो ॥ ८ ॥
सुनि हरख्यो शुभ थान उतारा। पुन गुर सिक्खनि नृपहि उचारा।
'रामदास गुर अरजन पास। रहति भयो पूरब गुरदास ॥ ९ ॥
अबि श्री हरगोविन्द बहु सेवा। महिमा इसकी सम गुरदेवा।
गुरू समीपी इह चिरकालू। करिवाए कहि सिक्ख निहालू' ॥ १० ॥

---

1 छाले। 2. कठिनता से। 3 कांशी। 4. नगर का राजा।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इत्यादिक महिमा सुनि भारी। पग पाहुल[1] लैवे इच्छ धारी।
पंचामृत[2] घनो करवाइ। निकटि लीनि गुरदास बुलाइ॥ ११ ॥
हाथ जोरि करि 'पाहुल दै हो। मोकहु सिक्ख सकल बिधि कै हो'।
पग पाहुल दे तबि गुरदास। भयो महान भाउ न्रिप पास॥ १२ ॥
जबि न्रिप भयो सिक्ख इस केरा। पुरि महिं जसु प्रगटायो बडेरा।
अपर लोक सिक्ख भये सु आइ। नितप्रति बनहिं मनुज समुदाइ॥ १३ ॥
देखा देखी भये हजारों। गुर को सुजसु बिथारि उचारो।
नित महिपालक निकटि बुलावै। गुरबानी इस पास पढ़ावै॥ १४ ॥
अरथ समेत सुनहि मन लाई। सभि को मन महिं मोद उपाई।
अधिक मृद, मृदु बाकन कहै। सुनि सगरे गुर प्रीति लहैं॥ १५ ॥
न्रिप के निकटि कथा नित करै। सभि संगति सुनिबे हित जुरै।
बहु कीरति बिसतीरति कीनि। फिरहिं संग गन लख्यो प्रबीन॥ १६ ॥
भूपत को गुर जबि ह्वै गयो। सकल नगर सनमानति भयो।
इक दिन दिज़ पंडित संन्यासी। सभि मिलि करि आए इस पासी॥ १७ ॥
न्रिप को गुरू लख्यो ललचाइ। निज मत ल्यावनि हेतु अलाइ।
इह शिवपुरि जिस महिं तुम बासा। यांते बनहु रुद्र को दासा॥ १८ ॥
बैठे करहु सदा शिव ध्यान। क्या गुर ते अबि लेहु सुजान!'।
तबि गुरदास कह्यो 'सुनि लीजै। जो पतिब्रता धरम दिखरीजै॥ १९ ॥
परपति रमहि निंद जग गावहि। आगै नरक सजाइनि पावहि।
इम गुर त्याग जपहि जे और। हलति पलति महिं लहहि न ठौर॥ २० ॥
जे गुर दया तां सभि की दया। जे गुर रिसहि[3] त सभि रिस किया।
इस पर एक सवय्या गायो। सभि बिप्रन को तबहि गुनायो॥ २१ ॥

**सवैया**

'मात बियोग परै बछरा अन गाय धरै थन लात लगावै।
हंस जु त्याग कै मान सरोवर खोजति पोखर[4] चोग न पावै।
चक्रवती निज भूपति त्याग कै और पै जाइ कै दास लजावै।
तैसे गुरू सिक्ख सेव करैं जग और सु देव, न पाप बचावैं॥ २२ ॥

**दोहरा**

इत्यादिक उत्तर दीए दिजनि मान करि भंग।
इक सतिगुर को आसरा निरचै कीनि अभंग॥ २३ ॥

1. चरणामृत। 2. हलवा, प्रसाद। 3. नाराज होते हैं। 4. तालाब।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

**चौपई**

जुगल जोरि कर दिजहि बखानी । 'संसै एक हरहु गुन खानी !।
श्री गुरदास बिमल मति मानी !। तत्व ज्ञानमय बोध प्रमानी ॥ २४ ॥

**दोहरा**

गोविन्दादिक राम इति बरने सिम्रिति पुरान ।
भिन्न नाम त्रिपता—तनुय[1] किम भाख्यो भगवान् ? ॥ २५ ॥

**चौपई**

वाहिगुरू गुहथार्थ बखानहु । निगमागम की साख प्रमानहु ।
किधौं काल सति वा कुछ औंर । बिबिधि भांति बरने मुनि और ॥ २६ ॥
दुतिय वेद बाह्य[2] तुम ग्रथ । तास पूजय, भाखति इति पंथ ।
पुषट वचन जिम तुम अबि भाखो । सो सभि त्रिप्र ब्रिन्द रुचि राखो ॥ २७ ॥
त्रितीय सुधासर तीरथ राजू । कवन पुरान प्रमान समाजू ? ।
इह संसै हमरे उर मांही । तुम समान संसै हरि नांही ॥ २८ ॥
अस सुनि, बचन कीन महां ज्ञाता । श्री गुरदास अवनि बक्खायाता ।
"वाहि अरथ विसमय पद गावा । नेति नेति जिह वेद बतावा ॥ २९ ॥
जिह अनजान दियै भव नाना । होति निर्वान जांहिके जाना ।
अक्खर, अकहि, अगाथ, अपार । सहसानन[3] जिह लहै न पार ॥ ३० ॥
असुर,सुरा त्रिण, बिधि, मुनिब्रिंद । भनति परावर परमानंद ।
मन, बुद्धि,चित्त,गिरा,लहिं नांही । अनुभव लखि, बोधक[4] बस मांही ॥ ३१ ॥
दुतिय पदारथ—गुर–इति नामा । श्रुति, सिम्रिति भाख्यो परधामा ।
जा सम अत्र र न जग महिं कोऊ । सो गुरदेव समरथ प्रभु ओऊ ॥ ३२ ॥
जिह पाए कृत कृत[5] रिखि, जोगी । बहुर न होइ भरम भवभोगी ।
–गो—इति अन्धकार शिव भाखा । —रं—चैतंन्य वेद मति शाखा ॥ ३३ ॥
विद्या मूल जोग अवसानी । जांहि समावत मुनिवर ज्ञानी ।
शूंनवाद शूंनहि जिह गावहिं । ब्रह्मवाद जिह ब्रह्म बतावहिं ॥ ३४ ॥
कालमती जिह काल प्रमाना । नानामत ठान्यो मत नाना ।
सगुण जांहि नारायण करिही । करम ब्रिंद करि जां पदलहिही ॥ ३५ ॥
लक्ख रूप वाचारथ जास कहि । अवर न पावत रहति जास लहि ।
'तत्त्वमसी' वेदारथ प्रमानति । वाहिगुरू सो श्री गुर ठानति ॥ ३६ ॥

---

1. गुरु नानक । 2. वेद के अतिरिक्त । 3. शेष नाग । 4. तत्व ज्ञानी ।
5. परम प्रसन्न ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ना अनिकै मन ब्रह्म पछानति। इक दस रुद्र[1] दसोहरि[2] जानति।
नव बिधि प्रणव विश्व क्रित कारन। चत्तर वर्ग दा[3] भव जल तारन ।। ३७ ।।
सुरतरु सिमरन को सुखदाता। चिन्तामणि चिन्तति हरि ज्ञाता।
वासुदेव सतिजुग मणि नाम। हरिहरि त्रेता फलद अकाम ।। ३८ ।।
द्वापुर गोबिंद विजय प्रचण्ड। कलि केवल राकार अखण्ड।
वेद चतुर जुग जिह निसतारे। वाहिगुरू अवलंब हमारे ।। ३९ ।।
थावर जंगम बन त्रिण मांही। सूत्रात्मक इस विन को नांही।
अरथ और परमारथ खानी। वाहिगुरु साररथ[4] प्रमानी ।। ४० ।।
सादर जिह सेव्यो, महिदेवा। सफल भई तिह जन क्रित सेवा।
इन तजि जे अन आशे लहिहीं। ते जन सुधा छाड खल गहिहीं ।। ४१ ।।
चतुर बीज चहुं जुग के काढे। वीज प्रताप जुगन बल बाढे।
चार पदारथ वीज महि पुन। प्रणाव आदि प्रगटे है धर धन ।। ४२ ।।
विशव पदारथ अमर तेतीसा[5]। चतुराखर विस विसवेवीसा[6]।
यंयं[7] चिन्तति रुचि अवगाहा। तं तं लहति भगत इन मांहा ।। ४३ ।।
वरण न साकों वरण प्रतापू। जानति हैं जिह जाप सु जापू।
सरब सार श्री गुर प्रगटायो। जो वेदन गुह्यार्थ गायो'' ।। ४४ ।।

**विप्रोवाच**

**दोहरा**

'चतुराखर इह सार सुठ प्रभु ते सुनयो प्रताप।
तास सतोत्तर बख़ानीये 'जाप करहिं रुचि जाप' ।। ४५ ।।

**श्री गुरादासोवाच अथ वाहिगुरू सोत्र**

**अनुखृप छन्द**

विश्वेशँ, विश्व, मिनयुक्तम्, सम्पुटे विश्व भूखणँ।
विश्व बोधं, स्वयं ब्रह्म तँ प्रणवादि नमामिहँ ।। १ ।।
वर्णावर्ण विहीनाय वेद सार प्रवर्त्तक :
विश्व वर्ग महीधीशं 'वकारं' तं नमामिहं ।। २ ।।
हरि हरादि स्वयं ब्रह्म हंस बोध प्रकाशतं।
हसख़मल वरय वीजं 'हकारं' तं नमामिहं ।। ३ ।।

1. एकादश रुद्रावतार। 2. दश विष्णु के अवतार। 3. चार प्रकार की मुक्ति। 4. सार रूप। 5. तेतीस (करोड़) देवता। 6. वाहिगुरु के चार अक्षरों में सब कुछ है। 7. जिस-जिस।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ज्ञानाकम् गिराधीशं गोतीतं स्वच्छ साखिणं।
गमनागमय विहीनाय तं 'गकारं नमामिहं ॥ ४ ॥
राम वीज सुरेश्वरं, देव दैंत्याभिबंदितं।
सर्व-स्र्वनंश्रयमिति शक्ती, तं रकारं नममिहं ॥ ५ ॥
इत्येव महां वर्ण भावनाय मुहूर्मुहूः।
चर्तु वर्ग फलं दाश्यं, सिद्धी एव न संशयः[1] ॥ ६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'भाई गुरदास प्रसंग'** बरननं नाम तृतीय अंशु ॥ ३ ॥

---

1. जो विश्व का स्वामी और स्वयम् विश्व रूप है और समूचे रूप में जो संसार का भूषण तथा ज्ञाता है, वह ब्रह्म अपने आप से है और प्रणव आदि का भी आदि रूप है; उसे मेरी नमस्कार है ॥ १ ॥

जो वर्ण अवर्ण से दूर और वेद ज्ञान का प्रारम्भिक है, सर्व संसार तथा पृथ्वी का स्वामी है, वाहिगुरु शब्द के उस 'व' को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

विष्णु, शिव आदि का मूल और जो ब्रह्मा को ज्ञान प्रदान करने वाला है, हस्तामलक वत्, प्रत्यक्ष बीज रूप है, उस 'ह' को प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

ज्ञान का सूर्य्य, सरस्वती का स्वामी, अकथ पवित्र तथा सब का साक्षी है। जो जन्म-मरण के चक्र से रहत है. उस 'ग' को प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

जो बीज रूप राम, देवी-देवताओं का स्वामी है, जिसे देव तथा दैंत्य सब अभिवादन करते हैं, जो सब का आधार और सब कुछ है, शक्ति रूप है—उस 'र' को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

ये 'वाहिगुरु' पद के चारों अक्षर महान् हैं जो श्रद्धा से इन्हें बार-बार स्मरण करते हैं उन्हें ये चार पदार्थ—धर्म अर्थ, काम तथा मोक्ष प्रदान करने वाले हैं, इसमें कोई संशय की बात नहीं ॥ ६ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४

# भाई गुरदास प्रसंग

**दोहरा**

'मंत्रराज' संछेप करि कह्यो जथा मति सार।
जिह समुझे निज रूप लहि होत सिंधु भव पार ॥ १॥

**चौपई**

सुनहु दुतिय श्री ग्रंथ जु बाणी। रतनाकर, अनगन गुण खाणी।
श्री गुर इह नमित अवतारा। श्री केशव निशचे वपु धारा ॥ २ ॥
निरख्यो कलि जनु आयुसु थोरी। जोग जग, जप बनै न भोरी।
पूरब धरम सथापन हेतु। तन धारति प्रभु कृपा निकेतू ॥ ३ ॥
तांते जिह बिधि जग कल्याना। होति, वही बिधि क्रित भगवाना।
अवर साधना बनै न कोई। गिरोवान वाचा श्रति गोई ॥ ४ ॥
पढति पढति ह्वै आयु बितीता। ह्वै कबि ध्यान धेय बिपरीता।
परउपकार हेतु गुर स्वामी। सुलभ गिरा बरनी गुन गामी ॥ ५ ॥
नामी नाम एक दिखरावा। शबद सुरति मारग इम गावा।
—सत्ति असत्ति दोऊं पद जोरे। सत्ति सत्ति करि असत्ति बिछोरे ॥ ६ ॥
सत्ति आतमा, असत्ति अविद्या। महां गूढ़ करि प्रगट्यो सद्या[1]।
सत्य असत्य भेद लखि पावा। नाम उचारण रीति बतावा ॥ ७ ॥
नाम अरूप अरूप स्वामी। नाम ब्रित्त ते तद वपु गामी।
सुलभ सगल प्रगटाई गुर बर। जां ते होय अमर थिर इहु नर ॥ ८ ॥
वेद हूं कहा त्रिकांड बिधाना। कठन करम उपासन ज्ञाना।
महां जतन साधक इहु साधन। कलि कुल जन के भ्रमगि बाधन ॥ ९ ॥

**दोहरा**

शासत्र वेद के अरथ फल जदपि विचारै धारि।
श्री गुर ग्रंथ विलोकते देति वेग फल चार[2] ॥ १० ॥

---

1. शीघ्र ही। 2. धर्म, अर्थ, काम मोक्ष।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अड़िल

नितप्रति रुचि उर धारि दरस गुर कीजिए।
निखत जनम तम पाप खिनक हरि दीजिए।
कोट जग्ग फल दान सुनात रव[1] भावनी।
हो ! होति मोखि अधिकार, प्रणति दुति दामनी ॥ ११ ॥

सादर सोड़ संभारति यति मति मानवी।
जनम मरन कटि दोख पाप जिव जानवी[2]।
ब्रह्मादिक सुर ब्रिन्द ताहि उसतति ररैं।
हो ! ब्रिज कर प्रपहिं विष्णु ग्रंथ पर लै धरै ॥ १२ ॥

मरि तीरथ, दिग, ईष, शेष, सारद ररैं।
श्री बचनांम्रित सार बरग अछु सभि टरैं।
मुखारोहण प्रगट गिरा ग्रघ खण्डणी।
हो ! दोख, दरिद्र, संताप, पाप बल दण्डणी ॥ १३ ॥

जासु सदन गुर ग्रिंथ गिरा अलाप हीं।
पुन पुन श्री गुर ज्ञान ध्यान जप जाप हीं।
सो वैकुंठ प्रताप तहां, छिन न टरै।
हो ! सभि संपद रिद्धि सिद्धि रमा निज घर करै ॥ १४ ॥

तांते तजहु असार जानि मति मंदनी।
इह सरवोत्तम सार भरम भव कंदनी।
कलमख कलि कुल हार अवार बिलासनी।
हो ! अलप कह्यो बहु जानि, ग्रिंथ सुख वासनी ॥ १५ ॥

## सोरठा

श्री गुर ग्रिंथ महान प्रगट बोध बपु मानीए।
श्री गुर कह्यो बखान—मम सरूप भव सेत[3] इह ॥ १६ ॥

## सवैया

तीरथराज[4] बिचार मही मणि, आदि कथा सुनि विप्र महाना !।
देव सुरासुर सीर मथ्यो, चतुरादश काढि दीए विधि नाना।
रौर परी सुर दैंतनि मद्ध, अली निज आपनो आपन माना।
मोहन मोहनि मोह लीए सभि मोहि बिदार तबै सुख जाना ॥ १७ ॥

---

1. वाणी की ध्वनि। 2. गंगा। 3. पुल। 4. अमृतसर शिरोमणि तीर्थ है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देइ विभाग सुधा सभि को, प्रभु खेल दिखाय दयाल मुरारी।
पूरब रूप बनाय कै सुन्दर श्री मणि मन्दिर की रुचि धारी।
तांही समय रिखि माधवी द्वैकर जोरि बिनै प्रभु साथ उचारी।
—पात्र सुधा बखशो मुझ को तिह आसर जाइ करौं तप भारी ॥ १८ ॥

**सवैया**

आइसु दीनसि सारंग पानि—तपोबन एक भयो समयाना।
जाइ करो तप उग्र महां तिल ते मणि होति सुसिद्ध मकाना।
देश पंचाल रसाल सनातन तीरथ राज सुधासर जाना—।
तो सुनि माधवी पाद गहे—करुणानिधि ! नाम पुरान बखाना ॥ १९ ॥
हौं निरख्यो नहिं अंम्रित तीरथ देहु दिखाइ दयाल मुरारी—।
भगति अधीन प्रवीन चले जन दीन पै धारि मया बनवारी।
बाहन, बाम, बिसारि सभा सुर, बारजलोचन श्री गिरधारी।
देखि सभै सुर ब्रिंद यहै बिधि, रीर परी—चलियो छबि भारी ॥ २० ॥

**चौपई**

सुर आसुर सम आए श्री बर। सुधा सरोवर देखति भे सुर।
श्री पति श्री हरिमंदर राजै। रमा सहत सिंहासन छाजै ॥ २१ ॥
पूरब मुख हरि गिरा उचारी। —सुनि माधव रिखि ब्रह्माचारी।
इह सनमुख दुख भंजनि माई। त्रिबिधि ताप हरनी सुखदाई ॥ २२ ॥
मद्ध महां तीरथ, मुनि राजा!। गोप पदारथ मम उपराजा।
धनुष धनुष प्रति सुर बैठारे। अभि अन्तर तिनके अनुसारे ॥ २३ ॥
जल महिं बसहिं आठ सठ तीरथ। इन महिं धरहु सुधासर समरथ।
इन ढिग बैठि करहु तप भारी। इह मम सदन सनात्तन चारी ॥ २४ ॥
सभि ते गोप तोहि प्रगटायो—। या तीरथ फल श्री मुख गायो।
—धरम अरथ कामू अर मोखू। मन वच कर्म अघ कलि हरि दोखू ॥ २५ ॥
जबि जबि हो वैकुंठ उदासा। तबि हौं आइसु करौं निवासा।
इह तीरथ मम देहि सरूपा। गंगादिक पद जल मुनि भूपा ॥ २६ ॥
बीज रूप तीरथ महि राजू। अंम्रितसर थल सज्यो समाजू।
जे नर सहज दरस हित आवैं। चतुर पदारथ सहज ही पावैं ॥ २७ ॥
जे पुन तिनके दरशन कै हैं। ते विदेह हुई मम पुरि जै हैं।
कोन ईसान निरख ब्रिखकेतु[1]। दक्खन दिसहि भूतग्रिह[2] हेतू ॥ २८ ॥

1. शिव। 2. धर्मराज।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वरन, कुबेर, इन्द्र, दिशराजा। निज असथल, सभि सजे समाजा।
ब्रह्मादिक सेवहिं मन लाई। मम रुचि लखि खटपद जिम छाई।। २९।।
इम कहि प्रभु सभि देव बुलाए। विनती करति सभै तबि आए।
खोड़स बिधि ययमानंति[1] भए। तीरथ देहि धारि सभि अ़ए।। ३०।।
सिन्ध, सुमेरू, गगन, अप पवना। हरखति आए धरनी दवना।
पत्र चढ़े प्रसून[2] अखावैं। –जयति जयति जयज़य–धुनि गावैं।। ३१।।
बरन, कुबेर, शेष, ससि, सूरा। खटमुख[3] आदिक चढ़े मयूरा।
खेचारी, पाताल, महिचर। गुपत प्रगट सभि आए सुरबर।। ३२।।
श्रुति सम्रिति निगमा तन धारे। सनमुख ठांढे देव मुरारे।
सभि मिलि द्वै कर जोरि अलायो। —आयसु[4] 'करहु भगत सुखदायो।। ३३।।
तबि बोले श्री करुणा सीव। —इहां बसहु तुम सभै सदीव।
विष्णु कलपतरु तीरथ राजू। सादर मज्जहु देव समाजू!।। ३४।।
ब्यास भविखत कथा बखानी। अस सुर बरग सुसति करि मानी।
तबि बोले बिबानगति सारे। –मज्जन मंत्र सु कौन उचारें ?–।। ३५।।
तबि कमलेश[5] हरख ह्वै द्याला। कह्यो—सुनहु सभि भू सुर साला।
यशय उचार उदक मुकवारी। तीरथराज देति फल चारी।। ३६।।

**अथ मंत्र**

'ओम् अमृतोद्भवाय अमृतरुपाय तीर्थराजाय नमो नम:।

**चौपई**

अंम्रित कला मंत्र इहु कहिए। महां गोप बड़भागनि लहिए।
इह सुनि मज्जन करने लागे। सरब देव तीरथ जसु पागे।। ३७।।
कमलादिक,बिधि,शिव, संगबामा। सभि अंम्रित मय भये सुधामा।
निरख माधवी बिसमय भयो। कह्यो—भूर अमरा कित गयो ?–।। ३८।।
श्री प्रभु बहुर समोधन कीना। —ये तीरथमय भए प्रवीना !—।
तबि फिर मुनि पुट अंजुल जोरे। —कहो भविखत कथा बहोरे।। ३९।।
जिम करिहो जुग आगल मांही। सोबरनहु प्रभु सभि मो पाही—।
तबि त्रिलोक पति बचन बखाने। उन उपकार हेतु मन माने।। ४०।।
—त्रेता मांहि होहिं हम रामा। लवकुश सहित आई इस धामा।
सूर समूह सु मज्जन करि हैं। तीरथराज पूज परचुरि हैं।। ४१।।

1. पूजा करते। 2. फूल। 3. श्याम कार्त्तिक। 4. आज्ञा। 5. विष्णु।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जगगर्व करहिंगे पशचम अंगा। तीन लोक सैना सभि संगा।
तबि मम सुवन[1] जानि मम प्यारा। बांधैगे द्वै पुरि अगारा[2] ॥ ४२ ॥
बहुत भांति लीला तबि कैहैं। सिंधु क्छेत्र[3] को मान सुदैहैं।
द्वापुर क्रिषन जदुनि मैं होहीं। त्रिभवण[4] मांहि फिरै मम दोही ॥ ४३ ॥
सभि लीता करि फिर अवसान। सुधा सरोवर क्रिशन समान।
फिर कलजुग श्री चंदरि तात। मम सरूप क्षिति अति वख्यात ॥ ४४ ॥
दस औ चतुरदशा वपु धरिकै। सिन्धु क्छेत्र जसु महां प्रचुरिकै।
बड़ प्रताप करों इह धामँ। तीन लोक मणि अंम्रित नामँ ॥ ४५ ॥
जुग जुग सुधा सरोवर सेव। आइ निवास करों संग देव—।
इम सुनि सुनि माधव हरखानो। सुधा पात्र हरि चरण समानो ॥ ४६ ॥
पात्र संग मुनि सजी समाधा। आप सथापन कीयों अगाधा।
करि असथापन चले मुरारी। तबि माधव रिखि गिरा उचारी ॥ ४७ ॥
—मुहि कबि बलेत दरस प्रभु दैहौ? भव मोचन पद की अबि जैहो—।
कह्यो त्रिलोकेशुर रुचि बानी। '—कलजुग वपु ह्वै सारंग पानी। ४८ ॥
जुग औ वाण धरै अवतारा। तबि तुमको दैहों दरसारा—।
इम कहि द्रिषटि अगोचर भए। श्री बिन एकल ही ग्रिह गए''। ४९ ॥
इह अक्ख्यान सुन्यो कांशीप[5]। क्रित क्रित भए चरन धरि सीस।
धंन-धंन' कहि भाग सराहा। 'गोप कथा बरनी मुनि नाहा ॥ ५० ॥
जय गुरदास विमल मति ज्ञानी !। अबि हमरे मन निशचै ठानी।
तुम ते संशय गयो हमारा। बिविध बेद बिधि कीओ उचारा' ॥ ५१ ॥
सभि बन्दन करि सदन सिधारे। भी महिमा गुरदास उदारे।
इक तौ न्रिप को गुर बनि गयो। अरु नर को गन सिक्खय सुभयो ॥ ५२ ॥
सरब पुरी जस को करै। वंदहिं चरन अग्र नर परैं।
'गुरु गुरु' सभि नाम उचारैं। मन भावति धरि भेट अगारैं ॥ ५३ ॥
सभि बिधि सेवा न्रिप करिवावै। 'गुरु शब्द' के अरथ सुनावै।
महिमा भई महां ते महा। तऊ गुरु दिशि ते दुख लहा ॥ ५४ ॥
बीत्यो चिर दरशन ते हीन। तरपति चित जिम जल बिन मीन।
सुखद वस्त बहु—मोली आवैं। गुरु बिरहि करि नहिं उर भावैं ॥ ५५ ॥
जिम चातिक इक बून्द चहंता। आदि सिन्धु नदि नीर तजंता।
जथा कंत के बिरहु करि तरनी। दुखद होति जे सुखदा बरनी ॥ ५६ ॥

---

1. पुत्र। 2. घर। 3. पंजाब। 4. लक्ष्मी। 5. भाव ब्राह्मण।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नीर नैन चित नैनन कैसे। दरब क्रिपन को बिनसति जैसे।
दुर्यो लहै संकट उर भारै। तबि मन करि सतिगुरू चितारे ।। ५७ ।।
'हे गुर अन्तरयामी स्वामी !। बखशति सदा सेवकनि खामी[1]।
दीन दयाल गरीब निवाजा !। नाम कहैं इम रंक कि राजा ।। ५८ ।।
सिमरन करहु हकारउ मोही। नहीं आप ते आवनि होही।
नहीं दास के बसि किस भांती। आप अहो समरथ वक्खयाती ।। ५९ ।।
जिम चाहहु तिम रचहु गुसांई। बिगरो सुधरहिं सुधि बिगराहीं।'
इमि बिनती करि कवित बनाए। गुरू ध्यान करि देति सुनाए ।। ६० ।।

**कबित्त**

'गाइ सुत जैसे मिल मात मन चाहि ऐसु कूद बिललाय, गुर बंधन बसाइ न।
जैसि तो बिगार निज धामको पधार चाहैं, जान पराधीन चिन्त चितवति जाइ न।
जैसे बिरहनी पति संग को सनेह चाहे, देखि कुल अंक लाज संगम सु पाइ ना।
तैसि हौं शरण गुर चरनन चाह सदा आइसु बिदेश बसि अति बिललाइ ना ।। ६१ ।।

**सवैया**

मीन सदा जिम चाहति नीर को चात्रिक बून्द सदा मन चाहै।
नीरज चाहि सदा रवि[2] की पुन औ नलिनी[3] ससि देख उमाहै।
अग्रज ताड़िति है सभि ही बहु प्रीत न त्याग सदा रुचि आहै।
तैसि प्रभु मम प्रीत रिदै ताड़तिहो जन प्रीति वधाहै ।। ६२ ।।

**चौपई**

इत्यादिक बनाइ[4] करि बानी। पुनहि सुनावै बनि गुर ध्यानी।
'भूल पर्यो मैं आइ बिदेशा। चरन कमल चित्त चाहि विशेशा ।। ६३ ।।
करहु क्रिपा निज दरस दिखावहु। बखशहु मोहि जि अवगुन पावहु'।
हुइ इकान्त इव बिनती करै। ध्यान रिदै निस बासुर धरै ।। ६४ ।।
सभि सतिगुर ने तिसकी जानी। –हत्यो गरब अबि भा निरमानी –।
इक दिन बैठे बीच दिवान। सभिनि सुनावति कीनि बखान ।। ६५ ।।
किस कारन ले गा गुरदास ?। ह्य[5] खरीद नहिं पहुंच्यो पास।
कहां गयो, को सुधि नहिं आई ?। को बिगार होयो किस थांई ?।। ६६ ।।
गुर घर सगरी वैस बिताई। सुमति प्रवीन हुतो बहु भाई।
बिनां मिले क्यों आन पधारा। हम नहिं किस प्रति कछु उचारा ।। ६७ ।।

---

1. भूल। 2. कमल। 3. कुमुदिनी। 4. निर्माण। 5. घोड़े।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कित सुधि किसने सुनी सुनावहु। क्यों गमन्यो? थिर कहां? बतवहु'।
बिधि चंद जेठादिक पास। बोले हाथ जोरि अरदास—॥ ६८॥

'भूत भविक्खत अरु बर्तमान। रावरि[1] उर ज्ञाता सभि थान।
जानहु आप गयो किस हेतु। कहां जाइ बसि करे निकेतु'॥ ६९॥

सुनि सतिगुर तबि तूशनि[2] भए। अगले दिवस सभा थिर थए।
प्रेम वधहि गुरदासहि ज्यों ज्यों। गुर चित खिचति होति है त्यों त्यों॥ ७०॥

बिना पठे नर उर अकुलाए। बसी प्रेम के सहज सुभाए।
बिलमयो जाइ नहीं किस काल। भई प्रेम की खैंच बिसाल॥ ७१॥

चहति टर्‌यो केतिक दिन और। तऊ न टर्‌यो जाति सुख ठौर।
पठनि हेतु मानव ततकाल। कीनसि त्यारी गुरु क्रिपाल॥ ७२॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे '**भाई गुरदास प्रसंग**' बरननं नाम चतुर्थो अंशु॥ ४॥

---

1. आप। 2. खामोश।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५

# भाई गुरदास प्रसंग

**दोहरा**

प्रेम महां गुरदास को खैंच लीनि गुर चीत।
कर्यो त्यार तबि मेवरो[1] पुन परखन की रीति ॥ १ ॥

**चौपई**

लिख्यो हुकम नावा तबि ऐसे। बरणन करौं सुनावौं तैसे।
'काशी ईश गुरू सिख ! सुनीअहि। तुव ढिग चोर गुरू को जनीअहि ॥ २ ॥
बास करहि कांशी मैं होइ। खोजहु दिहु मुशकां वंधि सोइ।
नाम अहै तिसको गुरदास। कारे कै कैद पठहु हम पास ॥ ३ ॥
तबि हुइ गुर की खुशी बिसाला। खोजहु चोर पठहु ततकाला'।
लिये हुकम-नावां तबि गयो। कांशी पुरि महि प्राप्ति भयो ॥ ४ ॥
सभा बिखै जहिं हुते महीप[2]। तिह ठां पहुंचति भयो समीप।
दियो हुकम नामा न्रिप चीना। करि सनमान सीस धरि लीना ॥ ५ ॥
पठि करि सकल जानि अहिवाल। बूझी सभा सरब तिस काल।
'गुरू की वसतु कौन लै आवा ?। पुरी बिखै हुइ है किस थावां ॥ ६ ॥
सभि ने भन्यो 'न अ्रस को आयौ। जो आयौ लिहु नगर खुजायो'।
तबि राजे डिंडम[3] तहिं फेरा। 'किह थल गुरू चोर किन हेरा ?' ॥ ७ ॥
फिर्यो नगर सारे कहि पायो। पुन गुरदास सभा चलि आयो।
ऊचासन पर बैठि उचारे। सतिगुर शबद करति निरधारे ॥ ८ ॥
भोग पर्यो न्रिप मन्यो प्रसंग। 'गुर की बात कहौं तुम संग।
लिए हुकम-नामा नर आयो। पठ्यो प्राति इम गुर फुरमायो ॥ ९ ॥
—चोर हमारो इक तुम पास। आइ बस्यो अ्राखय गुरदास।
तिसकी मुशकां वन्धि पठावहु। कारज करहु खुशी गुर पावहु— ॥ १० ॥

1. सेवक। 2. राजा। 3. ढिंढोरा।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हमने सगरो पुरि खुजवायो। किसी स्थान नहीं सो पायो'।
सुनि गुरदास सु चित्त बिचारी। महिपालक के संग उचारी ॥ ११ ॥
'इह तो बात लिखि सभि मेरी। सभि अवगुन विज लीने हेरी।
मैं गुर ते तसकरता[1] करिकै। आयो भागि बिमुखता धरिकै ॥ १२ ॥
बडो अहै मेरो अपराधू। जिसको नहीं सकहि करि साधू।
तऊ द्याल निज बिरद संभारा। बखशन हित करि निकटि हकारा' ॥ १३ ॥
न्रिप सुनि विसमयो'कहां कहति हो?। इतो दोष किम अपनि लहति हों।
लिखि कि—मुशकै वंधि पठावो। पुरि महिं बसहि तहां खुजवावो—॥ १४ ॥
कहां कर्यो तुम गुर अपराधू ?। महां प्रवीन, सुमति सुख साधू।
इह को अपर लिख्यो, पुरि महीआ। शनै शनै खोजहिं जहिं कहीआ ॥ १५ ॥
इहां होइ तौ पठहि बनाई। नांहि त लिखहि—न को इसथाई—'।
सुनि गुरदास न्रिपत सों गायो। 'कहां मेवरा[2] जो चलि आयो ?' ॥ १६ ॥
तबि भूपति निज निकटि हकारा। करि चिनारि गुरदास हकारा।
करी मेवरे ने तबि बन्दन। कुशल प्रशन ते हुइ अभिनन्दन ॥ १७ ॥
मिले परसपर हरखति होए। नेह सने बहु सभिहिनि जोए।
पुन भूपति को सभि समझायो। 'सतिगुर परखनि ब्योंत[3] बनायो ॥ १८ ॥
प्रथम ठीकरी धन की कीनि। मैं तबि भरम्यो सक्यो न चीनि।
गुर के चरित अगंम, न जनियति। सिक्ख संभार सकहिं नहिं भनियति ॥ १९ ॥
मुशकां बांधन रिस करि कहिबो। इस महिं तिम परखनि विधि लहिबो।
अबि मैं नहिं भरमण को धरिहूं। लिख्यो जथा सोई बिधि करिहूं ॥ २० ॥
तिम तसकर हुइ दरसों जाइ। चोरी करी जु लिहुं बखशाइ।
तुम गुर हुकम न फेरनि करिए। दिहु मुशकां वंधि आगे धरिए ॥ २१ ॥
न्रिप जुति सभा सभी बिसमाई। अगम गुरू गति को लखि पाई।
कहि बहु बार भुजा बंधवाई। चलिवे त्यार भयो महिसाई[4] ॥ २२ ॥
तबि न्रिप भन्यो' मोहि लिहु साथ। दरस करावहु श्री गुर नाथ'।
धीरज दई तिनहि गुरदास। 'पुन आगवन करहु गुर पास ॥ २३ ॥
मोहि संग नहिं बनहि चलनि को'। तबि सभि इसके सिक्ख्य मिलनि को।
भये हजारहुं मिलि इक थांई। कहि धीरज को दीनि बनाई ॥ २४ ॥
संग चलनि को संगति भई। कहि बहुबार हटाइ सु दई।
तऊ सात सै सिक्ख भये साथ। बिसमति भनहिं 'पिखहि गुरनाथ' ॥ २५ ॥

1. चोरी 2. सेवक। 3. विधि, ढंग। 4. जल्दी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुशकन को बंधवाइ पयाना। हर्यो न्रिपति पुन बंदन ठाना।
अपर सभिनि बूझ्यो सभि रीति। पिखि कौत्तक बिसमावति चीति ॥ २६ ॥
पंच कोस लगि न्रिप जुति आए। पुन बहुदारी कह्यो हटाए।
एक मजल सभि चलि करि आए। नंम्रि मेवरो बाक अलाए ॥ २७ ॥
'धंन धंन तुम सिख सिरमौर[1]। नहिं समान दूसर किस ठौर।
हुकम गुरू को सगरो माना। सभि विधि बडिआई निज हाना ॥ २८ ॥
सभि मग महिं नहिं इम पुजि आवै। भुजा खुहाए चल्यो तबि जावै।
जिसदिन चलो सुधासर थांइ। इस प्रकार की लिहु बंधवाइ ॥ २९ ॥
इम कहि चरन पकरि करि रह्यो। तबि गुरदास सभिनि महिं कह्यो।
'चोर उचित चहीयति इम करी। जे तुम अबि और मति धरी ॥ ३० ॥
गुरु निकटि ते चलि करि आयो। चहहु सु करहु देहु खुलिवायो।
सभि मार्ग को उलंघति आए। जबहि सुधासर के नियराए[2] ॥ ३१ ॥
तिमही भुज मुशकां बंधवाई। आगै भयो पाछ समुदाई।
सतिगुरू तखत अकाल सुहाए। सिर पर चमर ढुरहि छबि पाए ॥ ३२ ॥
सिक्ख सुभट[3] चहुंदिशि पखारे। बसत्र शसत्र सुन्दर तन धारे।
निज संगति के जुति समुदाई। पहुंचति भये प्रभु अगवाई ॥ ३३ ॥
हाथ जोरि धरनी पर परे। भाउ समेट डंडवत करे।
खरो भयो सनमुख हुई गुर के। दिखति मनोरथ पूरन उर के ॥ ३४ ॥
श्री हरिगोविन्द रिदे प्रमोद। गुर अरू सिक्खनि होति बिनोद।
चित्त प्रसन्न बाहिर रिस धरैं। कहैं कठोर ताड़ना करैं:—॥ ३५ ॥
'करे खरीदनि भले तुरंग। तुरत पहुंच्यो ले करि संग।
वेसर[4] लादि दरब ले गयो। तजि सूनो सभि भाजति भयो ॥ ३६ ॥
गुर घर को नुकसान न जाना। बास विदेश जाइ करि ठाना।
तुहीं सिक्ख सिदकी बड जोवा। पर्यो काज गुर को, अस होवा ॥ ३७ ॥
क्यों अबि उत्तर देति न कोई। इम चलिगयो कहां गति होई ?'।
सुनि भाई गुरदास विचारे। दोइ सवैये तबहि उचारे ॥ ३८ ॥

**सवैया**

बून्द औ रेत गुमान करै मन, क्षोभ न सिन्धु रवी समुहावै[5]।
पंख औ धूम उड़ै नभ को पिखि तांहि अगाध रिदै सुकचावै।

---

1. शिरोमणि। 2. निकट पहुंचे। 3. शूरवीर। 4. खच्चर। 5. सन्मुख।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गूलर जंत उडंति कहो किम पेखि ब्रह्मण्ड प्रचण्ड लजावै।
तू करता ! हम जंतु किए तुम, तो पहि बोलन क्यों बनिआवै ॥ ३९ ॥
भिखारि अनाथ नहीं हमरे सम, तो सम नाथ न और दतारी।
दीन अज्ञान कहीं नहिं मो सर, तो सर द्याल न आन बिचारी।
मो सम पापि बिकारि नहीं जग, तो सम पावन औ उपकारी।
औगुन सिन्धु हौं, तू गुन सागर, जाति अधो[1] प्रभु ! ओट तुमारी' ॥ ४० ॥

चौपई

इम कहि आगे हुइ ललचायो। पहुंच्यो निकट चरन लपटायौ।
निरहंकार बिकार बिहीना। शुद्ध भयो श्री सतिगुरू चीना ॥ ४१ ॥
मुख ते बिकसि परे फरमायो। 'धंन तोहि गुर सिदक कमायो।
उठहु चरन को कीजहि त्यागी। तू मम प्यारो अति अनुरागी ॥ ४२ ॥
कह्यो-सिक्ख हुए सिदक न हारे।' इस तुक पर भा लेहु बिचारे।
कसे कसौटी मैं इस वारी। सिक्ख्य न आन समान तुमारी' ॥ ४३ ॥
इम कहि बिकसति गुरु क्रिपाला। निज कर ते खोले तिस काला।
मुशकैं[2] छोरी निकटि बिठायहु। सरब सभा गुर लरित चखायहु ॥ ४४ ॥
'धंन गुरू गुर के सिक्ख धंन। अगमगती, को लखहि न अन्न'।
पठी भेंट कांशीश बिसाला। अपर सपत सैं सिक्ख तिस काला ॥ ४५ ॥
अरपण करी गुरू के आगे। पिखे सुशील सकल अनुरागे।
श्री हरिगोविन्द हेरि अलायो। एकल गयो सु सात सै ल्यायो ॥ ४६ ॥
धंन पुनहि गुरसिक्ख उपकारी। जहिं जै हैं तहिं करहिं उधारी।
पर दुख देखि न सकहिं क्रिपालू। देते गुरूमति अनंद बिसालू ॥ ४७ ॥
तबि भाई तुक फेर बनाई। अपर रीति ते उचरि सुनाई।
बिख दै मात, कौन शिष्य रक्खै? । चोरहि पहिरू को तिस लक्खै ॥ ४८ ॥
बोरति करीओ[3], को तबि तारै। हतहि भूप, किस पास पुकारैं।
जे गुर सांग कछू बरतारै। सिक्ख आगे तबि कहां बिचारै' ॥ ४९ ॥
इत्यादिक बहु सिफत सुनाई। निज लघुता करि गुरू बड़ाई।
सुनि सतिगुरू गहि बांह उठायी। अपने अंग संग तबि लायौ ॥ ५० ॥
सभिनि बिखै बड मान वधायो। 'धंन धंन' निज मुख फुरमायो।
आगे ते दस गुन बहु मान। करिकै राख्यो गुर भगवान ॥ ५१ ॥
सभिनि बिखै भांई जस भयो। देश बिदेशनि महिं सुनि लयो।
गुर घर महिं गुरदास बडेरा। गुर सिक्ख मानति भये घनेरा ॥ ५२ ॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'भाई गुरदास प्रसंग'** वरननं नाम पंचमो अंशु ॥ ५ ॥

---

1. नीचे। 2. बांधे हुए हाथ। 3. मल्लाह।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ६

## सूरज मल्ल ब्याह प्रसंग

दोहरा

वसहि बास करतारपुरि सूरजमल ससुरार।
गुरदित्ते ढिग गयो तवि ब्याहु व्योंत सु विचारि ॥ १ ॥

चौपई

'मो चित महिं अबि देवहुं ब्याहू। आयो बूझनि तुमरे पाहू'।
सुनि श्री गुरदित्ते पुन कह्यो। भले मनोरथ तैं उर लह्यो ॥ २ ॥
साहे[1] को निकसाई पठावहु। गुर हरखहिं, अबि नंहि बिलमावहु'।
सुनि सलाह निज मंदर आयो। बैठि विप्र को निकटि बुलायो ॥ ३ ॥
'मम पुत्री को सोधहु साहा। लिखि भेजहिं पुन सतिगुर पाहा'।
सुनि द्विज पत्री देखि बिचार्यो। मास विसाख विखै निरधार्यो ॥ ४ ॥
सत्ताइसवीं लिखि दी पाती। दिजबर कर्यो त्यार भलि भांती।
श्री गुरदित्ते तवि कहि भेजा। 'हम हैं तयार संग दिज ले जा' ॥ ५ ॥
इक दिन पुरि बिताइ करि चाले। दिज साहा लेकरि निज नाले।
आनि सुधासुर प्रति प्रवेशे। मिले तबहि परिवार अशेषे[2] ॥ ६ ॥
करि डेरा कर चरन पखारे। बसत्र शसत्र सुन्दर तन धारे।
श्री गुरदित्ता ले दिज साथ। मिले जाइ निज पित जगनाथ ॥ ७ ॥
करि बन्दन बैठ्यो तबि पास। पुत्र बिलोकि प्रमोद प्रकाश।
धरि सनेह सिर पर कर फेरा। कुशल बूझि प्रिय बर मुख हेरा ॥ ८ ॥
दिज सनमुख बैठ्यो तबि आनि। करी ब्याहु की बात बखानि।
'बिप्र पठायो साहा दै कै। अपर सकल त्यारी निज कै कै ॥ ९ ॥
फागुण बीस दिवस अबि गयो। ब्याह विसाख मास को दयो'।
सुनो सतिगुरू सराहन कीना। 'आछी बात भई तिन दीना' ॥ १० ॥

---

1. विवाह की तिथि। 2. सारे।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहि दिज को शुभ सदन उतारा। सुधि जबि भई सकल परवारा।
जे मंगल के सगुन बिसाले। करे प्रमोद बिनोदन जाले ॥ ११ ॥
नेती मिल त्रै शासन साथ। कर बंदति पग टेक्यो माथ।
मनहुं अनंद के उदधि मझारू। मिले मीन सम सभि परवारू ॥ १२ ॥
बजे सदन दर पर शदियाने[1]। लघु दीरघ दुंदभि[2] धुनि ठाने।
ढोल नफीरी झांझ बजावैं। हेति कुलाहल जन बहु आवैं ॥ १३ ॥
तिस निस महिं उत्सव अति कीना। तीन दिवस दिज राखि प्रबीना।
बहुर बिदा हुइ पुरि करतारा। जाइ विप्र सुधि करी उचारा ॥ १४ ॥
प्रेमचंद सुनि करि हरखायो। संचै सकल समाज करायो।
त्रिण अरु अन्न घ्रित मिषटान। दुगन खरच्च ते करे महान ॥ १५ ॥
इसी रीति दिन कितिक बिताए। मेल बसोए को निपराए[3]।
सभिनि सथान सबंधी जेते। पठि नर करे हकारनि तेते ॥ १६ ॥
जहिं कहिं ब्याहि सुनति हरखाए। 'भली भई ऐसे दिन आए।
आच्छी रितु वहु तपत न सीत। उतसव शादी की सभी रीति' ॥ १७ ॥
पुन बड होइ सुधासर मेला। सिक्ख मसंदन बनहिं सकेला।
यांते बहु अनंद करि मेली। आवहिं घर के कारज पेली[4] ॥ १८ ॥
ब्रिंद मनुज को लै लै साथ। आनि बिलोकैं श्री गुरनाथ।
दातू को सुत सहत कुटंब। आइ मिले गुर, हीन बिलंब ॥ १९ ॥
गोइंन्दवाल बिसाल उताले। सभि परिवार होइ नर जाले।
सुधा सरोवर को चलि आए। जथाजोग मिलि गुर हरखाए ॥ २० ॥
डल्ले, डारोली, मंडिआली[5]। आए संगति संग बिसाली।
मउ, मल्ले अरु नगर बटाले। आए मिले जुति मानव जाले ॥ २१ ॥
ब्रिद्ध को सुत भाना तबि आयो। संग पुत्र पौत्रण को ल्यायो।
हरीचन्द नित पास, अवासा। रामदास पुरि महिं सुखरासा ॥ २२ ॥
सतिगुर महिल गयो भरि सबै। आई सभि थल ते त्रिया तबै।
अपर सदन गन हुते चिनाए। कहि, सभिहिनि को सिवर[6] कराए ॥ २३ ॥
जथाजोग मिलि सभि हरखाए। सुधा सरोवर मजनहाए।
असन बनति हैं बिबिध प्रकारे। स्वादल खट रस खाइ अहारे ॥ २४ ॥
दोनहुं समय अचवि त्रिपतावैं। अनगत संगति मेला आवै।
दिवस निसा नर मिलि समुदाई। करहिं देग कुछ गनी न जाई ॥ २५ ॥

---

1. खुशी के बाजे। 2. नगारा। 3. वैशाखी का दिन। 4. छोड़ कर। 5. गाँवों के नाम। 6. डेरा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इक तो व्याह मेल अरु मेला। सुनि जहिं कहिं ते बहुत सकेला।
नितप्रति सतिगुर लाइ दिवान। सुभट हजारहुं बैठहिं आनि ॥ २६ ॥
जो सनबंधी सभि तबि आवैं। संगति अनगन भेट चढ़ावै।
अधिक भीर गुर के चहुं फेरे। साहिबज़ादे चारहुं नेरे ॥ २७ ॥
इम नित मंगल होनि नवीना। निकटि व्याह को बासुर चीना।
श्री हरिगोविन्द हुकम बखाना। 'सजहु बराति त्यार बिधि नाना ॥ २८ ॥
सुनि आयसु सभि के चित चाऊ। बसन बिभूखन देहु सजाऊ।
सजि सजि सुन्दर वाहन नाना। भए अरूढ़न त्यार सुजाना ॥ २९ ॥
प्रथम ब्रिंद करि ले पकवाना। श्री हरिगोविन्द परम सुजाना।
तखत अकाल अरपि करि भले। श्री हरिमन्दर की दिशि चले ॥ ३० ॥
वसत्र बिभूखन शसत्र सु अंग। श्री गुरदित्ता शोभति संग।
सूरजमल को आगे कीनि। वाम भाग[1] अणिराय प्रवीन ॥ ३१ ॥
दिश दाहन श्री तेग बहादर। दास गोद महिं लीने सादर।
धीरमल्ल को तथा उचाए। संग सुसाहिब सिक्ख समुदाए ॥ ३२ ॥
जाइ थिरे दरबार अगारी। करि बन्दन प्रदच्छना धारी।
अन्तर प्रविशि जोरि कर खरे। तबि अरदास मेवरो करे ॥ ३३ ॥
'सुत पौत्र जुति सभि परवारै। श्री गुर रामदास सुख धारै'।
मसतक टेक सु निकसे बाहर। जिनको सभि जग मैं जसु जाहर ॥ ३४ ॥
चढ़े पालकी महिं गुनखानी। बादत[2] की धुनि ऊच उठानी।
दीरघ दैं दैं बजैं दमामे। ढोल पटे की धुनि मिल तां मैं ॥ ३५ ॥
डफ मुरली बहु बजहिं नफीरा। चढ़न समैं होई बड भीरा।
लौकिक वैदिक रीति घनेरी। नर त्रियन कीनसि तिस बेरी ॥ ३६ ॥
सभि बराति को भले चढ़ाइ। गावति मुरी सदन समुदाइ।
सूरजमल को आगे करिकै। गमने सकल हरख उर भरिकै ॥ ३७ ॥
उलंघे सलिता आइ बिपासा[3]। डेरा कर्यो तांहि तट पासा।
जथायोग सेवा सभि करी। करी मसंदन मिलि बहुतेरी ॥ ३८ ॥
निशा बिताइ चढ़े मग चाले। सुनि सुनि जाचक आए बिसाले।
लेति दरब, को हट्यो न खाली। कह्यो गुरू 'सभि देहु संभाली ॥ ३९ ॥
डेढजाम दिन बीतति आए। श्री करतारपुरा जिस थाए।
शक्कर गंग उदपान[4] जु पावन। श्री अरजन शुभ कर्यो लगावन ॥ ४० ॥

---

1. बाईं ओर। 2. बाजे। 3. ब्यास नदी। 4. कुँआँ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सहत बरात उतर तहिं परे। श्री गुरदेव तरोवरू तरे।
सम सूरज के बिजना होति। चमर दुरहि छबि करहि उदोति ॥ ४१ ॥

जो जो मंगतजन चलि आवै। ततछिन लै लै दरब सिधावैं।
डेढजाम लौ सभि बिसरामे। बसन बिभूखन तन अभिरामे ॥ ४२ ॥

प्रेमचंद नर पठि अगवाए। सनमाने सतिगुर सति भाए।
'महांराज ! अबि अन्तर चालो। निज मन्दिर बिसराम संभालो' ॥ ४३ ॥

सुन्यो सभनि 'अबि अंतर चाले'। बहु बादति धुनि ऊच उठाले।
चढ़ै छैल रथ चपल चलावैं। को स्यंदन[1] पर चढे सिधावैं ॥ ४४ ॥

केतिक गज अरूढ करि चले। धन बरखावति जनु घन भले।
बहु बरण[2] के गहे निशान। आगै गमननहिं शुभति महान ॥ ४५ ॥

गरी गरी महिं धन बरखायो। पुरि जन देखति अनंद बधायो।
अपने मन्दिर उतरे जाई। लै लै भेट मिले समुदाई ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'सूरज मल्ल ब्याह प्रसंग'** बरननं नाम खष्टमो अंशु ॥ ६ ॥

---

1. रथ। 2. रंग।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ७

# सूरज मल्ल ब्याह, तेग बहादर सगाई करन प्रसंग

दोहरा

महां कुलाहल पुरि बिखै होति भयो आनंद।
जिन जिन तिस छिंन गुर पिखे तिन फल पुंन बिलंद ॥ १ ॥

चौपई

प्रेम चन्द तवि पठी बटेरी[1]। सामनि बिलोकति खुशी घनेरी।
हित मिलनी के वहुर बुलाए। हुइ तियार चाले समुदाए ॥ २ ॥
सूरजमल वड़वा पर आछे। तेग बहादर शोभति पाछे।
तबि आतिशवाजी चलवाई। देखति लोक मिले समुदाई ॥ ३ ॥
कोंतक चरखी अधिक भ्रमावैं। को सज़ोर उड़ि गगन सिधावैं।
अधिक कुलाहल सुनहि बिलोकति। महां प्रकाश मतावी मोकति ॥ ४ ॥
प्रेमचन्द ले बहुत उपाइन। आनि पर्‌यो सतिगुर के पाइन।
तिह उठाइ करि कंठ लगायो। जगत रीति महिं गुर मन भायो ॥ ५ ॥
भयो निहाल अंग को लागा। प्रेमचंद उर अति अनुरागा।
प्रथम जन्म गन पुन्न सकेला। तिनहु दीनि फल, गुर गल मेला ॥ ६ ॥
ले दुलहु को द्वार सिधारे। बैदिक लौकिक करि बिवहारे।
पुन निकेत अपने चलि आए। कौतक होति अनेक सिधाए ॥ ७ ॥
बहुरो भोजन हेतु बुलाए। दिपहिं मतावी अरु फुलवाए।
जारति झारन ब्रिंद मसालैं। बादित बाजति नाद उठालैं ॥ ८ ॥
सनै सनै चालति परा डारति। लोक हजारहुं दरस निहारति।
प्रेम चन्द के सदन प्रवेशे। ले करि संग बरात अशेशे ॥ ९ ॥
चन्दन चौकी को डसवाइ। ऊपर सेत वसत्र को पाइ।
तिस पर सादर गुरू बिठाए। अपर पंकती अनिक लगाए ॥ १० ॥
बिच शोभति श्री हरिगोविन्द। उड ब्रिंदन महिं चंद मनिंद।
सूपकार[2] ततक्षण चलि आए। परूसन लागि असन समुदाए ॥ ११ ॥

1. शादी से पहले भेजी जाने वाली सामग्री। 2. रसोइया।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दूसर चौंकी पर धरि थार। गुर आगै खट रसनि अहार।
हुते चतुर, ततछिन सभि आगे। भोजन धर्यो, खान गन लागे॥ १२॥
श्री करतारपुरे की नारी। चढ़ि कोठनि पर उमड़ी सारी।
प्रथम दरस करि द्वै कर जोरे। बन्दन करी सभिनि गुर ओरे॥ १३॥
मन मैं भयो अनंद घनेरा। गावन लगी सकल तिस बेरा।
हुती अनुचित गुरू को गारी। तऊ भई उतसव बसि सारी॥ १४॥
लै लै नाम गांइ गन गीता। सुनि बरात हरखति सभि चीता।
मुसकावति भोजन को खाते। त्यों त्यों मोद रिदै अधिकाते॥ १५॥
त्रिपत होइ करि पान पखारे[1]। उठे जूठ महिं धन गन डारे।
बाजे बजति सदन कहु आए। पुन लखन के हेतु बुलाए॥ १६॥
गमने दुलहु कर्यो अगारी। पहुंचे बेदी जहा सुधारी।
सूरजमल बिठाइ करि खारे। पूजे गणपत जुति गैह सारे॥ १७॥
तबि कन्या तहिं आन बिठाई। अभिखेकन[2] करि अगनि जुराई।
करि सभि रीति लए पुन फेरे। दुहिदिशि दे धन लाग घनेरे॥ १८॥
पुनि निज सदन आनि सुख पाए। पौढे श्री सतिगुर सुपताए।
भई प्रभाति बजति बहु बाजे। शौच स्नान बसत्र तन साजे॥ १९॥
सूरजमल श्री तेग बहादर। सेवहिं दास ब्रिंद ढिग सादर।
भाट कलावत ढाढी आइ। धन को पाये महां जसु गाइ॥ २०॥
बहु बालिक हैं जिनके संग। सूरजमल सुन्दर सरबंग।
बद लघु महिं श्री तेग बहादर। पठे बुलाइ सदन महिं सादर॥ २१॥
प्रेमचंद की सुन्दर दारा। सिखि जमात[3] आनंद उदारा।
गन इस्त्री महिं तिह बैठाए। स्वादल मधुर अहार कराए॥ २२।
लालचन्द इक खत्री तहां। तिसी मेल महिं मेली अहा।
बिशन कुइर तिह सुन्दर दारा। रूपवती जिह भाग उदारा॥ २३॥
गन त्रियन महिं बैठी तहां। तिन श्री तेगबहादर लहा।
बूझे कित सम्बन्ध नहिं भयो। सुनति प्रमुदति बिचारन कयो॥ २४॥
गमनी पति के ढिग ततकाला। आन मनोरथ कह्यो सु ढाला।
'हे गुजरी दित! सुनहुं अनंद। श्री गुर के सम कौन बिलन्द?॥ २५॥
जिनके भाग उदय जग थिए। से सनबंधी गुर के भए।
पंच बरख की सुता हमारे। गुर के सुत हैं जुगल[4] कुआरे॥ २६॥

1. हाथ धोए। 2. तिलक। 3. जवई। 4. दोनों।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन ते आछो थान न कोऊ। जहां देहिं तनुजा[1] निज जोऊ'।
लालचन्द ने सुनि सनमानी। 'इह तैं नीकी बात बखानी ॥ २७ ॥
इस कारज मैं बिलम न कीजै। दिज को आज तहां पठि दीजै'।
दंपति कहि इम आपस महीआ। बिप्र बुलाइ पठ्यो तबि तहीआं ॥ २८ ॥
जहिं सतिगुरू दिवान लगाए। नर ब्रिन्दन महिं महां खुहाए।
मुख प्रसन्न जनु कमल प्रफूला। देति अनंद सभि मंगल मूला ॥ २९ ॥
बिप्र आशीरवाद को दीना। तबि गुरदास प्रिथक करि लीना।
सकल बाता कहि समुझाई। 'गुर सुत हित मैं आनि सगाई' ॥ ३० ॥
सुनि गुर ढिग गमन्यो तबि भाई। कही बारता बिप्र बताई।
करि सनमान बिठायहु पास। अणीराइ ढिग पठि गुरदास ॥ ३१ ॥
'बूझहु आशे करि निरजासू[2]। मानहि प्रथम, व्याह हुइ तासू।
पुन श्री तेग बहादर करैं। जिम जग रीति तथा अनुसरैं' ॥ ३२ ॥
सुनि गुर बच गमन्यो गुरदास। बैठ अणीराइ के पास।
जिस कै हरख सोग नहिं कोऊ। हान रु लाभ समानै दोऊ ॥ ३३ ॥
उसतति निन्दा मान अगाना। शत्रु मित्र नित लखहि समाना।
बिख अंम्रित अरु माटी हेम[3]। सम जानहि, ब्रिति आतम छेम ॥ ३४ ॥
बैठ्यो निकटि जाइ गुरदास। कही सगाई करिबे तास।
सम उनमत्त सुनति बच बोला। ब्रह्म ज्ञान महिं सदा अडोला ॥ ३५ ॥
'कहां नाम तुम कहउ सगाई ?। को कारज सुधरहि करिवाई ?'।
कहि समझायो 'रीति जगत की। सभि उतपत्ती अहै ग्रिहसत की ॥ ३६ ॥
जबहि ब्याह तबि हुइ घरवारो। आगै बंस वधहि परिवारो'।
सुनति बखान्यो 'मोहि न बाछे। बिना ग्रिहसत ते हम इमि आछे ॥ ३७ ॥
हरख शोक को मूल बिसाला। जाल कसावन को जंजाला।
अबि इकरस महिं ब्रितिनित झूलति। सरब जगत ममता नहिं भूलति' ॥ ३८ ॥
सुनि गुरदास करी तबि नमो। गुर के निकटि कह्यो तिह समो।
श्री हरि गोबिन्द तबहि बखाना। 'सदा मसत ही सो पहिचाना ॥ ३९ ॥
अबि श्री तेग बहादर धीर। बाल अरिबल दिपति शरीर।
तिस मसतक निकसवाहु टीका। करो सुधावति समो सु नीका' ॥ ४० ॥
तबि गुरदास जाइ करि कह्यो। जहिं श्री तेग बहादर लह्यो।
'गुरू हुकम करिवाउ सगाई। हेतु तुमारे सो चलि आई' ॥ ४१ ॥

1. बेटी। 2. निर्णय। 3. सोना।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनति कह्यो 'आइसु[1] गुर केरी। सभि सुभदा को सकहि न फेरी।
मानहिं सदा सीस धरि हम ही। देति दात जो होति न कम ही'॥ ४२॥

तबि भाई ने गणक[2] बुलायो। ले सतिगुर के निकट बिठायो।
सोधि महूरत भले सुनायो। आन बिप्र को तबहि दिखायो॥ ४३॥

श्री हरि गोविन्द के ढिग सादर। आनि बिठाए तेग बहादर।
दिज ने देखि आनंद को धारा। मुख पंकज महिं दीन छुहारा॥ ४४॥

उतसव महिं अति उतसव होवा। सभि बरात मिलि आनंद जोवा।
बाज उठे दुंदभि शदियाने। कौतक होति अनेक महाने॥ ४५॥

अधिक दान सतिगुर तबि दीना। मिले ब्रिंद जाचक धन लीना।
सभिनि बिखै छायो आनंद। दसहूं दिशि जसु भयो बिलंद॥ ४६॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'सूरज मल्ल ब्याह, तेग बहादर सगाई करन प्रसंग** बरननं नाम सप्तमो अंशु॥ ७॥

---

1. आज्ञा। 2. ज्योतिषी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ८

# शाहु प्रसंग

**दोहरा**

तीन दिवस जसु को रचित रहे नगर करतार।
प्रेम चन्द चित प्रेम वहु सेवे बिबिध प्रकार ॥ १ ॥

**चौपई**

करन बिसरजन हेत हकारे। बादित बजति आइ तिस द्वारे।
यथाशकति दाइज धरि दीनि। हाथ जोरि पुन कह्यो प्रबीन ॥ २ ॥
'मो ते सर्यो नहीं कुछ काजा। राखी लाज गरीब निवाजा।
इक दासी मैं दुहिता[1] दई। लखि अनाथ मैं करुणा भई ॥ ३ ॥
श्री हरि गोविन्द सुनति बखाना। 'दुहिता दीनि कहां रहि आना।
जथाशकति सेवा सभि कीनि। गुर सिखयनि की खुशी सु लीनि' ॥ ४ ॥
सुनि सतिगुर के बाक सुहाए। प्रेमचन्द नर गल हरखाए।
बहुर बसत्र आने समुदाए। गुर सिक्खयन गन को अरपाए ॥ ५ ॥
भाना साहिब अरु गुरदास। इत्यादिक जे सतगुर पास।
सभि ते खुशी लीनि हरिखायो। प्रेमचन्द जसु चन्द चढायो ॥ ६ ॥
दुहिला को बिठाइ करि डोरे। करे बिसरजन कर जुग जोरे।
खेमकौर निज तनुजा साथ। मिलति अंक गहि जननी हाथ ॥ ७ ॥
आगे करि डोरे कहु चाले। पाछे सूरजमल नर नाले।
प्रेम चन्द जुति सोभा देई। दम्पति हटि सनाथ भे तेई ॥ ८ ॥
पुत्र सुनूखा आगै करिकै। गमने सतिगुर वाहिन चरिकै।
घन सम धन गन को बरखावा। कीरति करति जाचकनि पावा ॥ ९ ॥
जथाजोग मिलि सभि के साथ। पाछे सरब हटाइसि नाथ।
सगल बरात तबहि चढि चाली। बादित की धुनि ऊचि उठाली ॥ १० ॥
सनै सनै मारग चलि आए। नदी बिपासा को उलंघाए।
निस बसि निज पुरि आइ पहूंचे। दुंदभि डंक हने तबि ऊंचे ॥ ११ ॥

---

1. बेटी।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुधि को पाइ प्रमोद बिसाला। इक थल भई नागरी जाला।
सूरजमल जननी हरखाई। चहुंदिशि ते सभि कहैं 'बधाई'॥ १२॥
सभि त्यारी कीनसि मरवाही। आगे लेनि उमंग मन माही।
गावति गीतनि मिली सुहागन। दूलहु दुलहनि पिखि अनुरागन॥ १३॥
इत सतिगुर ले थरि सु प्रसादि। तखत अकाल गए अहिलादि।
करिकै नमो भले बरताइ। पौर दरशनी गे समुदाइ॥ १४॥
थित ह्वै श्री दरबार अगारी। हाथ जोरि अभिबन्दन धारी।
दूलहु दुलहनि आगै करिकै। दई प्रदच्छना चहुं दिशि फिरिकै॥ १५॥
बहुर निकसि भे सुर असवार। बनी बरात चली सभि लार।
हयन[1] कुदावति केतिक जाते। श्री सतिगुरू सभि बिखै प्रयाते॥ १६॥
पुरि के नर नारी सभि बंदति। उतसव देखति अधिक अनंदति।
मरवाही थित ह्वै करि पौर। जुति दमोदरी त्रिय गन और॥ १७॥
सहित सुनूखा सुत को हेरा। करि कुल रीति सकल तिस बेरा।
ले अन्तर घर बिखै पधारी। बैठारी उमड़ी त्रिय सारी॥ १८॥
झोरी[2] दरब पाइ मुख देखा। करति सराहन हरख विशेखा।
सकल निवेस करे सुख पाए। सेवा जथाजोग करिवाए॥ १९॥
भई ब्याह की गाथा पूरी। सुनहु सिक्ख आगे जिम रूरी।
केतिक दिवस मेल सभि रह्यो। पुन निज सदन को चह्यो॥ २०॥
गयो नारायण दास स बाम[3]। दुआरा भागण गमने धाम।
रामा पहुंच्यो नगर वटाले। त्रेहण कुल खडूर को चाले॥ २१॥
गोइन्दवाल गए सुख पाए। धरमो अपने सदन सिधाए।
रामो जुति गा सांईदास। अपर सकल चलि पहुंचि अवास॥ २२॥
जथाजोग दै दै उपहार। करे बिसरजन[4] गुरू उदार।
साधू अरु भाना द्वै पास। राखे कहि करि गुरू सुखरास॥ २३॥
अपन पुत्र की जानि सगाई। रिदे नानकी बहु हरखाई।
सादर तेग बहादर हेरहि। प्रितपारहि, करि देहि बडेरहि॥ २४॥
सतगुर बसे सुधासर पुरि मैं। सेवहिं दास ज्ञान लहिं उर मैं।
भगतू भाई बहिलो आदि। जिनहुं अनंद को प्राप्ति स्वाद॥ २५॥
छठे मास आवहिं चलि जाहिं। इक दुइ मास बसहिं गुर पाहि।
केतिक नये सिक्ख्य नर बनैं। सेवहिं सतिगुरू शरधा सनैं॥ २६॥

---

1. घोड़े। 2. झोली में। 3. पत्नी के साथ। 4. विदा किया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

केतिक सिक्खयन के सुत आवहिं। निकटि रहैं गुर सेव कमावहिं।
इस बिधि केते दिवस बिताए। बह सिक्खन उर ज्ञान उपाए।। २७ ।।
शाहजहां चलि कै तिस काल। जहां जलंधर नगर बिसाल।
आनि तहां तबि डेरा घाला। लिए बाहनी साथ बिसाला।। २८ ।।
तहां पुत्र इक अबदुल खान। वली खान तिस नाम बखान।
पित भ्राता जिस के रण मारे। शाहु निकटि पहुंची न पुकारे।। २९ ।।
रह्यो संभारति अपन समाजा। तिन जानी मन—अवसर आजा।
मेल शाहु सों निशचै होवै। करिकै मिहर त्रिशटि को जोवै।। ३० ।।
सभि ब्रितान्त मैं देउं सुनाए। पित को पलटा लेहुं बनाए।
इम चितवति धन गन को लैकै। चपल तुरंगन त्यारी कै कै।। ३१ ।।
कंचन जीन जराउ डाले। जिन पिखि हरखहि शाहु बिसाले।
अपर वसतु गन सुन्दर लीनि। शाहु जहां को भेट सु दीनि।। ३२ ।।
किह उमराव मिलावन ठाना। देखि शाहु ने बाक बखाना।
'अबदुल-खान मिलयो नहिं आइ। नगर बिखैं नहिं जानयो जाइ।। ३३ ।।
शाहु जहां ते सुनि म्रिदु बानी। वली खान कर जोरि बखानी।
'हज़रत मोहि पिता जुग भ्राता। लै करि सैना संग प्रयाता।। ३४ ।।
हिन्दुन गुर श्री हरिगोविन्द। जहिं कहिं करि उतपात[1] बिलन्द।
ग्राम रुहेले अवनी[2] रोकी। तहिं छेड़ भगवान बिलोकी।। ३५ ।।
तिन बरजयो, सो ततछिन मार्यो। तिसको सुत इत आन पुकार्यो।
सुन मम पिता गयो तिस थाना। लर्यो गुरु कीनी घमसाना।। ३६ ।।
जुग सुत जुति[3] पित हति करि डार्यो। लशकर संग सकर ही मार्यो।
प्रथम रहे समुझाइ न मान्यो। पठ्यो दूत को निठुर बखान्यो।। ३७ ।।
चन्दू नन्दन, छेरड़ नन्दन। कर्यो कहर गुर करे निकंदन।
त्रास न पाइ कहूं ते साई। नरन हजारन की मृत्यु होई।। ३८ ।।
सभि को मारि बिसार्यो त्रास। रच्यो नगर अर अवनि अवास।
सुनि जुलमी को शाह रिसायो। उमरावनि प्रति हुकम अलायो।। ३९ ।।
'बीस हज़ार बाहनी जावै। गुर को पकरि मोहि ढिग ल्यावै।
बाज हेतु मैं कीनसि टारो। पुन लरि मुगलसखां रण मारो।। ४० ।।
जालन्धर सूबा बरियामू। सैना सहत पठ्यो जम धामू।
बहुर देश महिं पाइ फतूर। गुर के उर को डर भा दूर।। ४१ ।।

1. उपद्रव, झगड़े। 2. भूमि। 3. दोनों पुत्रों सहित।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इतने महिं वजीरखां आयो। रिस्यो लख्यो कर जोरि अलायो।
'प्रथम सुणी मैं इह बिधि सारी। अबि रावरि ढिग करौं उचारी ॥ ४२ ॥
सतिगुर पीर रूप उपकारी। सभि पर करुणा द्रिशटि निहारी।
हिन्दू तुरक एक सम जानहिं। सभिहिनि को उपदेश बखानहिं ॥ ४३ ॥
अलप ग्राम तिस थान निहार्यो। डेरा केतिक दिवस उतार्यो।
तहाँ तुरक मिलि आन उचारे। कारहिं निवाज न थान हमारे ॥ ४४ ॥
सुनि गुर तिन दीननि की बानी। तहां मसीत चिनावनि ठानी।
हिन्दुन पक्खी छेरड़ भयो। गुर को गारि निकारति भयो ॥ ४५ ॥
सुत को पठि करिकै इस थाना। कर्यो चढावनि अबदुलखाना।
जाइ लर्यो तिह बिना बिचारे। हते सुभट दस चतुर हजारे ॥ ४६ ॥
को मुहिंम करि इनहुं मराए। हज़रत के कुछ काम न आए।
इक मसीत को हेतु बिदारन[1]। कर्यो उपद्रव लशकर गारन ॥ ४७ ॥
जे हज़रत मरज़ी इम होइ। नहीं मसीत राखनी सोइ।
तौ मोकहु अबि आइसु देहू। मैं इक जाइ करौं तिस थेहू ॥ ४८ ॥
इस कौ चहियै दई सज़ाइ। करहु दूर मुख लगै न आइ।
घर खुदाइ हित रार[2] उठाई। नाहक सैन इति मरिवाई' ॥ ४९ ॥
सुनति शाहु उर मैं हरखायो। —गुर खुदाइ को धाम बनायो।
श्री नानक ते आदिक सारे। हिन्दु तुरक को भेद निवारे— ॥ ५० ॥
वलीख़ान को वहिर कढ़ायो। मनसब[3] छीन लोनि गहिवायो।
दियो दण्ड धन लियो घनेरा। बिसमति लोक हेरि तिस बेरा ॥ ५१ ॥
निस बिताई करि शाहि सिधारा। जाइ बर्यो लवपुरी[4] मझारा।
गुर के गुन मन अपने सोइ। चुगली उगलति कबहुं न कोइ ॥ ५२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सपतमि रासे '**शाहु प्रसंग**' बरननं नाम अष्टमो अंशु ॥ ८ ॥

---

1. ढ़ाने लिए। 2. झगड़ा। 3. पदवी। 4. लाहौर।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ९

# श्री गुरदित्ता बुड्ढण शाह मिलन और नगर बसावण प्रसंग

**दोहरा**

श्री सतिगुर करि व्याहु को ले करि पुत्रन संग।
हित अखेर[1] के त्यार ह्वै गमने चढ़े तुरंग॥ १॥

**चौपई**

अलप सैन लै संग सिधारे। चारहुं पुत्र हयन असवारे।
श्री अंम्रितसर को तवि छोरि। गमने प्रभू गिरनि की ओर॥ २॥
मन भावति सो करति अखेरा। निसा परी करि बाहर डेरा।
खान पान करिकै सुपताए। पुत्रन जति जे नर समुदाए॥ ३॥
भई प्रभाति जाग करि थिरे। सौच शनान समूहनि करे।
देश मनोहर परबत काछे। तिसे निहारनि सतिगुर बांछे॥ ४॥
सुन्यो प्रथम ही तिस दिशि मांही। श्री नानक नन्दन रहि तांही।
सिरी चन्द जिन बैस विलंदं। जोग ब्रिती को लेति अनंदं॥ ५॥
श्री हरिगोविन्द चह्यो—निहारैं। गमनैं तिस ही देश बिहारैं—।
इम चित धारति गिरा उचारी। 'तूरन त्यारी करि असवारी॥ ६॥
सुनति हुकम को सकल संभाले। ज़ीन तुरंगन ततछिन डाले।
खान पान करि हयनि अरोहे। सैन सहत सुत चारहुं सोहे॥ ७॥
परबत की काछर कहु गए। कितिक अखेरन खेलति भए।
बहुर जहां श्री नानक नन्द। पहुंचे तहिं श्री हरिगोविन्द॥ ८॥
उतरि तुरंग ते ले सुत चारी। श्री चन्द दरसे तप धारी।
चरन कमल पर बन्दन कीनि। पुन कर जोरि संमुख आसीन॥ ९॥
परम ब्रिद्ध जोगेशर हेरा। श्री बाबे सुत कहि तिस बेरा।
'कहु पुरखा! केतिक हैं नन्द[2]?'। तबि बोले श्री हरि गोविन्द॥ १०॥

1. शिकार। 2. पुत्र कितने हैं?



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'पंथ हुते इक भा परलोकहि। चतर आपको दरस बिलोकहिं ।
कह्यो श्री चन्द 'इक हम देहो। अपर आपने संग रखे हो' ॥ ११ ॥
सुनि करि गुरू श्री हरिगोविन्द। बड सुत अरपयो तबि श्रीचन्द ।
शसत्र बसत्र पहिराइ नबीन। ढ़िग बिठाइ करि बन्दन कीनि ॥ १२ ॥
श्री नानक सुत भयो प्रसंन। 'धरहु नम्रता यांते धंन ।
सभि किछ लीनो पूरब तुमै। टोपी रही हुती इहु समैं ॥ १३ ॥

सोपि लई तुम जुति बडियाई। तुमरी क्रिति तुमै बनिआई ।
इम कहि टोपी पिर ते लीनि। गुरदित्ते के सिरधरि दीनि ॥ १४ ॥
अपर पुत्र गुर के लखि चित्ता। भयो सु बावे को गुरदित्ता ।
इही बिशेशन सभि जग लहैं। 'श्री बाबा गुरदित्ता' कहैं ॥ १५ ॥
रिद्धि सिद्धि तप बल ते भरी। टोपी गुरदित्ते सिर धरी ।
केतिक द्योस रहे तिन पास। सुने भने बिबिध बिलास ॥ १६ ॥
चढ़े बन्दना करि चलि आए। सतद्रव[1] तट के थल दिखराए ।
बडो पुत्र समुझायो तबै। 'निज पुरि करहु बसावनि अबै' ॥ १७ ॥
श्री अंम्रितसर चलि पुन आए। बसि करि केतिक द्योस बिताए ।
जेषट पुत्र रिदै बहु प्यारे। सने सनेहु शरीर निहारे ॥ १८ ॥
लखी भविक्ख्यत गति चित माहूं। होनहार नहिं मिटैं कदाइं ।
सुत ते नगर बसावनि चाहा। जथा गुरन पुरि रदे उमाहा ॥ १९ ॥
इक दिन निकटि बुलाइ बिठाए। नंम्रि होइ थिर भे सुख पाए ।
कहति भये 'अबि कारज करो। सैलन दिशि सतद्रव को तरो ॥ २० ॥
केतिक परे अपर गिर अहैं। बुड्ढणशाहु सन्त इक रहैं ।
करति प्रतीखन धारति ध्याना। तुम को मिल्यो चहै तिस थाना' ॥ २१ ॥

श्री गुरदित्ते सुनि कर जोरे। किम बैठ्यो मेला किम तोरे ? ।
कहौं कहां मैं तिस को जाइ। को कारज मिलिबे हुइ जाइ ॥ २२ ॥

दया सिन्धु ! सभि भेत बतावहु। होइ मुह्य[2] भी तऊ सुनावहु ।
सुनि श्री मुख ते उचरनि लागे। 'श्री नानक पहुंचे तहिं आगे ॥ २३ ॥
रहति हुतो तहिं बुड्ढणशाहू। अजा[3] दोइ राखति नित पाहू ।
तिन पय[4] पानि करति सो रहै। तप महिं प्रीति प्रभू गुन कहै ॥ २४ ॥
बाला मरदाना संगि दोइ। श्री नानक देखति भा सोइ ।
लखे सन्त सेवनि करि चाहू। अजा दुगध आनति भा पाहू ॥ २५ ॥

1. सतलुज दरिया। 2. गुप्त। 3. बकरी। 4. दूध।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

—मैं बैठ्यो तुम चलि करि आए। उचित सेव के यों लखि पाए।
यांते दुगध धर्यो इह आनि। अचहु सन्त जी रूचि को ठानि—॥ २६ ॥
श्री नानक सुनि बूझनि कीनि। —तप को तपति सफल भी चीन ?।
उपजी शान्ति कि नहिं मन मांही ?। जतन अनेक करति हित जांही—॥ २७ ॥
सुनि ऊचे बच बुड्ढणशाहू। —तुमरो नाम सुनिनि चित चाहू—।
गुर रुख लख्यो भनै मरदाना। —इहु जग गुर श्री नानक जाना॥ २८ ॥
जिसको चाहति कुछ उदेशा। तिसके निकटि जाति जगतेशा—।
सुनति नाम पाइनि पर परिओ। कह्यो कि—मुहि निहाल[1] अबि करिओ॥ २९ ॥
सुनति हुतो जसु रावर केरा। मिलिबे चहिति रहति चित मेरा।
मन की जानि आनि अबि मिले। करे अधिक तप से फल फले॥ ३० ॥
अबि मम होइ गयो कलिआन। दरशन दीनसि दया निधान—।
इत्यादिक तबि बिनै बखानी। श्री नानक बोले शुभ बानी॥ ३१ ॥
—सत्तिनाम सिमरहु लिवलाई। तन हेता[2] कहु देहु उठाई।
मन इंद्रिय संबंध जि होना। इह बन्धन जानहु दुख जोना॥ ३२ ॥
मन ठहिरावहु रिदै मझार। नहिं सबंध इन्द्रय संगि धारि।
कूरम सम इकठो हुइ रहै। नहीं उथत इन्द्रय संग लहै। ३३ ॥
तिसको मुकति रूप पहिचान। इतो भेद लखि साधहु ध्यान—।
सुनि सतिगुर ते ब्रिती टिकाई। बुड्ढणशाह समाधि लगाई॥ ३४ ॥
जबि बैठे जुग जाम बिताए। बाले कहि करि लीनि जगाए।
जबि सुध भई चरन गुर गहे। —राखहु संग—जोरि कर कहे॥ ३५ ॥
—तुम प्रताप ते मन टिकि गइऊ। तनक भेद सुनि सभि किछु पइऊ।
अंम्रित बचन सुने—बिख द्वैत। दूर करी बड संकट हेत। ३६ ॥
त्याग्यो जाइ न संग तुमारा—। तबि श्री सतिगुर बाक उचारा।
—अबि तुव काज गयो सभि होइ। बैठहु मन सत्तिनाम परोइ॥ ३७ ॥
अधिक आरबल तेरी अहै। चिरंकाल हम पाछै रहै।
तबि लौ छठम सरूप हमारो। प्रान अन्त तन होइ तिहारो—॥ ३८ ॥
इम सुनि बिसम्यो बूझन लागा। —मैं किम लखौं धरे अनुरागा ?—।
तबि सतिगुर ने पते बताए। —रहहु प्रतीखति[3] देउं सुनाए॥ ३९ ॥
श्री गुरदित्ता गुर सुत होइ। तो कहु आनि मिलै जबि सोइ।
नगर बसावै सो तबि जानहु। तबि लौ सिमरि ध्यान को ठानहु॥ ४० ॥
चित मन थिरता को सिद्ध करिअहि। परे द्वैत के बन्धन हरीअहि—।
इम कहि श्री नानक प्रसथाने[4]। तबि को तहां ध्यान सो ठाने॥ ४१ ॥

1. प्रसन्न। 2. अहंभाव। 3. प्रतीक्षा करते हुए। 4. चल दिए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुर गुर सिमरत करति उडीका। भयो महां शुद्धि जिस उर नीका।
तिस को मिलहु करहु पुन डेरा। नगर बसावहु आपन केरा ॥ ४२ ॥
जथा रचे पुरि बडे हमारे। तिम तुम रचहु अपन पुरि भारे।
हमरे होवति ही रचि लीजहि। केतिक दास अपन तहिं कीजहि ॥ ४३ ॥
पुन नुव सन्तति[1] गादी लेहि। बसहि काल चिर सहत सनेह।
इस कारज हित गमन करीजै। अबि शुभ समो नगर रचि लीजै' ॥ ४४ ॥
श्री गुरदित्ता सुनि विधि सारी। हरखति तुरत करी तवि त्यारी।
धन गन श्री सतिगुर ते लीनि। तीन मात को बन्दन कीनि ॥ ४५ ॥
पुन दरबार प्रकरमा फिरिकै। हाथ जोरि अभिवन्दन करिकै।
चढि गमन्यो सभि शसत्र लगाए। नती सयंदन चढ़ी चलाए ॥ ४६ ॥
धीर मल को लीने गोद। अधिक दुलारति करे प्रमोद।
तीन निसा बसि पहुंचे जाइ। संग मसंद दास समुदाइ ॥ ४७ ॥
डेरा कीनि सैल के तीर। तम्बू तान थिरे वर बीर।
इक दुइ दिवस प्रमुदति गुज़ारे। पुरि हित खोजहिं थान निहारे ॥ ४८ ॥
ऊपर परबत के तबि गए। बुड्ढणशाह बिलोकति भए।
श्री नानक बच सिमरति सोई। --गुर सुत आइ दुगध ले जोई ॥ ४९ ॥
ब्रिद्ध महां इन कौ तबि त्यागौं। श्री गुर के दर्शन अनुरागौं—।
घोरे पर ह्वै कै असवार। श्री गुरदित्ता चढ़े पहार ॥ ५० ॥
कुछक परे कानन[2] को हेरा। अजा चरावति शेर बडेरा।
बुड्ढणशाह परे तबि बैसा। तप सूरत धारी हुइ जैसा ॥ ५१ ॥
परम ब्रिद्ध जरजरा शरीर। पिखि श्री गुरदित्ता कहि धीर।
उठहु सन्त जी ! पै[3] मुझ दीजै। गुर सुत अहों छुधति[4] लखि लीजै ॥ ५२ ॥
बानी सुनति अनंद बिलन्दे। उठि तूरन ही जुग पद वन्दे।
गीर रकाब को तरे उतारे। बैठारे त्रिण छित कुछ डारे ॥ ५३ ॥
आनि अजा को दुगध पिलायो। पूरब को प्रसंग सभि गायो।
श्री गुरदित्ते सुनि करि कह्यो। 'नगर बसावनि को हम चह्यो ॥ ५४ ॥
कहां रचहिं सो देहु बताई ?। कुछ आगल सुधि कहो बूझाई।
श्री नानक के मेलो अहे। चिरंकाल तप तावति रहे' ॥ ५५ ॥
सुनि बोल्यो तबि बुड्ढणशाहू। 'सतिगुर कह्यो सकल तुम पाहू।
कुछक अहै मो ले सुनि लीजै। इस गिर निकटि नगर को कीजै ॥ ५६ ॥

1. संतान। 2. जंगल। 3. दूध। 4. भूखा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इहां निवास तुमारो होइ। श्री गुरू संग आइ सभि कोइ।
करि संग्राम पहूचहिं इहां। होहिं तुरक संघारन महां ॥ ५७ ॥
तन तजि गुर परलोक पधारैं। तुमरे सुत बहु सुजसु बिथारैं।
पुरि महिं बासहिंगे चिरकाल। सिक्खी को बिसतरहिं ब्रिसाल ॥ ५८ ॥
श्री नानक बच सिमरन धरौं। श्री हरि गोविन्द दरशन करौं।
गुर करुना ते कीनि कमाई। निकटि पहूँचौं चरन मनाईं ॥ ५९ ॥
इम कहि रह्यो मौन को ठानि। श्री गुरदित्ते सुनि सभि कान।
उतरे गिर ते तबि चलि आइ। लगे बिलोकनि थान सुहाइ ॥ ६० ॥
कारीगर मजूर बुलिवाए। सत्तिनाम कहि गुरू मनाए।
बांट्यो सभि महिं बहु मिषटान। टक्क लगायो अपने पान[1] ॥ ६१ ॥
रचन लगे कारीगर घने। सुन्दर मन्दिर बहु बिधि चिने।
जहिं कहिं ते गन लोक बसाए। गुरपुरि जाति भए समुदाए ॥ ६२ ॥
श्री गुरदित्ता सभि सुख दै कै। नर सकेलि करि तहां बसै कै।
बसे आप भी बहु सुख पाइ। सभि की सुधि संभारि चित लाइ ॥ ६३ ॥
धरे गरभ नत्ती बडभागन। बसहि सदा पति की अनुरागन।
पातशाह सपतमे प्रसूत। बधति चन्द सम गरभ सपूत ॥ ६४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'श्री गुरदित्ता बुड्ढण शाह मिलन और नगर बसावण प्रसंग'** बरननं नवमी अंशु ॥ ९ ॥

---

1. हाथ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १०

# अखेर प्रसंग

**दोहरा**

धर्यो गर्भ सपुत्र को बध्यो सु अधिक अनंद।
श्री गुरदित्ता चित विखै चितव्यो—अबि हुइ नन्द[1] ॥ १ ॥

**चौपई**

इस नमित्त करि नगर बसायहु। 'गुर कीरति पुरि' नाम अलायहु।
मन महिं इही मनोरथ राखा। इसी पुत्र हित रचि पुरि कांखा[2] ॥ २ ॥
सुख के सहत बसे, दिन टारे। खिलहिं अखेर होहिं असवारे।
सुभट संग चढ़ि बिचरहिं बाहर। दिन प्रति बस्यो नगर भा ज़ाहर ॥ ३ ॥
उत श्री हरिगोविन्द की गाथा। सनहुं सन्त सिख प्रीती साथा।
सुभटन ब्रिन्द सकेलनि करैं। आयुद्ध विद्या[3] महिं हित धरैं ॥ ४ ॥
छोरहिं बान तुफंगन[4] भरि भरि। हतहिं निशानौं आगै धरि धरि।
कबहुं अखेर ब्रित्ति को करैं। म्रिगन उधारैं प्रान जि हरैं ॥ ५ ॥
सिक्ख संगति चहुं दिशि ते आवहिं। मन वांछति गुर ते बर पावहिं।
कीरत किधौं मालती फूली। पंकति किधौं मरालन[5] भूली ॥ ६ ॥
किधौं चन्द्रिका जगत बिथारी। पारद सम उचरहिं नर नारी।
चहुंदिशि महिं जहिं कहां सुहेली। राइबेल[6] कै खिरी चंबेली ॥ ७ ॥
जोधा गुरू महां उपकारी। रिदै ज्ञान घन सदा इक सारी।
देश बिदेशनि सगल जहान। तुरत सहाइक हुहिं सुखदान ॥ ८ ॥
अनिक कामना हलति मझारी[7]। पुरवहिं सिक्खनि बिरद सम्भारी।
पलत[8] रिखैं निज सेवक सारे। जम पीरा ते लेति उबारे ॥ ९ ॥
जानहिं जग महिं पीर अनेक। गुर बड समरथ जलधि बिवेक।
सिद्ध तपे पंडित ब्रह्मचारी। प्रभु मारग के जे हितकारी ॥ १० ॥

---

1. पुत्र। 2. इच्छा। 3. युद्ध कला। 4. बंदूक। 5. हंस। 6. एक लता।
7. इस लोक में। 8. परलोक।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाना बिधि जे शकति धरैया। सभि सतिगुरू की चहति सहैया।
शरणी पर्यो आनि करि जोऊ। दुहि लोकनि सुख पावति सोऊ॥ ११॥
बखशे श्री गुरू अमर अनेक। रामदास गुर दीनि बिबेक।
श्री अरजन ते ज्ञान जि लहे। इनहुं बिखे जीवति जे रहे॥ १२॥
सभि आवहिं गुर के दरबार। दरशन परसि लहैं सुखसार।
केतिक गुर के निकटि रहंते। केचति घर देशनि बिचरंते॥ १३॥
सिक्ख्य बनावहिं जहिं कहिं जाइ। बिसथारहिं सिक्खी सभी थाइं।
भाई वहिलो भगतू आदिक। देश बिदेश करहिं सिख सादिक॥ १४॥
इम गुर सिक्ख्यनि के बहु सिक्ख। होहिं लखहिं सभि भूत भविख।
साहिब भाना गुर ढिग रहै। सेवति, वाक सुनै अरु कहै॥ १५॥
ब्रिन्द मसंद बिलंद अनंदति। धन को आनि गुरू पद बंदति।
चहुंदिशि ते बहु गुर की कार। चली आइ कुछ वार न पार॥ १६॥
तिम ही खरच, हमेश विशेशू। कार चलाइं मसंद अशेशू।
करहिं तुरंग खरीदन भारे। बरतहि देग अर्चहिं नर सारे॥ १७॥
जग महिं दोनहु वसतू सार। देग रु तेग करनि जैकार।
सो गुरू घर महिं भई उदारा। जिह पिखि बिसम रह्यो जग सारा॥ १८॥

इक दिन सतिगुर चढ़े शिकार। भये संग तबि सुभट हज़ार।
बिधीआ, जेठा, साहिब भाना। साधू, पैंदेंखान पयाना॥ १९॥

इत्यादिक सभि गुर के संग। चले कुदावति चपल तुरंग।
प्राति हुती बिचरे उदियान। जबि लौं घाम[1] न भयो महान॥ २०॥

हने ससे सूकर उठिवाए। ग्राम वडाली को चलि आए।
जानि तपत को उतर परे हैं। नाना भांति अहार करे हैं॥ २१॥

श्री हरिगोविन्द जनम स्थान। जिस देखति ते पुंन महान।
गये सकल ही दरशन करिबे। वन्दन करहिं भाउ वड धरिबे॥ २२॥
भाना, साधू आदिक जाइ। भई भीर पिखि आनंद पाइ।
सभिनि सुनाइ गुरू तबि कहे। 'इह ठां जनम सु खेलति रहे॥ २३॥
रिङमाण[2] हुई अजर बिहारे। सने सने चलि पग वल धारे'।
सुनि भाने कर जोरि बखाना। 'जिम ब्रिज बिचरे पावन थाना॥ २४॥
तथा भूमिका इही सुहावै। दरशन ते अघ ओघ[3] नसावैं'।
तहां टिके कीनसि बिसरामू। जबि दिन रह्यो सवा इक जामू॥ २५॥

1. गर्मी। 2. रेंगने की क्रिया। 3. समूह पाप।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कूप छिहरठे को चलि गए। भंग पान करि सोचन किए।
अधिक घाम ते करहिं सनान। जल शरीर पर पाइ महान ॥ २६ ॥
निरमल ते बहु सीतल भए। मन भावति जल ऊपर पए।
बसत्र शसत्र पहिरति सवधान। शोभति सुभटन साथ महान ॥ २७ ॥
इक राहक[1] चलि करि तबि आयो। हाथ जोरि करि बाक सुनायो।
'महांराज ! इक सूकर भारा। करहि सदा क्रिखि[2] ब्रिन्द उजारा ॥ २८ ॥
श्री हरिगोविन्द सुनति अनंदे। चढ़े तुरंगम बलि बिलन्दे।
राहक आगै कीनि पयाने। सुभट पिछारी चढ़ि प्रसथाने ॥ २९ ॥
झार तरे थिर जाइ निहारा। सुनति शबद सूकर भभकारा।
निकसि वहिर को भाज्यो घनो। श्री हरिगोविन्द मघवा[3] मनो ॥ ३० ॥
ग्रस्यो चन्द को दौर्यो राइ। चहनि छुराइ न छोरी ताइ।
तबि सतिगुर पैंदा ललकारा। 'जान न पावै शूकर भारा' ॥ ३१ ॥
श्री गुर कर्यो तुरंगम धीरा। बेग कर्यो पैंदे बर बीरा।
केतिक दूर पिछारी गयो। करे नेर शूकर घिर भयो ॥ ३२ ॥
तोमर हित मारन संभारा। रिस्यो कोल[4] अर रह्यो जुझारा।
घुर घुर करति समुख को आयो। लग्यो न पैंद प्रहार चलायो ॥ ३३ ॥
हय के करी चोट ततकाला। घायल ह्वै नहिं गयो संभाला।
बिखम भूमिका महिं तबि घोरा। डर पथक्यो पिखि शूकर घोरा ॥ ३४ ॥
गिर्यो पैंदखां नहिन संभार्यो। गुर धवाइ हय, जबहि निहार्यो।
खड़ग निकासे जबि नियरावा। रुपयो कोल सनमुख ही आवा ॥ ३५ ॥
खरी दूर सभि चमूं[5] निहारै। गुरू बिना अबि को नहिं मारै।
अतिशै निकटि ग्राइ जबि गयो। हतन प्रहार तुरंग को भयो ॥ ३६ ॥
इक रकाब के हुइ करि भार। सतिगुर कीनसि खड़ग प्रहार।
लग्यो प्रिष्ठं महिं भयो दुखण्डं[6]। किम अटकहि बलि तेग प्रचण्ड ॥ ३७ ॥
साधू भाना तत्तछिन आए। मासल वली कोल दिखराए।
बिकसि बदन ते अगनि सरीखा। गुरू अर इक भाने कहु दीखा ॥ ३८ ॥
श्री हरिगोविन्द के पद बन्दे। चर्यो चहति चित अधिक अनंदे।
बूझ्यो भाने साहिब तबै। 'अहैं कौन ?, मुहि को कहु सबै' ॥ ३९ ॥
सुनि तिन अपनि प्रसंग सुनायो। जिस ते कोल जनम को पायो।
'श्री अरजन को मैं सिख भारी। मात गंग जबि बीड़[7] पधारी ॥ ४० ॥

1. ज़िमींदार। 2. खेती। 3. इंद्र। 4. सूअर। 5. सेना। 6. दो टुकड़े।
7. जंगल।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गयो बतावति आगे तहां। ब्रिद्ध साहिब[1] जी बैठे जहां।
पिखि सयंदन[2] को गिरा उचारी। —गुर घर ने भाजड़ कित धारी?॥ ४१ ॥
सुने मैं कोप कीनि लखि बैठा। जानि अजोग नाक मैं ऐंठा।
—राहक ! तू गवाह ही रह्यो। गुर घरनी कहु समुझि न कह्यो॥ ४२ ॥
नहीं सुभाव जाति को जावैं। उचित न जानै, तऊ अलावै—।
पिखि मम कोप श्राप तबि दीना। —धरहु नीच शूकर तन पीना—॥ ४३ ॥
सुनि मैं श्राप रिदे पछुताए। —ब्रिद्ध को बाक साच हुइ जाए।
होइ दीन मैं बूझे फेरा। —श्राप अन्त कबि हुई है मेरा ?॥ ४४ ॥
मम बिनती सुनति करुणा धरी। श्राप अन्त भाख्यो तिस घरी।
—श्री गुर अरजन के हुइ नन्द। आयुद्ध धारनि बिखै बिलन्द॥ ४५ ॥
करति अखेर तोहि कछु मारैं। तन बिराह ते तबहि उधारै—।
तबि को मैं शूकर तनि पाइ। विचरति रह्यो वडाली थाइ॥ ४६ ॥
अबि सतिगुर ने आनि उधारा। खिलति अखेर मोहि को मारा'।
इम कहि परम गती कहु गयो। भाना साधू सुनि बिसमयो॥ ४७ ॥
तहां दमदमा कुछ बनिबाइ। बैठे पैंदा लीनी बुलाइ।
बूझी कुशल कीनि सनमाना। कितिक देरि महिं कीनि पयाना॥ ४८ ॥
भाने साथ कथति गथ आए। 'जो सिक्ख ब्रिंद की निन्द अलाए।
सुनि के श्राप सभिनि दुख माना। सो तन धरि म्रिग पंछी नाना॥ ४९ ॥
हित अखेर के तिनहिं संहारों। अघ मिटाइ करि सिक्ख उधारों'।
इम कहि सुधा सरोवर आइ। बैठि अकाल तखत छबि पाइ॥ ५० ॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमी रासे '**अखेर प्रसंग**' बरननं नाम दशमो अंशु॥ १० ॥

---

1. बाबा बुड्ढा। 2. रथ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ११

# अखेर प्रसंग

दोहरा

इस बिधि हरिगोविन्द गुरू करति बिलास उलास ।
दासनि के हरि त्रास को दें आपनि भरवास ।। १ ।।

चौपई

एक दिवस श्री अम्रितसर के । तट पर बैठे भजन करिके ।
दुखभंजनि बदरी[1] असथान । सुभट मसन्द सिक्ख तहिं आनि ।। २ ।।
सतिगुर के चहुं गिरद सुहाए । जथा चन्द परवारनि पाए ।
दुखभंजनि को सकल प्रसंग । भाना बूझति भा गुरू संग ।। ३ ।।
श्री हरिगोविन्द तबहि बखाना । 'इस बदरी ते तीरथ जाना ।
कुछ चौथे सतिगुर करि गए । श्री गुरू पंचम खोजति भए ।। ४ ।।
राज सुता कुषटी पति धर्यो । आपी जाइ कित मांगनि कर्यो ।
बाइस[2] को पिखि कुषटी गिर्यो । जल मज्जन ते भा तन हर्यो ।। ५ ।।
आइ पिख्यो प्रतीति न धरै । —अपर पुरख इहु— शंका करै ।
श्री सतिगुर जी निकटी सिधारी । सगरी गाथा दुहिनि उचारी ।। ६ ।।
सुनि प्रसन्न होइ गुर तबि कहा । --तेरो पति इहु कुषटी अहा ।
चलि हम को सो थान दिखावहु । मन बांछति बर हम ते पावहु ।। ७ ।।
आइ संग ले गुरू को इहां । कर्यो बिलोकन तीरथ महां ।
बदरी को 'दुखभंजनि' नाम । श्री गुर पित राख्यो अभिराम ।। ८ ।।
करिवाई पाकी सौपान[3] । श्री हरिमन्दिर बीच महान ।
कुषटी त्रिया ने जाच्यो बर को । –प्रभु जी ! दिहु समाज सभि घर को ।। ९ ।।
तबि सतिगुर त्रिय पिता बुलायो । पट्टी पुरि जिन राज कमायो ।
निकटि बिठाई प्रसंग सुनावा । —पतिब्रत तेरी सुता कमावा ।। १० ।।

---

1. बेरी । 2. काग । 3. पवित्र पौड़ी ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पति कुषटी के रहि करि संग। अबि इह भयो रोग बिन अंग।
तू सुत हीन, सुता सुत जान। देहु राज अबि, बिनसहिं प्रान ॥ ११ ॥
भयो ब्रिद्ध तब वैस बिहाई। ले गमनहु अबि संग जवाई—।
गुर बच मान्यो, ग्रितु ढिग जानी। देति भयो अपनो रजधानी ॥ १२ ॥
यांते भाना! सुनि दै कान। महिमा महां सुधासर जानि।
गंग, जमन, सरसुति कुरखेत। कांशी, अरु प्रयाग समेत ॥ १३ ॥
नईमखार, ब्रिन्दावन, मथुरा। द्वारावती, रामपुरी, सुथरा।
गया, गोमती, नदि गोदावरी। अपर नरमदा, मान-सरोवर ॥ १४ ॥
पुरी अयुद्धया, अरु केदार। पुषकर देव सथान उदार।
नदी गंडकां बर गिर नीला। थल रिखि सिद्धनि जहिं रचि लीला ॥ १५ ॥
रिखीकेश, आवन्ति, कटाख। तीरथ अनगन जे अभिलाख।
कलि महिं इन कहुं महां प्रताप। इहां आनि सभि खोवैं पाप ॥ १६ ॥
नहीं सुधासर के सम कोइ। भजन अखण्ड प्रभू को होइ।
सरब कामना पुरवहिं मन की। जे मज्जहिं[1] करि सुचता तन की' ॥ १७ ॥
बहु महिमा श्री मुख ते कहिकै। चले करति प्रदछना चहि कै।
तखत अकाल बैठि मन भाए। मन्दिर बिखै बहुर गुरू आए ॥ १८ ॥
एक दिवस पावस के मांही। छाई गगन घन[2], घाम सु नांही।
होति सकार[3] शिकार पयाने। जित बासरके ग्राम सथाने ॥ १९ ॥
श्री गुर अमरदास को थाना। करि दरशन को बन्दन ठाना।
संग सुभट साधू अरु भाना। करि बन्दन को बाक बखाना ॥ २० ॥
'प्रभु जी! इहु सथान किस केरा?। भाउ नंम्रता धरि तुम हेरा?'।
सुनि सतिगुर सभि कथा सुनाई। 'श्री गुर अमर छये इस थांई ॥ २१ ॥
ब्रिद्ध साहिब तबि आइ निकारे'। सुनि करि गाथ अनंदति सारे।
कितिक समैं तहिं बैठन करिकै। गमने पुन तुरंग पर चरि कै ॥ २२ ॥
मन्द मन्द मारग महिं जाते। भाने संग करति सभि बाते।
बरे बीर[4] महिं बीरन बीर। ब्रिद्ध साहिब इस थल के तीर ॥ २३ ॥
पास चलति गुर के, गुरदास। तिस दिशि देखि कह्यो सुखरास।
'ब्रिद्ध साहिब को बसन सथान। हुतो कहां? तिह करहु पछान ॥ २४ ॥

1. जो स्नान करते हैं। 2. बादल। 3. प्रभात। 4. बीड़, जंगल।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चिर लगि संग रहे तुम दोऊ। गुर घर के अग्री[1] सिक्ख जोऊ।
सुनति चल्यो गुरदास अगारी। तिह सथान की कीनि चिनारी ॥ २५ ॥
हटि करि कह्यो 'आप इत आवहु। चहहु जु थल दिस दरशन पावहु'।
सुनति बाक हय[2] तो तबि प्रेरा। तुरत पुनीत थान को हेरा ॥ २६ ॥
ब्रिद्ध सम जानि करी तबि बन्दन। सिमरि सिमरि तिन के गुन ब्रिन्दन।
भाना भूर भावना[3] करि कै। नमो कीनि भूतल सिर धरि कै ॥ २७ ॥
अपर सरब ही बन्दन ठानैं। पिखि श्री सतिगुर बाक बखानैं।
'मंजी सुन्दर इहां बनावहु। होहि प्रात के सभि सुधरावहु ॥ २८ ॥
आइसु दीनसि करन अहारू। फरश कराइ थिरे थल चारू।
'बीड़ भयो गुर को किस भांति ?'। भाने बूझनि कीनि ब्रितांत ॥ २९ ॥
तबि सतिगुर सभि गाथ सुनाई। 'जैमल फतेशाह लराई।
चलि अकबर श्री गुर ढिग आयो। महिमा जानी सीस निवायो ॥ ३० ॥
इह सभि अरपे ग्राम अकोर[4]। कहि बहु बार निहोरि निहोरि।
तबि को बीड़ गुरू ढिग रह्यो। ब्रिद्ध साहिब बहु बासा लह्यो ॥ ३१ ॥
इत्यादिक बहु बाक बिलास। करति रहे मुख कमल प्रकाश।
सुन्दर सुखद सघन घन छाया। सीतल समैं सभिनि मन भाया ॥ ३२ ॥
पौन गौन को निबहति मन्द। श्री हरिगोविन्द दिपति अनंद।
चहुंदिशि मैं हरियावल दिखीअति। इन्द्र बधू ब्रिन्दै विच पिखीअति ॥ ३३ ॥
जनु अविनी मन आनंद पोई। नील उटनी लीनी सोई।
बहुत बहार बिलोकति गुरू। इत उत बिचरति जनु अरिरूरू ॥ ३४ ॥
स्वाद बिविध बिधि त्यार अहारा। सूपनिकार परोस्यो थारा[5]।
पावन अवनी को करि ल्याए। चन्दन चौंकी गुरू सुहाए ॥ ३५ ॥
ले पानी, जुग पान पखारे। कवल करे मुख कवल सुधारे।
चित वांछति भोजन को खाए। 'सभि को पहुंच्यो' सुधि मंगवाए ॥ ३६ ॥
तबि दासन प्रयंक[6] डसावा। आसतरन उज्जल सौं छावा।
तिस पर पउढे हित बिसराम। उठे पुनहि दिन बाकी जाम ॥ ३७ ॥
कर्यो पान सुधा सुखदाए। सुचता करि सनान हरखाए।
पहिरे बसत्र बिसद बर झीने[7]। शसत्र जथोचित धारन कीने ॥ ३८ ॥

---

1. मुखिया। 2. थोड़ा। 3. बहुत श्रद्धा। 4. भेंट। 5. थाल। 6. पलंघ। 7. बारीक वस्त्र।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

थल मंजी के पुन चलि गए। 'पुत्र थान इहु' उचरति भए।
'जो नर दरशन के हित आवैं। क्यों न कामना मन की पावैं ?॥ ३९॥
समा पाइ मेला लगि जैहै। खषटकोस गुरपुरि ते ऐहैं।
ह्य आरूढ भये तबि प्रेरा। हेरति खेलि अखेर घनेरा॥ ४०॥
सुधा सरोवर को चलि आए। संग सरब ही भट समुदाए।
तखत अकाल सु लग्यो दिवान। देखि उठे सभि हित सनमान॥ ४१॥
बन्दन करि बैठे तिह समैं। 'सोदर'[1] पठि सगरे तबि निमैं।
श्री गुर उठि हरिमन्दिर गए। करी प्रदच्छना बंदति भए॥ ४२॥
पुन निज मंदिर गए गुसाईं। सुपत जथासुख राति बिताई।
भई प्रभाति, कीनि तन मज्जन। बैठे गुर चहुंदिशि मिल स्वजन॥ ४३॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे 'अखेर प्रसंग' बरननं नाम एकादशमो अंशु॥ ११॥

1. संध्या की वाणी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १२

# श्री अरजन को प्रसंग

**दोहरा**

इस प्रकार श्री सतिगुरू केतिक दिवस बिताइ।
पावस मास सु भाद्रपद आवति भा सुखदाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

इक दिन बैठे क्रिपा निधाना। ब्रिन्द मसंदन संगि बखाना।
'लिखो हुकम नामे सभि थान। जहिं सिख संगति अहै महान ॥ २ ॥
तीरथ तरन-तारन चलि आवैं। दिवस दरश के दरशन पावैं।
करहिं शनान लहैं फल चार'। सुन्यो मसंदन, लिखे सुधारि ॥ ३ ॥
भाद्रों वंदि दशमी जबि भाई। श्री सतिगुरु त्यारी करिवाई।
सभि परिवार साथ भा त्यार। तीरथ करनि शनान उदार ॥ ४ ॥
चढ़ि दमोदरी सयंदन मांही। अपर नानकी चली म्रवाही।
सुनुखा खेम कुइर चढ़ि डोरे। संगति संग चली बहु ओरे ॥ ५ ॥
गुरू तनुजा[1] बीरो बडभागन। माता संग चढ़ी हरखति मन।
श्री सतिगुरू आए दरबार। करी प्रदछना बन्दन धारि ॥ ६ ॥
सगरे संग वहिर तबि आई। चढ़ि खासे[2] पर गुरू सुहाइ।
अणीराय सूरजमल संग। तेग वहादर चढ़े तुरंग ॥ ७ ॥
सयंदन पर गुरदास चढ़ाए। अपर चलि सभि ह्य हरखाए।
बडी भीर मारग महिं चाले। सुभट मसन्द लीए गन नाले ॥ ८ ॥
डेढक जाम बिखै चलि गए। तीरथ दरस बिलोकति भए।
पूरब दिशि को कर्यो निवेस। उतर्यो आनि कुटुंब अशेश ॥ ९ ॥
खान पान आछे करिवाए। करति बिलासन द्योस बिताए।
तीरथ श्री अरजन जिम कर्यो। सरब प्रसंग सु गुरू उचर्यो ॥ १० ॥

---

1. पुत्री, वीरो। 2. पालकी।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भावा आदि सुनति हरखाए। त्रौदसमी चौदश नर आए।
धरहिं अकोरन[1] वन्दन ठानैं। उतरहिं तीरथ तीर सनानैं॥ ११॥

दिवस अमस्या मज्जन ठानि। गमने श्री अरजन के थान।
सतिगुर सभा बिसाल लगाई। संगति आइ आइ समुदाई॥ १२॥

अधिक तिहावल[2] को बरतावै। बसत्र दरब की भेट चढ़ावै।
करहि कामना की अरदास। पुरवहि श्री सतिगुरू के पास॥ १३॥

श्री हरिगोविन्द गिरा वखानी। 'महिमा तीरथ पुन्य महानी।
सभिनि अमावस करहिं सनान। सुत आदिक फल लहैं महान॥ १४॥

भाद्रों दरस महातम महां। करहि सनान आनि जे इहां।
अघ ओघन को करहिं बिनाश। बिमल होहिं पुरवहिं सभि आस॥ १५॥

दिवस आज के पूरन मेला। होइ सदा नर नारि सकेला।
आधि न व्याधि उपाधि न व्यापैं। जे मर्जहिं अरु जपुजी जापैं॥ १६॥

सुनि अनंद सभि के मन होवा। महां महातम तीरथ जोवा।
तीन दिवस संगति रहि पास। करि करि बंदन गए अवास॥ १७॥

तिस दिन सतिगुर कर्यो मुकामू। बच गुरदास भने अभिरामू।
'द्वादश कोसन चोला[3] नाम। श्री अरजन थल है तिस ग्राम॥ १८॥

चलहु तहां दरशन करि लीजै। नर नारनि किरतारथ कीजै।
सुनि मानी श्री हरिगोविन्द। चढ़े प्राति संग सैना ब्रिन्द॥ १९॥

सगल कुटम्ब लिए निज साथ। जाइ पहुंचे दीनानाथ।
श्री अरजन थल के ढिग डेरा। करि बैठे महिं दरशन हेरा॥ २०॥

तीर तीर जे ग्राम बसंते। गुर आगवन जानि पहुंचते।
लै लै दुगध दधी[4] समुदाए। चहुंदिशि ते चौंपति चलि आए॥ २१॥

श्री हरिगोविन्द पिता सथान। कीनि प्रदछर्न बंदन ठानि।
बैठि गए तहिं सभा लगाई। सिक्ख संगति पहुंचे सभि आई॥ २२॥

कर जोरति अरु नमो करंते। रसद अन्न को गन अरपंते।
जथा शकति घ्रित पै दधि ल्याए। चहति श्रेय को आनि चढ़ाए॥ २३॥

शबद कीरतन सुन्दर होति। जिस उर बासे ज्ञान उदोति।
मेल सकेलन अतिरो होवा। धरहिं भाउ गुरू दरशन जोवा॥ २४॥

---

1. भेंट। 2. हलवा। 3. एक ग्राम का नाम। 4. दूध और दही।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कितिक काल बैठे गुनखानी। भाना पिखि सथानं कहि बानी।
'किस कारन करि गुर इत आए। को कारज कीनसि मन भाए'॥ २५॥

सुनि सतिगुर देख्यो गुरदास। कह्यो 'हुतो इह पित के पास।
गाथा तबि की सगरी जानै। ज्यों आए अरु गए बखानै'॥ २६॥

पाइ हुकम गुरू को तबि आई। सभिनि बिखै शुभ कथा सुनाई।
'सुन भाना साहिब! हम संग। जिम देख्यो तिम भनों प्रसंग॥ २७॥

जबि प्रिथीए[1] बहु बाद उठायो। मार रार धन ते गरवायो।
शान्ति रूप श्री अरजन देव। सही न कलहा करी अतेव॥ २८॥

निकसे बहिर सु आइ सिरहाली[2]। डेरा कीनि कितिक सिख नाली।
पुरि जन मिले आनि करि सारे। अरपि उपाइन वन्दन धारे॥ २९॥

गुरू कह्यो—दीजहि को थान। को दिन करहिं बैठि गुज़रान—।
सुनि पुरि जन दीजो शुभ थांऊ। सभि मिलि करति भए बहु भाऊ॥ ३०॥

दिन दुइ चार बास जबि ठाना। सुनि सुनि सिखगन आनि महाना।
पूजा करहिं अकोर चढ़ावैं। भई भीर आवति इक जावैं॥ ३१॥

जोगी बसति गुरू पुरि जन को। देखति जर्यो ईरखा मन को।
—मम महिमा पुरि ते घट जै है। देखा देखी इस पुजवैहैं॥ ३२॥

करि बैठ्यो गुर दम्भ बिसाला। मिले रहैं जिस ढिग नर जाला।
मम समीप नहिं आवति कोई—। इम जोगी कै चिन्ता होई॥ ३३॥

अपने सेवक सकल बुलाए। कहति कुतरकन त्रास उपाए।
—पातिशाहु को है इहु चोर। आयो भाजि तुमारी ओर॥ ३४॥

अबि इत आति पसार्यो दम्भा। नरन ठगति दिखराइ अचम्भा।
सिख सकेलिकै रोकहि पुरी। तबि तुम को हुइ सभि बिधि बुरी॥ ३५॥

जहांगीर जे सुनहि रिसावै। लूटहि तुमहिं ग्राम उजरावै।
नतु इसको तुम देहु निकासी। होइ जि दुखद रखहु क्यों पासी—॥ ३६॥

सुनि सचिन्त पुरिजन भरमाए। प्रेरे जोगी, गुर ढिग आए।
रिस करि कह्यो,–न इस थल रहीअहि। उठ गमनहु जित दिशि चित्त चहीअहि–॥ ३७॥

गुरू कह्यो—बैठे तुम बूझे। रिसकरि बोलहु, अबि क्या सूझे।
कारज नही बिगार्यो कोइ। बिन कारन ते किम रिस होइ?—॥ ३८॥

1. गुरु अर्जन देव जी का बड़ा भाई। 2. एक गाँव का नाम।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि पुरिजन पुन कहिसि कठोरा। ठटहु पखण्ड, टिकहु जिस ठोरा।
नहिं हम को बड रौरा आछो। उठि गमनो अबि जित चित्त बांछो ॥ ३९ ॥
तबि गुर के उर रिस हुइ आई। भगन ईटका करि चहुँथांई।
चार ओर को करे बगावन। ब्रिद्ध साहिब कीने तबि ल्यावन ॥ ४० ॥
आने तीन न चौथा पायो। -करति कहां तुम ?-गुरू अलायो।
सुनि ब्रिद्ध बिनती सहत बखाना। —तीन भाग मैं मेले आना ॥ ४१ ॥
चतुरथ भाग न पायो कोई। रावर को आज्ञा जिम होई—।
गुरू कह्यो—तुम पर उपकारी। तीन दिशा ऋिखि उपजहि सारी ॥ ४२ ॥
चतुरथ दिश क्षर हुइ जाइ—। सो अबि लगि इत पर्यो दिखाइ।
कर्यो कूच आगे गुर चाले। सिख संगति ले करि गन नाले ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे '**श्री अरजन को प्रसंग**' बरननं नाम द्वादशमो अंशु ॥ १२ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १३

# चोले ग्राम आगमन प्रसंग

**दोहरा**

'इस थल को आए गुरू उतरे जबि ही थान।
पैंच हुतो गुर सिक्ख सो, सुनि आयो सुख मानि ॥ १ ॥

**चौपई**

धर्यो प्रशादि उपाइन आगे। श्री अरजन की चरनी लागे।
—जानहुं दास निवास करीजै। होंहिं क्रितारथ, दरशन दीजै—॥ २ ॥
इम कहि गुर इसं थान टिकाए। सरब सेव कीनी मन लाए।
श्री गंगा[1] निज सदन मझार। हित बसिबे ले गयो बिचारि ॥ ३ ॥
पंच त्रिया ने बहु सनमानी। मात समान जानि हित ठानी।
सुन्दर पलंघ डसावन करे। त्रिय जान्यो—दिन बड अबि चरे ॥ ४ ॥
पहति[2] करति को लागै देरी। गुर के हुइ है छुधा घनेरी—।
सिता[3] घ्रित को बहुत मिलाए। कछु चूरी तत्तकाल बनाए ॥ ५ ॥
बडे भाव सों पूरि कटोरा। आई तुरत गुरू जित ओरा।
करि बन्दन बैठी बडभागनि। गुरू बूझी लखि करि अनुरागनि ॥ ६ ॥
—कर महिं, कहो कहां ले आई?। कहां कामना रिदे उठाई ?—।
श्री गुरू तुमारी छुधा बिचारी। काछुक खान हित लयाइ अहारी—॥ ७ ॥
इम कहि धर्यो कटोरा आगे। हुते छुधति गुर अचवन लागे।
भए प्रसन्न जबहि सो खाई। कह्यो—मनहु चोला करि ल्याई ॥ ८ ॥
पान पखारि चुला जबि कर्यो। श्री अरजन तबि शब्द उचर्यो।
बिच धनासरी बोलति चोला। श्री नानक किय सुन्दर चोला ॥ ९ ॥
अन्त शबद के पद इह राखा। नाम महातम सभि महिं भाखा।
—सुख दें हैं—त्रिय को बर दीनि। सदन गई मन आनंद कीनि ॥ १० ॥

---

1. गुरु अर्जन देव जी की पत्नी। 2. चावल। 3. चीनी।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिस पीछे पुरि जन चलि आए। बैठे चहुँदिशि सभा लगाए।
श्री अरजन बोले अभिरामू। —कहां ग्राम तुमरे को नामू ?॥ ११ ॥
हाथ जोरि भाख्यो तिस बेरा। —भैणी नाम भनहिं इस केरा—।
गुरू कह्यो—चोला अबि नामू। प्रथम नाम नाहन अभिरामू—॥ १२ ॥
इक नर बीच हुतो तिह कह्यो। —भैणी बिदति नाम सभि लह्यो।
अबि 'चोला' किम होवै नामू। बुरो धर्यो कै हुइ अभिरामू[1]—॥ १३ ॥
पुन गुरू कह्यो—भन्यो है चोला। नहीं हटावन बोलहु बोला—।
पुन राहक मतिमन्द बखानै। —क्या चोला हम नांहिन जानैं?—॥ १४ ॥
गुरू कह्यो—अबि चोला होवै। 'भैणी' नाम सकल ही खोवै—।
सुनि मूरख ने फेर हटायो। —इहु कमला—तबि गुरू अलायो॥ १५ ॥
सभि महिं बैठ्यो बावर भयो। बसत्र फार करि नहिं थिर थियो।
हेरति बिसमय मानव सारे। पंच त्रास धरि बिनै उचारै॥ १६ ॥
—छिमहु गुरू नहिं लखहि गवार। बाक हटायो बारम्बार।
मो दिशि देखि करहु अबि करुना। बावरपना सरहु सभि हरना—॥ १७ ॥
सुनि गुर कह्यो—न मिटिहै सरब। मूढ न मानति है करि गरब।
तनक रहै सुध बावर अहै। इस की कुल महिं इक अस रहै—॥ १८ ॥
गज के दन्त गुरू के बैन। मुख निकसे पुन प्रविशति है न।
बहुर पंच कर जोरि बखानी। —एक बात असमंजस[2] जानी॥ १९ ॥
जबि हम टके शाहु के तारैं। तबि किम चोला नाम उचारैं।
लिख्यो जहां कहिं भैणी नाइ। किम तहिं और नाम उलटाइ॥ २० ॥
तहां बचन किम करि हैं साचा ?। श्री अरजन तबि सुनति उबाचा।
—तहिं भी चोला नाम उचारो। लिख्यो जाइगो, शंक न धारो॥ २१ ॥
प्रथम तुमहु के दफतर मांहि। भैणी नाम सकल मिट जाहि।
इही नाम जानहिंगे सारे—। सुनि सभि ने निशचा उर धारे॥ २२ ॥
पुन बावर हित बिनै बखानी। सुनिकरि सतिगुर बोले बानी।
—कबि बावर ह्वै कबि सुधि आवै। इसकी कुल महिं अस जनमावै—॥ २३ ॥
अबि लगि तिसकी संतति मांहि। बावर कबि हुइ कबि सुधि पाहि।
बिदत अहै तिस ग्राम मझारे। पुन राहक इक वाक उचारे॥ २४ ॥
—बूह गोत के राहक भारी। नहीं चरन दें धेनु हमारी।
जे चलि जाति तिनहुं की ओर। मार हटाइ धरहिं बहु शोर—॥ २५ ॥

---

1 .सुंदर। 2. अनबन।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि गुरू बोले सहिज सुभाइ। —सगरे बूह जूह हुइ जांइ।
सुख के सहित धेनु सभि चारो। इहु चोला औला[1] गुर भारो।। २६ ।।
इम गुरू कह्यो, बूह पुरि महां। उजरि गये, चारहिंगो तहां।
इस प्रकार थिर केतिक काला। भयो त्यार तबि असन[2] रसाला।। २७ ।।
मन भावति अचिकै[3] सुख पाए। तिस बिसराम करे इस थाए।
केतिक दिन बसि गुरू गुज़ारे। देनि टके दिल्ली कहु त्यारे।। २८ ।।
सतिगुरू ते आइसु तबि जाची। दिढ कहिबे कहु गिरा उबाची।
—चोला नाम निशंक बखानो। सुख सों आवहु अबहि प्यानो।। २९ ।।
करि बन्दन को मारग गए। दिल्ली बिखे प्रवेशति भए।
मिले दिवान संग तहिं जाए। कह्यो—टके चोले के ल्याए।। ३० ।।
सुनति दिवान दफतरी भन्यो। —चोला ग्राम न अबि लौं सुन्यो।
बस्यो नयो को ? देहु सुनाइ। सो नावां अबि लेहिं चढाइ।। ३१ ।।
भैणी ग्राम पंच तू अहैं—। सुनि सभिहिनि मैं राहक कहैं।
—क्यों तुम नाम सु अपर उचारो। दफतर अपनो लिख्यो बिचारो।। ३२ ।।
सुनि दिवान मन संसा भयो। दफतर खोलि सु देखति भयो।
चोला लिख्यो सु बीच तिहारा। देखति मन महिं अचरज धारा।। ३३ ।।
जहांगीर ढिग गयो दिवान। अचरज पायो करति बखान।
—राहक भैणी को नित आवै। अबि चोला तिह नाम सुनावै।। ३४ ।।
कहै कि 'दफतर लिख्यो निकारहु'। कबिहूं कान न सुन्यो बिचारहु—।
शाहु कहै—हम सुन्यो न श्रोन। खोजहु लिख्यो होइ के कौन—।। ३५ ।।
—दफतर कई हज़ार निहार्यो। सभि महिं 'चोला' लिख्यो बिचार्यो।
निकटि निकटि ग्रामन के मांही। पिखि चोला, भैणी तहिं नांही— ।। ३६ ।।
जहांगीर सुनि मन बिसमायो। राहक अपने पास बुलायो।
—थहु तू साच कहां इह भयो ?—। पैंच प्रसंग सकल कहि दयो।। ३७ ।।
—धर्यो गुरू अरजन इहु नामू। उतरे आनि हमारे धामू—।
सुनति शाह तबि सीस निवायो। माफी पटा लिखाइ दिवायो।। ३८ ।।
श्री अरजन की कीनि प्रशंसा। —चहैं सु करहिं न इस महिं संसा—।
रह्यो पंच ढिग ग्राम महाना। छीन्यो पानी शाहु जहाना।। ३९ ।।
कितिक दिवस बासा गुर किए। बहुर सुधासर को चलि गए।
सुनि भाना ! इह गाथा सारी। श्री अरजन की अबहिं उचारी।। ४० ।।

---

1. पर्दा। 2 भोजन। 3. और।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि सभिहिनि तबि सीस निवायो। 'धंन धंन' सतिगुर को गायो।
श्री हरिगोबिन्द सो थल बन्दि। आइ सिवर[1] महिं जुति नर ब्रिन्द ॥ ४१ ॥

तिसी पंच को सुत चलि आयो। खट रस भोजन को करि ल्यायो।
बैठि गयो पद बन्दन धारी। गुर बूझी सभि कुशल उचारी ॥ ४२ ॥

सकल कुटम्ब संग सिख सारे। स्वाद बिबिध बिधि अच्यो अहारे।
भई निसा कीनसि बिसरामू। जागे बहुर रही जबि जामू[2] ॥ ४३ ॥

होति कीरतन मन दै सुनैं। गुरबानी सिख सुखदा भनैं।
श्री हरिगोबिन्द वासुर तीन। कर्यो बास सुख संग प्रबीनि ॥ ४४ ॥

पुन पित को थल बन्दन करिकै। मारग चले तुरंग पर चरिकै।
पुरिजन आइ करी प्रणाम। धीर दई गुरू गमने धाम ॥ ४५ ॥

पंच त्रिया ने पूजा कीनि। त्रै गुरू महिला तेवर दीनि[3]।
सूरजमल की वधू निहारी। इक तेवर तिह दयो सुधारी ॥ ४६ ॥

अपर त्रिया पुरि की सभि आई। जथाशकति भेटनि अरपाई।
दे असीस सभि को, चढ़ि चाली। करति ग्राम की सिफति बिसाली ॥ ४७ ॥

कोस तीन जबि सतिगुर गए। इक असथान बिलोकति भए।
उतरि तुरंग ते बन्दन ठानी। बैठे कितिक काल **गुनखानी** ॥ ४८ ॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रिंथे सप्तमि रासे **'चोले ग्राम आगमन प्रसंग'** बरननं त्रयदशमो अंसू ॥ १३ ॥

---

1. शिविर, डेरा। 2. एक पहर। 3. गुरू जी की तीनों पत्नियों को तीन तीन वस्त्र दिए गए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १४

# भाई गुरदास परलोक गमन प्रसंग

**दोहरा**

तिस थल जबि बैठे गुरू सभि उर संसै ठानि।
कर जोरे बूझति भए 'किह सथान इहु आनि ? ॥ १ ॥

**चौपई**

करि बन्दन कौं रावर वैसे। किस को थल, होयो इह कैसे ?'।
दया-सिन्धु सुनि बाक बखाने। 'इहु श्री नानक को इसथाने ॥ २ ॥
पठे विंड पुरि नाम कहंते। खत्री बेदी ब्रिन्द बसन्ते।
संग हुते बाला मरदाना। श्री नानक आए इस थाना ॥ ३ ॥
आनि बेदीयन जबहि निहारे। करति कुतरकन बाक उचारे।
—कहां बेदीयनि बंसु लजावा ?। बेख फकीर कुराहु चलावा ॥ ४ ॥
इस पुरि भ्रातन महिं चहिं थान। करहिं पसारनि दम्भ महान।
हम शरीक तुव बसन न दैहैं। जाहु अबहि नहिं पकड़ि उठैहैं— ॥ ५ ॥
कह्यो गुरू—हम बास न करैं। को दिन बसहिं, आन थल फिरैं।
नहीं शरीकनि संग शरीकी। तजी लालसा, नांहिन नीकी— ॥ ६ ॥
सुनि बेदीनि कोप करि कह्यो। —इहु तुव दाव सभिनि हम लह्यो।
मिलि अपनाइ लेहिंगे केई। बनहिं सहाइक तुव तबि तेई ॥ ७ ॥
यांते अबहि उठावनि करैं। तुव बच पर न भरोसा धरैं।
उठहु जाहु सुनि बाक हमारे। नतु[1] भुज गहिकै तुरत उठारे— ॥ ८ ॥
तबि श्री नानक बाक बखाना। –तुम बिरसा घर निज दिढ जाना।
सो सभि कूर छार मिलि जावै। पुरि उजरहि कित खोज न पावै ॥ ९ ॥
इस कहि गमन कीनि गुनखानी। श्री नानक सिक्खनि सुखदानी।
पुन कुछ समा पाइ पुरि मांही। बधी सपरधा[2] मिटहि जु नांही ॥ १० ॥

---

1. नहीं तो। 2. ईर्ष्या।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लरि लरि भाजे पुरि को छोरि। पर्यो थेह तबि को इस ठौर'।
श्री हरिगोविन्द गाथ सुनाई। सुनि सगरे निज सीस निवाई ॥ ११ ॥

थिर धरि जुग बहुर सिधारे। दोइ कोस जवि चले अगारे।
श्री अरजन को तहिं असथान। उतरि तुरंग ते बन्दन ठानि ॥ १२ ॥

सवाजाम दिन तबि लौ चर्यो। कहि सभिहिन सों डेरा कर्यो।
आज्ञा दई अहार करनि की। करी दूर जिन कुमारी नरन की ॥ १३ ॥

बैठे लग्यो दिवान महान। बूझति कीने गुर तबि भान।
'पुरि उचारे कुछ दूर दिखाए। किम श्री अरजन इस थल आए?' ॥ १४ ॥

सुनि गुर, बिधीए और निहारा। 'हुने संग तुम करहु उचारा'।
आइसु मानी बैन अलाए। 'बिचरति श्री अरजन इत आए ॥ १५ ॥

पंच सिक्ख हम गुर के साथ। बैठि रहै इस थल जबि नाथ।
हिम रितु हुती सीत बहु परै। घन जुति पौन बहै तन ठरै ॥ १६ ॥

हम पंचहुं मिलि बिनै उचारी। —चलहु आप उठि पुरी मझारी।
सुख सों निसा बिताइ पयानैं—। सुनि गुर कह्यो—दूर कुछ जानैं ॥ १७ ॥

बसहिं दुषट जन भाउ विहीने। जाने परहिं महां मति हीने—।
पुन हम कह्यो—उतंग अवास। पिखि जनवास[1] करहिं निस बास—॥ १८ ॥

सतिगुर कह्यो—प्रथम तुम जऐ। पिखि सथान पुन हम ढिग अऐ—।
सुनि आइसु को पुरी सिधारे। देखे सुन्दर सदन चुबारे ॥ १९ ॥

नहिं बिसराम करनि को थान। किनहुं बिठा न किय सनमान।
सभि सतिगुर सों आनि सुनाई। परनि फुहार लगी घट आई ॥ २० ॥

तबि श्री अरजन बाक उचारो। एक बसै इह ठां मम प्यारो।
तिस ढिग बसों मोहि मन भायो। करे प्रेम जिस ऐंचि[2] मंगायो—॥ २१ ॥

उठि सगरे तिस निकटि सिधाए। भगनि छापरी पर त्रिण छाए।
परम सन्त सिक्ख हेमा नाम। जो सत्तिनाम जपहि सभि जाम ॥ २२ ॥

फटी कामरी ऊपर लीनि। पीसति अन्न प्रेम मन भीनि।
देखि सिक्ख को भये प्रसन्न। कह्यो—सन्त हरि के नित धंन—॥ २३ ॥

भये छापरी बिखैं प्रवेशु। हेमा हेरति हरख विशेष।
उठि गुर के पाइन लपटावहु। डारि कामरी[3] तरै बिठायहु ॥ २४ ॥

1. श्राप। 2. खींच कर। 3. कम्बल।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पग पखारि चरनाम्रित लीनो। दरशन करति अनंद मन भीनी।
जाच्यो अन्न संचि जो धर्यो। पीस पकाइ अहार सु कर्यो॥ २५ ॥
बिनै भनी गुर को अचवायो। हम को दीनि सकल तबि खायो।
सीत प्रशाद ताहि पुन लीना। धरे प्रेम तिन खावन कीना॥ २६ ॥
गुरूचरन चांपति गुन गावति। —करी क्रिपा मो पर—हरखावति।
तिसकी दशा देखि श्री अरजन। शवद उचारन कीनि नहीं छन॥ २७ ॥

**राग सूही महला ५**

भली सुहावी छापरी जा महि गुन गाए।
कित ही कामि न धउलहर जितु हरि बिसराए॥ ॥ रहाउ।
अनदु गरीबी साध संगि जितु प्रभ चिति आए।
जलि जाओ एहु बडपना माया लपटाए॥ १ ॥
पीसनु पीसि ओढि कामरी सुख मनु संतोखाए।
ऐसो राजु न कितै काजि जितु नह त्रिपताए॥ २ ॥
नगन फिरत रंगि एक कै ओहु सोभा पाए।
पाट पटम्बर बिरथिआ जिह रचि लोभाए॥ ३ ॥
सभ किछ तुमरै हाथि प्रभु आपि करे कराए।
सासि सासि सिमरत रहा नानक दातु पाए॥ ४ ॥ १ ॥ ४१ ॥

**चौपई**

जहांगीर को बड उमराउ। खानपुरा जिसके ढिग गांउ।
गुर के श्राप उजरि सभि गयो। छूठ[1] पर्यो अबि ऐसे भयो॥ २८ ॥
जहिं गुर सन्तन को नहिंमान। से पुरि जानहु थान मसान।
केतिक दिन श्री अरजन रहे। हेमे बय[2] पूरन निज लहे॥ २९ ॥
सुख सों पंच भूत तन त्यागा। गुरपुरि को पहुंच्यो बडभागा।
श्री अरजन तिस को ससकारे। बहुरो अपने सदन सिधारे॥ ३० ॥
करि बिधीया 'सुनि भाना साहिब'! श्री गुरू की अस गाथ अजाइब।
तबि को इह सथान है पावन'। सुणि सभि ने किय सीस निवावन॥ ३१ ॥
श्री हरिगोबिन्द उर हरखाए। बहुर अहार मंगाइ सु खाए।
कर्यो दुपहिरे को बिसरामू। भए सुचेत रहे दिन जामू॥ ३२ ॥

---

1. खाली, वेआबाद। 2. आयु।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लखि गुरू, अन्त समां गुरदास। चढ़िबे हय मंगवाइसि पास।
गोइन्दवाल पुरि कहु चाले। सकल कुटम्ब जिनहुं के नाले॥ ३३॥

चतर घटी दिन पहुंचे जाइ। ढिग बापी[1] के सिवर लगाइ।
करि मज्जन को गए चुवारे। सरब सथान बन्दना धारे॥ ३४॥

पुन गुर डेरे बिखे सिधाए। सुन्दर, परमानंद, चलि आए।
करि बन्दन को बैठे तीर। कुशल प्रशन तबि कही सरीर॥ ३५॥

भोजन अचि कीनसि बिसरामू। जागे रही डेढ निस जामू।
तबि गुरदास जोरि कर कह्यो। 'प्रान अन्त मैं अपनो लह्यो'॥ ३६॥

सुनि करि गमने ले निज साथ। सुन्दर, परमानन्द, गुरू नाथ।
करिकै शौच, सनान करंते। बैठे आसावार सुनंते॥ ३७॥

बिनती पुन गुरदास सुनाई। 'प्रान अन्त महिं बिलम न काई।
डारहु भस्म बिपासा मांही। मेरी मढ़ी कीजीए नांहीं'॥ ३८॥

सुनि गुर कह्यो 'करैं तव कह्यो'। मन अडोल भाई हुइ रह्यो।
जपुजी पाठ सुखमनी कीनि। नमो ठानि गुर ध्यान सु लीनि॥ ३९॥

श्री हरिगोबिन्द चन्द अलायो। 'धंन जन्म तुमरो जग आयो।
महि मण्डल महिं जसु बिसथारा। पाइ परम गति पंथ पधारा॥ ४०॥

चिरकाल तेरो रहि नामू। जानहिं गुरू पन्थ अभिरामू'।
सुनि गुरू बैन बन्दना करिकै। बदन अछाद्यो आगै परिकै॥ ४१॥

श्री सतिगुर के पुरि बिन बेरा। पहुंच्यो सिख गुरदास बडेरा।
श्री हरिगोबिन्द देखति आगे। अहै धन्न जिन प्रान त्यागे॥ ४२॥

आसावार भोग तबि पायो। हाथ जोरि सभि सीस निवायो।
ससकारन त्यारी करिवाई। चहियति सौज[2] सभी मंगवाई॥ ४३॥

भाना आदिक चले उठाइ। कीमत अधिक दुशाले पाइ।
सूरजमल कर चवर झुलावै। संखन की धुनि बहुत बजावै॥ ४४॥

गमनति शबद रबाबी गावति। तीर बिपासा[3] के चलि जावति।
फूलन की बरखा बहु करी। देहि चिखा के ऊपर धरी॥ ४५॥

कर अपने गुर लांबू[4] लायो। जथा जोग सभि करम करायो।
सकल दगध करि नदी नहाइ। दई तिलांजुल ले तिस नाइ॥ ४६॥

1. बाउली। 2. सामग्री। 3. ब्यास दरिया के किनारे। 4. अग्नि।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चौकी शबद भोग को पाइ। करि अरदास 'गुरू दुरि जाइ'।
पंचाम्रित[1] तबहि बरताए। बरनति गुन निवेस को आए ॥ ४७ ॥

गुरढिग पुरिजन मिलि समुदाइ। बैठिबात गुरदास चलाइ।
चौथे दिवस अतिथि चुनु लीनि। भसम बिपासा प्रापति कीनि ॥ ४८ ॥

बापी महिं सनान करि तवै। नमो करी पूजन थल सवै।
ततछिन ह्य पर करि असवारि। चले सुधासर[2] पंथ मझारी ॥ ४९ ॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तगि रासे 'भाई गुरदास परलोक गमन प्रसंग' बरननं नाम चौदशमी अंशु ॥ १४ ॥

1. प्रसाद, हलवा। 2. अमृतसर।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १५

# भक्त जल्हण प्रसंग

### दोहरा

सुन्दर परमानंद को अपर सरब परिवार।
जथाजोग मिलि करि सभिनि हय होए असवार ॥ १ ॥

### चौपई

सभि कुटंब चढि चल्यो पिछारी। जथा जोग अपनी असवारी।
पुरि खडूर महिं पहुंचे जाई। उतरि तुरंग परे तिस थाईं ॥ २ ॥
श्री अंगद के मंदिर गए। फिरे प्रदच्छना बंदन किए।
सुभट कुटंब मिले तिह समो। दरशन परसति करि करि नमो ॥ ३ ॥
सुनि करि सुधि[1] दातू सुत आयो। झुके परसपर उर हरखायो।
'करहु सिवर प्रभु ! बिनै बखानी। 'सेवौं जथाशकति हित ठानी' ॥ ४ ॥
श्री हरिगोबिन्द चन्द बखाना। 'चहैं आज ही पंथ पयाना।
श्री ग्रिंथ साहिब सुखरास। पाठ करावहिं हित गुरदास' ॥ ५ ॥
रह्यो निहोरति, दे करि धीर। चढे पवंगम[2] सतिगुर बीर।
रह्यो अलप दिन पहुंचे आइ। संग सुभट छोरे समुदाइ ॥ ६ ॥
तखत अकाल निवाइ सु मौर। चलि करि गए दरशनी पौर।
नमो करति अन्तर को गए। श्री हरिमन्दिर बंदति भए ॥ ७ ॥
दई प्रदच्छना बाहर आए। तखत अकाल बैठि दरसाए।
पुरि जन सुधि सुनि आनंद पायो। ततछिन आये सीस निवायो ॥ ८ ॥
धरहिं अकारे प्रसादि अगारि। दरशन देखति गन नर नारी।
भई भीर होवति बलिहारी। गुर बूझी सभि कुशल उचारी ॥ ९ ॥
सोदर लगि लाग्यो बड मेला। हित दरशन के अधिक सकेला।
पुन सतिगुरु निज महिल पयाने। सभि परिवार आनि सुख ठाने ॥ १० ॥

---

1. खबर 2. घोड़ा



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुभट सकल बासा निज थान। सुपते करिकैं खानु रु पान।
भई प्रभाति गुरु चलि आए। सिरी ग्रिंथ साहिब खुलिहवाए ॥ ११ ॥
हित गुरदास पाठ धरिवायो। बिधीआ पठिबे हेतु बिठायो।
चौदशमे दिन पूरण कीनि। पोशिश[1] तखत अकाल सु दीनि ॥ १२ ॥
पंचाम्रित बर्ताइ बिसाला। सिमरहिं सेवक को बहुकाला।
केतिक दिन बीते कहि भाना। 'आज्ञा चहति धाम को जाना'। १३ ॥
गुरु कह्यो 'जबि करहिं हकारनि। आवहु तबि करि बिलम बिसारन'।
करि प्रनाम को सदन सिधार्यो। निस बासुर गुरु उर महिं धार्यो ॥ १४ ॥
पुन सतिगुर केतिक दिन पाइ। साधू बांछति सदन सिधाइ।
बसत्र बिभूखन बर समुदाइ। दीए तुरंगन ज़ीन पवाइ ॥ १५ ॥
बीरो बडिभागन हुइ त्यारी। मिलि दमोदरी तनुजा प्यारी।
अपर बिमातन मिलि द्रिग नीर। करे प्रेम सभि दीनसि धीर ॥ १६ ॥
पिता गुरु साहिब सो मिली। रथ अरुढ करि मारग चली।
साधू त्रे सासन करि नमो। गुर पग परसति भा तिह समो ॥ १७ ॥
सभि ते सुखद आशिखा[2] पाइ। बिछुरति, प्रेम भयो अधिकाइ।
ह्य अरुढ करि पंथ पधारा। पहुंच्यो मल्ले गाम मझारा ॥ १८ ॥
श्री हरिगोविन्द जोद्धा बली। कीरति जगत बिपरति भली।
कबि कबि चढहिं अखेर सिधावहिं। पैंदखान सों खेल मचावहिं ॥ १९ ॥
आयुद्ध बिद्या सुभट करंते। हेरि हेरि बधि कमि[3] परखंते।
करि बरकस[4] दिखरावहि पैंदा। जिस मानिन्द न प्राकरम कैंदा[5] ॥ २० ॥
डील दराज़[6] महां भुजदण्डे। महिखन को लरवाहिं प्रचण्डे।
पैंदा बीच खरो हुइ जाइ। गहि बखान[7] दोनहु अटकाइ ॥ २१ ॥
बडी सिपर[8] देशनि ते आए। सभा बिखै गहि चीर दिखाए।
श्री-फल[9] भुजदण्दन ते भंनि। श्री सतिगुर को करहि प्रसन्न ॥ २२ ॥
तुरंग बली असवार दुड़ावति। हाथ पाइ बल ते अटकावति।
नर को भार मुंगरो भारी। दो गहि दोनो हाथ मझारी ॥ २३ ॥
दोए मल्ल बाहन लटकावै। चिरकाल लगि खरो भ्रमावै।
गुरु कमान बिना जे ओर। गहि दुइ तीन ऐंच दे तोरि ॥ २४ ॥

1. पोशाक, वस्त्र 2. आशीर्वाद 3. बाढ़ घाट 4. व्यायाम
5. किसी का 6. लम्बा 7. सींग 8. ढाल 9. नारियल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इत्त्यादिक बल अधिक दिखावनि। बरकस करति रहति हरखावन।
इक दिन चढे अखेर सिधारे। गए दूर नहिं हटे पिछारे॥ २५॥

जल्लन साध हुतो जिस थान। तहिं लगि पहुंचे गुरु भगवान।
देखि दूर ते बन्दि अगारी। सिवर कराइव, बिनै उचारी॥ २६॥
'करहु सनाथ क्रिपा निज धारि। निसा बसहु दिहु दरस उदार'।
उतरे ह्य प्रयंक बिठाए। सरब सेव ठानी सुख पाए॥ २७॥

नाम राम की तिसकी दारा[1]। हरखति उर पिखि बाक उचारा।
'पूरब के वडभाग हमारे। प्रभु दरशन करि सदन मझारे॥ २८॥
सुनि अनंद लो रिदे प्रकाश। बैठे बन्दन करि जबि पास।
श्री गुर हरि गोविन्द बखाना। कहु जल्लन! तू साध महाना॥ २९॥
तुरक परे क्यों ख्याल हमारे? पढहिं चमूं[2] बहु बिना बिचारे।
करहिं जुद्ध मारन अरु मरनो। नरन हज़ारनि को हुइ हरनो॥ ३०॥
सुनि जल्लन कर जोरि उचारा। 'श्री गुर! तुम समरथ उदारा।
मुगल सदन महिं सरमा[3] माया। तिस बासुर बासहि मन भाया॥ ३१॥
सो रावर ने गहि कर लीनि। पात्रे साथ बंधिबो कीनि।
जिस ने अखिल जगत को काटा। सो भौंकति है सभिनि उचाटा॥ ३२॥
कूकर मुगल कोप करि दौरति। –कहां भयो?–लखि मति ते बौरति।
मारति मरति खेद को पाइ। भौंकति खुनसति हटयो न जाइ॥ ३३॥
निज प्रयंक पावे ते त्यागहु। नहिं बंधहु इस निकटि विरागहु।
बहुर मुगल सगले हरि जैहैं। ख्याल न परहिं समीप न ऐहैं'॥ ३४॥
बिकसै सुनि श्री हरिगोविन्द। मन्द मन्द मुख जनु अरबिन्द।
'बंधी गई सु बंधी रही। छुटहि न किम जे छूटन चही॥ ३५॥
भौरा भगति अहैं तू सन्त। सिमरि एक चित श्री भगवन्त'।
सुनि जल्लन पद पंकज नमो। सेवा सरब करी तिह समो॥ ३६॥
भगति ज्ञान की चरचा चारु। करी मुदति चित जानति सारु।
जिस जिस बिधि सों बूझति रह्यो। दया सिन्धु तिम उत्तर कह्यो॥ ३७॥
एक निसा बसि करि गोसाईं। सुपति जथा सुख सकल बिताई।
शौच सनान ठानि प्रसथाने। करी अखेर ब्रिति उदयाने॥ ३८॥
आनि सुधासर बहुर बिराजे। जो गुर रखहिं दास की लाजे।
तखत अकाल दौनहू काल। दरशन दे सिख करति निहाल॥ ३९॥

---

1. स्त्री 2. सेना 3. कुतिया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संगति नई आनि सिख होवति। अघ ओघन हति दरशन जोवति।
लाखहं दरब चल्यो नित आवति। तिम ही खरच होति सभि जावति ॥ ४० ॥

जोधा करे सकेलन घने। बसत्र शसत्र भूखन* सो बने।
तुरंगन की खरीद बहु करैं। चपल चलाक महां बल धरैं ॥ ४१ ॥

करहिं सुभट मन को असवार। शसत्र खरीदहिं अनिक प्रकार।
देश बिदेशन ते सिख ल्यावैं। खुशी लेहिं गुर आग चढावैं ॥ ४२ ॥

भगति ज्ञान कै जंग प्रसंग। करहिं सुनहि बहुबिधि मिलि संग।
सदा रबाबी कीरतन करैं। सुनैं प्रेम ते सिख जग तरैं ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासो '**जल्लहन प्रसंग**' बरननं नाम पंचदशमो अंशु ॥ १५ ॥

---

*गहने, अलंकार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १६

# डरोली पहुँचन प्रसंग

**दोहरा**

श्री गुरदित्ता सुख बसे रचि कीरतिपुरि चारु।
करे सकेलन लोक तहिं बसे मोद को धारिं॥ १॥

**चौपई**

केतिक मास बसति दिन टारे। नानाविधि के करति शिकारे।
सेवहिं दास संग समुदाए। दरब आदि मनु कामन पाए॥ २॥
म्रिदुल बाक ते नर सनमानहिं। सुख दे नगर बसावन ठानहिं।
नत्ती गरभ प्रथम सम धर्यो। वध्यो चन्द सम भागनि भर्यो॥ ३॥
समों प्रसूत होनि को आयो। सुन्दर समां सुखद दरसायो।
मकर रास महिं सूरज बासा। त्रेदस वासुर बीते मासा॥ ४॥
पुरि जन अनंद अचानक होवा। मानव सभि दिशि महिं सुख जोवा।
सवा जाम जबि रही त्रिजामा। जन्मयो पुत्र बदन अभिरामा॥ ५॥
देवन आनि अरचना करी। बार बार कुसमांजुल झरी*।
औचक संख शबद को सुन्यो। जै जै शबद मिले सभि भन्यो॥ ६॥
मिलि दासी गन मंगल गायो। श्री गुरदित्ता सुनि हरखायो।
चहुंदिशि ते गन देति बधाई। पाइ दरब को आशिख गाई॥ ७॥
जथा जोग कुल रीति करन्ते। सुनि जाचक आइ हरखन्ते।
जान मान सभिहिन को दीन। गुर सुत सुजसु अधिक तबि लीनि॥ ८॥
पिता गुरु ढिग दास पठाए। अनिक प्रकारन बिनै लिखाए।
'नाम राखीअहि जो मन भावति। पौत्र आप को दुती सुहावति'॥ ९॥
पंथ विखै बसि चलि को दिना। पहुंचे पुन प्रसादि ले घना।
सुधा सरोवर पुरि महिं आए। सतिगुर आगे सीस निवाए॥ १०॥

*फूलों की वर्षा



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पौत्र जनम सुनि मन अनंदे। आनि बधाई ब्रिन्द भनंदे[1]।
गुरघर मैं बड मंगल करैं। बाजे बजति पुन्ज मुद भरैं॥ ११॥
जिनहुं आनि सुधि प्रथम सुनाई। बसत्र बिभूखन दए गुसांई।
अपर दीन गत को धन दीनि। अति अनंद गुर पतनी तीन॥ १२॥
सरब प्रकारन उतसव साजे। दुंदंभि लघु बिसाल दरबाजे।
जो जो सुनि आयो तिन पायो। सतिगुर सुजसु जगत पर छायो॥ १३॥
'गुरता मालिक' सतिगुर जाना। 'श्री हरिराइ, सु नाम बखाना।
कंचन के कंकन[2] घरिवाए। हीरन पंकती खची बनाए॥ १४॥
भागली झीनी अलग कराइ। ऊपर गोटा अधिक लगाइ।
मेवा अरु पकवान घनेरा। तीनहुं गुर महिला तिस वेरा॥ १५॥
सहत सनेह सु तुरत पठाए। कीरन पुरि पौत्रा जन्माए।
गन मंगल इम नये रचंते। गुरु सनबंधी अनंद मचंते॥ १६॥
जबि दुइ मास बिते इस भांती। सांईदास पठी तबि पाती।
होइ दीन बहु कीनसि बिनती। 'आवहु मिहर करहु तजि गिनती॥ १७॥
दिवस बसोए[3] को बड मेला। चहुदिशि ते नर होइ सकेला।
इहां आनिकै करहु गुसांई। देहु दरस दासन समुदाई॥ १८॥
इत्यादिक सतिगुरु उबाची। रिदै बिचार्यो करिबे साची।
उभै युद्ध हम कीनि बिरोधा। अबहि शाह नहीं ठानति क्रोधा॥ १९॥
सुमति वज़ीर खान समुझावै। कहि महिमा रिस उर बिसरावै।
अबि जंगल चलि दिवस गुज़ारैं। तहां लहैं रिपु गन को मारैं॥ २०॥
जंग न भलो सुधासर मांही। आवहिं तुरक अदब रहि नांही।
अरु लवपुरि को नेर घनेरा। चढि आवहि लशकर बहुतेरा॥ २१॥
नहीं मवास होनि को[4] थान। नहीं बिखम कित दुरग[5] महान।
लरन सथल जंगल महिं आछो। कहूं कहूं जल प्रापति बाछों॥ २२॥
महां उजार खरे बन जहां। मारहिं घने तुरक हम तहां।
जिम किम करहिं दाव लें फत्ते। शाहु जि आप जाए, तिह हतैं॥ २३॥
जलको घेरि चमूं थिर होइ। जहिं रिपु को जल पाइ न कोइ।
इत्यादिक बहुरिदै बिचारा। जंगल को पयान निरधारा॥ २४॥
निस महिं महिल गए गोसांई। ढिग दमोदरी चलि करि आई।
कह्यो तोहि भगनी[6] पठि पाती। हमहि हकारन हित उमहाती॥ २५॥

---

1. कहते हैं 2. सोने के कड़े 3. विसाखी 4. विद्रोही हो जाने का
5. किला 6. बहन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साईंदास लिखी बहु बिनती। –आवहु मिहर धरहु तजि गिनती–।
तोहि मनोरथ कहां सुनावहु ? ईहां बसहु कि तहां सिधावहु ?' ।। २६ ।।
सुनि दमोदरी गिरा बखानी। 'करहु आप जैसे मन भानी।
चलहु चलहिंगे संग तुमारे। बसहु बसहिंगे सभि निरधारे' ।। २७ ।।
अरध चेत को मास बितायो। गमन आपनो सभिनि सुनायो।
तीन हज़ार चमूँ भट संग। शस्त्र जि धारति सहत तुरंग ।। २८ ।।
सिख्य मसंद मेवड़े घने। दास अनेक तिनहिं को गने।
सुनि गुर ते त्यारी सभि धारैं। अपनी अपनी वसतु सभारैं ।। २९ ।।
सतिगुर वसतु सकल संभारी। —आवन होइ कि नहिं—उरधारी।
सकल कुटंब त्यार करिवायो। दासी दासन को समुदायो ।। ३० ।।
चलि करि गए प्रथम दरबार। हाथ जोरि बहु बिनै उचारि।
'हे प्रभु ! मम आवन कै नांही। बसहु सदा हरिमन्दिर मांही ।। ३१ ।।
जंगल जाइ जंग मैं ठानौं। मानी तुरकन के गत हानौं'।
तबि अवाज़ भी मन्दिर मांहि। 'तुमरी बिजै, अरहिं रिपु नांही' ।। ३२ ।।
श्री हरिगोविन्द सुनति अनंदे। बन्दन करी दुन्द कर बंदे।
वहिर प्रदच्छन के करि चारि। पुन गुर तखत अकाल सिधारि। ३३ ।।
हाथ जोरि अरदास कराइ। ब्रिन्द प्रसादि दियो बरताइ।
तबहि मंगाइ जराऊ खासा[1]। जिस महि सुन्दर होति प्रकाशा ।। ३४ ।।
श्री ग्रिंथ साहिब बिच थापि। कर्यो अगारी पाछे आप।
दोय दिशा दुइ चमर ढुरावैं। चले किंतिक ले संख बजावैं ।। ३५ ।।
रथ अरुढि गुरु महिला तीन। डोरे[2] नुखा आरुढनि कीनि।
तीनहुं पुत्र संग चढि चाले। दुदम्भि बजैं सुभट गन नाले ।। ३६ ।।
पनही[3] बिना ग्रिंथे के पाछे। पुरि निकसे चलि श्री गुर आछे।
थिर जबि भये सु बिधीआ कहैं। 'हुकम करहु जो पाछे रहै ।। ३७ ।।
सेव संभारहि श्री दरबार। लेनि देनि ठानहि बिवहार'।
सुनि गुर बोले 'सिक्ख अनाथ। सेव करहि प्रेम के साथ ।। ३८ ।।
गुर घर अविचल सिक्ख घनेरे। दिन प्रति बधहि प्रताप बडेरे।
हमरो आवनि होइ न होवइ। सेवक गुर के रहिं सभि कोइ' ।। ३९ ।।
इमं कहिसग री वसतु संभारी। ठौर ठौर दासनि करि त्यारी।
घर समाज सभि लादि चलायो। उषटर[4] भार भये समुदायो ।। ४० ।।

1. पालकी 2. डोली 3. जूती 4. ऊंट

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुरि जन गन सुनिकै अस प्याना। सभि कै रिदै बिखाद[1] महाना।
आपस महिं कहि करि नर नारी। आवति मोचि बिलोचन बारी॥ ४१॥
मुख ते बाक नहीं निकसंता। आनि मिले श्री गुर भगवन्ता।
जथा राम[2] बन और पधारे। औधपुरी[3] नर बिरह को धारे॥ ४२॥
भई तथागति रोदति आवैं। एक कहैं 'हम संग सिधावैं।
घर समाज सभि ले करि जै हैं। जहिं गुर दरसैं तहां बसै हैं॥ ४३॥
श्री अरजन जी हमहिं बसायो। अबि लो इह पालाति सुखदायो।
पाछे किस अलम्ब[4] हम रहैं। गुर तो नहीं आइबो चहैं॥ ४४॥
को मालिक अबि होइ हमारे। सतिगुर बिन सभि रहैं दुखारे।
जो सनमान करति सभि भान्ति। सो तजि चले, न बिहरति छाती'॥ ४५॥
ब्याकुल हुइ बीथनि महिं डोलति। दुख बिरहु ते बावर जिम बोलति।
पुरि ते निकसे श्री गुरू पाछे। करति पुकार दरस को बांछे॥ ४६॥
सतिगुर जबि देख्यो पशचाती। आवति नर नारनि बिललाती।
थिर हुइ रहे न आगे चलै। आनि अखिल पुरि के जन मिले॥ ४७॥
करि बंदनि कहिं 'इम तुम चाले। बहुर न आवहु जिम, सम्भाले।
किस को हमहिं सौंप करि छोरा?। गमने तुम जंगल की ओरा॥ ४८॥
तुमरे संग चलहिंगे सारे। सुत बनितादिक ले परिवारे।
रावरि बिरह सह्यो नहीं परै। रहि पशचात कौन दुख भरै॥ ४९॥
भला लोक परलोक मझारैं। नित उठि तुमरो दरस निहारैं।
पुरि उजार हुइ बस्यो न जाई'। इम कहि रुदति भये समुदाई॥ ५०॥
—असमंजस—सतिगुरु बिचारैं। —पुरिजन जे हम साथ सिधारैं।
श्री अरजन पुरि परम बसावा। महां दोष जे इसहि दुखावा--॥ ५१॥
इम बिचार करि थिरे निहारैं। बहुत भान्ति की धीर उचारैं।
नहिं मानहिं पुरि बसन पिछारी। सोच विमोचन सोचति भारी॥ ५२॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तम रासे **'श्री हरिराइ जनम प्रसंग'** बरननं नाम षोडशयो अंशु॥ १६॥

---

1. खेद 2. श्री रामचंद्र 3. अयोध्या 4. आश्रय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १७

## डरोली पहुंचन प्रसंग

**दोहरा**

हरी चन्द गुरु ससुर जो पिता नानकी केर।
आयो वहिर सभारजा[1] उर धरि प्रेम बडेर ॥ १ ॥

**चौपई**

सभि कुटम्ब जुति श्री गुर हेरा। मोचति नीर बिलोचन केरा।
बोल्यो 'गुर अलम्ब पुरि सारो। तुम त्यागति नहि करी अवारो ॥ २ ॥
पति बिहीन जिम रहति न नारी। ससि बिन निसा, नदी बिन बारी।
महिपालक बिन चमूं न आछै। तथा पुरी सभि तुमरे पाछै ॥ ३ ॥
रहे उडीकति आगै गए। केतिक दिन महि आवन किए।
पुरि जन निराधार किम रहैं। उजर जाहिं कै तुम संग लहैं ॥ ४ ॥
मैं अबि त्यार होइ करि आयो। चहौं आप के संग सिधायो।
सुता, सुता सुत, सहित तिहारे। उर अनन्द नित लहौं निहारें ॥ ५ ॥
सुनि करि ससुर गिरा गुर भारी। धीरज दैबे हेतु उचारी।
'इहु गुरपुरि नित बसहि सवाया[2]। अन्न दरब की कमी न काया ॥ ६ ॥
रंक बसै जो धनी बनै है। अन्न बसन की कमी न ह्वै है।
जो गुर पुरि को विघन उठै है। बिन मारे आपे मरि जै हैं ॥ ७ ॥
श्री दरबारि बांहु पकराई। अबिचल जिसकी नीव रखाई।
श्री हरिमन्दर महां प्रतापू। बन्दहु नित रच्छक हुइ आपू ॥ ८ ॥
कहि इत्यादिक सगल समुझाए। निज माया करि उठि बिरमाए।
सभि को सदन लगे तबि आछे। पाछे हटति अखिल मन बांछे ॥ ९ ॥
दै धीरज सतिगुर सभि तांई। हरी चन्द को भुज पकराई।
जानि ससुर वहु, बन्दन करिकै। मुरे सरब ही दरस निहरिकै ॥ १० ॥

---

1. स्त्री सहित 2. अधिक



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिवका[1] पर सतिगुर आरुढे। मारग गमने जिस गुन गूढे।
हरी चन्द मिलि तनुजा साथ। फेरि हाथ दोहत के माथ ॥ ११ ॥
त्रै गुर महिला सों नर नारी। मिलि मिलि अखिल बन्दना धारी।
जथा जोग कहि सुनि करि सारे। आप आपने सदन सिधारे ॥ १२ ॥
चमूं सहत गुर कीनि पयाना। दुंदभि वज्यो कि घन गरजाना।
सगल कुटम्ब संग मैं लीना। सने सने गुर चलिबो कीना ॥ १३ ॥
हुतो कोस नौ तारन तरन। तीरथ पिख्यो पाप गन हरन।
पूरब दिशि को डेरे पाए। बरन बरन के तम्बू लाए ॥ १४ ॥
करि बिसराम जामनी[2] टारी। उठि सतिगुरु सौचे को धारी।
करि शनान दे करि धन दान। श्री अरजन के गए सथान ॥ १५ ॥
हाथजोरि अरदास कराई। करि बन्दन सिवका मंगवाई।
चढि करि सतिगुर पंथ पधारे। संग चमू चलि बजति नगारे ॥ १६ ॥
अग्र ग्रिन्थ साहिब असवारी। चारु चमर ढोरति पुति भारी।
पाछे सभि कुटम्ब मग चालति। शब्द होति बड ह्य पग डालति ॥ १७ ॥
गगन अछादहि उड करि धूर। मन्द तेज तिसते होइ सूर।
चलति बाहनी[3] पंकती करै। ग्राम पन्थ महिं त्रिन क्रिख दरै ॥ १८ ॥
त्रिण काषट छीनहिं जहिं डेरा। पिखहिं लोक रिस धरहिं घनेरा।
प्रजा किधौं हाकम सहि सैना। जे बेमुख महिमा समुझैं ना ॥ १९ ॥
से खुनसाहिं जरैं[4], नहिं जरैं। मनहुं उखारति हैं निज जरैं।
दिखहिं प्रताप महां बल वारे। कहहिं 'कि इन शत्रु गन मारे ॥ २० ॥
अरु जो अरहिं चहहिं समताई[5]। तूरन जम घर देति पठाई।
शाहु जहां ले त्रास न धरैं। सैन असंखन सों लरि परैं ॥ २१ ॥
सपत हजार हुते इक बारी। पुनह दुगन इस ते संघारी।
टर्यो शाहु रण ते धरि शंका। इह नहिं मिट्यो बीर बर बंका ॥ २२ ॥
प्रथम पंच गुर शान्ति सरूप। इहु धरि शसत्र भयो बडि भूप।
जोद्धा महां करनि संग्रामू। दण्ड प्रचण्ड दीह[6] बल धामू ॥ २३ ॥
डील दराज न दूसर कोई। बल अर शकती कहां सम होई।
सुन्दर मुख मण्डल दरसंता। दीरघ बीरज धीर जवंता ॥ २४ ॥
इत्यादिक कहि आपस मांही। निज घर दब कहि निकसहिं नाहीं।
—चलयो जाइ एक दिन ही रहै—। यांते नहिं कठोर को कहैं ॥ २५ ॥

1. पालकी 2 रात 3. सेना 4. (ईर्ष्या में) जलते हैं 5. बराबरी
6. दीर्घ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हुइ नुकसान सीस सहि लेति। नहिं बिगरहिं समुझहिं म्रितु हेतु।
इस प्रकार गमनति सहि सैना। मग महिं बसे चलति दुइ रैना ॥ २६ ॥

प्रथम पाइ सुधि सांईं दास। इत आगमन भयो सुखरास।
चमूं सरब परिवार समेत। निकटि पहूंचो क्रिपा निकेत ॥ २७ ॥

ले नर संग आइ अगुवाई। बिकसयो सदन अनंद सनुदाई।
सरद इन्द[1] हरिगोबिन्द ओरा। कर्यो चकोरन को दिग् जोरा ॥ २८ ॥

नमो ग्रिंथ जी करि धरि भावा। दिखि चरणारबिन्द उतलावा।
गहि रकाब को सिर पर धारे। अनन्द नीर लोचन को डारे ॥ २९ ॥

जनु सनेह अरु अतम ज्ञाना। चिर के बिछुरे कीनि मिलाना।
सतिगुर बूझी कुशल बताई। डेरा कर्यो सुभट समुदाई ॥ ३० ॥

सीनहुं गुरपतनी जबि देखी। पर्यो पाइ धरि भाउ विशेखी।
अपर सगल गुर केर नजीकी। मिल्यो तबहि पूरी इच्छ जीकी ॥ ३१ ॥

तिम रामो मिलि मसतक टेका। सभि कुटम्ब सहि जलधि बिबेका।
सुन्दर गन प्रयंक डसाए। ऊजल आसत्रन सों घाए ॥ ३२ ॥

सुन्दर मन्दिर अन्दर धिरे। सैना बहिर सिवर बहु करे।
तंबू शमियाने बहु ताने। गाडयो झण्डा ऊँच महाने ॥ ३३ ॥
जथा जोग उतरे समुदाया। आदि मसंदन चमूं निकाया[2]।
जथा शकती दम्पती हुलास। सेवति रामो सांईदास ॥ ३४ ॥
अधिक प्रेम ते असन[3] बनायो। बैठि निकटि धरि भाउ अचायो।
तथा गुरू के नन्दन[4] सारे। धरि अनन्द अचवाय अहारे ॥ ३५ ॥
पुन रामो प्रीति बड धारी। अचि दमोदरी आदिक सारी।
कह्यो गुरू 'सुनि सांईदास !। तोहि प्रेम ने आने पास ॥ ३६ ॥
नित चित सिमरति हाथन जोरि। करति रह्यो दरशन की लोर।
यांते पठि करि तुव अरदास। करि त्यारी आए पुरि आसु ॥ ३७ ॥
सांईदास कह्यो धरि भाउ। 'इही आप को सहज सुभाउ।
राज समाज दरब नहिं हेरो। लखहु न साक सम्बंध बडेरी ॥ ३८ ॥
जहां प्रेम को चितहु गुसांई !। सभि त्यागहु तहिं पहुंचहु जाई।
राज समाज छोडि कुरुराई[5]। जाइ बिदर के निसा बिताई ॥ ३९ ॥

1. चन्द्रमा 2. सारी 3. भोजन 4. पुत्र 5. दुर्योधन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिजबर पंडित गुनि गन वाने। बिना प्रेम से त्यागो सयाने।
शूद्र भगत के संग फिरन्ते। बिदति जगत महिं नहीं छपन्ते ॥ ४० ॥

बसि दासन के सदा गुसांई। तुमरी क्रित तुमको बनिआई।
अपर नहीं समता को धरैं। बस दीननि के नित अनुसरैं ॥ ४१ ॥

रहति भये सतिगुर महाराज। सदा सुधारहिं सिक्खन काज।
कबि कबि वहिर अखेर सिधावैं। कबहुं बैठि करि सभा लगावैं ॥ ४२ ॥

बहुर विसोए का भरि मेला। सुनि सुधि गुर की भयो सकेला।
बहु उपहारन आनि चढावैं। बंदहिं चरन दरस को पावैं ॥ ४३ ॥

गुर ढिग बसहिं लाभ को जानैं। दरसहिं अपनि क्रितार्थ मानैं।
अनगन वस्तू अरपहिं आइ। नर नारी होए समुदाइ ॥ ४४ ॥

मनो कामना पाइ सिधारे। निसा तीन गुर निकटि गुज़ारे।
सुजसु करति अपने ग्रिह गए। सतिगुर तहां बिराजति भए ॥ ४५ ॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे '**डरोली पहुंचन प्रसंग**' बरननं नाम सप्तदशमो अंशु ॥ १७ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु १८

# साधू प्रसंग

**दोहरा**

बसति डरोली ग्राम महिं कीने अनिक बिलास ।
एक गाथ होई जथा सुनहुं तथा सुखरास ॥ १ ॥

घर वड्डे इक ग्राम महिं गुरसिख बसहिं तिखान ।
रामदास सतिगुरु ते सिक्खी धरी महान ॥ २ ॥

**चौपई**

छठे मास दरसन को जाइ । जथा शकति धन भेट चढाइ ।
सुनहि प्रेम करि गुर की बानी । धरम किरत करि बनहि सु दानी ॥ ३ ॥

भउ उर बिखै भाउ को धारै । सतिगुर महिमा अधिक उचारै ।
श्री अरजन को सेवति रह्यो । बपु बहु बरखन बच निरबह्यो ॥ ४ ॥

'आकल' कहहिं तांहि को नामू । मन को गुरमत महिं बिसरामू ।
तिसके ग्रिह निपजी इक कंया । पूरब जन्म पुत्र की धंया ॥ ५ ॥

सपत बरख जबि आकल जानी । 'कित सनबंध करौं' मन ठानी ।
दिज बुलाइ करि दयो पठाई । 'करि शुभ थल मम सुता सगाई' ॥ ६ ॥

फिरयो कितिक थल मिलयो न हाणी[1] । खोजति आयो पुरि तुकलाणी ।
बूझति घर तिखाण के गयो । समता महिं नीके पिखि लयो ॥ ७ ॥

कह्यो सबंध करने को जबै । सादा नाम सु खाती[2] तब ।
सनमान्यो सेवा सभि ठानी । निस बसाइ करि गाथ बखानी ॥ ८ ॥

भलो महूरत तबहि सुधाइ । तिस को सुत साधू बैठाइ ।
'काढि तिलक कुलरीति कराई । पुन आकुल को आनि सुनाई ॥ ९ ॥

1. बराबर का वर 2. बढ़ई



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'पुर तुकलाणी महिं शुभ धाम। भलो जाति महिं सादा नाम।
तिसकी सुत साधू बय बाला। कर्यो सबंध बहुत थल भाला'॥ १०॥

सुनि आकुल ने बूझन कर्यो। 'गुर को सिक्ख कि नहीं निहर्यो?'।
बिप्र कहै 'मैं नहीं बिचारा। नीको एक निकेत बिहारा'॥ ११॥
पछुतायो बस चल्यो न फेर। बीते कितिक बरख पुन हेरि।
गुर को रह्यो अराधिति सदा। 'करहु संबंधी सिख जद कदा'॥ १२॥
इम आकुल चिन्ता बसि होवा। समैं सु ब्याह करनि को जोवा।
लिख करि पाती दई पठाइ। पिखि सादे आनन्द उपजाइ॥ १३॥

सेवक सरवर को नित सोई। सदन मुकाम कर्यो रति होई।
साधु सुत को माथ टिकावा। कर्यो रोइ सभि रीति मनावा॥ १४॥

बड्डे ग्रिह ब्याहनि पुन गयो। जाय दुकाउ[2] भली बिधि कियो।
आकुल सादे मिलनी कीनि। जथा शकती दे कीरति लीनि॥ १५॥

साधू को दीने तबि फेरे। जथा जोग करि रीति भलेरे।
खान पान दे करि सनमाने। तीन दिवस राखे सुख ठाने॥ १६॥

पुन आकुल ने भले पछाने। —इहु सरवर की सेवा ठाने—।
लोक जातिके पिखि समुदाइ। नहिं बोलयो मन बहु पछुताइ॥ १७॥

अपन सुता सों सकल बखानी। 'तुव ससुरार अहै सुलतानी[3]।
तैं नहिं मानहु, कहहिं कदाई। सतिगुर को मानहु मन लाई'॥ १८॥

भई दुखद बहु आकुल लनिया। रिदै बिसूरति सिर की धुनिया।
नहिं बस चलै सह्यो दुख उर मैं। —मैं सिख सुता, सरवरी घर मैं!—॥ १९॥

करी बिसरजन रुदति बिसाला। पुत्र सनूखा ले तबि चाला।
गुरू डरोली पूरब आए। उतरे हुते देश विदताए॥ २०॥

तुकलाणी के मग मैं हेरा। भजन कीरतन होति घनेरा।
वड्डे घर सु ग्राम ते चाले। दिन मैं परि—ही घाम बिसाले॥ २१॥

यांते वडी रैन ते प्याना। अरुणौदै[4] पहुँचे गुर थाना।
सादा सहत बरात अगारी। डोरी साधू सहत पिछारी॥ २२॥

गुर ढिग आसा वार सु गावैं। बादति आदि रबाब बजावैं।
आकुल की दुहिता सुनि कान। —श्री गुर डेरा अहै—पछान॥ २३॥

---

1. एक नगर का नाम 2. बरात का शान के साथ पहुँचना 3. सखी सुलतान की मानने वाले 4. सूर्योदय के समय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पित के संग गई बहु बारी। दरशन देखयो हुतो अगारी।
चितहि उपाइ समीप गवन को। कह्यो कहारन संग बचन को ।। २४ ।।

तुम जानति हो सगरी बात। हम गुर के सिख सद बख्यात।
इहु डेरा ढिग है गुर केरा। चलति चहौं मैं दरशन हेरा' ।। २५ ।।

इम कहि दरब कहारन दीनि। लगे लोभ तबि चलिबो कीनि।
दूर टिकाइ उतर करि डोरी। गमनी श्री हरिगोविन्द ओरी ।। २६ ।।

आकुल सुता अनन्द मन धर्यो। बैठे सतिगुर दरस निहार्यो।
सभा बिसाल लगी चहुं फेरे। नर नारी सुनि शबद घनेरे ।। २७ ।।

जुग करि जोरी बन्दना कीनि। बैठी शबद बिखै चित दीनि।
कितिक वार महिं आसावरि। पायो भोग ग्रनन्द को धारि ।। २८ ।।
तबि सतिगुर तिस ओर निहारे। सगरो वेस व्याहि को धारे।
'बडी प्राति कित ते चलि आई। को कारज अरु कहां सिधाई ?' ।। २९ ।।
ग्राकुल सुता कह्यो तिस वेरे। 'ग्रिह वड्डे घर नैहर[1] मेरे।
सरत्रर के सेवक ससुरारे[2]। इह चिन्ता चित भई उदारे ।। ३० ।।

अबि मैं दरशन करिहौं गुर का। पूरन होइ मनोरथ उर का।
पुन मैं पर बसि परौं दुखारी। नहिं मेरो बस चलहि बिचारी ।। ३१ ।।

यांते मैं चलि करि अबि आई। सुन्यो शबद तुम दरशन पाई'।
सुनि कन्या ते भये क्रिपाल। हेरी श्रद्धा भाउ बिसाल ।। ३२ ।।

श्री मुख ते अम्रित सम कह्यो। 'तेरो लेख इसी विधि लह्यो।
चलि आई सति संगति शरनी। लिखहिं लेख अबि ज्यों शुभ करनी' ।। ३३ ।।

**दोहरा**

पिता दियो पकवान कुछ सो गुर अग्र चढाइ।
'धन्न गुरू सभि शक्ति धरि, लीजहि मोहि बचाइ' ।। ३४ ।।

**चौपई**

सुनि प्रसन्न गुर बाक बखाना। 'नवों लेख[3] लिखिबो तुव ठाना।
पिता तोहि सिख, सो तो तर्यो। घर ससुरार क्रितारथ कर्यो ।। ३५ ।।

सिक्खी दान दीनि हम तोही। अधिक सिक्ख सुत तेरी होही।
पति भी सिक्ख होइ है भले। गुर सिक्खी के मारग चले' ।। ३६ ।।

1. पीहर, मायका घर 2. ससुराल 3. नवीन भाग्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इम गुरबाक सुन्यो हरिखाई। 'धंन गुरू दे हाथ बचाई'।
जबि सादे ने पिखि न डोरी। एकल सुत आयो निज ओरी॥ ३७॥
'कहु साधू! डोरी* कित छोरी?'। कह्यो 'सु गमनी सतिगुर ओरी'।
सुनि सुन ते रिस उर महिं छाई। 'कह्यो गुर कहां गुर निकटि पठाई॥ ३८॥
करहि कोप सरवर सुलतान। गुर को नाम न भूलि बखानि।
जाहु तुरत डोरी ले आवहु। सने सने तिस कहु समझावहु'॥ ३९॥
सुनति पिता ते गुर ढिग गयो। जागे भाग बिलोकति भयो।
रिस करि गयो हटावन जोइ। गुर दरशन ते सीतल होइ॥ ४०॥
रह्यो न गयो बन्दना ठानी। बैठ्यो निकटि क्रिपालु बखानी।
'गुर को सिक्ख ससुर है तोरा। तिसकी सुता सबंधै जोरा॥ ४१॥
अबि तुम तजहु तुरक की सेवा। मानहुं श्री नानक गुर देवा।
देहु दरुद फेर तुम खावहु। तुरक जूठ ते जन्म गवावहु॥ ४२॥
हिन्दु सरीर परमेशवर दीना। क्यों ब्यर्थ खोवहु मति हीना'।
इत्यादिक जबि गुरु सुनायो। साधू बालक तबि बिरमायो॥ ४३॥
कर्यो बिचारन बच श्री गुर का। —हम हिन्दू कयों मानहिं तुरका।
करिकै रोट दरुद दिवावहिं। तुरक जूठ लखि करि पुन खावहिं—॥ ४४॥
तुरक बिचारन कीनि वडेरी। गुर पग लपटायो तिस बेरी।
'मोकहु अपनो सिक्ख बनावहु। तुरक सेव ते मोहि हटावहु'॥ ४५॥
श्रद्धा वधी जानि गुनखानी। चरणाम्रित दीनो दुख हानी।
सत्तिनाम सिमरनि उपदेशा। 'तव सुत उपजहि सिक्ख विशेषा'॥ ४६॥
सुनि करि दम्पति उर हरखाए। गुर सिक्खी दिढ करि चलि आए।
मिले बरात आनि मग चले। तुकलाणी पुरि मारग भले॥ ४७॥
जबि घर गए नारि समुदाइ। मिली गीत गावति हरिखाइ।
सरवर के मुकाम ले गई। दूलो दुलहनि देखी नई॥ ४८॥
ब्रिन्द त्रिखाण त्रिखाणी मिले। कहैं कि 'सिर टेकहु इस थले'।
सुनि साधू ने लात प्रहारी। तुरक मन्नता हमहुं बिसारी॥ ४९॥
गुर ते पाहुल ले हम आए। इस थल को अबि देउं ढहाए'।
सभि मिलि कह्यो 'मूढ करि मौन। इहु बिधि सिखराई तुहि कौन?॥ ५०॥
हम सरवर के सेवक महां। कुल कलंक! तें बोल्यो कहां।
करहि बावरा देहि बिनास। 'अबि भी कहु—मैं सरबर दास'—॥ ५१॥

---

*पालकी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इत्यादिक बहु कहि कहि हारे। नहिं साधू ने किह बच धारे।
हरि सभि रहे परसपर इम कहि। 'करयो बावरा सरवर ने इह'[1] ॥ ५२ ॥
सरब सुपति जबि निसा मझारा। ले करि कही सु थान बिदारा[2]।
दिन महिं उठि सो सकल बनावैं। इह तिन पाछै ढाहि गिरावैं ॥ ५३ ॥

इस प्रकार कुछ समां बितायो। सतिगुर को सिमरन उर भायो।
गुरू ध्यान करि त्रिय सों मिला। गरभ धरन कीनसि तबि भला ॥ ५४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'साधु प्रसंग'** बरननं नाम अष्टमो अंशु ॥ १८ ॥

---

1. सखी सरवर ने इसे पागल बना दिया है
2. जगह उखाड़ डाली

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु १६

# साधु रूपे प्रसंग

**दोहरा**

पूरन भे नव मास जबि उपज्यो सुत बडभाग।
सुन्दर बदन सुहाय पिखि नर नारी अनुराग ॥ १ ॥

**चौपई**

भयो बरख दिन को जबि बालिक। ले गुर ढिग पहुंचे तत्कालक।
श्री हरिगोविन्द हुते सुधासर। साधू कीनि सनान अघनहर ॥ २ ॥
जथा शकती धरि भेट अगारी। हाथ जोरि करि बन्दन धारी।
बानी बिनती सहत उचारी। 'तुम क्रिपाल ह्वै कुमति बिदारी ॥ ३ ॥
इहु रावर की बखशी दात। सुन्दर भागवान भा तात[1]।
नाम आप ही राखन करीअहि। हुइ सिख तुमरो वाक उचरीअहि' ॥ ४ ॥
श्री गुर पिख्यो रूप अभिरामू[2]। 'रूपचन्द' धरि यांते नामू।
'भाई रूपा इहु बिदताइ। गुर सिक्खी धरि है अधिकाइ' ॥ ५ ॥

सुनि गुर बर दम्पति हरखाए। केतिक दिन गुर निकटि बिताए।
पुन आज्ञा ले करि कर आए। सतिगुर को सिमरति सुख पाए ॥ ६ ॥
खषट मास कवि बरख बितावैं। धरहिं भाउ गुर दरशन आवैं।
जथा शकती पट दरब चढावैं। ले आयसु पुन निज घर आवैं ॥ ७ ॥

पारि पुत्र को कीनि बडेरा। सिक्खी महिं चित जाहिं घनेरा।
पित, सुत सिक्खी अधिक कमाई। जथा हुती बहु आकुल जाई ॥ ८ ॥
पुन रूपा निज क्रित को लागैं। जथा करति अपने ब्रिद्ध आगे।
पिता पुत्र जग करहिं कमाई। सदा रहैं सतिगुर शरणाई ॥ ९ ॥
मात पिता सिख हुते अगारी। पुत्र भयो प्रेमी तबि भारी'
लखहि गुरु परमेसुर रूप। सदा अराधहिं रिदै अनूप ॥ १० ॥

---

1. पुत्र 2. सुंदर



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुरू डरोली[1] महिं चलि आए। सुनि मन बिखं अधिक हुलसाए।
दरशन दिवस बिसोए कर्यो। नित प्रति प्रेम होति उर ह्यों॥ ११॥

आज्ञा ले निज घर को आए। गुरु जसु कहिति सुनति सुख पाए।
पिता पूत आपस महिं सदा। गुर कीरति भाखहिं जद कदा॥ १२॥
जे मास आयो जिस काला। चण्ड सूर ते घाम[2] बिसाला।
दसहूं दिशि महिं तपत घनेरी। लोवां चलहिं वेग तिस बेरी॥ १३॥
इक दिन पिता पूत जुग मिले। ढाढण काठ बहिर को चले।
हुते दूर साधू तबि कह्यो। 'तपति अधिक बाहर हुइ लह्यो॥ १४॥
हे सुत ! जल कूबा[3] भर लीजहि। बहिर त्रिखातुर हुइ जवि, दीजहिं'।
सुनि रूपे तबि नीर नवीन। आछी रीति पूर करि लीनि॥ १५॥
कन्धे धरि कुठार[4] को चले। 'जिन्ह के भाग उदित ह्वै भले।
गये दूर जल निकटि उठाए। षिखे जाइ काषट समुदाए॥ १६॥
हुतो जण्ड तरु एक बिसाल। लटकायो जल तिसके नाल।
अपनि कार को काठ निहारे। काटनि लागे हाथ कुठारे॥ १७॥

भोजन करि घरि ते चलि आए। तपत घाम ते भये तिसाए।
पान करनि जल को चलि गए। जण्ड तरे थित होवति भए॥ १८॥
पित को पयावन हित उकसायो। जल को रूपे हाथ लगायो।
अति सीतल लंटकति सो होवा। अधिक त्रिखा ते पित बहु जोवा॥ १९॥

कह्यो तवै 'हे पिता ! सुनीजै। अति सीतल जल बिमला जनीजै।
लूंवन लगिवे छाया बिखैं। यांते भयो न अस कवि पिखैं॥ २०॥

हम तुम अहैं मिहनती लोग। शुभ अस वसतु के नहिं जोग।
सतिगुर की लाइक जल भयो। अपर उचित मैं नहिं लखि लयो॥ २१॥
अति उत्तम जो सभि जग नाइक। उत्तम वस्तु सकल तिन्ह लाइक।
सुमतिवन्त जे नर, लखि लेत। उत्तम वसतु गुरन हित देति॥ २२॥
अपने उचित जान हरखावैं। जग सागर दे हाथ तरावैं।
सुनि साधू निज नन्दन बैन। करति ध्यान गुर मुन्दति नैन॥ २३॥
पुन उठि लगे काटिबे लकरी। 'प्रथम न पीवैं' टेक सु पकरी।
घरी बिताय त्रिखातुर होए। पुन हरि तहिं आए मिलि दोए॥ २४॥
जबि साधू ने हाथ लगाअहु। जल कूनाहू अतिशै शीतलाअहु।
चहति हुतो प्रिय पुत्र पियावन। तपत त्रिखातुर[5] हेतु हटावन॥ २५॥

1. एक नगर 2. गदमी 3. मटकी 4. कुल्हाड़ा 5. प्यासा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लखि जल सीतल रिदै बिचारा। —सुमतिवन्त सुत साच उचारा।
गुरु लाइक इहु निशचै अहा। तऊ आनि करि पीवहिं कहां ?—॥ २६ ॥
जल को तजि बैठ्यो सुत पास। लागी बहु दोनहुं को प्यास।
शुषक कण्ठ मुख ओषट भए। रसना चलति न बहु मुरझए॥ २७ ॥
सने सने तबि नीठहि नीठ। बोलहिं दिशनि चलावहिं डीठि।
'सतिगुरु डारि डरोली डेरा। तीस कोस को पंथ घनेरा॥ २८ ॥
परहि समें इस घाम विसाला। किम अबि ऐहैं गुरु क्रिपाला'।
तबि रूपे पित को समुझायो। 'इम संसै न करनि विन आयो॥ २९ ॥
सरब शकती मालिक गुरु पूरा। जहिं सिमरैं सभि थान हजूरा।
हमरो प्रेम प्रग निरबाहैं। पान करहिं लाइक निज चाहैं'॥ ३० ॥
इम कहि गए कार को करिबे। करी न गई, हटे पुन परिबे।
भए त्रिखातुर लकरी काटी। सूके ओंठ, लागि मुख लाटी॥ ३१ ॥
अति सीतल जल उत्तम जानि। चहिति करायो श्री गुर पान।
खिन्न बदन[1] मन उमंग बडेरी। पित्ता पुत्र ब्याकुल तिस बेरी॥ ३२ ॥
श्री हरि गोबिन्द मन्दिर अन्दर। थिरे प्रयंक पीठ म्रिदु सुन्दर।
खस टाटी कीने छिरकाव। जल सींचति सीतल महिकाव॥ ३३ ॥
अरक गुलाबन कन्ध उलीचै। अतर सुगन्धति बसत्रन बीचै।
रामो खरी बिजन[2] की करै। सांईदासहि बास उचरै॥ ३४ ॥
करी प्रेम ने खैंच बडेरी। सभि किछ त्याग दीनि तिस बेरी।
कहति शीघ्र ही जीन पवायो। चढिवे हेतु तुरंग मंगायो॥ ३५ ॥
भए एकाकी तबि असवार। नहिं दासन दुख सकै सहार।
तीस कोस पहुचे छिन मांही। होय त्रिखातुर इत उत जांही॥ ३६ ॥
जिम जल प्रापति कहुं न होवा। जंगल बिखै भ्रमति थल जोवा।
पिता पूत व्याकुल छित परे। शुषक[3] बदन ओषठ जुग जुहे॥ ३७ ॥
इक सतिगुरु की आसा लागे। पानि पिआवन पर अनुरागे।
पूरब अरप दीनि जल सीतल। —बिन गुरु पियैं न हठ धरि हीतल॥ ३८ ॥
प्रान अन्त लौ प्रेम निबाहा। किम गुरु नहिं आवहिं तिन पाहा।
देखि दूर ते दोइन पासा। ऊचे सतिगुरु बाब प्रकाशा॥ ३९ ॥
'को तुम परे बतावहु हमै ?। त्रिखा बिखाद देति इहु समै।
जल जंगल महिं नांहिन पावैं। खोजति फिरैं हाथ नहिं आवै'॥ ४० ॥

1. मुरझाए मुख 2. पंखा 3. शुष्क

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुन गुहार[1] को आंख उघारी। उठि साधू ब्याकुल तिख भारी।
---कौन पुकारति जंगल मांही। जेठ दुपहिरे थिर क्यों नांही ?—॥ ४१ ॥
चढे तुरंग पर आवति हेरे। श्री हरि गोविन्द हैं तिस बेरे।
जिम बहु तपत गयो सुक नीर। अलप ताल जुग मीन सरीर॥ ४२ ॥
तरफति, इक परमेशुर आस। हुइ जलधर गुर पहुंचे पास।
जथा कमल जुग, घाम तपाए। जल विहीन हुइ करि मुरझाए॥ ४३ ॥
नदी रूप गुर पहुँचे आए। विन जल पान, उठे हरखाए।
सुत रूपे संग साधू कह्यो। 'उठहु, गुरु मैं आवति लह्यो॥ ४४ ॥
भए त्रिखातुर जाचति नीर। करहु पिआवनि धरि करि धीर'।
म्रितक समान[2] हुतो मुरझायो। उठ्यो सुनति जनु अमी[3] पिलायो॥ ४५ ॥
दोनहं खरे दूर कर जोरे। गुर ह्य प्रेरि गए तिन ओरे।
बार बार बच बदन बखाने। 'हम को लगी त्रिखा महाने॥ ४६ ॥
खोज रहे जल कतहूं न पायो। जेठ दुपहिरे बहु तपतायो'।
गए समीप दौन पग परे। 'प्रभु जी ! जल सु त्यार हम करे॥ ४७ ॥
कून्हा जण्ड ब्रिक्ष लटकायो। लग लोवां अति ही सितलायो।
उचित आप के पानी जाना। भए त्रिखातुर कर्यो न पाना'॥ ४८ ॥
गहि रकाब सतिगुरु उतारे। तन को बसन प्रिथी पर डारे।
हाथ जोरि ऊपर बैठाए। पातनि को डोना[4] करि लियाए॥ ४९ ॥
तबि रूपे जल तर उतारा। भरि डोना साधू कर धारा।
श्री हरिगोविन्द को पकरायो। कर्यो पान, पुन बाक अलायो॥ ५० ॥
'जल ऐसो कबि पीयो न आगे। किनहूं न दीनसि करि अनुरागे।
अधिक त्रिखा करि पान मिटाई। अबि तुम पियहू जियहु सुखदाई॥ ५१ ॥
हिम अरु शोरे महि धरि राखा। अति सीतल करिबे अभिलाखा।
इस जल सम हम कबहूं न पियो'। बारम्बार सराहिन कियो॥ ५२ ॥
पित्ता पुत्र गुर आयसु पाई। कर्यो पानि जल त्रिखा मिटाई।
हरखति पौन करनि पुन लागे। पूरब जनम पुत्र जिन जागे॥ ५३ ॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रिंथे सप्तमि रासे **'साधु रूपे प्रसंग'** बरननं उन्नीसमो अंशु॥ १९॥

---

1. पुकार 2. मृतक की तरह 3. अमृत 4. पत्ते का पात्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु २०

# साधू रूप चन्द प्रसंग

**दोहरा**

साधू धरि आनन्द उर 'महाराज ! किस थान ?।
बिचरति हुते समीप कित कीनि पान जल आनि ॥ १ ॥

**चौपई**

उचित आप के हमने जाना। तुम हित धर्यो, कियो नहिं पाना।
क्रिपा धारि करि पुरवी आस। दास जान करि पहुंचे पास' ॥ २ ॥
सुनि सतिगुरु ब्रितान्त बखाना। 'तीस कोस हम कीनि पयाना।
धाए पीवन नीर तुमारा। जेठ दुपहिरी अबि कछु ढारा ॥ ३ ॥
कार तिखाननि की अबि त्यागहु। करहु देग गुरु की अनुरागहु।
हम प्रसन्न बरजाचत कीजै। अभिलाखति मुख पाइ सु लीजै ॥ ४ ॥
पिता पुत्र कर जोरि उचारे। 'आनि आपने पास उधारे।
दिहु निज सिक्खी को अबि दान। जिस ते जनम मरन दुख हानि ॥ ५ ॥
तुमरे चरनन को हुइ प्रेम। बिसरहि नहिं कबि दाता छेम।
जो तुम टहिल देहु हम तांई। करहिं देग नित, बनहु सहाई ॥ ६ ॥
अपर न बांछा हमरे कोई। करहिं अचावन दिहु तुम जोई।
पुरि मैं गुरसिख अहैं न, मूढ़े। मतसर* अगनि ज़रहिं नित कूढ़े ॥ ७ ॥
तिन महुं वास अहै दुखियारा। इक अलम्ब तुम अहो हमारा।
जिम राखहु तिम रहैं, गुसाईं !। बिना सेव अपर न चतुराई' ॥ ८ ॥
सुनि सतिगुरू दे धीरज कहैं। 'नर दोखी तुमरे नहिं रहैं।
उजर जाइगो ग्राम महाना। रचहु ग्राम अपनो शुभ थाना ॥ ९ ॥
वधहि बन्स तेरो तहिं रहै। बहुत वडाई बिदति सु लहै'।
सुनि गुर ते साधू पुरि गयो। गुर ब्रितन्त सभि भाखति भयो ॥ १० ॥

---

* ईर्ष्या।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनति भारजा[1] उर हरिखाई। हित दरशन पति के संग आई।
देखति ही पाइन पर परी। 'धंन गुरु! हमरी कुल लरी ॥ ११ ॥
हम सम दीनन की को सुनै। अस कारज रावर को बनै'।
रूप चन्द को हेरनि कीन। बसत्र शसत्र अपने गुर दीनि ॥ १२ ॥
गुरु डरोली ते जबि धाए। बिधी चन्द सुनि ज़ीन पवाए।
प्रवल तुरंगम तबि हूं प्रेरा। कित धवाइ कित पोईआ छेरा ॥ १३ ॥
पुन पैंदे खां आदिक सुने। चढे तुरत शसत्रन सों सने।
'सोझी नहीं गुरु कित गए'। सुनि सुनि सुभट[2] अरूढति भए ॥ १४ ॥
नहिं को किस हूं संग मिलावैं। खोज देखि करि ह्यन धवावैं।
आगे पाछे लेहा देहु। आवति चमूँ चढी गुर नेहु ॥ १५ ॥
कुछकु रहे दिन बिधीया आयो। दरस देखि करि सीस निवायो।
निज सिक्खनि संग बाक बखानति। —इन हित धाए—रिदै पछानति ॥ १६ ॥
'महाराज! एकल ही आए। तुरत चढ्यो मैं, नहिं दरसाए'।
सतिगुर कह्यो 'न मैं इम आवति। सिक्खनि प्रान अन्त हुइ जावति ॥ १७ ॥
इनहुं उबारन के हित धाए। जेठ दुपहिरी मंहिं उललाए'।
दया सिन्धु तहिं ते चढि चाले। साधू सुत बनिता जुति नाले ॥ १८ ॥
गुर के शसत्र वसत्र जो लीए। सो सुधारि सिर धारन कीए।
चलति संग मंहि प्रभू निहारे। क्रिपा सहत बिकसन्ति उचारे ॥ १९ ॥
'रूप चन्द! तैं बसत्र न पाए। दिए शसत्र जो अंग न लाए।
सिर पर धरि उठाइ करि चाला। क्यों न पहिर, भा बीर बिसाला?' ॥ २० ॥
रूप चन्द करि जोरि उचारा। 'मैं दासन को दास बिचारा।
तुच्छ जीव मतिमन्द मलीना। भगति ज्ञान गुन गन ते हीना ॥ २१ ॥
सभि जग करता हरता स्वामी। चहहु सो करिहो अन्तरजामी।
शसत्र बसत्र जो तुम तन केरे। सुखद सु पूज्यमान हैं मेरे ॥ २२ ॥
इती बिअदवी किम बनि आवै! तुम सम जानि पूजिबो भावै'।
श्री हरिगोविन्द भगति पछानै। सुनि प्रसन्न हुइ बाक बखानै ॥ २३ ॥
'धरहु न तेग जु दई हमारी। तौ हुइ रसना तेग तुमारी।
जिसके सरापहु बिलम न होइ। प्रान अन्त ततछिन ही सोइ' ॥ २४ ॥
नहिं ते चतरकोस चलि आए। सुन्दर धरनी तहिं दरसाए।
डेरा करति भए गुन खानी। 'रचहु ग्राम इह ठां' कहि बानी ॥ २५ ॥

---

1. स्त्री 2. शूरवीर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जबि संध्या होई तहिं आइ। पैंदखान सों भट समुदाइ।
ध्यान भजावति पहुचें तहां। पिखि सतिगुर पायो सुख महां ॥ २६ ॥

कितिक चमूं मग महिं किय डेरा। पसर्यो अन्धकार जबि हेरा।
तहिं बसि करि गुर निसा बिताई। जागे सकल प्राति हुइ आई ॥ २७ ॥

निज कर सों गुर टक्क लगाइव। मोहड़ा गाड रिदे हरखाइव।
साधू संग कह्यो 'हुइ ग्रामू। अपन नाम पर धरि इस नामू' ॥ २८ ॥

सुनि साधू कर जोरि उचारा। 'मुझ ते मम सुत सिक्ख उदारा।
निशचा अधिक आप के मांही। बसहु रिदे कबि बिसरति नांही ॥ २९ ॥

पुत्र नाम पर राखहु नामू'। सुनि गुर भाख्यो 'रूपा ग्रामू'।
कह्यो बहुर 'अबि सदन बनीजै। बिदतहि देशनि बिखै जनीजै ॥ ३० ॥

हम ही पुन आवहिं इस थान। केतिक द्योस करहिं गुज़रान'।
इम कहि सतिगुर भे असवार। सने सने चलि खिलति शिकार ॥ ३१ ॥

साधू रूपचन्द मिलि दोऊ। ग्राम बसावनि कीनसि सोऊ।
गुर बर करि नर गन तबि बासे। आनि आपने रचे अवासे ॥ ३२ ॥

सेव देग की करिबे लागे। गुरु प्रेम महिं रहिं नित पागे।
स्त्री पुरुष टहिल को करिहीं। छुदिति असन दे भाउ सुधारिहीं ॥ ३३ ॥

अबि लगि तिनके है इहु रीति। सेवहिं देग धरहिं उर प्रीत।
बडे सम्रिद्धवान भी भए। सेवक अग्र ब्रिन्द हुइ गए ॥ ३४ ॥

तऊ आप ही त्रिय जुति सारे। करहिं देग की टहिल सुधारे।
गरब हीन संतति सभि होई। असन अचावहिं छुद्धति* जि कोई ॥ ३५ ॥

पैंदखान तबि जोरे हाथ। 'हे प्रभु! कोइ न लीनो साथ।
सुनि सुनि सुधि पाछै सभि आए। केतिक आज मिले दरसाए' ॥ ३६ ॥

बिधी चन्द सभि कह्यो प्रसंग। 'सिक्खनि वतसल बिरद उतंग।
बिषणु रूप महिं बरतहिं जैसे। नहीं सुभाउ मिटति सो कैसे ॥ ३७ ॥

भगतनि की सहाइता हेतु। त्यागति सभि को रमा समेत।
जबि सहाइ निज जन की करैं। तिह पशचात सभिनि सुधि धरैं ॥ ३८ ॥

सहिज सुभाइ इनहु को ऐसे। जन को रखैं जैसे कैसे।
सो गति ईहां कीनि गुसाईं। तपत जेठ तूरन करि धाई' ॥ ३९ ॥

---

* भूखा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि सभिहिनि गुर चरित उदारा। श्रद्धा भाउ अधिक उर धारा।
करति बतक* इम खिलति अखेर। सने सने चलि पन्थ बडेर ॥ ४० ॥

एक जामनी मग महिं रहे। बिचरति जंगल महिं मुद लहे।
बहुर डरोली पहुंचे जाइ। सांईदास मिल्यो हरिखाइ ॥ ४१ ॥

बिथर्यो सभिहिनि बिखै प्रसंग। एक करहि दूसर के संग।
'छिन महिं तीस कोस गुर धाए। मरहिं त्रिखातुर सिक्ख बचाए ॥ ४२ ॥

तीस कोस पर तिन सुधि जानी। पियति न गुरु उचित लखिपानी।
परखि प्रेम को बहु उतलाए। पियो जाइ जल, बने तिसाए ॥ ४३ ॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रिंथे सप्तमि रासे '**साधू रूप चन्द प्रसंग**' बरननं नाम बीसमो अंशु ॥ २० ॥

---

* बातचीत।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २१

# दमोदरी मात परलोक गमन प्रसंग

**दोहरा**

बसति डरोली सतिगुरु केतिक दिवस बिताइ।
सिख संगत आवति अनिक दरसति अनिक सिधाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

श्री गुरदित्ते नगर बसायो। बनिक[1] आदि नर ब्रिन्द टिकायो।
सभि बिधि की सुधि दुरि जन केरी। ले करि खातिर कीनि घनेरी ॥ २ ॥
बहुर पिता कहु दरशन चाहा। चलिवे कारन कीनि उमाहा।
असुवारी करवाइसि त्यारी। स्यंदन आइ मोल को भारी ॥ ३ ॥
नत्ती जुग पुत्रन को लीने। आनन्द सहत अरूढत कीने।
धीर मल्ल कुछ भयो बडेरा। श्री हरिराय अंक तिस बेरा ॥ ४ ॥
बहिलनि महिं दासी चढिवाई। गमने दास साथ समुदाई।
श्री गुरदित्ता चढे तुरंग। चंचल फांदति मनहुं कुरंग ॥ ५ ॥
इम कुटंब लेकरि निज साथ। गमने दरशन हित पित नाथ।
नगर बिखै इक त्यागयो दास। सुमतिवन्त रच्छक चहुं पास ॥ ६ ॥
पुरि जन मिले धीर को दीनि। पुन मग बिखै पयानो कीनि।
श्री अम्रितसर नहिं गमनए। सूधे पन्थ आवते भए ॥ ७ ॥
दिन केतिक मग बिखै बिताए। बहुर डरोली कहु चलि आए।
पित के पाइन बन्दन कीनि। बूझी कुशल बताइ सु दीनि ॥ ८ ॥
बृड्ढणशाहि मिलण जिम जोवा। नगर वसावन को जिम होवा।
सभि सतिगुर के निकटि बखानी। सैल समीपी शुभ इसथानी ॥ ९ ॥
चरन आप चलि पावहु जबै। शोभहि पावन ह्वै करि तबैं।
सुनति पुत्र ते 'साध' बखाना। कर्यो करम सगरो सनमाना ॥ १० ॥
श्री हरिराय अंक मैं लए। नत्ती[2] चरन बन्दना किए।
जुग पुत्रन पाइन पर पाए। पिखि पौत्रन सतिगुर हरखाए ॥ ११ ॥

1. बनिया भाव दुकानदार 2. पौत्र



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वैठारे निज अंक मझारे। म्रिदु बानी के सहत दुलारे।
गुरुता उचित लखे हरिराइ। क्रिपा द्रिषटि तिन पर अधिकाइ ॥ १२ ॥
श्री गुरदित्ता अन्तर गयो। —तीन मात को बन्दति भयो।
पिखि दमोदरी सुत हरखाई। सुधा समान आशिखा[1] गाई ॥ १३ ॥
बहुर नानकी अरु मरवाही। दई असीस 'रहहु मुद मांही'।
मिलि करि वहिर निकसि तबि आए। मिले सकल ही बन्दन गाए ॥ १४ ॥
सांईदास आदि बिधिआदि। मिले कुशल बूझति अहिलादि।
गुर सुत सकल बात के लाइक। मित्रन हरखति, शत्रुनि घाइक[2] ॥ १५ ॥
पुन नत्ती घर अन्तर बरी। सभि सासन को बन्दन करी।
पौत्रे पिखति परम हुलसाई। गहि बाहुनि ले अंक बिठाई ॥ १६ ॥
करी नमो रामो पग फेर। 'जुग पुत्रन हुई वंस बडेर'।
सभि सासन शुभ नुखा निहारी। सनमानी बहु निकटि बिठारी ॥ १७ ॥
सभिनि बिखै आनन्द बड होवा। गुर परिवार एक थल जोवा।
केतिक दिन पुन बसति बिताए। मेला दिवस बसोवा आए ॥ १८ ॥
चहुंदिशि की संगति समुदाई। लए अकोरन को उमडाई।
नर नारी गुर कीरति करिते। आनि आनि करि दरस निहरते ॥ १९ ॥
बड मसनन्द[3] बिछावन करैं। शसत्र सजाइ गुरु तबि थिरैं।
बिसद[4] मरालनि केर मनिन्द। दुरति चमर दुति होति बिलन्द ॥ २० ॥
खरो मेवरो होइ अगारी। संगति की अरदास उचारी।
ब्रिन्द मसन्द बिलंद धनी हैं। आनहिं गुर की कान घनी हैं ॥ २१ ॥
जथा जोग सभि को हरखावहिं। देशनि की दसतार बंधावहि।
कित ते लच्छ, जुगम लछ लयावहिं। गुर की कार चली नित आवहि ॥ २२ ॥
आदि संगलदीप निकाया। चहुंदिश ते पहुंचति बहु माया।
छठे मास को आए मसंद। को सम्मत महिं ले धन ब्रिन्द ॥ २३ ॥
सभि देशनि पर बन्ध अंजारे। नित ही आनति धन गुर कारे।
को सिख ले पहुंचति हैं आप। आन जि दरसति हुई निषपाप ॥ २४ ॥
वेशुमार हुइ लेनि रु देनि। अरपहिं वसतू जेन रु केन[6]।
जो मसंद जिस देश मझारा। सो ले संगति संग उदारा ॥ २५ ॥
आनि करहि दरशन गुर केरा। धरहि उपायन दरब घनेरा।
संगति के दरशन हित दैवे। जबि बैठहिं सतिगुर दुति लैबे ॥ २६ ॥

---

1. आशीर्वाद 2. मारने वाले 3. गद्दी 4. उज्ज्वल 5. लाख . 6. जैसे कैसे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अधिक पदारथ के अम्बार। होति जाति नहिं परहि शुमार।
धरि धरि श्रद्धा संगति आवहि। मनो कामना पाइ सिधावहि ॥ २७ ॥
सावण मास प्रबिरतयो सारे। गुर परिवार मिलयो मुद धारे।
सरब इकत्र मिले तिस थाना। पिखति परसपर मिलि सुख माना ॥ २८ ॥
तबि दमोदरी बैस बिताई। प्रान अन्त अपनो लखि पाई।
पति सतिगुर को दरशन कर्यो। हाथ जोरि वच बिनै उचर्यो ॥ २९ ॥
तुम प्रभु हो सभि ही बिधि लाइक। बडे पुन्न फल भा मम नाइक।
मैं अनजानपने कुछ कह्यो। नहीं महातम नीके लह्यो ॥ ३० ॥
क्रिपा धारि सो बखशन कीजै। अन्त समां मेरो लखि लीजै।
निज चरनन की दासी जानो। बीच परलोक मिलावनि ठानो ॥ ३१ ॥
मैं अजानपुन त्रिय मति अहै। रावरि भेद देव नहिं लहैं'।
बिनै सुनी गुर धीरज दीनि। 'सदा संग तू हमरे चीन ॥ ३२ ॥

गुर घर की महिमा बडि भारी। श्रद्धा धरी सु नर कै नारी।
परमगति सो पहुंचहि जाइ। तू मम दारा सहज सुभाइ ॥ ३३ ॥
सद संगी किम बिघुरहिं नांही। तनु त्यागन सभि ही जग मांही।
थिर को रहै न थूल सरीर। निज न्रारी सभि पांइ बहीर[1]' ॥ ३४ ॥

सुनि पति ते उर बहु हरखाई। बहुर कुटम्ब मिली समुदाई।
करि शनान को पौढी तहां। कुश को आसतरन[2] रचि जहां ॥ ३५ ॥
कन्त ध्यान महि हुइ लै लीन। तन को त्यागनि तत्तछिन कीनि।
गंग सास के पास पधारी। चढि बिवान दीपत दुति भारी ॥ ३६ ॥
सभि परिवार निहारति रह्यो। प्रान अन्त होइस जबि लह्यो।
सोलां सै अठासीए मांही। भा परलोक गुरु त्रिय तांही ॥ ३७ ॥
रुदन कीनि मिलिकै सभि नारी। रामो सुसा[3] सनेह दुखारी।
'हुती सुमति बडभागन याही। सभि परिवार उधार्यो जांही ॥ ३८ ॥
माता, पिता, मोहि, बहु आन। गुरपति ते कीनसि कल्यान।
जिस ने श्री गुरदित्ता जयो। जगतेशुर प्रिथ भरता[4] भयो ॥ ३९ ॥
इस की पदवी कहां बिचारी। तरे संबधी सभि नर नारी'।
इत्यादिक गुन अनिक उचारति। रोदति सुसा प्रीत प्रतिपारति ॥ ४० ॥
रुदति नानकी तथा मरवाही। नुखा बिरलापति बहु दुख मांही।
रोदन नाद उठ्यो अधिकाई। श्री हरि गोबिन्द सकल हटाई ॥ ४१ ॥

1. चले जायेंगे 2. आसन 3. बहन 4. पति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'इहु जग रीति सभिनि सिर होई। मत रुदनहु अचरज नहिं कोई'।
म्रितु रीति गुरदित्ता नन्द। करी सकल जिम भनी बिलंद ॥ ४२ ॥
सांई दास पर्यो मुरछाइ। उठि कै 'हाइ हाइ' बिललाइ।
"हे बडिभागनि[1] ! तुव उपकारा। भयो सबंधी गुरु हमारा ॥ ४३ ॥
इन्द्रादिक सुर सरब उमाहति। क्रिपा द्रिषटी जिसकी नित चाहति।
निसबासुर मिलिकै तिह संग। हम भी धन्न भए सरबंग ॥ ४४ ॥
हम सभि को तजि प्रथम पधारी। हे पतिव्रते ! शीव्रता धारी'।
गुर कहि सभि को रुदन हटायो। बाबक[1] ते कीरतनु करिवायो ॥ ४५ ॥
बिधीआ पैदें खान पुकारा। 'अहो मात ! कित गी? इस बारा'।
करि समान आदिक क्रित सारी। रच्यो बिवान मोल को भारी ॥ ४६ ॥
बहु कीमत के बसत्र सु पाइ। चारहुं ततछिन कंध उठाइ।
ले पुरि वहिर चले समुदाइ। धीर मल्ल तबि चवर दुराइ ॥ ४७ ॥
बहु शंखन के शबद बजावति। आगे चलति सु मारु गावति।
चन्दन चित्ता बिसाल बनाई। धरि करि ऊपरि अग्नि लगाई ॥ ४८ ॥
श्री गुरदित्ता ऊच पुकारा। नीर बिलोचन मोचिति धारा।
करी कपाल क्रिया तिसि काला। सभि उठि कीनि सनान किलाला[2] ॥ ४९ ॥
गाय कीरतन भोग पवाअहु। पंचामृत बहुरी बरताअहु।
सनै सनै आये निज डेरे। बैठ बैठ, नर उठे घनेरे ॥ ५० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे सप्तम रासे '**दमोदरी मात परलोक गमन प्रसंग**' बरननं नाम इकीसमो अंशु ॥ २१ ॥

---

**1. एक रबाबी का नाम 2. जल**

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु २२

# करतारपुर परवार पठन प्रसंग

**दोहरा**

जहिं जहिं हुते सबंध गुरु तहिं तहिं सुधि पहुंचाइ।
आय नराइण दास तबि दारा जुति रुदनाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

रामो पति के सहत दुखारी। को दिन महिं परलोक पधारी।
सांई दास उदास अवासा। प्रान त्याग करि गयों तमासा ॥ २ ॥

श्री हरि गोविन्द शुभगति दीनि। म्रितक क्रिया गुरदित्ते कीनि।
एक सुता म्रितु सुनि करि आए। पिख दूजी को बहु रुदनाए ॥ ३ ॥

त्रिय जुति बस्यो नराइण दास। जगति बिनासी लख्यो उदास।
दिन थोरन महिं त्यागे प्राना। भयो तथा परमेशुर भाना ॥ ४ ॥

दयाकौरे जुति शुभ गति पाई। जिन की कुल सिक्खी चलि आई।
सभि के सतिगुरु पुषप चुनाए। धरि डोरे सुरसर पहुंचाए ॥ ५ ॥

सुनि सुनि जित कित ते चलि आए। बहु की म्रितु लखि उर बिसमाए।
बैठहिं सतिगुरु सभा लगाइ। होति कीर्तन सुनि समुदाइ ॥ ६ ॥

हरीचन्द आयो जुति दारा। सहत भारजा आयो द्वारा।
पहुंच्यो सुन्दर परमानन्द। दई दिखाई दातूनन्द ॥ ७ ॥

रामा त्रिया सहत चलि ग्रायो। धर्मा सभि कुटम्ब को ल्यायो।
प्रेमचन्द ले दारा साथ। आय बिलौके श्री गुरूनाथ ॥ ८ ॥

गुरु सुता बीरो बिललाइ। 'हे जननी ! मैं पिखी न आइ।
सकल मेल मिलि करी पुकारा। जनु करुना सीरता की धारा ॥ ९ ॥

सिमरि सिमरि गुन को रुदनन्ते। ऊच पुकारति बहु बिललन्ते।
सतिगुर दई सभनि को धीर। 'गति ऐसी, जो धरति शरीर ॥ १० ॥



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लखहु साच परमेशुर भाणा। जो आयो तिस सरपर[1] जाणा।
अपनो आप नहीं थिर होइ। तौ काहे को पर हित रोइ॥ ११॥

श्री ग्रंथ साहिब पठवायो। दिन त्रोदसमें भोग पवायो।
पंचाम्रित[2] अधिकै करिवायो। खोइ शोक सभि महिं बरतायो॥ १२॥
अधिक दान दीनसि सभि कारन। प्रिथक् प्रिथक् करि नाम उचारन।
श्री गुरदित्ते पाग बधाई। दई सभिनि, होई समुदाई॥ १३॥

रह्यो मेल केतिक दिन पास। करे जज्ञ, भोजन दे रास।
बिप्र, साध, सिख, संगति सारे। खषट रसन के सवाद अहारे॥ १४॥
पूप[3] पूरिका बरे, पकौरे। मिर्च धनिया सों दधि महिं बोरे।
गन पंकति बैठाइ अचावति। मन भानति ले सभि ही खावति॥ १५॥
पुन सभिहिनि को दरब[4] दिवायो। हरखति हुइ मुख गुरजस गायो।
इम सभि शोक निवारन कीनो। सकल मेल को धीरज दीनो॥ १६॥
निज निज सदन चले मिलि सारे। गुरु विसरजन करे[5], सिधारे।
सुन्दर परमानंद पयाने। हरीचन्द द्वारा प्रसथाने॥ १७॥
रामा धरमा ले परवारे। आपो अपने सदन सिधारे।
गुरुसुता को धीरज दीनि। आदर संग बिसरजन कीनि॥ १८॥
सकल मेल निज निज घर गए। पुन दिन कितिक बितावति भए।
बैठ इकांकी[6] गुर भगवान। समैं भविक्ख्य विचारन ठानि॥ १९॥
—करिवे चहीअहिं जंग अखारे। चिर बीत्यो रिपु तुरकन मारे।
घनी सैन नहिं शाहु पठावै। खां वज़ीर सिख कहि समुझावै॥ २०॥
अबि के अस करिहों घमसाना। थरहर कम्प उठहि तुरकाना।
सभि कुटम्ब ते बनहिं निराले। तबि करिहैं निज शसत्र उठाले—॥ २१॥
इम विचार बड पुत्र हकारा। सादर निज समीप बैठारा।
सगल गाथ नीके समुझाइ। 'इहां रहिन अबि नहिं मन भाई॥ २२॥
लेकरि संग सरब परिवारा। बसहु छेम सों पुरि करतारा।
सभि की सुध लेवति तहिं रहीअहु। चहति सु देहु भलो निरबहीअहु॥ २३॥
हमरे संग चमू अबि भारी। बिचरहिगें इस देश मझारी।
त्रिण अरु अन्न अहै समुदाइ। सुभट सु बाहन सुख को पाइं'॥ २४॥

1. ज़रूर 2. तिहावल 3. पूए 4. धन 5. विदा किए
6. एकांत में, अकेले

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री गुरदित्ता जोरे हाथ। बोल्यो अनुसारी पित नाथ।
'जिम रावर की मरज़ी होइ। हम सभि को नीकी सद सोइ ॥ २५ ॥
तऊ बेनती कहौं सुनाई। जबहि तुरकन सों परहि लराई।
तीन दिवस सुध करहु अगारी। चलि आवौं मैं निकटि तुमारी ॥ २६ ॥

अबि लौ मोहि न जंग दिखावा। करिबे कहु मम मन ललचावा'।
सुने बीर रस के सुत बैन। कमल मनिंद प्रफुल्लयति नैन ॥ २७ ॥
हुइ प्रसन्न मुख बाक उचारा। 'इक जुद्ध तू पिखहिं हमारा।
अबि कुटम्ब की पालन करीअहि। अभि ले पुरि करतार सिवरीअहि' ॥ २८ ॥

मान्यो जनक[1] हुकम कर जोरि। मन कीनसि निज पुरि की ओर।
गमन हेतु त्यारी करिवाए। सयंदन[2] संग तुरंग जुराए ॥ २९ ॥

डोरे करिकै सभि बिधि त्यार। लेकरि पहुंचे निकटि कहार।
केत्तिक बहिल ब्रिखभ[3] बलवाना। सकटन[4] लादी वसतू नाना ॥ ३० ॥
श्री हरिराइ अंक ले नाली। नत्ती डोरे पर चढि चाली।
खेम कुइर सूरज मल दारा। सो डोरे चलि पंथ मझारा ॥ ३१ ॥

चढी नानकी सयंदन मांही। दूसर पर अरुढि मरवाही।
साहिब तेग बहादर चले। चढि करि चपल तुरंगम[5] भले ॥ ३२ ॥
अणीराइ सूरज मल दोउ। चढे ह्यन पर गमने सोऊ।
सुन्दर खासा[6] गुर मंगवायो। तिस पर श्री ग्रंथ रखवायो ॥ ३३ ॥

चलन समें बड सुत के साथ। बाक बखान्यो जग गुरनाथ।
चन्दन चरचहुं धूप धुखावहु। फूलन माला ग्रंथि चढावहु ॥ ३४ ॥
घ्रित दीपक को निशा जरावहु। नित प्रणाम करि सीस निवावहु।
श्री नानक के जानि समाना। पूजहु गुरु ग्रन्थ कहु नाना ॥ ३५ ॥

पंचाम्रित नित कहि करिवावहु। पढहु बैठि करि सुद उपजावहु।
हम भी केतिक दिन महिं आवहिं। रहो प्रतीखति मिलि सुख पावहिं' ॥ ३६ ॥
अस कहि धीर दीनि परिवारे। करे बिसरजन पन्थ मझारे।
कर्यो संग ही पैंदे ख़ान। 'रहहु सुचेत न आलस ठानि' ॥ ३७ ॥

बीवी संग हुती ले चाला। गुर आज्ञा ते हरख बिसाला।
सभिनि गुरु को बन्दन धारी। अपनी अपनी बिनै उचारी ॥ ३८ ॥

---

1. पिता का 2. रथ 3. बैल 4. बैलगाडी 5. घोड़े 6. पालकी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

म्रिदुल* बाक ते दीनि दिलासा। श्री नानक को दे भरवासा।
उलंघि पंथ सगरो परवार। आनि पहूंचे पुरि करतार ॥ ३९ ॥

श्री ग्रंथ शुभथान रखायो। पूजन कर्यो जथा गुरु गायो।
जथा जोग घर महिं सभि बासे। गुरु क्रिपा ते बिबिध बिलासे ॥ ४० ॥

बिगसति भा सगरो परिवारु। मंगल करति अनेक प्रकारु।
ब्रिद्धति सरीरन साहिबज़ादे। मिलि बैठति बोलति अहिलादे ॥ ४१ ॥

इती श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे सप्तम रासे **'करतार पुर परवार पठन'** प्रसंग बरननं नाम दोयबिंसती अंशु ॥ २२ ॥

---

* कोमल।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु २३

# भाई रूपे को मंजी बख्शन प्रसंग

**दोहरा**

कर्यो बिसरजन[1] सरब को हटि श्री हरि गोविन्द ।
खान पान करि वहिर ही थिरे वहिरि ढिग ब्रिन्द ॥ १ ॥

**चौपई**

सभा बिखे थिरता गुर लई । सोदर संध्या जिस छिन भई ।
कुछक तिमर[2] बिथर्यो नभ छाए । श्री हरि गोविंद मन्दिर आए ॥ २ ॥
सभि दिशि शूंन सदन दिसि आवैं । नए चिन जनु अबहि बसावैं ।
सांई दास अवास[3] न कोई । गुर आवति पिखि सनमुख होई ॥ ३ ॥
बिजना दौन करति ते आदि । रामो सेव करति भे यादि ।
रहति नजीकी साहिबजादे । नहिं चारहुं महि को अहिलादे ॥ ४ ॥
तीनहुं महिला इक म्रितु होई । गमनी पुरि दासी जुति होई ।
पौत्रे निकट जुगम कबि आवति । करति दुलार मोद उपजावति ॥ ५ ॥
गए समसत समीप न कोई । सूने सदन उदासी होई ।
बिधीचन्द को निकटि निहारा । बाक विराग समेत उचारा ॥ ६ ॥
'देखहु जग सनेहु की चाली । इक दिन भरे, एक दिन खाली ।
कबहुं हरे, शुषक कबि जावहिं । कवहूं जनम, कबहुं बिनसावहिं ॥ ७ ॥
कबि मेला, कबि बिरहि दुहेला । कबि संकट, कवि होति सुहेला ।
सदा प्रणमि वन्ति जग अहै । नहीं एक रस थिरता गहै ॥ ८ ॥
मिलिबे ते हरखहि नहिं ज्ञानी । बिछुरे शोक न दुख को जानी ।
लखहि कूर नहिं करहि सनेहा । बिनस जाइ जबि, क्यों दुख लेहा ॥ ९ ॥
जो वसतू नित इकरस रहै । करि अनुराग तिसहि उर लहै ।
सदा शान्ति चित सन्त उदारा । तिन को वन्दन अहै हमारा ॥ १० ॥

---

1. विदा किया 2. अंधेरा 3. घर



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बसिबो इस थल मोहि न भावै। सांईदास द्रिषटि नहिं आवै।
रामो सहत सेव को ठानै। नित नूतन मन प्रेम महानै ॥ ११ ॥
भोर होते ही करीअहि त्यारी। अस मनसा अबि अहै हमारी'।
सुनि बिधीए कर जोरि उचारा। 'द्रिषटि परति इह धुन्ध पसारा ॥ १२ ॥
काल वायु के वेग वहंते। छिन महिं बिना धीर बिनसंते।
जिन पर करुना अहै तुमारी। लाभ लेति जपि नाम मुरारी ॥ १३ ॥
नहिं ते हाथ झारि गमनंते। चले जालि, थिर ह्वै न रहन्ते।
प्राति होति कीजहि असवारी। बिचरहु इच्छा जहाँ तुमारी ॥ १४ ॥
जिनके प्रेम करे खिच आवति। सो दम्पति अबि नहीं दिसावति'।
इम कहि खान पान कुछ कीनो। रहि उदास बिसराम सु कीनो ॥ १५ ॥
प्राति होति ही बजे नगारे। जागे जोद्धा बली करारे।
शौच सनान शीघ्र सभि कीनि। डारे सरब तुरंगम[1] ज़ीन। १६ ॥
श्री हरिगोबिन्द चहति लराई। बसत्र शसत्र पहिरे समुदाई।
पुरिजन लखे कूच गुर डेरे। चलि आए मन दीन घनेरे ॥ १७ ॥
हाथ जोरि करि सभिहनि कह्यो। 'सांईदास परम पद लह्यो।
अबि तुम चढे छोडि पुरि जन कौ। महाराज ! को रक्खयक इन को ? ॥ १८ ॥
निकटि कौन के बिनै उचारैं। याते मन सचित दुख धारैं'।
दया-सिन्धु तबि धीरज दीना। 'बसहु सुखेन सन्देह विहीना ॥ १९ ॥
श्री गुरदित्ता जनम-सथान। तहिं पूजहु श्रद्धा धरि मान।
अरु तिस मात जहां ससकारी। रचहु देहुरा तहिं सुखकारी ॥ २० ॥
जिस को काज कहूं अटकाई। करहु बेनती तिस थल जाइ।
मनहु कामना पुरहिं तुमारी। संकट परहिं सु लेहिं उबारी ॥ २१ ॥
सिख्य संत की कीजहि सेवा। सिक्खी धरि पूजहु गुरदेवा।
सत्तिनाम को सिमरन करनो। श्री सतिगुर बानी नित ररनो[2] ॥ २२ ॥
इम उपदेश लेहु रिद धारे। हलत पलत महिं रहहु सुखारे'।
इम कहि सतिगुर ह्य मंगवायो। कंजन ज़ीन सहत चलि आयो ॥ २३ ॥
बार बार फुरकति बल ऐन। चंचल मनहुं नागरी नैन।
दास गहे करि नीठ सु रोकै। बहु सुन्दर, मन हरति बिलोकै ॥ २४ ॥
उठि सतिगुर ह्य को करि नमो। श्री नानक सिमरे तिह समो।
भए अरुढ दिखहिं समुदाई। बन्दन करति भए अगुवाई ॥ २५ ॥

1. घोड़े 2. वाणी का पाठ करना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुरि जन हटे सु प्रेरयो घोरा। दुदंभि बजे घन घोरा[1]।
तीन सहसत्र बाहिनी चली। खड़ग तुफंग[2] धरे कलमली ॥ २६ ॥
चलति सुभट को तुरंग नचावैं। को धवाइ करि तुरक चलावैं।
बली एक ते एक बिसाला। फेरति ह्य को चलि भट जाला ॥ २७ ॥
नाम धर्यों रूपा जिस ग्रामू। निज सेवक लखि करि अभिरामू।
अधिक क्रिपा करिबे कहु तहां। प्रसथाने सतिगुर बलि महां ॥ २८ ॥
मग मंहि एक निसा करि डेरा। अगले दिवस ग्राम सो हेरा।
पिता पुत्र साधु अरु रूपा। जिनके मन गुर प्रेम अनूपा ॥ २९ ॥
ग्राम बसाइ रचे शुभ मन्दिर। बांछति—गुरु बसहिं इन अन्दर—।
करि लीपन बिधि नीक सुधारे। मन प्रसन्न हुइ जिनहुं निहारे ॥ ३० ॥

दुदंभि बाजति आवति सुने। गुर डेरा लखि हरखति घने।
दोनहुं दौरि दरस को धाए। मनहुं मिल्यो जल अधिक तिहाए ॥ ३१ ॥
चरन कमल जुति शुभति रकाब। धर्यो सीस गहि जाइ शिताब।
कुशल प्रशन करि गमने संग। घर महिं आने मोद उमंग ॥ ३२ ॥
दया सिन्धु को ग्राम दिखायो। 'क्रिपा आप की इहां बसायो'।
'आछी कीनि' गुरु दिखि कह्यो। पुन बिसराम प्रयंकहि[3] लह्यो ॥ ३३ ॥

हित सेवा दोनो रहि खरे। देखति दरस होति जन हरे।
—हम से रंकन कै गुरु आवनि। दीन बंधुता करहिं जनावन—॥ ३४ ॥
हार्कहिं पौन आनि शुभ वारी। चरन कमल कर धरहिं परवारी।
इत्यादिक सभि सेवा करैं। भाउ अधिक ही नितप्रति धरैं ॥ ३५ ॥
ज्यों ज्यों अधिक प्रेम गुर हेरैं। त्यों त्यों ठानति क्रिपा घनेरैं।
कियो बास केतिक दिन तहां। करि गुर सेव रिझाए महां ॥ ३६ ॥

बिधीचन्द सों कही गुसांई। 'रूप चन्द वड सेव कमाई।
मैं सेवा के वसि नित रहौं। मन तन तिसको दैबो चहौं ॥ ३७ ॥
सेवक ते अदेय नहिं मोरे। साच उचारति हौं ढिग तोरे'।
इम कहि रूपा निकटि हकारा[4]। मंजी देनि हेतु बैठारा ॥ ३८ ॥

'शूद्र जति मोरी कहि रूपा। 'मंजी बैठहि ऊच अनूपा।
मैं नित चहौं दास बहु सेवा। अपर न इच्छा, श्री गुरदेवा!' ॥ ३९ ॥
सुनि बोले सतिगुर मुख आकर। 'नीचहुं ऊच करै मम ठाकुर'।
अस कहि मंजी बखशी नीका। सोढी कुल टीका करि टीका[5] ॥ ४० ॥

---

1. घोड़ा 2. मानो बादल गरजा 3. पलंघ पर 4. बुलाया 5. तिलक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अबि जिम करहु साच हुइ जाई। तीखी तेग न जिम अटकाई।
तुझ ते सपत पुत्र उपजैं हैं। आगे बडो वंस बिरधै हैं ॥ ४१ ॥

करहु देग गुर की सुख पावहु। निरहंकार होइ फल पावहु।
भाउ सदेग रहहि कुल जबि लौ। शकति समेत होइंगे तबि लौ ॥ ४२ ॥

जबि दोनहुं नहिं रहहिं तुमारे। मिलहिं तिखाननि महिं जिम सारे।
करि गुर की सेवा तुम पाईं। करी उद्धारन कुल समुदाईं ॥ ४३ ॥

सुनि करि पित्ता पुत्र हरखाए। मन निम्री* हुइ सेव कमाए।
जननी रूपे की हरखाई। सिख दीरघ शुभ अकुल जाई ॥ ४४ ॥

मास भाद्रपद अरध बितायो। श्री हरि गोविन्द बसि सुख पायो।
निज सेवक बहु करे निहाल। हलति पलति सुख दए बिसाल ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे सप्तम रासे **'भाई रूपे को मंजी वखशन प्रसंग'** बरननं नाम तीन बिंसती अंशु ॥ २३ ॥

---

* सनम्र हो कर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २४

# राइ जोध प्रसंग

**दोहरा**

पसर्यो देश बिदेश महिं 'रूपा कियो निहाल।
करैं गरीब निवाज गुरु रजकन[1] सैल बिसाल ॥ १ ॥

**चौपई**

रिसहिं सैल कन धूल करावैं। होइ प्रसन्न सुरेश[2] बनावैं।
सरब शकति धरि श्री गुरदेव। सुर गन भी न लखहिं जिस भेव' ॥ २ ॥
निकटि बसहि कांगड़ पुरि भारा। तहिं बसि जोध शाहु सरदारा।
सैन चढहि तिह साथ घनेरी। अधिक सूरमा मारति बैरी ॥ ३ ॥
मिसठा महिर बडो तिन केरा। तिनहूं पाइस राज बडेरा।
अकबर शाहु भयो जिस काला। चक्क्रवर्त्ति किय राज त्रिसाला ॥ ४ ॥

मिट्ठे महिर सुता उपजाई। बहु सुन्दर कुछ कही न जाई।
सुनि अकबर सो जाचन कीनि। 'मुझ को ब्याहु देहु शुभ चीनि' ॥ ५ ॥
सुनि करि मिट्ठे महिर बिचारी। —पातशाहु देशनपति भारी।
नहिं दैहो तबि लै है छीन। नहिं कुछ बस बसाइ हम दीन—॥ ६ ॥
बली बिसाल जानि करि कह्यो। 'जे मम तनुजा[3] ब्याहनि चह्यो।
तौ घर आवहि दुलहु होइ। फेरे फिरि, ते गमनहि सोइ' ॥ ७ ॥
सुनि अकबर मान्यो तिस बैन। बनि दुलहु गमन्यो तत्रि ऐन।
मिट्ठे की दुहिता की ब्याहि। दियो खिताब प्रसन्न उमाहि ॥ ८ ॥
निकटि ग्राम गन सगरे दीनि। ऐशवरज अधिक बधावनि कीनि।
तबि को राज तहां को करै। ब्रिन्द बाहिनी[4] संगै चरै ॥ ९ ॥
मिसठे महिर पुत्र उपजायो। चैन बेग तिह नाम अलायो।
सो भी राज करति तहिं रह्यो। गन ग्रामनि ते धन को लह्यो ॥ १० ॥

1. मिट्टी का कण 2. इंद्र 3. बेटी 4. सेना



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चैन बेग के सुत जनमयो। शाह उमर सु नाम धरि दयो।
सो भी पिता पितामे केरा। सरब समाज संभारि बडेरा ॥ ११ ॥

सुत भा उमरशाहु के धाम। जोधशाह जोद्धा अभिराम।
हुतो गुरु सिख अधिक उमाहा। तिस की सुता संग इह ब्याहा ॥ १२
पिता निकटि ते गुरमति पाई। गुरसिक्खी को धरति सदाई।
श्री हरिगोविन्द को आगवनू। सुनयो किसू ते अपने भवनू ॥ १३ ॥
कन्त जोध को महिमा कहिकहि। कर्यो प्रबोधन गुर दिशि चहि चहि।

'भयो निकटि आगवन अचानक। जो सरूप खषटम गुर नानक ॥ १४ ॥
जे कुछ भाग उदै तुव माथे। चलि करि मिलहु सतिगुरु साथे।
मन बांछति फल पावन करो। पिखि कैं सिक्खी धारन करो ॥ १५ ॥
दाता हलति पलति सुख केरे। अहैं करोरहं जिन पग चेरे।
जे सेवा मन करि तिन करैं। बहुर न चिन्ता कुछ उर धरैं' ॥ १६ ॥
निज पतनी ते सुनि सुनि गाथ। चाहति भयो मिलिनि गुर साथ।
आछी करी उपाइन[1] त्यार। ज़ीन तुरंगम पर श्रिंगार ॥ १७ ॥
बस्त्र बिभूखन धन को लीनि। चल्यो मिलिनि संग सैना कीनि।
दुंदभि को बजवावति आयो। भ्रात सलेमशाह संग ल्यायो ॥ १८ ॥

दारा आनि साथ निज प्यारी। पूरब ही गुरमति जिन धारी।
श्री हरिगोबिन्द निकटि पठायो। अनि दूत पग माथ निवायो ॥ १९ ॥
'जोध—शाह आयो महाराज। इक रावरि दरशन के काज।
जबि आयसु को करहु गुसाईं !। आनि लगहि तबि पंकज पाईं' ॥ २० ॥

सुनि गुर कह्यो 'प्राति हुइ मेला। केतिक लशकर संग सकेला ?'।
दूत बतावन कीनि तदाई। 'रहै पंच सै सूर[2] सदाई' ॥ २१ ॥
इम कहि सुनि करि निसा बिताई। होति प्रति गुरुसभा लगाई।
सुभट मसंद ब्रिन्द थित पास। खरो मेवरो हित अरदास ॥ २२ ॥
शबद रबाबी राग अजाब। बजति म्रिदंगैं संग रबाब।
चमर चारू ढोरति चहुं ओर। सिख टेकति मसतक कर जोरि ॥ २३ ॥
सूरज मुखी बीजना फिरिही। सरब सरीरन सवेद सु हरिही।
खरे नक़ीब[4] अगारी बोलति। अरपति लोक अगारी दौलत ॥ २४ ॥
बसत्र शसत्र को जोध सजाइ। संग लीथे जोद्धा समुदाइ।
अरपन हित अकोर करि आगे। आयो दरशन हित अनुरागे ॥ २५ ॥

1. भेंटा 2. शूरवीर 3. आश्चर्यमय 4. चँवर 5. यश गाता, चारण, भाट

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुर के चरन कमल धरि हाथ। होय निम्रि पुन टेक्यो माथ।
'चित आवहि सतिगुर' गुर कह्यो। देखति ही प्रसन्न ह्वै रह्यो ॥ २६ ॥
इक तौ डील शरीर बिलंद। जरे जराऊ बिभूखन ब्रिन्द।
कमल पत्र सम आयुत[1] लोचन। क्रिपा छटाखनि सोच बिमोचन ॥ २७ ।
सतिगुर बूझी कुशल बताई। पुन शसत्रन की बात चलाई।
बहुर जुद्ध को चल्यो प्रसंग। जैसे भए शाहु के संगि ॥ २८ ॥
इत्यादिक बहु बाक बिलास। करति रहे विद्या अभ्यास।
घरी दोइ बैठ्यो पुन गयो। गुर के भट ह्य देखति भयो ॥ २९ ॥
लरन उचित आछे सभि हेरे। भयो अनन्द जोध तिस बेरे।
निज डेरे महिं पहुंच्यो जाई। लटी लग्न गुर की सुखदाई ॥ ३० ॥
समें इकन्त पाइ तिस दारा। आनि गुरु को परस निहारा।
'मैं तुमरे सिख की हौं तनया[2]। गुरु महात्तम दीर्घ सुन्या ॥ ३१ ॥
मन बांछति ही केतिक बार। मम पित पायहु गुर दरबार।
रावरि पिता निकटि सो जाइ। चिरंकाल के सिख सुख पाइ ॥ ३२ ॥
नहिं ससुरार हुते सिख गुर के। बार बार गुर गुन कहि करि के।
आनि आप के पग दरसाए। करहु सिक्ख अबि इह समुझाए' ॥ ३३ ॥
सुनि सतिगुरु खुशी बहु करिकै। दीनसि बर बच म्रिदुल उचरिकै।
'तोहि बंस बड सिक्खी पावै। वधहि जगत महिं बहु बिदतावै ॥ ३४ ॥
दसम रूप मेरो जबि होइ। तुव परपौत्रे गुर सिख जोइ।
ले आवहिंगे सदन मझारे। सेवा करि हैं संझ सकारे ॥ ३५ ॥
तबि मैं तुमरो बंस उधारों। बहु बडियाई देश बिथारों'।
सुनि करि रिदे अनंदति होई। नमो कीनि पग पंकज दोई ॥ ३६ ॥
केतिक दिन रहि कहि गुर पास। पति को तजि पुन गई अवास।
रह्यो जोध, गुरु ढिग नित आवै। अनिक प्रसंगन सुनहि सुनावें ॥ ३७ ॥
पुरषार्थ सुनि सुभटन केरे। 'मार्यो लशकर शाहु घनेरे।
सपत हज़ार सुधासर[3] मारे। गए भगैल[4] बचे रण हारे ॥ ३८ ॥
दस अरु पंच हज़ार बहोरी। रिस करि चढि आए हम ओरी।
तहां खेत[5] ऐसो कुछ भयो। भाज्यो बचयो, अर्यो मरि गयो' ॥ ३९ ॥
जोध शाहु सुनि बीर बिसाला। कहै 'जि मैं होवति तिस काला।
तुम बलं ते घमसान घनेरा। रचि संघर[6] को करति निबेरा ॥ ४० ॥

1. विशाल 2. पुत्री 3. अमृतसर 4. भागने वाले, कायर 5. युद्ध भूमि
6. लड़ाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुम समता को करहि न कोई। सेवति मैं जेतो बल होई'।
श्री हरि गोविन्द चन्द बखाना। 'जोध शाहु ! तू जोध महाना ॥ ४१ ॥

हमरो कार परहि जबि आई। उचित तोहि को होनि सहाई।
तुरक शत्रु हतिबे के जोग। राज तेज इन सभि छै होग ॥ ४२ ॥

गुरु पीर को लखहिं न मूड़े। छित छीनी करि तुरकन कूड़े।
सने सने मम सिख ह्वैं राजे। रचहिं जंग, रिपु बचहिं जो भाजे' ॥ ४३ ॥

जोधशाहु सुनि बच सनमाने। 'रावरि कहिबो है फल दाने।
चहहुं मशक[1] ते गरुड़ बनावहु। सैल बडे को गरद मिलावहु ॥ ४४ ॥
जंबुक[2] को केहरि करि दैहो। बड मतंग[3] ढिग कीट हतै हो।
करहु बसावन वसे उजारहु। कहन मात्र ते सरब सुधारहु' ॥ ४५ ॥
इत्यादिक नित चलहिं प्रसंग। सैना सहत चहति बड जग।
रह्यो गुरु ढिग डेरा[4] पाइ। परम प्रीति ते नहिं बिछुराइ ॥ ४६ ॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रिन्थे सप्तम रासे 'राइ जोध प्रसंग' बरननं नाम चतुर बिंसती अंशु ॥ २४ ॥

1. मच्छर 2. गीदड़ 3. हाथी 4. डरा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २५

# काबल संगत प्रसंग

**दोहरा**

केतिक दिवस बतीत भे तहां सिवर को घालि।
देश बिदेशन संगतां सुनि इत पहुंचहि चालि ॥ १ ॥

**चौपई**

अनगन सिक्खनि की बहु भीर। इक पहुंचति हैं पाइ बहीर।
इक बिसरजन होति पयानै। चलति पंथ गुर सुजसु बखानै ॥ २ ॥
धन समुदाइ चल्यो नित आवै। शसत्र तुरंग अनिक अरपावैं।
बसत्र अजाइब आइं अपूरब। उत्तर, पशचम, दक्खन, पूरब ॥ ३ ॥
संगति चलि काबल ते आई। जिस महिं धनी मनुज समुदाई।
तिन महिं दोइ मसंद ब्रिलंद। नाम बखत मल, तारा चन्द ॥ ४ ॥
प्रथम सिवर करिकै शुभ थान। कर पद बदन पखारे पान।
निज निज भेट लीए कर नीको। करनि भावना पूरन जी की ॥ ५ ॥
सतिगुर के दरशन को चाले। जिस हित गमने पंथ बिसाले।
श्री हरिगोविन्द सभा लगाए। जनु उडगन महिं चन्द सुहाए ॥ ६ ॥
सिक्ख सुरन महिं इन्द्र समाना। कै जादव महिं श्री भगवाना*।
चहुंदिशि करि जोरति नर खरे। बन्दन होति द्रिषटि जित करैं ॥ ७ ॥
रिदै ज्ञान घन अन्तरजामी। वहिर क्ष्ति नरपति जिस स्वामी।
चमर चार ढोरति हैं खरे। अग्र अरदास मैवरो करे ॥ ८ ॥
जित दिशि की संगति ले नाम। करहिं बिलोचन तित अभिराम।
इतने में दोनहुं चलि आए। जिनके थूल देहि द्रिपटाए ॥ ९ ॥
जोरति हाथनि आय अगारी। मनुज हजारहुं सिख पिछारी।
चरन कमल पर सिर निज धारे। हाथनि साथ पलोसति प्यारे ॥ १० ॥

---

* कृष्ण



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिम ही सभि संगति पर पायन। अपनी अपनी अरपि उपायन।
—सफल बिलोचन करति निहारे। नहिं त्रिपतहिं होवति बलिहारे ॥ ११ ॥
'धंन धंन' चहुंदिशि ते करैं। 'हलति पलति के रक्खयक अहैं'।
जुगल[1] मसंदन के जुति वैसे। ब्रिन्द चकोर चन्द दिखि जैसे ॥ १२ ॥
बूझी सतिगुर कुशल बताई। मनो कामना सभि ने पाई।
द्रिषटी मिहर की तिन पर डारी। खुशी करी संगति लखि प्यारी ॥ १३ ॥
जिनके रिदै प्रेम नहिं थोरा। बार बार पिखि सभि की ओरा।
बूझ्यो बहुर मसंदन संग। 'कहहु सकल जस पंथ प्रसंग ॥ १४ ॥
कौन देश को चलि करि आए ? श्री अंम्रितसर को दरसाए ?
किधों अपर ही मारग आए ? तुम ते सुधि चाहती हैं पाए' ॥ १५ ॥
सुनति बखतमल तारा चन्द। दुंद मसंद कहति कर वंदि।
क्रिपा निधान ! सुनीजहि अरजी। भई जथा सभि संगति मरजी ॥ १६ ॥
सूधे मग लवपुरि[2] को आए। हटति चहति अम्रितसर जाए।
रावर को दरशन बहु चाहा। इसी हेतु पूरब तुम पाहा' ॥ १७ ॥
इत्यादिक प्रसंग मग केरा। सुनि बोले सतिगुर तिस बेरा।
'लवपुरि शाहिजहां की बात। किम देखी कहीमहि बख्यात ? ॥ १८ ॥
कितिक बाहिनी[3] बाहर परी ? केतिक तीर बिलोकन करी ?'
जुगल मसंद कहनि पुन लागे। 'जथा पिखि सो कहिं तुम आगे ॥ १९ ॥
जिस दिन हम लवपुरि महिं आए। डेरा कीनि देखि शुभ थांए।
तुरकन ते हम तबहुं सुन्यो। —है बकरीद प्राति को—भन्यो ॥ २० ॥
—शाहजहां निकसहिगो बाहर। करहिं निवाज सभिनि महिं ज़ाहिर।
ब्रिन्द ग्राम के नर समुदाए। शाहु बिलोकन के हित आए—॥ २१ ॥
तबि सुनिकै संगति कहि बात। —निकसति शाहु निहारहु प्राति—।
पुरि महिं बस करि निसा बिताई। जागे सगल भोर हुइ आई ॥ २२ ॥
सभा भयो निकसनि को शाहू। लोक हजारहुँ मिले उमाहू।
सुन्दर तुंग[4] मतंग सिगारे। कंचन जरति श्रिखला डारे ॥ २३ ॥
झालर ज़री झूल झमकन्ते। हौदा अंबारी दमकंते।
गजगाहिन जिन के लटकंती। रेशम की डोरें उतिवंती ॥ २४ ॥
गिनती कुछ न चमूं की आई। इत उत ते बहुती उमडाई।
बहुर शाहु के कोतल आए। रेशम ज़री डोर डुरिआए ॥ २५ ॥

1. दोनों 2. लाहौर 3 सेना 4. ऊँचे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ज़ीन अनेक भांति को सोहैं। रतन खचित दमकति मन मोहैं।
चामींकर[1] के चमकति चारु। बली चपल तन दीन उदारु ॥ २६ ॥

थई थई करि नचि थल चालति। अधिक उतायल ले पग डालति।
निकस्यो शाहुजहां तबि बाहिर। सभिनि बिलोक्यो मग महिं ज़ाहिर ॥ २७ ॥

दोइ तुरंग चलति भे आगे। जिन के साथ महां अनुरागे।
निज आंखनि के आगे राखहि। मग महिं बिछुरन नहिं अभिलाखहिं ॥ २८ ॥

तहां लोक हम पूछे जबै। भाखे गुन और कीमत सबै।
मनहुं काम कारीगर होइ। छरी सु मूरति सुन्दर दोइ ॥ २९ ॥

हमरी मति मैं तबि इम आवैं। पिखहि इन्द्र तो चित बिरमावै।
तिनके गुन किछु गिने न जाई। सुने कहित नर, ह्य[2] दरिआई ॥ ३० ॥

इक गुलबाग, दुतिय दिलबाग। सुने नाम उपजहिं अनुराग।
भरे नदी नद होवति पार। नहिं भीगनि दें जल असुवार ॥ ३१ ॥

छित[3] पर चरण रखहिं कै नांही। लखे न परहि चलति मग मांही।
घनी आरज़ा हमहुं बिताई। अस असु पिखे नहीं किस थांई ॥ ३२ ॥

पिखि संगति आनंदति होई। कह्यो—गुरु ढिग चहीअति दोई।
जिनके चित महिं शोक बिसाला। चढहिं, करहिं रण रिपुनि कराला ॥ ३३ ॥

तुरकेशुर ढिग है तो सही। लरन अरुढन जानहिं नहीं।
श्री सतिगुर को डील बडेरो। होहिं अरुढन शुभहिं घनेरो ॥ ३४ ॥

चढि संगति को दरशन देहैं। सभि सिक्खनि आनन्द उपजैहे।
हम सुनिकै सभि के संग कही। --चहैं जि गुरु कठन कुछ नहीं- ॥ ३५ ॥

निशचे उचित तुमारे अहैं। सिख संगति सगरे ही कहैं।
श्री गुर जी ! जबि देखहु तिनको। लखहु तबहि सुख हुइ जिम मन को ॥ ३६ ॥

इत्यादिक गुन कहि समुदाइ। ज्यों क्यों करि श्री गुर बिरमाइ।
इम प्रसंग करि सरब सुनायो। संगति सिवर किttिक दिन छायो ॥ ३७ ॥

जबि गुर ढिग बैठति हैं जाइ। जुगम तुरंग प्रसंग चलाइ।
'तिन समान जग महिं कित नांही। फिरीअहि देश बिदेश जि मांही ॥ ३८ ॥

उचित आप के सभि हूं जाने। चपल चलाक चारू पहचाने'।
इम कहि करि गुरू निकटि सुनावैं। —अहै जथारथ—सुनि हुलसावैं ॥ ३९ ॥

---

1. सोना 2 दरियाई घोड़े 3. धरती

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

केतिक दिन गुर निकटि गुज़ारे। चलनि सदन को उमगे सारे।
जथाजोग सिरुपाउनि दीनि। संगति सगल बिसरजन कीनि।। ४० ।।

मनो कामना पाइ पयाने। मारग महिं गुर सुजस बखाने।
बापी मज्जे गोईंदवाल। दरस खडूर सु पुन्न बिसाल।। ४१ ।।

जाइ तरन तारन इशनाने। बहुत सुवासुर मज्जन ठाने।
जथाशकति अरदास कराइ। कितिक दिवस रहि करि हरखाइ।। ४२ ।।

काबल को संगति पुन गई। मनो कामना पूरन भई।
देश बिदेशन गुर की कीरति। जिम देखी कीनी बिसतीरति।। ४३ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे सप्तम रासे **'काबल संगत प्रसंग'** बरननं नाम पंच बिंसति अंशु ।। २५ ।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २६

# विधी चन्द लवपुरि आगमन प्रसंग

**दोहरा**

सुनि सतिगुर चित चौंप करि ह्य चाहति जिम आइ।
रिदे बिचारति भे बहुत—किस प्रकार को लयाइ॥ १॥

**चौपई**

धन खरचहिं जेतो मन भावति। मोल दिए सो हाथ न आवति।
शाहुजहां के कमी न काई। लेहिं तुरंग सुकवन उपाई* ?॥ २॥
अति प्रिय शाहु रखहि तरकाई। लाखहुं भट नित रहति सहाई।
जेकरि लरहिं हाथ नहिं आवति। महां दुरग महिं तिनहि रखावति—॥ ३॥
सभा बिखै गुर बात चलाई। ह्यनि प्रशंसा अधिक सुनाई।
'किम देखनि मैं आइं हमारे ?। सुमतिवन्त सभि करहु बिचारे ?'॥ ४॥
चितवहिं जतन अनेक प्रकारी। तबि इक सिख ने गिरा[1] उचारी।
'महाराज ! तुम सुमति निधाने। अग्र आप के कौन बखाने॥ ५॥
तऊ देखीअहि भले बिचारि। होय न बिन बिधीए[2] निरधार।
तुम सहायता पाय सु ल्यावहि। अपर उपाय नहीं किम आवहि॥ ६॥
जिस बिधि की बुद्धि इस महिं अहै। सकल जगत नर दुष्कर[3] लहैं।
जिम तिन ह्यनि समान न होई। तिम ल्यावनि इस सम नहिं कोई॥ ७॥
तुम सम नहीं सहाइक दूवा। तीनहुं मेल एक सम हूवा।
जे करि लयावहि ह्य बल भारी। अचरज बिथरहि जगत मझारी'॥ ८॥
सुनि गुरु बिधीए ओर निहारा। 'ह्य गुन सुनि मन हर्यो हमारा।
ज्यों क्यों करहु दिखावन सोई। तुव समान दूसर नहिं कोई॥ ९॥

---

1. वाणी, बचन 2. विधिचंद 3. कठिन

*अन्य इतिहास कर्त्ता लिखते हैं कि ये घोड़े मुगल हाकिमों ने सिक्खों से छीन लिए थे। गुरु जी को ऐसा करने की आवश्यकता नहीं। कवि ने इस कारण की चर्चा नहीं की।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इहु कारज तुझ ते बनि आवै'। बिधीचन्द कर जोरि अलावै।
'कारज कठन जथा तुम जानहु। सिद्ध हुइ रावर[1] ते सभि मानहुं ॥ १० ॥
मैं तो बनि हौं एक बहाना। करहु काज तुम आप सुजाना'।
सुनि प्रसन्न श्री सतिगुर होए। 'बिधीया ! तुम मानिन्द न कोए ॥ ११ ॥
राम चन्द जिम लङ्क पठावन। सभि कवि महिं खोज्यो मन पावन।
हनूमान बड सुमति प्रबीना। जाय तहां सभि कारज कीना ॥ १२ ॥
तसकर[2] सम सभि लोक निहारी। पिखि सीता, हति राखश भारी।
आगलगाइ सिन्धु उलंघावा। तिमही अवि कारज बनि आवा ॥ १३ ॥
अबि लौ जसु जग महिं हनुमाना। काज कठन तिम बनाई समाना'।
अपनी प्रशंसा सुनी बिसाला। बिधी चन्द बोल्यो तिस काला ॥ १४ ॥
'श्री गुरु ! तुम सहाइ जे पाँऊ। कहां शाहु असु रवि के ल्याँऊ।
सुने वरुन ढिग सुन्दर घोरे। तहिं ते ल्याए सकों तुम जोरे ॥ १५ ॥
रावर की सहाइता पाइ। को अस काज जे न वनि जाइ ?'।
सुनि बिधीए ते भए प्रसन्न। 'हनुमत सम तुम, को नहिं अन्न ॥ १६ ॥
ककीकाल को जैसो समैं। तैसो करन वनति है तुमैं।
सो तुरंग[3] को लेकरि आवहु। अचल सुजसु जग शुभ गति पावहु ॥ १७ ॥
पीछे ग्रंथन मैं तुव गाथा। पठहिं सुनहिं हुइ अचरज साथा।
पुन्यात्म तेरो जसु करैं। इहु कारज तुम बिन नहिं सरै' ॥ १८ ॥
बहु अभिलाखा गुर की जानि। बिधिचन्द ह्वै कै सवधान।
—प्रापत होति अधिक बडियाई। भयो त्यार नहिं बिलम[4] लगाई ॥ १९ ॥
सनमुख खरो होइ मति धामू। सरब गुरन के लेकरि नामू।
हाथ जोरि कीनी अरदास। अंग संग नित क्रिपा—अवास ॥ २० ॥
बाट घाट महिं बनहु सहाई'। गुर आगे तबि ग्रीव[5] निवाई।
चरन कमल प्रिय परसन करे। सभि ते खुशी लीनि बल धरे ॥ २१ ॥
उर महिं गुर बसाइ करि चाला। लवपुरि को सनमुख तिस काला।
रिदे बिचारति हरखति जातो। —सभि ते अधिक मोहि गुरु जातो ॥ २२ ॥
कर्यो प्रचारन सभा समाज। क्यों न करों मैं दुशतर काज—।
तीन दिवस महिं पहुंच्यो जाई। पुरिपर ढिग अरदास अलाई ॥ २३ ॥
सरब गुरनि कौ बन्दन करी। ततछिन कियो प्रवेशन पुरी।
करति बिचारन अनिक उपाई। किम तुरंग ढिग पहुंचो जाई ॥ २४ ॥

1. आप से 2. चोर 3. सूर्य के घोड़े 4. देरी 5. गर्दन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दियो जाइ नहिं सनिह कदाई। गाढी कन्ध रहित चुकसाई।
नहिं ओदरो[1] प्रवेश न पावै। पोर[2] अनिक पर नर थिरतावैं ॥ २५ ॥
निकटि दरोगे बन करि दास। जे करि रहौं जाँउ हौं पास।
सो नहिं राखहि बिना चिनारी[3]। बिना रहे हुइ काज न भारी ॥ २६ ॥
यांते जतन रहि हित करौं। जिसते अपनी मनसा पुरौं—।
स्व बिचारति पुरी प्रवेशा। खाती जीवण सिक्ख विशेशा ॥ २७ ॥
तिस 'के सदन प्रवेश्यो जाई। निकटि होय कहि 'परनो पांई।
रहति गुरु के निकटि निहारा। जीवण उठ्यो जानि गुर प्यारा ॥ २८ ॥
कर जोरति ही करी प्रणामू। कह्यो 'करहु पावन मम धामू।
श्री सतिगुरु मुसाहिब भारा। आनि चरन मम घर महिं धारा' ॥ २९ ॥
मंच इमाय बसाइ अनन्द। सभि बिधि कीनी सेव बिलन्द।
जल तातो करि पांइ परवारे। जथाशकति करि बिबध ग्रहारे ॥ ३० ॥
करि उर हरख परसपर बैसे। कहि जीवण 'आगवनू कैसे ?।
श्री सतिगुर के कारज आए ?। किधौं चहैं कुछ अपनि बनाए ? ॥ ३१ ॥
भाग बिसाल प्रथम के मेरे। रावर कर्यो आनि करि डेरे'।
बिधी चन्द सभि गाथ सुनाई। 'सतिगुर उचिति वसतु इस थांई ॥ ३२ ॥
मैं जानौ कै तू लखि पावहु। नहीं पंचमें करत सुनावहु।
बली तुरंग शाहु को प्यारे। हुयो चहैं श्री गुर असवारे ॥ ३३ ॥
किम पहुंचहुं मैं ? जुगति बतावहु। किम निकसहिं सभि भेद बुझावहु।
तू पुरि बसहिं लखहिं सभि काहू। किस थल खरे, रहित को पाहू ? ॥ ३४ ॥
कहां नाम जो रहै दरोगा ?। तकराई हित[4] केतिक लोगा ?'।
सुनि जीवण मन महिं बिसमायो। 'दुशतर काज करन हित आयो ॥ ३५ ॥
सम्मन बुरज शाहु को वासा। चपल तुरंगन पास निवासा।
करन सैंकरे की रखवारी। सेवक सेव करहिं तिन भारी ॥ ३६ ॥
पीर अनेकनि के रहिं ग्रन्तर। गन भट शसत्रनि सहति निरन्तर।
सोंधेखान जु नाम दरोगा। जिस के अनुसारी बहु लोगा ॥ ३७ ॥
किसही बिधि जो नहिं बनि आवै। तू करि लेहि जि सतिगुर भावै।
अगम थान किम पहुंचनि पास। कहां सु लै के जानि अवास[5] ॥ ३८ ॥
गुर दुरगम को सुगम बनावैं। अबल[6] बली करि बल निबलावैं।
अपर कौन पहुंचहि तहिं जाई। हुइ तसकर ले चलहि पलाई' ॥ ३९ ॥

1. वेग.ना 2 द्वार 3. पहचान 4. रक्षा के लिए 5. घर 6. निर्बल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि विधाया कहि 'गुरु भरोसे। मैं चलि आयो एतिक कोसे।
सभि कारज करि लेहिं सुखारे। कहां हरन ह्य शाहु बिचारे ॥ ४० ॥

दूब खुरचना* इक करि दीजै। —पुरहु मनोरथ—बाक कहीजै'।
जीवण कह्यों 'देउं करि आछे। अपर वसतु लीजहि चित वांछे' ॥ ४१ ॥

बिधीया कहै 'अपन चाहू। बांछति हुतो कह्यो तुव पाहू'।
इम कहि सुपतयो सुख को पाइ। जीवण लग्यो करति हरखाइ ॥ ४२ ॥

ले आछो लोहा तिन धर्यो। दसता काषट को करि जर्यो।
प्रात होति ली करि कै तयारी। बिधीचन्द के धर्यो अगारी ॥ ४३ ॥

देखति हरख्यो 'आछो कर्यो'। 'सत्तिनाम' कहि कर महिं धर्यो।
हित बन्धन के ले इक जारी। नगर वहिर गमन्यो मति भारी ॥ ४४ ॥

ऐरावती कीनि इसनाना। मुख ते जपुजी पाठ बखाना।
निस जमी दूरबा जहां। खुरचन लग्यो जाइ करि तहां ॥ ४५ ॥

गुर उर ध्यान, बदन गुरबानी। गुर को ह्य लखि सेवा ठानी।
अधिक प्रीति ते करति बटोरन। हरित, रुचिर, कीनसि हित थोरन ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे सप्तमि रासे **'विधीचन्द लवपुरि आगमन प्रसंग'** बरननं नाम खष्ट बिसती अंशु ॥ २६ ॥

---

*खुर्पा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु २७

# बिधी चन्द चाकरी रहिन प्रसंग

### दोहरा

गुरबानी पढि खुरचतो ज़मीं जामनी[1] जोइ।
करति बटोरन टौर करि बहु ठौरन ते सोइ ।। १ ।।

### चौपई

जथा बिडूर जमणि[2] को बरण। तथा दूरबा[3] शुभ मन हरण।
करि इकत्र सिर लीनि उठाइ। सने सने चलि पुरि महिं आइ ।। २ ।।
गमन्यो पुन बज़ार की ओर। सनमुख महां दुरग के पौर।
त्रिण कोमल अरु सुन्दर रंग। नर बिरमाय कहैं इह संग ।। ३ ।।

'जे बेचति है मोल बनीजै। लेहु नगद, इहु हम को दीजै'।
सुनि बिधीया तिन के संग कहै। 'इस को मोल रजतपण[4] अहै' ।। ४ ।।
तूषन[5] होति देति नहिं कोई। चल्यो जाति आगे कहु सोई।
रह्यो दिवस जबि घटिका चारी। पहुंच दुरग के पौर अगारी ।। ५ ।।

इतने मद्धि सोंधे खां आयो। ह्यनि सेव पर जो ठहरायो।
नर गन संग सु निकस्यो पोर। बिधीचन्द देख्यो तिस ओर ।। ६ ।।
बूझ्यो नरन संग 'इहु कौन ? आवति धरे भले पट जौन'।
लोगन लह्यो 'दरोगा अहै। शाहु तुरंगन पर इहु रहै' ।। ७ ।।

सुनि करि उर महिं भयो अनन्द। कह्यो 'धनं श्री हरि गोविन्द।
प्रथम दिवस ही मेला कियो'। सने सने चलि तिस ढिग गयो ।। ८ ।।
सौंधे खान पिखे त्रिण ऐसे। ब्रिन्द बिडूरमणि ह्वै जैसे।
मन बिरमायो निकटि हकारा। निज संगनि के संग उचारा ।। ९ ।।

---

1. रात का उगा हुआ 2. एक हरे रंग की मणि 3. घास 4. रुपया
5. ख़ामोश



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'इहु त्रिण चारु, न अस कबि हेरे। नफ़र[1] न आनहिं, अहैं घनेरे।
इह दिलबाग उचित है खैंबे। मोल कराइ करहु निज लैंबे॥ १० ॥
बिधीए निकटि गयो सुख मान। ले करि महिं पिखि सोंधेखान।
रिदे प्रसन्न होइ करि बोला। 'कहु घाही! देहिं इस भोला ?॥ ११ ॥
नीकेथान कहूं ते ल्यावा। हम आगे नहिं कबि दरसावा।
शाहु ह्यनि के खैंबे जोग। अरु तू दिखीयति आछो लोग'॥ १२ ॥
कहि बिधीआ 'तुम कदर शनास[2]। बड बुद्धि रहहु शाहु के पास।
मम उर बिखै कामना घनी। साचो पातिशाह जग धनी॥ १३ ॥'
तिन को तुरंग त्रिणन को खाइ। इस हित कीनो अधिक उपाइ।
सलिता नट[3] जहिं शुभ थल हेरे। लहिं चिरकाल सु प्रेम बडेरे॥ १४ ॥
जमी जामनी दूभ नवीन। बुद्धि बल धरे बटोरन कीनि।
मम उर भई भावना पूरी। पहुंचे उचित थान इह रूरी॥ १५ ॥

### दोहरा

तुरंग सचे पतिशाह को जे करि मम त्रिण खाहिं।
देहु सु लेवौं हरख धरि नाहिं करौं मैं नांहि'॥ १६ ॥

### चौपई

सुनि प्रसन्न सोंधे खां भयो। गिरा मधुरजनु मोहनि कयो।
ले निज संग दुरग मैं गमन्यो। लखि घाही टोक्यो नहिं कवन्यो॥ १७ ॥
जहिं गुलबाग दुतिय दिलबाग। रेशम डोरन के संग लाग।
म्रिदुल सथान खरे गुन खरे। तन को चहु नहिं लाग निपरे॥ १८ ॥
मूत्र, पुरीष[4] दास लें ऊचे। लगन न देति, थान रखि सूचे।
सोंधे खान भन्यो 'इन पावहु। झारि भले इन, हटि करि आवहु'॥ १९ ॥
बिधीए सुनि ढिग ह्वै त्रिण डारे। बार बार नीके तबि झारे।
गुरू प्रेरे ह्य खावति ऐसे। हुते क्षुधति इकबासुर[5] जैसे॥ २० ॥
उठ्यो तुरंगन के पग धर्यो। सभिनि सुनावति बाक उचर्यो।
'साचे पातशाहि के घोरे। बन्दनीय हम को कर जोरे'॥ २१ ॥
एक रजतपण दीनि दरोगे। आछो जानि अधिक ही जोगे।
निकसति दुरग देखि चहुं ओरे। —मुशकल महां निकसने घोरे॥ २२ ॥

1. नौकर 2. महत्त्व जानने वाला 3. नदी किनारे 4. लीद 5. एक दिन के भूखे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आनि बज़ार टके तिस लीनि। रंकन ब्रिन्द खराइत[1] दीनि।
तिमर[2] भए जीवण के धाम। खान पान कीनसि बिसराम॥ २३॥
जाग्यो रही जामनी जामू। सिमरति श्री सतिगुरु सत्तिनामू।
अरुणोदय[3] निकस्यो पुनि छोरि। गयो त्रिणति को सलिता ओर॥ २४॥
मन को हरित हरित म्रिदु खूब। देखि सुथल को खुरचति दूब।
खोजि खोजि करि फिरि शुभ ठौरी। खोदि खोदि करि अखिल बटोरी॥ २५॥
सिरधरि करि पुरि महिं चलिआयो। दौर दुरग के अग्र सिधायो।
पिखि जो मोल लेनि हित चहै। 'एक रजतपण दिहु' तिस कहै॥ २६॥

नहिं को लेति चल्यो तहिं आयो। ज़हां दुरग को पौर सुहायो।
जबि दिन बाकी घटिका चारी। सोंधेखां निकसयो तबि द्वारी॥ २७॥
खरो रह्यो त्रिण सीस उठाए। धरि उडीक निज दांव लगाए।
पिखे दरोगे द्रिग त्रिण हरे। उचित ह्यनि के खैवे खरे॥ २८॥
करि गुहार[4] को निकटि बुलायो। कीनि चिनारि–प्रथम इहु ल्यायो–।
'साध साध'[5] हरखाइ बखानै। 'त्रिण शुभ ठौर बटोरति आनै'॥ २९॥

लेकरि संग गयो हथ पाही। पाइहु झार चाहि करि खांही।
'साचे पातशाहु के घोरे'। इम करि नमो कीनि पग ओरे॥ ३०॥
सहित दिलासे कर को फेरा। रूख करि फुरकति भा तिस बेरा।
जबि शकुन शुभ पुन करि नमो। मोल दरोगे दिय तिस समो॥ ३१॥
आनि बज़ार टके तबि लीनि। हेतु खराइत रंकन दीनि।
—नहीं तुरक घर को कुछ खाँऊ। लूणहरामी खाइ कहाऊं॥ ३२॥

मैं गुर हेतु लिजानो घोरा। अचौं न बदन शाहु को थोरा।
तनक पाप भी जो क्रित मांही। सुमति बिचारति, करहिं सु नांही॥ ३३॥
करि हंकार शाहुं बड जोरा। छीनयो प्रथम 'गुरु को घोरा'।
मैं बुद्धि बल करि पलटा लै हौं। महां तुरंग जाइ करि दै हौं॥ ३४॥
राखन को समर्थ गुर पूरे। हतहिं शत्रु चढि करि अंसु रूरे—।
इत्यादिक विचार करि उर मैं। घर जीवण के जाइ तिमर मैं॥ ३५॥
खान पान करि निसा बितावै। अरणोदै को वहिर सिधावै।
दिवस रहे जबि घटिका चारी। त्रिण ले पहुंचहि पौर अगारी॥ ३६॥
पिखि उत्तम को लेति दरोगा। करहिं सराहनि सगरे लोगा।
जबहि दिवस खट सपत बिताए। हय बोलहिं पिखि घास, लिजाए॥ ३७॥

1. दान 2. अंधेरा 3. प्रभात समय 4. आवाज़ देकर 5. शाबाश

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देति दिलासो नित कर फेरहि। सौंधे खां हरखति हित हेरहि।
बूझति 'नाम बतावहु मोही। रहैं कि नहीं जि राखहिं तोही ?' ॥ ३८ ॥
बिधीचन्द तबि सुनति बखाना। 'नाम कसेरा कहैं सुजाना।
पुरि महिं जबि को आनि प्रवेशा। त्रिण आनति म्रिदु हरित विशेषा ॥ ३९ ॥
साचे पातशाहु हय जोग[1]। बिरमहि अवर हेर करि लोग।
सुनहिं मोल तबि कोइ न लेति। नितप्रति आइ तुमहिं को देति ॥ ४० ॥
यांते चाकर रखहु बनाई। नितप्रति हेरहु सेब सवाई।
दरब लोभ ते मैं नहिं करिहूं। अपर न लालच मन महिं धरिहूं ॥ ४१ ॥
लखि साचे पातिशाहु तुरंग। सेवा करहुं प्रेम के संग।
कबिहुं हासल होइ मुराद। टहिल हानि की जाइ न बाद[2]' ॥ ४२ ॥
सुनति दरोगा हरखिति होवा। सेव हयनि की लाइक जोवा।
रोज़ रजतपण तबि करि राखा। करि तागीद फेर बच भाखा ॥ ४३ ॥
'करिबे टहिल हय के जोग। तुझ राख्यो लखि आछो लोग।
खरी चाकरी अपनी लेहो। सेव तुरंगन की शुभ देहो' ॥ ४४ ॥
कहि बिधीया 'कहिबे मैं कहां। देखि लेहु जबि होवहि महां।
भले नरनि को कहिबो थोरा। अपनो कह्यो निबाहति ओरा' ॥ ४५ ॥
रह्यो हयनि ढिग सेव कमावहि। हरित दूरबा म्रिदु[3] बहु ल्यावहि।
जबि लौ बहिर रहिति, त्रिण आनति। पुन अहितिस सेवा हय ठानति ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे सप्तमि रासे 'बिधी चन्द चाकरी रहिल प्रसंग' बरननं नाम सप्त बिसति अंशु ॥ २७ ॥

1. योगी 2. व्यर्थ 3. कोमल हरा घास

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु २८

# विधी चन्द लवपुर प्रसंग

**दोहरा**

रह्यो हयनि ढिग तबि कह्यो 'पौरदार[1] जे ब्रिन्द।
आवति जाति न हटक को तुम कहि देहु निचिन्द' ॥ १ ॥

**चौपई**

संग दरोगे के सभि पौर। कहिवायहु इहु चाकर और।
खास शाहु के हय पर रह्यो। नीके उचित सेव को लह्यो ॥ २ ॥
आवहि जाहि अवेर सवेर। नहिं बरजहु इसको कबि हेरि।
पौरन ते निशंग तबि होवा। मनहुं मालवर[2] घर को जोवा ॥ ३ ॥
लाग्यो निस दिन सेवा मांहि। हयनि पास को छोरहि नांहि।
जेतिक सेवक सेवा धरैं। सभि के छांड आप ही करै ॥ ४ ॥
सभि को सुख होइहु हरखावैं। 'भलो पुरख इहु' कहैं सुनावैं।
खरो खरखरा खरो करन्ता। ले गादी पर हाथ फिरंता ॥ ५ ॥
बदन नासका पौंछति आछे। सुम्ब उठाइ अग्र अरु पाछे।
मसतक, करन, जात, द्रिग, ग्रीवा। पौंछति उदर होइ बहु नीवा ॥ ६ ॥
आयुत छाती, पीठ बडेरी। फेरति कर, दे जोर हथेरी।
पुट्ठे बडे, पुँछ सटकारी[3]। कर बार कर धारि सुधारी ॥ ७ ॥
दसक दास की सेव बिसाला। सम्भारी ठानति सभि काला।
सभिनि भयो सुख, करहिं सराहू। 'इहु आछो आयो हम माहू' ॥ ८ ॥
द्वै तीनक दिन करति निहारा। सोंधेखान प्रसन्न उचारा।
'कविका[4] देनि उतारन धरन। रहै कसेरे के अबि करनि ॥ ९ ॥
इसके संग करहिं रुख घोरे। बासुर निसा न सेवहि थोरे।
दूब खुरचने कबि कबि जावहु। मर्दन[5] पौंछन सेव कमावहु' ॥ १० ॥

---

1. द्वारपाल 2. विश्वास-पात्र 3. लटकती हुई 4. लगाम 5. मालिश करना



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हरखति उर महिं कहति कसेरा। 'सुनहुं दरोगा ! कहिबो मेरा।
सेव करन लगि कारज मोही। जाऊं बहिर, कै असु ढिग होही ॥ ११ ॥
साचे पातशाहु हय सेवौं। निज मुराद हासल करि लेवौं।
अपर करहुं कै नांहिन करहुं। बैठो रहहुं किधौं उठि फिरहुं ॥ १२ ॥
मैं तुरंग को तीर न त्यागौं। इक सेवा के ततपर लागौं'।
सौधे आदिक मानव सारे। सुनहिं बाक अरु सेव निहारें ॥ १३ ॥
कर्यो भरोसा सौंपलि सेव। मूरख अपर न जानहिं भेव।
मधुर वचन सभि के संग उचरे। बिना दिए सकलनि मन हरे ॥ १४ ॥
सरब सराहहिं 'आछो आछो'। रहनि कसेरे को शुभ वांछो।
कविका देन रु काजै करिवे। काज सम्भारति भा जबि सरबे ॥ १५ ॥
लेनि दूरबा बाहिर गयो। इक खिघर[1] तबि भानति भयो।
दिन त्रिण गन महिं राखि छपाई। भई जामनी अरघ लखाई ॥ १६ ॥
करि वाहन बल वेग बगायो। पर्यो नदी महिं जल उछलायो।
शबद बिलन्द दुरग महिं सुन्यो। जागे सुपति, 'शोर को' भन्यो ॥ १७ ॥
पिखति पाहरु जारि मसालैं। 'को जल महिं बड शबद उठालैं ?
खोज रहे पाइहु कुछ नांही। कहैं पाहरु आपस मांही ॥ १८ ॥
'को जल जन्तु मच्छ ते आदि। नीर उछालि उठाइहु नाद'।
शाहुजहां सहि बेगम जागा। रौरा पर्यो सुननि सभि लागा ॥ १९ ॥
सरव दुरग महिं ह्वै करि रौरा[2]। नहिं कुछ लख्यो पहै, निज ठौरा।
केतिक कहति किंगरा ढह्यो। 'कन्ध पुरानी' केचित कह्यो ॥ २० ॥
द्वै घटिका लगि शोर मचाए। बिन जाने पुन सभि सुपताए।
रहै पाहरु बोलति घने। शाहजहां की चौकी सने ॥ २१ ॥
बिधीचन्द बहु दाव बिचारे। —निकसि न सकहि तुरंगम द्वारे।
दुरग कंध को फांदहि जबै। परहि बीच रावी के तबै ॥ २२ ॥
तहां सम्भारि चलहि जबि घोरा। ले पहुंचौं सतिगुर की ओरा।
इस बिन अपर उपाइ न कोऊ। बड तकराई सभि थल जोऊ ॥ २३ ॥
लाखहुं सैना अन्तर बाहर। जे सुधि होइ चढहिं सभि आहर।
जे तुरंग की पीठ रहौं मैं। ढिग ढूकन नहिं देउं किसू मैं ॥ २४ ॥
कंध आदि ते हय न रुकहि जे। को द्वै माथ पहूच सकहि जे।
सतिगुर हुइ हैं आप सहाई। संसै करनि न मुहि बनिआई ॥ २५ ॥

---

1 अधिक पक्की ईंट का ढेला 2. शोर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

थोरे दिन महिं मैं ढिग होवा। अन्तर वहिर भेव सभि जोवा[1]।
आपहि बनति जाति सभि कारज। गुरू भरोसा तजहि न आरज[2]—॥ २६ ॥

नितप्रति एव बिचारति दांव। —गुर ढिग ले पहुंचो—चित चाव।
इक दिन शाहजहां चलि आयो। दमकति देहि तुरंग दरसायो॥ २७ ॥
करति कसेरा सेव खरोवा। हरखति हज़रत लोचन जोवा।
'कबि को इहु चाकर तुम राखा?। हाथनि जोरि दरोगे भाखा॥ २८ ॥

'दिन ईखद[3] बीते इस रहे। सेवा करनि उचित बहु लहे।
मधुर बोलनो भलो सुभाऊ। टहिल हयनि की महिं चित चाऊ॥ २९ ॥
जबि को राख्यो, दिखैं सवाए। मालश करति पहिरि हथवाए[4]।

मुकता[5] सम दमकति दुति तन की। अस दीपति इन कीनि हयनि की॥ ३० ॥
—साचे पातशाह के घोरे—। कहि बहु बार नमो कर जोरे।
इसको रुख बहु करहिं तरंग। मिल्यो रहै संगै जन अंग॥ ३१ ॥
शाहु बदन बिधीये को देखा। परखयो—इहु मति चतुर बिशेखा—।
कह्यो, चपल ही द्रिषटि परै। राखहु सादर सेवा करै'॥ ३२ ॥

भा प्रसन्न तन तुरंग निहारो। करि बख़श तबि एक हज़ारो।
शाहुजहां निज सदन सिधारा। तबहि कसेरे तांहि उचारा॥ ३३ ॥
'सुनहु दरोगा! दरब हज़ारे। मैं राख्यो सभि निकटि तुमारे।
अपर चाकरी को धन जोइ। जाहु सम्भारति आपे सोइ॥ ३४ ।

जिस दिन मोकहु बनि है लेना। जितिक चहौं तबि कीजै देना।
मोकहु कुछ क्रितघन नहिं जानहु। रावरि को उपकार पछानहुं॥ ३५ ॥

तन मन धन ते हौं अनुसारी। आन समीपी लगे तुमारी।
सुनि म्रिदु वाक दरोगा हरख्यो। लोभी होइ, अलोभी परख्यो—॥ ३६ ॥
ले धन को निज सदन पठायो। विधीए पर भरोसा बहु पायो।
गन दासन ते आछो ठाना। सभि अनुसार करे हितु माना॥ ३७ ॥
सभि पर हुकम करन को लागा। मिल्यो रहै करि करि अनुरागा।
जथा सखापन[6] तिन सम होइ। तथा करहि बोलन म्रिदु सोइ॥ ३८ ॥

तिमर भए जीवण घर जावै। कर्यो क्रित को भोजन खावै।
सुपतहि आनि हयनि के पांसा। छिन छिन करि तिह देहि दिलासा॥ ३९ ॥

1. सब भेद जान लिया 2. श्रेष्ठ पुरुष 3. थोड़े 4. हाथ से बांधी 5. मोती 6. मित्रता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घ्राण, बिलोचन[1] पौंछहि चीर। कर को फेरहि सरब सरीर।
सुम्ब[2], गामची दुमची चारु। बार बार कर धारि सुधारु॥ ४० ॥

निस महिं निंद्रा त्यागन कीनि। बासुर महिं आलस तजि दीनि।
मन महिं करहि बिचारन घनो। —नीको काम सगल ही बनो॥ ४१ ॥

बिना ज़ीन[3] होइ न असवारी। किस थल अहै, न तिह सुध सारी।
जबिलौ ज़ीन न कर महिं पावै। तबि लौ कारज नहिं बनि आवै—॥ ४२ ॥

इम तरकीब चित दाव बिचारा। मिल्यो सखा सम जिस ढिग तारा।
कहि कहि म्रिदु बाकनि अपनायो। हास बिलासन करि हरखायो॥ ४३ ॥

मिलि सभि सौं करि बातन मोरी। लखहिं गवार जाट मति थोरी।
सुनि सुनि हसैं मोद उपजावैं। लग्यो सभिनि प्रिय रिदै रिझावै॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे सप्तमि रासे 'बिधी चन्द लवपुर प्रसंग' वरननं नाम अष्ट बिंसति अंशु॥ २८ ॥

---

1. नाक और आँखें 2. सुम तथा घुटनों का मध्य भाग 3. ज़ीन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु २६

# बिधीआ सरब भेत लेवन प्रसंग

### दोहरा

इक दिन बैठ्यो सभिनि महि भनति अजान समान।
'घोरे सच पातिशाहि के वली चलाक महान ॥ १ ॥

### चौपई

हज़रत हेरन हेतु रखाए। जिन दरशन ते उर हरखाए।
इस बिधि रहहिं इसी थल खरे। किधौं ज़ीन भी डारन करें ?' ॥ २ ॥
सुनि इक बोल्यो 'भो मति ओरे। इन के ज़ीन नहीं मुल थोरे।
जबर जवाहर ज़ाहर जरे। चामीकर[1] महिं दीपति खरे। ३ ॥
मुकती[2] कोरदार बर हीरे। कारीगरन चकोरन[3] चीरे।
तिनकी पंकति शोभति ऐसी। दिपति गगन मैं तारन जैसी ॥ ४ ॥
कबहुं न तैं देख्यो किम कोई। ज़ीन तुरंगम इन सम जोई।
सवालाख कीमत तिन केरी। तुम समान कबि होइ न हेरी ॥ ५ ॥
कौन गवारन को दिखरावै। शाहु समीप होनि नहिं पावैं।
बिना शाहु के कौन बनावै ?। ऐते धन को खरच लगावै ?' ॥ ६ ॥
सुनि करि बिधी चन्द घिघियानो। 'मैं तुम बिखै मिल्यो अबि मानो।
सच पतिशाहि हयनि को दास। निस बासुर बासो तुम पास ॥ ७ ॥
अस मनसा भी होहि न पूरी। तौ सभि कार करब मैं कूरी।
पांच कि सात रजतपण केरी। कीमति इत्तक वसतु हम हेरी ॥ ८ ॥
सवालाख को कहां बनायहु ?। सुनति रिदै मम अचरज आयहु।
ज़ीन बिलोकन की वहु चाही। इहै सवाल मेरो तुम पाहीं' ॥ ९ ॥
इक बोल्यो 'सो कुलफन[4] अंतर। धर्यो रहै सम्भारि निरंतर।
सदा कलीद[5] रहै जिस हाथ। करहि दिखावन, कहु इस साथ ॥ १० ॥

1. सोना 2. मोती 3. चारों कोनों से 4. ताले के अन्दर 5. ताली



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि करि कह्यो कलीदनि वारे। 'हम तो सदा खान अनुसारे।
बिना दरोगे बाक उचारे। ज़ीन निकासहिं कौन बिचारे॥ ११ ॥
कहै कसेरा जे तिस पास। कुलफ कुशोदहिं लेहिं निकास।
आछी रीति इसै दिखरावैं। एक बार जे आइसु[1] पावैं॥ १२ ॥
खान त्रास को जे नहिं धरैं। तो हम तुरत दिखावन करैं'।
इम उचारि करि आपस मांही। खान कहावन ते सभि चाही॥ १३ ॥
इतने बिखै दरोगा आयो। सभि मिलि हास बिलास रचायो।
देखति सोंधेखान अलायो। 'क्या तुम मिलिकै मता पकायो ?॥ १४ ॥
'सुनयो खान तुम रख्यो कसेरा। मेरा[2] वड सुभाव को हेरा।
अनिक वारता ऐसी कहै। सदा हसावति ही बहु रहै॥ १५ ॥
अबि ही हटे हास बहु कीनि। कीमत सवा लाख क्या ज़ीन।
दस बीसक कै सौ लगि जावैं। दरब इतो लगि कहां बनावैं'॥ १६ ॥
सुनति कसेरे बाक बखाना। 'मैं सुनि मन महिं भयो हिराना।
देखन चहति दिखाहिं न सोई। कहति रह्यो, नहिं मानहि कोई॥ १७ ॥
सकल आप को नाम बतावति। कहे तुमारे बिन न दिखावति।
मोकहु भी अभिलाख महाना। जब्रि लौं पिखों न माव हिराना॥ १८ ॥
सोंधे भन्यो 'ईद जबि आवै। तिस दिन जुगल ह्यनि पर पावैं।
लेहु बिलोकि अजायब भारे। जिन के सम कबिहूं न निहारे'॥ १९ ॥
सुनति कसेरे बाक प्रकाशा। 'इस दम का कहु क्या भरवासा।
घरी न लगहि होहि बिनाशा। निकसति आइ कि नहिं पुन सवासा॥ २० ॥
कीनि तरीफ ज़ीन की सभिहूं। मोहि रिदा सुनि बिसमयो तबिहूं।
चैन न परहि बिलोकै बिना। सवा लाख धन अचरज सुना॥ २१ ॥
तुमरे निकटि सदीव रहाऊँ। अस भी नहीं कामना पाऊँ।
यांते आइसु दीजहि खान। जिस ते ज़ीन दिखावहिं आनि'॥ २२ ॥
देखि दरोगे अस अभिलाखा। खरो कलीदवार[3], तिह भाखा।
'ज़ीन निकासि देहु दिखराइ। रिदे कसेरा जे हरखाइ॥ २३ ॥
तिसी रीति सभि फेर सम्भारहु। अन्तर धरि तारो[4] तहिं मारहु'।
ले आइसु को लाइ कलीद। कुलफ[5] खोलि करि लखि तगीद॥ २४ ॥
अन्तर हुइ प्रवेश, लै आयो। आन वहिर धरि बैठि खुलायो।
जबि बसत्रनि ते वहिर निकारा। जरे जवाहिर दमक उदारा॥ २५ ॥

---

1. आज्ञा 2. सरल स्वभाव वाला 3. चाबी वाला 4. ताला
5. चाबी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हेरि कसेरे फेर उचारे। 'इहु तो पाहन उज्जल सारे।
हमरे जबि ज्वार पक जाइ। इन मुकता सम कहति चबाइ[1] ॥ २६ ॥
मैं जवाहरि कुछ आछो होइ। इन सम हम चरबति दे खोइ।
कहां जानति लगि इस माही। मुझ को तो भासति कुछ नांही ॥ २७ ॥

सवालाख धन कहां लगायो। उज्जल पाहन बहु खचिवायो।
कै जुवार सम दाने पोए। गुच्छे लरकति हैं गन जोए' ॥ २८ ॥
सुनति हसे सभि कहिं 'मति भोरे। हीरे चारु चीर चुकोरे।
कई हजारन खरचे पावैं जिस को तूं पाहन[2] बतरावैं ॥ २९ ॥
लिए न दीये कहां तू जानहिं। इनकी कीमत कहां पछानहिं।
इह शाहुनि के होति समीप। नहीं सवसर अपर महीप' ॥ ३० ॥

निज कर लाइ कसेरे हेरे। कहै 'न म्रिदुल, कठोर घनेरे।
चुभैं शाहु को तन जबि छ्वैहै। इन लागे सुख क्या तिस ह्वै है ?' ॥ ३१ ॥
कहि सौंधा, इन म्रिदु शुभि जाने। लेकरि पान नहीं कुछ खाने।
इन ते शोभा होति बिसाला। सुन्दर दीखति अधिक उजाला ॥ ३२ ॥
तूं भोरा कुछ जाने नांही। नहीं निहारे आगे कांही।
वसतू अपर जि पाइ न कोइ। सो शाहुनि ढिग उत्तम होइ' ॥ ३३ ॥
सुनत कसेरे बाक उचारे। 'हम सम जे धन पांहि हजारे।
सभि बच लो ठानैं गुजरान। निज अरु सुत करि ब्याहु महान ॥ ३४ ॥

इह तो दरब जि बाद लुटावैं। इहु शाहनि को ही बनि आवैं'।
बसत्र लपेटे प्रथम समाना। भले सम्भार्यो सौंधे खाना ॥ ३५ ॥
हाथ कसेरे के उचवाए। गए संग ले अन्तर थांए।
आछी रीतिं संभारि धरायो। बिधीए देखि भेव सभि पायो ॥ ३६ ॥

इत उत पिखि करि बाहर आवा। कर कलीद जिस कुलफ लगावा।
सोंधेखान गयो निज काज। जानि लीनि मन, सकल समाज ॥ ३७ ॥
निज कर ते कलीद जहिं रखी। सो भी थांय कसेरे लखी।
दिवस[3] बिताइ भयो अंधकारा। घर जीवण के कीनि अहारा ॥ ३८ ॥
निस बिताइ करि बहिर पयाना। खुरची दूब देखि शुभ थाना।
आनि ह्यनि के आगे पाई। हरखति धारति सेव सवाई ॥ ३९ ॥
देखि दरोगे गिरा उचारी। 'तुहीं कसेरे! देइ निहारी।
खान पान तुरंगन को सारा। देहु तुहीं लिहु निस दिन सारा' ॥ ४० ॥

1. चबा कर 2. पत्थर 3. उमर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिधीया देनि लग्यो तबि तैसे। आगे सेवक चारति जैसे।
लेनी खान पान सुधि सारी। धरे प्रेम को सरब संभारी॥ ४१॥

जबै कसेरे हेरहि घोरे। हिहनावैं उर मुदति न थोरे।
लखि सेवा को बहु अनुरागे। दौर उठावति पिखि करि आगे॥ ४२॥

बदन बिलोचन पर कर फेरें। देति दिलासा बोलि घनेरै।
मालश करहि पहिरि हथवाई। नख शिख लौ तन दै दमकाई॥ ४३॥

खिंघर एक बहिर ते आनै। आधी रात परी जबि जानै।
बडे बेग ते नदी गिरावै। जल उछाल करि नाद उठावै॥ ४४॥

तीन चार दिन जाग निहारे। कुछ नहिं लखहिं सुपत हुइ सारे।
पन्द्रहि दिवस करति हम रह्यो। —जो जलजन्तु होइ—अस लह्यो॥ ४५॥

बहुर देखि बो नांहिन करैं। पहिरा देति पाहरु परैं।
छोरा लै निकसनि बलभारी। अचरज करिबे सभिनि मझारी॥ ४६॥

अपनी द्रिषटि तरे सभि कीना। बार बार फांदन थल चीना।
अपनी घात लाइबे हेतु। करति रहति बिध्रि सुमति समेत॥ ४७॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे सप्तमि रासे **'बिधिआ सरब भेत लेवन प्रसंग'** बरननं नाम उन त्रिसती अंशु॥ २९॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३०

# बिधी चन्द

**दोहरा**

सरब भेव को जानि करि निकसनि हेतु उपाव।
रचति सुमति करि आपनी ज्यों लागहि निज दाव ॥ १ ॥

**चौपई**

किस प्रकार इहु सुपतहिं सारे। लखहिं न जीन तुरंगम डारे।
सो उपाव मोकहु बनि आवहि। जागहिं जबि सभि बहुत जगावहिं—॥ २ ॥
रिदै बिचारि उपाव अरंभा। जिसते होवहि सभिनि अचम्भा।
सतिगुर को धरि ध्यान मनावहि। —अपनो कारज आप बनावहिं ॥ ३ ॥
हुते हयनि के सेवक सारे। राग रंग करि मोदति भारे।
कैफ कंचनी[1] महिं धन खोवहिं। बारम्बार तमाशो जोवहिं ॥ ४ ॥
इक दिन बैठि सभा महिं सारे। हास बिलासन बाक उचारे।
दास कहैं सुनि भ्रात कसेरे !। रह्यो नवीन आइ इस डेरे ॥ ५ ॥
अधिक चाकरी सभि ते भई। शाहु निकटि ते बखशिश लई।
नहिं भ्रातनि महिं ज़्याफत[2] करी। इहु आछी नहिं तुझ ते सरी' ॥ ६ ॥
सुनि बिधीए उर हरख उपन्ना। —कारज बन्यो भलो—मन मन्ना।
कहनि लग्यो 'भ्रातनि अनुसारी। क्यों न करौं मैं खुशी तुमारी ॥ ७ ॥
मैं नहिं जानी, सभि तुम कही। आछो करौं, अबहि उर लही।
इक अजोग मुहि बहुत बिचारा। जन्म हिन्दु मम, तुरक तुमारा ॥ ८ ॥
ज़ाफत नहिं अहार की बनै। अपर करव, तुम सभि जिम भनै।
धन लालच मेरे कुछ नाहीं। खाइ खुलाय देऊं तुम मांही ॥ ९ ॥
मैं निज भनो मनोरथ मन को। ज़ाफत करो कैफ सभिहिनि को।
जेतिक चाहो तेतिक पीओ। बनहुं अनंदति अमली थीओ ॥ १० ॥

---

1. शराब और वेश्या 2. प्रीति भोजन



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिलि बैठहु तुम इकथल सारे। भरि भरि घट महिं धरौं मझारे।
राग रंग करि करि हरखावहु। अमली होइ अपन थल जावहु ॥ ११ ॥
निज कर भरि भरि प्याले दैहों। सभि त्रिपताइ खुशी मैं लैहों।
करहु परसपर वाक बनाइ। करहु मजा तुम दियो खुदाइ ॥ १२ ॥

नहिं इस दम को कुछ भरवासा। इही लाभ, करि लेहु बिलासा[1]।
सुनि हथ सेवक सभि हरखाये। 'साध साध' मुख वाक अलाये ॥ १३ ।

इम प्रसन्नता धारहिं सारे। 'पी पी कैफ बनहिं मतवारे।
खाने को खाना क्या अहै। निज निज सदन हमेशैं लहै ॥ १४ ॥
मिलि शराब नहिं पीवति कबिहूं। बचन बिलास न होइहुं सभिहूं।
जाफत इसते नाहिन नीकी। इहै खुशी है सभि के जी की' ॥ १५ ॥

सुनि बिधीए मन घात बिचारी। —अषटम वदी आज सुखकारी।
प्रथम निसा महिं बड अन्धकारा। उदहि चन्द पुन गगन मझारा ॥ १६ ॥
तम महिं दुरग तुरंग फन्दावौं[2]। हुइ प्रकाश बिखि पन्थ सिधावौं।
करौं आज ही जाफत कैफ। होति प्रभात मिलै इन हैफ— ॥ १७ ॥

इम बिचार करि बोल्यो सोइ। 'खाणा खाहु आज नहिं कोइ।
तुम सभि को कसम खुदाइ। जे न मिलहु इह ठां समुदाइ ॥ १८ ॥

मैं अबि जाय बारनी[3] ल्याऊँ। अति नीकी निज हाथ पिलाऊँ।
प्रथम प्रान करि मिलि इस थान। मन भावति ले अमल[4] महान ॥ १९ ॥

बहुर जथा रुचि खान करीजै। बेश्या रमहु कि घर गमनीजै।
नहीं जाउं इहठां पर रहों। आज चिन्त नहिं किस बिधि लहो ॥ २० ॥

सभि बिधि बिल्लसहु ऐश बिसाला। मैं सभि कारज लेहुं सम्भाला'।
इम कहिते संध्या हुइ आई। पसर्यो तिमर गमन लिय छाई ॥ २१ ॥
तिस थल करि इकठे समुदाया। आप लैनि हित कै सिधाया।
घर तिखान जीवन के गयो। बीस रजतपण लेति सु भयो ॥ २२ ॥

बूझ्यो सौडक[3] सदन बिसाला। हित शराब के ततछिन चाला।
मिलयो जाय करि बोलयो तांही। 'सार बारनी है तुव पाही ? ॥ २३ ॥
आछी देहु मोल बहु लीजहि। अमल घनो जिस थौरी पीजहि'।
कह्यो 'मोल डियोढ़ा मैं लै हौं। सार बारनी घर ते दै हौं ॥ २४ ॥

---

1. आनंद 2. अंधेरे में किले से घोड़े दीवार फंदवा कर निकाले 3. शराब 4. नशा 5. शराब वेचने वाला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पीजै अलप हूजीए बौरा। खोजहि पाइ न घर को पौरा[1]।
और तरीफ कहां करि कहैं। निकसहि मूत्र नहीं सुधि लहै' ॥ २५ ॥
बिधीआ कहे 'मोल लिहु दूना। दिहु शराब जिस अमल चऊना।
इस कहि बीस रजतपण दीनि। सार बारनी घट भरि लीनि ॥ २६ ॥
निज दासन के सिर उचवाए। बिधीए संग सु दए पठाए।
बीती जामनि घटिका चारी। पहुंच्यो निकटि जाइ मति भारी ॥ २७ ॥
आगै दासनि को समुदाया। मिले सकल सठ लखहिं न माया।
थिरे प्रतीखति अजहुं न आयो—। भए मुदित चित जबि दरसायो ॥ २८ ॥
फरक साथ पंकति बैठाई। पिखि बिधीए सभिहूं न सुनाई।
'सार बारनी टोरि घनेरी। मैं आनी फिरि कै बहुतेरी ॥ २९ ॥
सनै सनै थोरी करि पान। करहु बारतालाप सुजान।
पंच रजतापण इह अत्रि लहीअहि। नुकल अनावहु जो चित चहीअहि ॥ ३० ॥
मैं भरि भरि देवैं तुम पियाले। कीजहि आज बिनोद बिसाले।
बिछुरहि याद रखेंगे सारे'। इत्यादिक बच कहि कहि कहि प्यारे ॥ ३१ ॥
नुकल घटी दो इक महिं आई। तनक तनक दे प्रथम पिआई।
बतरस[2] के लालच तबि लाए। हंकारति केते हुलसाए ॥ ३२ ॥
मादक[3] चढ़यो भभूके जैसा। को बिहसति, को बहिसति[4] बैसा।
चरबहिं नुकलन, पीवैं प्याले। भए गवार दास मतवाले ॥ ३३ ॥
डेढ जाम निस जबै बिताई। —कैफ छूटकी तबै पिलाई।
तहिं के हुते पाहरू सबै। भरि करि देनि लग्यो तिन जबै ॥ ३४ ॥
कहैं बात 'सुनि भ्रात कसेरा !। पहिरा देनि आज क्रित तेरा।
हम ते जाग्यो जाइ न कोई। दई शराब न साम्बहु सोई' ॥ ३५ ॥
कहि बिधीआ 'तजि दिहु दुचिताई। जागौं जामनि आज सबाई।
शाहु प्रताप श्रानि को सकै। है इक राज आन को तकै ?' ॥ ३६ ॥
खातर जमा भई तिन मन की। कीनसि छूट शराब पियन की।
दियो कलीददार को भरि कै। ले करि कहति भयो हस करिकै ॥ ३७ ॥
'सुनहु कसेरा ! मैं इस बेरा। करौं पान इहु लखि हित तेरा।
मम कोठे की सभि तकराई। तोर हवाले, देऊँ सुनाई ॥ ३८ ॥
जागति रहहु न तैं करि पानू। सभि बिधि ते रहीयै सबधानू'।
सुनि बिधीए बहु दीनि भरोसा। 'क्या तुम कलपति हो अस दोषा ॥ ३९ ॥

1. द्वार 2. बात-चीत का रस 3. नशा 4. झगड़ा करता है

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तपहि प्रताप शाहु को भारी। को इत आनि सकै मति भारी।
नहीं गम्मता खग[1] की आवन। धरहिं त्रास को होंहि पलावन॥ ४० ॥
अरु मैं जागौं जामनि सारी। तुम सुपतहु अबि नींद सुखारी'।'
इम कहि सभि को करि निशचिन्त। देनि लग्यो बहु पात्र भरन्ति॥ ४१ ॥
अल्प बिसाल वृद्ध कै ज्वान। सभिनि पिलाई एक समान।
जबि पीछे प्याले भरि दए। सुधि तन धन की बिसरति भए॥ ४२ ॥
बातन करहिं गिरे तबि ऐसे। जिस ते सुधि बुद्धि रही न कैसे।
मुख बोलन ते रहे बिचारे। पगीया बसत्र उतारति डारे॥ ४३ ॥
बाहु पकरि बूझति सतिसंग। बोलहिं जबहि न रहि सुध अंग।
तौ तजि देति—सरब सुपताए। नहिं सुधि रही—भले पतीआए॥ ४४ ॥
श्री हरि गोविन्द सिमरन करिकै। बारि बारि धर पर सिर धरिकै।
भयो मुदिति मन इस बिधि जबै। जनु कारज करि लीनहु सबै॥ ४५ ॥
सावधान हुइ सभि को छोरा। चित महिं चह्यो लेनि हित घोरा।
इत उत फिर करि दुरग निहारा। दूर पाहरू[2] करति पुकारा॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'बिधी चन्द प्रसंग'** बरननं नाम त्रिसती अंशु ॥ ३० ॥

---

1. पक्षी। 2. पहरेदार।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३१

# बिधी चन्द तुरंग लिआवन प्रसंग

**दोहरा**

पट कट सों कस करि तबहि पगीआ भले सुधारि ।
आरे महि तारी धरी[1], गमन्यो दाव बिचारि ।। १ ।।

**चौपई**

डारयो जहां प्रथम ही हाथ । गुर रज़ाइ लागी कर साथ ।
ले करि कुलफ तुरत ही छोरा । जानहिं ज़ीन धरैं जिस ओरा ।। २ ।।
करति शीघ्र ही लीनि उठाइ । हय दिलबाग निकटि तबि जाइ ।
रेशम डोरहिं छोरन करी । देति दिलासो धीरज धरी ।। ३ ।।
ततछिन कविका[2] मुख पहिराई । गहि ग्रीवा पर बाग टिकाई ।
ताहरू डारि, जीन कर लीनि । पीठ तुरंगम की धरि दीनि ।। ४ ।।

हुतो पटम्बर को म्रिदु तंग । खैंच डारि खैंच्यो बल संग ।
चांमीकर रकाब नग जरी । दोनहुं दिशि लरकावन करी ।। ५ ।।
दुमची दुमची[3] महि पहिराई । चरन पिछारी तुरत छुराई ।
धरि गुर ध्यान सिमरि सत्तिनामू । 'करहु संपूरन अपनो कामू ।। ६ ।।

होति बिअदबी मो ते जोइ । दिहुं तनखाह बन्दि कर दोइ ।
पंच रजतपण को पंचाम्रित । अरपौं मैं बखशावन के हित ।। ७ ।।
गुर हय पर मैं पूरब चरिहौं । काज सरै नहि यांते करिहौं' ।
दई प्रदछना फिर चहुं आसा । बन्दति भयो चरन के पासा ।। ८ ।।

ले सत्तिनाम तुरंग अरूडा । हुतो ज़ीन महि चाबुक रूडा ।
कन्चन दण्ड[4] जवाहर जरियो । सो बिधीए कर धारन करियो ।। ९ ।।
इत उत कुछ फेर्यो तबि घोरा । तुन्द बिसाल कीनि बड जोरा ।
दुरग कन्ध जो हुती टपावन । तिस के करि सनमुख चलि जावन ।। १० ।।

1. आले में चाबी रख दी । 2. लगाम । 3. पूंछ । 4. सोने की छटी ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एक हाथ चाबुक को मारा। रिसि तुरंग तन ओज सम्भारा।
जिस के फूल छरी नहिं लाई। लगति उठ्यो, कर बाग उठाई ॥ ११ ॥
इक दुइ छाल कन्ध लगि कीनि। रिस ते ऊची कछू न चीनि।
चारहुं चरन उचाप उचेरे। भयो कन्ध ते ऊच बडेरे ॥ १२ ॥
सटकारी दुमची भरमाई। सरिता बिखे पर्यो तबि जाई।
हुतो गम्भीर नीर तिस थान। भीग्यो एक बार बलवान ॥ १३ ॥
हय अरुढत्रे महिं मति महां। बाग उसारि सम्भार्यो तहां।
जानू लगि जल करि कै तार्यो। भयो पार बल तन संभार्यो ॥ १४ ॥
जबिहूं छार बार[1] मैं मारी। उछर्यो बडे वेग ते वारी।
शबद बिलंद भयो तबि ऐसे। जर खर गिरहि अटारी जैसे ॥ १५ ॥
हुतो पाहरू जागति सोई। नित जल जन्तु बिचारहि तेई।
सुनि कै नाद तूषनी रहे। कछु नहिं लहे न बच मुख कहे ॥ १६ ॥
बिधीचन्द बड सुमति प्रबीना। तट थिर तुरंग दिलासो दीना।
ग्रीवा पर धरि धरि करि हाथि। हुतो तेज करि धीरज साथ ॥ १७ ॥
नित दिन महिं दिखि बात बिचारति। कंध नदी पिखि पंथ निहारति।
सो सभि करि निरनै मग चाला। गुर सनमुख मुख करि तिस काला ॥ १८ ॥
अधिक अनंदति सुमति बिलन्द। चलहि तुरंग पौन मानिन्द।
सतिगुर शबद बदन ते गावै। भा प्रमोद सों रिदै न मावै ॥ १९ ॥

**श्री मुखवाक—**

'गुर मेरै संग सदा है नाले। सिमरि सिमरि तिसु सदा समाले।'
इत्यादिक तुक गावत आवै। ह्य की पीठ चढनि सुख पावै।
इम बड बल ते गमन्यो घोरा। नहिं बिधीए तन हालहि थोरा ॥ २० ॥
उदयो चन्द जुग घटिको पाछे। दीखन लग्यो पंथ सभि आछे।
देति दिलासा मारग चालहि। भूलन ते नभ उडनि[2] संभालहि ॥ २१ ॥
ग्राम कि नगरी आइ अगारी। नहीं प्रवेशहि किसू मझारी।
वहिर वहिर ही मारग चले। आइ नदी जहिं दोनो मिले ॥ २२ ॥
देखि घाट को ठेल्यो बारी। ज़ीन शुषक रखि होयो पारी।
आयुत छाती लगि जल छुयो। सूको राखि तीर पर गयो ॥ २३ ॥
बांधि ब्रिच्छ सो मज्जन कर्यो। धरि गुर ध्यान हय ऊपर चर्यो।
बल ते जल थल महिं तुल[3] चालहि। सुख असुवारी करति न हालहि ॥ २४ ॥

1. पानी में छलाँग। 2. सितारे। 3. एक-सा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बडे वेग ते गमनहि घनो। गगन बिमान प्यानति मनो।
ध्यान गुरू को धारति मन मैं। कारज बन्यो अलप ही दिन मैं ॥ २५ ॥
बिधी चन्द को देति अनन्द। नहिन होनि दे तुन्द बिलन्द।
पहिले दिन महिं मजल बिसाला। इकथल खरे बिता चिर काला ॥ २६ ॥
होइ न अस, असु हुस नहिं जाइ। गुर ढिग एक बार पहुंचाइ।
धीरा करते देति दिलासा। चढिबे महिं चातुर मति रासा ॥ २७ ॥
देति बाग को चाल चलावै। तऊ बेग ते बहुत सिधावैं।
थोरो चलहि, लखहि असवार। पहुंचहि दूर न लागि अवार[1] ॥ २८ ॥
आन रह्यो दिन घटिका[2] चारे। रूपे पुरि के चिन्ह निहारे।
देखति ही आनन्दति होवा। कुशल समेत पहुंचवो जोवा ॥ २९ ॥
उतर पर्यो घोरा डुरिरायो। अदब हेत मग चरननि आयो।
आगे सतिगुर लगे दिवान। शबद रबाबी करते गान ॥ ३० ॥
दिख्यो दूर ते संग तुरंग। आवति बिधीचन्द मुद अंग।
कमल बिलोचन जुग बिगसाए। उठे हेरिबे हेतु लुभाए ॥ ३१ ॥
जिस सीता सुधि को हनुमान। राम समान प्रतीखतिवान्।
पर्यो पांइ पंकज पर दौरि। रघुबर सम उठाइ भरि कौर ॥ ३२ ॥
क्रिपा द्रिषटि ते कर्यो निहाल। बिधीआ हनूमान के ढाल।
तिन दोइन सम को बडभागी। दुषकर कर्यो भए अनुरागी ॥ ३३ ॥
नहीं अपर ते जो बनि आयो। गुर प्रभुहित सो काज बनायो।
नहीं प्रान प्यारे जुग कीने। करन काज के रस महिं भीने ॥ ३४ ॥
बूझी कुशल सरस रघुबर के। कही सकल हनुमति समसर के।
जिनको मुनि जन जोगी ध्यावैं। अनिक जतन करि उर ठहिरावैं ॥ ३५ ॥
कृपा द्रिषटि करि अंक भरै जो। तिन की समता कौन करै जो।
कहि विधीआ 'तुम सदा सहाइ। संकट निकटि होनि नहिं पाइ ॥ ३६ ॥
निज करुना करि काज करायो। बिखम दुरग ते ह्य निकसायो।
सकल देश ब्रिन्दन को मालिक। लाखहुं सैना जिसके तालिक ॥ ३७ ॥
खरे हजारहुं पाहरू राखे। रख्या शाहु करनि अभिलाखे।
तिसको अति प्रिय हय हरि आना। तुम बिन करति काज को आना?' ॥ ३८ ॥
सतिगुर सहत जोध ते आदि। हय को पिखिनि उठनि अहिलादे[4]।
नख शिख लौ पिखि हरखति सारे। सहित ज़ीन ज़ेवर सभि डारे ॥ ३९ ॥

1. देर। 2. चार घड़ी। 3. डोरी से बाँध दिया। 4. प्रसन्नता।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुन्दर मूरती हय की हेरे। जिम कागद पर लिखी चितेरे।
जनु सुन्दरता सकल बटोरी। अंग अंग प्रति बिध करि जोरी ॥ ४० ॥
रूप समुंद्र सु छबि करि नेती। महां बीर रस मन्दर सेती।
कर अरबिन्द मदन[1] गहि करिकै। अद्भुत मथन कीनि बल धरिकै ॥ ४१ ॥
मनहुं तुरंगम इहु निपजायो। सपतमुखा रवि को दरसायो।
इस की समता लहै न सोई। अपर समीप कहां, किम होई ॥ ४२ ॥
श्री गुर हरिगोविन्द कर धरियो। अंग अंग अविलोकनि करियो।
जिम संगति हय कीनि बतावनि। बिधी चन्द तिम कर्यो दिखावन ॥ ४३ ॥
'तुरकेशुर ते पलटा लियो। हर्यो हमारो हय बल कियो।
तिम बिधीए बधि-बल को ठाना। तिस पलटे करि हय को आना' ॥ ४४ ॥
रूपचन्द साधू अरु जोध। इन ते आदि गुरू के जोध।
हेरि हेरि सगले बिसमाए।–बिखम सथल ते किम निकसाए?– ॥ ४५ ॥
सभिहिनि जान्यो --गुरू प्रताप। करन करावन आपे आप।
मानस बपुरे ते क्या होइ। करीयति बीच बहाना सोइ ॥ ४६ ॥
जेठा निकटि गुरू तबि हेरा। सौंप तुरंगम दीनि बडेरा।
'बिधीचन्द जिम करहि बतावन। तिम सेवा कीजै मन भावन' ॥ ४७ ॥
नफर दोइ मालश पर लाए। खरे खरखरे खरे कराए।
बहुत दिवस को हुतो खरोवा। मजल बिसाल करे श्रम[2] होवा ॥ ४८ ॥
बदन नासका आदिक अंग। सरब सुधारन करे तुरंग।
बिते जाम ते ज़ीन उतारा। हरिनि के जराव करि सारा ॥ ४९ ॥
खैबे उचित हरे त्रिण पाए। खरो होनि थल खरो बनाए।
कीनि तिहावल दीनि निहारी[3]। ऊपर शुभ पट राख्यो डारी ॥ ५० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे '**बिधीचन्द तुरंग लियावन**' प्रसंग बरननं नाम एक-त्रिसती अंशु ॥ ३१ ॥

---

**1. कामदेव । 2. थकावट । 3. घोड़े की खुराक ।**

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३२

# घोड़ा लयावन

**दोहरा**

इत ऐसे पहुंच्यो तुरंग उत लवपुरि की गाथ।
जिम होई, संतहु ! सुनहु, कहति कवि तुम साथ ।। १ ।।

**चौपई**

निज खाने महिं सौंधेख़ान। खाना खान कर्यो सुपतान।
निस बिताइ बड प्रात[1] सिधारा। इक हय नहिं इक खर्यो, निहारा ।। २ ।।
देखि भयो सन्देह महाना। सभि दासन सों ऊच बखाना।
कहां सुपत हो सभि मति अन्धो ?। इक हय लै तुम किस थल बंधो ?' ।। ३ ।।
हते कैफ के[2] परे बिहाला। सुनि सुनि अपनो कीनि सम्भाला।
'घर ते चल्यो दरोगा आयो'। उठे तुरत ही इम लखि पायो ।। ४ ।।
सभिनि आनि सो थान निहारा। 'घोरा नहीं, पिख्यो घर सारा।
हौले हहिर 'कहां चलि गयो ?। नहीं सन्हि् कित, जहिं निकसयो ।। ५ ।।
द्वार किवार असंजति सारे। लघु ताकी विन नहीं उघारे।
शाहु समीपी सुधि पहुंचाई। 'कहां भयो हय नहिं इस थांई ?' ।। ६ ।।
सुनि सभ्रम ते तबि चलि आयो। —इक ह्य खरो न इक दरसायो—।
मिले लोक गन इत उत हेरे। लख्यो खोज 'हय घर महिं फेरे' ।। ७ ।।
पुन निकसनि को थान न जानैं। —कहां गयो ? नहिं भेव पछानै।
बूझै दास बुलाइ वहोरी। 'तुम ने क्यों न पिखी हय चोरी?'। ८ ।।
हाथ जोरि सभिहूंनि सुनायो। 'पौर पंथ हम करि तकरायो।
भयो निकेत[3] बिखै हय लीनि। वहिर आनि नहिं किनहूँ लीनि ।। ९ ।।
किधौ भूमका[4] छिद्र उधारा। वर्यो बीच, नहिं किनहुं निहारा।
किधौं गगन मैं उडि करि गयो। कै पताल को गमनति भयो ।। १० ।।

---

1. सुबह। 2. शराब के मारे। 3. घर। 4. धरती।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मानुख की इत गम्य न कोई। आवहि तसकर बनि करि जोई।
सुनि सुनि सयाने गन चलि आए। सुमति करति कछु लख्यो न जाए ॥ ११ ॥
अटकल करहिं देश नहिं जाइ। हेरहिं सुनहि शाहु पछुताइ।
'अति प्रिय हम मेरो किन लयो ?। अपन विनाश काहि उपजयो ॥ १२ ॥
महि मण्डल महिं को अस अहै। मेरो त्रास[1] जु नहिं उर लहै।
अपर वलाइत के पातिशाहु। मोहि वसतु रखि सकहिं न पाहू ॥ १३ ॥
किस के सीस उभै हुइ गए। निरभै होइ घोरा जिनि लए।
छपहि पहारन मैं को जाइ। तहां सैन सम आनहि धाइ ॥ १४ ॥
मरु, दुरग महिं होइ प्रवेश। छोरहिं तहां न चमू विशेष।
शत्रु बिसाल मोहि अबि सोइ। हतौं सही करि, को कित होइ ॥ १५ ॥

रिसहि शाहु घोरा चित आवै। निजबल कहि कै सभिनि सुनावै।
'नहिं किस थल अस असु दरयाई। नहिं प्रापति, गन करहिं उपाई ॥ १६ ॥
पिख्यो दरोगा खरो अगारी। कोप शाहु करि गिरा उचारी।
'खोजी अबहि हकारहु[2] सारे। निज बुद्धि बल ते खोज निकारे ॥ १७ ॥
सैना दिहु खोजी के संग। चल्यो जाय जहिं खोजि तुरंग।
बहुर आइ सुधि जबहि सुनावै। तबि भारी लशकरि चढि जावै ॥ १८ ॥
प्रान विनाशनि पलटा लैहौं। अपर दण्ड नहिं को तिस दैहौं।
इम कहि शाहु महिल निज गयो। लखि अपराध क्रोध वहु भयो ॥ १९ ॥
तिस छिन खोजी सभि चलि आए। निज निज बुधि बल को उपजाए।
घोरा अजर फिर्यो उतलायो। इह तो खोज सभिनि ही पायो ॥ २० ॥
निकसनि वहिर भेव नहिं जाना। गुर माया ते मति भई हाना।
प्रविशयो भूमि कि नभ उडि गयो। आगे खोज न कतहूं भयो ॥ २१ ॥

निकसे दुरग वहिर चलि आए। चहुंदिशि बिचरहिं खोज न पाए।
कोस कोस लगि फिरे चुफेरे। निस गमन्यो असु खोज न हेरे ॥ २२ ॥
मिलहिं बिचारहिं बिसमहिं सारे। —इस अचरज की परहि न सारे।
कहां भयो, पंछी को आइ। उड करि गयो तुरंग उठाइ— ॥ २३ ॥

हार परे जबि, शाहु बुलाए। 'कहहु, कहां मति मैं तुम ल्याए ?।
पायहु खोज कि नहिं किस दिशमैं? । किमले गमन्यो अशव अस, बिसमैं ॥ २४ ॥
हाथ जोरि करि सभिनि सुनाई। 'हज़रत जी ! कुछ लखी न जाई।
ले फरेशते गे असमान। कै पताल प्रविशयो इस थान ॥ २५ ॥

1. डर। 2. बुलाओ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एक अकल मैं आवहि और। निकस्यो नहीं तुरंगम दौर।
दिशि दरियाउ दुरग दीवार। हुइ असवार कराइव छार ॥ २६ ॥
नीर नीर ही सरिता मांहि। ले गमन्यो को तसकार तांहि।
और भेव को लख्यो न जाई। हारे बुद्धि को करि समुदाई ॥ २७ ॥
सुनिकै केतिक बात हटाई। 'दीरघ दुरग दीवार ऊचाई।
नीर गहीर[1] अगारी फेर। को तसकर[2] इम होइ दिलेर ? ॥ २८ ॥
अनबन है, मन लगै न कैसे। हय के पंख लगे हुए जैसे'।
अपर कहां लग कहौं बनाई। इत्यादिक बहु अकल द्रिढ़ाई ॥ २९ ॥
सुनिकै शाहु कह्यो सभि संग। 'ज्यों क्यों खोजन करहु तुरंग।
रमली[3] गणक[4] शकुन ते आदि। जिन पुरखनि को विद्या यादि ॥ ३० ॥
देश बिदेशन ते चलि आवैं। तिन बूझहु विधि जथा बतावैं।
जहिं कहिं ते सुधि को मंगवावहु। सभि सूबनि पर लिख्यो पठावहु' ॥ ३१ ॥
बहु तागीद कीनि इम शाहु। खोज करति भे देशनि मांहू।
कह्यो दरोगे 'कहां कसेरा ?। नहिं दीखति कितहूं इस वेरा' ॥ ३२ ॥
सभि दासन फिर इत उत देखा। नहिं पायो तबि, करति परेखा।
'घोरा गयो प्रथम तिन जाना। तुम ते अधिक त्रास को माना ॥ ३३ ॥
मुझ ते भई न हय तकराई। हतहि दरोगा—गयो पलाई'।
सभि की मति सतिगुर बिचलाई। हय की सुधि किस बिधि नहीं पाई ॥ ३४ ॥
इति श्री हरिगोबिन्द अनन्दे दिखहिं तुरंगम बली बिलन्दे।
बिधी चन्द ते गाथा सुनि सुनि। 'साध साध' भनि 'बड बुद्धि' गुनि गुनि ॥ ३५ ॥
क्रिपा आपकी ते सभि वंचे। मूढ़ भए, लखि भेव न रंचे[5]।
अपनी वसतु आप अनिवाई। दास जानि मुझ देहु बडाई' ॥ ३६ ॥
निस महि खान पान करि सोए। पूर मनोरथ सुख सों होए।
जाम जामनी रही सु जागे। शौच सनान करनि सभि लागे ॥ ३७ ॥
पठहिं कंठ ते श्री गुरू बानी। जपुजी, सुखमनि आनि महानी।
आसावार रबाबी गावैं। भांति भांति के राग सुनावैं ॥ ३८ ॥
सत्तिनाम को होति उचारि। श्री करतार केर जैकार।
हुइ अम्रित वेले[6] चित शांति। पठति सुनति मन बनहिं इकांति ॥ ३९ ॥
मनहु बिकुण्ठ गुरु दरबार। हते काम क्रोधादि बिकार।
बहुर प्रकाश भयो दिशि बीच। गगन दुरे उड ऊच अरु नीच ॥ ४० ॥

1. गहरा पानी। 2. चोर। 3. रमल जानने वाला। 4. ज्योतिषी।
5. थोड़ा-सा। 6. प्रात:काल से पूर्व।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आसावार भोग को पायो। चलि जेठा सतिगुर ढिग आयो।
हाथ जोरि करि अरज़ गुज़ारी। 'महाराज! घोरा बल भारी ॥ ४१ ॥
रुख करि त्रिण दाना नहिं खाइ। बहुत बिलोचन ते[1] जल जाइ।
खरो अचंचल मन मुरझायो। जान्यो जाइ न, किम निबलायो ?॥ ४२ ॥
सेवति रह्यो दीप निस वारे। नहीं निहारी को मुख धारे।
श्रमति हुतो मालश बहु कीनि। फेरति हाथ दिलासा दीनि ॥ ४३ ॥
लेहु आप सुध फेरहु हाथ। क्रिपा धारि तिह करो सनाथ'।
सुनि करि जोध शाहु तबि बोला। 'बहु दिन बिते थान ते खोला ॥ ४४ ॥
मंजल बिसाल पहिल ही आयो। हुयो श्रमति[2] यांते मुरझायो'।
श्री हरि गोविन्द चन्द बखाना। 'सुनहु जोध! इम परै पछाना ॥ ४५ ॥
बहुत बिलोचन ते बहि बारी। उर पीरा जनु बहिर पसारी।
हुयो होइगो बिरहु इस तांई। जिस ढिग रहति समीप सदाई ॥ ४६ ॥
बिधी चंद सभि गाथ सुनाई। 'घोड़े दोइ हुते दरियाई।
इह दिलबाग, दुतिय गुलबाग। बंधति निकटि बढ्यो अनुराग ॥ ४७ ॥
त्रिण दाणा बहु भांति निहारी। दोनहु खाति खरे इक सारी।
ईद आदि दिन खोलहिं कबै। नतु रहिं खरे जि संवत[3] सबै ॥ ४८ ॥
तिस हय को बिरहु जान्यो जाइ। संकट ते दृग जल चलि आइ'।
इम सुनि सभिकै निशचै भयो। 'बिरहा तुरंगम ने दुख थियो' ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'घोड़ा लयावन प्रसंग'** बरननं नाम दोय-त्रिसती अंशु ॥ ३२ ॥

---

1. आंखों से। 2. थका हुआ। 3. सारा वर्ष।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३३

# बिधी चन्द बहुर पठन प्रसंग

**दोहरा**

इम निशचै करि तुरंग दुख उठे गुरू महाराज ।
कौतक करति अनेक बिधि बडे गरीब निवाज ।। १ ।।

**चौपई**

जाइ तुरंगम को तबि हेरा । बहति बिलोचन बारि[1] बडेरा ।
इत उत नहिं देखति मुरझायो । त्रिन दाना ईखद[2] ही खायो ।। २ ।।
जोध संग तबि गुरू बखानी । 'बिरहु की पीर इसे हम जानी ।
अपर न तन महिं संकट कोई । एक थान बन्धे रहिं दोई' ।। ३ ।।
श्री गुर बैन जोध सनमाना । 'निशचै आप प्रथम ही जाना ।
सरब शकति के मालिक रावर । कह्यो जु तरकहि सो मति बावर ।। ४ ।।
अबि कर[3] फेर धीर कहु दै हो । मन इसको थिर भलै करै हो' ।
तबि सतिगुर निज पंकज हाथ । फेरनि कीनि दिलासे साथ ।। ५ ।।
बदन बिलोचन पीठ उदारा । धर करि कर को रुचिर उचारा ।
नाम 'जान भाई !' कहि करिकै । 'त्रिन दाना अचवहु हित धरिकै ।। ६ ।।
गुर घर आइ कषट नहिं पावहु । तन मन की सभि पीर मिटावहु ।
जिस को चहै आइ सो जैहै । प्रिय प्रेमी को प्रभू मिलै हो' ।। ७ ।।
सुनि सतिगुर के बाक सुहाए । फुरकयो घोरा उर हरखाए ।
आगे परे त्रिगति मुख डारे । जोध आदि तिह सरब निहारे ।। ८ ।।
खान लग्यो लखि रिदे अनंदे । 'धंन धंन श्री हरिगोबिन्दे' ।
पुन इकान्त महिं बैठे जाइ । जोधराइ को लीनि बुलाइ ।। ९ ।।
बिधीचन्द पुन निकटि हकारा । सादर कहि करि तिह बैठारा ।
'भो सुमते ! घोरा हरि ल्यायो । करि अचरज सभि को दिखरायो ।। १० ।।

1. आंसू, अश्रु । 2. थोड़ा । 3. हाथ ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इहु पुरुषारथ इक तुम मांही। अपर नरन किस मंहि अस नांही।
हय दूजे बिन भई अजोग। मुरझायो जन उपजयो रोग।। ११ ।।
परम दुखी बनि रोदति इहां। दूसर ऐसो हुइ है तहां।
भयो सन्ताप दुहिन के मन को। रिषट पुषट किम होइ न तन को ।। १२ ।।
करहु जतन दूसर को लयावहु। नांहि त इसको तहिं पहुंचावहु।
जोरि रहै एक थल मिली। हमरे उर भावति इम भली'।। १३ ।।

सुनति जोध कहि 'लयावन ठानो। —इहु पहुंचावहु–मुख न बखानो।
है अति कठन हरन हय[1] केरा। मुशकल ते मुशकल बहुतेरा ।। १४ ।।
तऊ आप की करुना पाइ। लयायहु बिधीआ बुद्धि उपजाइ।
हम को महां चतुर इह दीखा। अपर न जग मंहि इसी सरीखा[2] ।। १५ ।।

पूरब ते दूसर हय लयावन। अधिक कठन ते कठन सु आवनि।
तऊ मोहि निशचै अस होवा। तुम चित चहहु त आवति जोवा' ।। १६ ।।

सुनि बिधीए कर जोरि बखाना। 'अपर नरन को कठन महाना।
तुरंग शाहु के अति तकराई। सुभट हज़ारहुं सदा सहाई ।। १७ ।।
बहुर दुरग मंहि घोरा खर्यो। अधिक सभिनि सवधानी कर्यो।
गुर प्रताप ते, मैं नंहि जानौ। लोहु दुरग ते मैं हरि आनौ ।। १८ ।।

प्रथम सभिनि की अस मति मारी। लखी न किनहूं छल क्रित भारी।
सुनहुं प्रभु क्यो दैबो घोरा। आन मिलावौं मैं इस जोरा ।। १९ ।।

आयुद्ध पाणी[3] जे भट लाखे। हुई सवधान बनंहि सभि राखे।
ऐसी करौं वंचना तिन की। चहौं सो लयावौ अग्र नयन की ।। २० ।।
प्रभुजी ! आज्ञा देहुँ सिधावौं। लयाइ तुरत हय दरशन पावौं।
मुख मुसकावति कह्यो गुसांई। 'गमनहु बिधीआ ! गुरू सहाई ।। २१ ।।
करि कारज तुरत[4] ही आवहु। बहुर जंग करि तुरक खपावहु'।
सुनति उठ्यो पग पंकज हाथ। धर करि प्रिय उर टेक्यो माथ ।। २२ ।।

अति उतसाहु धरि प्रसथाना। अदभुत् कौतक करनि महाना।
प्रथम क्रित हनुमान समाना। अधिक करन कहु अबहि पयाना ।। २३ ।।
जबि बन्दन करि झुक्यो अगारी। थापी दीनि गुरू बल भारी।
'जिम चित्त चहंहि करहिंगे सोऊ। तव क्रित को अटकाइ न कोऊ ।। २४ ।।
तुव बुद्धि सभि के ऊपर छावै। नर बपुरे सुर नंहि लखि पावैं'।
ले बर लवपुरि मारग पर्यो। उर निशंक किस त्रास न धर्यो ।। २५ ।।

---

1. घोड़ा चुराना । 2. जैसा । 3. शस्त्रधारी । 4. जल्दी ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिस पीछे श्री सतिगुर रहे। जोद्धा जोध बिनै बच कहै।
'डेरा पर्यो भयो चिरकाला। मोर कामना रिदे बिसाला ॥ २६ ॥
तीन कोस इस थल ते पुरि है। तहिं तुमरे सेवक को घर है।
करुना करहु चरन निज पावहु। पावन होहि, मोहि मन भावहु ॥ २७ ॥
देहु दास को चलि बडियाई। तहां करहु कुछ दिवस बिताई'।
आगे कहित रह्यो बहु बारी। देखि भाउ बहु कीनसि त्यारी ॥ २८ ॥
साधु रूप चन्द तबि जानी। आइ जोरि कर गिरा बखानी।
'हम भी रावरि साथ सिधरिहैं। गन सेवक सम सेवा करिहैं ॥ २९ ॥
दरशन करति रहैं आनंदहिं। होहि जनम नर सफल बिलंदहिं।
बिछुरन नहिं मन भाइ हमारे। रावरि संग सदा सुख भारे' ॥ ३० ॥
श्री सतिगुर कहि धीरज दीना। 'मेरो संग सदा तुम लीना।
अबि तुम कह्यो मानि पुर वासहु[1]। करहु देग नित जगत प्रकाशहु ॥ ३१ ॥
कह्यो तुमारो होवहि साचा। वस महिं राखहु अपनो बाचा[2]।
जेन केन थल कहीयहि नांही। इम निशचै ठानहु मन मांही ॥ ३२ ॥
अपने ग्राम कीजीअहि वासा। हुइ है दीरघ बंस प्रकाशा।
बिदतहि जग महिं बहु वडियाई। हलत पलत लिहु सुख समुदाई ॥ ३३ ॥
कई रीति के चलित हमारे। करिवे जंग अनेक प्रकारे।
तुरक संग संग्राम हमारा। बजहि लोह पर लोह करारा ॥ ३४ ॥
शुभ संतन की रीति तुमारी। सेवहु देग सकल नर नारी'।
सुनि गुर आज्ञा रिदे अनन्दे। हाथ जोरि पद पुन पुन बन्दे ॥ ३५ ॥
रूपचन्द की जननी[3] आई। पद अरबिन्दनि सों लपटाई।
दे करि धीरज प्रभु उदारे। भए तुरंगम पर असवारे ॥ ३६ ॥
नाम 'जान भाई' गुर धर्यो। तिस पर ज़ीन पाइवो कर्यो।
जवर जवाहिर ज़ाहर ज़रे। जगमग जोति होति छबि भरे ॥ ३७ ॥
नग मानिक हीरे बहु वरण। लगे किरण ते छूटति किरण।
बोधी जिगा जराऊ माथे। कलगी तुंग[4] दिपति दुति साथे ॥ ३८ ॥
बर अम्बर बसत्री बिराजै। झालर जरी झुलति शुभ साजै।
मनहु चपलता सकल सकेली। सहत चातुरी बिधि हय मेली ॥ ३९ ॥
रेशम डोर संग डुरिआयहु। चले दास के हाथ गहायहु।
जबि जुग मिलैं हरख उर भरैं। तौ असवारी हम इस करैं' ॥ ४० ॥

1. घर में ठहरो 2. वचन वाणी 3. माता 4. ऊँची

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करि आगे सतिगुरू पयाने। बज्यो दमामा बडि धुनि ठाने।
करति बतक ही मुख मुसकावति। जोध संग इम पंथ सुहावति ॥ ४१ ॥
चढे लंक पर रघुबर नाथ। करति बारता कपिपति साथ।
तीन कोस कांगड़िपुरि[1] अहे। गए तुरत ही द्रिषटि लहे ॥ ४२ ॥
जोधराइ के मन्दिर ऊचे। सतिगुर हेरे निकटि पहूचें।
उत्तम थल पुरि ते जिस दिशि मैं। ले डेरा उतरायो तिस मैं ॥ ४३ ॥
सुनि करि जोधराइ की नारी। पहुँची ले बहु भेट अगारी।
दरशन कीनि बन्दना चरण। जनम मरन दुख जिन ते हरन ॥ ४४ ॥
जोधराइ करिवाइव डेरा। सेवा सरब संभारि बडेरा।
नित नूतन चित धारति भाऊ[2]। गुरू प्रेम बसि सहिज सुभाऊ ॥ ४५ ॥
वसि करि बासुर कितिक बिताए। बनहिं सिक्ख बहु दरशन पाए।
जोध संग श्री सतिगुर आप। करते रहति बारतालाप ॥ ४६ ॥
करहिं प्रतीखन बिधीए केरी। 'हय को ल्यावहिंगो जिस वेरी।
लशकर तुरकन को बहु ऐहै। हम रिपु[3] हति घमसान मचै हैं' ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तम रासे **'विधि चन्द बहुर पठन प्रसंग'** बरननं नाम तीन त्रिसती अंशु ॥ ३३ ॥

1. ज़िला फीरोज़पुर का एक नगर 2. प्रेम 3. दुश्मन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३४

# भेस बनावन प्रसंग

**दोहरा**

उत बिधीए की कथा जिम लयावन दुतिय तुरंग ।
सुनियहि श्रोता ! प्रेम धरि गुर को सुजसु उतंग ॥ १ ॥

**चौपई**

सतिगुर ते हुइ बिदा पयाना । गमनति दाव बिचारति नाना ।
तीन दिवस महिं पहुंचयो जाई । पुरि के पौर[1] समीप सथाई ॥ २ ॥
सभि सतिगुर के नाम उचारे । करि अरदास धरा सिर धारे ।
'अंग संग प्रभु बनहु सहाई । पुरवहु इहु कारज सहिसाई' ॥ ३ ॥
इम कहि अन्तर जाइ प्रवेशा । गयो जहां ध्रमशाल विशेषा ।
'पैरी पैणा कहि सभि साथ । बैठ्यो सिमरति सतिगुर नाथ ॥ ४ ॥
जितिक सिक्ख तहि करिकरि नमो । सबमान्यो सभि ने तिह समो ।
आयो संध्या मैं बुद्धिवान । पसर पर्यो तम[2] तुरत महान ॥ ५ ॥
कुशल छेम बूझी रु बताई । खान पान शुभ कीनि तदाई ।
इतने बिखै फिरति ढंडोरा । आयहु धरमशाल की ओरा ॥ ६ ॥
कहति फिरति इम ऊच पुकारै । 'जो नर खोज तुरंगम डारै ।
मुख मांग्यो हज़रत ते पावै । जो चाहहि कारज बनिवावै' ॥ ७ ॥
बिधीचन्द बूझे सिख तहां । 'इह क्या बोलति ऊचे महां ?' ।
तिनहुं सरब ब्रितान्त सुनायो । 'शाहु तुरंगम किसे चुरायो ।। ८ ॥
सपत दिवस बीते हय गए । दिन चारिक इहु कहति सुनए ।
खोज न पाइ हार सभि रहे । पीछे डिंडम[3] दे इम कहे ॥ ९ ॥
'—मुख मांग्यो हज़रत ते लेहि । जो नर खोज तुरंगम देहि—' ।
सुनि बिधीआ बहु भांति बिचारै । —कौन दाव ते दुती निकारै ॥ १० ॥
पूरब सम अबि रह्यो न जाई । किम गमनौं बाज़ी[4] जिस थांई ।
निस मैं नहीं प्रवेशनि पावौं । जिम किम बरौं न पुन निकसावौं ॥ ११ ॥

---

1. नगर के द्वार 2. अंधेरा छा गया 3. ढिंडोरा 4. घोड़ा



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सावधान हैं सुभट हज़ारों। अटकावहिं, केतिक तबि मारों ?।
नहीं जान दै हैं इस रीति। पकरे परहि गरे बिप्परीत ॥ १२ ॥
सो बल मति उपाइ हुइ रूरा। जिस ते काज लेहिं करि पूरा।
बिगर जाय कारज मैं मरों। गुर अपवाद जगत मैं करों ॥ १३ ॥
यांते नीके बनै बिचारन। करौं तुरंग सुखैन निकारनि।
पलटौं बेस पछानै नांही। बुद्धि बल करि मिलि तुरकन मांही ॥ १४ ॥
अबि खोजी को चाहि घनेरो। रोज पुकारति करते फेरो।
सौ सरूप धरि पहुँचौ जाई। पिखो शाहु, हय को निकसाई ॥ १५ ॥
इम निशचै करि सुप्तयो[1] राती। सतिगुर सिमरति जाग्यो प्राती।
सलिता कूल[2] दूर ही जाइ। शौच सनान कीनि मन भाइ ॥ १६ ॥
ढरे दुपहिरे पुरि को मुर्यो। दाव आप को निशचै कर्यो।
खत्री सिक्ख बहोड़ा नामू। करहि बजाजी को बहु कामू ॥ १७ ॥
तिसके सदन प्रवेश्यो जाइ। देखति उठयो भाउ अधिकाइ।
करी परस्पर बन्दन दोऊ। रिदै अनन्दति खत्री सोऊ ॥ १८ ॥
'गुरू मुसाहिब तू मति भारा। पावन कीनो सदन हमारा'।
रुचिर प्रयंक[3] डसावन कीना। तहिं बिठाइ बहु आदर दीना ॥ १९ ॥
दम्पति मिलि करि पांइ पखारे। सो जल सीस बदन महिं डारे।
सकल सदन को सिंचन करिकै। अपने दीरघ भाग बिचारिकै ॥ २० ॥
खट रस के भोजन करिवाए। सनमानति धरि भाउ अचाए।
त्रिपति होइ करि पान पखारे। बहुर बहोड़ा बिनै उचारे ॥ २१ ॥
मम लाइक जो सेवा होइ। फुरमावो सभि करिहौं सोइ।
गुरू सम तुमरी टहिल पछानो। अधिक श्रेय मैं अपनी जानो ॥ २२ ॥
कहिति न सुकचहु चहीअहि लेही। तू पूरन सिख गुरू-सनेही'।
बिधीचन्द पिखि भाउ बखानी। 'शुभ पोशिश[4] इक हिन्दुसतानी ॥ २३ ॥
सो बनिवाइ देहु अबि मोही। इही सेव शुभ लाइक तोही'।
सुनति बन्दि कर भनहि बहोरा। 'मैं बनिवाइ देउं हुइ भोरा' ॥ २४ ॥
परिकै सुपते निशा बिताई। जागे तबि प्रभाति हुइ आई।
साथ बहोड़े उठि करि भाखा। 'अस पोशिश की मुझ अभिलाखा ॥ २५ ॥
सूखम सूत बसत्र बर झीनो। तिस के करहु पिराहन तीनो।
एक बडो ज़ानू ते तरे। दुतीयो छोटा तिस ते करे ॥ २६ ॥

1. सो गया 2. नदी किनारे 3. पलंघ 4. पोशाक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिसते छोटा तीसर होइ। पाइन हेतु पज़ामा जोइ।
गुलफ लगे होवहि बड चौरा[1]। घेरदार दीखहिं जिम गौरा ॥ २७ ॥
सुन्दर तिह इज़ारबन्द पाइ। आज त्यार इहु दिहु करिवाइ।
लाम्बी गजन बिखै इक पाग। जिस के घोर ज़री बड लाग ॥ २८ ॥
पीछे हीनो, नोक दराज़[2]। जोरा ज़री जुगति लिहु आज।
रहे जास दिन मैं तबि आऊँ। शौच सनान करनि अबि ग्राऊँ ॥ २९ ॥
'आछी बात' बहोरे कही। 'बर्नाहि त्यार किम बिलमहि नहीं'।
बिधीए बडे चादरे संग। करे अछादन सगरे अंग ॥ ३० ॥
निकस्यो सदन गयो पुरि छोरि। रावी तीर दूर कित और।
शौच सनान ठानि करि बारी। गुरू गिरा 'जपु' आदि उचारी ॥ ३१ ॥
तीन पहिर पुन वहिर बिताइ। सदन बहोरे प्रविशयो आइ।
मंच डसाइ सहित सनमाना। त्यार अहार कर्यो रस ठाना ॥ ३२ ॥
हुती बहोरे की तबि त्रिया। भोजन सभि अचिवावन कीया।
संध्या लगौं त्यार करिवाइ। सभि पोशिश को शुभ बनिवाइ ॥ ३३ ॥
आनि बहोरे धरि अगारी। पिखि प्रसन्न ह्वै खुशी उचारी।
'सिक्खन की सेवा सिख करै। निज ते वधि गुरू लेखे धरै ॥ ३४ ॥
—मेरो जानि मान इन कीनि। —पिखहिं भाउ हुंई गुरू प्रसीन[3]।
सुन्दर इक गुच्छा संगरीन[4]। दिहु घरिवाय लुहार प्रबीन ॥ ३५ ॥
प्रति भए मुझ पास पठावहु। अपर भेव नहिं किसू सुनावहु'।
इम कहि पोशिश लीनि बिसाला। तिमर भए आयो धरमसाला ॥ ३६ ॥
सुपत होइ करि निसा बिताई। शौच सनान कीनि सहिसाई।
आन आपना भेस बनाअहु। चारू[5] चिकर चोपर चमकाअहु ॥ ३७ ॥
साफ शमश[6] के कर बिच चीरे। दिश दोनहुं करणैति उचीरे।
चिबुक[7] सथल को काढि दिखावा। जुग मूंछन करि ऊच मिलावा ॥ ३८ ॥
पूरब पहिर पिराहन नीवा। बहुर दूसरो पहिर ऊचीवा।
अलप सभिनि के ऊपरि पाइ। उतरोतर तबि तीन बनाइ ॥ ३९ ॥
चौरी तरहां बन्धि दसतार। सिपर[8] समान सु कीनि अकार।
पाइन परम पजामा पायो। बन्ध इज़ारबन्द दिखरायो ॥ ४० ॥
जोरा नोकदार पग पहिरा। हिन्दुसतानी बनि कै गहिरा।
बैठ्यो हुती संगरी आई। लेकर बिखै अग्र लटकाई ॥ ४१ ॥

1 विशाल 2. लम्बी नोंक 3. प्रसन्न। 4. जंज़ीरों का 5. सुन्दर
6. दाढ़ी 7. ठोड़ी 8. ढाल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सनै सनै पग धरहि अगारी। गरी बजारन केरि मझारी।
द्रिषटि अचंचल धीरज धारी। सूक्षम छरी* खरी दुतिवरी ॥ ४२ ॥

नरन अजाइब बेस निहारा। हेरन हेतु आइ चलि लारा।
'कौन देश ते इहु चलि आयो ? आगे पुरि महिं नहिं दरसायो' ॥ ४३ ॥

केचित बूझति हैं हुइ पास। 'कौन नाम अरु कहां निवास ?'।
'साहिब लोक दूर हम देश। गुनी महां गुन धरहिं विशेष' ॥ ४४ ॥

धीरज सहित कहति इम जाइ। जहां दुरग को पौर सुहाइ।
हेरन हेतु अनिक नर संग। चल्यो जाति करि ग्रीव उतंग ॥ ४५ ॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे '**बिधिचन्द बेस बनावन प्रसंग**' बरननं नाम चतुर्त्रिसती अंशु ॥ ३४ ॥

---

*सुन्दर छड़ी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ३५

# हय खोजन बिधी चन्द बेस धारन प्रसंग

**दोहरा**

दुरग पौर के निकटि इक कन्ध उचेरी थोर।
तिस पर चढि बैठ्यो सुमति दाव करन को ओर॥ १॥

**चौपई**

भले भले केतिक नर आए। तिन बूझ्यो सभि कहति सुनाए।
'खोजी, गणक, गुणी बडि मैं हौं। गई वसतु की सोधि बतै हौं'॥ २॥
केचित भाखति 'गयो हमारो। दिहु बताइ जे गणक उचारो'।
सुनि करि संगरी हाथ लगावै। सूंघति तिस को बहुर बतावें॥ ३॥
'बडे उपाइ करहि धन पायो। बिखम सथान गयो कित धायो'।
किह को कुछ, किह को कुछ कहै। सुनि सुनि लोक अचम्भौ लहैं॥ ४॥
हेरन वेश हेतु बहु मिले। खरे कितिक बातनि रस ढले।
बैठि दिखावति आपा ऊचे। लगै बिलोकन तहि जु पहूंचे॥ ५॥
चारु मुकर[1] इक धर्यो अगारे। बार बार मुख चारु निहारे।
शमश[2] सुधारहि ऊच चढाइ। पकरहि संगरी हाथ कदाइ॥ ६॥
दास दरोगे को इक भायो। भीर हेरि लखिबे बिरमायो।
गयो निकटि बूझ्यो 'इह कौन ?। बेस अजाइब, किस पुरि भौन ?'॥ ७॥
सुनि कै बोलति भा तिस वेरा। खोजी, गणक नाम है मेरा।
दूर देश जंगल हम रहैं। गुण अपनो दिखरायो चहैं'॥ ८॥
सुनि करि दास अचम्भो भयो। बोलत वेस, वेस बपु नयो[3]।
'इह ठां हज़रत को इक घोरा। ले तसकर गमन्यो कित ओरा॥ ९॥
सरब रीति के गुणी बुलाए। किसहूं ते बहिं गयो बताए।
जो हुइ तुरंग बतावन हार। तिस को चाहति शाहु उदार॥ १०॥

---

1. शीशा 2. दाढ़ी 3. बोलचाल का स्वरूप तथा लिबास नया-नया है



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तो महिं जे गुन, देहु बताइ। करहिं शाहु को सुधि हम जाइ'।
कहति भयो 'जे खोजी ब्रिन्द। नहिं मुहि जानहु तिन मानिन्द ॥ ११ ॥
मैं सुगन्धि थल लेति बतावौं। सुधि पताल गगन की पावौं।
महि महिं[1] खोजन क्या मुहि आगे। देहुं बताइ चोर जिम लागे ॥ १२ ॥
हज़रत को जहिं पहुंच्यो घोरा। सभि सुधि कहौं गयो जिस ओरा।
अबि जहिं खरो बतावौं थान। जिम ले गमन्यो करो बखान ॥ १३ ॥
बिन गुन हेरे तरक न करीअहि। बडे बडे नर जगत बिचरीअहि।
महि महिं रतन अहैं सभि ब्रिधि के। खोजे पावहिं गुनी बिब्रिधि के ॥ १४ ॥

लयाइ सु देनो हय बसि नांहि। करौं बतावन जिस थल मांहि।
निज बल ते हज़रत हय लेहि। हम को दोष नहीं पुन देहि' ॥ १५ ॥
सुनिकै सेवक निशचै जान्यो। जाइ दरोगे निकटि बखान्यो।
'सुनहु खान जी! खोजी भलो। तुम खोजति सो अबि है मिलो ॥ १६ ॥

दूर देश को सो दिस आवै। गुन खोजनि को अधिक बतावै।
कहै—सुगन्धि सु लेय बताऊँ। जहां खरो हय थान जनाऊँ—' ॥ १७ ॥
सुनति दरोगा हरखति गयो। हज़रत निकटि बतावति भयो।
'टोरनि खोजी को तुम कह्यो। एक अचानक ही अबि लह्यो ॥ १८ ॥

भाखति—जहां खरो हुइ घोरा। करों बतावनि सो अबि ठौरा—'।
हरख शाहु कहि 'तिसहि बुलावहु। जाहु आप तूं अबि ही लयावहु' ॥ १९ ॥
ले संग दास दरोगा गयो। भीर समेत बिलोकति भयो।
देस दूर को हिन्दुसतानी। सिकटि होइ करि खान बखानी ॥ २० ॥
'चलि खोजी! तुझ शाहु बुलावै। खोज तुरंगम को निकसावै'।
गुर को सिमरि हरख हुइ खर्यो। संग दरोगे अन्तर बर्यो ॥ २१ ॥
गयो कचहिरी महिं हुइ ढांढो। तसलीमात करी[2] मन गाढो।
गुर माया सभि की मति मारी। तबि कोइ न करि सकै चिनारी[3] ॥ २२ ॥

सभि महिं बहुदिन रहि करि आए। बोल्यो मिल्यो, लयो हय[4] गाए।
तऊ न जान सकहिं मति मन्दे। खरो सभिनि महिं धीर बिलन्दे ॥ २३ ॥
बूझ्यो शाहु 'कहां तू रहैं?। कौन देश तेरो? कहु लहैं।
कौ गुन तो महिं, किम चलि आयो। कौन नाम अपनो कहिवायो?' ॥ २४ ॥
सुनि करि कह्यो सधीरज बैन। 'जंगल देश हमारे ऐन[5]।
खोजी गणक नाम नर कह्यो। अपने गुण बिसाल ते लह्यो ॥ २५ ॥

---

1. धरती में 2. नमस्कार किया 3. पहचान 4. घोड़ा 5. घर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन विचारों. खोज बतावौं। करौं गणक, ले गन्धि जनावौं।
इस कारन आगवन हमारा। —करहिं शरीक बैर को भारा॥ २६॥
सो बहुते मैं एकल रह्यो। तिन ते बडो कषट नित लह्यो।
हेत न्यांव के इल चलि आयो। देऊं तांहि सुधि, हय जु गवायो'॥ २७॥

सुनि हज़रत जान्यो—नर भले। इस ते खोज तुरंग को मिले—।
घने मोल जो पोशिश लई। ततछिन मुदित बखश करि दई॥ २८॥

'दरब दिवावौं हित मिहमानी। खोजि बतावहु हय जिस थानी।
जबि तू हमको खोज बतावैं। लाखनि लगि गिनती धन पावैं॥ २९॥
सुनि बिधीए करि संगरी डारी। धरा हाथ धरि सिर त्रै बारी।
नमो करति सभि को दिखराइ। अपनो मुर्शिद[1] बहुर मनाइ॥ ३०॥

संग अंगुषठ[2] अंगुरिनि पोरी। गिनि गिनि दिखरावति सभि ओरी।
इत उत ऊच रु नीचे देखै। नरनि जनावति शकुन परेखै॥ ३१॥

कितिक बार लगि रह्यो बिचारति। शाहु सहित समि इसे निहारति।
कहनि लग्यो 'हज़रत जहिं घोरा। मैं सभि जानि लीनि जिस ठौरा॥ ३२॥

जिस थल हर्यो गयो ले जैसे। चहौं दिखिनि इक बारी तैसे।
पुन मैं नीके देऊं बताइ। तसकर को कहि नाम सुनाइ॥ ३३॥

जिम निकसयो हय कहिबे करौं। इती शकति अपने महिं धरौं।
तहिं ते लेनो बसी तुमारे। बल करि लरो कि लेहु सुखारे'॥ ३४॥
सुनति शाहु मन मानि अचम्भा। गुर माया करि लखहि न दम्भा[3]।
'जे करि तुरंग बतावैं मोही। मनसबदार करौं ढिग तोही॥ ३५॥
चार लाख तुव गुन को देऊँ। तोहि शरीक बसी करि देऊँ।
एक बार हय देहु बताइ। मैं लेवों निज ओज[4] लगाइ'॥ ३६॥

कहि बिधीआ 'तुम बली बडेरे। कागद पर लिखि दिहु इस बेरे।
कहहि कचहिरो सभि कर जोरे। –बिछुरे मिलहिं उभै अबि घोरे–॥ ३७॥
बहुतनि की भाखा फुटि जाइ। साहिब बीच नरनि समुदाइ।
—हासल हुइ मुराद उर मोरी—। बिनै सु करि खुदाइ की ओरी'॥ ३८॥
सुनि खुशामती नर जे नेरे। हाथ जोरि भाख्यो तिस बेरे।
लिखि दीनसि कागद पर शाहू। चाहति मूढ—आइ असु पाहू—॥ ३९॥

1. गुरु 2. अंगूठे के साथ 3. प्रपञ्च 4. बल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'अबि तुरंग को खोज निकारो। सभि मानी हम, जथा उचारों।
बिधीआ कहै, चलहु तिस थान। जहिं तो चोर्यो तुरंग महान।। ४० ।।

तहां संगरी डारि निहारों। रमल गणक अरु शकुन बिचारों।
जहिं घोरा सो पुरि बतावौं। तसकर को ले नाम सुनावौं।। ४१ ।।

हम गुर सिक्ख न बोलहिं कूर। बहुर कचहिरी शाहु हज़ूर'।
सुनि करि शाहु तहां को चाला। जिस थल खरो तुरंग बिसाला।। ४२ ।।

संग दरोगा अपने लीनि। वहुत लोक को बरजन कीनि।
थोरनि साथ शाहु चलि गयो। हयनि तबेले महिं प्रविशयो।। ४३ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'हय खोजन बिधी खन्द बेस धारन प्रसंग'** बरननं नाम पंच-त्रिसती अंशु ।। ३५ ।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ३६

# दुती घोरा निकासन प्रसंग

**दोहरा**

हयनि सथान प्रवेशिओ कहि बिधी के संग ।
'इस घर महिं ते लै गयो तसकर बली तुरंग ॥ १ ॥

**चौपई**

निज बिद्या इत देखि बिचारो । जहां गयो अबि नाम उचारो' ।
सुनि बिधीग्रा इत उत महिं फिर्यो । सदन कौन को[1] सूंघन कर्यो ॥ २ ॥
खुल्यो तुरंग सो सूंघ्यो थान । ऐठति नाक नाक बिलोकि सुजान ।
सूंघी सभि दिवार फिर करिकै । डारि संगरी धरनी धरिकै ॥ ३ ॥
बार बार पोरि अंगुरीन । धरि अंगुषट सु गिनना कीन ।
कितिक देर महिं ऊचे कह्यो । लियो खोज पर संसै रह्यो ॥ ४ ॥
ज़ीन तुरंगम पाइ निकारा । किधौं उलाणा[2] लीनि सिधारा ? ।
अरु किस काल हर्यो ? सु बतावो । इहु सुधि दे हय की सुधि पावो' ॥ ५ ॥
कह्यो शाहु 'तिस अरघ मझारा । पाइ ज़ीन को तुरंग निकारा ।
फिर्यो अजर महिं खोज निहारा । वहिर न हेर्यो कहां सिधारा ॥ ६ ॥

**दोहरा**

सुनहु शाहु इस हेतु ते खोज नहीं मुझ पाइ ।
जे होतो बिन ज़ीन के तातकाल सुधि आइ ॥ ७ ॥

**चौपई**

अबि उपाइ इक इम करि लेहौ । दुतीए हय पर ज़ीन पवै हौं ।
कविका मुख दै त्यार करीजै । जबि लगि हय को खोज न लीजै ॥ ८ ॥
अरघ निसा लौ अबहि बिचारौं । उठौं तबहि जबि खोज निकारौं ।
शुभ गुन की कीमत हुइ तुम ते । लेहु तुरंगम की सुधि हम ते ॥ ९ ॥

---

1. घर का कोन 2. बिना ज़ीन के



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हज़रत ने कहि ज़ीन पवाओ। कविका[1] दे करि त्यार कराओ।
सुनि खोजी ! तैं बिलम बताय। अरध निसा जिस काल बिताय ॥ १० ॥
निस के सम जे दिवस बितावैं। सवा लाख बखशिश अधि[2] पावैं।
तसकर को इक वार बतावो। थान विखम ते विखम जनावो ॥ ११ ॥
बहुर न मैं कैसे बिलमाऊँ[3]। पठौं बाहनी[4] तुरत मंगाऊँ।
बिधीआ कहै 'शीघ्रता ऐसे। पुरि जन सभि टिकाइ निस जैसे ॥ १२ ॥
निज निज घर बर मारहिं तारे। कोट दुरग दर भेड़हु सारे'।
सुनति शाहु चित चौंप घनेरी। कह्यो जथा नर पठि तिस वेरी ॥ १३ ॥
गरी गरी अरु सगरे दौर। आदि दुरग जेति सभि ठौर।
वहिर न निकसहि पुरि ते कोइ। निज निज घर मैं थिर कै सोइ ॥ १४ ॥
ततछिन फिरे कहति दुरि सारे। 'शाहु तुरंग को खोज निकारे।
दुरि के दौर जाई करि सारे। करे किवार असंजति भारे ॥ १५ ॥
कुलफनि मारि सु लीनि कलीद[5]। सभि की लीनि शाहु रसीद।
पिखि बिधीए तबि गिरा उचारी। हज़रत ! दिहु कलीद मुझ सारी ॥ १६ ॥
हय को हरति जहां तुम सोवहु। सुख सों जाइ तहां थिर होवहु।
अबि मैं लागों करन बिचार। खोजि पाइ तबि कहों पुकार ॥ १७ ॥
को लाग्यो बड चोर हठीला। खोजति खोज लागती ढीला।
मुरशद पूरा तसकर केरा। जिस ते तुम भी खोज न हेरा ॥ १८ ॥
सो मुरशिद ही अबि बिलमावै। परे निसा कारज बनि जावै'।
सुनति शाहु गमन्यो तिस बारी। थिर्यो बुरज सम्मन[6] की बारी ॥ १९ ॥
गुर माया ऐसे भरमाए। तथा करहिं सभि जथा बताए।
टिक्यो दरोगा अपन ठिकाने। तहां कुलफ दीनसि निज पाने ॥ २० ॥
पुरि को पौर दुरग को पौर। कुलफ दीये इत्यादिक और।
ब्रिन्द कलीद बिधी चन्द लीनि। पाइजेब महिं सुमति प्रबीन ॥ २१ ॥
भौन भौन मैं सभि नर मौन। शाहु त्रास ते कहहि न कौन।
'खोज तुरंगम को निकसावै'। इम लखि थिरे, न बाहर आवै ॥ २२ ॥
कहति सुनति इम संध्या पई। बोल्यो शाहु कुछक रिस अई।
'क्यों न अबि लौ खोज निकारति?। बिते जाम इम गिनति बिचारति' ॥ २३ ॥
बिधी चन्द तबि बाक बखानो। 'हज़रत जी ! अबि देर न जानो।
मोहि रिदै सुधि सभि हुइ आई। तसकर[7] नाम न आन्यो जाई ॥ २४ ॥

1. लग़ाम 2. अधिक 3. देरी नहीं लगाऊँगा 4. सेना 5. चाबी
6. सम्मन बुर्ज 7. चोर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जबि लौ नाम न जाइ बखानो। तबि लौ निज विद्या लघु जानो।
जिस बिधि गयो अहै जहिं घोरा। जानि लीनि मन मान्यो मोरा ॥ २५ ॥
कठन अहै इह गिनती काम। तुम कीजै सुख संग आराम।
चार घरी कै जाम बिताऊँ। नाम ठाम तुम पास बताऊँ' ॥ २६ ॥
भई निसा पसर्यो अंधकारा। लख्यो शाहु–इह खोजी भारा।
जेकरि थान रु नाम बतावै। तौ मेरो हय कहूँ न जावै ॥ २७ ॥
अपनौ कोप निकारौं सारा। कैसो होहि प्रान दिहुं मारा।
तूषन होइ प्रतीखति फेर। अचरज बरतहिं रिदै बडेर ॥ २८ ॥
कहति सुनति लारा इम देति। होति भयो सभि रीति सुचेत।
रेशम डोर बध्यो शुभ घोरा। गण्ठ छोरि तूरन बड जोरा ॥ २९ ॥
खषट गुरनि के नाम प्रकाश। हाथ जोरि कीनसि अरदास।
'अपना कारज आप बनावहु। दास जानि मुहि जसु बिदतावहु[1] ॥ ३० ॥
इम कहि धरनी पर सिर धर्यो। बहुर प्रणाम तुरंग पग कर्यो।
चरण रकाब सिमरि सत्तिनाम। भयो अरुढनि हय - अभिराम ॥ ३१ ॥
इत उत फेर्यो कीनसि तुन्द। उठि पाइन ते शबद बिलन्द।
शाहु जहां सुनि ऊच उचारा। 'को हय घुट्यो होइ निर्धारा[2] ॥ ३२ ॥
बिधीए कह्यो 'न छूट्यो आप। मैं खोल्यो बल गुरु प्रताप।
तो संग बचन कह्यो मैं जाई। अबि मैं करों सांच सुनि सोई ॥ ३३ ॥
खोजि निकासि देनि हय केरा। थान बतावन कारज मेरा।
सो मैं कहो दोष नहिं रहै। जिह सुनिबे को तुव चित चहै' ॥ ३४ ॥
हरख्यो शाहु खोज जनु पायो। कहि सौंधे को ऊच सुनायो।
'जहां तुरंगम पुरि अरु धाम। तसकर अरु तसकर पति नाम ॥ ३५ ॥
सुनि करि लिखहु कि याद रखीजै। प्रति कचहिरी महिं कहि दीजै'।
बिधीआ कहै 'सभिहूं सुनि लीजै। बिसरतहारो नहीं जनीजै ॥ ३६ ॥
बंदनीय श्री हरि गोबिन्द। जसु बिलन्द जिन चन्द मनिन्द।
प्रथम तिनहुं को हय बल पीना[3]। तैं दल बल ते[4] छीनि सु लीना ॥ ३७ ॥
सो पलटा सतिगुर अबि कियो। प्रथम तुरंग बुद्धि करि लयो।
मैं गुर दास[5] बिधीचन्द नामू। ले गमन्यो पूरब अभिरामू ॥ ३८ ॥
हय दिलबाग रुदन बहु कीना। खान पान रुख करि नहिं लीना।
यांते इस घोरे हित आयो। तन खोजी कहु भेस बनायो ॥ ३९ ॥

1. कीर्त्ति प्रकट करो 2. निर्णय 3. बलवान् घोड़ा 4. सेना की शक्ति से 5. गुरु का सेवक हूँ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मैं तसकर सतिगुर पति मेरा। नहिं बिसरहु लखि नाम बडेरा।
अति गुलबाग ज़ीन को पाइ। तुम न दीनसि मति उपजाइ ॥ ४० ॥
सकल कचहिरी की बुद्धि घनी। परखनि कीनि, पिखी अरु सुनी।
जिस पुरि बाज़ी अहै उचारो। कहि सभि अपनो दोश उतारो ॥ ४१ ॥

—भाई रूपा—ग्राम नवीन। किय डेरा सतिगुरु प्रवीन।
तहिं दिलबाग खरो हय जानि। अबि गुलबाग जाइ तिस थान' ॥ ४२ ॥

शाहजहां रिस करि कहि ऊचे। 'गहहु दरोगा! निकटि पहूंचो।
इहु तसकर ले जाइ न घोरा। सुभट हकारि घेरि चहूं ओरा' ॥ ४३ ॥
सोंधा कहै 'कलीद न पाए। सरब पौर को कुलफ लगाए।
सुभट सहित मैं पहुचों कैसे। प्रथम करे इन कैदी जैसे ॥ ४४ ॥

रसरनि सौं[1] जनु बंधि बिठाए। बनहिं उपाइ न को बल लाए।
खिझ करि हज़रत गारि निकारै। 'को नर पहुंचहु' ऊच पुकारै ॥ ४५ ॥
सुनि बिधीए। पुन ऊच बखाना। 'अहो शाहु! क्यों कुपत[2] महाना?।
घोरे जथा जोग मैं लीने। सिमरो बच जो तुम कहि दीने ॥ ४६ ॥

प्रथम चाकरी मेरी रही। बखशिश दई, न सो मैं लही।
खोज दैनि के चारहुं लाखा। रहे इहां, जो तुम तबि भाखा ॥ ४७ ॥
सवालाख तुम फेर बताए। इक बिराटका[3] मोहि न पाए।
लीने मोल समान किकान[4]। ज़ीन समेत इते ही जानि ॥ ४८ ॥

रही कुछकु बाकी मम जाइ। बनहु अृणी पुचावहु सोइ।
नतु लेखा मेरा अरु तेरा। हुइ दरगाह बीच वड झेरा ॥ ४९ ॥
जे अबि चहहु रोकिबे मोही। धन को देनि मतो नहिं तोही।
मैं गमनौं नीके करि कूरा। सदा सहायक श्री गुर पूरा ॥ ५० ॥

इहु कलीद सभि हैं मम तीर। गेरों सरिता नीर गहीर[5]।
करहु शीघ्रता घेरा पावन। प्रथम तारीयन करि निकसावन' ॥ ५१ ॥
इम सभि कहि कै धीरज साथ। निरभै बीर सिमर्यो गुर नाथ।
पंचाम्रित पंचन को माना। कीनि बंदना धरि गुर ध्याना ॥ ५२ ॥

'अबि मैं जांउ, फेर सुनि लीजै। करिबे होइ जतन सो कीजै।
बहुर न पछतावहु मम पाछे। कहहु कि सुधि होई नहिं आछे' ॥ ५३ ॥

---

1. रस्सियों के साथ 2. क्रोधवान् क्यों होता है ? 3. कौड़ी 4. घोड़े
5. रावी नदी के गहरे पानी में

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३६
# दुती घोरा निकासन प्रसंग

**दोहरा**

हयनि सथान प्रवेशिओ कहि बिधी के संग।
'इस घर महिं ते लै गयो तसकर बली तुरंग ॥ १ ॥

**चौपई**

निज बिद्या इत देखि बिचारो। जहां गयो अबि नाम उचारो'।
सुनि बिधीआ इत उत महिं फिर्यो। सदन कौन को[1] सूंघन कर्यो ॥ २ ॥
खुल्यो तुरंग सो सूंघ्यो थान। ऐठति नाक नाक बिलोकि सुजान।
सूंघी सभि दिवार फिर करिकै। डारि संगरी धरनी धरिकै ॥ ३ ॥
बार बार पोरि अंगुरीन। धरि अंगुषट सु गिनना कीन।
कितिक देर महिं ऊचे कह्यो। लियो खोज पर संसै रह्यो ॥ ४ ॥
ज़ीन तुरंगम पाइ निकारा। किधौं उलाणा[2] लीनि सिधारा ?।
अरु किस काल हर्यो ? सु बतावो। इहु सुधि दे हय की सुधि पावो' ॥ ५ ॥
कह्यो शाहु 'तिस अरघ मझारा। पाइ ज़ीन को तुरंग निकारा।
फिर्यो अजर महिं खोज निहारा। वहिर न हेर्यो कहां सिधारा ॥ ६ ॥

**दोहरा**

सुनहु शाहु इस हेतु ते खोज नहीं मुझ पाइ।
जे होतो बिन ज़ीन के तातकाल सुधि आइ ॥ ७ ॥

**चौपई**

अबि उपाइ इक इम करि लेहौं। दुतीए हय पर ज़ीन पवैहौं।
कविका मुख दै त्यार करीजै। जबि लगि हय को खोज न लीजै ॥ ८ ॥
अरघ निसा लौ अबहि बिचारौं। उठौं तबहि जबि खोज निकारौं।
शुभ गुन की कीमत हुइ तुम ते। लेहु तुरंगम की सुधि हम ते ॥ ९ ॥

---

1. घर का कोन 2. बिना ज़ीन के



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हज़रत ने कहि ज़ीन पवाओ। कविका[1] दे करि त्यार कराओ।
सुनि खोजी ! तैं बिलम बताय। अरध निसा जिस काल बिताय ॥ १० ॥
निस के सम जे दिवस बितावैं। सवा लाख बखशिश अध[2] पावैं।
तसकर को इक वार बतावो। थान बिखम ते विखम जनावो ॥ ११ ॥
बहुर न मैं कैसे बिलमाऊँ[3]। पठौं बाहनी[4] तुरत मंगाऊँ'।
बिधीआ कहै 'शीघ्रता ऐसे। पुरि जन सभि टिकाइ निस जैसे ॥ १२ ॥
निज निज घर बर मारहिं तारे। कोट दुरग दर भेड़हु सारे'।
सुनति शाहु चित चौंप घनेरी। कह्यो जथा नर पठि तिस वेरी ॥ १३ ॥
गरी गरी अरु सगरे दौर। आदि दुरग जेति सभि ठौर।
वहिर न निकसहि पुरि ते कोइ। निज निज घर मैं थिर कै सोइ ॥ १४ ॥
ततछिन फिरे कहति दुरि सारे। 'शाहु तुरंग को खोज निकारे।
दुरि के दौर जाई करि सारे। करे किवार असंजति भारे ॥ १५ ॥
कुलफनि मारि सु लीनि कलीद[5]। सभि की लीनि शाहु रसीद।
पिखि बिधीए तबि गिरा उचारी। हज़रत ! दिहु कलीद मुझ सारी ॥ १६ ॥
हय को हरति जहां तुम सोवहु। सुख सों जाइ तहां थिर होवहु।
अबि मैं लागों करन बिचार। खोजि पाइ तबि कहों पुकार ॥ १७ ॥
को लाग्यो बड चोर हठीला। खोजति खोज लागती ढीला।
मुरशद पूरा तसकर केरा। जिस ते तुम भी खोज न हेरा ॥ १८ ॥
सो मुरशिद ही अबि बिलमावै। परे निसा कारज बनि जावैं'।
सुनति शाहु गमन्यो तिस बारी। थिर्यो बुरज सम्मन[6] की बारी ॥ १९ ॥
गुर माया ऐसे भरमाए। तथा करहिं सभि जथा बताए।
टिक्यो दरोगा अपन ठिकाने। तहां कुलफ दीनसि निज पाने ॥ २० ॥
पुरि को पौर दुरग को पौर। कुलफ दीये इत्यादिक और।
ब्रिन्द कलीद बिधी चन्द लीनि। पाइजेब सहिं सुमति प्रवीन ॥ २१ ॥
भौन भौन मैं सभि नर मौन। शाहु त्रास ते कहहि न कौन।
'खोज तुरंगम को निकसावै'। इम लखि थिरे, न बाहर आवै ॥ २२ ॥
कहति सुनति इम संध्या पई। बोल्यो शाहु कुछक रिस अई।
'क्यों न अबि ली खोज निकारति?। बिते जाम इम गिनति बिचारति' ॥ २३ ॥
बिधी चन्द तबि बाक बखानो। 'हज़रत जी ! अबि देर न जानो।
मोहि रिदै सुधि सभि हुइ आई। तसकर[7] नाम न आन्यो जाई ॥ २४ ॥

1. लग़ाम 2. अधिक 3. देरी नहीं लगाऊँगा 4. सेना 5. चाबी
6. सम्मन वुर्ज 7. चोर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जबि लौ नाम न जाइ बखानो। तबि लौ निज विद्या लघु जानो।
जिस बिधि गयो अहै जहिं घोरा। जानि लीनि मन मान्यो मोरा ॥ २५ ॥
कठन अहै इह गिनती काम। तुम कीजै सुख संग आराम।
चार घरी कै जाम बिताऊँ। नाम ठाम तुम पास बताऊँ' ॥ २६ ॥
भई निसा पसर्यो अंधकारा। लख्यो शाहु—इह खोजी भारा।
जेकरि थान रु नाम बतावै। तौ मेरो हय कहूँ न जावै ॥ २७ ॥
अपनौ कोप निकारौं सारा। कैसो होहि प्रान दिहुं मारा।
तूषन होइ प्रतीखति फेर। अचरज बरतहि रिदै बडेर ॥ २८ ॥
कहति सुनति लारा इम देति। होति भयो सभि रीति सुचेत।
रेशम डोर बध्यो शुभ घोरा। गण्ठ छोरि तूरन बड जोरा ॥ २९ ॥
खषट गुरनि के नाम प्रकाश। हाथ जोरि कीनसि अरदास।
'अपना कारज आप बनावहु। दास जानि मुहि जसु बिदतावहु[1] ॥ ३० ॥
इम कहि धरनी पर सिर धर्यो। बहुर प्रणाम तुरंग पग कर्यो।
चरण रकाब सिमरि सत्तिनाम। भयो अरुढनि हय अभिराम ॥ ३१ ॥
इत उत फेर्यो कीनसि तुन्द। उठि पाइन ते शबद बिलन्द।
शाहु जहां सुनि ऊच उचारा। 'को हय घुट्यो होइ निर्धारा[2] ॥ ३२ ॥
बिधीए कह्यो 'न छूट्यो आप। मैं खोल्यो बल गुरु प्रताप।
तो संग बचन कह्यो मैं जाई। अबि मैं करों सांच सुनि सोई ॥ ३३ ॥
खोजि निकासि देनि हय केरा। थान बतावन कारज मेरा।
सो मैं कहो दोष नहिं रहै। जिह सुनिबे को तुव चित चहै' ॥ ३४ ॥
हरख्यो शाहु खोज जनु पायो। कहि सौंधे को ऊच सुनायो।
'जहां तुरंगम पुरि अरु धाम। तसकर अरु तसकर पति नाम ॥ ३५ ॥
सुनि करि लिखहु कि याद रखीजै। प्रति कचहिरी महिं कहि दीजै'।
बिधीआ कहै 'सभिहूं सुनि लीजै। बिसरतहारो नहीं जनीजै ॥ ३६ ॥
बंदनीय श्री हरि गोबिन्द। जसु बिलन्द जिन चन्द मनिन्द।
प्रथम तिनहुं को हय बल पीना[3]। तैं दल बल ते[4] छीनि सु लीना ॥ ३७ ॥
सो पलटा सतिगुर अबि कियो। प्रथम तुरंग बुद्धि करि लयो।
मैं गुर दास[5] बिधीचन्द नामू। ले गमन्यो पूरब अभिरामू ॥ ३८ ॥
हय दिलगीर रुदन बहु कीना। खान पान रुख करि नहिं लीना।
यांते इस घोरे हित आयो। तन खोजी कहु भेस बनायो ॥ ३९ ॥

1. कीर्त्ति प्रकट करो 2. निर्णय 3. बलवान् घोड़ा 4. सेना की शक्ति से 5. गुरु का सेवक हूँ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मैं तसकर सतिगुर पति मेरा। नहिं बिसरहु लखि नाम बडेरा।
अति गुलबाग ज़ीन को पाइ। तुम न दीनसि मति उपजाइ ॥ ४० ॥
सकल कचहिरी की बुद्धि घनी। परखनि कीनि, पिखी अरु सुनी।
जिस पुरि बाज़ी अहै उचारो। कहि सभि अपनो दोश उतारो ॥ ४१ ॥

—भाई रूपा—ग्राम नवीन। किय डेरा सतिगुरु प्रबीन।
तहिं दिलबाग खरो हय जानि। अबि गुलबाग जाइ तिस थान' ॥ ४२ ॥

शाहजहां रिस करि कहि ऊचे। 'गहहु दरोगा ! निकटि पहूंचो।
इहु तसकर ले जाइ न घोरा। सुभट हकारि घेरि चहूं ओरा' ॥ ४३ ॥
सोंधा कहै 'कलीद न पाए। सरव पौर को कुलफ लगाए।
सुभट सहित मैं पहुचों कैसे। प्रथम करे इन कैदी जैसे ॥ ४४ ॥

रसरनि सौं[1] जनु बंधि बिठाए। बनहिं उपाइ न को बल लाए।
खिझ करि हज़रत गारि निकारै। 'को नर पहुंचहु' ऊच पुकारै ॥ ४५ ॥
सुनि बिधीए। पुन ऊच बखाना। 'अहो शाहु ! क्यों कुपत[2] महाना?।
घोरे जथा जोग मैं लीने। सिमरो बच जो तुम कहि दीने ॥ ४६ ॥

प्रथम चाकरी मेरी रही। बखशिश दई, न सो मैं लही।
खोज दैनि के चारहुं लाखा। रहे इहां, जो तुम तबि भाखा ॥ ४७ ॥
सवालाख तुम फेर बताए। इक विराटका[3] मोहि न पाए।
लीने मोल समान किकान[4]। ज़ीन समेत इते ही जानि ॥ ४८ ॥

रही कुछकु बाकी मम जाइ। बनहु अृणी पुचावहु सोइ।
नतु लेखा मेरा अरु तेरा। हुइ दरगाह बीच वड झेरा ॥ ४९ ॥
जे अबि चहहु रोकिबे मोही। धन को देनि मतो नहिं तोही।
मैं गमनौं नीके करि कूरा। सदा सहायक श्री गुर पूरा ॥ ५० ॥

इहु कलीद सभि हैं मम तीर। गेरों सरिता नीर गहीर[5]।
करहु शीघ्रता घेरा पावन। प्रथम तारीयन करि निकसावन' ॥ ५१ ॥
इम सभि कहि कै धीरज साथ। निरभै बीर सिमर्यो गुर नाथ।
पंचाम्रित पंचन को माना। कीनि बंदना धरि गुर ध्याना ॥ ५२ ॥

'अबि मैं जांउ, फेर सुनि लीजै। करिबे होइ जतन सो कीजै।
बहुर न पछतावहु मम पाछे। कहहु कि सुधि होई नहिं आछे' ॥ ५३ ॥

---

1. रस्सियों के साथ 2. क्रोधवान् क्यों होता है ? 3. कौड़ी 4. घोड़े
5. रावी नदी के गहरे पानी में

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हाथ गह्यो गुच्छा गन तारी। कहि कै ऊचे इक द्वै बारी।
डारी सरिता नीर गहीर। 'तुम खुजवाइ लेहु धरि धीर'॥ ५४॥

तबि घोरे को चाबुक मारा। रिस करि अपनो बल सम्भारा।
उछर्यो छार पारि दीवार। पर्यो जाइ विच दीरघ बारि॥ ५५॥

हय अरुढबे बिखै प्रबीन। बिधीए भले सम्भारन कीनि।
एक बार भीगे सभि अंग। पुन जानू लगि नीर तुरंग॥ ५६॥

बहु बल ते पहुंच्यो जल पार। रोक बाग कर ग्रीवा धारि।
दीनि दिलासा भले टिकायो। चाबक ते रिस करि चपलायो॥ ५७॥

सने सने करि पंथ चलायो। नीठ नीठ करि शुभ गति पायो।
करि तारन की सेध प्यानो। चीनति चिन्ह जाति सुख ठानो॥ ५८॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'दुती घोरा निकासन प्रसंग'** बरननं नाम खष्ट-त्रिसंती अंशु॥ ३६॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ३७

# दुतियो घोरा लिआवन प्रसंग

**दोहरा**

ले गमन्यो पिखि पंथ को होवति रिदै अनन्द ।
गावति सतिगुर के शबद उमगे प्रेम बिलन्द ॥ १ ॥

**श्री मुखवाक । आसा महला ५ ।**

अपुने सेवक की आपे राखै आपे नाम जपावै ।
जह जह काज किरति सेवक की तहां तहां उठि धावै ॥ १ ॥
सेवक कउ निकटी होइ दिखावै ।
जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥
तिसु सेवक कै हउ बलिहारी जो अपने प्रभु भावै ।
तिस की सोई सुणी मनु हरिआ तिसु नानक दरसणि आवै ॥ २ ॥ ७ ॥ १२९ ॥

**चौपई**

इत्यादिक गुर शबदनि गावै । ऊची धुनी प्रेम उमगावै ।
ग्राम नगर जो मग महिं आवै । वहिर वहिर[1] बिन त्रास सिधावै ॥ २ ॥
धीरज देति चलावति घोरा ! जिस ते श्रमति होहि तन थोरा ।
मजल प्रथम की चलनि बिसाला । रहयो बन्द हय भा बहु काला ॥ ३ ॥
महां चतुर शुभ बुद्धि उपजावति । आछी रीति चल्यो मग जावति ।
सरिता जुगल एक थल बहैं। पहुंच्यो तहां नीर बड अहै ॥ ४ ॥
लखि शुभ काट उतारयो छोरा । चरनन को जानू लगि बोरा ।
तरि करि पार भयो सकि बारी । लखहि भेव सभि दूसर बारी ॥ ५ ॥
चल्यो जाति बिन भै बुद्धिवान । आसमान महिं जथा बिमान[2] ।
पीठ तुरंगम को आनन्द । मनहु सुरग सुख लह्यो बिलन्द ॥ ६ ॥
बिना डोल बल ते कल चाले । थोरेकाल पयान बिसाले ।
रोकि रोकि हय पंथ चलावै । 'श्रमति न होय' सधीरज जावै ॥ ७ ॥

---

1. बाहर-बाहर 2. वायुयान



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रह्यो कितिक दिन जबि ही आइ। रूपा ग्राम द्रिशटि तबि थाइं।
तंबू नहीं सम्बूह निहारे[1]। —कित गमनो गुर—रिदै बिचारै ॥ ८ ॥
—कूच कर्यो इह थल ते कैसे?। कारन कवन रहे नहिं तैसे ?—।
ग्राम बिखै तूरन ही आयो। बूझन कीनो नर द्रिशटायो ॥ ९ ॥
तिस तबि भन्यो 'गुरु के आगे। बिनती कीनी जोध सुभागे।
कांगड़ पुरि निज घर लै गयो। इस हित डेरा गमनति भयो' ॥ १० ॥
सुनि प्रसन्न मन ह्वै करि चाला। कहति 'धंन गुर; धंन बिसाला'।
जुग कोसन ते उतरि चलायो। रेशम डोरनि ते डुरिआयो ॥ ११ ॥
जगमग ज़ीन करै जिस केरा। सने सने चलि करि तिस बेरा।
गुर डेरे कहु जबि नियरायो[2]। देखति नमो कीनि सिर न्यायो ॥ १२ ॥
आगे लग्यो विदान महानू। राग रंग करि रहे सुजानू।
जोध महीप समीप गुसांईं। सिमरति सेवक—हय ले आई— ॥ १३ ॥
इतने महिं आवति को हेरा। संग तुरंगम चपल बडेरा।
उठि दिवान ते आगू आए। देखनि को बाज़ी[3] ललचाए ॥ १४ ॥
उतलावति बिधीए पग गहे। सीर धर्यो बड आनन्द लहे।
भुजा पकरि गुर उरध उठायो। अपने अंग संग गुरु लायो ॥ १५ ॥
कह्यो 'कीन तैं बड उपकारा। जो दशकर अति कठन करारा।
भयो अधिक रिण[4] सीस हमारे। जाचहु बर अबि देहिं उतारे' ॥ १६ ॥
सुनि करि बिधी चन्द कर जोरे। प्रभु जी! बरतहु सभि ही ठौरे।
करज़ आप अरु आप चढावैं। बहुर देन आपे ललचावैं ॥ १७ ॥
इह सभि तुमरो चोज विडाना[5]। करहु आप अरु आप हि ठाना।
मुझ पर तो बहु करुना करी। जाचन की अभिलाखा हरी ॥ १८ ॥
दिहु गुर! संग नाम को रंग। बीतहि वैस संत के संग'।
सुनि करि सतिगुर भए प्रसीना। सभिनि सुनावति उचरन कीना ॥ १९ ॥
'बिधी चन्द छीना[6] गुर सीना। सदा गुरु के रस महिं भीना'।
सरब बिकारन ते उर हीना। हमरे उर अनन्द को दीना ॥ २० ॥
दुषकर काज सुगम करि लीना। गुरु सेव कहिं सुमति प्रबीना।
इसके समसर अपर न चीना। सभि को मन बिसमावन कीना ॥ २१ ॥
कहैं कहां लगि तोहि बडाई। अति चातुरता चित उपजाई।
छने शाहु जुति तुरक घनेरे। अचरज चलित लखे नहिं तेरे' ॥ २२ ॥

---

1. नज़र नहीं आए 2. निकट आया 3. घोड़ा 4. कर्ज़ा 5. आश्चर्य, कौतुक 6. 'छीन्ना' एक गोत्र है

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जोध रु जेठा बिधीए मिले। सभिहिनि कर्यो सराहनि भले।
'साध साध' सभि सभा सुनावै। 'इह कारज तोही बनि आवै ॥ २३ ॥
अपर कौन करि साकहि ऐसे। छले तुरक तुरकेशुर जैसे।
मनहु कलंकति कीने सारे। रहे बिसूरति कुमति[1] बिचारे' ॥ २४ ॥
हय गुलबाग लिए गुर संग। मेल्यो जहिं दिलबाग तुरंग।
पिखति परसपर जुग हिहनाए। करे नेर द्वै घ्राण[2] मिलाए ॥ २५ ॥
म्रिदुल हिरेखा[3] बोलति भले। जनु जुग भ्रात[4] बिछुरि बहु मिले।
दासन को तागीद बखानी। 'हय की सेवा करहु महानी ॥ २६ ॥
अहै श्रमति बहु मालश करीअहि। खान पान सभि आगे धरीअहि'।
सौंपनि करि जेठे कहु तबै। 'राखहु तकराई बिधि सबै' ॥ २७ ॥
बिधीचन्द की गहि करि बाहू। आए पुन दिवान के मांहू।
बिकसति बोलति बुझति बात। 'सभिनि सुनाबहु सरब ब्रितान्त ॥ २८ ॥
किम तुरंग पूरब को आन्यो ?। मिल्यो शाह सो कहां बखान्यो ?।
हय दूसर को कैसे हर्यो ?। मति अन्धे को किम कर्यो ? ॥ २९ ॥
बिखम सथान दुरग बड गाढे। रहति हज़ारहुं नर जहि ठांढे।
अनिक रीति करि जहिं तकराई। किम उलंघ आयो इस थाईं ॥ ३० ॥
जिन देखी सो अति बिसमाए। सुनहिं जहां कहिं नर समुदाए।
सो भी सगरे लखहिं अचम्भा। बिदतहि जग जो दम्भ अरम्भा ॥ ३१ ॥
अपर कौन करि साकहि ऐसे। अचरज लखि कहिं—कीनसि कैसे ?—।
ब्रिन्द मसन्द जोध ते आदि। कहु गाथा, सुनि हुइं बिसमादि' ॥ ३२ ॥
बिधीश्रा कहति भयो 'सुन सवामी। तुम सभि जानति अन्तरजामी।
मोहि वदन ते सभि को श्रोन। चहहु सुनावन करुना भौन ॥ ३३ ॥
तो मैं कहौं ब्रितन्त अबि सारा। प्रथम रह्यो बनि करि घसियारा[5]।
सेव हयनि की इस बिधि किए। जिस को देखि रीझ सभि गए ॥ ३४ ॥
धर्यो ज़ीन सो थान निहारा। निकसनि हेतु भेत ले सारा।
करि इकत्र सेवक समुदाई। सार बारनी आनि दिलाई ॥ ३५ ॥
सभि अचेत भे, ले निस घोरा। पाइ जीन रसरनि[6] ते छोरा।
दिशि दरियाउ दुरग दीवार। हय चढि चाबुक हति किय छार ॥ ३६ ॥
सुनो प्रभू जी ! कूद्यो ऐसे। पंछी उड्यो जाति को जैसे।
एक बार भीग्यो लगि बारी[7]। पुन ज़ानू लगि रखि भा पारी ॥ ३७ ॥

1. मूर्ख 2. नाक 3. घोड़े की हिनहनाहट 4. दोनों भाई 5. घासी 6. रस्सी 7. पानी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मग निचिन्त सलिता तरि आयो। सिर धुनि धुनि हज़रत पछुतायो।
अति प्रिथ गए रिस्यो कहि तबै। चार लच्छ लिहु खोजहि जबै ॥ ३८ ॥
मैं पुन गयो दूसरे हेतु। उतर्यो धरमसाल हित भेत।
डिंडम फिरति सुन्यो मैं जबै। खोजी बन्यो चहति जिह तबै ॥ ३९ ॥
सुनी शाहु सुधि खोजी आयो। बांछति हुतो समीप बुलायो।
बेस धर्यो अस हिन्दुस्तानी। नहिं किसहूं ते गयो पछानी ॥ ४० ॥
–रमल, गनक अरु शगुन बिचारन। इह गुन मों महिं कीनि उचारन।
शाहु रिदे बहु भांति द्रिढ़ायो। हय को खोज लेहु मन भायो ॥ ४१ ॥
असु गुलबाग पास ले गयो। जिम मैं कहति रह्यो, तिम कियो।
ज़ीन पवाइ पटायहु डेरे। सम्मन बुरज गयो तिस बेरे ॥ ४२ ॥
तिस नीचे ढिग मैं अरु घोरा। तारे[1] मारि दिये सभि पौरा।
भयो इकांकी सभि अटखाए। करे कँद जनु बस न बसाए ॥ ४३ ॥
शाहु संग मैं बोलति रह्यो। देऊं खोज मैं सभि ही लह्यो।
लारा देति निसा बड बीते। घोरा छोरि चढ्यो निरभीते[2] ॥ ४४ ॥
बूझनि लग्यो शाहु असु खोज। कह्यो साच तबि सतिगुर ओज।
सकल जथारथ कहि समुझायो। '–गहहु गहहु—सुन शाह अलायो ॥ ४५ ॥
हय पलटे हय श्री गुरु लीना। मोहि नाम–कहि—विधीआ छीना।
आदि चाकरी धन भा मेरो। लियो मोल सम आछे हेरो ॥ ४६ ॥
शाहु ! कोप क्यों बाद करन्ता ? जे अबि मो कौ गह्यो चहन्ता।
सभि तारी मैं प्रथम मंगाई—। कर महिं धरि करि शाहु दिखाई ॥ ४७ ॥
—इहु सभि परी निकासन कीजै। खोल कुलफ मोकहु गहि लीजै—।
इम कहि घोरा तेज कुदायो। उलेकि दिवार वारि महिं आयो ॥ ४८ ॥
पीछे 'हाय हाय' बड रौरा। बसि न बसाइ भिरे सभि पौरा।
सतिगुर शबद प्रेम उमगायो। मग सुखेन गावति चलि आयो ॥ ४९ ॥
हे प्रभु ! अस दुषकर जे कारा। तुम बिन को करि सकै बिचारा।
सरब शकति धरि मानुख लीला। त्रै लोकन पति करहु सुशीला ! ॥ ५० ॥
भये सहाइक जहिं कहिं जाई। तौ इह कार करन बनि आई।
पंचाम्रित मान्यो समुदायो। सो चहीयेगो अबि करिवायो' ॥ ५१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रन्थे सप्तमि रासे **'दुतियो घोरा लिआवन प्रसंग'** वरननं नाम सप्त त्रिसती अंशु ॥ ३७ ॥

---

1. ताले 2. भय रहित होकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ३८

# जंग त्यारी प्रसंग

**दोहरा**

अस प्रसंग बिधीए सकल कह्यो सहित बिसतार।
मैं संक्षेप बरतन कर्यो सुनहु कथा सुखसार ।। १ ।।

**चौपई**

'इह चरित्र सभि तुम ही कीनि। दास जानि जसु मोकहु दीनिं।
इम कहि बन्दे[1] पद अरबिन्द। सुन्यो प्रसंग नर ब्रिन्द ।। २ ।।
अचरज भए सुनति चतुराई। 'साध साध[2] सभिहूंनि सुनाई।
'इहु कारज तुझ ही ते होइ। करि सकहि जग मानव कोइ' ।। ३ ।।
पंचाम्रित[3] विधीए करिवायो। ततछिन करिबे सिक्ख पठायो।
श्री हरि गोविन्द चन्द बखाना। 'इक हज़ार को हम ने माना ।। ४ ।।
अबि ही लगावो सभि करिवाइ'। सुनति करति भे नर समुदाइ।
सुनि सुनि करि पुरि ग्राम जु नेरे। लीनि हेतु चलि आय घनेरे ।। ५ ।।
हुकम दियो दुंदभि बजवाए। उतसव अधिक भयो नर आए।
कई हज़ारनि की हुइ भीर। दरसहिं श्री सोढी वर बीर ।। ६ ।।
केतिक कौतिक करने हारे। रचहिं तमाशा विविध प्रकारे।
बादति अपर नगर के आए। डफ ढोलादिक बहुत बजाए ।। ७ ।।
अधिक मुदिति ह्वै नर नारी। दरसहिं सतिगुर ह्वैं बलिहारी।
महां कुलाहल सभि महिं होवा। सुनै प्रसंग सु अचरज जोवा ।। ८ ।।
पंचाम्रित आयो समुदाइ। पंकति करि करि दियो बिठाइ।
दूर दूर लागी गन पांती। गुर प्रताप बैठे चित शांती ।। ९ ।।
बहु बरतावैं तबै लगाए। दियो इतो जिह अचि त्रिपताए।
चार घटी लगि इतिक बरतायो। ह्वै जिन अचयो रह्यो त्रिपतायो ।। १० ।।
मिले हज़ारन के समुदाइ। नहिं निखुटयो सगरो त्रिपताइ।
लीनी तिहावल सदन सिधाए। गुर जसु पुरि पुरि घर घर छाए ।। ११ ।।

---

1. प्रणाम किया 2. शाबाश 3. प्रसाद 4. नगारा 5. पंक्ति



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जोध सु जोद्धा गन ढिग बैसे। बिधीए कह्यो गुरु संग ऐसे।
'महांराज ! अबि देर न कोई। शाहु जहां के रिस अति होई।। १२ ।।
आप चढहि तूरन ही आवहि। कै गाढो उमराव चढावहि।
आइ लरहि लशकर अबि भारा। इम जानहु जिम मोहि निहारा।। १३ ।।

पहुंचे ही शत्रुगन लखो। बनि सुचेत नहिं आलस रखो।
डारे रहै तुरंगम ज़ीन। सकल तुफंगनि[2] त्यारी कीनि।। १४ ।।
सुनि गन तुरकन को आगवनू। जग्यो बीर रस उर अरिदवनू[3]।
बूझ्यो तबै जोध के संग। 'इहां करहु तुम किस बिधि जंग ?।। १५ ।।

अपने होहिं अलप भट नाल। शत्रु ब्रिन्द चढि अए बिसाल।
कठन दुरग महिं होइ प्रवेशू। कै जंगल थल दिखहु विशेषू।। १६ ।।
किधौं मरु थल हैं इत कोइ। किस बिधि रहहु मवासे[4] होइ ?'।
जोध कह्यो कर जोरि बहोर। 'महाराज ! हुइ संघर[5] घोर।। १७ ।।

अहै दिलेशुर की बहु सैना। राज जगत को, गिनती है ना।
टरहु आप, किम सरबर होवहु। तोप जम्बूरन को गन जोवहु।। १८ ।।
जंगल बिखै प्रवेशहु दूर। ताल बिलोकहु जहिं जल रुर।
तिसके तीर राखीयहि डेरा। भेजहि लशकर शाहु घनेरा।। १९ ।।

खोजि खोजि करि इत उत थान। हटि जै है हुइ करि वैरान।
जंगल बिखै सु प्रविशै नांही। जल के थल भेव न तिन पाही।। २० ।।
लवपुरि कै दिल्ली चलि जाइ। बहुर प्रवेशहु इस थल आइ।
बिबिध बिलास करहु हरखावहु। सिख संगत को सुख उपजावहु।। २१ ।।

इस प्रकार को मति है एक। बिन बिखाद, हे जलधि बिबेक ?।
श्री हरिगोबिन्द सुमति निधान। सुनति जोध ते कीनि बखानि।। २२ ।।
'इह मत नहीं पसन्द हमारे। होहि न जंग, न शत्रु मारे।
शाहु सहित गन तुरक बखानै। –लरहि न अबि उर महि उर मानै–।। २३ ।।

पलटो[6] लेनि तुरंगम केरा। तो रण चहीअति करनि बडेरा।
शसत्र तुरंगर सैना राखन। होति सफल संघर के कांखन।। २४ ।।
तुरकन साथ लरन गुन घने। मरे देव पुरि[7] बासा बने।
अनिक प्रकारनि के सुख पाइ। जनम जनम के कषट मिटाइ।। २५ ।।

---

1. जल्दी 2. वंदूकें 3. दुष्ट दमन गुरु के हृदय में 4. विद्रोही 5. लड़ाई 6. बदला 7. स्वर्ग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जीवति जसु थीवति जग मांही। सुख भोगति हुइ बिघन बिना ही।
लोक जि दोनहुं हलति पलन्ते। सुभटनि की भुज सों लटकंते॥ २६॥
हम क्षत्री किम छोरहिं रन को। अबहि मनोरथ होइसि मन को।
देखहु जबहि पड़हि संग्रामू। शत्रु पठावौं जम के धामू॥ २७॥
भयो युद्ध जुग सभै हमारा। अबि बिसाल ही परहि अखारा।
शसत्र समेत बडे उमराव। मारहिं पुन दफर्महिं रण थाव॥ २८॥
ऊपर बैठक बनहि हमारी। दैठहिं बोलहिं साथ तुमारी।
लरिबे हेतु बतावहु थान। जहां परहि तुरकन घमसान॥ २९॥
रण तजिबो मुहि नहिं मन भावै। अहै उचित लरिबे जसु पावै'।
जोधराइ लखि सतिगुरु आसै। हरखति मुख ते बाक प्रकाशै॥ ३०॥
'धंन गुरु सभि कुछ तुम हाथ। चहहु सु करहु बाक के साथ।
लरिबे ते क्यों होइ न सकई ? मरहिं शत्रु रिस करि जो तकई॥ ३१॥
इहां लरन को घात[1] सुनीजै। भर्यो ताल जल जहां लखीजै।
चहुं दिशि महिं उजार हुइ भारी। खोज्यो पाइ नहीं कित बारी॥ ३२॥
सो सरूवरु घेरहु चहुं ओर। पाइ न हलहिं परे बड जोरि।
किितक काल जबि जुद्ध प्रकाशे। रिपु गन को बहु लागहि प्यासे॥ ३३॥
केतिक मरहिं शसत्र के मारे। कितिक चहति जल को तिस बारे।
खोज्यो पांइ नहीं जिस काला। तबि भाजहिं धरि त्रास बिसाला॥ ३४॥
बहुर न जानि देहिं सुख सेती। कटहिं खड़ग सों ज्यों पकि खेती[2]।
लूट लेहिंगे शसत्र तुरंग। राखहिं मारि शत्रु गन जंग'॥ ३५॥
कहे बचन उत्साहि समेत। सुनि प्रसन्न भे क्रिपा निकेत।
'सुनहु जोध! ऐसो अबि थाने। करहु बतावन तू सभि जाने॥ ३६॥
गाह्यो जंगल देश घनेरा। बिखम सुगम थल तैं सभि हेरा'।
जोध राइ मन मैं करि गिनती। सभि थल की लखि, भाखति बिनती॥ ३७॥
'सुनहु प्रभू! मैं जान्यो थान। जहां करहु तुम जंग महान।
हतहिं तुरक अरु रहहिं सुखारे। भाजहिं रिपु करि प्राननि प्यारे॥ ३८॥
पंच रु चार कोस इस थल ते। भर्यो सरोवर सुन्दर जल ते।
तिस के गिरद करहु चलि डेरा। हम ते दखन दिशि महिं हेरा॥ ३९॥
चारकि पंच कोस इक ग्राम। जिह को कहैं 'निथाणा' नाम।
हम नहिं त्यागहिंगे जल सोइ। शत्रु पलाइं त्रिखातुर होइ'॥ ४०॥

1. दांव 2. जिस तरह पकी फसल काटी जाती है

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनति जोध ते सतिगुर मानी। 'इह तैं आछी बात वखानी।
अबि तो परी संझ लखि लीजै। प्रति होइ प्रसथानो कीजै ॥ ४१ ॥
आवहि शाहु के लशकर भारो। हथयारन को पकरि संघारों।
मसलत[1] जबि नीके करि लीनि। बहु बारूद अनावनि कीनि ॥ ४२ ॥
मण हज़ार सिक्का मंगवायो। ब्रिन्द सुनारनि ते ढलिवायो।
दीनी सुभटनि को मन भावति। डारति गोरी तुपक चलावति ॥ ४३ ॥
जिस ढिग धनुख, तीर को छोरति। निज विद्या करि अरि उर फोरति।
तिन को तरकश वखशन करे। तीछन भीछन सर[2] गन भरे ॥ ४४ ॥
केतिक को तोमर खर दए। सरवलोह की शकति लए।
सैफ, सरोही, तेगे चौरे। खण्डे, खड़ग दुधारे गौरे[3] ॥ ४५ ॥
हुते तबेले खरे तुरंग। बखश दिए तिस छिन हित जंग।
कराबीन[4] बहु तुपक तमांचे[5]। जिस के लगति न शत्रु बाचे ॥ ४६ ॥
कोष बिखैं ते सभि मंगवाइ। बखश दए सुभटनि समुदाइ।
ले रज़ाइ घर जोध सिधारा। तिन भी त्यार कर्यो दल सारा ॥ ४७ ॥
केतिक चाकर, केतिक भाई। सरब बटोरि करे समुदाई।
सुभट हज़ार एक लिह संग। तिन भी बखशे शसत्र तुरंग ॥ ४८ ॥
सावधान लरिबे हित करे। गोरी बहु बरूद लै भरे।
सरब जामनी महिं करि तयारी। भई सुचेत बाहिनी[6] सारी ॥ ४९ ॥

इति श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'जंग त्यारी प्रसंग'** बरननं नाम अष्ट-त्रिसती अंशु ॥ ३८ ॥

---

1. सलाह-मशवरा 2 तीखे भयानक तीर 3. हथियारों के नाम 4. छोटी बंदूक 5. पिस्तौल 6. सेना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ३६

# कांगड़ ते प्रस्थान प्रसंग

**दोहरा**

सुनिआरे आदिक सकल निस महिं करी सु कार।
खान पान करि सतिगुरु पौढे निंद्रा धारि ॥ १ ॥

**चौपई**

जाम जामनी[1] सतिगुर जागे। शौच शनान करनि अनुरागे।
कहि करि दुंदभि को बजवायो। महां धुनी जनु घनु गरजायो ॥ २ ॥
सुनति जोध पुरि महिं तबि जागा। सौच शनान करन कहु लागा।
दोरहुं धुजनी[2] के भट भारे। जाग्रति कीनि सुचेता सारे ॥ ३ ॥
शसत्र वसत्र पहिरे निज अंगा। डारे सुन्दर ज़ीन तुरंगा।
सुभट सकल उत्साहु समेत। चाहति विजै कर्यो रण खेत ॥ ४ ॥
श्री हरि गोबिन्द चन्द अनन्दे। हित रण के उतसाहि बिलन्दे।
बसत्र नवीन सरब ही पाए। दीरघ जामा[3] गरहि सुहाए ॥ ५ ॥
सुन्दर सेत[4] बडी दसतार। ज़रीदार जुग छोर उदार।
पेच अनूठे करि करि लाए। ऊपर बांधी जिगा सुहाए ॥ ६ ॥
जरे जवाहर जागति जोति। दीपति दिपति सु दीपति होति।
तीखन खण्डा खरो दुधारा। लेकर बिखे गरे महिं डारा ॥ ७ ॥
तरकश खर खपरे[5] भरिवायो। ऊपर हीरन ते दिपतायो।
गर महिं डारि सु बांधयो कट सों। कसि कटि बहु सूखम दिढ पट सों ॥ ८ ॥
जमधर[6] तिस महिं करी सजावन। धनुख कठोर लीनि मन भावन।
भए अरुढनि को जबि त्यारी। जोध पठ्यो नर बिनै उचारी ॥ ९ ॥
'प्रभु जी ! मोकहु ले करि संग। आप अरोहो तेज तुरंग'।
शसत्र वसत्र वैसे गुर पहिरे। जोध प्रतीखति हैं कुछ ठहिरे ॥ १० ॥

---

1. एक पहर रात रहते हुए 2. फौज 3. लम्बा चोला 4. सफेद 5. तीखे तीर 6. कटार



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिख की तनुजा सुन्यो प्रसंग। 'तुरकन संग परहि गुर जंग'।
जोध आपनो पति समुझायो। 'भली करी तुम, मम मन भायो ।। ११ ।।
सरब कला समरथ गुर पूरा। करम करति मानव सम रुरा।
कबहुं न हूजहि इन प्रतिकूल। हाथ जोरि रहीअहि अनुकूल ।। १२ ।।
नहिं संग्राम बिखै डर कोई। लशकर तुरक जि दस गुन होई।
नर बपुरे इह कहां अगारी। सुरपति लरहि जि ले सुर झारी ।। १३ ।।

श्री हरि गोबिन्द सभिनि पलावहिं। शत्रु हतहिं जीत को पावहि।
नहीं शाहु ते कीजहि त्रास। गुरु सहाइ तौ सदा बिनाश ।। १४ ।।
सनमुख हतहु शत्रु रण बिखै। हुइ प्रसन्न जिस ते गुरु पिखैं।
निज कुल ओर निहार न करीअहि। सुजसु जगत ज़ाहर बिसतरीअहि ।। १५ ।।

निज त्रिय ते सुनि जोध उचारी। 'मम उर उपजी श्रद्धा भारी।
गुर को संग न तजौं कदाईं। इन पद तर दिउं प्रान गवाई ।। १६ ।।
दोनहु लोक भला जो करिहीं। मूरख इन की शरन प्रहरिहीं।
ज्यो ज्यों रण महिं आयसु दै हैं। जहां पठहि, जिह संग लरै हैं ।। १७ ।।

तहिं घालों घमसान घनेरा। सुनीअहि इहां जथा बल मेरा'।
इम दम्पति कहि आपस मांही। शसत्र बसत्र पहिरे तन तांही ।। १८ ।।
चढि तुरंग पर तबि चलिआयो। गुर पग पंकज सीस निवायो।
भ्रात सलेम शाहु को आना। दोनहुं जोद्धा बली महाना ।। १९ ।।
सादर सतिगुर पास बिठाए। एक हज़ार सैन संग ल्याए।
जोधराइ कहि 'सुनि गुर पूरे। अबि अरुढिबो बनहिं ज़रूरे' ।। २० ।।

श्री हरि गोविन्द गिरा ऊचारी। 'हम बैठे बनि करि अबि त्यारी।
पहिले पहिर दिवस के डेरा। गमनहिं, करहिं ताल जल घेरा' ।। २१ ।।
नाम 'जान भाई' हय मेला। धरि दूसर को नाम 'सुहेला'।
जवर जवाहर ज़ीर जराऊ। दोनहुं पर शोभति दुति दाऊ ।। २२ ।।
कह्यो 'जान भाई' मंगवायो। श्रमति सुहेला लखि न अनायो।
'कोतल चलहि संग डुरिआयो'। सुनि गुर हुकम तुरत ले आयो ।। २३ ।।

जोध राइ को कर गुर गह्यो। आगे होइ तुरंगम लह्यो।
करहिं सराहिन तबि आरोहे। मनहुं बिशनु खगपति[1] पर सोहे ।। २४ ।।
कह्यो, राय तबि निज हय चढ्यो। उर उत्साहु सभिनि के बढ्यो।
परी चोब धौंसा धुंकारा। सुनति अरुढ्यो[2] तबि दल सारा ।। २५ ।।

1. गरुड़ 2. सारी सेना चढ़ गई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तीन हज़ार चमूं गुर केरी। कांगड़पति हज़ार तिस बेरी।
चतर सहंस्र[1] संग चढि चाली। लरिबे हित चित चौंप बिसाली ॥ २६ ॥
मारग गमने गुरु अगारी। जोध बराबर कर्यो हकारी।
चले सराहति चपल तुरंग। अरु लयावन को कहति प्रसंग ॥ २७ ॥
'बिखम सथान शाहु के तीर। रहहि सुभाइक बहु भट भीर।
बल बुद्धि ते बड करी दलेरी। बन्यो घसेरा सेव घनेरी ॥ २८ ॥
हय गुन बडे शाहु को प्यारे। प्रथम करे सेवक मतिवारे।
आन्यो घोरा प्रथम कुदाइ। सभि के वदन कलंक लगाइ ॥ २९ ॥
जोध राइ तुम करहु बिचारा। ज्यों त्यों पूरब तुरंग निकारा।
गयो बहुर इहु ल्याइ सुहेला। पहुंचति भी ढिग हुता दुहेला ॥ ३० ॥
वेस बनायो हिन्दुसतानी। नहिं परखन ते इहु विधि ठानी।
खोजी बनि कीनो संबादि[2]। सभि के संग शाहु ते आदि ॥ ३१ ॥
कह्यो रंजतपण[3] लाखहुं देनि। हमरे हित करि चहे न लेनि।
कूर पदारथ सगरे जाने। सिक्खी रखी साच को माने ॥ ३२ ॥
तहिं देखहु बुद्धि बल इस केरा। तिन ते ज़ीन पवाअहु फेरा।
कुलफ लगाइ कैद सभि करे। हय लयायहु मूर्ख सभि छरे ॥ ३३ ॥
इस बिधि की बुद्धि बिधी मांहि। अपर किसी के लखियति नांहि।
सुनति जोध कहि 'क्रिपा तुमारी। सुमतिवन्त महिं उत्तम भारी ॥ ३४ ॥
भयो न ह्वै है कबि अस दम्भा। देखति सुनते होति अचम्भा'।
इत्यादिक गमनति करि बाती। निस बितीत प्रगटी पुन प्राती ॥ ३५ ॥
तेज 'जानभाई' करि घेरा। गिन गिन चरन धरहिं तिस बेरा।
लघु छालनि ते सोहति बाजी। जनु उत्तम नट कीनसि बाजी ॥ ३६ ॥
सुंम आगले छुवति सु छाती। करति कुण्डली जुग इक भांती।
छित छुहाइ पाछल पग जानू। उठि उठि परति शुभति बलवानू ॥ ३७ ॥
चपलति चलति, कहां म्रिगछौना[4]। धाइ पिछारी डारति पौना।
इक दुइ छार कराइ बडेरी। धीर देति रोक्यो तिस बेरी ॥ ३८ ॥
चंचलि चलति चाल चतुराई। चारु बिलोचन चतुर नचाई।
चितवनि चाहि चकति चित सारे। हरखति कहिं 'विधि आप सुधारे' ॥ ३९ ॥
अपर कहां लगि करव बडाई। तुरंगन के गुन गन इक थाईं।
कांगड़ ते दक्खण दिशि गए। महां उजाड़ बिलोकति भए ॥ ४० ॥

1. चार हज़ार 2. वार्तालाप 3. रुपया 4. मृग के बच्चे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भर्यो बिमल जल ताल निहारा। जोधराइ गुर संग उचारा।
'महाराज! इहु थान महाना। लरिबे हित हम परखनि ठाना।। ४१ ।।
दूर दूर लगि बडी उजारी[1]। खोजयो पाइ नहीं कित बारी।
हम आगे बहु वार निहारा। खेलति पहुंचे अधिक शिकारा।। ४२ ।।
रहे बिचारति—कबि इस थांई। रिपु आवहिं जवि करहिं लराई।
चहति हुते सोई विधि होई। हर्ताहिं शत्रु चलि पहुंचै कोई'।। ४३ ।।
पिखि सथान गुर हरख न थोरा। 'साध साध, आछो थल टोरा'।
इह कहि उतर परे सर तीर[2]। नैन निहार्यो निर्मल नीर।। ४४ ।।
कीनो सैना सिब्र[3] प्रमोद। भरे ताल के चारहुं कोद[4]।
सावधान ह्वै कै बर बीर। खर आयुद्ध की जहि कहिं भीर।। ४५ ।।
ताल तीर थल भल अविलोका। गुरु तम्बू लगि चोब सु दो का।
बिच सुन्दर प्रयंक डसाइ। आसतरन करि बैठि सुहाइ।। ४६ ।।
दिशा दूसरी हेरि सथान। लग्यो राइ तम्बू दुतिवान्।
निज निज सुभटन ब्रिन्द लगाइ। हित विसराम खरे समुदाइ।। ४७ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'कांगड़ ते प्रस्थान' प्रसंग** बरननं नाम एक उन चतवरिंसती अंशु।। ३९ ।।

---

1. उजाड़, बयाबान 2. ताल के किनारे 3. डेरा 4. तरफ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंशु ४०

# शाह त्यारी प्रसंग

**दोहरा**

तिसी ताल के दुइ दिशा लहिरा औरु महराज।
पहुंचे श्री हरि राइ जबि ग्राम बसाए साज ॥ १ ॥

**चौपई**

दुइ दुइ कोस दोइ दिश ग्रामू। लहिरा अरु महाराज जिस नामू।
श्री सतिगुर हरि राइ बसाए। अग्र कथा इह देऊं सुनाए ॥ २ ॥
श्री हरि गोविन्द पहुंचे जाइ। हुती उजार तहां समुदाइ।
नहीं ग्राम नेरे, नहिं पानी। दए मवास महां गुनखानी ॥ ३ ॥
सभि सुभटनि को दीनि सुनाई। 'रहहु सुचेत करहु तकराई[1]।
रिपु गन पहुंचे ही अबि जानों। द्वै गुलका[2] भरि हतहु निशानो ॥ ४ ॥
गुर प्रताप ते जढ रिपु बनै। आइं समूह सुगम ही हनैं।
जिम हय लयाए लगाइ कलंक। तिमलिहु बिजै संघारि निशंक' ॥ ५ ॥
सुनि उतसाह भटन को होवा। अधिक बीर रस रिदै परोवा।
जीन समेत खरे हय राखे। आप सनधबद्ध रिपु काखे ॥ ६ ॥
इम सतिगुर तहिं कीनसि डेरा। अबि प्रसंग सुनि तुरकनि केरा।
जबि बिधीए हय कीनि कुदावन। दुरग दिवार नदी तरि जावन ॥ ७ ॥
शाह सरब हीं चरित निहारे। हाक पुकार पुकार उचारे।
'कहां भई तुम मार खुदाइ। प्रिय तुरंग ले चलयो धवाइ ॥ ८ ॥
तुम सभिहिनि की असि मति मारी। नहिं तसकर की कीनि चिनारी'।
जहाँ पाहरु अरु नर कोई। सुनहि शाहु बानी दुख भोई ॥ ९ ॥
उतरहि तरे बहुरि चढि जाइ। नहिं निकसनि को पावहि थाइं।
सभि पौरन को कुलफ लगाए। इत उत बिचरहि वस न बसाए ॥ १० ॥
जथा बिहंग[3] पिंजरे कोइ। छेरीं[4] भ्रमैं मुकति न होइ।
ऊचे चढहि पुकारति भाखे। क्रिखी मनो जिम बोलति राखे ॥ ११ ॥

---

1. सावधानी 2. गोला 3. पक्षी 4. सुराख



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनहुं गिरन के शिखर पहारी। उतर्यो जाइ न करति पुकारी।
शाहु जहां हुय कोप बिसाले। दंतनि पीसति वस नहिं चाले ॥ १२ ॥
मरदति हाथन को दुख भरे। ले ले नाम पुकारन करे।
ऊचे बोलति लोक सुनावें। 'हज़रत जी ! कुछ वस न वसावै ॥ १३ ॥
करहिं उखेरनि अबहि किवार। निकसहिं वहिर सरै नहिं कार।
हय गुलबाग, गहै तिस कौन। जो पाछै ही छोरति पौन ॥ १४ ॥
ज़ोर दरोगे करि करि बाहूं। कर्यो किवार उखारन ताहूं।
निकसयो वहिर शाहु दिशि गयो। सम्मन बुरज कुलफ तहिं दयो ॥ १५ ॥
ले कुठार[1] कहु तोर्यो तारा। अंतरि पहुंच्यो शाहु निहारा।
यहां दुखति ब्याकुल हुइ रह्यो। देखि दरोगे को तबि कह्यो ॥ १६ ॥
'कहां भयो अचरज, मति मंदहु !। दम्भ न जान्यो मिलि नर ब्रिन्दहु।
बिन तारी तारे[2] तुरवावहु। जहिं कहिं अधिक मशाल जलावहु ॥ १७ ॥
सौधे, मानव कितिक हकारे। जारि मसालैं तोरति तारे।
कहूं शीघ्रता अधिक करन्ते। आग लगाइ किवार जलन्ते ॥ १८ ॥
कहूं कुठारनि सों करि काटैं। डरति सरव ही, हज़रत डांटै।
कहूं कन्ध को करहिं बिदारन। फसे जु नर सो करे निकारन ॥ १९ ॥
हुते कैद जनु करे खलासी। को चलि जाति शाहु के पासी।
भयो नगर महिं एक अचम्भा। पिख्यो न अस कवि कौतक दम्भा ॥ २० ॥
जाग परे सगरे नर नारी। ठौर ठौर रोरा[3] परि भारी।
'कहां भयो ?' बूझति को खरे। को को लखैं, बतावन करे ॥ २१ ॥
हुते समीपी सो चलि गए। शाहु जहां को बूझति भए।
'कहहु उपाइ कौन बनि आवै ?। ले अवि गयो न पकर्यो जावै ॥ २२ ॥
ग्राम नाम अरु जो गुर बली। कहि इहु गयो लखहु बहु भली।
अंधकार फैल्यो निस महां। अवि हय तसकर प्रापति कहां ॥ २३ ॥
सुनति शाहु बहु रिस करि कह्यो। 'किनहुं सुमति करि चोर न लह्यो।
केतिक दिवस अगारी रह्यो। अबि ले गयो रिदा मम दह्यो ॥ २४ ॥
सरब लोक करिकै माही मन्दे। ले गमन्यो मम तुरंग बिलन्दे।
अबि ते होति उपाव न कोई। गयो सु गयो न प्रापति होई ॥ २५ ॥
होति प्राति के चढति सिधारौं। कै गुर गहौं कि रण करि मारौं।
मुझते त्रास नहीं कवि करै। लरन हेतु सभि थल अरि परै ॥ २६ ॥

---

1. कुल्हाड़ा 2. ताले 3. शोर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अबि के लशकर ले करि भारा। गहौं कि मारौं, बनौं सुखारा'।
इत्यादिक बकबाद करन्ता। रिस अगनी ते मनहुं जरन्ता ॥ २७ ॥
सभि लोकनि को कह्यो सिधावो। प्राति होति तयारी करिवावो'।
इम सुनि गमने सभि निज धामू। परै सुपति ह्वै कीनि अरामू ॥ २८ ॥
भई प्रभाति शाहु रहि जागा। पलक विलोचन कौ नहिं लागा।
नित नवीन सौ पालनि जामा[1]। पहिरति सूखम अति अभिरामा ॥ २९ ॥
संध्या लगि सो फटि करि जाइ। अगले प्राति नवों पुन पाइ।
आम खास महिं[2] चलि करि आयो। बैठति गन उमराव बुलायो ॥ ३० ॥
सुनि आयसु को सभि चलि आए। बडे वडे जामे गर पाए।
हुते दिवान मुसाहिब जेई। महां सुभट कहिलावति केई ॥ ३१ ॥
हुते सलाही वाक-प्रबीन[3]। तसलीमात[4] आनि गन कीनि।
बसत्र विभूखन पहिरे तन मैं। जटति जवाहर ज़ाहर गन मैं ॥ ३२ ॥
सतिगुर सिख वजीर खां आयो। सुमतिवंति वड सिदक कमायो।
लगी कचहिरी चारहुं कोद। बैठ्यो हज़रत हीन प्रमोद ॥ ३३ ॥
अतरन की छूटी महिकार। चहुं दिशि धरी आनि गुलज़ार।
चामीकर[5] ते चित्रित थान। तिस हेरे उर हरख महान ॥ ३४ ॥
कह्यो शाहु 'सभि सुमति प्रवीन ? किनहुं न कपट परखिवो कीनि ?
इक हय लीनि बन्यो घसियारो। कैफ[6] पिलाइ करे मतवारो ॥ ३५ ॥
सो तो गयो अचानक जानहु। दूसर को वड अचरज मानहु।
ज़ीन पाइ हम आपहुं दीनो। नहिं किमहूँ किन परखनि कीनो ॥ ३६ ॥
हेरहु तसकर केर दिलेरी। बिन डर ले गमन्यो जुग वेरी।
सुन्यो न, हमने आंख निहारा। कीनि कपट हम सभिनि मझारा ॥ ३७ ॥
बोलति बात करति ले गयो। हमहुँ कैद सम ठानति भयो।
चढि तुरंग पर सगल बताए। —हरिगोबिन्द गुर हय निकराए ॥ ३८ ॥
जंगल बिखे ग्राम को रूपा। तहि लें पहुंचे तुरंग अनूपा।
अबि नहिं बिलम[7] सुहावति मोही। त्यारी करहुं शीघ्र जिम होही ॥ ३९ ॥
ज़ीन जवाहर ज़ाहर जरे। प्रिथ हय सहित निकारनि करे।
जबि लौ गुर को गहौं कि मारौं। तबि लौ निंद्रा नहिं सुख धारों ॥ ४० ॥
कहहु अरुढहि लशकर सारा। जबर जंजैल, जमूरन वारा।
दिहु सभि को बारुद रु गोरी[8]। तोप समूह चलहि गुर ओरी' ॥ ४१ ॥

1. सौ पल्ली वाला चोला 2. दरबार में 3. बातचीत में चतुर 4. नमस्कार 5. सोना 6. शराब 7. देरी 8. गोली

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जहिं कहिं कहिति फिरैं हलकारे। 'साया' जंग[1] लेहु करि त्यारे'।
निज निज दल मैं सभिहिंनि दीनि। गोरी अरु बारूद महीन ॥ ४२ ॥
चढति हेतु हज़रत असवारी। सुनि आयसु ततछिन करि त्यारी।
इत उत दौरे मानव फिरे। रण की सभि विधि त्यारी करैं ॥ ४३ ॥
हलाचाल लवपुरि महिं होई। 'भयो अचम्भा' भाखति कोई।
'प्रथम हयनि की बिधि भई। शाहु चढति त्यारी अबि लई ॥ ४४ ॥
नहिं सुध किसको क्या हुइ जाइ। दुइ दिश भोर परहि समुदाइ।
उत श्री नानक को घर भारी। जिन की अज़मत[2] किह न सहारी ॥ ४५ ॥
इत सभि देशनि को बड मालिक। कई लाख लशकर जिस तालिक।
जहांगीर तौ राख्यो रंग। इह बिगर्यो श्री सतिगुर संग ॥ ४६ ॥
नहीं आदि ते किम वनिआई। रखी न गुर घर की वडिआई।
छीन लीनि हय पूरब शाहू। तबि ते भा ब्रिरोध इन मांहू ॥ ४७ ॥
श्री हरिगोविन्द चाऊ छबीला। पीर मीर[3] बड बीरु हडीला।
बाज रु बाजी[4] लीनि सु छीनि। निज तुरंग को पलटा कीनि' ॥ ४८ ॥
पुरि महिं नर नारी सभि कहैं। 'लरहिं महां जुग' सगले लहैं।
इम त्यारी सारी करि भारी। चहति शाहु चढिबे रिस धारी ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'शाह त्यारी प्रसंग'** बरननं नाम चतवारिंसती अंशु ॥ ४० ॥

---

1. युद्ध-सामग्री 2. करामात 3. धार्मिक गुरु तथा राज्य-सत्ता का स्वामी
4. बाज तथा घोड़े

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ४१

# ललाबेग की चढ़ाई प्रसंग

### दोहरा

तबि वज़ीर ख़ां देखि करि: त्यारी हज़रत कीनि।
किंचबेग कहि आदि कुछ निज मसलत महिं लीनि ।। १ ।।

### चौपई

'क्यों न बिचारहु जितिक नजीकी?। त्यारी नहीं शाहु की नीकी।
हम इस के हैं सभि सुखदाई। क्यों न कहहु इस रखहु हटाई ।। २ ।।
श्री नानक घर अज़मत भारी। तिन सों करे जंग हुइ हारी'।
करि संगी सभि शाहु सलाही। कही मिटहि जिस ते किम नांही ।। ३ ।।
हाथनि जोरि गुज़ारति अरज़ी। 'करि हज़ूर जानि की मरज़ी।
सो आछी नहिं सभिनि बिचारी। तुमरो चढनि अहै अति भारी ।। ४ ।।
ब्रिंद वलाइत लिख्यो सिधारे। सगरे तुमरे करम बिचारें।
गुर ढिग अलप बाहनी[1] रहैं। तुम को मालिक मुलखनि कहैं ।। ५ ।।
होहि बरोबर तौ बनि आवै। नांहि त लरिबो सैन पठावै।
जे अज़मत करि गुरु भजावै। हजौ[2] आप की जगत अलावै ।। ६ ।।
दुरग समीप न गुर के कोई। जिस हित बडे जतन को जोई'।
किंचबेग तबि गिरा बखानी। 'कहति वज़ीर खान हित ठानी ।। ७ ।।
हम सभि रावर के सुखदाई। बिगरति कार सही नहिं जाई।
रिस करि आप चढनि को चहैं। लखहिं अनुचिती क्यों नहिं कहैं ।। ८ ।।
शाहु समीपी अपर जि सारे। बाक् वज़ीर खान सतिकारे।
"रावर चढहु बिचारन करिकै। लाइक अनलाइक उरि धरिकै ।। ९ ।।
तर तुमरे की हम सुख चहैं। उत अज़मत जुति गुर घर लहैं।
बाक वज़ीर खान पुन कह्यो। लशकर पठहु जितिक चित चह्यो ।। १० ।।

---

1. सेना 2. निंदा



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वहु तोपन को नहीं पठावहु। थोरी पठहु संग भट लावहु।
नंगी तेग लखावहु बीरा[1]। आनि उठावहि जो वर[2] बीरा ॥ ११ ॥
सो चढि जाइ गुरु के ऊपर। लरहि मरहि कटि करि रण भू पर।
पीछे लखहु करहु जिम लाइक। तुम हो सरब जगत के नाइक ॥ १२ ॥
शाहु जहां सुनि करि इन बानी। आछी जानि लीनि मन मानी।
सैनापति उमराव बुलाए। पहुंचे सुनति हुकम समुदाए ॥ १३ ॥

सभा बिसाल गई भरि सारी। गन उमराव बडे हंकारी।
तबहि शाहु तरवार निकारी। धर बीरे के सहत अगारी ॥ १४ ॥
खरो अरज़ बेगी तिस थानै। नाम सलाबत खान बखानौ।
सभिनि सुनावति ऐसे कह्यो। 'गुर अरि हज़रत जीतनि चह्यो ॥ १५ ॥
गहि आनहु कै रणि करि मारहु। तिन ते अधिक जि ओज निहारहु।
नगन तेग सो लेहु उठाई। पाननि बीरा मुख चरवाई[3] ॥ १६ ॥

गुर प्रताप को जानति जेई। ठांडे धारि तुशनी तेई।
प्रथम जुद्ध महिं बल धरि मारे। जिनहुं सुनयो नहिन उठारे ॥ १७ ॥
ललाबेग काबल ठकुराई। सो गरबति चित लीनि उठाई।
गहि तरवार म्यान को कीना। पाननि बीरा चरब सु लीना ॥ १८ ॥
प्रथम जु हय[4] काबल ते ल्यायो। मग महिं सिख करि जतन छुपायो।
आवति इसने ही लखि लीनि। लिखि करि हज़रत को सुध दीनि ॥ १९ ॥

करी अवज्ञा[5] श्री गुर केरी। हतनि हेतु इस की मति प्रेरी।
लखी शाहु तरवार उठाई। दीनो सिरेपाउ वडिआई ॥ २० ॥
कंचन लिपति जरे बिच हीरे। दई तुफंग कहे बच धीरे।
बहु मोला इक दियो तुरंग। कंचन कटक जवाहर संग ॥ २१ ॥
कलगी जिगा बखशि करि दीनि। हित संघर[6] के हरखति कीनि।
कह्यो शाहु 'लीजै दल भारे। जानि न दीजै बिन अरि मारे ॥ २२ ॥
जे गुर गह्यो जाइ तौ आछो। पुन मारन को नांहिन बांछो।
चहूं ओर ते लीजै घेर। गहिलीजै मिलि कै इक वेर ॥ २३ ॥

जे आनैं मनसब[7] लिहु दूना। अठि ते करिहौं मान चऊना।
भाज न जाइ कहूं ले घोरे। परहु अचानक रण करि घोरे ॥ २४ ॥
सुनि करि बोलति भा बड मानी। 'कहां गुरु है मम अगुवानी।
एक बार भी हेरनि पावौं। गहिलैहौं जीवति, नतु घावौं ॥ २५ ॥

1. पान बीड़ा 2. बल 3. चबा ले 4. घोड़ा 5. बेअदबी 6. संग्राम 7. पदवी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ललावेग को भ्रात खर्यो है। हज़रत की तबि द्रिषटि पर्यो है।
कंवर वेग नाम तिह लीना। दान मान दे करि संग कीना॥ २६॥
दोइ पुत्र सो निकटि खरे हैं। तिनको भी पिखि संग करे हैं।
'कासम वेग शमसा वेग!। तुम भी गमहु संग करि वेग॥ २७॥
वेगलला भगनी को नंद[1]। सभि ते जिस को देहि बिलंद।
बकरा इक हलाल करि खावै। कितिक अंन जुति तबि त्रिपतावै॥ २८॥
लघु घटका सम सिर जिस केरा। सभि महिं गिनीअति ओज बडेरा।
गहे रजतपण हरफ मिटावै। सिपर[2] चीर करि दोइ बनावै॥ २९॥
इत्यादिक वड बल जिस मांही। हज़रत कह्यो हेरि करि तांही।
'तूं मातुल के संग सिधारो। डील दराज़, गुरु गहि मारे'॥ ३०॥
अधिक कठोर कमान मंगाई। जुग तरकश तीरनि भरिवाई।
बसत्र विभूखन जुति बहु दीनि। मार बडो हज़रत ने कीनि॥ ३१॥
पंचहुं वीरन को सनमाना। लशकर दीनो संग महाना।
सुभट सहंस्र पंच अरु तीस। करे संग कहि तुरकन ईश॥ ३२॥
ले वडिआई निकस्यो बाहिर। लाखहुं नर मैं होयसि ज़ाहर।
'ललावेग श्री गुर पर चढिओ। बडो बिरोध शाहु संग बढिओ'॥ ३३॥
निज लशकर मैं दियो नगारा। सुनि करि तयार होइ दल सारा।
सभिहिनि ज़ीन तुरंगम डारे। बसत्र शसत्र तूरन ही धारे॥ ३४॥
पुन हज़रत नर भलो पठायो। 'ललावेग नीके समुझायो।
मग महिं बिलम न करीअहि कैसे। गमनहु तूरन[3] पहुंचो जैसे॥ ३५॥
त्रास पाइ करि जाइ पलाइ। पिखि लशकर बहु नहिं ठहिराइ।
प्रविशहि दीरघ जंगल जबै। मुशकल होइ खोजनो तबै॥ ३६॥
नहिं जहिं जल तहिं दल नहिं जाइ। बनहि मवास[4] कहूं सर पाइ।
जे नहिं भाजहि बनै दलेर। तुमरे पहुंचनि महिं हुइ देर॥ ३७॥
सैना लेहि सकेल बिसाला। सिख अपने कै धन दे जाला।
बिलम लगन महिं इहु जुग दोप। निफल होइ तबि हज़रत रोस॥ ३८॥
तोकहु भी आछी इहु नांही। गहि शमशेर[5] सभा के मांही।
रहि आवहि तुझ को इहु भली। गमनहु हतहु कि गहु गुर बली'॥ ३९॥
ललावेग तबि कह्यो सुनाई। 'जहिं लगि चलयो ज़ाइ तहिं जाई।
शाहु रिदै धीरज दीजै। दुशमन अलप जानि जीअ लीजै॥ ४०॥

1. बहन का पुत्र 2. ढाल 3. जल्दी 4. विद्रोही 5. तलवार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अधिक जतन क्यों ठानति ऐसे। लखहु शत्रु मार्यो हुइ जैसे।
इति चमूं[1] गन मैं ले संग। दुरग मवासे करि हौं भंग॥ ४१॥
लाखहुं सैना को हनि डारौं। थिरौं जंग मैं नाहिन हारौं।
आगे करी अनेक लराई। मारति मरते अवध बिताई॥ ४२॥
रहहि जंग महिं जीत हमारी। परखनि कीनसि केतिक बारी।
कहहु शाहु सों मैं अबि जाऊं। नहिं मारग महिं बिलम लगाऊं'॥ ४३॥
सुनि सो गयो कह्यो सभि जाइ। 'निशचै जानयो गुर गहि ल्याइ।
कै शसत्रनि सों मार्यो जाइ। हय निकसावन तबि फल पाइ'॥ ४४॥
सभा बिखै बहु बारि उचारा। 'अस तसकर[2] नहिं सुनयो निहारा।
करि बिसाल छल ठग करि गयो। अधिक अचंभा चित महिं कियो'॥ ४५॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे '**ललाबेग की चढ़ाई प्रसंग**' बरननं नाम इकचतवारिंसती अंशु॥ ४१॥

1. सेना 2. चोर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४२

# शाही फौज मालव पहुंची प्रसंग

**दोहरा**

वजे नगारे कूच के करि समाज सभि जंग।
ललाबेग भट चढि चलयो अति गरबति दल संग ।। १ ।।

**चौपई**

चले तुरक जिन जाति अनेक। ईसुवज़ई[1] बडो दल एक।
दाओज़ई रुहेले घने। महां सुभट संजोइनि सने ।। २ ।।
काबल के गिलजे जिन कहैं। डील दराज़ जिनहु के अहैं।
आमिख सभि पसूअनि के भख्यति। इक शूकर ते रख्या रख्यति ।। ३ ।।
पसुनी समान ब्रिती जिन चीने। वहु निरदई महां मति हीने।
हफस वलाइत के तन कारे[2]। महां मलेछ महां बलवारे ।। ४ ।।
मोटे नाक ओठ जिन केरे। कह्यो न समुझहिं मंद बडेरे।
केतिक वरण देह के भूरे। पुरि कशमीर आदि बसि भूरे ।। ५ ।।
काचो मास खाहिं सुख करैं। पशतो बोलति समुझि न परै।
तुरकी तरे तुरंगम तोरैं[3]। गमनहिं बड मग, थकति न थोरै ।। ६ ।।
टंमक बांधे सभिनि अगेरे। हेला[4] करति बजाइं बडेरे।
बाजे अनिक बजावति चले। तूर, तुरम, रणसिंड़ें भले ।। ७ ।।
बडे दमामे चोब लगंती। लेहा देहि सैन गमनंती।
चले तुरक मतिमंद गवारे। हार लाभ नहीं कछू बिचारे ।। ८ ।।
भए कुशगुन अगनि मिलि आगे। ईंधन भार समुख द्रिग लागे।
मुरदा दाह देनि ले चले। इन के चढति अगारी मिले ।। ९ ।।
छूटे बार नारि रुदनावैं ?। शिवा[5] बमति वंनी[6] कूकावैं।
बोलि उठे चहुं दिशि खर घोर। लखति न मंद जाहिं गुर ओर ।। १० ।।

---

1. यूसफज़ई पठानों की एक जाति 2. हब्शियों से भी ज्यादा काले 3. तुर्की घोड़े पर सवारी करने वाले 4. शोर 5. गीदड़ी 6. आग



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहूं चाल कहूं पोईआ पाए। करति शीघ्रता हय गमनाए।
उडी धूल रवि बीच समायो। मग महिं पुरि ग्रामनि को छायो ॥ ११ ॥
हिम रितु हुती परहि बहु पारा। चलयो जाइ लशकर खल भारा।
सगरे दिवस गमनते आए। राति परी ते नहिं ठहिराए ॥ १२ ॥
आगे पाछै को सब चाले। पी पी कैफ भए मतवाले।
मार बकारा करति सुनावैं। 'कहां गुरु हम जंग मचावैं ॥ १३ ॥
हम ते आगे भाग न जाइ। हासल करहिं मुराद खुदाइ।
हज़रत के हय दे करि मिले। इह भी हम को नांहिन भले ॥ १४ ॥

बाजहि लोहि सों लोह करारा। मारन मरिवे मर्चाहिं अखारा।
मन भावति हम तबि करि लै हैं। मारहिं गुरु किधौं पकरै हैं' ॥ १५ ॥
सतुद्रव मिली बिपासा दोऊ। आवति भई अगारी दोऊ।
गत तरनी* बहु घाटनि केरी। गहि मंगवाइ बटोरि घनेरी ॥ १६ ॥
लगी राति को होवनि पार। मुगल पठान सु कई हज़ार।
सिख की सुता, जोध की दारा। तिन दल को आगवन विचारा ॥ १७ ॥
धर्यो हुतो धरनी पर थार। तिस महिं मुकता चारु सु डारि।
धर करि नाथ सुधारति सोइ। मंद मंद सो थरकन होइ ॥ १८ ॥
हुती चतर पुन परखति मोती। क्यों नहिं इन की थिरता होती ?।
बार बार सो नीके देखि। जानयो लशकर आइ विशेख ॥ १९ ॥

धरा इहां लगि हालति मंद। परते सुंम तुरंगम ब्रिंद।
ततछिन नीके निरने कीनि। सुधि हित नर पठाइ करि दीनि ॥ २० ॥
प्रथम सु राइ जोध ढिग आयो। घर को कह्यो संदेश सुनायो।
जिम परख्यो सो रीति बताई। 'देरि न लखहु सैन बड आई' ॥ २१ ॥
तिस ले जोध आपने साथ। पहुंच्यो जहिं बैठे गुर नाथ।
सिख मसंद ब्रिंद बर बीर। बैठे श्री हरि गोविंद तीर ॥ २२ ॥
भाई भगतू, बहिलो दोइ। इहु बैठे सतिगुर ढिग होइ।
जबिके जंगल को गुर आए। तबि के संग रहति सुख पाए ॥ २३ ॥
दरशन लाभ लेति हैं लोचन। बीच बिराजहिं कष्ट बिमोचन।
बैठ्यो जोध गुरू सनमाना। लशकर आयो प्रभू ! महाना ॥ २४ ॥
इह नर सुधि ले करि अबि आवा। परखनि सिखसुता जिम पावा।
थरकति थिरा इहां लगि जानों। यांते जानी सैन महानो ॥ २५ ॥

* किश्ती

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिलम नहीं अबि आवन मांही। परहि जंग घमसान महां ही'।
सुनि श्री हरिगोबिंद कसि ऐसे। हम भी तयार आगारी बैसे ॥ २६ ॥
जाफत[1] देनि हेतु सवधाना। समुख सिपर[2] इह पातर नाना।
गोरी गन जनु शक्कर पारे। खपरे मनहुं जलेब उतारे ॥ २७ ॥
चक्क्र बक्क्र घेवर गन दै हैं। बडे सुहार क्रिपान खुए हैं'।
कहि बिधीआ 'जबिही हय ल्यायो। तबि के तयार चहति हैं पायो ॥ २८ ॥
नहिं बिलमहिं रिपु आवन मांही। आवहि शाहु कि लशकर तांही।
मन महिं? नहिं सुधि, हैं अबि कहां ? बिना बिलम पहुंचैंगे इहां' ॥ २९ ॥
श्री हरिगोविंद दृष्टि चलाए। बहिलो को बूझति बिकसाए।
'भूत प्रेत चारों दिशि केरे। श्रीगुर बसी करे सभि तेरे ॥ ३० ॥

तिन ते सुध्र मंगवाइ सुनावहु। जहिं लशकरि, अबि तहां बतावहु।
सुनि बहिलो इक प्रेत धवायो[3]। मन सम बेग करति सुधि ल्यायो ॥ ३१ ॥
बातनि करति तहां तबि कह्यो। 'प्रभु जी! सलिता तट[4] अबि लह्यो।
सारे दिवस चले ही आए। निसा परी बहु तहां थिराए ॥ ३२ ॥
केतिक पार, उरार क्तिक। केतिक नौका चढ़े अनेक।
थकति थिरे, को सुपति परे हैं। को शराब करि पान गिरे हैं ॥ ३३ ॥
कितिक मिले बहु पावक[5] जारी। लग्यो सीत बहु कंपा धारी।
कर पग सुंन भए जिन केरे। सलिता तट करि सीत घनेरे ॥ ३४ ॥
सुनि भाई बहिलो ते बैन। 'परी नदी तट सगरी सैन'।
जोध आदि सभि अचरज मानयो। श्री हरिगोबिंद बहुर बखानयो ॥ ३५ ॥

अबि तूं प्रेत पठावहु कोई। मिल्यो रहै तिस लशकर सोई।
जबि हुइ कूच बतावहि आइ। बन सवधान रहै समुदाइ' ॥ ३६ ॥
डेढकु जाम जामनी गई। इह बातें सतिगुर सभि कई।
करि निशचै पुनि पौढि प्रयंक[6]। सुख सों सुपते बिना अतंक[7] ॥ ३७ ॥
निज निज डेरे सभि चलि गए। अरध सुभट सवधानी कए।
अरध सुपति भे निंद्रा पाई। जागे प्रभु प्रभाति हुई आई ॥ ३८ ॥

सौच शनान आदि सभि कीनि। सुनि करि आसा वार प्रबीन।
बैठे हुते सकल चलि आइ। सुभट मसंद सिख समुदाइ ॥ ३९ ॥
गुर कं कहे भूतनी पहिलों। पठी निसा महिं सुधहित बहिलो।
'जबि लशकर को होवहि कूच। तबि सुधि दिहु इत आइ पहूंचि' ॥ ४० ॥

1. भोजन 2. ढाल हो पात्र है 3. दौड़ाया 4. नदी किनारे 5. आग 3. पलंघ 6. भय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सो तुरकन के दल महिं गई। सुध हित बीच प्रवेशति भई।
तहां हुतो इक पठति मुलाना। भूतन बिद्या बिखै महाना ॥ ४१ ॥
लखी भूतनी की गति तांहू। सुधि हित पहुंचयो लशकर मांहू।
मंत्रन संग पकरि सो लई। भूतन सौंपि कैद करि दई ॥ ४२ ॥
बहिलो को सुधि भई न आइ। निशचै धरयो कि इहु सुध ल्याइ।
श्री गुर ढिग बैठ्यो तबि जाई। चहुं दिश महिं थिर नर समुदाई ॥ ४३ ॥
सादर निकटि बिठायो जबै। मुसकावति बोले गुर तबै।
'कहु भाई! सुध लशकर केरी। कूच कि है मुकाम इस बेरी ? ॥ ४४ ॥
कहति भयो दोनहु कर जोरे। 'तुरक जि कूच करहिं इति ओरे।
ततछिन ही सुध मो ढिग आई। सभि रावर को देउं सुनाइ' ॥ ४५ ॥
अंतरजामी गुरु बखाना। 'भयो कूच लशकर प्रसथाना।
तहां भूतनी तोहि पठाई। गही मुलाने तिन सुध पाई ॥ ४६ ॥
तिसको अबि तजि दिहु भरवासा। सो नहिं छूटहि करसि बिनासा।
सुनि गुर बचन सकल बिसमाए। तबि बहिलो बहु भूत पठाए ॥ ४७ ॥
तिन ततछिन सुध आनि सुनाई। 'गही भूतनी, सैन सु आई'।
सभिनि सुनयो मन मैं सुख पाए। 'धंन धंन सतिगुरु' अलाए ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'शाही फौज मालव पहुँची प्रसंग'** बरननं नाम दोइचतवारिंसती अंशु ॥ ४२ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४३

# दूत प्रसंग

**दोहरा**

सलिता उतरे जामनी सगले मुशकल होइ।
खान पान प्रापति किसू, रहे छूछ[1] ही कोइ ॥ १ ॥

**चौपई**

जुग त्रै[2] जाम कीनि बिसरामे। बजे कूच के दीह दमामे।
महां सीत मँहि मुशकल होए। सुंन चरन अरु करि सभि कोए ॥ २ ॥
अगनी जारि जारि ठर खोवैं। डारि ज़ीन हय त्यारी होवैं।
प्राति होति ही सैंना चाली। बसत्र शसत्र सभि लीनि संभाली ॥ ३ ॥
उदै भयो सूरज भगवान। सीत विनासयो मग प्रसथान।
ललाबेग जबि पुरि ते धायो। भेत हेतु इक दूत पठायो ॥ ४ ॥
डेरा कहां सैन है केती ?। बिच प्रवेश हुइ हेरहू तेती।
कबि हम लरहिं सु परखहु काल। इस कारन आगे तूं चालि ॥ ५ ॥
हय को त्यागि ग्राम किस मांही। बेख आपनो राख्यो नांही।
सेवक एक संग जिह लीनो। गुर, दल महिं प्रवेश को कीनो ॥ ६ ॥

संध्या समै पिखिनि हित फिरयो। दल गन नीर ताल को घिरयो।
फिरति फिरति सैंना के मांही। गमनयो राइ चमूं के मांही ॥ ७ ॥
तिनहूं परख्यो मनुख बिराना। गहि बूझयो नहिं जाइ बखाना।
ततछिन तिसकी पाग उतारी। मुशकैं[3] वांधि करि बहु मारी ॥ ८ ॥
दई कषट ते भूर दुहाई। 'श्री सतिगुर मुहि लेहु छुटाई'।
परयो शोर सगरे नर धाए। गह्यो ताड़ करि गुर ढिग ल्याए ॥ ९ ॥
श्री हरिगोविंद सुनति दुहाई। पठि बिधीआ मुशकैं खुलिवाई।
संग आनि थिर कर्यो हजूरे। हेरति बोले सतिगुर पूरे ॥ १० ॥

1. खाली 2. दो तीन पहर 3. दोने हाथ पीछे बाँध कर



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'को हैं तूं ? किस ते चलि आयो?। कहहु साच, नतु दें मरिवायो'।
डरति मार ते साच बखाना। 'प्रभु जी ! तजहु कि कर दिहु हाना ॥ ११ ॥
कहौं साच मैं आप अगारी। ललाबेग काबल पति भारी।
भेत हेतु हे कृपा निकेत !। पठ्यो मोहि बड शीघ्र समेत ॥ १२ ॥
दल प्रवेश मैं सकल निहारा। भटन[1] पछानि लीनि बहु मारा।
श्री गुर तुम पीरन के पीर। दुह लोकन के मीरन मीर' ॥ १३ ॥
श्री हरिगोविंद बूझन ठाना। 'कहां सैंन तुरकान महाना ?।
केतिक गिनती महिं चढ़ि धाई। कबि इत पहुंचहि हेतु लहराई !' ॥ १४ ॥
सुनति हसनखां दूत बखाना। 'काबल के उमराव महाना।
लशकर पंच रु तीस हज़ार। तुरकी घोरे पर असवार ॥ १५ ॥
कह्यो शाहु मग नहिं बिलमावहु। लरहु शीघ्र, गुर निकटि पठावहु।
नहीं देर अबि आवन मांही। पहुंची लखहु चमूं निज पाही ॥ १६ ॥
मैं पिखि परखन कीनि बिचार। तुमरे शत[2], सो आइ हज़ार।
मार लेहिंगे देहिं न ज़ाने। इम तुरकाना करिहों हाने ॥ १७ ॥
सवाधान रावर की सैना। ब्रिसरामी, इनके श्रम है ना।
चाहति हैं संग्राम सु ठांढे। बहु अनंदता जिन महिं वाढे ॥ १८ ॥
सुनि प्रसंन सतिगुर हुइ आयो। ढिग ते पाग दिवाइ पठायो।
कह्यो 'देहु सुधि तिन कहु जाई'। छुट्यो हसन खाँ गमनयो थाई ॥ १९ ॥
ललाबेग को मिल्यो अगारी। आवति लिए जु लशकर भारी।
करयो सलाम खरो तबि भयो। 'कहु सुध जिस कारन तूं गयो ॥ २० ॥
कितिक सैन सो गुर है कहां ?। भाजि कि नहिं पिखि लशकर महां?।
लरन हेतु गाढो भी देखा ?। भाखहु भेत जु कीनि परेखा[3] ॥ २१ ॥
सुनति हसनखां भेव बतायो। 'डेरा गुर उजार महिं पायो।
जल के ताल चुगिरदे घेरा। लरन हेतु उतसाहु घनेरा ॥ २२ ॥
करहि उडीकन भट बलवाना। तुरंग ज़ीन धरि आयुध नाना।
तिन के कहां पलावन बात। चाहत हैं सभ लशकर घात ॥ २३ ॥
मोहि रिदे महिं ऐसी आवै। सौ भट, तुम हज़ार को घावै।
गुरू बिलंद बली समशेर। करहि प्रतीखनि गहि शमशेर[4] ॥ २४ ॥
मृगन मनिंद ब्रिद तुव सैना। तुम महिं तिन की समता है ना।
दल है अलप तऊ सम बाज़। काक बटेरा तोहि समाज ॥ २५ ॥

1. शूरवीर 2. सौ 3 देखा हो। 4. तलवार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चार हज़ार भटनि के टोल। चारहुं करे शेर सम बोल'।
सुनि करि बात दूत के साचे। तुरक तुरकपति सभि रिस राचे ॥ २६ ॥
'इहु क्या मूरख करति वखान। बड जोधा हौं बिदति जहान।
कई जंग मैं रिपु गन हते। करि पुरशारथ[1] लीनसि फते' ॥ २७ ॥
पान बारनी[2] को करि रह्यो। सुनति दूत ते रिस करि कह्यो।
'इह कुछ गुर ते लै करि आयो। कहि करि चाहति हमैं डरायो ॥ २८ ॥
दुशमन को पक्खी इह जाना। तिस की जीत, हमहिं चहि हाना।
पनही[3] मारहु देहु निकासी। बहुर न कहै आनि को पासी ॥ २९ ॥
गुर तरीफ, करि निंद हमारी। कहां मती इन मूढ बिचारी'।
इम कहि मारत खेदि खदेरा। जानि अनादरि बहु निज केरा ॥ ३० ॥
गुरू पीर के निकटि सिधाऊं। मन बांछति तिन ते वर पाऊं।
सुमतिवंत इम रिदै विचारा। शीघ्र गुरू के निकटि सिधारा ॥ ३१ ॥
कहि निज नाम बूझ करि कह्यो। सीस निवाइ संमुख गुर भयो।
'आनि परयो मैं रावरि शरनी। जाइ प्रसंसा तिन ढिग बरनी ॥ ३२ ॥
सहि न सके मतिमंद गुमानी। मारयो मोहि कटक कहि बानी।
राखहु लाज पीर जी मोरी। नहिं अलंब रह्यो अबि होरी' ॥ ३३ ॥
क्रिपा निधान क्रिपा सुनि करी। हम हित लख्यो मार इस परी।
म्रिदुल बाक[4] कहि दीनसि धीर। 'पिखहु जंग रहि करि हम तीर' ॥ ३४ ॥
जोध निकटि बैठे तबि भाख्यो। 'नीकी नहीं', निकटि इस राख्यो।
छल को करति रहै दल बीच। देखि भेत कहि तुरकनि नीच' ॥ ३५ ॥
बिगसति कह्यो गुरू 'सुनि जोध !। हम जसु सुनि हुइ तुरक सक्रोध।
आनि परै को शरन जदाई। नहिं त्यागनि मैं करौं कदाई ॥ ३६ ॥
इहां न रच्छया करि दिखरावौं। तौ जम ते मैं कहां बचावौं।
ऐसो बिरद जानीअै मोहि। सो सभि साच सुनावौं तोहि ॥ ३७ ॥
बिन अलंब हुइ दीन, लचारी। कहै जु मैं अबि शरन तुमारी।
तिसकी रच्छया उर अभिलाखौं। क्या नर बपुरा, जम ते राखौं ॥ ३८ ॥
लेय भेत तौ क्या हुइ मेरा। हतौं छिनक महिं दल रिपु केरा।
देउ मालकी काबल सारी। इह उमराव करौं तिन मारी ॥ ३९ ॥
मनसब शाहु समीप दिवाऊं। इस ते काबल राज कराऊं'।
बिसमे सभि सुनि कै बच ऐसा। इहु तौ भयो बिभीखन जैसा ॥ ४० ॥

1. उद्यम 2. शराब। 3. जूता 4. कोमल बचन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आनि मिल्यो सलितापति उरे। लंकापति श्री रघुबर करे।
सुनि करि जोध बंदना कीनि। रामचंद इहु रूप सु चीन ॥ ४१ ॥
सभि महिं भयो बिदति बिरतांत। श्री सतिगुर कीनो जिस भांति।
'धंन धंन' सभि बदन उचारे। दीनदयाल को बिरद बिचारे ॥ ४२ ॥
अरध राति होई तब्रि आइ। कहति हुसनखां 'रिपु समुदाइ।
पहुंचे जानहु रखीअहि तयारी। बीच तुफंग[1] दुगोरनि डारी' ॥ ४३ ॥
सभि दल महिं नर सतिगुर फेरा। 'सुभट सुचेत बनहु इस वेरा'।
सौ सऊर[2] को पठ्यो अगारी। 'आइ तुरक तहिं दिहु सुधि सारी' ॥ ४४ ॥
गुरदल महिं अंगीठे लागे। जिनहुं निकटि ते पाले भागे।
शसत्रनि जुति सिमरति जगदीश। मिलि थिति कित दस, पंद्रां, बीस ॥ ४५ ॥
सभि सुभटनि के तन बिन पाले। हतन रिपुनि सवधान बिसाले।
निस महिं तुरक चढ़े सभि आए। जड़ सम सीत करे[3] नर पाए ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सपतम रासे **'दूत प्रसंग'** बरननं नाम तीनचतवारिंसती अंशु ॥ ४३ ॥

2. बंदूक 3. सवार 4. सर्दी ने पंगु बना दिए

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४४

# जुद्ध प्रसंग

**दोहरा**

जाम दिवस के चढ़े ते लवपुरि ते प्रसथान।
तीन जाम मारग चले, पुन निस कीनि पयान॥ १॥

**चौपई**

कुछ बिश्राम कीनि श्रम होए। दो इक जाम नीठि ही सोए।
बहुर चढ़े दिन सगरे चाले। चार जाम महिं पंथ बिसाले॥ २॥
बहुर निसा दूसरि हुइ आई। किस किस खानो कीनि बनाई।
दाना दीनसि किनहुं निहारी[1]। तऊ श्रमति बड भे मग भारी॥ ३॥
रूपा ग्राम उलंघि करि आए। बहु ग्रामन के आगू ल्याए।
कहैं कि 'जिस थल गुर को डेरा। हमहिं दिखाइ देहु इक बेरा'॥ ४॥

ग्रामन के नर को बहु तारैं। डरि करि आगू अग्र पधारैं।
त्रौदस जाम सु चलति बिताए। चौदसमें महिं गुर नियराए॥ ५॥
महां श्रमति अरु छुधति[2] बिसाले। ठरे चरन कर लागति पाले'।
तीनहुं कारन ते तुरकाना। ब्याकुल बहु, किम हुइं सवधाना॥ ६॥

ललाबेग युत सभि सरदारा। नहिं लशकर को हाल बिचारा।
आप धरी तन पर पुसतीन[3]। त्यारी कराइ खान करि लीनि॥ ७॥
अपर सुभट जिन लरिबो आगे। तीनहुं कारन तिन तन लागे।
कहि बहु रहे न किनहूं मानी। करैं शीघ्रता शाहु बखानी॥ ८॥

परम दुखी करि लशकर ल्याए। सौ असवारनि के नियराए।
ज्यों आवति थे बाग उठाए। त्यार तुफंगनि शलख चलाए॥ ९॥
कड़ा काड़ जवि इकठी छोरी। गिरे कितिक रिपु लागति गोरी।
आवति लशकर को मुख तोरा। दिखति न जामनि को तम घोरा॥ १०॥

---

1. घोड़े की खुराक 2. भूखे तथा थके हुए 3. चमड़े की चोली



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ललाबेग जानयो गुर इहां। झार मताबी जारे महां।
अनिक मसाल जलावन कीने। भयो प्रकाश दिशिनि तम हीने ॥ ११ ॥
इम कहि सतिगुर जोध चढ़ायो। संगी जाती मलक मिलायो।
'परे हाथ इम रिपु मति मोटे। जिम प्रापति मैदान सु होटे ॥ १२ ॥
छुधति श्रमति, बहु नींद दबाए। पारा परे ठरे कर पाए।
जाहु बाज़ सम बेग बडेरे। हतहु तुरकु जनु लवे बटेरे ॥ १३ ॥
सतिगुर दीनी बिजै सुखैन। ब्याकुल जेनि केनि अरि सैन'।
ब्रिंद मसालैं जोध अगारी। गुर को हुकम पाइ करि जारी ॥ १४ ॥
गुर नगारची को कहि नामा। 'दैरे दैरे दीह दमामा।
इम तुफंग अरू चलहिं क्रिपानां। श्रोणति[1] अवनि बहै महाना ॥ १५ ॥
दुहरि चोब धौंसा धुंकारे। वध्यो बीर रस भट ललकारे।
चढ्यो जोध चलि आगै गयो। दुहि दिशि मारू बाजति भयो ॥ १६ ॥

### भुजंग प्रयात छद

दमामे बजे ब्रिंद भेरी[2] भुंकारे। तुफंगानि गोरी कसे फेर मारे।
करे तेज घोरे अगारी धवाए। किनूं तीर मारे सु नेज़े भ्रमाए ॥ १७ ॥
भए नेर शत्रु तकैं तांहि मारैं। लगैं अंग जांके गिरैं, न संभारैं।
भयो भेड़ भारो त्रिभै बीर बांके। सहाई गुरू जानि दौरे चलाके ॥ १८ ॥
उडी धूल गैनं[3] दुरे ब्रिंद तारे। मसालैं करी मंद, भे अंधकारे।
पलीते धुखे पुंज तोडे लगाए। मनो रैण भादों खद्योतं[4] दिखाए ॥ १९ ॥
महां नाद होयो सु बाज़ी हिरेखा। बकैं मार लीजै सकोपं विशेखा।
नहिं जानि दीजै गहो काटि डारो। चलो सामुहे बीर शंका निवारो ॥ २० ॥
बजैं ब्रिंद बाजे हकाहाक बोलैं। भिडे भेड़ भारे किते बंधि टोलैं।
तुफंगानि की मार माची बिसाला। गजं के ठनंके उठैं ठोक जाला' ॥ २१ ॥
परैं पौर घोरे धरा, नाद ठानैं। मच्यो जंग भीमं रिपु प्रान हानैं।
चलावैं कसैं फेर बारूद डालैं। किते एक गोरी दुगोरीन घालैं ॥ २२ ॥
कला पै जड़े मोड़ तोड़े भभंते। धरैं हाथ पै ताकि शत्रु डभंते।
पलीता भखैं ब्रिंद ज्वाला उगालैं। चलैं शूंक गोरी तड़ाके उठालैं ॥ २३ ॥
लगैं अंग भंगैं तुरंगनि डालैं। किते सूर धाए हलाचाल घालैं।
किते धाइ घूंमे गिरैं बीर भूमै। किते खाइ गोरी खरे धीर झूमैं ॥ २४ ॥

1. जंगी बाजा 2. शहनाई 3. आकाश 4. खद्योत, जुगनूं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

**सवैया**

यौं जवि मार मची सु घनी तवि वेग लला सुधि जानि लराई ।
कंवर बेग समीप पिख्यो वड वीर वली तिह संग सुनाई ।
भ्रात ! सुनो घमसान घनों रण होइ रह्यो सभि के अगुवाई ।
पान शराव करो कुछ थोरई, तो सिर पाग करो अवि धाई ॥ २५ ॥
आइसु भ्रात वडे की सुनी तवि कंवर बेग ने बाक कह्यो ।
'क्या गुर सैन डरो जिस ते अवि, मारि सभै निस अंत लह्यो ;
आप खुदाइ ने बांधि दयो, विन त्रास धरे इस थान रह्यो ।
शाहु तुरंगनि लै अवि दोनहु, जाइ मिलैं, गुर लेहिं गह्यो ॥ २६ ॥
शाहु करै वखशीश महां जसु फैलि परै सगले तुरकाना ।
चार हज़ार ही सैन सुनी हमरे ढिग हेरहु पुंज महाना ।
आटे मैं लौन समान मिलावहु कौन थिरैं लरिवे अगुवाना ? ।
एक गुरू सिख, हैं हमरे दस, को वलवान जु होइ न हाना ? ॥ २७ ॥
पान शराव करैं बहुती पिखि वेग लला रण फेर उचारी: ।
'जोर परयो बहु घोर, सुनै रव[1], तूं प्रसथानहु ठौर अगारी ।
सात हज़ार सउर जि सूर, करो अपने संग मैं बल भारी '
आगे को रोको जाइ विलोकहु रौर महां, किम होति पुकारी' ॥ २८ ॥
भ्रात की आइसु मानि चल्यो बहु पानि सुरा[2] करि बीर हंकारी ।
कंवरबेग ने वेग कर्यो उदवेग, सु वेगलला न सहारी ।
दीह दमामे समूह बजे, दल सात हज़ार चले बल भारी ।
हेला पुकारति गोरिनि मारति तोमर[3] धारति आइ अगारी ॥ २९ ॥
श्री हरिगोबिंद धीर बली वर बीर समीर के संग वखाना ।
आइ सहाइक होइ अवै. लगि सैल हिमालहि सीत महाना ।
शत्रुनि के तन सीत करो जिन ते न बनै कुछ, ह्वै ठरवाना ।
कंप उठै सभि केर सरीर अधीरज बीरज को करि हाना ॥ ३० ॥
आइसु पाइ चल्यो हरखाइ, लग्यो हिम सैल के जाइ सथाना ।
सीत को ल्याइ बह्यो इत आइ, जहां रण थाइं, लरैं तुरकाना ।
लग्यो सरीरनि, धीर तजी, ठरि भूर भयो, बड सीत को माना ।
हाथ की आंगुरी नांहि खुल्हैं, मुख दंत बजैं बलहीन अजाना ॥ ३१ ॥
चीर[4] ते छाद सरीरन को जुग हाथनि देत हैं कांख[5] मझारा ।
कीन तुफंग चलाइ सकै. छुटि बाग गई न किकान[6] संभारा ।

1. आवाज़, शोर 2. शराब 3. बर्छा 4. वस्त्र 5. बाजू के नीचे 6. घोड़े

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कंपति हैं तन होति नहीं कुछ आइ भिरे मुख बोल उचारा ।
कंबरबेग भयो रण संमुख होइ तुफंगनि के कड़कारा ।। ३२ ।।

सात हज़ार की भीर अई जबि, जोध ने ज़ोर परयो तबि जाना ।
शाहु सलेम सु भ्रात हुतो बलवान कि साथ सु वाक् बखाना ।
मारि तुफंगन भंग करो इह आवति अग्र बध्यो तुरकाना ।
पंच सै लेहु पवंगम[1] संग उठाइकै बाग करो घमसाना ।। ३३ ।।

जोध सु भ्रात की आइसु को सुनि शाहु सलेम चल्यो उतसाहू ।
तीर तुफंगनि तोमर ते तरवारन को गहिकै कर मांहू ।
जाइ तुफंगन को छुरिवायहु एक ही वार परे बिधि यांहू ।
ज्यों दल टीडनि को लखिकै, हित मारन धाइ बिहंगम तांहू ।। ३४ ।।

सात हज़ारन ऊपर पांच सै दौर गए इम मारन को ।
होति छुधातुर केहरि ज्यों मृग को सुनि नाद निहारन को ।
हाथ उठाइ सकै न रिपु ठरि सुंन भए हित हारन को ।
ह्वै न तुफंग संभारन को तबि कौन गहै तरवारन को ।। ३५ ।।

आध हज़ार तुफंग छुटी रिपु चार सै मारिकै भूमि गिराए ।
फूट गए गन तुंड रु मुंड प्रचंड ही घाउ लगे समुदाए ।
ब्रिंद पठान गिरे मुगले, हत्थयार न होइ सकै पछुताए ।
हाइ कराहति को हति भे, कुछ जीवति पाइ दुरे हय धाए ।। ३६ ।।

अंगनि भंग तुरंग भए बिच जंग गिरे भट संग गिराए ।
बीच मशालची नाश करे, अंधकार महां अरु धूल उडाए ।
पूरन श्रोण बिलोचन[2] भे, तन खेह जमीं, अतिशै अकुलाए ।
घोरे मरे अटकैं चलते तिन ऊपर और गिरैं जु धवाए ।। ३७ ।।

**दोहरा**

शसत्र भए नहिं शत्रु ते शाहसलेम सु जानि ।
खैंचि क्रिपान सिलि गए मारि मारि करि ज्वान ।। ३८ ।।

तुरत आप ही मुरि परे रौरा तुरकनि पाइ ।
कटनि लगे तबि आप महिं कछु न जानयो जाइ ।। ३९ ।।

**सवैया**

पूत पिता के हतै सिर मैं पित मारति पूत को नाहिन जानै ।
भ्रात सों भ्रात गिरयो कटिकै तिम नांहि चचा को भतीज पछानै ।

---

1. घोड़े 2. कान और आँख

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मीत सों मीत क्रिपान वही, मति होति भई हति आप ही हानैं ।
मारि मरे सु हज़ार ही शत्रुनि थोर ही काल विखै तुरकानै ॥ ४० ॥

**दोहरा**

सपत सहस्रनि के विखै परी रौर[1] इस भाइ ।
कित हमरो दल, कित गुरू नहिं किछु जानयो जाइ ॥ ४१ ॥
कित गमने, कित ते हटे रह्यो न कुछ मन ज्ञान ।
इक तम[2], पुन हिम[3], रजु[4] अधिक, परे प्रान करि हानि ॥ ४२ ॥
इत उत को कित टरि गयो दैव जोग ते कोइ ।
बच्यो रह्यो, बाकी सकल परे म्रितक[5] रण होइ ॥ ४३ ॥
पूरन पुरखनि ते कहहु पूरा उतरै कौन ।
गुरू संतनि सों अरहि सो मंद भाग ह्वैं जौन ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे '**जुद्ध प्रसंग**' बरननं नाम चतुर-चतवारिंसती अंशु ॥ ४४ ॥

---

1. शोर 2. अंधेरा 3. सर्दी 4. मिट्टी 5. विपदा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४५

## जुद्ध प्रसंग

दोहरा

आपस महिं भिर जांहि जे, तबहि करहिं हत्थयार ।
नतु पारे मारे सरब, परे हज़ार सु मार ॥ १ ॥

सवैया

हेरि अफात परी कहु दीरघ, कंबर बेग हट्यो पिछवाई ।
फेरि मसाल बिसाल जलाइ कराल पिख्यो दल को समुदाई ।
बीरनि पै बहु बीर परे, गन घोरनि पै मरि घोरे, इथाई ।
कैसे भए मृतु ए सगरे ? बहु सोचति है चित मैं दुख पाई ॥ २ ॥

घाउ भकाभक बोलति हैं बहु श्रोणति भूतल बीच बह्यो ।
बांहु कटी, किह जंघ कटी, किह ग्रीव कटी, धर होइ रह्यो ।
को गुलकां[1] लगि प्रान दए तरफंति किते मुख 'हाइ' कह्यो ।
ऊंधे परे, इक सीधे परे, इक टेढे परे, वड घाव लह्यो ॥ ३ ॥

कंबरबेग पठ्यो नर को, जहिं बेगलला, सुधि जाइ सुनाई ।
'एक तौ सीत ते अंग गए ठरि, दूसरे ह्वै तम को समुदाई ।
आपस मैं कटि सैन मरी, न सर्यो कुछ, शत्रु खरे समुहाई ।
जो पहुंच्यो दल अग्र पठावहु, संमुख होइ करै जु लराई ॥ ४ ॥

यौ सुनि श्रोन रह्यो बिसमाइ, मर्यो दल बाद, सर्यो नहिं काजू ।
बेगलला पुन आइस दी 'सवधान को होइ समूह समाजू ।
आपस की करि लेहु पछान, महांन हनो गुर, जाइ न भाजू ।
राति की घात[2] भली हम को, दिन मैं न थिरैं, लहि लीजहि आजू ॥ ५ ॥

द्वै सरदार पठाननि के दल आठ हज़ार अहैं जिन संगा ।
आइसु दीनसि सीख सिखाइ, चले रण को चित चाव उमंगा ।

---

1. गोली 2. दाँव



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भीखन खान वडो बलवान संजोइ को धारि रह्यो सरबंगा।
दूसर नाम कहैं गुलखां, जिन आगे करे बहु बार ही जंगा ॥ ६ ॥

सात हज़ारनि को मरिवाइ कै आठ हज़ार करे पुन आगे।
चोब दमामनि ब्रिंद परै, वड रौर करैं रस बीर मैं पागे।
बीर कहां बल ठानि भिरैं तिन तीनहूं कारन जे तन लागे।
काल के प्रेरे कहां बस चालहि ह्वै न संभालन जाति हैं भागे ॥ ७ ॥

जानि वडो दल आइ गयो तवि जोध परेरि तुरंग अगारी।
शाहु सलेम सों आनि मिल्यो सुख बूझ तिनै सुखसार उचारी।
ज्यों कट आपस मैं मरिगे हम दूर खरे सभि रीति निहारी।
आप ही ते बिन मारे मरे, गुर पूरन को सु प्रताप है भारी ॥ ८ ॥

जंबुक[1] आमिख खाहिं घने, बहु घाव सने भट जंग गिरे।
जोगनि श्रोणत[2] पीवति हैं, पुन लेति डकार अनंद भरे।
भूत महां गन प्रेत पुकारति, नाचति हाथ कपाल[3] धरे।
आंत्र निकारि गरे महिं डारति गावति ताल वजाइ खरे ॥ ९ ॥

आठ हज़ार पर्यो दल आइ उठाइ सकैं न तुफंगनि को।
सीत ते होइ रहैं जड़ के सम, प्रेरति अग्र तुरंगन को।
तापति पावक[4] को भट जोध के, होति नहीं ठर अंगनि को।
ह्वै सवधान धरे सभि आयुध आवति शत्रुनि भंगन को ॥ १० ॥

त्यार तुफंग हज़ार हुती इक बार चली अरि मारन को।
संमुख रौर के छोरि दई तुरकांन लगी तन गारन को।
फेर बरूद बंदूकनि पाइ कसी गुलकांनि प्रहारनि को।
शीघ्र चलाइ दई रण दारुन[5] मारन आठ हज़ारनि को ॥ ११ ॥
तूरनता इम धारि महां, कहि जोध ने मार वडी करिवाई।
चार करे इम वार बंदूकनि एक ही बार न शत्रु चलाई।
भूम धड़ाधड़ गेरति सूर तड़ातड़ यों गुलकान मचाई।
छूछ तुरंग फिरैं हिहनावति केतिक म्रितु भए लगि धाइ ॥ १२ ॥

**रसावल छंद**

गुरू सूर दौरे। करे शत्रु बौरे।
कछू नांहि सूझै। लगैं शसत्र जूझैं ॥ १३ ॥

---

1. गीदड़ 2 लहू 3. खोपरी 4. आग 5. भयानक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

थके पंथ मांही। भई नींद नांही।
किते भूख भारे। छुधा[1] ना निवारे॥ १४॥
परै भूर पारा[2]। न जाई संभारा।
गुरू की रज़ाए। समीरं चलाए॥ १५॥
महां सीत ब्यापे। बडे शत्रु कांपे।
जुटे दंत बोलैं। मसें हाथ खोलैं॥ १६॥
किती देर लागे। तुफंगानि त्यागे।
कर्यो जोध हल्ला। नहीं जाइ झल्ला॥ १७॥
लखे शत्रु हारे। मिले बीर भारे।
करे खग्ग[3] नंगे। जिनैं बाढ चंगे॥ १८॥
पर्यो भूर रौरा। सुन्यो दूर ठौरा।
गुरू जानि लीनो। रणं भूर कीनो॥ १९॥
पठे और सूरं। हज़ारैं सऊरं।
रणं रंग राते। चले बीर माते॥ २०॥
जहां जोध जोधा। रुपयो धारि क्रोधा।
तहां जाइ बोले। बडे बंधि टोले॥ २१॥
तपे बंन्हि जारी[4]। नहिं सीत भारी।
चलाए तुफंगा। लगैं शत्रु अंगा॥ २२॥
कसैं फेर मारैं। न बैरी संभारैं।
नहीं हाथ हालैं। टिके जाइ घालैं॥ २३॥
कवै एक भोरी। हतैं जोध ओरी।
नहीं ओज होवै। ब्रिथा प्रान खोवैं॥ २४॥
पलायो न जावै। नहीं पंथ पावैं।
भए दुखि केई। नहीं धीर लेई॥ २५॥

**दोहरा**

द्वै हज़ार गुर सैन तबि हेरि सुगम ही जंग।
खड्ग निकासे म्यान ते तुरकनि हतैं निशंग॥ २६॥

**रसावल छंद**

क्रिपानैं चलाई। सु लोहू चखाई।
कटैं शत्रु अंगा। भई लाल रंगा॥ २७॥

1. भूख 2. सर्दी 3. तलवार 4. आग जलाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पलावैं तुरंगा। मिलैं शत्रु संगा।
पिखैं सों संभारैं। नहीं ओज धारैं॥ २८॥
ठरे हाथ भारे। न जाहीं उभारे।
कहां वार ओटैं[1] ? करै कौन चोटैं ?॥ २९॥
मरैं मूढ़ मारे। क्रिपानं प्रहारे।
किनूं तीन छोरे। रिदैं शत्रु फोरे॥ ३०॥
किनूं फेरि नेज़ा। परोयो करेजा।
हलाहल माची। लहू धूल राची॥ ३१॥
गिरे अंग भंगे। समूहं तुरंगे।
किते हाइ बोलैं। किते छूछ डोलैं॥ ३२॥

### दोहरा

इक इक गुर के सूरमें पंच कि सपत संघारि।
करे निवेरन तुरक गन जिम खाती बढि दार[2]॥ ३३॥

### रसावल छंद

परी ब्रिंद लोथैं। फिरैं बाज[3] पोथैं।
लहू दीह चाला। भयानैं बिसाला॥ ३४॥
मरे पुंज घोरे। तमं मोट घोरे।
दिखै है न आगे। लखैं अंग लागे॥ ३५॥
चलै बेग जोई। गिरै लाग सोई।
किते घाइ खाइ। कहैं हाइ हाइ॥ ३६॥
चहैं कोइ भागे। न सूझै सु आगे।
बिसालै उजारा। न पंथै निहारा॥ ३७॥
कहां भाग जावैं। नहिं भेव पावैं।
सु होए लचारा। खरे खाइं मारा॥ ३८॥
न हाथै उठावैं। न गोरी चलावैं।
बही बायु सीरी[4]। महां सीत गीरी॥ ३९॥
लगी देहि मांही। सही जाइ नांही।
पुकारैं कहंते। करामात वंते॥ ४०॥

---

1. हमला कैसे रोकें, खाली घोड़े इधर-उधर घूम रहे हैं 2. बढई लकड़ी को काटता है 3. घोड़े 4. शरद पवन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुरू पौन प्रेरी। कवै यौं न हेरी।
सभै सुंन कीने। भए ओज हीने ॥ ४१ ॥
कहो कौन बीरा। सहारै समीरा।
लरै फेर जुद्धं। करै शसत्र सुद्धं ॥ ४२ ॥
कर्यो क्रोध पारे। सभी ग्रानि मारे।
सुनै कौन बानी। परी धूम धानी ॥ ४३ ॥

### दोहरा

गुर आज्ञा ते सीत भा सकहिं न शसत्र उठाइ।
तन कंपति बाजति दसन[1] भए बिबस पछुताइ ॥ ४४ ॥
हुते सैन सरदार जे रहे पिछारी सोइ।
ढोयो लशकर अग्र निज थकति, छुधति ठरि जोइ ॥ ४५ ॥
भाज्यो, लर्यो न लखि परै हुतो अंधेरा पीन।
सैनापति बाचे सकल, सैना प्रान बिहीन ॥ ४६ ॥
कहों कहां लगि निबलता भई जु तुरकन मांहि।
भाजे गए न मुरि लरे, खरे खरे मरि जांहि ॥ ४७ ॥
श्री सतिगुर की सैन गन, सुनी अवाई[2] भूर।
मारे सुगम, न कुछ लरे उर प्रमोद बहु सूर ॥ ४८ ॥
सपत सु असट हज़ार भट मरे अंधेरे मांहि।
ललाबेग ढिग सुधि गई लरति सुभट अबि नांहि ॥ ४९ ॥
जाने परे न भाजिगे किथों मरे रण खेत।
छुटति न तुपक, न शोर ह्वै, बकैं न कोप समेत' ॥ ५० ॥
ललाबेग काबलपती सुनति बाक बिसमाइ।
दस अरु पंच सहस्र भट कहां भयो तिह जाइ ॥ ५१ ॥
तिमर अधिक सूझति नहीं रहति न ब्रिंद मसाल।
ताकि तुपक गन को हतहिं मरति कि बूझति काल ॥ ५२ ॥
भयो न आछो जंग कुछ, सोचति अति चित मांहि।
भगनी नंदन ढिग हुतो काबल वेग जु आहि ॥ ५३ ॥
कह्यो सीत अतिशै परै निकसति हाथ न कोइ।
भए बिबस कित भागि गे कै सगरे म्रितु होइ ? ॥ ५४ ॥
दिवस चढ़ै जबि जंग की आछी बिधि तबि ठानि।
गहि लै हैं कै मारि हैं, देहिं नहिं गुरू जानि' ॥ ५५ ॥

1. दाँत 2. अफवाह, झूठी ख़बर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

**सोरठा**

आयो कंवर बेग इतने मैं सभि सुनि कह्यो।
क्यों न रिदै उदवेग, धारति हो? सुख सों थिरे ॥ ५६ ॥
आइ परहि गुर सैन, तुम ते कुछ होवहि नहीं।
पठि दैहैं जम ऐन, जिम लशकर आगे हत्यो ॥ ५७ ॥
काटति तुमको जाइ, लवपुरि लगि, मिटि है नहीं।
क्यों नहिं करति उपाइ, जवि लगि इहां न आवई ॥ ५८ ॥
भले आइ हय लैनि, निकट रहे भी जाइ हैं।
करिहो प्राननि दैनि, मोकहु इम दृष्टावई ॥ ५९ ॥
सुनि सोचत चित होइ, ललावेग कुछ मौन धरि।
गह्यो चहति गुर सोइ, जम ते गह्यो सु जावही ॥ ६० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'जुद्ध प्रसंग'** बरननं नाम पंचचतवारिसती अंशु ॥ ४५ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ४६

# जुद्‌ध प्रसंग

### दोहरा

ललाबेग के सुत खरे बोले कोप[1] समेत ।
टरहु कि अबि आगै पठहु दस सहस्त्र रण खेत[2] ।। १ ।।

### पाधड़ी छंद

तहिं रहैं लरति आगा सु रोकि ।
नहिं जंग खेत छूछा बिलोकि ।
जबि लौ न प्राति होवै प्रकाश ।
तहिं करहिं जुद्‌ध रिपु गन बिनाशि ।। २ ।।

दिन चरे बीर सगरे संभाल ।
इक बार रिपुनि पर हेल घाल[3] ।
तबि लेहिं पकरि कै दें संघार ।
हय लेनि शाहु के करहिं कार ।। ३ ।।

अबि जंग पाइ जे पठहु नांहि ।
लशकर समूह निज रखहु पाहि ।
सभि दल सकेलि सो परहि धाइ ।
जिन बहु बीर मारे रिसाइ' ।। ४ ।।

सुनि ललाबेग मसलत बिसाल ।
तबि दस हज़ार सरदार नाल ।
कहि तिनहु साथ 'आगै लरेहु ।
नहिं शत्रु ब्रिंद बहु बधनि देहु ।। ५ ।।

बड अंधकार फैलयो कराल ।
नहिं कट्‌टहु आप महिं, रखि संभाल ।

1. क्रोध 2. रणमूमि 3. क्रोध से



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि कहैं वीर सीरी समीर[1]।
बहु परति सीत ठरि ह्वै सरीर ॥ ६ ॥

इह बुरी बात कीनी अजान।
इक थकति छुधति. पारा महांन।
अबि भटनि धान कहु लरहि कौन।
उकसैं न हाथ तन सुंन जौन ॥ ७ ॥

दल मरयो अरध रण कुछ न कीनि।
रिपु तपति अगनि उठ मारि दीनि।
अबि जाइं जौन तिन ते न होइ।
थिर खरे समुख, पिखि हतहिं सोइ' ॥ ८ ॥

इम कहैं तुरक, नहिं सुनहि कौन।
लघु लगहि सीत सरदार जौन।
हुइ अग्ग्र जाइ छेरयों सु जंग।
करि हलाहूल वड रौर संग ॥ ९ ॥

इक बार शलख चाली बिसाल।
बड भयो शब्द गुरि सुनति जाल।
तबि बिधीचंद कहि हाथ जोरि।
सुनियंति नाद बड परति शोर ॥ १० ॥

मचि रह्यो जुद्ध माचंति रौर।
लखियंत तुरकगन अग्ग्र ठौर।
बहु परे आइ छूटहिं तुफंग।
करि मारि मारि बोलति उतंग' ॥ ११ ॥

सुनि इक हज़ार पुन गुर पठाइ।
भट चले गरज दुंदभि[2] बजाइ।
जो हुते त्यार चहिं करन जंग।
कट कसे तपत जे अगनि संग ॥ १२ ॥

जिन केर त्यारि तुपकं उठाइ।
सभि चले हरीफनि[3] हतनि चाइ।

---

1. ठंडी हवा 2. नगारा 3. दुश्मन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उतकंठति अधिक जि लरन बीर।
गुर रखहिं रोकि दै बहुत धीर॥ १३॥

तबि कहति परसपर सूर जाति।
मन भावती सु करि लेहु बात'।
इम कहि कुदाइ गमने तुरंग।
इक बार पहुंचि छोरि तुफंग॥ १४॥

तबि जोध मलक जाती बुलाइ।
बच कहति 'करहु अबि कोइ दाइ।
जिस ते बिनाश तुरकान होइ।
समुदाइ शत्रु उबरै न कोइ॥ १५॥

इहु इक हज़ार सनमुख लराहि।
हम होइ दूर लखि सकहिं नाहि।
पशचात् तुरक दल केर होइ।
पुन परहिं आनि करि नेर ढोइ॥ १३॥

सभि अपनि सूर को दिहु सुनाइं।
रहिं टोल बीच नहिं निकसि जाइं।
इक हतहिं तमाचा गज़ब केर।
हुइं तुरत दूर नहिं रहहिं नेर॥ १७॥

कटि मरहिं आप महिं मंदशत्रु।
नहिं लखहिं तिमर[1] महिं हतहिं मित्र।
सुनि हरख बिप्प्र तिम करि उचारि।
करि प्रिथक सुभट तजि इक हज़ार॥ १८॥

कहि सुभट संग ऐसे सुनाइ।
मारहु सु शत्रु जानैं न पाइं।
त्यागंति तुपक करि मारि मारि।
उगलंति ज्वाल[2] बारूद डारि।
कसियंति फेर बहु ठोकि ठोकि।
छणकंति गजन गुलका[3] अरोक॥ १९॥
तोरा उभारि धरि जोरि जोरि।
करि दसत रवां तकि छोरि छोरि।

1. अंधेरा 2 आग 3. गोली

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इत करति जुद्‌ध बहु तुरक हानि ।
गुर करी सौच पुन तन शनान ।। २० ।।
पठि गुरू गिरा निज नेम कीनि ।
पुन वसत्र जुद्‌ध के पहिर लीनि ।
खर धार खड़ग की धारि अंग ।
मुकता सु गुच्छ लागे निखंग[1] ।। २१ ।।
भरि तीखन खपरे[2] गन खतंग ।
गर पहिर, कसी कट सु पट संग ।
जिह फूल सेर पंच भार केर ।
धरि कंध सिपर बंधी वडेर ।। २२ ।।
इम गुरू तयार भे जुद्‌ध हेतु ।
तुरकान संघारनि हुइ सुचेत ।
उत पर्यो जोध हुइ कै पिछार ।
तजि ब्रिंद तुपक गजबैं गुज़ार ।। २३ ।।
इक शलख छोडि बिच ह्वै प्रवेश ।
गहि खड़ग म्यान ते खैंचि वेश ।
बड अंधकार महि मार मार ।
दुहि दिशनि जंग पिखि तुरक हार ।। २४ ।।

**रसावल छंद**

नहीं भेव जानैं । कहा आइ हानैं ?
किती दूर डेरा ? नहीं थान हेरा ।। २५ ।।
कटैं शत्रु अंगा । किसू सीस भंगा ।
कर्यो हाथ कांहू । गिरैं भूम मांहू ।। २६ ।।
किसू जंघ काटैं । असी[3] श्रोण चाटैं ।
कटे कंध कां के । करे दोइ फांके ।। २७ ।।
तुरंगान भंगा । चढैं खग्ग संगा ।
भए रुंड मुंडा । कटे कांहु तुंडा ।। २८ ।।
प्रचंडैं घुमंडैं । करे खंड खंडैं ।
पिछारी तमाचा । हत्यो बीर राचा ।। २९ ।।
गए आप छोरी । भए सैन ओरी ।
रिपु आप मांही । पछानैं सु नांही ।। ३० ।।

---

1. तुणीर 2. तीर 3. तलवार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चलैं खड्ग खंडै। करैं दोइ खंडे।
पर्यो भूर रौरा। कटे कोइ ठौरा ॥ ३१ ॥
किते भाज चाले। न देसं संभाले।
गुरू सैन जांही। बरै आनि मांही ॥ ३२ ॥
खरे सावधाने। जबै शत्रु जाने।
हतैं तांहि गोरी। कि खडगं स जोरी ॥ ३३ ॥
भए मूढ अंधे। मनो काल फंधे।
जहां जाहिं भै ते। तहां होइं छै ते ॥ ३४ ॥
मरे आप मांही। बचैं प्रान नांही।
भई घोर राती। करी भूमि राती[1] ॥ ३५ ॥
परे सूर घोरा। भयो खेत घोरा।
कराहैं बिसाला। जिन्हैं घाव घाला ॥ ३६ ॥
रच्यो जोध दाऊ। मरे घाइ घाऊ।
घरे ह्वै किनारे। कटंते निहारे ॥ ३७ ॥
सुने शत्रु रौरे। भए जानि बौरे।
पिता पूत मारा। न होई संभारा ॥ ३८ ॥
महां अंधकारा। परै भूर पारा।
थके पंथ भारी। दुखी एक बारी ॥ ३९ ॥

**तोमर छंद**

तुरकान सैन न चैन। दुखकार बीतति रैन।
तजि प्रान बीर विशेष। सम म्रितु जे अविशेष ॥ ४० ॥
कछु थोर सैन रही जु। मन त्रास दीरघ भी जु।
बिसुवासु है कित नांहि। सभि मारते दृष्टाहिं ॥ ४१ ॥
बड घोर आपद पाइ। नहिं सूझ बूझ उपाइ।
किन शसत्र दीनसि डारि। किम ह्वै सकै न संभारि ॥ ४२ ॥
किन सीत ते ठर पाइ। छुटि आप आयुध जाइ।
बहु त्रास औ हिम[2] दोइ। इन ते सकंपन होइ ॥ ४३ ॥
उतसाहु ओज बिहीन। तजि शसत्र होयसि दीन।
सिर पाग ते बिन कोइ। तन घाउ घूमति जोइ ॥ ४४ ॥
इक जे बहादुर बीर। थित होइ त्याग सरीर।
मरि सामुहे रण मांहि। सुर लोक मैं सुख पाहिं ॥ ४५ ॥

1. धरती लहू से लाल हो गई 2. सर्दी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गन स्याल[1] आमिख खाति। लगि घाव को बिललाति।
किह दीर हीन सरीर। तजि धीर को बड भीरू ॥ ४६ ॥
गुर क्रोध ते अस हाल। तुरकान सैन बिहाल।
बहु आपदा परि सीस। सम कौन ह्वै जगदीश ॥ ४७ ॥
परि काल फांस अचेत। लखि न भाजन भेत।
रूकि चार ओर कुथांइ। बिन जान प्रान बिलाइ ॥ ४८ ॥
तुरकानि होति बिनाश। तम नाश संग प्रकाश।
निस बीत गी इस रीति। उत शत्रु की बिपरीत ॥ ४९ ॥

दोहरा

कुछकु बचे सभि मरि गए भाजे कोइ बिहाल।
सावधान हुइ गुर उठे, अरणोदय के काल[2] ॥ ५० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे 'जुद्ध प्रसंग' बरननं नाम खषट चतवारिंसती अंशु ॥ ४६ ॥

1. गीदड़ 2. प्रभात के समय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४७

# जुद्ध प्रसंग

**दोहरा**

मरति परस्पर तुरक गन भई भोर तबि आइ।
दस हज़ार लशक़र रह्यो अपर खपयो दुख पाइ ॥ १ ॥

**निशानी छंद**

बीस रु पंच सहस्र दल तम महिं इम नाशा।
जिम तम को सूरज हत्यो करि दीनि प्रकाशा।
जिम उडगन सगरे दुरे नहिं देहिं दिखाई।
तिम तुरकाना छपि गयो, जिन धूम मचाई ॥ २ ॥

बडी नींद सुपते परे रण खेत मझारा।
दीरघ मग ते थकति भे जनु श्रम निरवारा।
गिरे तुरंग तुरंग पर धर पर धर ब्रिंदा।
शसत्र बसत्र बिखरे परे जनु बीज बिलंदा ॥ ३ ॥

ललाबेग लशकर पिख्यो जबि भयो प्रकाशा।
अलप अहैं बहुते मरे तजि जै बिस्वासा।
देति कितिक सुध आनि करि अमको सिरदारा।
सहित सैन के खपि गयो नहिं परहि निहारा ॥ ४ ॥

तिसी रीति पुन दूसरो तीसर सुधि दैहै।
मरे अनिक सैनापती सभि सैना छैहै।
दूर हुतो रण खेत ते सुनि सुनि बिसमायो।
ऐतो लशकर किह हत्यो नहिं परयो लखायो ॥ ५ ॥

इत उत करहि बिलोकिबो चित चिंत बिसाला।
भगनी-पुत्र समीप थित बोल्यो तिस काला।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातुल[1] ! क्या देखति खरे रण समैं बिचारो।
होइ न अस रिपु आइ इत निज ओज संभारो ॥ ६ ॥
मरे सु गए न आइं फिर. जीवत हैं जेई।
तिनहुं जतन करिबो बनहि, दाने बड तेई।
चढ़े हुते हम लरन को नहिं खाना खाने।
मारन मरणो काज रन क्या चिंता ठाने ॥ ७ ॥

ललाबेग सुनि पुनि भनयो 'क्यों नहीं बिचारो ?।
चौथो भाग सु दल रह्यो त्रै भाग सु मारो।
कहां बिजै अबि होइगी रहिगे भट थोरे।
लख्यो न शत्रु भेत को डेरा कित ओरे ॥ ८ ॥

आइ अगाऊ रोक करि तम महिं दल मारा।
कटे आप महिं शसत्र गहि नहिं करी संभारा।
कासम बेग अरु शमस बेग दोनहुं सुत तीरा।
भ्राता कंवरबेग ढिग बोल्यो धरि धीरा ॥ ९ ॥

'कहां करहिं, लशकर मर्यो, करि कुमति मरायो।
थकति छुधति पारा पर्यो, कहि भेर करायो।
शत्रु तपति पावक[2] निकटि सभि बिधि बिसरामे।
उठति तुरति तजि तुपक गन हति पठि जम धामे ॥ १० ॥

मैं बहु बिधि बुधि करि रह्यो नहिं बनयों उपाई।
नीठ नीठ इक तुपक भट रण सके चलाई।
उकसे हाथ न सीत ते रिपु मिलि समुदाया।
खड़ग प्रहारे आनि करि लशकर बिकुलाया ॥ ११ ॥
जाने परे न अपर पर कटि आपस मांही।
बिना नीति ते लरन रन जै[3] पावति नांही।
अबि तुम बिनस्यो जानीए, पारा[4] हुइ थोरा।
हुते हेत दुइ मरन के सो रहे न घोरा ॥ १२ ॥

छुधति श्रमति लशकर अहै सो मिटहि न जै है।
अबि हटिबो नहिं बनति है रिपु सिर पर लै है।
देहु दमामे चढ़हु सभि देखहु रण ओरा।
रौर पर्यो आवति उरे, घाल्यो बड जोरा ॥ १३ ॥

---

1. मामा 2. अग्नि 3. विजय 4. पाला, सर्दी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बेगलला जानी तबै इह नीक बखानै।
अबि क्या होवति जतन कुछ रिपु गन रण हानैं।
चढ्यो आप सभि संग लै हुइ कै समुहाई[1]।
चाहति भा रण खेत महिं मैं करौं लराई॥ १४॥
इत तौ इह चढ़ि करि चल्यो बड शोर उठंता।
बजे दमामे सँकरे उतसाह धरंता।
आवति भा रण भूमिका, कोसन लगि हेरा।
मरे परे हय सूरमे थल घोर घनेरा॥ १५॥
आमिख श्रोणति छुटति बहु बहि चाल्यो सारे।
अरुण बरण[2] की चूनरी अवनी जनु धारे।
पंछी उड चहुं दिशा ते, बाइस, ग्रिझ आए।
काक आदि आमिख भखी भरमहिं समुदाए॥ १६॥

जंबुक त्रिपति पुकारते खायो मन भायो।
मनहुं असीसां देति गुर, लखि हम त्रिपतायो।
ललाबेग बिसम्यो पिखति चहुंदिशि भय माना।
'या खुदाइ! इह क्या भयो, किम लशकर हाना'॥ १७॥
छुटति शलख बड रौर भा थिरि जोध लरंता।
तुरकानी सैनी घनी आई दृष्टंता।
शसत्र बसत्र बहु मोल के हय थकिति बडेरे।
दिपति बिभूखनि जिनहुं के बहु कंचन केरे॥ १८॥
इक सऊर[4] दौर्यो गयो गुर ढिग सुधि दीनी।
'महाराज! तुरकान की सैना बड चीनी।
सभि उमड़ी रिस बहु करी रन खेत मझारा।
लरति जोध जाती, मलक उतसाहु उदारा॥ १९॥
बाकी रहे न तुरक अबि जीवति सभि आए।
मरे परे बहु कोस लगि असु भट समुदाए।
अबि प्रकाश भा दिखति है एंते किन मारे।
परे तुरंग पर तुरंग बहु धर पर धर डारे॥ २०॥
तबल नगारे गन बजैं होयहु भट भेरा।
भई प्रभाति प्रकाश महिं रिस कीनि घनेरा।

1. सन्मुख 2. लाल रंग 3. गीदड़ 4. सवार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि सगरी सुधि सतिगुरू असु चढ़े सुहेले ।
चोट परी रनजीत पर भट आयुध[1] ले ले ।। २१ ।।
छेरि तुरंगम को चले नहिं बिलम लगाई ।
आइ थिरे ढिग जोध के जहिं मचति लराई ।
दूत हसन खां सतिगुरू निज निकटि बुलायो ।
ललावेग कहु कहां है ? जो चढ़ि करि आयो ।। २२ ।।

सुनति निहारे सकल तिन जे चिन्हं महाने ।
वरण बरन की वैरखां निज निज अगुवाने ।
कहनि लग्यो सुनीअहि प्रभु ! ऊपर पुसतीना ।
सिर पर कंचन खोद[2] जिह दमकहिं दुति भीना ।। २३ ।।

ज़री बसत्र की कुछ बडी जिह दिपति पताका ।
सुरखा बली बिलंद हय[3] बड बेग सु जांका ।
वात करति बूझति तुमहिं करि हाथ उचेरा ।
ललाबेग सो जानीअहि, उर गरब घनेरा ।। २४ ।।

वाम दिशा ते खरो सो कंवर बेगा ।
तुरकी तुरंग कुमैत है बहु चलहि सु वेगा ।
भ्राता इसको अलप है बड बीर कहावै ।
दानशवंद बिसाल ही बहु दाव बतावै ।। २५ ।।

पिखहु दाहनी दिशा महिं सबज़ा बड घोरा ।
नाम काबलीबेग इस राखहि बड ज़ोरा ।
आयुद्ध बिद्या बहुत ही चिरकाल कमाई ।
करति पटेबाज़ी अधिक गन पिखी लराई ।। २६ ।।

ललाबेग मातुल लगहि नित रहि इस तीरा ।
मलति रजतपण[4] हाथ महिं बलि अधिक सरीरा ।
इहु सनमुख जबि लरै गो मारै समुदाई ।
हतहु आप इस प्रथम ही नहिं सुभट खपाई ।। २७ ।।

दोनहुं इस के सुत खरे इक कासम बेगा ।
शमसबेग सुत दूसरो जिस के कर तेगा ।
प्रथम गोल को बांधकै इहु चहति लराई ।
परे आनि मुख काल के क्यों हूं न बचाई ।। २८ ।।

---

1. हथियार 2. टोप 3. लाल रंग का घोड़ा 4. रुपया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनहु गुरू जी ! दूर लगि नहिं द्रिष्टि आवै ।
धर पर धर मरि करि परे तिन कौन गिनावै ।
चौथे भाग न चमू[1] अबि सभि सुगम संघारो ।
तुम आगे को अरे नहिं मैं भले बिचारों ।। २९ ।।

गमने तुल दल शलभ को करि मारो मारो ।
अबि इहु खरे उदास हैं तुम बिलम बिसारो ।
श्री सतिगुर बिकसे सुनति कर धनुख संभारा ।
तीर निकार्यो खर बडो तकि कै तबि मारा ।। ३० ।।

ललाबेग के सीस पर जो कंचन केरा ।
तकि मारयो तिसकां तबहि अवनी पर गेरा ।
पिखि करि बिसमे हलचले इत उत को होए ।
खरखपरा[4] धरनी गड्यो देखे सभि कोए ।। ३१ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे 'जुद्ध प्रसंग' बरननं नाम सप्तचतवारिंसती अंशु ।। ४७ ।।

1. सेना 2. तीव्रा तीर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४८

## जुद्ध प्रसंग

**दोहरा**

सिर ते कंचन[1] खोद जबि पगीआ सहित गिराइ।
नगन मूंड मूंड्यो हुतो पिखि सभि गे बिसमाइं ॥ १ ॥

**निशानी छंद**

इति उत सगरे हलचले कुछ त्रास उपंना।
ललाबेग लज्जति भयो मानहुं मन हंना।
कटि को पट झटपट ठट्यो लटपटा लपेटा।
झपट बाग दबट्यो तुरंग सटक्यो मुगलेटा ॥ २ ॥
कुप्यो बिलोचन रकत करि कहि भुजा उठाए।
'क्यों न करति हेला अबहि मारहु समुदाए।
इक इक छोरि तुफंग को खैंचहु खर खंडे।
करति चलहु सिर धर जुदे हय वेग प्रचंडे ॥ ३ ॥
सुनि आइसु को तुरक भट बड मुगल रिसाए।
मंडति मुंड बिलंद जिन बड शसत्र उठाए।
क्यों हूं अटकी पाग सिर टेढी नित धारे।
ज़रीदार बड छोर को पृष्ठ[2] तक डारे ॥ ४ ॥
आमिख भक्खी अधिक ही बहु करहिं अहारे।
सुरापान को प्रेम बड मानी मतवारे।
गौर बरण सभि के अहैं सूखम पट सेता।
बहुते रखहिं कमान को सर हतने हेता ॥ ५ ॥
किस किस निकटि तुफंग हैं, किह तोमर धारा।
किन किन लीनहु म्यान ते करवार[3] दुधारा।
जमधर फेंटन[4] सभिनि के, बोलति निज बोली।
करयो नेर गुर सैन सों छूटति सर गोली ॥ ६ ॥

---

1. लाल 2. पीठ 3. तरवार 4. कटार



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दुती पठाननि की चमूं बड ओरड़[1] आई।
बड़े बहादुर की जिनहुं सभि दें वडिआई।
छोरति ब्रिंद तुफंग को चहिं मेल दुहेला।
मारि मारि बक हाइ हूह कीनसि बड हेला ॥ ७ ॥

इति सतिगुर करि शीघ्रता ढिग जोध हकारा।
अरध चमूं निज संग लै हूजहि अबि न्यारा।
हम सनमुख इस लरहिंगे झालहिं बड हेला।
दक्खन दिशि ते तुम परहु दे रेलु रु पेला[2] ॥ ८ ॥

सुनि श्री हरिगोविंद ते भट जोध बखाना।
तुम प्रताप सूरज उद्यो तुरकन तम हाना।
कहां शकति इन मृगन गन, गजराज बडेरे।
केहरि के सनमुख अरहिं, हुइ सकहिं न नेरे ॥ ९ ॥

कहि कहि चरन सरोज को म्रिदु चारू बिलोका।
बंदनीय बंदति भयो घोरा पुन रोका।
द्वै सहंस्र कुछ नून भट ले करि हुइ न्यारो।
चढ्यो बरोबर रिपुनि के मारति ललकारो ॥ १० ॥

**रसावल छंद**

भयो नेर सैना। कुपे लाल नैना।
तुफंगानि छोरी। परी मार गोरी ॥ ११ ॥

हलाहल होई। भई सूर ढोई।
मचे बीर धीरा। चले खड्ग तीरा ॥ १२ ॥

तुरंगानि मेला। भयो भूर हेला।
मच्यो रौर भारी। बकैं 'मार मारी' ॥ १३ ॥

किनूं मारि नेज़ा। करी भूम सेजा।
कि सारी[3] संभारी। सु ऊचे उभारी ॥ १४ ॥

लगै बीर देही। सुता नाग[4] जेही।
चले तीर तीखे। बिखीचैं सरीखे ॥ १५ ॥

परैं पार अंगा। गिरैं प्रान भंगा।
किनूं छोरि गोरी। रिपु देहि फोरी ॥ १६ ॥

---

1. उमड़ कर 2. धक्का 3. तलवार 4. नागिन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किनूं फेरि घोरा। गहे खग्ग घोरा।
कटे कंध गेरे। धका धक्क भेरे॥ १७॥
कट्यो मुंड कांहू। परे भूम मांहू।
कटे पाइ हाथा। त्रिखी तेग साथा॥ १८॥
किसी तुंड[1] खंडा। लगे दीह खंडा।
भए छिन भिना। किसी भैं उपंना॥ १९॥
हथा वत्थ होए। रसं बीर भोए।
छिनं एक लागे। भए लाल वागे[2]॥ २०॥
दुहूं ओर भारे। जुझाऊ नगारे।
बाजे और वाजे। सुनैं सूर गाजे॥ २१॥
जुटे आप मांही। फिरैं फेर नांही।
तुफंगैं तड़ाकै। सु गोरी सड़ाकै॥ २२॥
लगै मुंड छंडी। मनो फूट हंडी।
कटी बाहु कोई। परी तीर डोई॥ २३॥
वही मीझ सेता। कड़ी खान हेता।
तहां प्रेत भारे। मनो सूपकारे॥ २४॥
रसोई बनावैं। किते बैठि खावैं।
कपालैं बिसालैं। लहु पान वालैं॥ २५॥
खिचैं आंत्र कोई। गरे पाइ सोई।
मनो फूलमाला। भले डालि चाला॥ २६॥
भखैं मास फारे। अघावैं डकारें।
मिले स्याल ब्रिंदा। सु खावैं बिलंदा॥ २७॥
घनी जोगनीआं। महां मोद कीआ।
भरैं खपर लोहू। करैं पान ओहू॥ २८॥
फिरैं हूर गैनं। सु धारे सु नैंनं।
मरे कोप धारी। वरैं ओप भारी॥ २९॥
चढावैं बिमाना। करैं अग्ग्र गाना।
घनो मान ठानैं। रिझावैं महानैं॥ ३०॥
भरैं अंक ताहूं। करैं मोद माहूं।
मुखं चंद बोलैं। लुभावैं कपोलैं॥ ३१॥

---

1. मुँह 2. पोशाक लाल हो गई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनो काम सीसै। अमी ताल दीसै।
बडे चारू द्रिग्गं। मनो बाल म्रिग्गं।। ३२ ।।
करे श्याम अांजे[1]। भली रीति मांजे।
नचैं खंजनं से। सु इंदीबरं से।। ३३ ।।
लुभावैं सु बीरं। फिरी आनि तीरं।
मनो सीस सांटे। बरैं हूर वांटे।। ३४ ।।
चले तीर सीधे। बडे बीर बीधै।
भयो देखि हल्ला। रणं खेत मल्ला।। ३५ ।।
गुरू चाप[2] लीना। कठोरैं जु पीना।
सरं[3] जोरि छोरे। रिदै शत्रु फोरे।। ३६ ।।
वधै जौन अागे। तिसै बान लागे।
परैं पार तांहूं। लगै और मांहूं।। ३७ ।।
दुति बेधि जावै। त्रिती फेर घावै।
लगै चौथ जाई। करै पंच घाई।। ३८ ।।
इसी रीति मारे। सु तीरं करारे।
उडैं नाग मानो। करैं शत्रु हानो।। ३९ ।।
गुरू कोप धारा। तजी तीर धारा[4]।
दड़ादाड़ गेरे। कराहैं घनेरे।। ४० ।।
तजे प्राण डारे। सु पैरं पसारे।
बमैं श्रोण तेई। रिदे फूट जेई।। ४१ ।।
परे धूल मांही। जमं धाम जांही।
गुरू लाल नैनं। कहे ऊच बैनं।। ४२ ।।
करो दुष्ट नाशं। हतो जीत आसं।
नहीं जानि दीजै। इहां गेर लीजै।। ४३ ।।
करयो बाक् जोई। सुनयो सूर सोई।
मनो ओज दीने। सवाधान कीने।। ४४ ।।
खिचे खड़ग खंडे। दुधारे प्रचंडे।
कुदावैं तुरंगं। कटैं शत्रु अंगं।। ४५ ।।
नहि जानि देते। रखैं जंग खेते।
ललाबेग धायो। सु चाहे हलायो।। ४६ ।।

1. नील कमल। 2. धनुष 3. तीर 4. तीरो की बौछाड़

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पलावौं अगारी। करयो जोर भारी।
परे हूह दै कै। नगारे बजै कै ॥ ४७ ॥
गुरू फेरि घोरा। तजैं तीर घोरा।
बिधैं पांच साता। परैं प्रान घाता ॥ ४८ ॥
फिरैं छूछ घोरे। ज़ीन ज़ीन बोरे।
अलंकार वारे। हरेखा पुकारें ॥ ४९ ॥
परयो खेत भारी। करे मार मारी।
गिरे शस्त्र लागे। नहिं पैर भागे ॥ ५० ॥
खरे प्रान त्यागे। लहू रंग पागे।
भए लाल बागे। तऊ कोप जागे ॥ ५१ ॥
तछामुच्छ होई। कटी बांहि दोई।
किसू पाइं काटे। कटे सीस साटे ॥ ५२ ॥
गुरू जुद्ध कीना। रणं रंग भीना।
उतै जोध जोधा। परयो आइ क्रोधा ॥ ५३ ॥
खचा खच्च खंडे। चलाए प्रचंडे।
कटे मुंड तुंडे। भए खंड खंडे ॥ ५४ ॥
गनं अंग भंगे। सु डारी तुफंगे।
जम्यो श्रोण मुष्टं[1]। हते ब्रिंद दुष्टं ॥ ५५ ॥
दुपासे लराई। सु मारं मचाई।
फिरैं शत्रु दौरे। मनो होइ बौरे ॥ ५६ ॥
महां धूम माची। लहू धूलि राची।
भयो लाल गारा। भजैं हैं मंझारा ॥ ५७ ॥
ललाबेग जोरा। करयो है न थोरा।
तऊ राखि खेतं। गुरू ह्वै सुचेतं ॥ ५८ ॥
नहीं पाइ हाला। बड़ा हेल घाला।
पर्यो जोध आई। महां घाउ घाई ॥ ५९ ॥
रिपु हानि चाले। मरे ह्वै बिसाले।
गुरू तीर मारैं। करैं एक वारै ॥ ६० ॥
अनेकानि घावैं। गिरे प्राण जावैं।
इमं मार कीनी। भए सैन हीनी ॥ ६१ ॥

1. मूठ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

झटा झट्ट बाहैं। कटैं अंग लाहैं।
गिरे बीर घोरा[1]। भई भूमि घोरा[2] ॥ ६२ ॥

**दोहरा**

कहां लगे बरनन करौं माच्यो जिम घमसान।
हानि भई तुरकान की पाछे हटे निदान ॥ ६३ ॥
संभारे सूरा सरब इक सहंस्र हय संग।
नौ सहस्र रणखेत महिं को तरफति को भंग ॥ ६४ ॥
इक सहंस्र गुर सूरमे मरे करति बड जंग।
जनम मरन बंधन महां अंग संग सो भंग ॥ ६५ ॥
सरब गरब तुरकनि हरयो ऐसी मार मचाइ।
सरब शकति धरि सतिगुरू करहिं जथा मन भाइ ॥ ६६ ॥

इति श्री प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'जुद्ध प्रसंग'** बरननं नाम **अष्टचतवारिंसती अंशु** ॥ ४८ ॥

1. घोड़ा 2. भयानक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ४९

# काबल बेग बद्ध प्रसंग

दोहरा

थकति[1] भए गन सूरमे प्रहारति वार।
गए तुरंगम हुस घने भयो खेत विकरार॥ १॥

तोटक छंद

तरवार हज़ारहुं नंग परी।
जिन रंग सुरंगति श्रोण भरी।
बहु टूटि गई लगि लोहनि[2] पै।
कबज़े परिभिन असोहन[3] पै॥ २॥

तिम पुंज तुफंगनि टूटि गई।
गन कासट कुंद निकंद भई।
बहु सावत कंचन काम करी।
बिन सूरनि ते रण भूम परी॥ ३॥

धर पै धर ज्यों इह कंध चिनी।
किहुं बांहुं कटी किहुं जंघ हनी।
तुरकानि चुतीस हज़ार मरे।
गुर सूर हज़ारनि प्रान हरे॥ ४॥

इक जाम चढ्यो दिन जंग भए।
अस मार मची भट प्रान हए।
जुग जाम[4] कछु घट रैन हुती।
लरिकै श्रम ते जनु सैन सुती॥ ५॥

गन दुंदभि संग तुरंग परे।
गहि डंक बजावनहार परे।

---

1. थक गए 2. शस्त्र 3. बुरे लगते हैं 4. दो पहर



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुतलीनि सु खेल मनो करिकै ।
तर ऊपरि फेरि दई धरिकै ।। ६ ।।
लहि गंध लहू मुरछाइ परे ।
मुख नैन पसार कितेक मरे ।
रज[1] श्रोणति पंक धसे मरिकै ।
बहु घाइल घोरनि ते दरिकै ।। ७ ।।
गुर सैन खरी इक ओर भई ।
गन दुंदभि चोबनि मारि दई ।
थिर वेगलला हुइ दूर खरा ।
मुरझाइ गयो मुख, जंग करा ।। ८ ।।
समुदाइ चमूं नहिं पास पिखे ।
पछताइ खरो मन चिंत बिखै ।
इह क्यामत आइ न जंग भयो ।
नहिं काज सरयो दल प्रान हयो ।। ९ ।।

गुर तीर चमूं थित दीह[2] दिखै ।
सरदार रहे मम सैन बिखै ।
धुजनी[3] लघु लागति मोहि अबै ।
करि जंग महां तजि प्रान सबै ।। १० ।।

गुर कौ न गह्यो नहिं मारि लयो ।
करि हेल घनो न पलाइ दयो ।
नहिं खेत तज्यो अर बीर रहो ।
बहु मार प्रहारनि शसत्र गहे ।। ११ ।।

सुनि काबल वेग बिसाल बली ।
निज मातुल[4] सों कहि धीर भली ।
अबि होहि कहां पछुतावन ते ।
किम बात बनै हटि जावन ते ।। १२ ।।

गहि शाहु सभा शमशेर लई ।
कहि बाक् अयो हय ल्याउं जई ।
गुर को गहिबो नतु मार दिजै ।
इहु शाहु कही उर जानि लिजै ।। १३ ।।

1. धूल 2. बहुत 3. सेना 4. मामा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मरि बाद गयो समुदाइ दलं।
नहिं काज सरयो नहिं कीनि बलं।
अबि एकल मैं चल जाति भले।
ललकार करौं गुर को इकले ॥ १४ ॥
बिदत्यो जग बीच बहादुर है।
सुनि बाक करे न निरादर है।
हुइ एक खरो मम साथ लरै।
गुर को जसु चंद जहान चरै ॥ १५ ॥

अस जंग करौं गुर संग घनो।
गहि लेहं किधौं, शमशेर हनों।
बल मोहि वडो तुम जानति हो।
थिर हेरहु मैं रण ठानति हो ॥ १६ ॥

कहि मातुल को इम बीर बली।
चहि जानि धरै रण चौंप भली।
तबि कंवरबेग पुकार कह्यो।
'गुर ओज महां चित तैं न लह्यो ? ॥ १७ ॥
नर ब्रिंदनि ते सुनि जानति हौं।
इस कारन तोहि बखानति हौं।
गरबो न रिदै सवधान बनो।
करि घात अनेकनि दाव घनो ॥ १८ ॥

बचि आप प्रहार करो गुर को।
बिन आलस त्रास[1] करो उर को।
तुम डील दराज[2] बली जिम है।
हरिगोविंद पीर सुनयो तिम है ॥ १९ ॥

अबि जाहु खुदाइ सु ख़ैर करै।
इहु कारज तो बिन नांहि सरै।
कित हूं कित छूट तुफ़ंग रही।
सभि काबल बेगहि घात लही ॥ २० ॥
बलवान तुरंगम छेरन कै।
गमनयो गुर संमुख प्रेरन कै।

1. डर 2. लम्बा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ढिग दूत खरयो तिंह देखि जबै।
किय बूझन तांहि कि संग तबै ॥ २१ ॥
इह कौन अहै ? असु फेरति है।
हित संमुख आवन प्रेरति है।
निज चातुरता दिखरावति है।
गहि बाग तुरंग नचावति है ॥ २२ ॥

सुनि दूत कह्यो बड बीर भला।
इस मातुल लागति बेग लला।
तुम एकल संगहि जंग चहै।
मग आवति भी बहु बार कहै ॥ २३ ॥

बल को इह मान धरै मन मैं।
बहु दाव लखै बुधि ते रन मैं।
पटबाज़नि सों नित मेल करै।
चिरकाल लगै तिन संग अरै ॥ २४ ॥

इस हेरन हेतु सु आवति है।
गति मंद तुरंग चलावति है।
इम बात सुनावति दूत खरयो।
तबिलौ तिन आइकै नेर करयो ॥ २५ ॥

कहि काबलबेग 'गुरु ! सुनीए।
भट नाहक आन नहीं हनीए।
तुम पीर सु लोक उबाचति हैं।
चित बांछति को सभि जाचति हैं ॥ २६ ॥

रण दुंद इहां अबि मांगति हौं।
तुम सों लरिबे अनुरागति[1] हौं।
इहु कामन पूरन मोर करो।
इत होइ जुदे मुझ संग लरो ॥ २७ ॥

थिर होइ बिलोकन लोक करैं।
तबि लौ पख बाद न वीर धरैं।
सुनि श्री हरिगोविंद शत्रु गिरा।
बडि बीर बहादुर कोप करा ॥ २८ ॥

---

1. चाहता हूँ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'हम त्यार खरे चित्त चाहति हैं।
तुरकात्ति पनो सभि गाहति हैं।
अरि को न अरै बल को न धरै।
रण हेरति कातुर[1] भाज धरैं॥ २९ ॥

समुहाइ[2] थिरे नहिं धीर धरी।
जिम होति बधू नव[3] लाज भरी।
हथ्यार दिखावन हेति धरे।
मरि कूर गए नहिं अग्र अरे॥ ३० ॥

तुव साध अहै, अस बाक कह्यो।
सभि सैन बिखै इक बीर लह्यो।
हमरी चित चाहि पुजावन को।
अबि आइ करो मन भावन को॥ ३१ ॥

सुनि काबल बेग बडो हरख्यो।
गुर बीर बहादुर को परख्यो।
'तजि देहु तुरंगम भूमि थिरो।
गहि ढाल, क्रिपाननि वार करो॥ ३२ ॥

गुर श्री हरिगोबिंद बीर महां।
उतरे हय ते तत्काल तहां।
कर बाम[4] बिखै गहि ढाल लई।
उतसाह बडो चित चाहु जई॥ ३३ ॥

अविलोकति काबलबेग जबै।
तजि दीन तुरंगम तेज़ तबै।
जुग ओरनि[5] के भट ब्रिंद थिरे।
हथ्यार प्रहार न कोइ करे॥ ३४ ॥

उत बेगललादिक हेरति हैं।
'गुर जीत लिजै' कहि प्रेरति हैं।
मन जानति बीर सुसा सुत[6] को।
पटि बाज़ सुचेत बली अति को॥ ३५ ॥

---

1. कायर 2. सन्मुख 3. नव-विवाहिता 4. बाँया 5. दोनों ओर के 6. बहन का पुत्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बड तूरनता रण धारति हैं।
न संभारन दे अरि मारति हैं।
नहिं छोरहिगो, अबि घात करै।
शुभ बात बनी गुर एक लरै।। ३६ ।।
चित बीच बिचारति बाक कहै।
सुनि काबलबेग लरंति अहै।
भुज तोर बिखै जय आस रही।
अबि और अलंब रह्यो न कहीं।। ३७ ।।
इत जोधबली गुर तीर खरे।
भट और बिधी सीस[1] आदि थिरे।
गुर पै बिस्वास महां धरि हीं।
बिन देर संघारन को करि हीं।। ३८ ।।
इह क्या गुर अग्र करै थिरता।
गज मत्तहि केहरि सों भिरता।
खगराज[2] कहां, चटका[3] सु कहां।
समता चहि ही, गरबाति महां।। ३९ ।।
रण दुंद बिलोकन हेतु खरें।
चहिं मूढ गुरू हतिबे कि धरें।
गहि ढाल क्रिपान फिरयो गरबे।
दिखरावति चातुरता सरबे।। ४० ।।
करि शीघ्र सु फांदति ओज धरे।
इत ऊत फिरयो हुइ अग्र खरे।
तिम श्री गुर चंचलता करिकै।
करि दांव फिरै असि को धरिकै।। ४१ ।।
कबि संमुख होइ तकावति हैं।
चहिं मारन आप बचावति हैं।
सम दोनहुं दाव बिचारति हैं।
उछलंति महां पग धारति हैं।। ४२ ।।
गुरवाक कह्यो करि वार पुरा।
नतु ह्वै पछुतावन नांहि करा।

1. विधि चंद 2. गरुड 3. चिड़िया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मम वार चले नहिं बाचहिंगो।
रज श्रोणति दीरघ राचहिगो॥ ४३॥

तबि काबलबेग शिताब करे।
इत ऊतहिं फांदति वार करे।
गुर छार[1] करि सु बचाइ गए।
जबि छूछ करयो तबि क्रोध भए॥ ४४॥

करि नेर बहोर प्रहार करयो।
नट के सम फांदति बेग धरयो।
पुन ढालि सु ऊपर रोक लयो।
गुर आपनि वार प्रहार कियो॥ ४५॥

तर नंम्रित भूतल साथ छुयो।
लघुता करि दाव बचाइ गयो।
करवार उभारति वार करयो।
तिरछी सुतिछी हति मान भरयो॥ ४६॥

बहु शीघ्र करे सु बचाइ रहे।
पिपला[2] खग अग्र सरीर छुहे।
छुटि श्रोण बह्यो गुर चीर भिगे।
पिखि चाव लग्यो उर कोप जगे॥ ४७॥

भभकार परे सम शेर तबै।
चमकै शमशेर बिलोकि सबै।
करि ढाल सु अग्र दबाइ लयो।
करि शीघ्र तऊ भजि दूर भयो॥ ४८॥

पिखि बेगललादिक 'साध' कह्यो।
करि घात किधौं गुर लेहु गह्यो।
नहिं जानति मूढ़ खिलावति हैं।
क्रित मानव की मन भावति हैं॥ ४९॥

चपलंति चल्यो पुर नेर कियो।
लघुता दरसाइ हंकार हियो।
प्रथमैं सम चाहति वार करौं।
धर द्वै करिकै धर पै सूधरौं॥ ५०॥

1. छाल 2. चोले की कली

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करवार संभारि उभारि महां।
तकि वार प्रहारनि वेग लहा।
गुर अग्र भए बिन त्रास तबै।
दिश दोइनि के भट ठांढि सबै॥ ५१॥

रिपु ढालहिं ढाल भिराइ दई।
करि ऊच उसारति शीघ्र लई।
बहु काबलवेग बचाइ रह्यो।
बल साथ क्रिपान महान बह्यो॥ ५२॥

लगि तुंग सिकंधहि चीर दयो।
अटक्यो न कहूं चलि पार भयो।
जिम होति जनेऊ परयो गर मैं।
तिम दो धर होइ् गिरयो धर मैं॥ ५३॥

भट जोध सु आदि निहारति हैं।
'गुर जै, गुर जैति' उचारति हैं।
लखि कौतक आनंद धारति हैं।
उतसाहि करे ललकारति हैं॥ ५४॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'काबल बेग बद्ध प्रसंग'** बरननं नाम **उनपंचासती अंशु**॥ ४९॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५०

# कंवर बेग बद्ध करन प्रसंग

**दोहरा**

काबलबेग सु बेग हति देखि तुरक सरदार।
सोचति चित हटि फरक[1] करि खरे दूरि लखि हार ।। १ ।।

**तोटक छंद**

पिखि काबलबेग मरयो रन मैं।
बनीआ जिम लूट लयो वन मैं।
चित बेगलला दुख पाइ घनो।
बड बीर हत्यो गुर काल मनो ।। २ ।।

अबि कौन भिरै सवधान वनै।
जुति सैन गुरू करि जंग हनै।
जिस पै बिसवास हुतो जय को।
जम धाम गयो, गुर दै भय को ।। ३ ।।

जहि काबलबेग खरो हुइबो।
थिर जंग बहादर ह्वै कुइबो ?
तिम हीन अबै रन कौन करै ?।
गहि आयुध[2] को गुर अग्र अरै ? ।। ४ ।।

मन दीन बनयो बहु बेगलला।
पिखि कंवर बेग सु धीर भला।
कहि बाक 'न चित कछू धरीए।
रण भीम[3] रचौं पिखिबो करीए ।। ५ ।।

गन शत्रुनि को तरवारनि सों।
कतलाम करों बहु वारन सों।

---

1. उसका ऊँचा कन्धा चीर दिया 2. हथियार 3. भयानक



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पंज सै असवारनि संग लए।
निज दुंदभि दोहर चोब[1] दए॥ ६ ॥

तुपकानि चलावति नेर करयो।
निज हार लखे उर कोप भरयो।
गुर के तन घाव लघु जु लग्यो।
छुटि श्रोणति चीर सु रंग पग्यो॥ ७ ॥

उतर्यो ततकालहिं जोध बली।
तिह बंधति भा पट रीति भली।
गुर शीघ्र तुरंग चढ़े रण मैं।
नहिं मानति घाव लग्यो तन मैं॥ ८ ॥

इतने महिं कंवरबेग अयो।
बहु सूरन को निज संग लयो।
कर जोरि कह्यो तबि जोध बली।
'रण आप बिलोकहु रीति भली॥ ९ ॥

मुझ आइसु देहु संघार करौं।
तुरकानि महां रिपु तेज हरौं।
ढिग दूत सु बूझन कीनि तबै।
इहु कौन अयो रण हेतु अबै ?॥ १० ॥

कर जोरि उचारनि दूत करी।
सुनिये गुर पीर रिपुनि हरी।
इह कंवर बेग सु वेग अयो।
भगनी सुत मारति कोप भयो॥ ११ ॥

लघु भ्रात लखो इहु बेगलला।
मरि है अबि संघर ठानि भला।
सुनि श्री गुर आइसु देति भए।
तुम जोध बली वड जुद्ध कए॥ १२ ॥

हति लेहु इसे जसु पाइ भलो।
गुरबाक सुने हुलसाइ चलो।
बहु सैन पठी पशचात तिसे।
चलि जाति हतै तुपकांनि रिसे॥ १३ ॥

1. नगारे पर दोहरी चोट लगाई।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिदरे बरबीर सु अग्र भए।
तजि टोल तुफंगनि छोरि दए।
कड़कारन के बड नाद उठे।
लगि गोरनि ते धर सूर लुठे ॥ १४ ॥

तबि जोध रु कंबर बेग भिरे।
हुइ संमुख तेज़ तुरंग करे।
दुहूं ओरनि तीर चलावति हैं।
हय को चपलाइ बचावति हैं ॥ १५ ॥

धनु[1] तानत कान छुवावति है।
करि पूरन शत्रु तकावति हैं।
उर रोस भरे ललकारति हैं।
भट अग्र वधै तिस मारति हैं ॥ १६ ॥

उत कंवर बेग रु जोध बली।
सर छोरनि की विधि जानि भली।
जिस के तन मैं तक मारति हैं।
विन प्रान करे धर डारति हैं ॥ १७ ॥

लगि तीर शरीरनि फोरति हैं।
करि शीघ्र खतंगनि[2] छोरति हैं।
जिम जोध प्रहारति बार घने।
तिम कंबरबेग बिसाल हने ॥ १८ ॥

करि हेल धकेलति पेलन को।
इक ठेलति ह्वै दिढ झेलन को।
जबि शत्रु अरे, टिकि जंग गयो।
थित दूर तुफंगनि छोरि दियो ॥ १९ ॥

तबि कंवरबेग बिलंद कुप्यो।
मुख लाल बिसाल कराल[3] रुपयो।
करि अग्र तुरंग नचावति हैं।
ललकारति बीर लरावति हैं ॥ २० ॥

वधि अग्र बिलोकति जोध जहां।
करि तीरनि की बरखा सु तहां।

1. धनुष 2. तीर 3. भयानक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जबि केतिक सूर गिराइ दिए।
करि हेल बिसाल सु नेर किए॥ २१॥

तबि जोध कुप्यो न सहार सक्यो।
द्रिग लाल करे अरि ओर तक्यो।
निज सेवक ते खर सांग[1] लई।
जिस मंहि बहु भारहि लोहु मई॥ २२॥

निज हाथ गही बहु तोलति है।
थित होहु अबै रिस[2] बोलति है।
बलवान तुरंगम तेज़ कियो।
दिशि कंबर बेगहि छोरि दियो॥ २३॥

गरुवी[3] खर सांग संभार लई।
जबि नेर भयो बहु ऊच कई।
तबि कंबर बेग न पाछ मुरयो।
हुइ संमुख को निज ओज करयो॥ २४॥

करवार निकारति नंग करी।
बहु कीमति लोह पुलाद खरी।
अटकै न लगी कटि जाति अयं।
चित चाहति भा रिपु घात कियं॥ २५॥

तबि लौ बल जोध संभारि घनो।
खर सांग दई तिह गात हनो।
तन बेधनि कै तबि पार परी।
निकसी बिकसी बहु श्रोण भरी॥ २६॥

झुकि झूमि झड़ाक परयो धर मैं।
रहिगी तरवार गही कर मैं।
गरुवी खर सांग निकारि लई।
कर जोध धरी छबि देति भई॥ २७॥

तन लाल बिसाल कराल सही।
लिशकै जनु नागनि लाह लही।
जिम जोगनि बस्त्र कसुंभ धरे।
बहु प्यासनि श्रोणति पान करे॥ २८।

1. बरछी 2. गुस्सा 3. भारी तथा तीखी बरछी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सभिहूंनि बिलोकति मारि लयो।
न बचावन को समरत्थ भयो।
तुरकानि चमूं पिखि कोप कियो।
गन आन परे उतसाह हियो॥ २९॥
जहिं कंबर बेग पर्यो गिरिकै।
तहिं लौं पहुंचे बल सों लरिकै।
बहु दीनसि मार तुफंगनि की।
बरखा बरखाइ खतंगनि की॥ ३०॥
इक बारहि ओरड़[1] आन परे।
भट जूझति आयुध मारि गिरे।
मरि ब्रिंद तुरंगम जंग विखै।
बहु आमिख श्रोणति बीर पिखैं॥ ३१॥
तजि खेत गए उर कातुर जै।
फिर नांहि फिरे डर आतुर जे।
तजि दीनसि आयुध धारन को।
जग कारज कीनि गवारन को॥ ३२॥
तन कंप भयो उर त्रास धरयो।
बहु बीर मरे बड स्वास भरयो।
घर जाइ मिले परवारन सों।
न सभा मुख कीनि दिखारनि को॥ ३३॥
पिखि कै गुर संघर दारुन[2] को।
भट मारति लै हत्थयारन को।
बलवान तुरंगम जोध तरे।
अरि मारन के गन काम करे॥ ३४॥
बिच जंग फिरे जिम नाचति हैं।
असवार कहे महिं बाचति हैं।
गुलकां[3] गन लागि सरीर गई।
गन अंगनि भंगति पार भई॥ ३५॥
इक भाल[4] लगी रन संमुख ते।
तजि देहि गयो छुटिकै दुख ते।
दड़ भूम गिरयो नहिं प्रान रहे।
तबि जोध संभारति ओज लहे॥ ३६॥

1. उमड़ कर 2. भयानक युद्ध 3. गोली 4. माथा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पिखि श्री हरि गोबिंद शीघ्र कह्यो।
असु काबलबेग समीप लह्यो।
दिहु जाहु अबै, असवार करो।
रण खेत रुप्यो पग नांहि टरो ॥ ३७ ॥

तबि सेवक दौरि गयो तहिंवा।
निज सैन सु जोध खरो जहिंवा।
ततकाल चढ़ो नहिं देर करो।
गुरू कीनि क्रिपा उर ध्यान धरो ॥ ३८ ॥

सुनि आइसु बंदन जोध करी।
हय पाइ नमो कर बाग धरी।
चढ़ि शीघ्र तिसी थल फेरनि कै।
हथ्यारन के हित प्रेरनि कै ॥ ३९ ॥

मन मोद भयो हति तीरनि को।
गन बेधति बीर शरीरनि को।
गुरू की दिशि ते असु ब्रिंद मरे।
तुरकाननि के तिम बीर परे ॥ ४० ॥

तिन केर तुरंगम धाइ गहे।
असुवार भए रण फेर चहे।
हय ब्रिंद तऊ हिहनावति हैं।
भट हीन सुछंदहि धावति[1] हैं ॥ ४१ ॥

**दोहरा**

इम दुहि दिशि के सूरमा मारे मरे बिसाल।
कोसनि लगि रणभूमिका जहिं कहिं महां कराल ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे '**कंबर बेग बद्ध करन प्रसंग**' वरनन नाम पचासमो अंशु ॥ ५० ॥

---

1. वीरों के बिना, घोड़े खाली फिर रहे हैं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ५१

# कासम बेग बद्ध करन प्रसंग

**दोहरा**

मार्‍यो कंबरबेग जबि भयो कष्ट चित पीन ।
ललाबेग आंसू गिरे प्रिय भ्राता बहु चीन ॥ १ ॥

**पाधड़ी छंद**

तिह सिमरि सिमरि गुन कहि बिसाल ।
गुजर्‍यो बिलंद अचरज कराल ।
मन लखै कौन इह रीति होइ ।
गिरी भार धरै नर हाथ कोइ ॥ २ ॥

लशकर बिसाल मम संग आइ ।
वरिआम[1] बीर बहु ब्रिंद धाइ ।
जो शाहु निकटि आछो कहाइ ।
जिन करे जंग नित भिरनि चाइ ॥ ३ ॥

बड दरब[2] चाकरी लेति नीत ।
बहु लखहिं दाइ अरु जंग रीति ।
इत आइ सरब ने दीनि प्रान ।
गुर निकटि सैन भट अलप जान ॥ ४ ॥

इह भयो कहाँ, नहिं जानि जाइ ।
किम मरे सरब तन घाइ खाइ ।
अबि जीत आस किस के भरोस ?
को करों जतन ? नहिं होति होश ॥ ५ ॥

लघु भ्रात हुतो कंबर दनाइ ।
सभि लरन भेत देतो बताइ ।

1. बलवान् 2. धन



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

असु कहै कौन—हे भ्रात—आइ।
तुझ बिना मोहि नहिं लरन दाइ' ॥ ६ ॥
सुनि कासमबेग सु शमसबेग।
बोले बिलंद गहि हाथ तेग।
'इह नहीं लाइकी तोहि केर।
जबि चढ़्यो शाहु ते हुई दलेर ॥ ७ ॥
बिच सभा तेग बीड़ा उठाइ।
उमराव ब्रिंद देखति बडाइ।
सिरुपाउ दीनि सभि ते वधाइ।
निज मुख सलाह हज़रत पठाइ ॥ ८ ॥
जिह शाहु हमैं सूबे बनाइ।
दौलत बिलंद जिस पास पाइ।
समदाइ तुरंगम अरु मतंग।
लशकर तमाम कहि कीनि संग ॥ ९ ॥
तिह शाहु बाज़ के लेनि काज।
कहि रवां कीनि वड दे समाज।
अबि निमक हराम बनिबो न नीक।
तिह करन काज इह बात ठीक ॥ १० ॥
श्री हरिगोविंद को गहहु थाइ।
कै शस्त्र संग रिपु जंग थाइं।
दोनहु तुरंग[1] प्रिय शाहु जोइ।
ले करि मिलाहु तबि नीक होइ ॥ ११ ॥
इम नहीं बनै तबि देहु प्रान।
रन लरन मरन हमरो इमान'।
सुनि ललाबेग मन मैं बिचारि।
इस समैं इनहुं आछी उचारि ॥ १२ ॥
अबि मरहुं आप, के लेहूं मारि।
इस ते सु भली नहिं अपर कार।
निज पौंछ आंख होयो सुचेत।
पुन भयो त्यार लरिबे सु हेतु ॥ १३ ॥
पकरी कमान कररी[2] महान।
पिखि कासमबेग कीनसि बखान।

---

1. घोड़ा 2. सख्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'तुम रहहु पीठ पर ज़ोर पाइ।
हम लरहिं जंग आगे सिधाइ'॥ १४॥

इम ललावेग ठहिराइ पाछ।
जुग भ्रात चले लरिदे सु वांछ।
दुंदभि बजाइ उतसाहु कीनि।
बाजी नचाइ रस वीर भीन॥ १५॥

नहिं गिनति थोर कै बहु सुभट्ट।
समुहाइ गमन कीनसि दबट्ट।
तीछन खतंग भीखन प्रहारि।
ईछन बिलोकि ताकति जुझार॥ १६॥

जित दिशा वधे गुर सूर जाइं।
तित दिशा पर्यो तीरनि चलाइ।
छूटति तुफंग गुलकां[1] सड़ाक।
पुन कसैं फेर तूरन तड़ाक॥ १७॥

दिश दुतिय विखै तिह अनुज दौर।
सो शमस वेग वड पाइ रौर।
गुरबीर अग्र ते मोड़ि दीनि।
आयुध प्रहार वहु मार कीनि॥ १८॥

भट रेल पेल करि हेल धाइ।
जिन केर रिदे बड रोस आइ।
तिन संग पंच सै बीर भूर।
तजि तुपक मारते क्रोध पूरि॥ १९॥

निज हार जानि बल करि बिसाल।
बड हाल चाल मेली कराल।
बहु करि उताल वारूद डालि।
बल को संभालि गज को निकालि॥ २०॥

गुलकांन ठोकि, जुग पाइ कोइ।
बारूद पलीता मेलि सोइ।
तोड़ा सु मोड़ि जोड़ैं चड़ाइ।
धरि दसतरवां[2] ततछिन चलाइ॥ २१॥

---

1. गोलियाँ 2. निकटता से

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धुखियंति पलीता बार बार।
बमियंति हुतासन[1] हति जुझार।
पिखियंति ज्वाल सुनियंति नाद।
कड़कंति दीह तड़िताऩि बाद ॥ २२ ॥

लगियंति अंग घुमियंत बीर।
गिरियंति भूमि झूमति सु धीर।
दरियंति गिरे भजियंति बाज।
तजियंति प्राण निज स्वामि काज ॥ २३ ॥

जहिं कहिं पुकार ऊचे उचारि।
सुर लोक जाति संमुख जुझार।
गन देव बधू हुलसंति आइ।
केसर सनेह निज सिर चढाइ ॥ २४ ॥

भट बरहिं आन जो देति प्रान।
लेती चढाइ सुंदर बिमान।
उतसव करंति निज ब्याह् जानि।
मिलती सु वीर मुद मानि मानि ॥ २५ ॥

इम मच्यो जंग दारून घनेर।
मिलि गए बदन भा अधिक भेर।
चमकंति खड़ग ढलकंति ढाल।
कटियंति अंग उछलंति छाल ॥ २६ ॥

खिचियंति चांप तजियंति तीर।
घलियंति घाव भजियंति भीरु।
मचियंति रौर भबकंति बीर।
बहियंति श्रोण[2] सूरनि सरीर ॥ २७ ॥

जुग भ्रात एव जबि कीनि जंग।
तबि बिधीचंद बड कोप संग।
'प्रभु करहु हुकम इन समुख जाउं।
हथ्यार मार करि ब्रिद घाउं ॥ २८ ॥

गुर कह्यो मलक जाती जि बिप्प्र।
इस लेहु संग, हति देहु छिप्प्र[3]।

1. आग उगलता है 2. लहू 3. जल्दी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुछ रहे अलप रण अंत आइ।
निज तन बचाइ दिउ रिपुनि घाइ ॥ २९ ॥

### रसावल छंद

बिधीचंद छीना। गुरू वाक लीना।
दिजं संग कीना। मनो द्रोण चीना ॥ ३० ॥

चल्यो धाइ ऐसे। छुट्यो बाज़ जैसे।
गुरू रोकि राखा। नहीं बाक नाखा ॥ ३१ ॥

अवै दीनि आज्ञा। रसं बीर पाज्ञा।
जथा शेर छोरा। गयो शत्रु ओरा ॥ ३२ ॥

तके तीर मारे। गए फोर पारे।
चल्यो वीर जेठा। गुरू सिक्ख जेठा ॥ ३३ ॥

मिले तीन धाए। रिपु दै पलाए।
परी धूम भारी। दए ब्रिंद मारी ॥ ३४ ॥

जवै सैन हाली। न हेला सु झाली।
दई पीठ चाले। नहीं को संभाले ॥ ३५ ॥

### दोहरा

आयो कासमवेग तबि बिधींचंद के तीर[1]।
कसी कमान कठोर ते तीछन भीछन तीर ॥ ३६ ॥

### चौपई

इक सिख लखू दीरघ ज्वान। गुर की सांग रखै निज पान[2]।
परे जुद्ध चाहति गुर जवै। देति संभारि निकटि हुइ तवै ॥ ३७ ॥

तिन करि क्रोध धवाई तुरंग। गरुवी सांग उठाइ उतंग।
कासमबेग लख्यो जबि आयो। खैंचि खड़ग को अग्ग्र चलायो ॥ ३८ ॥

लयो सैंहथी पर तिस वार। जबि ही बज्यो सार पर सार।
टूट्यो खंडा भयो दुखंड। राहक लख्खू रिस्यो प्रचंड ॥ ३९ ॥
रिपु को वार निफल करि दीनि। कर ते सांग प्रहारन कीनि।
लगि छाती महिं बीध्यो सारो। पुन झंझोर भूम पर डारो ॥ ४० ॥

---

1. निकट 2. हाथ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुर हेरति हरखाइ उचारा। लखू हेहरि ने रिपु मारा।
खुशी भए दीनसि बडिआई। 'अबि तुरकन की क्यामत आई ॥ ४१ ॥

नंद संघेरा रण बिच बिचरति। मुहरू रंधावा रिपु हति हति।
अरु क्रिपाल जल्लू को सूर। मारि तुरक कीने बहु दूर ॥ ४२ ॥

**दोहरा**

करी लथेर पथेर बहु घनो घालि घमसान।
करे पलावन तुरक रण लियो छुराइ मदान ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे '**कासम बेग बद्ध करन प्रसंग**' बरननं नाम एकपंचासती अंश ॥ ५१ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ५२

# भाई शमस बेग बद्ध प्रसंग

**दोहरा**

जीधा जोध प्रबोध जुध करे उथल्ल पथल्ल ।
शाहु सलेम सु अनुज जुति तुरक समूह दवल्ल ॥ १ ॥

**पाधड़ी छंद**

पिखि मरयो पुत्र इक लरति बीर ।
तुरकान सैन पर अधिक भीर ।
तबि ललावेग बड कोप धारि ।
गुर जीत होति, सकहि न सहार ॥ २ ॥
सौ सुभट संग जिस के उदार ।
नित रहति साथ बांके जुझार ।
मिलि खान पान जिन सों करंति ।
हसिबे बिलास आनंद धरंति ॥ ३ ॥

गिनीयंति जंग महिं प्रथम जान ।
सभि लखहिं शसत्र बिद्या महान ।
जिन संग बारनी[1] पान कीनि ।
तन अलंकार धारे प्रवीन ॥ ४ ॥

कुल मुगल डील गोरे दराज़[2] ।
बड मरुड मुंड मुख मास खाज ।
बहु मोल बसत्र ऊपर धरंति ।
गहि गहि कमान धाए तुरंति ॥ ५ ॥
बाहन बिसाल केतिक पठान ।
निज रखहिं आन सभि ते महान ।

1. शराब 2. लम्बे



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिन महिं बहादरी कहिं बिलंद।
चंचल तुरंग चालति अमंद ।। ६ ।।
तिन ललाबेग ले संग वेग।
बिच परयो जंग गहि तेज़ तेग[1]।
जहिं परयो पुत्र को हति शरीर।
इकवार पहुंचिबे चहिस तीर ।। ७ ।।
मुकतंति तीर, तोमर[2] उभारि।
गमनंति अग्र कहि 'मार मार'।
निज हार जानि बहु रिसति बीर।
मुग़लनि पठान महिं नीक धीर ।। ८ ।।
गुर सूर वधे दीनो सु मोर।
इक वार चुंग[3] मिलि कीनि ज़ोर।
तुप्पक तड़ाक, तीरनि सड़ाक।
किन काढि खड़ग हति ताकि ताकि ।। ९ ।।

इम घने घाल घमसान घाइ।
गिर परे सुभट बहु जंग थाइं।
पिखि पुत्र लोथ मिलि रहिसि धूर।
बहु शोक धारि जल नैन पूरि ।। १० ।।

कुछ थिर्यो निकटि नहिं दिखि सकाहि।
जनु फटति रिदा बहु कष्ट मांहि।
तबि लौ सुभट्ट जेठा प्रचंड।
बलबंड बडो चित रहि घमंड ।। ११ ।।

करि तुंद तुरंगम अग्र जाइ।
समुदाए बान मारे रिसाइ।
जहिं ललाबेग तहिं समुख होइ।
रूपि रह्यो बीर शत्रुनि परोइ ।। १२ ।।

मुगलानि बीच गरज्यो बिलंद।
बिन त्रास शसत्र गहि करि निकंदि।
चहि ललाबेग को करनि घाति।
गहि कराचोल[3] खैंच्यो रिसाति ।। १३ ।।

1. नेज़ा 2. टोली 3 तलवार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हय प्रेरि समुख किय नेर जाइ।
सिर को प्रहार दीनो चलाइ।
लगि गयो लोह पर, निफल घात।
तबि ललाबेग उर बहु रिसाति ॥ १४ ॥
निज खड़ग खैंचि कीनसि प्रहार।
हय चपल होति के लगसि वार।
कुछ तनक घाव श्रोणत चलंति।
जेठा सु बीर जेठा लरंति ॥ १५ ॥
इम खड़ग चलति मुगलानि देखि।
सभि परे आन ओरड़ि विशेख।
किह खड़ग तुपक नेज़ा उभारि।
सभि परे जाइ कहि 'मार मार' ॥ १६ ॥
घिरि गयो बीर इक सभिनि मांहि।
मुख शमस सेतु बड बैस जांहि।
सभि दिशनि झिझक बाहति प्रहार।
इक मुगल कंध करवार झारि ॥ १७ ॥
हय तरे गेरि करि कोप साथ।
पुन दुतिय दिशा हुइ खड़ग हाथ।
झझकाइ सभिनि इक कै प्रहार।
चहु दिशा मुगल ढूके पुकार ॥ १८ ॥
परवेख जथा ससि सूर पाइ[1]।
तिम गरज बीच सभि महिं सुहाइ।
बहु करति शीघ्रता निज बचाइ।
इत उत फिरंति शत्रुनि घाइ ॥ १९ ॥
इक अलीबेग तोमर उभारि।
हुई बाम दिशा कीनो प्रहार।
लगि गयो बबर फेर्यो बिसाल।
पुन चल्यो काढ करि मनो मार ॥ २० ॥
बहु क्रोध रिदे नहिं घाव जान।
तिह गैल होइकरि हति क्रिपान।

1. जैसे चंद्रमा तथा सूर्य को परिवार घेर लेता है

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सो लयो गेर करि प्रान नाश।
बहु तुरक आनि करि ढुके पास ॥ २१ ॥
तिन के प्रहार बहु खाइ खाइ।
पुंन पहुंचि पहुंचि रिपु[1] घाइ घाइ।
तबि गिर्यो आप बहु रिपुनि मारि।
चढि गा बिमान बड मोद धारि ॥ २२ ॥

पिखि ललाबेग बिसम्यो बिलंद।
बहु लरयो बहादर ओजवंद।
गुर सुभट बडे लशकर खापाइ।
हुइ टूक टूक हय जुति नसाइ ॥ २३ ॥

बिन त्रास लरत नहिं गिनहि ब्रिंद।
बहु तुरक मारि गरजति बिलंद।
इम गुरू घिरहि जबि बीच आइ।
गहि लेहिं घेर किम जान पाइ ॥ २४ ॥

जे करहि बहुत शसत्रनि प्रहार।
हथ्यार मारि दै हैं संघार।
इत भयो जुद्ध जेठे प्रचंड।
गुर पुरी पहुंचि हुइ खंड खंड ॥ २५ ॥

उत जाती मलक रिसाइ धाइ।
जहिं शमसबेग तहिं अग्र जाइ।
खैंची कमान मारे खतंग।
लगि गए पार भे फोर अंग ॥ २६ ॥

ढरढंति चाप, मुकतंति तीर[2]।
खरडंति खोल, भरडंति भीरु।
चरडंति ढाल, सड़कंति तेग।
छटकंति लहू, दरडंत वेगि ॥ २७ ॥
थहरंति मरति, भहिरंति भाग।
बहिकंति खड़ग जिन श्रोण लागि।
इम मची मार घमसान घालि।
बहु गिरति वीर अरु तुरंग जाल ॥ २८ ॥

1. वैरी 2. तीर छूटते हैं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ढुकि नेर मलक जाती रिसाइ ।
पिखि शमसवेग के घाल घाइ ।
करि ढाल अग्ग्र निज को बचाइ ।
हुइ गयो दूर वाज़ी धवाइ ।। २९ ।।

तबि अपनि आप को बल संभाल ।
बलवान बाज ते करि उताल ।
ढिग भयो आइ करि खड़ग नंगि ।
कर को उभारि वड वेग संग ।। ३० ।।

कीनो प्रहार तन सुभट बिप्र ।
रण चतुर हाथ धरि सिपर[1] छिप्र[2] ।
लीनसि बचाए आपन सरीर ।
उर भयो कोप बिन त्रास धीर ।। ३१ ।।

अति निकट तुरंग लरि आप मांहि ।
दिज को बिलंद अरु थकिय नांहि ।
हटि तुरत पछडा मारि दीनि ।
हय बली तुरक को थकति कीनि ।। ३२ ।।

लगि शमसवेग की जांघ चोट ।
करि रह्यो जतन, हुइ कहां ओट ।
दिज शीघ्र धारि हय ताड़ फेर ।
पुन करयो आनि करि तुरक नेर ।। ३३ ।।
मार्यो क्रिपान लगि कंठ घाइ ।
सिर पर्यो जाइ भू पर लुठाइ ।
जिम पक्यो होइ फल डाल संग ।
तिस हतहिं लशटिका[3] गिरहि भंग ।। ३४ ।।

धर सहति तुरंग आगे चलंति ।
पग फसे रकाबन महिं गिरंति ।
जबि चल्यो अग्ग्र तर लटक आइ ।
तिभक्यो[4] तुरंग करि वेग धाइ ।। ३५ ।।
ज्यों ज्यों चलंति ऐंच्यो सु जाइ ।
त्यों त्यों त्रसंति सबदु जु उठाइ ।

1. ढाल 2. जल्दी 3. लाठी 4. डर कर उछला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहिं टिकहि कितहुं भाज्यो फिरंति ।
धर को घसीटि अतिशै डरंति ।। ३६ ।।
सभि सैन बिखै इत उत सु जाइ ।
जहिं ललाबेग लरि कष्ट पाइ ।
घोरा पछानि धर लटक देखि ।
मरि गयो जानि, शोकति बिशेख ।। ३७ ।।
ढिग मुगल हेरि कहि असु चिनार ।
इहु शमसबेग के तर उदार ? ।
नहिं मुंड संग लटकंति रुंड ।
भिर मरयो होइ रण मैं प्रचंड ।। ३८ ।।
तबि कह्यो तांहि तुम लख्यो जोइ ।
विन मुंड तुरंग जुत रुंड सोइ ।
गति होति भटनि की जिम सु जंग ।
सो भई लखहु, कट जांहि अंग ।। ३९ ।।
सुनि ललाबेग के शोक भार ।
परवार मोर नर भे संघार ।
जानी न रीति इम मोहि होइ ।
लरिबे फरेशते संग जोइ ।। ४० ।।
इह करनहार क्यामत विलंद ।
नहिं सक्यो जानि, लखि सैन ब्रिंद ।
दल गुरू केर मैं अलप जानि ।
लगिकै सुखेन करि देउं हान ।। ४१ ।।
इत्यादि बाक कहि करि रुदंति[1] ।
पछुताइ अधिक संकट भरंति ।
निज म्रितु रिदे निशचै सु कीनि ।
नहिं जियनि आस भा अनंद हीन ।। ४२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'भाई शमस बेग बद्ध प्रसंग'** बरननं नाम दोइपंचासती अंशु ।। ५२ ।।

1. रोता है

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५३

# ललाबेग बद्ध प्रसंग

**दोहरा**

रोदति शोकति हेरि करि हुतो मुसाहिब पास।
गुल खां नाम पठान को बोल्यो सुमति प्रकाश ॥ १ ॥

**भुजंग प्रयात छंद**

'ललावेग ! शोकं न कीजै सुजाना।
समो जंग को जानि लीजै महाना।
फते होइ कै हार एको सु पावै।
लरैं बीर सारे इही रीति भावै ॥ २ ॥

तजै जंग जोधा बुरी बात होवै।
दुहूं लोक को मोद, तारीफ खोवै।
बडे आप दाना, कहै कौन स्यानो ?।
भली वात जेती सभै वुद्धि जानो ॥ ३ ॥

रची आप मौला बनै अग्र सोई।
सहैं सीस सारे न मोरै सु कोई।
कहां होति रोए मिटै नांहि कैसे।
लरो अग्र ह्वै चढे आप जैसे ॥ ४ ॥

हजो[1] न करैं तोहि तारीफ सारे।
रखो लाज आछं, करो नांहि टारे'।
गुलखांन के बेन जाने सुजाने।
ललाबेग ने शोक त्यागयो महाने ॥ ५ ॥

कर्यो ओतसाहं रिदै धीर धारे।
गुरू संग चाहै—भिरों जंग भारे।

1. निंदा



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हुतो फैज़ खां पास दीनी दलेरी।
अहैं प्राण जौ लौं सुनो बात मेरी ॥ ६ ॥
गुरू को गहैं कै हतैं शसत्र मारैं।
तबै शाहु के पास आपा दिखारैं।
नहिं तो इहां बीर खेतं मझारा।
सरीरं तजैंगे सहैं खग्ग[1] धारा' ॥ ७ ॥
इही बात आछी ललाबेग मानी।
चल्यो सामुहे जंग के हेतु मानी।
बजै संग धौंसा जुझाऊ बडेरा।
लरै बेरि दो चाव ठाने घनेरा ॥ ८ ॥
हका हाक बाजी, लखे प्रान अंता।
न जान्यो परै आज कोऊ बचंता।
भए सामुहे तुंद ताज़ी कुदाए।
गहे शसत्र तीखे तुफंगं चलाए ॥ ९ ॥
किनूं चांप लीने सु बानं संघाने।
धरे दीह नेज़े कि सांगं महाने।
कर्यो हेल, मेल्यो भटं शोर भारो।
'नहीं जानि दीजे गहों कै प्रहारों ॥ १० ॥
गुरू सूर ठांढे पिखे शत्रु आए।
नहिं भाजते, प्रान चाहैं खपाए।
बडी चुंग बांधे मिले नेर कीने।
तुफंगान गोरी तबै छोरि दीने ॥ ११ ॥
दुहूं ओर ते भेड़ माच्यो दुहेला।
सटासाट सेले भई रेल पेला।
चले तीर तीखे लगे अंग गाढे।
छुटे श्रोण चाल्यों महां रोस बाढे ॥ १२ ॥
चले आइ सूधे मिले तुंड नेरे।
अपो आप मैं जंग माचंति हेरे।
परी कूक भारी सुनै दूर जोई।
लगी छूटि गोरी तजे प्रान कोई ॥ १३ ॥

1. तलवार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महां जुद्ध माच्यो गुरू जी अनंदे।
लयो चांप गाढो तजैं तीर ब्रिंदे।
कह्यो जोध सों 'जंग कीने वडेरे।
नहीं अग्र जावो, पिखो बीर! भेरे॥ १४॥
वडी रात के ब्रिंद बैरी लरंते।
खपाए घने मारि द्रोही दुरंते।
छूटैं तीर गोरी बचावो सरीरं।
भयो अंत शत्रुनि, जीते सु धीरं॥ १५॥

गुरू बैन मान्यो अमोरं पछान्यो।
कर्यो भीम जुद्धं दलं भूर हान्यो।
कछु अंग मैं घाव लागे दिखंते।
श्रमं[1] होति भा खेत घोरा भ्रमंते॥ १६॥
बिधीचंद चाहै बरौं शत्रु मद्धं।
बधौं एक वारी करौं जुद्ध सुद्धं।
गुरू जी निवार्यो[2] उचारयो थिरीजै।
लगे घाव अंगं, श्रमंजानि लीजै॥ १७॥

अबै अंत को जुद्ध देखो हमारा।
ललाबेग के साथ खग्गं प्रहारा।
जिती शाहु की सैन जोधा कहावै।
मचै मार ऐसी नहीं शेख पावै॥ १८॥
बिधी जोध दीनो कह्यो नंम्रि ह्वै कै।
समं आप के कौन ह्वै है अरै कै।
नहीं देव दैंतानि मैं बीर कोइ।
कहां बापुरे मानुखा जून जोई॥ १९॥
कहो एक वारं त्रिलोकी बिनासो।
रचो फेर तैसे करै मूढ सांसो।
इतो बोलते आप मांही क्रिपाला।
इते बीर आए महां ज़ोर घाला॥ २०॥
तुफंगानि तीरानि नेज़ानि संगा।
महां कोप धारे करे घाव अंगा।

---

1. थकान 2. हटा दिया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गिरे बीर मारे हालाहाल[1] होई ।
पर्यो, हेल घाल्यो मिट्यो नांहि कोई ।। २१ ।।
गुरू जानि लीनी, तजे प्रान सारे ।
लयो चांप गाढो त्रिखे तीर मारे ।
अबधे ब्रिंद बैरी परे जाइ भूमैं ।
इको दोइ तीजो हते कोइ झूमैं ।। २२ ।।
भए टोल आगे रिपु सामुहाए ।
ललाबेग देखे गुरू आप आए ।
चहौं चित्त जोऊ भई बात सोई ।
अबै जंग मेरो गुरू संग होई ।। २३ ।।
भयो टोल आगे गुरू ज्यों निहारे ।
तके तीर तीखे धनूं ऐंचि मारे ।
हयं अंग बीधो लगे घाव जाई ।
छुट्यो श्रोण ब्रिंद सु धारा चलाई ।। २४ ।।
सुहेला पिख्यो घाव लागे घनेरे ।
रिदे रोस जाग्यो गुरू को बडेरे ।
जिन्हों अग्र चौरे खतंग[2] निकासे ।
कुदंडं[3] संधाने बिखी से प्रकाशे ।। २५ ।।
कर्यो जोर घोरं लगयो कान हाथं ।
ललाबेग सौंहे तज्यो बेग साथं ।
चल्यो क्रोध ते शूक बानं महाना ।
उड्यो पंख धारे फनी के समाना ।। २६ ।।
लग्यो भाल मैं तातकालं प्रवेशा ।
ललाबेग घोरा[4] बली जो विशेषा ।
घनो दीन मोलं चलाकं बडेरा ।
पिछारी निकास्यो पर्यो पार फेरा ।। २७ ।।
गड्यो जाइ भू मैं स लोहू सुरंगा ।
गिर्यो शीघ्र घोरा सजै ज़ीन चंगा ।
ललाबेग ने बेग ते त्यागि दीना ।
महा क्रोध ते तीर त्यागे प्रबीना ।। २८ ।।

1. शोर 2. तीर 3. धनुष 4. घोड़ा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुहेला अमोला तकै तांहि मारै।
दयो बीध आगो शिताबी प्रहारै।
रिदे भाल मैं तीर लागे घनेरे।
गिरयो जंग खेतं हत्यो तांहि बेरे ।। २९ ।।
बडे भाग जांके गुरू अंग संगे।
मिले सो रहे, प्रान त्यागे तुरंगे।
गयो देवलोकं तजे शोक मोहं।
नहीं फेर फेरी जगं बीच होहं ।। ३० ।।
बिधीचंद शीघ्रं कह्यो होहि नेरे।
'चढो और घोरे प्रभू याहि बेरें।
गुरू धर्म जुद्धं बिचार्यो उचारे।
खरो अग्र बैरी हयं तांहि मारे ।। ३१ ।।
नहीं और लीनो प्रिथी बीच ठांढो।
अहै संमुखं, जंग को चाव बाढो।
तथा जानि मोहि अरुढैं न घोरै।
अबै जंग खग्गं करें भेर घोरै।। ३२ ।।
कह्यो बाक ऐसो, भए फेर सौहैं।
कराचोल[1] ऐंच्यो, करी बंक भौहैं।
ललाबेग के अग्र आयो पठाना।
महां कोप ते संग तांके बखाना ।। ३३ ।।
गुरू और मोरे न बीचं परीजै।
टरो आन थानं, मरोंजै कि जीजै।
इनो संग जंगं करों आप आछा।
मरों कै संघारों, नहीं आन बांछा ।। ३४ ।।
किधौं शाहु के बाज लै कै चलैंगे।
किधौं प्रान दै संग धूली मिलैंगे।
खरो दूर ह्वै कै तमाशो पिखीजै।
किधौं और जोधानि सों जुद्ध कीजै ।। ३५ ।।
तिसी रीति सारे गुरू जी हटाए।
मच्यो दुंद जुद्धं क्रिपानं चलाए।
कबै नेर ढूकें कबै दूर होवें।
दुहूं बीर बांके हतैं घात जोवैं[2] ।। ३६ ।।

---

1. तलवार 2. दाव लगाते हैं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दुहूं कीरती चाहि, चौंपे जुझारे।
दुहूं सैन के सूर स्वामी उदारे।
बिजै बांछि दोऊ रसं बीर भीने।
दुहूं शसत्र विद्या कमाई प्रबीने ॥ ३७ ॥

दुऊ जुद्ध जैता घने जंग कीने।
हयं हीन दोनो, रणं धरम चीने।
दुऊ दाव ताकैं अरैं आप मांही।
मनो शेर दोनो मिटैं पाइ नांही ॥ ३८ ॥

रूपे बीर दोनो गजंराज भारे।
बडे दंत धारी, महां छोभ वारे।
दुहूं ढाल ढोई ढका ढूक कीनी।
दुहूं खग्ग धारी मती कोप भीनी ॥ ३९ ॥

ललाबेग धायो कराचोल मारा।
गुरू ढाल पै लीनि ओजं संभारा।
कह्यो वार औरं करो घात पैके।
पिछारी बिसूरैं गिरैं म्रितु ह्वै कै ॥ ४० ॥

दलेरी गुरू की महानी पछानी।
करै वार ते वार को खग्ग पानी।
पुनं शीघ्र साथं कर्यो नेर आयो।
चह्यो मारिबे हाथ ऊचो उठायो ॥ ४१ ॥

करी ढाल सौहैं न्रिभै होइ आगे।
गुरू जी चलायो रिदै कोप जागे।
ललाबेग ने आप नांही प्रहार्यो।
गुरू वार ते अंग सारो उबार्यो ॥ ४२ ॥

करी छाल शीघ्रै इतै ऊत होयो।
पहूंचे गुरू जी, गयो दूर जोयो।
'खरो होहु गीदी कहां जानि पावैं।
दिजै वार मेरो कहां लौ बचावैं ॥ ४३ ॥

सुने बैन कोप्यो ललाबेग बीरं।
थिर्यो फेर ऐसे रिदै धारि धीरं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भयो सामुहे ज्यों बिखी[1] होइ भारो।
दवै पूछ ते काटिवे को पधारो ॥ ४४ ॥
प्रहारे क्रिपानैं कई वार कीने।
तथा शीघ्र धारे गुरू ओट लीने।
धरी हाथ बामे बडी ढाल भारी।
दुती हाथ मांहे क्रिपानं संभारी ॥ ४५ ॥

तरे वार ताक्यो प्रहारै समाना।
करी ओट ताहूं ललावेग जाना।
तरे दाव को मैं बचावौं चहंता।
करी ढाल आगे सु पैरं रूपंता ॥ ४६ ॥

गुरू शीघ्र ते हाथ ऊचे उभारा।
कराचोल[2] बाह्यो, लगी जाइ धारा।
वही कंठ मैं पार भी रीति ऐसे।
करे काट साबुण को तार जैसे ॥ ४७ ॥

गिर्यो सीस शीघ्रं रहे नैन बायो।
मनो श्रीफलं[3] वायु शाखा गिरायो।
बिना मुंड ते रुंड भू मैं पर्यो है।
तरु मूल छिनं मनों सो गिर्यो है ॥ ४८ ॥

**दोहरा**

रह्यो बचावति तरे को ऊपर भयो प्रहार।
प्रान त्यागि गमन्यो भिसत सतिगुर अग्ग्र निहारि ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'ललाबेग बद्ध प्रसंग'** बरननं नाम तीनपंचासती अंशु ॥ ५३ ॥

1. साँप 2. तलवार 3. नारियल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५४

# श्री सतिगुर विजै पाई प्रसंग

**दोहरा**

बेगलला को मारि कै सतिगुर पाइ प्रमोद[1]।
फते लीनि बड जंग की हटे पाछली कोद ॥ १ ॥

**सवैया छंद**

दियो हुकम सभि सैना के प्रति हेल करहु तुरकनि पर धाइ।
अरहि सु कटहु मिलहि सो छोरहु त्यागै शसत्र सु लेहु बचाइ।
सरब चमूंपति होति भयो हति, बिन भूपति को लर न सकाइ।
करहु फते, अबि अंत भयो रण. श्री नानक जी भए सहाइ ॥ २ ॥

सुनि आइसु को गही क्रिपानैं बाज समान गए सभि सूर।
मनहुं म्रिगनि पर केहरि दौरे मारि मारि करि भरे गरूर।
जो सनमुख हुइ तजै तुफंगनि, तोमर तीर तुरक भट भूर।
सभि पर परी मार इक समसर रुंड मुंड करि मेले धूरि ॥ ३ ॥

कंठ कट्यो किह, भुजा तुंड[2] किह, सिर पर बजी कांहि करवार।
कुछक अरे पुन भाजि परे तहिं, किस ने त्याग दीनि हथ्यार।
को कर जोरति खरो निहोरति, 'गुरू दुहाई' कांहि उचार।
दीन भए त्रिण दांतनि गहि करि[3] इस बिधि केतिक प्रान उबारि ॥ ४ ॥

जंग खेत महिं फते भई गुरू जबहि 'दुहाई' तुरक पुकार।
बिधिचंद को श्री हरिगोविंद पठ्यो, 'दीन' तिन लेहु उबार।
गयो तुरंग धवावति देखे बरजे भट 'नहिं कीजहि मार'।
सरब चमूं को इकठी करि कै हट्यो, बोलि सतिगुर जैकार ॥ ५ ॥

जो घाइल गुर बीर पर्यो रण तिस की सुधि करि लीनि उठाइ।
दुंदभि दीह जीत के बाजति सुभट प्रमोदति भे समुदाइ।

---

1. प्रसन्नता 2. मुँह 3. दाँतों में घास लेकर



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जोध सहित जहिं श्री हरिगोविंद करति कुलाहल को तहिं आइ।
चरन निहोरति, सभि कर जोरति, गुर महिंमा कहि सीस निवाइं ॥ ६ ॥
सभिको सतिगुर कर्यो संभारनि बूझति जोध संग सति भाइ।
गमनहु सिवर[1], काज भा पूरन' इम कहि गमन कीन हरखाइ।
निज डेरे महिं उतरे आइ सु गिनवाए जोधा समुदाइ।
सैंनपती सभि बूझन कीनि 'केतिक सुभट रहे रण थाइं ?॥ ७ ॥
गिनिकैं सभिनि आनि सुध दीनसि महाराज ! रावर के बीर।
जोधराइ की चमूं सहित सभि पहुंचे सुरग जु त्यागि सरीर।
सभि गिनि लीनि भले करि निरनै दो सै इक सहस्त्र रण धीर।
तुरकन सों लर हेतु आप के रहे खेत, रण बिखै गहीर॥ ८ ॥
निज निज डेरे महिं बिसरामे घाइल सुभट कितिक लें सार।
सभि पर सेवक सेवा के हित करे सपुरद भले प्रतिपारि।
जोधराइ को निकटि हकारयो, तन महिं छद[2] ते भयो सुमार।
क्रिपानिधान क्रिपा करि देख्यो हाथ सपरशन कर्यो उदार॥ ९ ॥
जहिं जहिं घाव अलप कै दीरघ सभि की पीर हरी गुर पीर।
बिधीचंद अरु जाती मलक जु सभि पर दृष्टि डारि सुख धीर।
नहिं छदनि को कष्ट रह्यो किस, कितिक दिननि महिं शुद्ध शरीर।
खान पान करि सभि बिसरामे घोरनि को दे करि त्रिण नीर॥ १० ॥
शसत्र डारि करि काइर आए जलतलाउ ते पान करंति।
हसने खांन दूत सों मिलि करि गुर दल बिखे रहे अचवंति।
श्री हरिगोविंद नर गन भेजे जहिं जेठे की लोथ दिखंति।
तिस ते आदि अपर सिख जोधा मरे परे लरिकै बलवंति॥ ११ ॥
सभि इकठे करि दाहु देहु तिन, करहु भसम गन कासट पाइ।
गरत खनहु इक दीरघ नीको जिस महिं तुरक परें समुदाइ।
सभिनि उठाइ संपूरन करीयहि शसत्र बसत्र के सहित सुलयाइ।
बीर पंच उमराव संघारे तिन को ऊपर धरहु बनाइ॥ १२ ॥
तिस पर अधिक म्रितका डारहु करहु सथंडल[3] कितिक उतंग।
इक सम बैठनि हेतु बनावहु बिलम न करहु शीघ्रता संग।
सुनि करि नर गन गुरू हुकम को जाइ चिनार कीनि भट अंग।
जेठे आदिक लै सभि दाहे, जो रण खेत गिरे तन भंग॥ १३ ॥

1. शिविर, डेरा 2. ज़ख्म 3. चबूतरा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नर गन लगे गरत[1] को खोदन जेतिक तुरक बचे समुदाइ।
तिन सभिहिनि को कह्यो म्रितक जे शसत्र बसत्र के सहित सु ल्याइ।
अंगीकार न करहु वसतु कुछ सभि ही पाइ देहु इस थाइं।
सुनि करि लगे करनि बिधि तैसी जाइ खेत ते ल्याइं चाइ।। १४।।

मरे तुरक जे परे लरे रण सभिनि उठाइ गरत दें पाइ।
घने सिख अरु राहिक[2] लागे अपर तमाशबीन जे आइ।
गुरू हुकम को मानि मानि करि लोथ उठाइ घसीटति ल्याइ।
शसत्र बसत्र के सहित सु गेरहिं, पूरन कर्यो तुरत समुदाइ।। १५।।

को ल्यावति को धावति जावति, भइ अनंदति जै गुर जानि।
गन तुरकान हानकरि प्राननि अचरज सभि के भयो महान।
जहिं जहिं सुनति पिखिनि हित धाए भयो समूह नरन को आन।
गरत पूर करि ऊपर धरि करि पुन उमराव ल्याइ तिस थान।। १६।।

इक मर्हाज[3] को सिख हुतो बिच कंबरबेग लोथ को देखि।
मुष्ट गही तरवार नगन की जिस की कीमत हुती विशेख।
खर फुलाद की घड़ी वलाइत बहु सुंदर को तिस ने पेखि।
सो ले करि किस थान दुराई जिस थल कोइ न सकै परेखि।। १७।।

गुर मैं धारि छपावनि कीनसि महां लोभ उर पिखि तरवार।
अपर न किनहूं तहिं कुछ लीनसि पाइ गरत महिं कई हज़ार।
म्रितका पाइ म्रितक गन ऊपर कर्यो सथंडल तुंग सुधारि।
सभि बनाइ करि सतिगुर के ढिग कह्यो जाइकरि 'बनयो सु त्यार।। १८।।

श्री हरिगोविंद सौच करी सभि, पुन शनान करि शसत्र सजाइ।
द्वै घटका दिन रह्यो तबहि लगि गमने संग जोध बुलवाइ।
बजी जीत की बंब[4] बिसाली भए साथ सिख भट समुदाइ।
चढे सथंडल पर गुर पूरन आछो फरश तहां करिवाइ।। १९।।

बैठे सतिगुर सभा लगाइव गावन लगे रबाबी आइ।
सगल मुदिति मन 'धंन धंन' भनि, करहिं जंग बातनि मुसकाइ।
सभिनि सुनाइ गुरू हरिगोविंद सिख मर्हाज को निकटि बुलाइ।
कह्यो तैं जु तरवार दुराई ले आवहु अबि देहु गडाइ।। २०।।
नहीं उचित राखन के जानहु शत्रुनि साथ गरत दिहु डारि'।
सुनि तिन समुझ्यो किसहुं कह्यो हुइ, मतसर ते चारी[5] सु उचारि।

---

1. गर्त 2. ज़िमीदार 3. गाँव का नाम 4. ध्वनि 5. चुगली

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहीं लोभ ते गुरू बच मान्यो मुकर पर्यो न लई तरवार।
तिस मन की गति अंतरजामी जानि लई लोभ्यो हित धारि ॥ २१ ॥

दयो श्राप सतिगुरू तबि तिस को नहीं बाक मान्यो लब धारि।
राखन करी सु तेरी कुल महिं चलति रहेगी खर तरवार।
आपस महिं रिस करहिं प्रहारैं कटैं क्रिपान संग बहु बार।
अबि लौ श्राप बिदति ही तिनमैं लरति रहैं हुइं खड़ग प्रहार ॥ २२ ॥

संध्या लगि श्री सतिगुर बैठे लोक हज़ारहुं दरशन आइं।
पिखि रण को घमसान घनेरो मरे बहुत अरि उर बिसमाइं।
बंदन करहिं निहारहिं सनमुख, भांति-भांति की भेट चढाइं।
अदभुति सहित सरब ही हरखे संघर बात करहिं समुदाइ ॥ २३ ॥

तिमर[1] भए उठि श्री हरिगोबिंद आइ सिवर तंबू बड मांहि।
चारू प्रयंक पीठ पर बैठे अपर गए सभि निज निज थांहि।
खान पान मन भावति करि करि सुपत जथा मन चित मिटाहि।
वाहिगुरू जी की सु फते बड देश बिदेशन महिं बिदताहिं ॥ २४ ॥

जाम जामनी जागे सतिगुर सौच शनान ध्यान को ठानि।
आसा वार रबाबी गावति भजन होति दल बिखै महान।
गुर बानी को पठति सुनति को होवति बरखा सुधा समान।
निरमल उर गुरदरशन ते सिख परमेशुर को प्रेम सु जान ॥ २५ ॥

भई प्राति पुन सभा लगाइव जोध सलेमशाहि चलि आइ।
बिधीचंद दिज जाती मलक सु बैठति भए सुभट समुदाइ।
श्री सतिगुर को करि करि बंदन हेरि हेरि सगरे हरखाइ।
मुदति सु दूत हसनख़ां आइव जुग कर जोरति सीस निवाइ ॥ २६ ॥

करामात कामल, बड आरिफ[2], समसर नहीं जगत मैं कोइ।
तुम ही जीय जंत के दाते, जिम चित चहहु बनति है सोइ।
मोकहु हुकम अहै किस बिधि को करहु क्रिपा जिम सिदकी होइ।
मरे तुरक सभि फते लई तुम बिदत्ति जगत महिं जसु को जोइ' ॥ २७ ॥

मुसकावति गुरू बाक बखाने सूबा काबल को बन जाइं।
मनसब ललाबेग को लै है गुर की शरन पर्यो फल पाइं।
जेतिक बचे तुरक लिहु संगे शाहुजहां को सुधि दिहु धाइ।
तिन के तुरंग जु दल महिं श्राए सो तुझ को दै हैं फिरवाइ ॥ २८ ॥

---

1. अंधेरा 2. तत्त्व वेता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सहित सैनि सुत बंधप जेतिक ललाबेग हति भा कहि जाइ ।
सुनि गुर हुकम सिदक को धरि उर गयो त्यार निशचा बच पाइ ।
संग तुरक सहि तुरंग एक सो चलन समै गुर के परि पाइ ।
क्रिपा करी तबि श्री हरिगोविंद बहु मोला दे करि सिरुपाइ ।। २९ ।।

कर्यो बिसर्जन[1] गमन्यो तूरन निसबासुर महिं चलिबो कीनि ।
देनि हेतु सुध शीघ्र करंता, सिमरति सतिगुर नाम प्रबीन ।
लवपुरि पहुंच्यो महां थकति हुइ कितिक बिहाल संग महिं लीनि ।
निश प्रभु घाइल बिन उतसाहा, फटे बसत्र अरु शसत्र बिहीन ।। ३० ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'श्री सतिगुर बिजै पाई प्रसंग'** बरननं नाम चतुरपंचासती अंशु ।। ५४ ।।

1. विदा किया ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५५

## दूत प्रसंग

**दोहरा**

अपनो आप दिखाइ करि जे पहुंचहिं ढिग शाहु ।
कर्यो सुनावनि कितिक को हुतो सु लशकर मांहु ।। १ ।।

**सवैया**

शाहु जहां निज हयनि उडीकति पहुंचहि ललावेग गुरू पास ।
करहि जंग गुर को गहि आनहि किधौं लरति ही होइ बिनासि ।
लशकर घनो संग तिस गमन्यो को लर धरहि बिजै की आस ।
असु दिलबाग अपर गुलबागहि[1] ल्यावहि गो बड ओज प्रकाश ।। २ ।।

जबि के गए नहीं सुध आई रण होयहु कै नहिं महान ।
निस बासुर तूरन ही गमने नहिं बिसराम कीनि किस थान ।
एक बार इह अरज़ी भेजी गुर हवाल नहिं लिख्यो न जानि ।
कहां भयो कै मिल्यो इनहुं सों दे करि सुंदर चपल किकान[2] ।। ३ ।।

सभा बिखै उमरावनि के ढिग शाहुजहां इम कीनि बखानि ।
सुनति सलाबतखान भन्यो तब तहिं ते आइव इक अफगान ।
निकटि आप के अबि मैं आवति कर्यो बिलोकन बूझन ठानि ।
कह्यो तांहि जंगल के दिशि ते ललावेग संगी मुझ जानि ।। ४ ।।

इतनि सुनति चल्यो मैं आइव अपर प्रसंग कह्यो नहिं कोइ ।
शाहुजहां सुनि चहति भयो तबि आनहुं शीघ्र देहि सुधि सोइ ।
पौर[3] बिखै रोकहि नहिं कोऊ सकल ब्रितंत कहै जिम होइ ।
सुनति अरज़वेगी तबि तूरन निकस्यो बहिर पठ्यो नर जोइ ।। ५ ।।

ललाबेग डेरे थल गमनहु तहिं नवीन आए असवार ।
तिन महिं मुखि तिह तुरत हकारहु हज़रत अधिक शीघ्रता धारि ।

1. दिलबाग तथा गुलबाग घोड़े 2. घोड़ा 3. द्वार



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनति धाइ गमन्यो हय चरि के खोजि गयो तिस थल बिन बार।
उतर्यो हुतो हसत खां असु ते तबिहूं पहुंच्यो कर्यो उचार ॥ ६ ॥

हज़रत तोहि हकारति अबि ही चलहु शीघ्र नहिं बिलम लगाइ।
सुनति पहिर पोशिश बहु मोली गमन्यो संग पौर पर आइ।
खरो सलाबतखान अगारी लेकरि साथ गयो अगवाइ।
तसलीमात[1] करति बहु बारी शाहु जहां ढिग पहुंच्यो जाइ ॥ ७ ॥

गुर सिख निकटि वज़ीरखान तबि बहु बुधिवंति नीत को ज्ञान।
गुर पग पंकज निशचा जिस कै रिदै कमावति सिदक महान।
बडि उमराव कह्यो जिस मानहिं दे हज़रत को सीख सुजान।
हलत पलत महिं जस अरु सुख हुइ कहै बात शुभ लें सभि मान ॥ ८ ॥

हसन खान की दिशि को पिखि करि शाहु जहां तबि बूझन कीनि।
कहु किम भई गुरू संग मिलि करि दौन तुरंगम भी तुम लीन ?।
मेल कर्यो कै लर्यो सामुहे किस थल मिले, गुरू कित चीन ?।
सकल प्रसंग छोर ते भाखहु ललाबेग जिम कर्यो प्रबीन' ॥ ९ ॥

सुनति हसन खां कर जुग जोरे, हज़रत जी ! तुम दए चढाइ।
पहुंचन तुरत तगीद करी, बहु ललाबेग सो लखी रज़ाइ।
कर्यो कूच तूरन ही गमनयो नहिं बिसराम कीनि किस थाइं।
छुधति थकति लशकर बड होवा थिर्यो न तऊ गयो बहुधाइ ॥ १० ॥

सुभट सकल ही रहे पुकारति आगे काज लरन को जंग।
नहिं लशकर ते हुइ पुरशारथ मैं भी कह्यो बहुत तिन संग।
नहिं मानी कहि शाहु हुकम इम, तूरन[2] जाहु सु लेहु तुरंग।
अरध राति महिं पहुंचे चलिकरि सुध ले गुर की भए निसंग ॥ ११ ॥

दीह दमामनि दुहरी चोबनि दिए बजाइ गुरू दल आइ।
छूटति तीर तुपक अरु तोमर मारि मारि करि रौर मचाइ।
तिस जिन भयो सीत अति ऐसो नहिं आगे हम दिख्यो कदाइ।
खुलहिं न हाथन उसरति अंग जि सुभटनिते हथ्यार गिराइं ॥ १२ ॥

हतन हरीफ[3] रह्यो इह कितहूं नहीं शसत्र कर पकर्यो जाइ।
जन रसरिन सों जूर दिये भट भे ब्याकुल नहिं बनयो उपाइ।
गुरभट हुते अगनि सों तापति एकहि बार परे अरराइ।
मारि मारि बहु चमूं खपाई, गिरे तुरंगम, भट समुदाइ ॥ १३ ॥

1. नमस्कार 2. जल्दी 3. शत्रु

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपर एक बड अचरज होवा गुर के सुभटनि करे प्रहार।
बहुर निकसि न्यारे इक दिशि भे, ढिग हुइ हुइ करि गौरिनि मार।
लखि अरि को आपस मैं कटिगे, बचिबे हेतु न कीनि संभार।
भोर होति लौ तीन भाग दल बिन मारे ही भए संघार॥ १४॥

चरे दिवस उमराव जि पंचहुं हेरि जंग को भए हिरानि।
सभि दल लेकरि गुर के सनमुख लरन हेतु बजवाइ निशान[1]।
उमड्यो हथ्यारन को पकरे, उत ते भए गुरू सवधान।
भीखन भा घमसान घनेरो घालि घालि घावन करि हान॥ १५॥

खड़ग प्रहारि गुरू ने मार्यो बली काबली वेग महान।
तनक ज़खम गुर के तन लागयो नहिं मान्यो तिम ही सवधान।
ललावेग सों जंग पर्यो पुन असु गुलबाग चपल बलवान।
गुरू तरे ते म्रितक भयो तबि लगे शसत्र बहु त्यागे प्रान॥ १६॥

रिस करि गुर तबि ललावेग को कर्यो संघारन गहि तरवार।
चतर सहस्त्र गुरू दल महिं ते द्वादश सैं सभि भए संघार।
इम बिन नीति आप को लशकर मर्यो सरब ही ले करि हार।
सुपति परे रण खेत बिखै सभि, बचे संग मम सौ असवार॥ १७॥

शाहु जहां सुनि बिसमैं ह्वैकरि रिदै बिखाद अधिक उपजाइ।
कहां कहिर गुज़र्यो तिन सिर पर बडे कहावति हुते दनाइ।
राजनीत महिं चतुर बखानति जानति सकल जंग के दाइ।
कुछ नहिं सर्यो न कर्यो ओज को, मर्यो तुरत ही अरि अगुवाइ॥ १८॥

कहति हसनखां अबि के रण महिं हठकरि मर्यो करति हंकार।
राजनीति अरु दाव जंग के लशकर सभि की करनि संभार।
इत्यादिक मति सुरत विसारी मुझ आदिक बहु रहे पुकार।
नहिं जानी नहिं मानी किस की करि हानी मूरखता धारि॥ १९॥

मेरो अधिक अनादर कीना, पुन कहिबो सभि ने तजि दीन।
देखति हमरे सगल संघारे मनहुं किसू ने बंधन कीनि।
निस महिं सीत समूह लगे ते पिंगल लुञन[2] के सम चीन।
दिन महिंकरि पुरशारथ मारे इम गुर फते सुगम ही लीनि॥ २०॥

सुनति वज़ीरखान गुर सिख कहि कई बार पतिआरो लीनि।
करामात कामल[3] बड गुर घर श्री नानक जी परम प्रबीन।

1. नगारे 2. लूला 3. करामात में सम्पूर्ण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पीरन पीर भए जग ज़ाहर अरे सु हारे सभि ने चीन।
अबि बिचार करि हेरहु चित महिं, नहिं मति मैं आवहि क्या कीनि ॥ २१ ॥

बडो आप को हज़रत बाबर श्री नानक ते बर को पाइ।
राज लियो दिल्ली ते आदिक सभि खानेनि ते देश छुटाइ।
अविचल तखत बचन ते कीनसि बिदति जगत महिं जानी जाइ।
मिल्यो एमनावाद गुरू संग करि बंदन बर लीनि रिझाइ ॥ २२ ॥

भयो हुमाऊं शाहु बहुर जबि श्री अंगद ते बर को लीनि।
दिल्ली आदिक राज कर्यो सभि लयो सलेमशाहु जो छीनि।
सुमतिवंति बड अकबर होयसि श्री गुर अमर तिसे बर दीनि।
गढ चितौड़ को तोड्यो बल ते ब्रिंद ग्राम को अरपनि कीनि ॥ २३ ॥

श्री अरजन अरु श्री हरि गोविंद जहांगीर हज़रत इम संग।
जोरति हाथ, करति बहु आदर, सभि ते जानति रह्यो उतंग।
रच्छा करी त्रास निस पावति पिखि अज़मत नंम्री सरबंग।
तिन सों तुम बहु कीनि बिरोधा पूरब लीनो छीनि तुरंग ॥ २४ ॥

नहिं अरुढिबो तुमनै पाइसि. दूजी जानि काज़ी को दीनि।
करि मिस मोल गुरू पुन लीनसि, भयो अ्रहजि सभि लखहु प्रबीन।
बाज़ हेतु रण घाल घनेरो मुख़लसखान प्रान ते हीनि!
बहुर जलंधर को बड सूबा अबदुलखान लयो म्रितु कीनि ॥ २५ ॥

अबि तुरंग की कहां बात थी लशकर रावर दियो पठाइ।
सीत उपाइ सकल ही मारे बच्यो न को भट हटि करि आइ।
चतुर सहस्त्र बाहनी गुर संग तुमरी अनगन दई खपाइ।
एक बाक के कहे करहिं सभि जिम चाहति गुर लेहिं बनाइ ॥ २६ ॥

किम समता तिन सों बनि आवै क्यों न बिचारति हो मन लाइ।
अपन बडनि की रखहु म्रिजादा जिन आगै तिन सीस निवाइ।
तिम ही तुम को चहीयति हज़रत! जे न करहु कारज बिगराइ।
इसी हेतु ते चढ़नि लगे जबि, मैं तुमको राख्यो अटकाइ ॥ २७ ॥

तोहि बडन जिन ते ले बशशिश राज कर्यो सभि देश बिदेश।
तिनके संग जंग तुम ठानहु, उचित नहीं मन लखहु विशेष।
नहिं बिरोध करिबो बनि आवै समझो हज़रत! सुमति अशेष ॥ २८ ॥
सुनि करि शाहु जहां हुइ तूशनि रिदे बिचारति रिस तजि दीनि।
तिन सों लरि करि फते न प्रापति भई हार रण भा थल तीनि।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन करि शुद्धि गुरू की दिश ते अबि नहिं लरों भली बिधि चीन।
कितिक देर महिं करि मुख ऊचो हसनखान दिशि देखनि कीनि ॥ २९ ॥
बहुर सलाबत खान बखानी सुत जुति ललाबेग भा घात।
अबि काबल दिशि सूबा करि कै पठहु किसी को सांभहि जाति।
दानशवंद बिलंद पछानहु जो नहिं होनि देहि उतपात[1]।
दिहु सिरूपाउ सपुरद करहु उत उचितानुचित बिचारहु बात ॥ ३० ॥
सतिगुर मन फेर्यो तिस छिन महिं हसनखान को पिखति सुनाइ।
इन आछी बहु बात बखानी दानशवंद बिलंद लखाइ।
सिरोपाउ दे तित को भेजों इस प्रकार मेरे मन आइ'।
सुनति वज़ीरखान कहि आछी, मनसब दे करि देहु पठाइ ॥ ३१ ॥

**दोहरा**

सुनति सलावतखान तबि उचित करी ततकाल।
कावल को सूबा भयो ले दल गयो बिसाल ॥ ३२ ॥
श्री सतिगुर की क्रिपा ते पाइ समाज बिसाल।
हसनखान सूबा भयो, शरन परे सु निहाल ॥ ३३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे '**दूत प्रसंग**' बरननं नाम पंचपंचासती अंशु ॥ ५५ ॥

---

1. उपद्रव

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५६

# कालू प्रसंग

**दोहरा**

शाहुजहां सुनि सुमति को खां वज़ीर के पास ।
ठानयो नहीं विरोध को शांती रिदे प्रकाशि ॥ १ ॥

**सवैया**

जित हित लशकर पठ्यो मरायो, सो गुलबाग मर्यो रण मांहि ।
खालें भरी पौन की सम इहु मो ढिग होति तऊ मरि जाहि ।
खरच बिसाल लाभ लघु जिह थल सो कारज बुधि करते नांहि ।
क्या कुछ बात बाज़ के कारण लशकर मर्यो इतो रण मांहि ॥ २ ॥

इत्यादिक बहु रिदे बिचारी बैर बिसारयो श्री गुर संग ।
इति श्री हरिगोविंद तिस सर पर डेरा रख्यो जीति कै जंग ।
तहां दमदमा करिकै सुंदर, बैठति सभा लगाइ उतंग ।
जंगल देश संगतीं आवैं दरशन करहिं अनंदति अंग ॥ ३ ॥

जथा शकति ले अनिक प्रकारनि आइ आइ गुर को दरसंति ।
सुनि करि विखि थल मरे तुरंग नर सभि के उर ह्वै अचरजवंति ।
कहहिं परसपर सुनि सुनि जित कित गुर जसु उज्जल को उचरंति ।
कहहु आज है कौन धरा तल शाहु संग जो लरन चहंति ॥ ४ ॥

बिना दुरग गिर अरहि अगारी रण करि देहि शाहु को हार ।
सकल देशपति लाखहुं लशकर बिन गुरू करै कौन अस कार ।
अधिक तुरक संग्राम खपाए जहां कहां तुरकनी पुकार ।
केस उखारति पीटति हैं सिर रोदति बहु अश्रुनि को डारि ॥ ५ ॥

देश बिदेशनि महिं गुरू कीरति बिसतीरति जनु चंद अकाश ।
जानी परै लरै नित शाहु जि तुरकाना सभि होइ विनाश ।
करता पुरख गुरू हरिगोविंद सकल कला समरथ गुण रास ।
दासनि को बखशहिं ऐश्वरजं अ्ररहि सु झरहि मरहि दुखग्रास ॥ ६ ॥



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हय दिलबाग रह्यो इक गुर ढिग नाम 'जान भाई[1] धरि दीन ।
बिय गुलबाग सुहेला कहि जिसु सो रण बिखै प्रान ते हीन ।
पर्यो बिरह बहुरो दुख प्रापति गुर अंतरजामी सभि चीन ।
आइ निकटि उपदेश बखानयो नश्वर तन सनेह क्या कीन ।। ७ ।।
निशचै बिछुरनि है इस केरा बिन संसै मन लेहु पछान ।
जिस को रूपरंग कुछ नांही चेतन सत्ता सत्त सु जानि ।
मनुख न पसू न पंछी पंनग[2] को अकार सो नहीं महान ।
सो सरूप तूं अपनो लखियै बिरह संकट को करी अहि हान' ।। ८ ।।
इम कहि सतिगुर ने कर फेरा मुख लोचन सिर ग्रीवा पीठ ।
ततखिन आतमज्ञान भयो हय हेर्यो जबहि क्रिपा की डीठ ।
सुख ते त्रिण दाना अरु पानी खान पान करि बिसर्यो ईठ ।
तिसपर होइ अरुढनि गमनहिं जनु मन को हुइ चलहि बसीठ ।। ।।
सभा बिखै थित श्री हरिगोबिंद कह्यो मोहि रणथंभा थान ।
नाम 'गुरू सर' तीरथ पावन कलमल गन नाशनि इशनान ।
धरि शरधा नर परसहि आइ जु पुरवहि मनहु कामना ठानि ।
गुरसिखी को प्रापति होवहि गुरू महातम कीनि बखानि ।। १० ।।
जोध, सलेमशाहु जुग भ्राता गुर मरज़ी लखि अरज़ी कीनि ।
महाराज ! अबि कांगड़ पुरि को गमन करहु निज बिलम बिहीन ।
इस थल को आगवन जि कारज करिकै जंग फते बड लीनि ।
अष्ट दिवस अबि बीति गए थिति, रिपुनि प्रतीखति रहे प्रबीन ।। ११ ।।
शाहु जहां महिमा तुम लखि करि हटक रह्यो हुइ जानी जाइ ।
बैर बिसारि शांति मन कीनसि यांते लशकर रहिं चढि आइ ।
नांहि त अबि लौ कई हज़ारहुं भिरे हुते जोधा समुदाइ ।
सैना मरति होति संग्रामू तुम प्रताप ते देति खपाइ ।। १२ ।।
जुग भ्रातनि की शरधा लखि करि, भए प्रसंन बिलंद क्रिपाल ।
चलैं तुमारे पुरि इक बारहिं रहहिं कितिक दिन मिलिनि बिसाल ।
इम कहि गमन कीनि तिन केरा, बसे तहां सो जामनि टालि ।
प्राति भए ते दुंदभि बाज्यो परे हयनि पर ज़ीन उताल ।। १३ ।।
तुरंग 'जान भाइ' पर सुंदर सुवरन जटति ज़ीन तबि पाइ ।
सभि भूखन पहिरावन कीने कर्यो शिगारन रुचिर बनाइ ।

1. गुरु जी के घोड़े का नाम 2. साँप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री हरिगोविंद बसत्र शसत्र शुभ सजति बिभूखन तन समुदाइ।
भए अरूढन गमन कीनि तबि चढी बाहनी[1] दुंदभि वाइ ॥ १४ ॥
ग्राम 'निथाणा' हुतो निकटि ही तिस महिं कालू नाथ रहंति।
इक नर पठ्यो कह्यो श्री सतिगुर तिस को परखहु जाइ इकंत।
हमरी सुध दिहु वहिर सिवर हुइ, मिलहि आनि इह लखहु मतंत।
सुनि गमनयो गुर ते सो पूरब रिदै मनोरथ को चितवंति ॥ १५ ॥
धेनु गौर[2] को दूध दुहि करि मोहि करावहि पानि जि ल्याइ।
तौ अज़मत जुति नाथ पछानौं पहुंच्यो निकटि चितव इस भाइ।
मिल्यो जाइ करि बंदन बैठ्यो तबि कालू उर महिं लखि पाइ।
करि सनमान बूझि गुर गाथा जथा तुरक घमसान मचाइ। १६ ॥
पुन उठि गौरवरण[3] की सुरभी तिह दिखाइ करि दोहिन कीनि।
तपत ठानि तबि पान करन को श्री सतिगुर के नर को दीनि।
तृपति होइ करि जान्यो मन महिं कालू करामात महिं पीन।
श्री हरिगोबिंद को आगवनू कर्यो सुनावन सुमति प्रबीन ॥ १७ ॥
नमो कीनि पुरि ते जबि निकस्यो इतने बिखै गुरू चलि आइ।
ब्रिंद तुरंगम की सभि सैना जोध समेत सुभट समुदाइ।
जीते जंग अनंद उमंगति आवति दुंदभि शबद उठाइ।
धूल अकाश चढति तित दिश महिं तरनि प्रकाश ढांपतो जाइ ॥ १८ ॥
सुंदर थल बिलोकि जल कल को कर्यो निवेस गुरू जग राइ।
उतरी जुति बिसतार बाहिनी, निज निज मिसल मिले सभि आइ।
ज़ीन उतारि शसत्र भट धरिकरि होति हिरेखा हयनि लगाइ।
खान पान को करे जथा रुचि, बिसरामे जोधा समुदाइ ॥ १९ ॥
श्री हरिगोविंद असव अचव करि ठानि दुपहिरे महिं बिसराम।
सुंदर फरश अनेक बरण के डसे मखमली दीह तमाम।
चार ओर जिस छोर ज़री के, मुकता जटति जहां छबि धाम ॥ २० ॥
अस गादी डसि रुचिर फरश पर उपाधान[4] दीरघ धरि दीनि।
लरकति दुहि दिशि मुकता[5] गुच्छनि बहुत मेल ते रच्यो नवीन।
बैठि बिराजति भे श्री सतिगुर चमरदार[6] तबि चामर कीनि।
गावन लगे रबाबी रागनि श्री गुर शबद शांति रस भीन ॥ २१ ॥

---

1. सेरा 2. गोरे रंग की गाय का नाम 3. गऊ 4. तकिया 5. मोती
6. चौरबरदार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिख जोधा गन जोध सहित मिलि दरसहिं नमो करहिं समुदाइ ।
जथा उचित करि सभा सु बैठे श्री हरिगोविंद बीच सुहाइं ।
मनहु सुरनि महिं सुरपति[1] दुतिमत किधौं बिशनु अवनी[2] पर आइ ।
संगति सकल ग्राम की आइव अनिक अकोरन को अरपाइ ।। २२ ।।
जंग जीत करि सतिगुर आए कहहिं परसपर गन नर नारि ।
चौंप करति चित दरशन दरसहिं धंनु धंन प्रभु गुर जैंकार ।
सुनि कालू आगवन गुरू को द्वै घट दुगध लिए करि त्यार ।
इक बालक के सिर धरि ल्यायो एक उठाइ आप कर धारि ।। २३ ।।

आनि गुरू पग मसतक टेक्यो बैंठयो निकटि जोरि करि हाथ ।
श्री हरिगोविंद कृपा दृष्टि ते देखति कर्यो वाक तिह साथ ।
घाली घाल मानते मानव नाम भयो अबि कालू नाथ ।
श्री गुर नहीं नाथ मुहि जानहुं तुमरो कूकर धरि पद माथ ।। २४ ।।
पुनहि प्रसंन होइ गुर बोले बिदति नाथ तूं होहिं जहान ।
सभि मानहि तुव नाथ जानि करि क्रिपा गुरुनि की भई महान ।
पुन कालू कहि श्री प्रभु सुनीअहि आप बखानति करुना ठानि ।
इती बडाई उचित नहीं मैं, तुमरे दर पौरे कहु स्वान[3] ।। २५ ।।

सुनि कालू की अधिक नंम्रिता श्री हरिगोविंद अधिक क्रिपाल ।
भए प्रसंन दयो वर दीरघ भा नाथनि को नाथ बिसाल ।
सिख सेवक महिं बिदतहि महिमा परी थाइं घाली बड घाल' ।
ज्यों ज्यों नंम्रि अधिकता त्यों त्यों, बड पुरखनि की है अस चाल ।। २६ ।।

कर्यो बचन जबि श्री हरि गोविंद कामल करामात तबि पाइ ।
अति अनंद करि पद अरबिंदनि बंदन कीनि सीस को न्याइ ।
बालक हुतो संग पय[4] ल्यायो तिस दिशि देखि गुरू सुखदाइ ।
दुगध चुरू भर तिसको दीनसि कह्यो पान करि बिलम न लाइ ।। २७ ।।

मान बाक को पान कर्यो जबि भई शकति सभि जानी बात ।
देश बिदेशनि की सुधि उर महिं करि बदरी फल[5] तिम विख्यात ।
अचरज चित धरि गुर पद बंदे धंन धंन गुर दीरघ दात ।
कछु ते कछू छिनक महिं कीनसि कौन करै समता किस भांति ।। २८ ।।

कालू जानि लई तिसकी गति बूझति भयो सुनावहु बाल ।
अबि गुर दुती रूप किस थल हैं ? उठे किधौं बैठे, कित चाल ? ।

1. इन्द्र 2. धरती 3. तुम्हारे द्वार का कूकर हूँ 4. दूध 5. वेर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिश बोल्यो तुम सुनहुं नाथ जी ! अरब वलायत बिखै क्रिपालु ।
प्रेमी तुरक गुरू को मानहि तिन सिमरे बहु बिनती नाल ।। २९ ।।
श्री नानक गादी पर जो हैं मेरो प्रेम परख सो आइं ।
दे दरशन को करहिं क्रितारथ कामल करामात समुदाइ ।
तहां तरोवर[1] के तरू ठांढे शाखा पकरी हाथ उठाइ ।
तुरक मुरीद सिदक को लखि करि बिना बिलंब पहूचे धाइ ।। ३० ।।
कालू बिसम्यो शीघ्र लई इन इती शकति के उचित न बाल ।
सभि जहान की उर सुध प्रापति गुरू दई लखि करि मम नाल ।
तिसके सिर पर निज कर को धरि ऐंची तूरन इस बिधि नाल ।
पोल तील महिं फूक सु बल ते जल को खैंचि लेति ततकाल ।। ३१ ।।
पुन बूझति भा अबि सुध दीजै बालक भन्यो न मैं कुछ जान ।
श्री हरिगोविंद रिदे बिचारी सिस की अरु हम दई महान ।
घाल न घाली संग रह्यो नहिं अत्रि परखें निशचा इसथान ।
इक लोटा तिस निकटि अधिक प्रिय किसू देश ते सुंदर आनि ।। ३२ ।।
सो सतिगुरू तबि जाचन कीनसि हम को देहु बनयो इहु चारू ।
कालू कह्यो अधिक प्रिय मेरो नित राखौं सुध भले सुधार ।
इह नहिं दियो जाइ कबि मो ते जीवति त्याग न सकौं बिचार ।
लोटे सहित आपको मैं नित इह बखशहु मुहि गुरू उदार ।। ३३ ।।
श्री हरिगोविंद लखि बहु ममता हम नाथनि को नाथ बनाइ ।
नहिं तें रह्यो प्रथम सम हूजहि नहीं बाक मान्यो मन ल्याइ ।
लई बाल ते आप भयो बड तो कहु भी न उचित इस भाइ ।
कहिबे मात्र गुरू के तिम ही कालू होयो सहिज सुभाइ ।। ३४ ।।
रिदै बिसूरति बंदन करि कै गयो आपने थान मझार ।
धरे नंम्रता प्रापति होई पुन गुर माया प्रबल उदार ।
भरमायो नहिं समुझि सक्यो मन इम कालू की गाथ बिचार ।
अबि लौ थान तहां तिस केरा, बिदत अहै तिस देश मझार ।। ३५ ।।

**दोहरा**

धीवर कालू और है तिस की कथा न जान ।
ग्राम निथाणे सो बसहि सुनि श्रोता सवधान ।। ३६ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'कालू प्रसंग'** बरननं नाम खष्ट पंचासती अंशु ।। ५६ ।।

---

1. वृक्ष

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंश ५७

# अजगर प्रसंग

**दोहरा**

श्री सतिगुरू संध्या भए उठे सभा ते आइ ।
तंबू बिखै प्रयंक पर बैठे अनंद उपाइ ।। १ ।।

**निशानी छंद**

खान पान करि जामनी सुख ते परि सोए ।
भई भोर[1] जागे प्रभू सवधानहि होए ।
सौच शनानहि ठानि करि जबि भयो प्रकाशा ।
हेतु अरुढनि के तुरंग अनवायो पासा ।। २ ।।

जोध सहित जोधा सकल करि करि निज तयारी ।
ज़ीन पवंगम[2] पाइ करि ठानी असवारी ।
दुंदभि बाजति शबद बड सतिगुरू चढि चाले ।
करते बिरति अखेर[3] को हनि म्रिगनि बिसाले ।। ३ ।।

करति बतक बहु जोध सों मुख हास बिलासे ।
कांगड़पुरि प्रापति भए उतरे तिस पासे ।
आवति भयो प्रयंक बर ततकाल डसायो ।
श्री सतिगुरू बैठे तबहि मुख ते फ़ुरमायो ।। ४ ।।

जोधशाहु गमनहु सदन बिश्राम करीजहि ।
मिलहु सकल परवार सों सुख ले सुख दीजै ।
आइसु मानी गयो घर आई तिस दारा[4] ।
लगे घाव गन तन बिखै पति सूर निहारा ।। ५ ।।

जान्यो भयो सहाइ गुरू ऐतिक रण घाला ।
जियति पिख्यो निज कंत को, बल करे बिसाला ।

---

1. प्रभात 2. घोड़ा 3. शिकार 4. स्त्री



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तबि बूझ्यो सभि कहति भा 'गुर सम नहिं दूजा ।
सकल कला समरथ बली सगरे जग पूजा ।। ६ ।।

चहैं जथा ठानहिं तथा, मानहिं सुर आना ।
बडे भाग हमरे भए मिलि किय सुख नाना ।
फते पाइ जसु को लियो गन तुरक खपाए ।
कौन करै अस जंग को लशकर बड आए ।। ७ ।।

तुरक हुते बहु अधिक ही हम भट बहु थोरे ।
रण करि इम मारे सकल कर जोरति छोरे ।
इत्यादिक पति ते सुनि मन अनंद उपाई ।
बूझति अनिक अकोर ले सतिगुर ढिग आई ।। ८ ।।

दोनहुं हाथनि जोर करि पग पर धरि माथा ।
दरशन ते हरखति भई शरधा उर साथा ।
सिख तनुजा को प्रेम लखि बर गुरू बखाना ।
रहहु सुहागनि लोक जुग भोगहु सुख नाना ।। ९ ।।

गुर सिखी महुं मन रहहि पुरवहु उर आसा ।
संकट नाना भांति के तुमते हुइं नाशा ।
गुर प्रसंन जानति भई मम कंत रिझाए ।
उर प्रमोद कहु पाइ कै शुभ दरशन पाए ।। १० ।।

प्रभु जी ! हम सेवक अहैं तुम हो रखवारे ।
देहु बडाई दास को रावरि बिवहारे ।
कारन करन समरत्थ हो जिम चहो बनावो ।
चरनकमल चित महिं बसहिं, नहिं कबहुं भुलावो ।। ११ ।।

पुन प्रणाम करि धाम को डोरे चढि आई ।
'निस की सेवा सकल ही सभि बिधि पहुंचाई ।
मधुर तुरश खट रसनि के बहु पठे अहारा ।
हयनि हेतु त्रिण हरित गन पहुंचे तबि भारा ।। १२ ।।

करति सराहनि सतिगुरू शुभ अचयो अहारे ।
त्रिपते पानी पान करि पुन पान पखारे ।
सुपति जथा सुख जामनी जागे जबि जामू ।
सोच शनानहिं ठानि करि वृति आतमरामू ।। १३ ।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भयो प्रभाति प्रकाश तवि शुभ बसत्र सजाए।
शसत्र सिपर कटि धारिकै बड सभा लगाए।
पुरि की ग्रामनि अनिक की सुनि संगति आई।
दुगध दहीं घृत आदि गन उपहारन ल्याई ॥ १४ ॥
चामर चारू मराल सम ढुरतो दुति पावैं।
खरे हज़ारहुं जोरि कर श्री मुख दरसावैं।
चंद मनहुं रितु शरद को उडगन महिं सोहै।
ऐसो कौन कठोर नर पिखि नहिं मन मौहै ॥ १५ ॥
साधू रूपा पिता सुत दोनहुं चलि आए।
धरि अकोर आगे प्रभु पाइनि लपटाए।
कुशल प्रशन करि कै भले पेखति हरखाने।
सिख आपने जानिकरि नीके सनमाने ॥ १६ ॥
प्रभु जी ! मानव मंदमति जानहिं नहिं भेवा।
समता चाहति आप सों, तुम देवनदेवा।
नहीं सहारहिं सुरासुर रण खेत मझारे।
कौन तुरक गन बापुरे जे थिरहिं अगारे ॥ १७ ॥
श्री हरिगोविंद कहति भे हय नाम सुहेला।
रह्यो जंग महिं शत्रु हति बहु घावनि मेला।
सुनति जोध कर जोरि कहि सनमुख रण मांही।
तुमरे चरण सपरश ते हुइ प्रान बिनाही ॥ १८ ॥
उत्तम पद प्रापति भयो तिन धंन महाना।
बडे भाग पूरब हुते नहिं आन समाना।
बिधीचंद सुनि कै कह्यो बिछुरन दुख भारी।
रावरि वाकनि ते मिट्यो शांती मन धारी ॥ १९ ॥
जेकरि होतो अपर ढिग इक के मर जाने।
दोनों मरते रहति नहिं अस प्रेम महाने।
जाती मलक बखानतो इन सम नहिं आना।
हुते उचित इहु आप के तुम महद महाना ॥ २० ॥
इत्यादिक रण बारता मारनि तुरकाने।
कहति सुनति बीती जथा सुनि सुनि बिसमाने।
इसी रीति त्रै जामनी गुर तहां बिताई।
चौथे दिन तहिं ते चढे बड दुंदभि वाई ॥ २१ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हित अखेर के गमन किय गन चमूं पयानी ।
संग जोध चढि करि चल्यो हित सेव महानी ।
कितिक कोस लौ चलि गए फिरि करि मन भायो ।
डेरा कीनसि तिसी थल पिखि थान सुहायो ।। २२ ।।
उतरि तुरंग ते खरे हुइ किछु भट ढिग आए ।
जोधराइ सों बाक कहि श्री मुख बिकसाए ।
इक अजगर भारी[1] महां निकस्यो मुख बाए ।
दारुन दीरघ दुखी वहु गमनति फुंकराए ।। २३ ।।

सनमुख आवति गुरू के गति बक्र[2] करंता ।
नीठ नीठ ही चलति है चित त्रित्रू चहंता ।
भट दौरे तिह बरजबे को चहति प्रहारा ।
सतिगुर क्रिपा निधान तबि बच उच उचारा ।। २४ ।।

हटकहु नहिं परहारीयहि. आवन इत दीजै ।
दूर दूर सभि खरे हुइ अविलोकन कीजै ।
अचरज हेरन हेतु तबि होए थिर सारे ।
मंद मंद अजगर चलहि श्री गुरू अगारे ।। २५ ।।

खरे रहे निशचल सकल नेरे तबि आयो ।
सतिगुर चरन सरोज ते पनही[3] निकसायो ।
दहन अंगुशट उठाइ करि तिह सीस छुहायो ।
पतित पुनीतहि को परस बहु पाप मिटायो ।। २६ ।।

भगन सीस भा उदर लगि मरिगा ततकाला ।
कलमलात बिच किरम लघु काटति नित जाला ।
अंतर ते पूरंन हुतो आमिख तिस खाते ।
सदा देति संकट अधिक, बस चलहि न जाते ।। २७ ।।

निकटि खरे सभि देखते सुनि पहुंचे धाए ।
बिधीचंद अरु जोध आदि उर महिं बिसमाए ।
बूझनि कीने जोरि कर अहि[4] इम किम आयो ? ।
चरन छुवति ही आप को निज तन मुकतायो ।। २८ ।।
परे किरम किम घने तन इह अचरज जोवा ।
किह कलमल[5] के करे ते इम दुख फल होवा ? ।

---

1. भारी साँप 2. टेढ़ा 3. जूता 4. साँप 5. पाप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री हरगोविंद सभिनि सों अहि गाथ उचारी ।
'पूरब जनम महंत इह विदत्यो जग भारी ।। २९ ।।
चहुंदिशि के नर मंनता करि सीस निवावैं ।
अनिक पदारथ आन करि इस को अरपावैं ।
जिते किरम तन महि परे सगरे तबि चेले ।
होइ वडाई जगत वड इस हित करि मेले ।। ३० ।।
अहंकार उर महि बडो मम सम नहिं दूजा ।
करहि देश सभि वंदना चरननि की पूजा ।
सिमरयो नहि करता पुरख शुभ करम न कीना ।
गन चेलनि करिबो भजन उपदेश न दीना ।। ३१ ।।
हंकारति ही मरि गयो जूनी अहि पाई ।
लोक परलोक सुख ते रखे, सो क्रिम, समुदाई ।
काटि काटि गन खाति हैं नहि इनहि उधारा ।
पलटा पूरब जनम को लेते इस बारा ।। ३२ ।।
आप न उधर्यो जगत ते, नहिं सिख उबारे ।
निज मंनता के हेतु करि शुभ काज विसारे ।
इन सम की गति देखि करि जे नहिं सिमरंते ।
श्री नानक जी शवद इक उचर्यो हितवंते ।। ३३ ।।

**श्री मुखवाक**

कुलहां[1] देंदे बावले लैंदे वडे निलज ।
चूहा खड न मावई तिकलि बंन्है छज[2] ।।

**दोहरा**

कर न सकहिं अपनो भलो गुर मिलि पाइं न ज्ञान ।
उर अंधे अहंकार ते नहिं प्रभु सिमरन ठानि ।। ३४ ।।
हित मनता करि जतन बहु चेले ब्रिंद बनाइ ।
तिन की होवति अस दशा, बहुजूनी भरमाइं ।। ३५ ।।
हुतो सुकरम विशेष इस आइ पर्यो शरनाइ ।
अबि शुभ गति प्रापति भई तन पंनग मुकताइ ।। ३६ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'अजगर प्रसंग'** बरननं नाम सपतपंचासती अंशु ।। ५७ ।।

---

1. पीरी की टोपी 2. यदि चूहा अपनी पूंछ से फण को बाँध ले तो वह बिल में नहीं घुस सकता इसी प्रकार अहंकारी पुरुष का प्रभु द्वार में प्रवेश असम्भव है ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ५८

# कांगड़ पुनि आगवन प्रसंग

**दोहरा**

उतर्यो डेरा जहिं कहां श्री सतिगुर चहुं ओर।
करति हिरेखा हय लगे बडे किलक बंधि डोर ॥ १ ॥

**निशानी छंद**

करे फरश श्री गुर थिरे बैठे बहु पासा।
अनिक प्रकारनि बारता युति हास बिलासा।
सूपकार[1] तिस काल महिं हित करन रसोई।
लगे सुधारन थान को खनि अविनी जोई ॥ २ ॥
कुछक खनी जबि असथि[2] गन निकसे नर केरे।
श्री सतिगुर के ढिग कह्यो उदिआन घनेरे।
निकसति मानुख के असथि इक थल समुदाए।
किस कारन इकठे गडे नहिं जानी जाए ॥ ३ ॥

**सवैया**

उठि गमने हित हेरनि सतिगुर बिधीचंद आदिक समुदाइ।
जोधराइ संग सगरे बिसमति जाइ पिख्यो ठांढे तिस थाइं।
खनवावति निकसे नर असथी भए ब्रिंद तहिं ढेर लगाइ।
सभिके तरे करंग इकसारो असथि न भगन तांहि दरसाइ ॥ ४ ॥
सभिहिनि बूझे सतिगुर बोले अति दुरभिच्छ[3] पर्यो इक काल।
कितिक बरख बरखा न करी घन धरा भई तबि शुषक बिसाल।
निकटि देश इस अंन न उपज्यो छुधा कष्ट ते मनुख बिहाल।
तजि तजि सदन फिरे सभि इत उत त्रिपति न होति, रहे बहु भाल ॥ ५ ॥
जिस को सरब करंग इह देखति, हुतो समैं तिस अज़मतवान।
जे चित चाहति अपने इह तबि खष्ट रसनि के असन महान।

1. रसोइया 2. हड्डियाँ 3. अकाल



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पकी रोटका सूप रु ओदन अनिक बिधिन के गन पकवान।
सभि अविनी को छादन करतो बांछति बनति जि करति बखान ॥ ६ ॥
प्रभु को भाणा मानि सीस पर करामात क्योंहुं न तबि कीनि।
छुधति दुख्यो अति अंन न प्रापति अपनो सदन त्यागि करि दीनि।
वसतु टोकरा सिर पर धरि करि गमन्यो लोकनि संग प्रबीन।
जित कित फिरति अंन बिन व्याकुल दुरबल अंगनि ओज बिहीन ॥ ७ ॥
बिचरति इत उत थकति प्रानि हुइ आन परे सगरे इस थाइं।
इक निस दिन महिं मृतक भए गन जियति रहे जे तिनहुं उठाइ।
झेरे बिखै पाइ करि दफने, तबि के असथि अहैं समुदाइ।
करंग सकल जिस, धंन पुरखा इहु अजर जरन भाखहिं इस भाइ ॥ ८ ॥
अज़मत जर्यो प्रानि तन छोरे प्रभु आइसु महिं रहि सुख मानि।
बंदनीय सभि जग के अस हुइं धीरज बीरजवंति महान।
इम कहि सतिगुर सभा बिराजे बिसम भए सुनि गाथ पुरान।
सूपकार[1] तबि त्यार अहार सु करयो जाइ करि आन सथान ॥ ९ ॥
ल्याइ निकटि गुर को अचवाइव सगरे त्रिपति भए भट ब्रिंद।
एक जामनी तहां बिताई, चढे प्राति श्री हरिगोविंद।
उतरि परे पुरि कांगड़ के ढिग क्रिपा जोध पर धरति बिलंद।
मिल्यो रहै निस दिन सुख पावै करति बारतालाप अनंद ॥ १० ॥
हाथ जोरि करि जोध वखानी क्रिपा करहु इम क्रिपानिधान।
पावन[2] को करि पावन[3] घर मम पावन करहु दास को जानि।
अचहु अहार आप तहिं बैठहु पुन चाहति कीनो प्रसथान।
इह अभिलाखा पूरन कीजै, सरब कला समरथ गुनवान ॥ ११ ॥
भए प्रेम बसि बिनती मानी गुरू गरीब निवाज क्रिपाल।
लेकरि गमन्यो सदन अपने रुचिरासन इक डासि बिसाल।
कर को जोरि बिठावन कीने, दंपति[4] आइ हरख तिस काल।
जल कर धारि जोध तबि डारति चरन भारजा भले पखालि ॥ १२ ॥
चरनांम्रित की पान कर्यो जुग सीस बिलोचन को तबि लाइ।
सदन कर्यो छिरकावन सारे सतिगुर शरधा अधिक वधाइ।
नाना बिधि के स्वादल भोजन थार परोसि आप ही ल्याइ।
धरि आगे निज ते रुमाल कर, दंपति ठांढे असन अचाइं ॥ १३ ॥

1. चावल 2. चरण 3. पवित्र 4. स्त्री पुरुष दोनों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इहु स्वादल बहु मधुर बनयो प्रभु इह बहु तुरश सलवन प्रकार।
इम कहि करि बहु धरि धरि भाउ सने सने अचवाइ अहार।
महाराज इह अपरअसन शै, लीजहि स्वाद कर्यो हित धारि'।
इम कहि नए नए धरि आगै करहिं रिझावन गुरू उदार॥ १४॥
त्रिपति भए, सुंदर जल सीतल सिख सुता ले करि निज हाथ।
दियो पान करिबो को तिन छिन लेकरि पीवत में जग नाथ।
कर्यो चुरा अरु पान पखारे प्रेम परखि लखि शरधा साथ।
बर को देति भए श्री जग गुर जबि दंपति पद धारयो माथ॥ १५॥
तुमरे उर गुरमति हुइ प्रापति, हम प्रलोक महिं बनहिं सहाइ।
भगति ज्ञान अभ्यासो दंपति सत्तिनाम सिमरहु लिव लाइ।
प्रभु भाणे महिं हरखाहु हित धरि हउमै त्यागहु मिथ्या भाइ।
अनहोवति ही उपजी हिय महिं लखहु सरूप जु सहिज सुभाइ॥ १६॥
हुतो भूत जो रहै भविखत सति चेतन आनंद प्रमानि।
सो सरूप तुम अपनो जानहु नहिं उपजै नहिं होवति हान।
सूखम ते अति सूखम है नित अहै महद ते महद[1] महान।
अंतहिकरण उपाधी सों मिलि इंद्रय सों सबंध पुनि ठानि॥ १७॥
हरख सोग को भागी बनिकरि जनम मरन को पुन पुन पाइ।
नहिं संख्या पूरब तन धारन चौरासी लख जून भ्रमाइ।
आगे जुग असंख महिं जानहु धरहि देहि, भोगहि बिनसाइ।
बार बार जम कै बस परि कै ऊच कि नीच हरट कै भाइ[2]॥ १८॥
जहिं तन धरहि थिरहिं नहिं कितहूं, बिन तन रहहि नहीं किस काल।
यांते बड संकट को त्यागनि, करहि भले नर जतन विसाल।
इक सिमरन सत्तिनाम करे बिन फस्यो रहै इह नित जमकाल।
बिन सतिगुर ते नाम न प्रापति गुरसेवहि तबि होइ निहाल॥ १९॥

दोहरा

सुनति जोध कहि जोरि कर लखहु आपने दास।
रखहु लाज निज नाम की कीजहि सुमति प्रकाश॥ २०॥
प्राति होत त्यारी करहुं रुचहि न तजिबो साथ।
दरशन ते आनंद हुइ लेहु संग मुझ नाथ'॥ २१॥
पुन प्रसंन ह्वै सतिगुरू क्रिपा रसीले नैन।
पिखि दंपति के भाव को कहति सु मुख ते बैन॥ २२॥
अबि तुम कांगड़ पुरि वसहु रिदे धारि गुरध्यान।
सत्तिनाम सिमरन करहु दुहि लोकनि कलिआन॥ २३॥

1. बड़े से बड़ा 2. कूएँ के हरट की तरह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुन हम पठहिं हकार जवि, कै दिन कितिक बिताइं।
मिलहु आनि आनंद सों हुइ डेरा जिस थाइं॥ २४॥
बहुर जोध्र की भारजा बोली बिनै समेत।
रावर भी इस देश महिं आवहु कवहि निकेत'॥ २५॥
पुन श्री हरिगोबिंद कह्यो रूप अपर को धारि।
तुव संतति के सदन महिं बसौं आनि तिस बार॥ २६॥
बंस प्रविरतहि अधिक सुख, तुम आए मम काज।
हलति पलति रख्यक अहौं भुगतहु राज समाज॥ २७॥
इम बर दियो बिसाल कौ दुहुं लोगनि सुख केर।
दंपति पाइ प्रमोद को सिर धरि पद पर फेर॥ २८॥
आशिख दे सतिगुर उठे सिवर बिराजे जाइ।
सुपति जथा सुख जामनी प्राति भई पुन आइ॥ २९॥
सौच शनान सु ध्यान करि बसत्र शसत्र को पाइ।
त्यारि अरुढनि को भए श्री सतिगुर सुखदाइ॥ ३०॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे **'कांगड़ पुनि आगवन प्रसंग'** बरनन नाम अषटपंचासती अंशु॥ ५८॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५६

# फतूही प्रसंग

**दोहरा**

तयार भए श्री सतिगुरू चलि पहुंचे तिस काल।
साधू रूपा दौन मिलि बंदति प्रेम बिसाल ।। १ ।।

**सवैया**

हम को हुकम अहै किस बिधि को महाराज ! अबि देहु सुनाइ।
दरशन की उर अधिक लालसा जथा कमल बांछति दिनराइ[1]।
करे निहाल दीनि बडिआई जुग लोकन को बने सहाइ।
रावर के मानिंद क्रिपाल न रज कन[2] ते सम मेरू बनाइ ।। २ ।।
कह्यो गुरू तुम करहु देग को सभि को देहु असन[3] बरताइ।
बरु अरु श्राप सफल हुइं तुमरे त्रिखी तेग सम काटति जाइं।
सतिसंगति कर सिमरहु सतिगुर अवर रूप धरि मैं पुन आइ।
तुव संतति[4] सभि मिलहि सेव करि अंग संग गुर तुमहि सहाइ ।। ३ ।।

जोधराइ ले संग ब्रिंद नर चरनकमल टेक्यो सिर आइ।
भए अरुढन सतिगुर स्वामी पहुंचावन हित साथ सिधाइ।
दुंदभि बजे नकीब पुकारति सैना चली मनहुं दरीआइ।
एक कोस पर थिर हुइ बोले हटहु अवै सादर हित आइ ।। ४ ।।

उतरि तुरंग ते जोधराइ तबि अधिक प्रेम ते पकरे पाइ।
अपने जानि याद मुझ राखहु लेहु मिलाइ आप सहिसाइ[5]।
नहिं बिछरनि को मन कबि करता तऊ रावरी अमिट रजाइ।
तुमरो संग सरब ते ऊतम अवचल अनंद जिनहुं ते पाइ ।। ५ ।।

सतिगुर कह्यो मिल्यो तैं नित ही लोक प्रलोकहिं गुरू सहाइ।
तुव संतति को हमरी संतति पिखि सेवा को अनंद उपाइ।

1. सूर्य 2. ज़र्रा 3. भोजन 4. संतान 5. जल्दी



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुर घर सों बड मेल भयो शुभ, यांते रहहु सदा सुख पाइ।
बिघन ब्रिंद के बिबिध बिधिन के भए बिनाशनि बनहि न काइ ॥ ६ ॥

इम कहि कर्यो हटावन घर को गयो चरन पंकज लपटाइ।
गमनति मुरि मुरि पाछे हेरति जिस कै रिदै प्रीति अधिकाइ।
सिमरति सतिगुर मूरति उर धरि करति सराहन जननि सुनाइ।
नहीं गरीव निवाज गुरू सम दासनि सुखद रिपुनि दुखदाइ ॥ ७ ॥

जिन कै रिदै बसै प्रभु निस दिन क्या महिमा तिन कहौं बनाइ।
बिछुरति लोचन ते जल ढरक्यो नीठ नीठ पाछे परि पाइ।
अपर लोक भी देकरि धीरज करे हटावनि तबि सुखदाइ ॥ ८ ॥

गमने पंथ बजति बड दुंदभि चमूं चलति नभ धूलि उडंति।
कितिक कोस चलि श्री हरिगोविंद डेरा करि निस कीनि बितंति।
खिलति अखेर चलति चित भावति सने सने मग श्री भगवंत।
मिलहिं आइ नर अरपि उपाइन बंदहिं चरन कमल सुखवंति ॥ ९ ॥

गमनहिं इम सुखेन श्री सतिगुर गुज्जरवाल ग्राम को आइ।
शुभ सथान लिखि सिवर[1] कर्यो तहिं उतरी सैना मिसल बनाइ।
श्री हरिगोविंद फरश कराइव वैठि गए जुति नर समुदाइ।
निकटि निकटि के ग्राम सुनी सुधि लए उपाइन को दरसाइं ॥ १० ॥

'श्री गंगा घर महिं भी प्रापति' इम कहि आवति मोद उपाइ।
कितिक होति सिख नवें दरस करि कितिक प्रथम के पहुंचहिं धाइ।
रहति भीर नित संगति की बहु दरसहिं विनै करहिं बर पाईं।
अंन दुगध, दधि, दरब, दुकूलनि[2] तुरंग शसत्र हित चहिं अरपाइ ॥ ११ ॥

तहिं को राहक वध्यो हुतो बहु सुनी तांहि सुधि गुर भगवान।
डेरा कर्यो आनि करि बाहर हरख रिदै उपजाइ महान।
पिछले पहिर दिवस के आयहु नर गन संग लिए सवधान।
अधिक उपाइन अरपन के हित ल्याइ सदन ते रुचि को ठानि ॥ १२ ॥

खड़ग सिपर[3] निज अंग बंधि करि बाज हाथ पर लियो बिठाइ।
कुछ कूकर अपने संग करिकै ब्रित्ति अखेर[4] समाज बनाइ।
गुरको मिलि पुन चलहिं वहिर को करहिं शिकार सदन तबि आइ।
इम कहि चढि तुरंग पर पहुंच्यो कितिक सऊर संग दुति पाइ ॥ १३ ॥

1. डेरा 2. दूध, दही, धन, दुपट्टे 3. ढाल 4. शिकार की

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुरू सिवर के निकटि उतरि करि आगै करि अकोर समुदाइ ।
पहुंचि समीप गहे पगपंकज बंदन करी सीस को न्याइ ।
बैठ्यो निकटि बिकट भट गुर के देखति भयो शेर समताइ ।
रण की बात बूझि हरखायो बिधी चंद सभि कही सुनाइ ।। १४ ।।

श्री हरिगोविंद कुशल प्रशन करि कर पर बाज़ बिलोकनि कीनि ।
बूझनि भए कहहु इहु कस है[1] ? गहै विहंगम[2] किम बल पीन ? ।
सीछति कर्यो कि नहिं अबिलौ इहु कित ते आइ किधौं मूल लीनि ।
कितिक काल को तुम समीप है ? करनि अखेर शौक चित लीन ।। १५ ।।

नाम 'फतूही' राहक को तिह कहति भयो 'सुनीयहि महाराज ।
दूर देश को मुझ ढिग आयहु इहु सुंदर सीछति है बाज
झपटति बडे बिहंगनि गन को राख्यो मैं अखेर के काज ।
बहु बिधि सों इस पारन करिहौं जतन अनेकनि को उपराज ।। १६ ।।

खानपान इसको निज हाथनि करति रहौं मैं निकटि रखाइ ।
अधिक अखेर तमाश दिखावति को खग[3] झपटे नहिं बच जाइ ।
जो बाजनि के गुन सभि धारति करि तरीफ मैं कितिक सुनाइ ।
निसबासुर महिं नहिं बिसाह करि राखौ नित ही निकटि बिठाइ ।। १७ ।।

सुनति बाज़ गुन सतिगुर बोले प्यारी वसतु गुरू अरपंति ।
तिस को फल अतिशै हुइ प्रापति यांते हम को देहु सुहंति ।
करहिं अखेर संग अबि इसके हेरहिं गुन जेतिक वरनंति ।
किम झपटति है बड़े बिहंगम किम करि बेग उडति परूरंति ।। १८ ।।

सुनति फतूही अरज़ गुजारी 'श्री प्रभु ! मुझ ते दियो न जाइ ।
अधिक प्रेम है इस महिं मन को नहि न्यारों मैं करौं कदाइ ।
देश बिदेशनि सगरी दिशि ते तुम को वसतु चली गन आइ ।
मुझ ढिग तो इक इही बाज़ है प्रिय मनकौ मैं रखौं बनाइ ।। १९ ।।

श्रीगुर लखी क्रिपन[4] इह मन को कर्यो बचन तिस को ततकाल ।
जे गुर उचित वसतु कुछ होवहि सो पहुंचैगी आइ उताल ।
नहिं देवनि को अपजसु लेवनि सो प्रापति ही होति बिसाल ।
मूढ फतूही लखि नहिं साकहि करि अभिबंदन उठि तबि चालि ।। २० ।।

---

1. कैसा है 2. पक्षी 3. पक्षी 4. कंजूस

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भा मन भंग बिरस गुर संगहि गयो न बहिर हट्यो घर आइ।
पिखि आडे पर बाज बिठाइव आप मंच पर थिर्यो तदाइ
चितवति चित गुर जाचन कीनसि प्रिय मन को किम दियो न जाइ।
कर पर मैं बिठाइ करि गमन्यो नहि नीकी इहु तिनहुं दिखाइ ॥ २१ ॥

रिदै बिचारति बाज निहारति इक रेशम डोरा तिस पास।
गहति चोंच मैं निगल गयो तबि दिखति फतूही रहिगा तास।
तूरन करत्यों गहति रह्यो तिह नहिं बचाव होयहु पछुतासु।
अंतर गयो बिहाल भयो तबि लोट पोट दुख ते जिम नाश ॥ २२ ॥

घने उपावन करति फतूही भयो बाज जिम प्रानन‍ि हान।
जाति हाथ ते म्रितक होइ अबि गुर गाथा मन महिं तबि आनि।
देवौं तिनहिं मरन अबि लाग्यो बनों समुख तिन बाक सु मानि।
पुनि मरि जाइ रहै कै जीवति उतरहि दोष कीनि अज्ञान ॥ २३ ॥

बचन न मान्यो मैं गुर को तबि किधौं भयो अपराध जु सोइ।
देनो उचित हुतो मैं दीय न यांते दशा बाज अस होइ।
एव बिचारति तुरत तुरंग चढि लेकरि चल्यो बिलम[1] को खोइ।
शीघ्र पहुंच्यो गुरू निकटि सो दीन मना चित लाज परोइ ॥ २४ ॥

बाज बिठाइ गुरू के आगे कर जोरे जुग बिनै बखानि।
महाराज ! इहु रावर को अबि लीजहि निज कीजहि सवधान।
बाक् न मान्यो भयो दोष बड लै अबि बखशहु क्रिपानिधान।
भूलनहार सदा इहु प्रानी, बखशनहार सु आप महान ॥ २५ ॥

कहां भयो ? तबि सतिगुर बूझ्यो सुनति फतूही सगल बताइ।
तुम ढिग ते मैं जाइ बिठाइव रेशम डोरा गयो लंघाइ।
ततछिन भयो बिहाल मरन को पहिचान्यो आन्यो उत लाइ।
जे चित चहहु जिवाइ लेहु प्रभु ! नातुर मरहि नहिं बिलमाइ ॥ २६ ॥

सुनि श्री हरिगोविंद चंद गुर अपने हाथ बिठावनि कीनि।
कहति भए किस कारन करिकै डोरा बदन निगल तैं लीनि ?
जिम निगल्यो तिम उगल तुंड[2] ते सावधान बनि कै बलपीन'।
इम भनते ततछिन ही मुख ते रेशम डोर उगल करि दीनि ॥ २७ ॥

---

1. देरी 2. मुँह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

**दोहरा**

पर्यो गुर आगे तबहि कीनि बिलोकन डोर।
रिदै फतूही बिसम करि रह्यो जुगल कर जोरि ॥ २८ ॥

श्री सतिगुर समरत्थ तुम सभि बिधि शकति बिसाल।
मारन अरु जीवावनो करहु बाक के नाल ॥ २९ ॥

कर्यो दोष सो बखशीए लीजहि बाज़ संभाल।
इम कहि गमन्यो सदन को करि बंदन ततकाल ॥ ३० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे '**फतूही प्रसंग**' बरननं नाम एकोन-षषठी अंशु ॥ ५९ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ६०

# श्री करतारपुर आवन प्रसंग

**दोहरा**

श्री सतिगुर ले बाज़ को सौंप्यो मीर शिकार।
ख्रान पान करिकै भले बिसरामे सुख धारि ॥ १ ॥

**निशानी छंद**

निशा बिताई सतिगुरू करि सौच शनाना।
तिम बिनाशि प्रकाश भा होए सवधाना।
बसत्र शसत्र पहिरे प्रभू हय निकटि मंगायो।
नाम 'जान भाई' धर्यो नीके उर भायो ॥ २ ॥

भए अरुढनि सतिगुरू धौंसा धुंकारा।
सकल बाहनी सुनि चढी हथ्यारनि धारा।
गमने मारग मैं तबहि अरु करति अखेरा।
नवो बाज़ को छोरते पिखि लवा बटेरा ॥ ३ ॥

पंछी पिखहिं सुकाव[1] को छोरहिं तिह पाछे।
झपटति है करि बेग को दिखरावति आछे।
सने सने मग महिं चलति इम करति बिलासे।
खेलति भए शिकार को अविलोकि तमाशे ॥ ४ ॥

जथा क्रम उलंघते सलिता तट आए।
करनि बाहनी पार सभि केवट[2] समुदाइ।
तरनी[3] कीनि इकत्र बहु आवहि इक जाई।
सुभटनि सहित पवंगमनि[4] दे पार लंघाई ॥ ५ ॥

होति कुलाहल घाट पर भरि पूर चलावैं।
जाइ उतारति पार तट पुन तूरन ल्यावैं।

---

1. सुरख़ाब 2. मल्लाह 3. क़िश्ती 2. घोड़े



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस बिधि केतिक काल महिं सभि पार लंघाए।
श्री हरिगोविंद हेतु पुन तरनी शुभ ल्याए।। ६ ।।
हुती नवीनी दीरघा बहु रंग लगाए।
तुरकेशुर के हेतु जे आछी बनिवाए।
उर प्रसंन गुर को करन तट पर थिर कारी।
हाथि जोरि केवट तबहि इम बिनै उचारी।। ७ ।।
महाराज! सभि बाहनी हम पार लंघाई।
रावर केर चढावने इहु तरनी आई।
दिन सारे महिं पार करि अबि आप चढीजै।
सलिता[1] सतद्रव दीरघा चढि पार करीजै।। ८ ।।
सुनि केवट की बिनै को उठि चले क्रिपाला।
खेल करावति नीर की ले चले बिसाला।
उर प्रसंन सतिगुर करे गन दरब दिवाए।
लीनि रजतपन पंच सै केवट हरखाए।। ९ ।।

उतरे पार करार पर सतद्रव जल हेरे।
सकल बाहनी रुचिर थल कीनसि जहिं डेरे।
खान पान सतिगुर करे तहिं निसा बिताई।
भई प्राति करि सौच को मज्जे[2] गोसाईं।। १० ।।

बसत्र शसत्र को पहिरिकै आरूड़ि तुरंगा।
गमन कीनि सतिगुरू प्रभू जिनको जसु गंगा।
जथा करम मग को उलंघि पहुंचे तबि जाई।
श्री करतार पुरा जहां गुर रच्यो बनाई।। ११ ।।

सरब जहां परवार है गुर को हितकारी।
रिदै प्रतीखति[3] रहति है कबि दरस निहारी।
बनिता नुखा सपुत्र बसि अरु पौत्र अछेरे।
कबि करिहैं आगवन को इम चहित घनेरे।। १२ ।।
गुरू दूर पुरि ते हुते धौंसा धुंकारे।
नरन सुनि धुनि कान महिं चित कीनि बिचारे।
निशचै करि आगवन गुर बडि आनंद राचे।
मनो मोर घनघोर ते करि शोर उबाचे।। १३ ।।

---

1. दरिया 2. स्नान किए 3. इंतजार करते हैं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इत उत दौरति नर फिरहिं को कांहि सुनावति ।
करति कुलाहल आप महिं श्री सतिगुर आवहिं ।
सगरे पुरि महिं सुध भई सभि त्यागयो काजा ।
तत्पर इक गुर देखिबे रय्यत निज राजा ।। १४ ।।

श्री गुरदित्ता हय चढ्यो सूरज मल संगा ।
तेग बहादुर तुरत चढि मंगवाइ तुरंगा ।
अपर लोक बहु चढि चले हुइ इ.के साथा ।
ले प्रसादि मन भावते अविलोकन नाथा ।। १५ ।।

आइ अगाऊ गुर मिले पग पंकज वंदे ।
श्री हरगोविंद चंद पिखि आनंद बिलंदे ।
कुशल प्रशन कर सभिनि से आगे पुन चाले ।
निकसे पुरि ते ब्रिंद नर गमने पग नाले ।। १६ ।।

सो आगे आवति मिले दे भेट अगेरे ।
चरन सरोजन परसते धरि मोद घनेरे ।
सभि सों सतिगुर बोलकरि प्रिय बाक बिसाले ।
चले अगारी को प्रभू बड शोभा नाले ।। १७ ।।

सैना सभि पशचात् करि एकल हुइ आगे ।
धरि धरि पहुंचहि प्रेम जां पग पंकज लागे ।
आइ प्रवेशे पुरि दर जनु उद्यो सु चंद्र ।
निज दर दर दारा खरी ले माल बिलंद्र ।। १८ ।।

पहिरावति गुर के गरे गन पुश्प[1] वसावैं ।
बार बार करि आरती सनमुख दरसावैं ।
बलिहारी हुइ प्रेम सों गुर मूरति हेरैं ।
सुनी लराई तुरक गन करि फते घनेरैं ।। १९ ।।

सादर सभिनि बिलोकते बोलति किह साथा ।
सने सने पुरि को चलति हरखति गुर नाथा ।
देति मोद को पुरि जननि बूझति सुख शांती ।
इम प्रापति अपने महल पहुंचे रिपु घाती[2] ।। २० ।।

श्री ग्रिंथ साहब जहां तहिं पूरब आए ।
धरि प्रशादि दरशन कर्यो निज सीस निवाए ।

1. फूल 2. शत्रु को नाश करने वाले

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुने शबद तबि पंच तहिं थिर केतिक काला ।
पुरि जन बैठे सगल गन पिखि अनंद बिसाला ।। २१ ।।
हाथ जोरि बूझन करे रण भयो घनेरा ।
रही श्रेय[1] तनु आप के प्रभु जी ! तिस बेरा ।
बिधीचंद तबि सभि कही जिम तुरक खपाए ।
शलभा[2] सम अनगिनत ही रिपु चढि करि धाए ।। २२ ।।
श्री नानक की क्रिपा ते जाने कुछ नांही ।
सुगम हते रिपु प्रवल जे राखे रण मांही ।
फते गुरू की बड भई जग महिं बिदताई ।
को न अरहि अरि गन मरहिं, थिरहिं न समुहाई ।। २३ ।।
भा अचरज सुनि सभिनि के कंप्यो तबि शाहू ।
मेरो तखत न छीन ले त्रास्यो मन मांहू ।
काबल बलख बुखार लौ बड धांक उठाई ।
पतिशाहिति गरदश[3] करी गुर, धूम मचाई ।। २४ ।।

जहिं कहिं के सूबे डरे गुर नहिं इत आवहिं ।
दबके चारहुं चक्क महिं नहिं को गरबावहि ।
निज निज सवधानी करे, को चहति पलाई ।
इत्यादिक सभि बारता सुनि मोद उपाई ।। २५ ।।

पुरि जन सुनि करि बच भन्यो इन सम नहिं दूजा ।
जिन की देव अदेव मिलि ठानंति पग पूजा ।
बंदनीय इह सभिनि के गुर नानक गादी ।
सकल जगत जिनको निमहिं हारे सभि बादी[4] ।। २६ ।।

केतिक घटिका दिन रह्यो तबि उठे क्रिपाला ।
पुरिजन करे बिसरजना प्रिय भाखि बिसाला ।
सुंदर मंदर अंदरे गुर जाइ प्रवेशे ।
मरवाही अरु नानकी उर अनंद विशेषे ।। २७ ।।
पग पंकज गुरू के लगी मूरति प्रिय हेरी ।
लै करि श्री हरिराइ को आई तबि चेरी ।
धीरमल्ल के सहित ही गुरचरनीं लाए ।
नुखा दौनहूं आइ करि निज सीस निवाए ।। २८ ।।

1. सुख शाँति 2. पतंगों की तरह, टिड्डी दल की तरह 3. हलचल मचा दी 4. द्वेष भावना रखने वाले

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करि करि सगरी वंदना पहुंची निज थाने ।
वर प्रयंक पर गुर थिरे शुभ बाक बखाने ।
लए गोद हरिराइ को दै मोद दुलारैं ।
धीरमल्ल बैठ्यो निकटि तिस ओर निहारैं ॥ २९ ॥
श्री गुरदित्ता ढिग थिर्यो करि लोचन नीचे ।
सूरजमल दिशि देखि गुर अंम्रित जनु सीचे ।
तेगबहादर दहिन दिशि इक रस ब्रिति जांही ।
सनमानति सिर हाथ धरि बानी मृदु प्राही ॥ ३० ॥
अणीराइ सनमुख थिर्यो पित रूप दिखंते ।
क्रिपादृष्टि परवार पर श्री गुरू करंते ।
दास रु दासी सभिनि ही ठांढी कर जोरे ।
देखि अनंदति उर करे रस प्रेम सु बोरे ॥ ३१ ॥
परिवारति परवार ते द्वै घरी बिताई ।
श्री गुरदित्ते दिशि पिख्यो म्रिदु गिरा सुनाई ।
ब्रिंद मसंद बुलाइ ढिग बाहिर थिरहूजै ।
त्रिण दाणा खाणा भले जिम सभि को पूजै ॥ ३२ ॥
करहु दिवावन धीर सों नर खरे करीजै ।
जथाजोग सभि सैन की नीके सुध लीजै ।
सूरजमल अणिराइ तबि उठि बाहिर आए ।
धीरमल्ल हरिराइ जी तिन संग सिधाए ॥ ३३ ॥
तेगबहादर पुन उठे सभि मिलि कै संगा ।
पिख्यो 'जानभाई भले बड बेग तुरंगा ।
सुंदर हेरि प्रमोद ते कर फेरति अंगा ।
मनहुं चितेरे लिखि करी मूरत सरबंगा ॥ ३४ ॥
इम उतसव पुरि महिं महां परवार मझारा ।
दीपमालिका बहु करी घर गरी बजारा ।
अति अनंद सभि मैं भयो जिम रावण मारा ।
रामचंद पुरि आपने मिलि करि परवारा ॥ ३५ ॥

**इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे 'श्री करतार पुर आवन प्रसंग' बरननं नाम षष्टी अंशु ॥ ६० ॥**

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ६१

# करतार पुर दरबार प्रसंग

**दोहरा**

**निज** घर पैंदे खान सुनि आयो करति उताल ।
**बिधीचंद** को मिलति भा करि सलाम ततकाल ।। १ ।।

**निशानी छंद**

सति गुर की सुध बूझि मंदर निज मांही ।
बैठि निकट करि बारता किम भी रन मांही ? ।
बिधीए सकल बखान तबि जिम भा घमसाना ।
तुरकानी[1] बहु बाहिनी धरि आयुध नाना ।। २ ।।

आइ परी अध जामनी गन छुटी तुफंगा ।
पहुंचे सतिगुर सूरमे करि तेज़ तुरंगा ।
लरति भए मिलि आप महिं तोमर[2] तरवारैं ।
नहिं तुरकनि ते कछु सरी इह सभुख प्रहारैं ।। ३ ।।

निस महिं मरे सहस्त्र बहु पुन भयो प्रकाशा ।
चढे आप हय पर गुरू हित रिपुनि बिनाशा ।
बली काबली बेग भट उमराव महाना ।
दुंद जुद्ध कीनो महां गहि हाथ क्रिपाना ।। ४ ।।

सतिगुर खड़ग प्रहारिकै राख्यो बिच खेता ।
ललाबेग सभि चमूं[3] मुखि आयो रण हेता ।
अर्यो प्रथम जेठा तहां बहु करि हथ्यारा ।
घिर्यो तुरक गन महिं बली बहुतिनि मिलि मारा ।। ५ ।।

पुन गुर गमने समुख तिह संघर[4] बड ठाना ।
ललाबेग अरु गुरू के होए हय हाना ।

---

1. तुर्क सेना 2. नेज़े 3. सेना 4. संग्राम



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सो भी लीनो मारि करि सभि चमूं प्रहारी।
भई पराजै तुरक इम गुर जै करि भारी।। ६ ।।
जाती मलक जि आदि भट गन शसत्र प्रहारे।
सुनि पैंदे खां कहति भा क्या करो उचारे।
मैं होतो जे रण बिखै बल करति घनेरे।
गुर को जानि न देति कबि हय हत्यो अगेरे।। ७ ।।
क्यों जेठा रण होइ हति मैं बनति सहाई।
समां न आवै हाथ कबि, क्या कहौं सुनाई।
बल मेरो जग बिदत है जिह नाम सुनंते।
भाजति शत्रु ब्रिंद तित् नहिं ठहिर सकंते।। ८ ।।
तीरन सों बेधति घनें गहि फेर क्रिपाना।
संघारति ही करति मैं गुर अग्र मदाना।
निकटि न होने देति रिपु घालति घमसाना।
क्यों जेठा हय मरति रण, क्या करौं बखाना।। ९ ।।
बिधीआ सुनि कै कहति भा कहि जिम है तैसे।
पर गुर की मरज़ी कहां, लखि सकिय न कैसे।
इम निस मैं करि बारता मिलि कै सभि संगा।
जाति मलक जि आदि हैं सुख बूझति अंगा।। १० ।।
खान पान करि जथा सुख सभि निस बिसरामे।
अनंद करति घर घर बिखै ले सतिगुर नामे।
रही जाम जबि जामनी[1] जग गुर तबि जागे।
सौच शनाने बैठि पुन ध्यान सु रस पागे।। ११ ।।
आसा वार सु रागि धुनि गावति सुनियंते।
जहां कहां गुर गिरा सिख धरि प्रेम पठंते।
लघु दुंदभि नौबत बजति आनंद उपजंती।
संग नफीरी गुर सबदि गावति सुखवंती।। १२ ।।
बरखा सुधा मनिंद है धुनि श्री गुरू बानी।
उठे अनंदति सुनति सभि सत्तिनाम बखानी।
इमप्रभाति मंगल सहत शुभ भयो प्रकाशा।
भाट नकीब उचारते गुर को जसु रासा।। १३ ।।
पातशाहु साचा जगत हुइ अंत सहाई।
सोढी बंस समुंद्र महिं बिदत्यो निसराई[2]।

1. रात एक पहर बाकी रही 2. चंद्रमा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देग तेग पूरो धनी बड डील बिसाला।
फते करति अनगन रिपुनि रण करम कराला[1] ।। १४ ।।
पीरी अरु मीरी महां देनो नित धारी।
धरता दोनो खडग कौ दोनहुं भुज भारी।
रख्यक दोनो लोक को दासन सुख देता।
मुख़लस खां के प्रान हनि राख्यो रण खेता ।। १५ ।।
सतिगुर पित को रिपु महां चंदू गहि मारा।
अबुदुलखां सुत सखा जुति करि जंग प्रहारा।
बली काबली बेग को संघारक बीरं।
ललाबेग बड चमूं जुति मार्यो धरि धीरं ।। १६ ।।
परी धांक चहुं दिशनि महिं, कंपे गन राजे।
सुनि प्रताप भाजनि चहति सभि तजहि समाजे।
दिल्ली लवपुरि आदि गढ त्रासति धरि लाजे।
बाजे बाजे[2] दिन बिखै खोलति दरवाजे ।। १७ ।।
शाहु जहां भै धारि करि रण ते चित टारा।
जग महिं नहिं को अर सकहि प्रताप उदारा।
करामात कामल बली सभि मानहिं आना।
सकल सुरासुर सिर धरहिं जिम करहिं बखाना।
जसु करता इत्यादि गुन उठि प्राति सुनावैं।
संख शबद चहुं ओर ते पुरि बिखैं उठावैं।
बसत्र शसत्र तन पहिरकरि गुर बाहिर आए।
बरण बरण[3] को फरश तबि दीरघ डसवाए ।। १९ ।।
बर गादी उपधान[4] जुति बंदन करि बैसे।
चमर चलाचल ढुरति है दुति हंसन जैसे।
सुभट मसंद बिलंद जे चलि करि तबि आए।
मुदति होति पुरि जन सरब उर दरशन चाए ।। २० ।।
आइ सभा पूरन भई लोचन अरबिंदा।
बंदति बिकसति देखते रवि हरिगोबिंदा।
पैंदे खां आयो तबहि जुति सिपर क्रिपाना।
पग पंकज पर सिर धर्यो पिखि आनंद ठाना ।। २१ ।।
कुशल प्रशन सतिगुर कर्यो कर जोरि बखाना।
मैं रावर की कृपा ते सद ही सुखसाना।

---

1. भयानक, सख़्त 2. कभी-कभी 3. रंगा-रंग के 4. तकिया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संघर भयो बिलंद ही नहिं मोहि बुलावा।
नहिं आयो तवि काज तहिं, निशफलता पावा ॥ २२ ॥

सुनि सतिगुर धीरज दई पुन जंग मचैगो।
तहां काम तूं आइ हैं रज श्रोण[1] रचैगो।
तूषनि होयो खान तवि नहिं वोल सकंता।
सभा भरी उडगन मनहुं गुर चंद सुभंता ॥ २३ ॥

सुनि सुनि गुर आगमनि को ढिग ढिग पुरि गामू।
उतलावति पहुंचति पिख्यो दरशन अभिरामू।
अरपहिं अनिक अकोर को गन वंदन ठानैं।
पुरियति हैं गनकामना सुख होइ महानैं ॥ २४ ॥

कृपा दृष्टि सभि पर करहिं हुइ धनी कि रंका।
मनहुं चकोरनि अनंद दे रितु सरद मयंका[2]।
हय ल्यावनि की वारता पुरि जनन सुनाई।
विधीचंद के गुन कथे सुनि सभि विसमाई ॥ २५ ॥

बहुनर पिखहिं तुरंग को गुनगन जिस भाखे।
उचित हुतो सतिगुरू के आयो अभिलाखे।
चारहुं पुत्त्र समेत गुरू अस उपमा पाई।
मूरति जनु बेदनि धरी विधि निकटि सुहाई ॥ २६ ॥

जाम दिवस के चढे लगि बिच सभा थिरे हैं।
जथा मनोरथ जिन धरे तिम पुरन करे हैं।
अति अनंद उतसव कर्यो पंचांम्रित[3] आए।
होति भई अरदास तबि सभि महिं बरताए ॥ २७ ॥

बहुर उठे अंतर गए सभि पुत्र समेता।
बैठे बडे प्रयंक पर जो रुचिर निकेता।
आइ मरवाही नानकी सेवा महिं लागी।
दासी दई हटाइ सभि अतिशै अनुरागी ॥ २८ ॥

थाल परोस्यो आप ही बिधि विविध अहारा।
चंदन चौंकी पर पर्यो चतुरई सुधारा।
चामीकर के पात[4] सभि शोभति धरि आगे।
खष्ट रसनि के असन शुभ गुर अचवनि लागे ॥ २९ ॥

---

1. मिट्टी और लहू 2. शरद ऋतु का चाँद 3. कड़ाह प्रसाद 4. सोने के बर्तन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिपति भए जल पान करि पुन पान पखारे।
तिम ही चारहुं पुत्र तहिं अचि लीनी अहारे।
मरवाही अरु नानकी ले कंचन थारां।
अ्रच करि सीत प्रशादि को उर आनंद धारा ।। ३० ।।

पुन श्री हरिगोबिंद गुर थिर होइ पयंका।
पौढि गए बिसराम हित जिन जसु अकलंका।
भई सपतमी रासि अबि पूरन इस थाना।
कवि संतोख सिंह बंदना धर करि उर ध्याना ।। ३१ ।।

**दोहरा**

तीर बिपासा के निकटि श्री बर पुरि करतार।
तहां बिराजें सतिगुरू सोढिबंस अवितार ।। ३२ ।।
जाम रही जबि जामनी कीनसि सौच शनान।
निजानंद श्री सतिगुरू ह्वै हैं अंतर ध्यान ।। ३३ ।।

**चौपई**

जो इहु कथा सुने धरि ध्यान। गुर सिखी प्रापति ह्वै नाम।
बानी पढै प्रीति मन लाइ। श्री नानक जी सदा सहाइ ।। ३४ ।।
पूरन होयो कथा प्रसंग। सतिगुर को जसु बढ्यो उतंग।
कवि संतोख सिंह कीनि उचार। बार बार जावै बलिहार ।। ३५ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे सप्तमि रासे श्री सतिगुर खष्टम पातशाह श्री हरिगोविंद जी भाई बिधीचंद को भेज कर तुरकेशुर ते जुग हय मंगवावन पुना ललावेग का युद्ध, भाई रूपे होवा श्री सतिगुर जी की जीत भई, कवि संतोख सिंह बिरचतायां नाम एकखष्टी अंशु ।। ६१ ।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१ओंकार सतिगुर प्रसादि।
श्री वाहिगुरु जी की फतह॥

# अष्टमि रासि कथनं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १

# बिधीआ प्रसंग

**दोहरा**

जिसि बिन जाने ब्रिंद दुख, जाने अनंद बिलंद ।
पारब्रह्म परमातमा, वंदौं जुग कर बंदि ॥१॥

**कवित्त**

चंद्रमा बदन वारी, उज्जल रदन वारी,[1] बिघन कदन वारी,[2] दाती है शरन की ।
चंपक बरन वारी,[3] कविता बरन वारी, सुशट बरन वारी, उर में धरनि की ।
कुंडल करनि वारी,[4] सुमति करनि वारी, कमल करनि वारी, गति है करिनि[5] की ।
लोचन हरन वारी, दरनि अरिनि वारी,[6] दोशनि हरिनिवारी महिमा चरन की ॥२॥*

**दोहरा**

भवा, भै हरा,[7] भव-भरी, बली बाहु सम शेर ।
हाथ जोरि मम बंदना, बर करि हा शमशेर[8] ॥३॥
†सरबोतम जन सरबदा सरबोपरि जसु चारु ।
जग गुर श्री नानक नमो धरनी पर सिर धारि ॥४॥
श्री अंगद रवि गयान के तिमर बिकार बिनाश ।
पद अरविंदनि बंदना, कीजहि सुमति प्रकाश ॥५॥
श्री सतिगुर बर अमर जी भगति गयान दे दान ।
ज़ाहर करे जहान जन नमसकार तिनि ठानि ॥६॥

---

1. निर्मल दांतों वाली 2. विघ्न काटने वाली 3. चंपा जैसे रंग वाली 4. जिसके कान में कुंडल हैं 5. हस्तिनी जैसी चाल वाली 6. शत्रुओं की विनाश कर्त्ता 7. भय हरने वाली भवानी 8. ज़ोर से तेग चलाने वाली

*शारदा देवी का मंगल है

†दस गुरुओं का मंगल है



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूरज सोढी बंस के बिदति सकल जग जोइ ।
नमो चरन परि नित करौं रामदास गुर सोइ ।।७।।
अजर जरनि, धीरजि धरनि, तारन जननि जहाज ।
नमो चरन अरविंद कउ श्री अरजन सुख साज ।।८।।
स्रेशट आयुध[1] धरनि महिं तुरकनि हरिनि समाज ।
बंदन ठानौं बंदि कर हरिगुबिंद महांराज ।।६।।
दाता भोग रु मोख के दासनि सदा सहाइ ।
नमो नमो पग कमल को श्री सतिगुरु हरिराइ ।।१०।।
बाल अवसथा गयान घन, नाशक बिघन बिसाल ।
चरन सरोजनि को नमो श्री हरि क्रशन क्रिपाल ।।११।।
तेग बहादर सतिगुरु हादर[2] जहिं सिमरंति ।
पग पंकज परणाम लिहु परम रूप भगवंत ।।१२।।
हिंदु धरम के आसरा तुरकनि तेज बिनाश ।
श्री गुरु गोविंद सिंह जी ! नमो चरन के पासि ।।१३।।

**निशानी छंद**

रामकुइर भाई कथा बरनंति सुनावैं ।
सुनहिं सिंह चित चौंप सों मन मोद[3] उपावैं ।
तिपति न हुइं चित रुचि बूझति पुन औरं ।
श्री हरिगोविंद की कथा सूरनि सिरमौरं ।।१४।।
असन अचवि मंदिर थिरे सतिगुरु जिस काला ।
मरवाही अरु नानकी ढिग सेव बिसाला ।
बूझति भी रण-बारता 'किम बधयो बखेरा ? ।
जिस ते लशकर शाहु को चढ़ि आइ बडेरा ।।१५।।
सुनि गुर उचरि प्रसंग सभि तिन को समुझावा ।
'बिधीचंद बुधिवान् बड हय[4] तहिं ते लयावा ।
शाह जहां के प्रिय हुते, रहि बन करि घासी ।
घात लाइ सेवा करति केतिक दिन पासी ।।१६।।
दुरग दिवार फंदाइ करि ले आइ तुरंगा ।
पुन दूसर के हित गयो वहु चतुर निशंगा ।
खोजी बनि सभि देखिते दीवार फंदायो ।
इम दोनो हय गए लखि चित शाहु रिसायो ।।१७।।

1. हथियार 2. हाज़र 3. खुशी 4. थोड़ा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लशकर भेज्यो अधिक ही बड भई लराई ।
तुरकाना बहु खपि गयो ह्वै कै समुहाई ।
सुनि बिसमाणी नानकी 'अस चोर बिसाला ।
सुन्यो विलोकयो कबि नहीं किय करम कराला[1] ॥१८॥
शाहु हयनि नर गन पिखति, राखे सवधाना ।
सभी को छल करि पुरी ते ले आइ किकाना[2] ।
लोक हज़ारहुं बीच ते कारज करि आवा ।
करि चोरी पुन ढिग गयो नाहिन डर पावा ॥१९॥
सुनि करि श्री सतगिुर कह्यो 'बल बुदिध बडेरा ।
तिस के सम को जगत् महिं हम दुती न हेरा ।
चोरी करिबे चातुरी ऐसी उपजावै ।
सुनिबे देखन हार नर सभि को बिसमावै ॥२०॥
करी प्रथम भी बहुत है हित परउपकारा ।
सिक्ख बन्यो बड गुरनि को, रण सूर उदारा' ।
कहति नानकी 'हे प्रभो ! तिसु लेहु बुलाई ।
किम कीनसि दुशकरम को तिम देहि सुनाई ॥२१॥
पठ्यो दास श्री सतिगुरू निज निकटि बुलायो ।
आइ करी तबि बंदना निज सीस निवायो ।
गुर महिला को मात कहि मसतक को टेका ।
आग्या ले बैठयो जबहि कहि जलधि बिबेका ॥२२॥
कहहु आपने करम को जिम पूरब आयो ।
किम चोरी दुशकर करी धन को हरि ल्यायो ? ।
कहु प्रसंग सभि छोर ते इह सुनिबो चाहैं ।
बिधीचंद तबि जोरि कर उचरयो गुर पाहै ॥२३॥
पूरब तसकर करम को मैं करति घनेरे ।
महिखी सुंदर ब्रिंद को चोरी इक बेरे ।
ले निकस्यो तूरन करति निज घर को चाला ।
सुध होई पुन ग्राम के निकसे नर जाला ॥२४॥
खोज पाइ महिखीनि को परि पाछ पुकारा ।
आगे मैं उतलावतो[3] बहु दूर सिधारा ।
'चोल्हे' ग्राम समीप जब्रि पहुंच्यो उतलाए ।
आइ सु मिली गुहार[4] तब्रि इम करयो उपाए ॥२५॥

1. भयानक, कठिन 2. घोड़ा 3. तेज़ी से 4. बहुत से लोक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूरज सोढी बंस के बिदति सकल जग जोइ।
नमो चरन परि नित करौं रामदास गुर सोइ।।७।।
अजर जरनि, धीरजि धरनि, तारन जननि जहाज।
नमो चरन अरविंद कउ श्री अरजन सुख साज।।८।।
स्रेशट आयुध[1] धरनि महिं तुरकनि हरिनि समाज।
बंदन ठानौं बंदि कर हरिगुबिंद महांराज।।९।।
दाता भोग रु मोख के दासनि सदा सहाइ।
नमो नमो पग कमल को श्री सतिगुरु हरिराइ।।१०।।
बाल अवसथा गयान घन, नाशक बिघन बिसाल।
चरन सरोजनि को नमो श्री हरि क्रशन क्रिपाल।।११।।
तेग बहादर सतिगुरु हादर[2] जहिं सिमरंति।
पग पंकज परणाम लिहु परम रूप भगवंत।।१२।।
हिंदु धरम के आसरा तुरकनि तेज बिनाश।
श्री गुरु गोविंद सिंह जी ! नमो चरन के पासि।।१३।।

**निशानी छंद**

रामकुइर भाई कथा बरनंति सुनावैं।
सुनहिं सिंह चित चौंप सों मन मोद[3] उपावैं।
तिपति न हुइं चित रुचि बूझति पुन औरं।
श्री हरिगोविंद की कथा सूरनि सिरमौरं।।१४।।
असन अचवि मंदिर थिरे सतिगुरु जिस काला।
मरवाही अरु नानकी ढिग सेव बिसाला।
बूझति भी रण-बारता 'किम बधयो बखेरा ?।
जिस ते लशकर शाहु को चढ़ि आइ बडेरा।।१५।।
सुनि गुर उचरि प्रसंग सभि तिन को समुझावा।
'बिधीचंद बुधिवान् बड हय[4] तहिं ते लयावा।
शाह जहां के प्रिय हुते, रहि बन करि घासी।
घात लाइ सेवा करति केतिक दिन पासी।।१६।।
दुरग दिवार फंदाइ करि ले आइ तुरंगा।
पुन दूसर के हित गयो वहु चतुर निशंगा।
खोजी वनि सभि देखिते दीवार फंदायो।
इम दोनो हय गए लखि चित शाहु रिसायो।।१७।।

1. हथियार 2. हाज़र 3. खुशी 4. घोड़ा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लशकर भेज्यो अधिक ही बड भई लराई ।
तुरकाना बहु खपि गयो ह्वै कै समुहाई ।
सुनि बिसमाणी नानकी 'अस चोर बिसाला ।
सुन्यो विलोकयो कबि नहीं किय करम कराला[1] ।।१८।।
शाहु हयनि नर गन पिखति, राखे सवधाना ।
सभी को छल करि पुरी ते ले आइ किकाना[2] ।
लोक हज़ारहुं बीच ते कारज करि आवा ।
करि चोरी पुन ढिग गयो नाहिंन डर पावा ।।१९।।
सुनि करि श्री सतगिुर कह्यो 'बल बुदिध बडेरा ।
तिस के सम को जगत् महिं हम दुती न हेरा ।
चोरी करिबे चातुरी ऐसी उपजावै ।
सुनिबे देखन हार नर सभि को बिसमावै ।।२०।।
करी प्रथम भी बहुत है हित परउपकारा ।
सिक्ख बन्यो बड गुरनि को, रण सूर उदारा' ।
कहति नानकी 'हे प्रभो ! तिसु लेहु बुलाई ।
किम कीनसि दुशकरम को तिम देहि सुनाई ।।२१।।
पठ्यो दास श्री सतिगुरू निज निकटि बुलायो ।
आइ करी तबि बंदना निज सीस निवायो ।
गुर महिला को मात कहि मसतक को टेका ।
आग्या ले बैठयो जबहि कहि जलधि बिबेका ।।२२।।
कहहु आपने करम को जिम पूरब आयो ।
किम चोरी दुशकर करी धन को हरि ल्यायो ? ।
कहु प्रसंग सभि छोर ते इह सुनिबो चाहैं ।
बिधीचंद तबि जोरि कर उचरयो गुर पाहै ।।२३।।
पूरब तसकर करम को मैं करति घनेरे ।
महिखी सुंदर ब्रिंद को चोरी इक बेरे ।
ले निकस्यो तूरन करति निज घर को चाला ।
सुध होई पुन ग्राम के निकसे नर जाला ।।२४।।
खोज पाइ महिखीनि को परि पाछ पुकारा ।
आगे मैं उतलावतो[3] बहु दूर सिधारा ।
'चोल्हे' ग्राम समीप जबि पहुंच्यो उतलाए ।
आइ सु मिली गुहार[4] तबि इम करयो उपाए ।।२५।।

---

1. भयानक, कठिन 2. घोड़ा 3. तेज़ी से 4. बहुत से लोक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हुतो ताल जल को भर्यो सभि महिख प्रवेशी ।
अदली गुर को सिक्ख तहिं जिह सुमति बिशेशी ।
जाइ चरन पर मैं परयो सभि बिनै सुनाई ।
रच्छया कीजै रिपुनि ते तुम बनहु सहाई ।।२६।।
बहुर करहु सिख आपने दीजहि उपदेशा ।
उपकारी तुम संत हो चित शाँति विशेशा ।
अदली सुनि बिनती तबहि बहु भए क्रिपाला ।
कीनि बतावन शुभ मती मम भाग बिसाला ।।२७।।
सिमरहु श्री अरजन गुरू राखहिं तुव लाजा ।
बहुर बनहु सिख जाइ करि तजिकै अस काजा ।
सुनि तिसके उपदेश को मैं धारन कीना ।
करे अराधन सतिगुरू परि शरनी दीना ।।२८।।
बनहु सहाइक दास लखि तुम अंतरजामी ।
पुन मैं रहौ समीप ही करि कै निज स्वामी-।
उर महिं धयान सु धारि कैं थिर भा तिस थाना ।
तबि लौ आइ गुहार[1] गन ले खोज महाना ।।२६।।
सर लगि खोज निहारते नहिं आगे चाला ।
इत उत खोजति फिरति भे से मानव जाला ।
अदली सिक्ख बिलोकि कै तिन साथ बखाना ।
क्या खोजति तुम फिरति बहु ? कुछ सके न जाना ।।३०।।
कहति भए-महिखीनि को इक तसकर लयायो ।
खोज इहां लगि आइकै नहिं अग्रचलायो ।
खोजति हैं तिस खोजको जेकरि तुमहेरा ।
करहु बतावन संत जी ! कित गयो अगेरा ।।३१।।
सुनि अदली उत्तर दीयो—महिखी सर मांही ।
इन बिन अपर न मैं पिखी को गमन्यो नांही ।
सुनि बोले-देखी भली इह नहीं हमारी ।
कपल[2] बरन की इहु सकल, हमरी सभ कारी[3] ।।३२।।
इम कहि इत उत बहुफिरे कुछजाइ न जानी ।
श्रमति भए सगरेहटे, नहिं सके पछानी ।
ग्रिह को गई गुहार जबि मिलि अदली संगा ।
कह्यो—पिखहु गुर की कला जिन सुजसु उतंगा ।।३३।।

1. जन समूह 2. लाखी 3. काली

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होहिं सहाइक सिमरते दुहि लोकनि मांही ।
अस प्रभु को जे तजति हैं तिनके बुधि नांही ।
जयों कयों राखहिं दास पति सभि बिघन मिटावैं ।
इह बडिआई गुरू की गुरसिक्खनि भावै ।।३४।।
सभि कारी महिखीनि को औरै करि रंगा ।
सिमरे करी सहाइता बहु तूरन संगा ।
तसकर की क्रिति त्यागि कै शरनी परि जाई ।
प्रापति हुइ कल्यान को तुव भाग भलाई ।।३५।।
तबि मैं सुनि उपदेश को सर महिख निकारी ।
धरमसाल सिख संत को दीनी तबि सारी ।
बिनै बखानी दीन ह्वै अदली संग लीना ।
सुधा सरोवर की दिशा प्रस्थानो कीना ।।३६।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे 'बिधीआ' प्रसंग बरननं
नाम प्रथमो अंशु ।।१।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २
# विधीचंद प्रसंग

**दोहरा**

ले करि अदली संग मैं गुर महिमा उर धारि ।।
अमीताल[1] पहुंचति भए जागे भाग उदार ।।

**निशानी छंद**

आगे श्री अरजन गुरु बिच सभा सुहाए ।
जनु ब्रहमा सुर ब्रिंद महिं उपदेश अलाए ।
धरी उपाइनि[2] अग्र कुछ गहि पदअरबिंदा ।
ढिग बैठ्यो कर जोरिकै पिखि दरस बिलंदा ।।२।।
अदली ने सभि बारता गुर निकटि सुनाई ।
आयो अबि सिख होन को रावरि शरनाई ।
रखयक दीरघ जानि करि जुग लोक मझारा ।
रह्यो चहै ढिग आप के लखि मोख उदारा ।।३।।
सुनि बिनती गुर दयानिधि बहुभए प्रसंनं ।
चरनांम्रिति मोकहु दियो करि सिक्ख अनंनं ।[3]
उपदेश्यो सतिनाम को सिमरन दिन रैंना ।
करि लीनो मुझ आपनो करुणा रस नैना ।।४।।
'चोरी त्यागहु अबहि ते आछे मग चालो ।
गुरू गिरा पठीऐ सुनहु प्रभु रिदे समालो ।
सुनि गुरते मैं तबि कह्यो मुहि पर्यो सुभाऊ ।
छुटहि न चोरी चहति चित इह साच अलाऊं ।।५।।
सुनि प्रसंन बिकसे बदन पुन बाक बखाना ।
जे चोरी ते हटति नहिं इम करहु सुजाना ।
रंक होइ दुख असन जिह कुछ हाथ न आवै ।
तिस हित करि उपकार को अचि करि त्रिपतावै ।।६।।

---

1. अमृतसर 2. भेट 3. अनन्य सिख



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अधिक धनी को तनक धन ले आवहु दीजै ।
जे त्यागी नहिं जाइ कबि तौ इस बिधि कीजै ।
सुनि सतिगुर उपदेश को मैं धारन कीना ।
केतिक दिन निकटी रह्यो सेवा चित दीना ।।७।।
पुन अदली को संग मैं करि चौंप बिसाली ।
गमन्यो अपने नानके ग्राम जु सिरहाली ।
जबि कबि रुचि उपजै रिदै गमनौ हित चोरी ।
रंकनि को पिखि देति भा उर गुरपग डोरी ।।८।।
इक दिन मैं बैठ्यो हुतो आई दिज नारी[1] ।
कहति भई निज वारता चित अधिक दुखारी ।
सुनहु गुरु सिख मैं सुन्यो तुमरो जसु आछो ।
दीननि परउपकार को करिवे नित बांछो ।।९।।
दारिद हमरे सदन बहु नहिं पाइं अहारा ।
बसन आदि ते थुर गए अति मंद गुज़ारा ।
सुता कुमारी उचित बरु देखे दुख पावैं ।
होति अहार न प्रापती दूसर दिन खावैं ।।१०।।
निसदिन चिंता महिं बितहि होति न उपचारा ।
जिस ते ब्याहों सुता निज दे तिनहि अहारा ।
सुनि बूझी कहु साच अबि केतिक धन लैकै ।
कारज को पूरा करहिं सभि को हरखै कै ? ।।११
सरब सु व्याह समाज को करिपूरन आछे ।
कितिक दरब ते होहिगो ? कहु चित की बांछे ।
दिज बनिता बोली तबहि पंज सै धन पाउं ।
महां फराग़त[3] साथ मैं निज सुता उठाऊं ।।१२।।
सुनि मैं तिसको तबि कह्यो धन देवौं तोही ।
दिन पंचक महिं आइ पुन मिलीअहि इत मोही ।
हरखति अपने घर गई मैं जतन बिचारा !
जहांगीर की बेगमा सुनि पंथ मझारा ।।१३।।
पत्तण चंबे दूण को डेरा तहिं घाला ।
सुनि करि मैं निशचे भले तिन की दिशि चाला ।
पहुंच्यो देख्यो जाइ तबि संग मानव जाला ।
लाइ घात नीके चढ्यो निस तिमर[4] बिसाला ।।१४।।

---

1. ब्राह्मण की पत्नी 2. घर 3. उदारता 4. रात का अंधेरा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अरध राति तबिहुं भई मिलि पहिरू मांही ।
जहिं प्रयंक[1] बेगम हुतो पहुंच्यो तिस पाही ।
बिच तंबु के सुपत सभि दासी गन जेई ।
धन के घरे संदूख गन देखे दिढ़ तेई ।।१५।।
बैठ्यो तिन के बीच मैं करिकै बल हाथा ।
तोरयो तारो एक को पुर जो धन साथा ।
थाती[2] जिस महिं बहुत हैं इक तबहि निकासी ।
हुतो पंच सै जिस बिखै सो लेकरि पासी ।।१६।।
संपट[3] ज़ेवर के भरे सभि त्यागनि कीने ।
खोलहि खोलहि धरि कै तहां नहिं कर मैं लीने ।
इक थाती ले निकसिओ सतिगुर सिमरंता ।
सभि की द्रिसटि बचाइकै आयो उतलंता ।।१७।।
दिज नारी को दीनि तबि तनुजा निज ब्याही ।
इम कीनसि उपकार को मैं लीनसि नांहीं ।
बहुर सुनहु जबि प्रात भी बेगम तबि जागी ।
संपुट ज़ेवर खुल्हे गन तिन हेरनि लागी ।।१८।।
दासी बृंद जगाइ करि पायहु बड रौरा ।
सरब संभारन करति भी इत उत धन टोरा ।
तसकर इक थाती लई औरै सभि छोरा ।
इह कैसे कारन भयो बहु तजि ले थोरा ।।१६।।
जहांगीर ढिग जाइ करि कहि गाथ सुनाई ।
ज़ेवर लाखहुं के तजे तसकर इक आई ।
दरब पंच सै लैगयो कुछ जाइ न जाना ।
बिसमत मति सगरे भए रिस शाहु महाना ।।२०।।
निकटि निकटि के ग्राम जे सभि पकरि मंगाए ।
दई सज़ाइ अनेक बिधि दिहु चोर दिखाए ।
नांहि ते फांसी डारि कै सभि करौं बिनाशा ।
सकल ग्राम को खोजि करि आनहु तिस पासा ।।२१।।
ग्राम सरहाली के गए तिन बाक बखाना ।
बिधीआ हमरो दोहिता अतिशै बुधिवाना ।
उपकारी सो करैगो तुमरो दुख हाना ।
गमनहु बूझहिं तांहि को कहि कीन पयाना ।।२२।।

1. पलंघ 2. थैली 3. डिब्बा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कह्यो जोर कर जबि मिल्यो इहु करि उपकारा।
वंधन महिं नर कैद हैं मारें बहु वारा।
वहुतनि की सुनि दीनता मैं रिदै बिचारे।
इक मेरे उपचार ते होवति सुख सारे ॥२३॥
गयो संग तिन के तबै नहिं भै उर धारा।
गुरू भरोसा मोहि को ह्वै बांक न बारा।[1]
जहांगीर जहिं थिर हुतो तहिं लो पहुंचायो।
मेरी दिशा बिलोकि कै इम शाहु अलायो ॥२४॥
तूं तसकर हैं दरब को मैं सुनति बखाना।
कह्यो आप को साच है हौंही हरिआना।
शाहु भनति किस हेतु ते धन लीनस थोरा।
हीरे मुकता दिपति गन कंचन महिं बोरा ॥२५॥
सो त्यागे तहिं ही परे सभि खोल निहारे।
कहहु साच इस बात को नतु दै हैं मारे।
बिना त्रास तवि मैं कही श्री अरजन नाथा।
सो मेरे सतिगुर अहैं माथे पर हाथा ॥२६॥
तिनै कह्यो उपकार हित चोरी कबि ठानो।
सो सीख्या मैं धारि उर बरतों हित जानों।
दिज तनूजा कुआरी हुती देख्यो घर दीना।
करी जाचना आनि ढिग सभि वसतु बिहीना ॥२७॥
दरब पंच सै व्याह के हित खरच बखाना।
तिस हित मैं गमन्यो हुतो किय काज महाना।
अंगीकार न कुछ करौं नहिं लालच मेरे।
जितिक चहिय उपकार हित लयायहु बिन देरे ॥२८॥
श्री अरजन को नाम सुनि सिर शाहु निवायो।
दियो छोरि मानव सकल ले करि मैं आयो।
इत्यादिक बहु वार मैं हित परउपकारा।
आनयो दरब चुराइ करि नहिं अंगीकारा ॥२९॥
सुनि बिसमानी नानकी उर बिखै बिचारी।
करै कि नहिं इह मोहि हित परखनि बिधि धारी।
श्री सतिगुर के सुनति ही सुख हंसति बखानी।
बिधीचंद ! गुरसिवख तूं मति चतुर महानी ॥३०॥

---

1. बाल बांका नहीं होगा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घने करे उपकार तैं अरु गुर के काजा ।
अतिशै चातुरता धरे आने जुग बाजा ।[1]
करे रिझावन सकल बिधि दे खुशी बिसाला ।
अबि मेरो भी काज करि नित रहहु सुखाला ॥३१॥
कर जोरति बिधीए कह्यो, 'मैं धंन महाना ।
जिस ते मात प्रसंन हुइ निज काज बखाना ।
मित्थ्या तन तुम हित लगहि नहिं आछो औरी ।
करौं आपकी कार मैं कस बिखम सु ठौरी ॥३२॥
सुनि शरधा के बाक को तबि मात बखाना ।
जहांगीर की बेगमां अबि हुई जिस थाना ।
ज़ेवर जे वर तिनहुं के मम हित दिहु आनी ।
हीरे मुकता जिनहुं महिं लगि मोल महानी ॥३३॥
सुनि बिधीए बंदन करी मैं ल्यायों जाई ।
गुरआइसु ते गमन किय उर हरख उपाई ।
दई आशिखा नानकी सुख तेहि शरीरं ।
नहिं संकट कबिहुं बनहि गुर सिख बड बीरं ॥३४॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे 'बिधीचंद' प्रसंग बरननं
नाम दुतीओ अंशु ।२।

---

1. दो घोड़े

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३
# बिधीचन्द प्रसंग

**दोहरा**

लेकरि आशिख[1] मात ते गुर रजाइ को पाइ ।
लवपुरि[2] के सनमुख चल्यो श्री नानक को ध्याइ ॥१॥

**निशानी छंद**

गमनयो मारग काज हित तट आइ बिपासा ।
हुते घाट पर लोक तहिं बूझ्यो तिन पासा ।
गोइंदवाल समीप इहु डेरा किन घाला ? ।
लागति हैं तंबू अबहि जिह शोभ बिसाला ॥२॥
कर्यो बतावन तिनहु तब हज़रत की दारा[3] ।
बेगमात आगवन भा तिह सिवर उतारा ।
अबिलौ नहिं प्रापति भई आवति हैं पाछे ।
त्यारी पूरब ही करति थल सोधति आछे ॥३॥
सुनि हरख्यो परख्यो तबहि कारज बनि आवै ।
बेगम पुर ते वहिर ही नीकी बिधि पावैं ।
रह्यो तहां करि घात को दिन टारन कीना ।
रवि[4] असत्यो फैल्यो तिमिर निस चंद बिहीना ॥४॥
देखति दाव बिचारतो बेगम ढिग जाने ।
खरे पाहरू चहुंदिशिनि बन करि सवधाने ।
नहिं प्रवेश विच हुइ सकहि अवकाश न पावै ।
आपस महिं बोलति रहे इक दुतिय जगावै ॥५॥
त्रास पाइ तसकरनि को गहि सिपर[5] क्रिपाना ।
खरे रहे चहुंदिशिनि भट नहिं आलस ठाना ।
रह्यो तकावति दाव को अविकाश निहारै ।
बेगम लगि पहुंच्यो न किम बिधि अधिक बिचारै ॥६॥

---

1. आशीर्वाद 2. लाहौर 3. स्त्री 4. सूर्य 5. ढाल, तलवार



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तीन पहिर बीती निसा सभि जाग परे हैं ।
चलनि पंथ बिन धाम ते हुइ त्यार खरे हैं ।
बेगम जागी तिसी छिन कीनसि निज त्यारी ।
हथनी तुंग बिलंद इक तिस पर अंबारी ।।७।।
कंचन की दमकति महद नग जरे बिसाले ।
ज़री सतारन ते अधिक सुंदर शुभ ढाले ।
बेगम हेतु अरुढने सो निकटि मंगाई ।
संपुट महिं ज़ेवर धरे दिन महिं तन पाई ।।८।।
हालति चालति पंथ महिं या ते सु उतारे ।
हीरे मुकता गुच्छ बड जिन मोल उदारे ।
संपुट हुतो बिसाल ही कंचन को चारु ।
भर करि दासी हाथ दे बेगम असवारू ।।९।।
चढि हथनी पर सो लियो ऊरु तर राखा ।
बिधीचंद मिलि नरनि मैं पिखि धरि अभिलाखा ।
सभि इक्कत्र ज़ेवर लखे हरख्यो बुधिवाना ।
लैहौं संपुट पंथ मैं दिढ चितवन ठाना ।।१०।।
कितिक अगारी चलि परे मग महिं नर लारा ।
हुइ निचिंत गवने सकल उर तास बिसारा ।
बिधीचंद करि दृष्टि महिं बेगम असवारी ।
चल्यो संग चाहति लियो ज़ेवर मुल भारी ।।११।।
मूत्र तजनि हित टिक गयो जो हथनी पाछे ।
दाव जानि अवकाश लहि अबि लेवौं आछे ।
तिह सम बन होयो निकटि बोलति तिस जैसे ।
लास[1] गही दिढ हाथ मैं जोहन करि तैसे ।।१२।।
भुज बल ते आरूढ करि अंतर कर घाला ।
लग्यो जाइ संपुट जहां गहि खैंचि निकाला ।
बिसमति बेगम बोलती को हैं तूं को हैं ? ।
लेवत ही उतर्यो तरे करि छार उचोहैं ।।१३।।
'चोर चोर' कूकी तबहि दौरे नर आए ।
हथनी के चहुंदिशि फिरे नहिं कुछ दरसाए ।
बिधीचंद करि शीघ्रता तजि मग ततकाला ।
संपुट दिढ संभारि करि पाछै हटि चाला ।।१४।।

1. मोटा रस्सा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दूर फरक को पाइ करि प्राती हुइ आई ।
उलंघि बिपासा नदी को सभि चित गवाई ।
तम महिं नर इत उत फिरे मग नेरे नेरे ।
नहिं पायो तसकर गयो बिसमाइं घनेरे ।।१५।।
बेगम भई हिरान मन अस चोर न हेरा ।
तुम सभि महिं ते ले गयो हठ धारि बडेरा ।
श्री सतिगुर गुन गावतो आनंद उपजावै ।
बिधीचंद करतार पुरि मारग को आवै ।।१६।।
सुख सों पहुंच्यों आइ करि पुरि किन्नै प्रवेशा ।
गयो महिल जहिं नानकी आनंद विशेखा ।
सुंदर संपुट हेम को[1] धरि दीनि अगारी ।
हाथ जोरि करि बंदना सभि गिरा उचारी ।।१७।।
माता ! करी सहाइता इह भूखन आने !
बेगम डेरा निकटि ही मिलि गयो महाने ।
सिक्खनि के कारज पुरहु जहिं कहां सहाई ।
राखहु मेरी लाज नित इह कहां बडाई ।।१८।।
बिसमति चित ह्वै नानकी आनंद उपजायो ।
चोरी मैं अतिशै चतुर तूरन ही ल्यायो ।
दासी संग बखानिकै संपुट खुल्वायो ।
भर्‍यो जवाहर ब्रिंद ते जग-मग झमकायो ।।१९।।
मुकता[2] गन करनाभरन[3] बड आब सुढारे ।
सीस फूल हीरे जरे जिन मोल उदारे ।
बेसर गर भूखन भरे अरु हाथनि केर ।
देखति देति प्रमोद को दुतिवंत बडेरे ।।२०।।
उर प्रसंन बहु नानकी वर सुंदर दीने ।
गुर जसु के संग जसु रहै जग महिं सुख लीने ।
सतिनाम मनि महिं बसहि सिक्खी बड धारो ।
जनम मरन बंधनि छुटहिं गुरि तोहि उधारो ।।२१।।
तोहि नाम को उचर करि रिपु ते जै[4] पावैं ।
पुरशारथ गुर हित करे सभि बिघन मिटावैं ।

---

1. सोना 2. मोती 3. कान के ज़ेवर 4. विजय, फतह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पर उपकारी बहु रह्यो बिदतहिं जग मांही ।
दुख बिहीन तन तुव रहै सभि करैं सराही ।।२२।।
बार बार इम नानकी आशिख बहु दीने ।
आग्या ले करि मात ते उठि बंदन कीने ।
श्री हरि गोविंद को दरस पुन जाइ निहारा ।
पग पंकज पर सीस धरि प्रसंग उचारा ।।२३।।
मुसकाने गुन खानि सुनि सनमान बिठायो ।
तुव समता नहिं किसू महिं जसु भाखो सुनायो ।
बिधीचंद के करम असु सुनि पिखि बिसमावैं ।
जहां न पहुंच्यो जाइ किस ततछिन तहिं जावैं ।।२४।।
जबि सतिगुर मंदिर गए सुठ[1] पलंघ सुहाए ।
सकल बिभूखन नानकी तबि आनि दिखाए ।
बिखम थान ते आन करि इह अरपन कीने ।
बुधि बल मैं अति चतुर है सम अपर न चीने ।।२५।।
सुनि करि श्री सतिगुर कह्यो इस करम बिसाले ।
'हय ल्यावन अचरज़ कर्‌यो बिच मानव जाले ।
नहिं आवति कहिबे बिखै क्या कहैं सुनाई ।
इत्तयादिक बहु भांति की करि दास बडाई ।।२६।।
देखि बिभूखन नानकी नहिं पहिरन चाहे ।
अपने उचित न चीनि के कहि भरता पाहे ।
पैंदे खां की भारजा कहि निकटि बुलाई ।
बहु मोले ततछिन दिए लै करि हरिखाई ।।२७।।
पुन बावक की नारि को बखशे ततकाला ।
जबर जवाहर जरे जिन बर दिपहिं उजाला ।
लेकरि सुजसु बखानती उर मोद उपाए ।
लाखहुं कीमत जिनहुं की निज तन पहिराए ।।२८।।
इस प्रकार करतारपुरि केतिक दिन टारे ।
सुनि सुनि आवैं संगतां चहुंदिशिनि निहारे ।
मनो कामना पाइ करि गन भेट चढावैं ।
देश बिदेशन सिक्ख बहु पुरवनि दरसावैं ।।२९।।

---

1. सुंदर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सभि दिशि बिखै मसंद गन आनहिं गुर कारा ।
लाखहुं धन को अरपते सतिगुर दरबारा ।
तिम ही खरच बिसाल ह्वै गुर देग चलावैं ।
सुभटनि* को दे चाकरी सिरुपाउ दिवावैं ॥३०॥

**दोहरा**

इस बिधि गुर घर के खरच नितप्रति होति बिसाला ।
तिमही आवति दरब बहु पुरहिं गुरु क्रिपाल ॥३१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे अशटम रासे 'बिधीचंद' प्रसंग
बरननं नाम त्रितीओ अंशु ।३।

---

*सूरवीरों को

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ४

# विधीचंद, बालू हसना, पैंदे खान नंद प्रसंग

**दोहरा**

सहिज सुभाइक सतिगुर गए महिल के माहि ।
विधीचंद को संग ले वैठे तहां सुहाहिं ।।१।।

**चौपई**

तबहि नानकी अरु मरवाही । वैठी आइ बंदि कर पाही ।
मुसकावति बूझति गुर संगा । बिधीचंद तुमरो सिख चंगा ।।२।।
भा अबतार आपको भारा । कलि महिं कुटिल करे निसतारा ।
बन्यो सिक्ख रावन को आइ । तऊ सुभाव न पलटयो जाइ ।।३।।
चोरी करति हेतु उपकारे । गुर के कारज अनिक सुधारे ।
बिधीचंद भाई ! हित धरे । अपर करम जो किछ तैं करे ।।४।।
करहु सुनावन हम को सोइ । जिन सुनिवे मन अचरज होइ ।
तोहि समान सुन्यो नहिं काना । किम देखनि महिं आवहि जाना ।।५।।
तुझ सम इक तुझ ही कउ जाना । अपर कर्यो सो करहु बखाना ।
सुनि बिधीए कर जोहि सुनायो । सुनहु मात ! इक करम कमायो ।।६।।
श्री अरजन सुझ संग उचारा । तुव सिर चोरी लेख उदारा ।
जे अबि चहहुं करहु उपकारा । पर धन आप न लिहु कर धारा ।।७।।
इम सुनि में मैं इक के घर गयो । तिन को बहु दारिद पिखि लयो ।
दंपति वैठे बहु मुरझाए । एक समै दिन नहिं त्रिपताएं ।।८।।
इक कन्यां तिनके घर मांही । बरप्रापति धन विन नहिं ब्याही ।
नित चिंता महिं रहें बिसूरति । रहें सथिर जिम पाहिन मूरति ।।९।।
तिनको देखि दया मुहिआई । मैं देहौं धनु गिरासुनाई ।
जिसते कन्या को हुइ ब्याह । अरु वैठे भोजन लिहु खाहु ।।१०।।
तिस पुरि महिं इक घर चलि गयो । ब्रिंद मेल तहिं देखति भयो ।
मिल्यो नरन महिं अंतर बर्यो । हुतो बयाहु सभि देखनि कर्यो ।।११।।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तबि बरात अंतर बुलवाई । हित भोजन करि पांति[1] बिटाई ।
तहि मैं भयो परोसनवारा । भर्यो टोकरा ल्याउं अहारा ॥१२॥
तबि में लै पकवान घनेरा । गयो निकसि करि किनहुं न हेरा ।
तिन छुधितनि[3] को दीनसि आनि । ले हरिखाइ सु कीनसि खान ॥१३॥
अपर वमतु कुछ हाथ न आई । जाइ अपर घर सन्ह लगाई ।
अंतर वर्यो चुबारे चर्यो । बैठ्यो बनीआ तहां निहर्यो ॥१४॥
रुजनावे[2] लेखे की विधी । रह्यो जोहि होवति नहिं सिधी ।
तीन जाम जामीन वित गई । गिनति मंदमति त्यागी न दई ॥१५॥
जागति इसत्री व्याकुल होई । दूध कटोरा भरि करि सोई ।
ढिग हुइ कहि समुझावन काज । खाइ न पओ तैं किछु आज ॥१६॥
जे अबि तुझ ते जाइ न देखा । त्यागि देहु पुन कीजहि लेखा ।
सुनति बाक की रिस ते राचा । निज इसत्री को हतसि तमाचा ॥१७॥
भई क्रोध धर गेरि कटोरा । दूध बिथारयो पति की ओरा ।
कह्यो शूम तु भयो महाने । देव पितर किसहुं नहिं माने ॥१८॥
इक दमरी पर राति गुजारी । समुझायो ते रिस करि मारी ।
इम कहि रुदति होइ दुखिआरी । सुपतीजाइ नींद ले भारी ॥१९॥
भई कलह बनीए दुख पायहु । तजी वही तिहठां सुपतायहु ।
जबि दोनों कहु सुधि नहिं रही । दुर्यो[4] एक थल मैं सभि लही ॥२०॥
जाइ चुबारे महिं बरि गयो । धर्यो संदूख निहारति भयो ।
करि बल को बहु तोरयो तारा । ताकी खोलि बीच कर डारा ॥२१॥
थैली धन की लागसि हाथ । लेकरि मैं तूरनता साथ ।
निकसयो वहिर गयो धर तिन के । दीरघ दारिद हुतो सु जिन के ॥२२॥
सुदति परे दंपति को देखि । करे जगावन दुखी परेखि ।
सरब दरब को दे करि आयो । श्री अरजन को आनि सुनायो ॥२३॥
गुर प्रसंन मन सिर कर धर्यो । कह्यो लेख चोरी अबि टर्यो ।
गुर घर के बहु काज सुधारहिं । आप तरैं अवरन को तारहिं॥२४॥
हम सतिगुर को बर है मही । बड भाग करि मिलिबो होही ।
करी क्रिपा गन पाप निवारे । अपने चरन लाइ निसतारे ॥ २५॥
सुनि गुर-पतनी अचरज लह्यो । साध[5] साध बिधीए कहु कह्यो ।
कितिक काल बैठ्यो दरसायो । पुन उठि करि निज थल चलि आयो ॥२६॥
खान पान करि निसा बिताई । जागे प्रभु प्रभाति हुइ आई ।
सौच शनान ठानि गुर पूरे । बैठहिं पुन दिवान गन सुरे ॥२७॥

1. पंक्ति 2. भूखे लोगों को 3. रोज़नामचा 4. छुप गया 5. शाबाश

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इक बालु सिख सेवा लाग्यो। प्रेम पाइ पंकज के पाग्यो।
जबि गुर चढि करि कितहुं सिधावें। अग्र तुरंगम दौर्यो जावैं ॥२८॥
खेद न मानहि दूर सिधारैं। जाइ तहां गुर जहां पधारें।
श्री हरिगोविंद को मुख हेरहि। इसहि अधिक हुइ खुशी घनेरहि ॥२९॥
बैठति चलति समुख जबि होइ। हसहि बदन ते हरखति सोइ।
धर्यो नाम तबि गुर निज रसना। भयो आज ते 'बालु हसना'।३०॥
तिस दिन ते तिस को गुर कहो। 'अबि गुरदित्ते के संग रहो।
मान्यो बाव: प्रेम मन रंग। रहनि लग्यो गुर नंदन संग ॥३१॥
चढैं वहिर तबि आगै धावहि। जहिं पहुंचहि चलि तहां सिधावैं।
इक दिन श्री गुरदित्ता गए। बन अखेर[1] को खेलति भए ॥३२॥
निकस्यो शूकर चल्यो पलाई। गुर सुत देखि तुरंग धवाई।
गए दूर लौ सभि हटि रहे। पहुंच्यो गयो न श्रम को लहे।३३॥
इक बालु हसना तहिं गयो। सतिगुर नद बिलोकति भयो।
अधिक जानि सेवा हरखाए। टोपी बखशि दई तिस थाएं ॥३४॥
लेकरि सिद्ध शकति को पाई। भयो गयान मनु आनंद पाई।
हत्यो कोल सो आनि उठाए। पुरि करतार बिखे चलि आए ॥३५॥
सकल प्रसंग सुनायो गुर को। बखशिश करी प्रेम पिखि उर को।
श्री हरिगोविंद भए प्रसंन। सभिनि सुनाइ बखानि बदंन ॥३६॥
'अबि तेरी पूरी भई सेवा। करे रिझावनि बहु गुरदेवा।
बैठहु भजन करहु प्रभु केरा। जनम मरन काट्यो अबि तेरा ॥३७॥
ले गुर खुशी द्वार थिर रह्यो। राति दिवस हरि सिमरन लइयो।
इम श्री हरिगोविंद क्रिपाला। करे उधारन सिक्ख बिसाला।३८॥
बैठे हुते दिवान मझारी। पैंदेखान आयो बल भारी।
हाथ जोरि हरखति हुइ कहे। सुत[2] जनमयो तुम करुना लहे ॥३९॥
निज रसना ते नाम बखानो। जीवत रहे दास निज जानो।
क्रिपा ठानि गुर कीनि बखान। पैंदे खां को 'सैंदे खान' ॥४०॥
तब सुत को सुत जो उपजैहै। हम ते पलटा सो पुन पैहै।
सुनि बिसमयो कहि पैंदेखान। कहाँ वाक इह कीनि बखान ॥४१॥
तबि गुर भन्यो नेति हैं ऐसे। जिसहि न मेटिसकहि को कैसे।
जबि हुइ है तबि जानयो जाइ। सुनि दिवान सगरो बिसमाइ ॥४२॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे अशटम रासे 'बिधीचंद' बालू
हसना पैंदे खान-नंद प्रसंग बरननं नाम चतरथो अंशु ॥४॥

---

1. शिकार 2. पुत्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५

# श्री तेगबहादर ब्याह प्रसंग

**दोहरा**

तनुजा[1] पैंदेखान की बर के उचित पछान।
छोटे मीर सु ग्राम महिं बासहि एक पठान ।।१।।

**हाकल छंद**

तिह नाम खान असमाना । वय खोड़स बरखनि जाना ।
सो पदर समेत बसंता । ढिग शाहु चाकरीवंता ।।२।।
सनमान समेत महाना । धन शाहु देति भट जाना ।
निज समता भले पछानी । कुल धन बय सुंदर मानी ।।३।।
तबि पैंदखान करि नाता । दे सुता सु कीनि जमाता ।
ततकाल निकाहु करायो । घर अपने तिसै बसायो ।।४।।
सुत उपज्यो बारिक सोई । तनुजापति[3], सुत सम जोई ।
तिस देखि रहै सुख पाई । करि राख्यो सदन जवाई ।।५।।
ले गुर ते वसतु महाना । सभि देति तांहि सुख माना ।
तिम पैंद खान की दारा । बहु करति रहति नित पयारा ।।६।।
करि भोजन स्वादल नाना । अचिवाइ आपने पाना ।
इम बीतयो केतिक काला । मिलि भोगहि अनंद बिसाला ।।७।।
श्री गुरु बिलास धरंते । चढि जाति अखेर करंते ।
गन जीवन जगत उधारैं । बिचरंते बहिर प्रहारैं ।।८।।
बहु सिक्खनि दे उपदेशा । किह कटति जगत क्लेशा ।
बड व्रिपति भए रिपु मारे । जस दस दिशि अधिक बिथारे ।।९।।
बड मुगल मार गुर सूरा । निस दास कामना पूरा ।
परविरत पंथ महिं तैसे । निरबिरत बिखै रहिं जैसे ।।१०।।
श्री नानक अंगद चंदं । श्री अमरदास सुखकंदं ।
गुरु रामदास गुन खानी । श्री अरजन जिम ब्रहम गयानी ।।११।।

---

1. सपुत्री 2. पिता 3. जामाता



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इक बालु सिख सेवा लाग्यो। प्रेम पाइ पंकज के पाग्यो।
जबि गुर चढि करि कितहुं सिधावें। अग्र तुरंगम दौर्यो जावें ॥२८॥
खेद न मानहि दूर सिधारैं। जाइ तहां गुर जहां पधारें।
श्री हरिगोविंद को मुख हेरहि। इसहि अधिक हुइ खुशी घनेरहि ॥२९॥
बैठति चलति समुख जबि होइ। हसहि बदन ते हरखति सोइ।
धर्यो नाम तबि गुर निज रसना। भयो आज ते 'बालु हसना' ।३०॥
तिस दिन ते तिस को गुर कहो। 'अबि गुरदित्ते के संग रहो।
मान्यो बाव: प्रेम मन रंग। रहनि लग्यो गुर नंदन संग ॥३१॥
चढैं वहिर तबि आगै धावहि। जहिं पहुंचहि चलि तहां सिधावैं।
इक दिन श्री गुरदित्ता गए। बन अखेर[1] को खेलति भए ॥३२॥
निकस्यो शूकर चल्यो पलाई। गुर सुत देखि तुरंग धवाई।
गए दूर लौ सभि हटि रहे। पहुंच्यो गयो न श्रम को लहे। ३३॥
इक बालु हसना तहिं गयो। सतिगुर नद बिलोकति भयो।
अधिक जानि सेवा हरखाए। टोपी बखशि दई तिस थाएं ॥३४॥
लेकरि सिद्ध शकति को पाई। भयो गयान मनु आनंद पाई।
हत्यो कोल सो आनि उठाए। पुरि करतार बिखे चलि आए ॥३५॥
सकल प्रसंग सुनायो गुर को। बखशिश करी प्रेम पिखि उर को।
श्री हरिगोविंद भए प्रसंन। सभिनि सुनाइ बखानि बदंन ॥३६॥
'अबि तेरी पूरी भई सेवा। करे रिझावनि बहु गुरदेवा।
बैठहु भजन करहु प्रभु केरा। जनम मरन काट्यो अबि तेरा ॥३७॥
ले गुर खुशी द्वार थिर रह्यो। राति दिवस हरि सिमरन लइयो।
इम श्री हरिगोविंद क्रिपाला। करे उधारन सिक्ख बिसाला ।३८॥
बैठे हुते दिवान मझारी। पैंदेखान आयो बल भारी।
हाथ जोरि हरखति हुइ कहे। सुत[2] जनमयो तुम करुना लहे ॥३९॥
निज रसना ते नाम बखानो। जीवत रहे दास निज जानो।
क्रिपा ठानि गुर कीनि बखान। पैंदे खां को 'सैदे खान' ॥४०॥
तब सुत को सुत जो उपजैहै। हम ते पलटा सो पुन पैहै।
सुनि बिसमयो कहि पैंदेखान। कहाँ वाक इह कीनि बखान ॥४१॥
तबि गुर भन्यो नेति हैं ऐसे। जिसहि न मेटिसकहि को कैसे।
जबि हुइ है तबि जानयो जाइ। सुनि दिवान सगरो बिसमाइ ॥४२॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे अशटम रासे 'बिधीचंद' बालू हसना पैंदे खान-नंद प्रसंग बरननं नाम चतरथो अंशु ॥४॥

1. शिकार 2. पुत्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५

# श्री तेगबहादर ब्याह प्रसंग

**दोहरा**

तनुजा[1] पंदेखान की वर के उचित पछान।
छोटे मीर सु ग्राम महिं बासहि एक पठान ॥१॥

**हाकल छंद**

तिह नाम खान असमाना। वय खोड़स बरखनि जाना।
सो पदर समेत बसंता। ढिग शाहु चाकरीवंता ॥२॥
सनमान समेत महाना। धन शाहु देति भट जाना।
निज समता भले पछानी। कुल धन बय सुंदर मानी ॥३॥
तबि पैंदखान करि नाता। दे सुता सु कीनि जमाता।
ततकाल निकाहु करायो। घर अपने तिसै वसायो ॥४॥
सुत उपज्यो बारिक सोई। तनुजापति[3], सुत सम जोई।
तिस देखि रहै सुख पाई। करि राख्यो सदन जवाई ॥५॥
ले गुर ते वसतु महाना। सभि देति तांहि सुख माना।
तिम पैंद खान की दारा। बहु करति रहति नित पयारा ॥६॥
करि भोजन स्वादल नाना। अचिवाइ आपने पाना।
इम बीतयो केतिक काला। मिलि भोगहि अनंद बिसाला ॥७॥
श्री गुरु बिलास धरंते। चढि जाति अखेर करंते।
गन जीवन जगत उधारैं। बिचरंते बहिर प्रहारैं ॥८॥
बहु सिक्खनि दे उपदेशा। किह कटति जगत क्लेशा।
बड न्रिपति भए रिपु मारे। जस दस दिशि अधिक बिथारे ॥९॥
बड मुगल मार गुर सूरा। निस दास कामना पूरा।
परविरत पंथ महिं तैसे। निरबिरत बिखै रहिं जैसे ॥१०॥
श्री नानक अंगद चंदं। श्री अमरदास सुखकंदं।
गुरु रामदास गुन खानी। श्री अरजन जिम ब्रहम गयानी ॥११॥

---

1. सपुत्री 2. पिता 3. जामाता



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिम श्री हरिगोविंद बीरा । उर निशचा तथा गहीरा ।
जिम पंचहु शांति सरुपं । तिम खशटम भए अनूपं ।।१२।।
परविरति राखिबो दल को । भट करनि बटोरन वल को ।
तुरकेशुर सों बड झेरा । नित करन उखेर बिखेरा ।।१३।।
रिपु हति संग्राम मचाए । पुरशारथ करे कराए ।
पर निशाचा गयान महाना । सभिहिनि कै एक समाना ।।१४।।
इम केतिक समां बितायो । शुभ माघ मास तबि आयो ।
पिखि लालचंद मन आनी । निज दारा संग बखानी ।।१५।।
निज तनुजा गुजरी केरा । है बयाहनि समां अछेरा ।
करि दीजै उर अभिलाखा । सुनि बिशनु कुहर बच भाखा ।।१६।।
इह तोहि मनोरथ आछा । मम उर महिं दीरघ बांछा ।
करि देहु बिलंब न कीजै । लिखि साहा गुरको दीजै ।।१७।।
करि मसलत बिप्र बुलायो । कहि साहा तबहि सुधायो ।
जबि फलगण नौमी आवै । तबि ब्याह रचहु सुख पावै ।।१८।।
लिखि कागद बिप्र पठायो । चलि सतिगुर क ढिग आयो ।
कहि आशिख बैठि सुनावा । 'मैं साहा लै करि आवा ।।१९।।
कहि पाती तबहि पठाई । सुनि मंदिर सुधि पहुंचाई ।
तिन रीति करी कुल जेती । उतसाहु बिसाल समेती ।।२०।।
मिलि गावति गीत रसाले । उपजावति अनंद बिसाले ।
दिज सेव कराइ रखायो । पुन दीनि बिदाइ पठायो ।।२१।।
जबि ब्याह दिवस नियराए । सनबंधी सकल बुलाए ।
पकवान भेज सभि थाने । उतसाह कीनि हरखाने ।।२२।।
सुत बनिता के जुति दातू । गुर अमर बंस हरखातू ।
गुर ससुर आइ हरिचंदू । लखि दोहित ब्याह अनंदू ।।२३।।
धन वनित ले परिवारा । चलिआए पुरि करतारा' ।
सरसुधा छोरि नर औरी । हरिचंद संग तिस ठौरी ।।२४।।
सभि दरशन गुर के आए । सुत ब्याह सुनति मुद पाए ।
युत भागन आयो द्वारा । ले रामा अपनी दारा ।।२५।।
सुनि जोध राइ नर गन को । शुभ वसतु गुरु अरपन को ।
त्रिय ब्रिंद लए पटरानी । चलि आई अनंद महानी ।।२६।।
सुनि साधु रूपा आयो । परिवार संग सभि ल्यायो ।
इत्यादिक जिन सुध पाई । सभि पहुँचे बिलम भुलाई ।।२७।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुत साधू धरमा लीने । गुर मिलिबे मग पग दीने ।
रथ चढि करि बीरी आई । गुर सुता मिलनि ललचाई ॥२८॥
सभि आनि गुरु पद बंदे । मिलि भल्ले, त्रेहण ब्रिंदे ।
गुर जथाजोग सनमाने । सुध लीनसि खानु रु पाने ॥२९॥
सनबंधी अरु परवारा । मिलि जथा जोग मुद धारा ।
शुभ नानकी रु मरवाही । कहि गिरा म्रिदुल सभि पांही ॥३०॥
त्रिय जित कित जेतिक आई । करि मंगल देति बधाई ।
मिल गावति सुंदर गीता । जे अनंद बधावति चीता ॥३१॥
गुर घर को देखि समाजा । जिम देशनपति महाराजा ।
सनबंधी सरब सराहैं । इन उदयो प्रताप महां है ॥३२॥
रण करते शाहु हरायो । पद पाछै नहीं हटायो ।
अस अपर न जग मैं कोई । इन संग जंग चहि जोई ॥३३॥
गुर घर महिं पूरब पीरी । अबि इनहु दुती ले मीरी ।
परताप सुजस छायों । सम राजीन ऐशवराज पायो ॥३४॥
इत्तयादिक मिलि मिलि भाखैं । रण गाथ बूझि अभिलाखैं ।
नित गुर ढिग सभा बिसाला । सभि बैठति आनंद नाला ॥३५॥
नित स्वादल होति अहारा । खट रस के अनिक प्रकारा ।
बहु राग रंग नित होवैं । निज धनं मानि मिलि जोवैं ॥३६॥
गन मंगतजन सुनि आवैं । धन धान बसन बहु पावैं ।
जस गावति बिबिध प्रकारे । जै सतिगुर करति उचारें ॥३७॥
दिन इसबिधि केतिक बीते । सभि करति ब्याह की रीते ।
धुनि ऊची बाजति बाजे । शरनाइ म्रिदंगनि साजे ॥३८॥
मन ढोलक ढोल बजावैं । बड दुंदभि नाद उठावैं ।
डफ मुरली झांझ बिसाला । मिलि पटहि नफीरी जाला ॥३९॥
नित नौबत द्वार अगारी । सभि करहिं कुलाहल भारी ।
कित होवति बिबिध तमाशे । सुरलोक मनिंद बिलासे ॥४०॥
कित नट गन करति अखारे । मिलि नर समुदाइ निहारें ।
दिन बीतति जानहिं नांही । बहु सुंदर मंगल मांही ॥४१॥
श्री तेगबहादर सोहे । नर नारी रूप पिखि मोहे ।
सम पित के दीरघ डीलं । मुखमंडल चंद सुशीलं ॥४२॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भुज लांबी आयुत[1] छाती । बिसतिरति आंख कुछ राती ।
जुग कंध उतंग सुहाए । गति मंद मंद छबि पाए ।।४३।।
उदबरतन[2] मलिबे हेता । मिलि नारि सुहाग समेता ।
मुख गावति मरदन कीना । सभि तन को गहि भुज पीना ।।४४।।
इशनाने सौरभ संगा । शुभ शोभति भे शुभ अंगा ।
बहु सूखम चीर जि चारु । करि पोशिश पीत[3] उदारु ।।४५।।
तन पहिरति दुती बधाई । जनु सिमटि छटा इक थाईं ।
मुखचंद बीच मैं लीना । जग नयनि कमलरस लीना ।।४६।।
कर कंङणा बंधन कीना । बहु दाज दिजनि को दीना ।
मिलि गावति कोकिल बैनी । बड तीछन पंकज नैनी ।।४७।।
कट केहरि[4] बर गजगौनी । धर बसन बिभूखन लौनी ।
सभि तेगबहादर संगा । चलि आवति अनंद उमंगा ।।४८।।
गन मिलि बरात सुहाई । दुति बसन बिभूखन छाई ।
निज पुरि महिं करन ढुकाऊ । नहीं बाहिन लीनसि काऊ ।।४९।।
गुर चले रूप अभिरामू । जहि लालचंद को धामू ।
धरि जोध हाथ पर हाथा । सभि भल्ले, त्रेहण साथा ।।५०।।
सिख संगति मिलि समुदाए । बरबीर संग छबि पाए ।
धरि सिपर खड़ग निज अंगा । जे अहैं बहादुर जंगा ।।५१।।
गन मेल अपर सभि चाले । चहुंदिश महिं भीर बिसाले ।
पुरि बिखै गरी जि बज़ारा । गन मानव सभिनि मझारा ।।५२।।
धरि भूखन बसत्र नवीने । बनि छैल फिरति रस लीने ।
गन बादत[5] बजे बिसाले । सभि आगे दुलहु चाले ।।५३।।
सिर शेखर[6] सुंदर सोभे । नर नारि पिखति मन लोभे ।
इम गमने करन ढुकाऊ । बरखावति बित चित चाऊ ।।५४।।
तबि लालचंद हुइ आगे । करि मिलनी प्रेम सु पागे ।
करि अग्र बिलंद अकोरं । तहिं खरो हुइ कर जोरं ।।५५।।
पग पंकज को लपटायो । गुर गहि करि हाथ उठायो ।
मिलि अंक गयो निज धामा । करि त्यार भले सभि सामा ।।५६।।

---

1. विशाल 2. उबटन 3. पीली पोशाक 4. शेर जैसी कमर 5. बाजे 6. मुकुट

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री तेगबहादुर भाए । सुसराल द्वार लगि आए ।
कुल रीति करी नर नारी । बहु गावति दे करि गारि ।।५७।।
पुन हटिकरि डेरा कीना । पुरि अधिक कुलाहल* चीना ।
सभि टिकी बरान अनंदे । गन मंगल पिखि हरखंदे ।।५८।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे अशटम रासे 'श्री तेग बहादर ब्याह' प्रसंग बरननं नाम पंचमो अंशु ।।५।।

*शोर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ६

# ब्याह प्रसंग

**दोहरा**

जुग घटिका निसके बिते भोजनहेतु बुलाइ।
श्रीगुर हरिगोबिंद जी संग समुदाइ ।।१।।

**हाकुल छंद**

श्री तेग बहादुर दूलो। सभि आगे गुर अनकूलो।
घर लालचंद के चले। गन बादन धुनी उठाले।।२।
तबि आतशबाज़ी छोरे। चढि जाति गगन की ओरे।
बहु झार मताबी बारी। जनु फूल रही फुलवारी।।३।।
को छूटति सबद उठालैं। को चरखी भ्रमति बिसालैं[1]।
बड करति जोर बिधि नाना। इम अधिक तमाशो ठाना।।४।।
नरनारि बिलोक अनंदै। जिह किह ठां भीर बिलंदै।
चलि सनै सनै गुरु धीरा। अविलोकति चलति प्रबीरा।।५।।
घर लाल चंद के जाई। गन पंकति करि बैठाई।
वर चंदन चौंकी चारु। रुचिरासन तिस पर डारु।।६।।
सनमान गुरु बैठाए। कर धोवनि को जल ल्याए।
पुन धार सु धरे अगारी। पकवान अनेक प्रकारी।।७।।
बहु सुंदर दए अहारा। सभि अचहिं स्वाद ले भारा।
मन भावति अचि त्रिपताए। पुन पानपखारि सबाए।।८।।
धन डारि जूठ महिं आए। निज डेरे बिखै सुहाए।
निस डूढ जाम जबि बीती। हित लावां देनि सप्रीतीं।।९।।
नर पठि करि गुरु बुलाए। लखि समा तुरत चलि आए।
श्री तेगबहादर बैसे। जहिं वेदी सुंदर हैसे।।१०।।
गणपति सुर पूजन कीने। तिह जथा जोग धन दीने।
श्री गुजरी को ले आए। दिश बाम[2] बिखै बैठाए।।११।।

---

1. आतिशबाजी का चित्र है 2. बाईं ओर



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करि पूजा अगनि प्रकाशी । बिच हवी[1] पाइ बहु भासी ।
दिज बच ते फिर करि फेरे । सभि लाग दियो तिस बेरे ॥१२॥
करि रीति जथोचित सारी । चलि आए डेर मझारी ।
तबि संमत सोरहि सैया । बित अपर उनानव १६८९ भैया ॥१३॥
पुन सुपति भए सुख पाए । उठि प्राती सकल नहाए ।
गुर शबद पाठ बड होता । सुनि राग अनेक उदोता ॥१४॥
बहु गाइं रबाबी नीके । जिस ते सुख होवति जीके ।
पुन सभा लगी गुर पासी । सभि आए अनंद प्रकाशी ॥१५॥
जित कित ते जाचक आए । जस गावति धन को पाए ।
श्री सतिगुर हरिगोविंद । छबि पावति भए बिलंदं ॥१६॥
सुत चारहुं बेद समाना । बिच ब्रहमा गयान महाना ।
सुरराज मनहुं सुर मांही । सिर चमर[2] बिसाल ढुराहीं ॥१७॥
को को बड कहौं समाजा । बिच सभा सुभहिं महराजा ।
हित भोजन बहुत बुलाए । मग परति पावड़े[3] आए ॥१८॥
करि पंकति थित समुदाई । गुर चौंकी पर दुति पाई ।
बर नुगदी, मोदक ब्रिंदा । धरि अग्र जलेब बिलंदा ॥१९॥
इत्तयादि परोसि अहारा । बड होति भई जिवनारा ।
तबि गावति नागरि नारी । ले नाम गुरु दे गारी ॥२०॥
त्यों होति अनंद बिलंदा अचि लीनि जथा रुचि ब्रिंदा ।
दे लाग भले चलि आए । इम बासुर तीन बिताए ॥२१॥
तबि लालचंद दे दाजा । बहु भूखन बसत्र समाजा ।
धरि जथाशकति कर जोरे । नहिं सरयो कछू ढिग मोरे ॥२२॥
इक तनुजा मैं हित सेवा । अरपंन कीनि गुर देवा ।
ले बिशनु कुइर संग दारा । हुइ दीन सु बाक उचारा ॥२३॥
सुनि सतिगुर भए क्रिपाला । तुम दीनो सकल बिसाला ।
जिन तनुज़ा अरपन कीनं । कया पाछे तिन रखि लीनं ॥२४॥
सुनि लालचंद पद बंदे । पुन डोरा ल्याइ बिलंदे ।
तहिं गुजरी सुता बिठाई । पति सेवन सीख सिखाई ॥२५॥
सभि करे बिसरजन[4] चाले । धन बरखा कीनि बिसाले ।
निज घर लौ आवति सारे । धन डारति गरी बज़ारे ॥२६॥
गन बाज बजावति ऊचे । गुर मंदिर आनि पहुंचे ।
मिलि आगे नागर नारी । बहु गाइ गीत मुद भारी ॥२७॥

---

1. घी 2. चौर 3. बरात के लिए बिछाया गया वस्त्र 4. विदा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सभि बिखैं नानकी आवै । सुत बधु पिखिन ललचावै ।
जबि पहुंचे पौर अगारी । सिर वार बारि तिस बारी[1] ।।२८।।
करि पीवन आनंद धारे । हुइ सुत ऊपर बलिहारे ।
कुल रीति करी भन भाई । ले अंतर महिल सिधाई ।।२९।।
धनु थाती दे करि झोरी । पिखि नुखा बदन की ओरी ।
शुभ थान बिठावन कीनी । त्रिय हेरति बधू नवीनी ।।३०।।
दे दरब सरब ही हेरैं । मुख करति सराह घनेरैं ।
कहि तेग बहादर जोरी । बिध रची रुचिर रुचि बोरी ।।३१।।
कर कंङणा तबि छुरवायो । इम बयाह प्रसंग बनायो ।
नहिं बरनन कीनि बिसाला । इस पढे सुफल सुख जाला ।।३२।।
सभि मेल कितिक दिन पाछे । हुइ हरख रहिन ही बांछे ।
बहु ग्राम पुरिनि ते आए । सनबंधी प्रेमि सब्राए ।।३३।।
चिरकाल बिते भा मेला । पुन ब्याह उछाह सुहेला ।
इस कारन ते सुख भारी । नहिं सिमरहिं सदन पिछारी ।।३४।।
बहु बासुर जबहि बिताए । लखि गमन अबहि बन आए ।
धन बसन बिभूखन दीने । करि प्रेम बिसरजन कीने ।।३५।।
सभि त्रेहण, भल्ले चाले । कहि बाक प्रेम के नाले ।
पुन हरी चंद अरु रामा । चढि बहिलनि गमने घामा ।।३६।।
हरिगोविंद जसु उतरते । प्रसथानो पंथ करंते ।
निज त्रिय युति गमन्यो द्वारा । करि जथा जोग बिवहारा ।।३७।।
सुत साधू धरमा लैके । सतिगुर को बंदन कैके ।
मिलि बीरो गुर पित संगा । दुइ मातनि मिली उमंगा ।।३८।।
धन बसन बिभूखन लीने । मिलि भ्रातनि सों हित कीने ।
निज सदन गई सुख पाए । परिवार हेहि समुदाय ।।३९।।
तबि राइ जोध गुर पासा । कर बंदि करी अरदासा ।
निज सुत को पाइनि पावा । जिस फत्ता नाम रखावा ।।४०।।
पुन भ्राता शाहि सलेमू । कर बंदन चाहति छेमू ।[2]
त्रिय सिक्ख सुता चलि आई । पग कर्यो प्रणाम गुसाईं ।।४१।।
सभि ऊपर खुशी बिसाला । गुर करति भए तिस काला ।
हुइ बिदा पंथ प्रसथाने । गुर जसु को करति बखाने ।।४२।।
पुन साधू रुपा आयो । पग पंकज सीस निवायो ।
करि बिनती सदन[3] पयाने । गुर खुशी कीनि हित ठाते ।।४३।।

1. जल 2. कल्याण 3. घर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इत्तयादिक मेल जि सारा । मिलि निज निज सदन सिधारा ।
गुर कीरति भाखति जाते । सतिनाम सिमरि सुख राते ॥४४॥
पुन सतिगुर समा बितायो । करतार पुरे सुख पायो ।
जबि दिवस पुरब को आवै । सिख संगति मिलि बहु जावै ॥४५॥
दिन दीपमाल बैसाखी । सभि आवति दरशन काँखी ।
गन अरपहिं वसतुनि आनें । पग पंकज बंदन ठानें ॥४६॥
बहु दरब बिभूखन नाना । पट अदभुत मोल महाना ।
गन शस्त्र अनेक प्रकारी । हय आनहिं दें धन भारी ॥४७॥
मन करति कामना पावें । सिख दूर दूर ते आवें ।
जहिं सतिगुर निज सिख जोवहिं । सभि थान सहाइक होवहिं ॥४८॥
को दसबंध देवै आई । को अरप मनौत बनाई ।
करि चाउ प्रथम को आवै । को प्रेमी दरशन पावै ॥४९॥
सुत आदि कामना पावै । को भगति गयान लिव लावै ।
इस लोक लहै सुख कोई । परलोक चहै गति होई ॥५०॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे खशटम रासे 'ब्याह' प्रसंग बरननं
नाम खशटमो अंशु ।६।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ७

# सिख वसतू लिआवनि प्रसंग

**दोहरा**

बीत गए खट मास इम बासे पुरि करतार।
दीपमाल मेला मिल्यो गन नर नहीं शुमार ॥१॥
दूर दूर तू भूर[1] सिख पुरि कामना हेतु।
आइ हजूर निहारते शरधा प्रेम समेत ॥२॥

**चौपई**

इस प्रकार गुर दिवस बिताए। दुशटनि हनि गुर संत सहाए।
बड़ी भीर नित पुरि करतारा। आई जाई नर नहीं शुमारा ॥३॥
बड पूरब ते संगति आवै। तहिं ते वसतु अजाइब ल्यावै।
जे सलितापति टापू वासी। आई जतन करि सतिगुरु पासी ॥४॥
तिम ही दच्छन के समुदाई। दरसहिं बंदहिं करहिं बडाई।
तित दिशि अंग वंग[2] ते आदी। पाइ कामना हुई अहिलादी ॥५॥
पशचम दिशा वलाइत जेती। तुरक हिंदु गन प्रेम समेती।
ले करि शसत्र तुरंगनि आवैं। दरशन करति कामना पावैं ॥६॥
उत्तर दिश के सिक्ख महानैं। वसतु दरबु सतिगुर ढिग आनैं।
श्री नानक फिरि करि सभि अविनी[3]। बिसतारन करि सिक्खी रवनी ॥७॥
जहिं ते आवनि समरथ होई। दरशन हेतु आइ सभि कोई।
जहिं ते पहुंच्यो जाइ न इहां। करहिं तिहावल[4] हुई जहिं कहां ॥८॥
हुइ इक थाइं अराधहिं गुर को। करि अरदास भावना पुर को।
बरनें गुर प्रताप कहिं तीका। जहिं कहिं बिदति जगत रहि नीका ॥९॥
दिवस विसोए को तबि आयो। फल दरशन को हुइ अधिकायो।
चहुं दिशि ते संगत समुदाई। ले करि वसतु अजाइब आई ॥१०॥

---

1. बहुत 2. बिहार-बंगाल 3. भूमि 4. हलुवा



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धरि धरि प्रेम अधिक चित चाऊ । छेम लेनि चाहति अधिकाऊ ।
जिस दिन माधव की संक्रांत[1] । पुरि करतार बिखै बहु भांति ॥११॥
संगति के डेरे गन छाए । पुरि के चहुंदिशि पिखि पिखि छाए ।
अरु जल को सुख जहाँ निहारा । मिलि मिलि नर गन डेरो डारा ॥१२॥
अधिक भीर पुरि के चहुं फेरे । बीच न मेव सकहिं बहु डेरे ।
जित कित धुनि होवति गुरबानी । गुर जैकारा करहिं बखानी ॥१३॥
दरशन देनि हेतु गुर पूरे । दीनिसि हुकम फरश हुइ रूरे ।
सभा लगन की करीयहि त्यारी । सुनति दाम करि आनंद भारी ॥१४॥
बरण बरण[2] के फरश बनाए । वडे थान थित जहिं समुदाए ।
चहुंदिशि महिं झालर लग ज़री । हीरे मुकतनि सों बहु जरी ॥१५॥
अस गादी गुर केर डसाई । बहुत दरब लागे रुचिर बनाई ।
तिस पर राखे वड उपधानो । बसत्र अजाइब लग्यो महानो ॥१६॥
रेशम डोरनि गुंफे ज़री । जिनहुं लगी मुकताहल[3] लरी ।
वडी भोर ते गुरु शनाने । सुखम बसत्र बिसद पहिराने ॥१७॥
खडग बिसाल गरे महिं पायो । सिपर सहित सतिगुरु सुहायो ।
मंद मंद पद धरि गुर मंदर । जनु अरबिंद म्रिदुल बहु सुंदर ॥१८॥
क्रिपा कटाख बिलोकति आए । पीछे बीर दास समुदाए ।
पहुंचि करी गादी को बंदन । ऊपर बैठे दोश निकंदन ॥१९॥
चमरदार ले चवर सलोवा । हंस मनिंद दुरावति होवा ।
सभा बिसाल लगी चहुंफेरे । लाजति जांहि सुधरमा हेरे ॥२०॥
भयो मेवरो खरो अगारी । सिक्खनि की अरदास उचारी ।
चारहुं पुत्र सुहावति पास । जग पौत्रे दुति रही प्रकाश ॥२१॥
भाट नकीब[5] कहैं जसु ठांढे । कंचन छरीदार छवि बाढे ।
हुकम भयौ संगति सभि आवै । मनो कामना चाहति पावै ॥२२॥
सनमुख शबद रबाबी गावैं । सुनहिं प्रेम ते सुख उपजावैं ।
हुइ हुइ तयार सिक्ख गन आए । निज निज रुचिर अकोरनि ल्याए ॥२३॥
सतिगुर के दरशन को करैं । बदहिं भेंट अगारी धरैं ।
मुक्खि जि सिक्ख बैठि थिर होवैं । खरे हज़ारहुं दरशन जोवैं ॥२४॥
त्रिपतहिं नहिं मन रहैं लुभाई । जनु अरबिंद मलिंद[6] भ्रमाई ।
होति अनेकन की अरदास । श्री गुर ! सिख कारज हुइ रास ॥२५॥

---

1. विसाखी 2. रंग-बिरंगे 3. मोती 4. इंद्र 5. यश गाने वाले, चारण
6. भँवरा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वसतुनि के लागे अंबारु । धन गन बसन बिभूखन चारू ।
हय हत्थयार आइ समुदाए । खुशी करहिं गुर सभि दरसाए ।।२६।।
इक सिख हुतो सुदागर भारी । बसहि बदखशां नगर मझारी ।
देश बिदेशनि महिं बिवहारू । जिसको होवति दरब उदारू ।।२७।।
तिस ने धन दसवंध निकारा । अरु मनोत को संच्यो सारा ।
वसतु अजाइब सुंदर देखि । करी खरीदन मोल विशेख ।।२८।।
दे धन लाख तुरंगम लीनो । बहु चंचल गुन ब्रिंद प्रवीनो ।
इक पुशाक बनिवाइ बिसाला । सूखम अधिक अजाब[1] उजाला ।।२९।।
तिस पर मोल खरच बड कीनो । चीरा चारु दरब दै लीनो ।
बाज सुपैद हंस की न्याईं । किसू देश ते लीनि मंगाईं ।।३०।।
मुख मांगी कीमति तिस दीनि । सतिगुर खुशी हेतु सो लीनि ।
खंडा एक बिलंद दुधारा । धर्‍यो पुलादी लोह करारा ।।३१।।
कलगी एक जरावन जरी । जाहर अजब जवाहर खरी ।
सिपर अधिक सुंदर ले आइव । श्री सतिगुर लाइक लखि पाइव ।।३२।।
ए सभि वसतू बहुत उजागर । ले पहुंच्यो गुर ढिग सौदागर ।
धरि हज़ूर पग बंदन करी । दरशन करति निमेख न परी ।।३३।।
रह्यो जोरि कर प्रेम बिसाला । खुशी द्रिषटि करि पिखयो क्रिपाला ।
बुझ्यो कौन देश ते आवा ? कौन कामना पूरन पावा ? ।।३४।।
बोल्यो बिनै सनी बर बानी । तुम जानहु सभि नांहिन छानी ।
तऊ बुझिबे हित करि कहौ । मुलख बदखशां के तहिं रहौं ।।३५।।
देश बिदेशनि महिं बिवहारा । चलहिं खेप भरि वसतु हजारा ।
बहुत लाभ मुझ आवति रह्यो । तिह दसवंध जितिक मन लहयो ।।३६।।
सो मैं संचति रह्यो घनेरे । अरु जबि काज अटक कुछ मेरे ।
मानति रह्यो मनौत महानी । तहिं सहाइता रावर ठानी ।।३७।।
सो मैं तिह सों रह्यो मिलावति । संच्यो दरब भयो मनभावति ।
उर महिं इही मनोरथ धारे । जबि चले गुर को दरस निहारें ।।३८।।
दै हैं आप हदुर सिधाइ । चिरंकाल इम गयो बिताइ ।
इक फकीर तुमरे ढिग रहयो । रावर को सुभाउ सभि लहयो ।।३९।।
आयुध धरन करन संग्रामू । चढ़न तुरंगनि पर अभिरामू ।
खेलनि बहु अखेर मन भावैं । महाराज मम खोज बनावैं ।।४०।।
हय[2], आयुध[3] जो सिक्ख लिआवै । करि अरपन सतिगुरू रिझावैं ।
अंग संग सो लेहिं लगाए । खुशी करहिं सिख पर सुखदाए ।।४१।।

1. आश्चर्य 2. घोड़े 3. शस्त्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मैं सुनि करि तवि रचे उपाइ। आछी वसतु खरीदी जाइ।
बहुत मोल दे ल्याइ तुरंगा। अति चंचल सुंदर सरवंगा ।।४२।।
सिपर खडग वड कीमत केरे। कलगी को दे मोल वडेरे।
दुरलभ आज सेत[1] इहु आना। पोशिश हित धन खरचि महाना ।।४३।।
वसतुनि पर केतिक बित[2] लागा। बच्सो जितिक सो रावर आगा।
अधिक भार ते ले दीनार[3]। अरपन कीनि गुरु दरबार ।।४४।।
अपनी वसतु संभारनि कीजै। ल्यायो वडे जतन सों, लीजै।
दासन की राखति हो लाज। विरद विसाल गरीब निवाज ।।४५

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे अशटम रासे 'सिक्ख वसतू लिआवनि' प्रसंग बरननं नाम सपतमो अंशु ।।७।।

1. सफेद घोड़ा 2. धन 3. मोहर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ८

# पैंदेखान प्रसंग

### दोहरा

सुनि सौदागर बाक को शरधा लखि अधिकाइ ।
सतिगुर भए प्रसंन तबि कहति भए इस भाइ ।।१।।

### चौपई

अपनो जनम क्रितारथ कीना । सभि कुल को संकट करि छीना ।
इती दूर ते वसतु लिआवा । बहु धन खरच्यो प्रेम बधावा ।।२।।
गुर हित नित दसौंध को राखा । दरशन गुर शरधा उर कांखा ।
हम प्रसंन बर जाचन कीजै । अपनी आशा पूरि लईजै ।।३।।
हाथ जोरि तबि कहयो सुदागर । प्रेम परखिबे नागर आगर ।
दरशन करे त्रिपति चित होवा । क्रिपा द्रिषटि ते मोकउ जोवा ।।४।।
सभि बिधि ते मुझ कर्यो निहालू । बर दीजै निज प्रेम बिसालू ।
सिपर खड़ग अरु कट सों भाथा । भए सनद्ध गहे धनु हाथा ।।५।।
इह सरुप उर बसहु तुहारा । जथा चलहि नहिं मेरु उदारा ।
निसदिन जिहवा नाम मुकंद । रटति रहौं श्री हरिगोबिंद ।।६।।
इहु बर मोकउ दीजहि स्वामी । क्रिपा करहु गुर अंतरजामी ।
जबि लौ हुइ न आप सों मेल । करमनि वसि जूनन महिं खेल ।।७।।
जहिंजहिं जनम धरों मैं जाई । रहौं सिक्ख तबि लौ गुन गाई ।
भए प्रसंन बखान्यो बैन । तेरो जनम अपर अबि हैन ।।८।।
उर महिं बसौ मांगि बर लीनो । भयो करम के बंध बहीनो ।
पूरन होइ कामना तेरी । मिटी सकल भवजल की फेरी ।।९।।
कितिक समै थिर दरशन हेरे । पुन आइसु ले गमनयो डेरे ।
अरपी वसतु सकल गुर देखीं । प्रथम तुरंगम चपलविशेखी ।।१०।।
कर पर बाज़ बिठाइ निहारा । अधिक गुनन महिं दुलभ उदारा ।
श्री गुरदित्ते कहयो सुनाई । दुर कहुं ते अस कर आई ।।११।।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपर न कहुं देखिवे आवै । बडो अहै गुन बिसद सुसावे ।
सुनि सतिगुर सुत चित की जानी । अहै अजाइब दुलभ बखानी ॥१२॥
इह तूम लेहु अखेर करीजै । परखहु संग बिहंग छुरीजै ।
होत प्राति के वहिर सिधारहु । किम खब पकरै तहां निहारहु !॥१३॥
पैंदेखान दिशा पुन हेरा । घोरा बखश्यो मोल बडेरा ।
पोशश चीर चारु अरु चीरा । दे करि भाख्यो पहिरु सरीरा ॥१४॥
पुन खंड ले हाथ निहारा । परख्यो आछो लोह करारा ।
मान वाक पैंदेखां बीर । सभि पुशाक को पहिरि शरीर ॥१५॥
करी सलाम देखि मुसकाए । इहु खंडा लिहु अंग लगाए ।
शोभा दून चऊनी होई । पोशिश अधिक दरब लगि जोई ॥१६॥
भए प्रसंन बहुत समुझावहिं । जबि तूं हमरे ढिग चलि आवहिं ।
इह पोशिश तन पहिरि सु आवहु । खड़ग सिपर तबि अंग सजावहु ॥१७॥
अबि तूं चढि तुरंग कहु फेरि । करहु दिखावनि चपल बडेर ।
सुनि पैंदा हरख्यो उर मांही । सिपर खड़ग धर करि कट तांही ॥१८॥
मुझ को जानहिं वड बलवाना । रण महिं वीर करहि घमसाना ।
इस कारन ते सतिगुर देति । मो समता को दुतिय न लेति ॥१९॥
इत्तयादिक चित बिखै बिचारति । बखशिश लेति गरब को धारति ।
उठि हय पर आरूढन भयो । जिस हित दरब लाख गिनि दियो ॥२०॥
मंद मंद चढि प्रथम चलायो । फिर फेरे पुन पोईए पायो ।
त्रितिय बार घोरा जबि छेरा । दौरयो असु करि बेग बडेरा ॥२१॥
पौन गौन को पावति पाछै । बपुरे हरन कि समता बांछे ।
ठौर अद्रिषटि बिखै चलि जाने । मन को मनहुं सिखावन ठाने ॥२२॥
नैन नागरै केर सरीखे । पलटन मनो इसी ते सीखे ।
उठी खुरन ते रज पिखियति । गयो फुरति ते हय न दिखति ॥२३॥
हेरति सभि के मन बिसमाने । तुरंग बिकीमति करति बखाने ।
सतिगुर देखति बाक अलायो । वाउवरोला हुइ जनु धायो ॥२४॥
इम गुर को कहि बोसुनि सारे । 'सोउवरोला' नाम उचारे ।
चौथी बेर तुरंग फंदायो । नट जिम गिनगिन पावटि कायो ॥२५॥
छाती छुवति हैं पगभौन । करति कूंडली सुंदर दौन ।
छुइ छुइ पाछल जानु अवनी । उठि उठि परति करति गतिरवनी ॥२६॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बहुरो लांबी छार कराइ । जाइ सु चारहुं चरन उठाइ ।
इम सभि गुन चंचल चतुराई । बल अरु बेग सहत दिखराई ।।२७।।
गुर समीप तबि आनि खरोबा । देखति सभि के आनंद होवा ।
गुर प्रसंन हुइ कहयो सुनाइ । श्री गुरदित्ता प्राति सिधाइ ।।२८।।
हित अखेर[1] के संग चढीजै । बाज़ बिहंगनि[2] पर परखीजै ।
अबि तूं सदन जाहु सुख पाए । भोर अरूढहु संग सिधाए ।।२९।।
पैंदखान कीनसि पुन नमो । हरखति गमन कयो तिह समो ।
गुर क्रिपा लहि गरब वधायो । मो सम जग महिं अपर न जायो ।।३०।।
चहुं दिशि महिं जो वसतु अजाइब । सो आवहि हित सतिगुर साहिब ।
निज हित अंगीकार न करें । अपर किसू पर नज़र न धरें ।।३१।।
सुत आदिक सभिहिनि कहुत्यागि । मो पर करहिं अधिक अनुराग ।
बली सूरमा डील बिलंद । मुझको जानहिं धरहिं अनंद ।।३२।।
जो सिख लयावति वसुतनि आछे । सो मुझ को देवति बिन बांछे ।
अपर न मुझ समान को हेरें । रण को धरें भरोस बडेरें ।।३३।।
बिजै इसी ते हम कबि पावहिं । इम जानति शुभ वसतु दिवावहिं ।
इत्तयादिक अहंकार करंता । खान जाति खानहि हरखंता ।।३४।।
जिह हंकार लंकपति मारा । कुल कौरव को सकल संघारा ।
हरिणाखश हरनाछ न रहे । मर्यों स्वासबीरज जिसु लहै ।।३५।।
रकत बीज अरु सुंभ निशुंभ । कुभ कान अरुकुंभ निकुंभ ।
केतिक इस थल करहिं प्रकाशे । महां बली हंकार बिनाशे ।।३६।।
कहां बापरो पैंदे खान । कयों चहति अपने हति प्रान ।
भावी ने तैंसे मन फेरा । ले वसत्र वधि गरब घनेरा ।।३७।।
निज वडिआई अधिक विचारति । ढिग निज ग्राम गयो हंकारति ।
चढ्यो आइ आगे दामाद । खां असमान देखि अहिलाद ।।३८।।
बूझ्यो इहु तुरंग कवि पायो ? पोशिश नई पहिरि कित आयो ?
प्रिय दमाद को सकल सुनाई । इहु सभि वसतु गुरु ते पाई ।।३९।।
देश ते इक सिख ल्यायो । लाखहुं दरब खरचि करि पायो ।
छोरदार चीरा वर चीर । गुर हजूर पहिराइ सरीर ।।४०।।
करि बखशिश को हुकम प्रकाशा । पहिरहु तबहि आइ हम पासा ।
सुनि असमानखान कहि बैन । इहु सभि तुमरी लाइक है न ।।४१।।

---

1. शिकार 2. पक्षी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुम हो बडे छोट मुहि जानहु । दिहु तुरंग मैं फेरनि ठानहुं ।
पोशिश दीजहि होति सकारे । उचित बात को लेहु बिचारे ।।४२।।
पंदे कह्यो न इम बनि आवै । जबि जानहि गुर अधिक रिसावैं ।
बालपने की बात न कीजै । घर की वसतु अपर पिखि लीजै ।।४३।।
इम दमाद सों कहि रिस संगा । गमन्यो अग्र कुदाइ तुरंगा ।
फिर्यो ग्राम के गिरद दिखावति । सभि गरीअनि के बिखै फंदावति ।।४४।।
निज उत्तमता करहि जनावन । सभि खाननि को फेर दिखावनि ।
जो मिलि जाइ बात तिस कहै । निज बल गुन ते इम हम लहैं ? ।।४५।।

**इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे अशटम रासे 'पंदे खान' प्रसंग बरननं नाम अशटम अंशु ।।८।।**

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ९

# बाज़ प्रसंग

**दोहरा**

असमां खां चित लटपटी वस्तु सुसर की देखि ।
लैहौं कहि निज सास को कै गृह तजौं अशेख ॥१॥

**सवैया छंद**

बनौं फकीर निकसि करि बाहर मिलौं न तिनकी तनुजा संग ।
मोहि उचित है सुंदर पोशिश चीरा छोरदार सजि संग ।
खान महान आरबल होए तऊ बांकपन रिदै उमंग ।
मुझ सम सुत को देति न हित करि अनलाइक नहिं सहौं प्रसंग ॥२॥
एव विचारति गमनयो गृह को बैठि सास दृग जल नीर ।
मुरझानो सुख पिखि करि बोली किम तु दुख ते दिखति अधीर ?,
सुनि करि कह्यो कीनि अपमाना मैं जाचे दे खान न चीर ।
गुरु निकटि ते ल्यायो हय को मुहि अरु ढिवे दिवे दियो न बीर ॥३॥
तैं दिवाइ तो कुशल अहै मम नांहि त मरि हौं देरि न लाइ ।
हम पठान के पूत सहैं नहिं जै प्रतिकूली* बात बनाइ ।
सुत सम मोकहु प्यार करहु नित यांते छल को जान्यो जाइ ।
पोशिश तुरंग देहु तबि जीवन इहु साची मैं देहुं सुनाइ ॥४॥
सुनति सास ने दीनि दिलासी हे सुत ! स्वास न लेहु बिसाल ।
हमरी वस्तु सकल कौ मालिक तौ हित करि संचति धन माल ।
खानहि आइ खान लै देहौं, कहां बसत्र अरु तुरंग कमाल ।
इम कहि नेत्र पौंछि, दे धीरज करती प्यार प्रीति के नाल ॥५॥
इतने महिं पैंदा ग्रिह आयो हरखति बदन कमल सम कीनि ।
बैठ्यो पलंघ धर्यो खर खंडा सिपर सहित बपु गरमी चीन ।
बसत्र उतारि धरे सभि ततछिन दारा अग्र बनहि नित दीनि ।
प्रबल आइ तबि कंत समीपी पोशिश पिखति अनंद को लीनि ॥६॥

---

*उलटी



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहति भई इह गुर की बखशिश जाचति चहिति खान असमान ;
रुदति क्रोध ते हठ बहु धारसि कहै कि खान कीनि अपमान ।
तुझ को उचित नहीं इम करिवो अनखवान[1] है पूत पठान ।
सुता छोरि करि गमन जाइ कित तौ मुशकल तव बनहि महान ॥७॥
गुरबखशिशदे, मुझसों भाख्यो पोशिश इही पहिर नित आइ ।
हय पर चढहु अखेर करहु जबि यांते अबि न दियो कुछ जाइ ।
केतिक दिन महिं करि प्रसंन गुर आइसु ले सभि देहुं बनाइ ।
बालिक मूढ न जानहि बुधि को इक हठ को मन महिं उपजाइ ॥८॥
जिस गुर ते नित वस्तु अमोलक किम तिन को कहिवो नहिं मानि ।
कहै भारजा[2] क्या मुख भाखति नहिं दमाद की करहिं पछान ।
बनहिं फकीर जाइ मरि कैधौं तो शोभा बड पाइं जहान ।
सुता तरुन पिखि होइ मरन तबि कहां रहैगी तो कुल कान ॥९॥
इम कहि झिरक्यो खान करहु बुधि बसत्र सिरान लिए उचाइ ।
'नित गुर ढिग ते बखशिश पावति कहां एस बिन जीओ न जाइ' ।
'पावति हाथ, कहां तूं करती ? रोज़ी खान बिगारति काइ' ।
कर ते तजहि न पैंदा पोशिश, छीनति दारा मुख मुसकाइ ॥१०॥
झटकि हाथ पट झटपट छीनो इसत्री जित ते कह्यो न जाइ ।
जे नहिं कटहिं सुभट को ठट ते, लोहा सहैं नहीं तजि थाइ ।
से नर अबला मृदुल जीत करि बसी बनाइ लेति सति भाइ ।
नीचग्रीव गुर दिशि ते चिंतति-मिलों जबै क्या कहौ तदाइ ॥११॥
बैठ्यो रह्यो बिसूरति मूरख किस प्रकार नहिं बन्यो उपाइ ।
खां असमान सास ते ले करि हेरति रह्यो रिदै हरखाइ ।
नहिन बिलोके बसत्र कबहुं अस कहाँ पहिरिबे महिं तिस आइ ।
चीरा छोरदार सिर बंध्यो पोशिश पहिरी अंग सजाइ ॥१२॥
खड़ग सिपर को तन लगाइ करि वहिर फिर्‌यो सभि ग्राम दिखाइ ।
पैंदा बहुत बिसूरति बिसम्यो पियो न पानी भोज न खाइ ।
पर्‌यो निसा महिं चिंता के वेसि नहीं बिलोचन[3] निंद्रा पाइ ।
जागति ही प्रभाति हुइ आई रोगातुर सभि पौढ रहाइ ॥१३॥
प्राति जानि असमान खान तबि करि शनान पोशिश पहिरंति ।
चीरा छोरदार सिर सजि कै ज़रीदार पाछे लरकंति ।
खंडा सिपर लगाइ अंग सों दिखिशोभा तन मन हरखंति ।
पैंदखान के बिना बूझिबे हय पर जीन पाए दुतिवंति[4] ॥१४॥

---

1. स्वाभिमानी 2. स्त्री 3. आंख 4. सुंदर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करि चित चौंप अरोह भयो हय वहिर अखेर[1] करनिको चालि ।
मुदति फंदावति कवहुं भलावति जिस महिं गुन चपलादि बिसाल ।
बन महिं गयो फिर्यो इत उत को खोजति म्रिगनि बिहंगन जाल ।
बहु फिर करि इक ग्राम बाग ढिग तिस महिं बैठ्यो आइ सुखाल ॥१५॥
श्री गुरदित्ता पिता बचन ते प्राति भए त्यारी निज कीनि ।
सुंदर हय पर ज़ीन पुआइव मीर शिकार हकारि सु लीनि ।
अपर सुभट कछु संग चढाइव पैंदे खां आइव नहिं, चीन ।
करति प्रतीखनि बहुर अरूढे ले करि साथ सु बाज़ नवीन ॥१६॥
गमने जबि उदिआन पहूचे बाज विहंगनि पर छुटिवाइ ।
गहे कितिक, तिस तामो[2] दे पुन अधिक शिकार कीनि मन भाइ ।
करहिं सराहन 'बाज़ अमोलक इस के सम नहिं पिख्यो कदाइ ।
झपटति खग को जानि न देतो' भखयति मास भयो त्रिपताइ ॥१७॥
गयो अवाइ न त्यागयो सो पुन श्री गुरदित्ते हटिबो कीनि ।
दिन कुछ चढ्यो घाम भा तीछन श्री करतारपुरे मग लीन ।
पैंदेखान के ग्राम बरोबर हुती झील तहिं आइ सु चीन ।
निकसि सुकाब[3] चल्यो उड नभ को सभिनि बिलोक्यो तित द्रिग दीन ॥१८॥
श्री गुरदित्ते हुकम कर्यो तबि तजहु बाज़ इस लेहु गहाइ ।
मीर शिकार हटकि बहुतेरा अबि इहु गहहि न, रहि त्रिपताइ ।
तऊ छुटाइव, गयो गगन को, नहिं सुकाब को पाछै धाइ ।
जहिं असमानखान यो उतर्यो तिसी बाग महि प्रविशयो जाइ ॥१९॥
हुते बिहंग उडे तहिं सभिही देखति भयो खान असमान ।
बैठ्यो बाज़ सफैद किसम को पकरन के हित जतन सु ठानि ।
जयों कयों करिकै पकर लीनि तिस दियो खुदाइ आप मुझ आनि ।
आइ पिछारी देखहि कोइ न यांते कीनसि शीघ्र पयान ॥२०॥
नीके तिंह छिपाइ करि गमन्यो विना पिखे घर प्रविशयो जाइ ।
निकटि सास ते तबहि सुनाइव मो कहु दीनसि बाज़ खुदाइ ।
बिना जतन ते बैठ्यो प्रापति बड कीमत को सेत[4] सुहाइ ।
कहनि लगी 'सुत ! करहु छुपावन जिसते पिखहि न को झगराइ ।२१॥

**दोहरा**

सुनति बाज़ की बात को तबि पैंदेखान ।
देखनि लग्यो पछान लिय इहु गुर को बलवान ॥२२॥

1. शिकार 2. माँस का टुकड़ा 3. सुर्खाब 4. सफेद

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## सवैया छंद

ले करि बाज़ जाउं मैं गुर ढिग सभि आराब्र ठिना करिवाइ।
पोशिश पहिरि अछढनि हय पर कर्यों हकारन गयो न काइ।
इस को पिखि प्रसंग पुन होवैं आनो जानैं हित उपजाइं।
रोज़ी बनी रहै सुख पावहिं जिन ते सभि समाज[1] नित पाइं ॥२३॥
सुनति खान असमान बखानी 'कहां खान जी! खोयहु दीन।
हिंदु गुरको सेवक वनिके टुकराखाहि इमानविहीन।
अपर यान कया जीवका सकल खान कया रोज़ी हीन।
इतो त्रास धरि, कहति बाज़ दिहु चहै खता बखशावन कीनि ॥२४॥
जे गुर को सुध होइ बाज की पठैसैन मैं करिहौं जंग।
जे बल अधिक मोहि पर घालहि जाइ मिलौं हज़रत के संग।
प्रथम चुरायो बाज़ शाह को इसते भयो सेत तन रंग।
सो पलटो मैं देउं जाइ करि हुइ प्रसन मोपर सरबंग ॥२५॥
तुमसम नहीं दीनता करिहौं ऐठदार मैं पूत पठान।
रण करि मरनि सहौं सभि तन पर दोनों थाज़ न कबिहुं गानि।
वसतु अजाइब पाइ अचानक दई खुदाइ रिदै इमु जानि।
कौन मरद अस गीदी कारज करि है धरहिं जु कुल की कान ॥२६॥
सुनि पैंदा बहु दुखी होइ मन चिंता बसि नहिं करहि वखानि।
बसि न बसाइ महां पछुताबहि भयो लखहि उतपात्[2] महान।
मीर शिकार इतन गहिं पहुँचे खोजति बाज़ उताइल ठानि।
बाग बिखैं फिर सभि दिशि पिखिकरि नहिं प्रापति मन भए हिरान ॥२७॥
पुन पेंदे के गए सदन दर, करि गुहार[3] को लीनि बुलाइ।
निकसति वहिर नारि सिखराइव, देखहु किसहुं न देहु सुनाइ।
चहै दमाद जियनि को जे चित मुकर जाहु कहु इतहुं न आइ।
नांहित मरन अरंभरहयो इहु, सुसि लीनसि तुन जिति कअलाइ ॥२८॥
मीर शिकारन सों मिलि बोलयो 'इत दिशा तौ हम लखयो न कोइ।
कहि करि ग्राम सू डिंडम[4] फेरा 'गुर को बाज़ पिख्यो कित होइ।
पैंदखान अबि ताहि मंगावति नहीं दुरावन कीजहि सोइ'।
इम कहि करि धर घर नर बिचरे कौन कहै 'तू निज घर जोइ' ॥२९॥
दोइ घरी लगि करि खुजवावन आइव तबहिं खान असमान।
खोज्यो सभि थल बाज़ न पायो, करो निहारन आन जि थान।

---

1. सामग्री 2. उपद्रव 3. पुकार 4. ढिंढोरा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निमक हराम होइ करि मरनो प्रेरे काल सु करति बखान ।
मीर शिकार सुनति बिसमानै* भयो ग्राम महिं कपट महान ॥३०॥

दोहरा

कहति बिलोकति हम रहे आइ बाज़ इस थान ।
नीके खोजहु ल्याइए श्री गुर बाज़ महान ॥३१॥
इम कहि करि गमने तुरत मीर शिकार हिरान ।
श्री गुरदित्ते दिशि गए कहिन बाज़ घर खान ॥३२॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे अशटम रासे 'बाज़' प्रसंग
बरननं नाम नवमो अंशु ॥९॥

*हैरान हो गए

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु १०

# पैंदे खान को प्रसंग

दोहरा

धाए मीर शिकार तबि श्री गुरदित्ते पास।
खाननि सदन दुराइ लिय बाज़ बिसद[1] बिन त्रास।। १ ।।

सवैया छंद

फेर्यो डिंडम बिदत जनावहि, बाज भलो पिखि लालच कीनि।
नहीं ग्राम ते बहिर उड्यो कित, रहे बिलोकति हम द्रिग दीनि।
कपट करति मन, राखन के हित तिन की गति नीके लखि लीनि।
गुर सुत सुनति बिचारन करिकै चले पिता के निकटि प्रबीन।। २ ।।
बदन खिन्न[2] कुछ चिंता के बसि, गए उताइल सतिगुर तीर।
करि बंदन बैठे अवलोके बूझति भए पुत्र को धीर।
गए अखेर बाज कस देख्यो ? खग पर चोट करी किम बीर ?।
झपटति बिहंग कि नहिं उड करिकै, जाइ कि नहीं दूर ते नीर।। ३ ।।

गुर सुत सकल प्रसंग सुनायो गए बहिर पिखि ब्रिंद बिहंग।
जिस पर मीर शिकारनि छोर्यो तिस को ततछिन बल के संग।
लियो दबाइ, जान नहिं दीनसि, उकस न पायो को सब अंग।
तामो खाति रह्यो तबि त्रिपतयो, हटे हेरि करि तिसको ढंग।। ४ ।।
छोटे मीर निकटि जबि आए इक सुकाब निकसयो द्रिशटाइ।
तिस पर बाज़ छोरि करि दीनसि करी न चोट रह्यो त्रिपताइ।
उडि करि ग्राम मझार प्रवेश्यो मीर शिकार गए तबि धाइ।
सदन छुपायो किस पठान पिखि खोज रहें तहिं हाथ न आइ।। ५ ।।
जिम मन भाइ करो प्रभु जी ! अबि, बिन पैंदे घर अपर न सोइ।
अंतरजामी घट घट स्वामी, खामी[3] करी लई सभि जोइ।
होनहार को लखि मुसकाए—तुरक इमान बिहीनसु होइ।
तूशनि[4] करी छिमा उर धारी महां गंभीर धीर मन भोइ।। ६ ।।

---

1. सफेद 2. खिन्न 3. अवगुण 4. खामोशी



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मेला अधिक संगतां दरसति मन बांछति गुर ते बर पाइ।
त्रिपत न होति, बिलोकति द्रिग भरि बैठति निकटि मोद उपजाइ।
सुनहिं बाक सनमुख इक थिर ह्वै करहिं प्रेम उर रूप बसाइ।
जपहिं नाम सिक्खी वड़ि शरधा, चाहति इक परलोक सहाइ। ७ ॥
इम मेला बड पंच दिवस लौ रह्यो हजूर समेत अनंद।
मुक्ख्य सिक्ख जिनके संग संगति तिसी देश को महां मसंद।
दे दे सिरोपाउ सभिहिनि को करे बिसरजन जथा बिलंद।
सने सने गमने इम सगरे बरनति सतिगुर के गुन ब्रिंद ॥ ८ ॥
डील बिसाल सुभाउ क्रिपालू उपकारी सतिगुर बर बीर।
दाता महिद[1] निहाल करति जन रिपु तुरकनि गन हरता धीर।
जहिं कहिं दासनि बनहि सहाइक जे सिमरति उर परते भीर[2]।
धनुख तीर धरि हरि अरि तीरहिं पीरन पीर सु मीरन मीर ॥ ९ ॥
इत्यादिक गुन बरनति जाते देश बिदेशन महिं बिदताइ।
अदभुत् करम जिनहुं के दिखीयति अनगन सैना दीनि खपाइ।
समसर पुज्यो न मुलखनि मालिक अपर कौन अर सकहि अगाइ।
श्री हरिगोविंद चंद वंदना करहिं सुरासुर जिन के पाइ ॥ १० ॥
पंच दिवस अस बीत गए जबि सतिगुर बैठे सभा लगाइ।
पैंदेखान को सिमरन कीनसि — किस कारन ते इत नहिं आइ ?।
पोशिश बर तुरंग को लै करि फेर नहीं निज बदन दिखाइ।
उर हंकार कि हय ते गिर गा लगी चोट कै रहयो लजाइ ॥ ११ ॥
कारन घने बिचार करे इम, तबि सतिगुरू पठायो दास।
सुध सगरी नीके अबि लीजहि गमनहुं पैंदखान के पास।
हम दिशि ते तिस जाइ हकारहु आनहुं संग होइ निरजास।
सुनति गयो तबि पहुंचि बिलोक्यो मलिन-बसन जुति हुतो उदास ॥ १२ ॥
सुनहु खान जी! गुरू हकारति कह्यो संग अपने तूं ल्याइ।
मूढ कुभागी प्रेरयो काल सु जिम बैठ्यो तिम उठ्यो सिधाइ।
नीके बसत्र शसत्र नहिं पहिरे होनहार ने तथा कराइ।
नहिं तुरंग पर चढ़ि करि गमन्यो महां बिसूरति आइव पांइ ॥ १३ ॥
श्री सतिगुर को वंदन करिकै सनमुख बैठ्यो मति बिचलाइ।
देखि न सकहि सम्मुख मन खोटा, अंतरजामी सभि लखि पाइ।
श्री मुख बूझ्यो पोशिश चीरा पहिरि भले तन क्यों नहिं आइ ?।
खड़ग सिपर[3] जुति चढ़्यो तुरंग न किम आयो अस हुकम मिटाइ ?। १४ ॥

1. बड़ा 2. संकट पड़ने पर 3. तलवार, ढाल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मलिन बेस अरु मलिन बदन बनि किम सचित, उर बिना हुलास ।
पंच दिवस बखशिश को लेकरि क्यों न अनंदति वहिर प्रकाश ।
को कारज किम बिगरर्यो तुव प्रिय? सकल साच कहीयहि हम पास ।
मित्थया ते सुधरति हुइ नांही, साच कहे सुख सास गिरास ।। १५ ।।

प्रेरयो भावी कूर[1] कहति भा गुर प्रताप जदपि कुछ जानि ।
दास आपको गयो हकारन बैठ्यो जथा हुतो निज थान ।
तथा वहिर ते इति चलि आयो नहीं बसत्र सो पहिरन ठानि ।
पुन दरसौं तन पोशिश सो घरि कोइ न बिगर्यो काज महान ।। १६ ।।

पान बदन नहिं पान[2] पखारे इस कारन ते मन अलसाइ ।
सिमरन तूरन[3] रावर को लखि उठि गमन्यो इत सहिज सुभाइ ।
सतिगुर कहो बाज उडि पहुंच्यो तोहि ग्राम महिं लियो दुराइ ।
मीर शिकार कहै हम हैरति रहयो तहां न गयो अगुवाइ ।। १७ ।।

पैंदे कह्यो हुतो मैं शामल आए खोजति मीर शिकार ।
तबि डिंडम कहि ग्राम दिवायो लई सतर[4] लौ सभि की सार ।
निकसयो नहीं कहां बसि मेरो, गयो कहूं उड़ि नहीं निहार ।
त्रिपते बाज स्वान[5] अरुनाऊ-जाहिर अहै-करैं नहि कार ।। १८ ।।

गयो दूर उड बूझे बहु नर नहीं खोज पायहु किस थान ।
बीच ग्राम के बाज न लोप्यो तुम ढिग कीनसि कूर बखान ।
तहिं जे हुतो सदन है तुमरो को ग्रस करहि कपट को ठानि ।
गयो बिपन[6] किस क्यों अबि प्रापत बाज़ सुपैद सु वेग महान ।। १९ ।।

पुन सतिगुर कुछ निठुर गिरा जुति समुझावति हित की तिह बात ।
करि बिचार को साच उचारहु गुन अपराध छिमा ते शांत ।
लेहु सदन सुध बुधि ते सिध करि बिबध बिधिन के छल करि घात ।
जे उर लखहु भाखि दिहु सभि महिं बहुर न दोष रहै तुम गात ।। २० ।।

सुनि मूरख कुछ सहित बक्क्रता[7] कहित न हम हेर्यो कित नैन ।
कहे किसू के दोष अरोपहु तिस पर किसको किम बस है न ।
वसतु आप की करहूं दुरावन उचित न हमको हुइ दुख दैन ।
गयो अपर थल उडि करि पंखी त्रासति मीर शिकार कहै न ।। २१ ।।

कारन कूरा करनि नीक बिधि तृती बेर सतिगुरू कहंति ।
समुझि सुमति को कपट तयागि चित साची बात कहहु हितवंति ।

1. झूठ 2. हाथ 3. जल्दी 4. पर्दे पीछे भी 5. कुत्ते 6. वन
7. टेढ़े ढंग से

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पिख्यो बाज़ तौ करहु बतावनि रह्यो ग्राम महिं सकल भनंति ।
गुर घर को सेवक तूं आछो बांछहु भलो न बन छलवंति ।। २२ ।।
निमक हरामी सुनिकै रिस धरि बदन बिलोचन कीनसि लाल ।
तुहमत देति तुफान बके ते उर बिचार करि क्यों न बिसाल ।
भले नरन की पतिमहिं रखना डालति हो नहिं करहु संभाल ।
अहै जीवका सहि हौं यांते नांहि त कौन कहै इस ढाल ? ।। २३ ।।
मंदमती को हठ बड जान्यो मति बिप्प्रीत करी ढिग काल ।
भयो पाप रति समुझति नहिं चित बैठि रह्यो करि क्रोध बिसाल ।
बिधीचंद को निकटि हकार्यो कह्यो कान महिं अबि तूं चाल ।।
समा दुपहिरे को सम जामनि गमनहु आनहु बाज उताल ।। २४ ।।
सुनति पयानो बीर तीर सम श्री सतिगुर पग कमल मनाइ ।
छोटे मीर ग्राम महिं पहुंच्यो बदन अछाद्यो बसन बनाइ ।
निज निज सदन प्रवेशे सगरे सुपति परे को बैठि रहाइ ।
पैंद खान के घर महिं बर करि पिख्यो न मानुख इत उत जाइ । २५ ।।
प्रिथक चुबारा सभि के अंतरि सुपत्यो तहां खान असमान ।
बखशिश गुर की बाज सहित तिस आडे पर बिठाइ सुख मानि ।
पर्यो निचिंत नहीं सुध तन की आवति जाति बाइ मुख प्रान ।
बिधीचंद ढिग जाइ प्रवेशयो पिखि सभि वसतु आनंद ठानि ।। २६ ।।
धरे क्रिलक[1] पर बसत्र उतारे चीरा बंध्यो हुतो सो लीनि ।
खड़ग सिपर जुग धरी सिरहाने ततछिन हाथ उठावनि कीनि ।
आडे पर ते बाज़ गहयो तबि निकसयो शीघ्र बिसाल प्रबीन ।
किसू न देख्यो अदभुत करमा आयो पुरि करतार सु लीनि ।। २७ ।।
अनत थान धरि गमन्यो गुर ढिग तुम प्रताप ते सभि किछु ल्याइ ।
पोशिश बाज़ समेत सिपर असि, धरी, आनि करि आन सथाइ ।
श्रवन लागि करि मंद मंद सुर, कर्यो काज सो दयो सुनाइ ।
पैंदा बैठ्यो रहयो तहां ही अपर खयाल गुर समां बिताइ ।। २८ ।।
बहुर खान दिशि करे बिलोचन श्रीमुख ते फुरमावन कीनि ।
अजहुं समुझि कुछ बिगर्यो नाहिन दीजहि बाज़ तोहि जे लीनि ।
लैबे हेतु करहिं जे लालच तऊ देहिं तुझ चित लिहु दीन ।
हमको दिहु दिखाइ इक बारी बहुर लेहु तुम कूर कहीं न ।। २९ ।।
नाहक जनम बाद[2] क्यों खोवति साचो बनो भोगि सुख ब्रिंद[3] ।
सुनति कहति भा लखहि प्रताप न, भावी प्रबल कर्यो मतिमंद ।

1. खूंटी 2. व्यर्थ 3. बहुत

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री सतिगुर ! तुम कूर कहति हो औचक[1] तुहमत देति बिलंद ।
जे उर निशचै करति नहीं प्रभु ! रावरि पद अरबिंद सुगंद ॥ ३० ॥
करिकै चरन दिशा निज कर को तीन बेर करि सपथ[2] सुनाइ ।
भावी बसि हुइ भाखति मित्थया गुर प्रताप दीनसि बिसराइ ।
अंतरजामी समरथ श्री प्रभु तिनको सभि नर सम लखि पाइ ।
कूर सपथ करि साच बनयो चहि मैं नहिं पिखी बाज़ की छाइ ॥ ३१ ॥

### दोहरा

गुर को डर उर तुरक तहि कूर आन को जानि ।
श्री हरिगोविंद चंद तबि कीनसि क्रोध महान ॥ ३२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे '**पैंदे खान को प्रसंग**' बरननं नाम दसमो अंशु ॥ १० ॥

---

**1. अकारण 2. सोगंध**

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ११

# पैंदे खान प्रसंग

**दोहरा**

कूर आन को जानि मन श्री गुर कीनि ब्रखान ।
बिधीचंद सभि आनि करि दिहु दिखाइ ले मान ।। १ ।।

**सवैया छंद**

सुनि आइसु को ततछिन उठिकरि बाज़, पुशाक, खड़ग ले आइ ।
सभा बीच सभिहूंनि अगारी धरि करि तिह थल दीए दिखाइ ।
क्रोध करति ही सतिगुर बोले 'कहु पापी ! इहु कहिं ते ल्याइ ? ।
बार बार समुझाइ रहे तुझ, रे मतिमंद ! न मित्थया गाइ ।। २ ।।
कह्यो न मान्यो मूरख ! तैं कुछ कूर कहति भा बड हठ धारि ।
लाज बिलोचन बोल न साकहि नीची ग्रीव सचित बिचार ।
पुन गुर कह्यो कहैं क्यों नांही धिक् तोकहु नहिं साच उचारि ।
निमक हरामी सूरत बनि कै बैठि रह्यो क्या कीनि गवार ।। ३ ।।
बैन बान ते बिध्यो अधिक ही झूठा भयो सहयो नहिं जाइ ।
सभा बिखै रिस धरि कै बोल्यो 'नाहक तुहमत मोहि लगाइ ।
बाज सदन महिं राखन कीनसि कह्यो फेर किन लीनि छिपाइ ।
अबि निकासले आइ सभा महिं बिधीचंद इहु कपट बनाइ ।। ४ ।।
झूठा भयो बिदत ही मूरख तऊ न हठ तजि बोलति बैन ।
देखि कुमति को श्री हरिगोबिंद रिस ते रक्त भए जुग नैन[1] ।
तऊ छिमा निज बिरद बिचारति कह्यो मंद इह कलमल ऐन[2] ।
अजहुं न समुझति साच बनहि जड़, भए कुभाग जीवबो हैन ।। ५ ।।

**दोहरा**

श्री नानक मसनंद पर कूरी सपथ करंति ।
नहीं उचित हमरे रह्यो अजहुं कूर उचरंति ।। ६ ।।
लात मुशट कवज़ान की करीअहि मार निकार ।
उठहु सुभट गहीयहि तुरत गीदी[3] तुरक गवार ।। ७ ।।

---

1 दोनों आँखें लाल हो गईं 2. पापों का घर 3. कायर



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

**सवैया**

सुनि गुर आइसु उठे सुभट गन कहे कुबाकनि लात प्रहार।
गुरू सभा ते निकसहु बाहर किनहु चपेट बदन पर मारि।
मुशटनि मार, हतहि को कबज़े, रिस ते पगीआ दीनि उतारि।
देति धकेला चालति मेला, उठ्यो धकेलति फेर निहार॥ ८॥

ले करि जाति मार बहु करते तऊ गरब ते गिरा सुनाइ।
'श्री गुर! मोहि संग जिम कीनी इसको फल तुम लै हो पाइ।
शाहजहां सों मिलि कै सभि कहि, शीघ्र बाहनी[1] ब्रिंद चढ़ाइ।
आनि गहौं तुमको निज बल ते तौ पलटा मेरे कर आइ॥ ९॥

श्री गुर भन्यो जथा तुव मन मैं तथा करहु बल बुधि उपजाइ।
इम तुव कहिबे डरति नहीं हम निज करनी फल को अवि पाइ।
निमकहरामी बाज़ दुरायो कूरी सपथ करी इस थाइं।
चहीयति कैद तऊ तुझ छोरा, करति रहो जैसे मन भाइ॥ १०॥

निशठुर[2] सुनि पुन सुभटनि रिस मन गही ग्रीव लै चले धकेल।
मारति मुशटन लातनि को तन कर्यो अगारी बल ते पेल।
अजहुं मूढ तूं बोलति समसर, बचकै जाहु ग्राम निज गैल।
श्री करतार पुरे की हद लौ कर्यो निकारन हुइ करि गैल॥ ११॥

अधिक मार करि दुखति कर्यो बहु सतिगुर के जोधा पुन आइ।
छोटे मीर ग्राम के मारग लोचन ते जल मोचति जाइ।
दीरघ स्वास लेति है पुन पुन सूके अधर बदन कुमलाइ।
सिर के बार उरझ करि बिथरे, बसत्र फटे कुछ बड बिकुलाइ॥ १२॥

रिदै बिचारति पंथ सिधारति—गुर के संमुख करौं मैं जंग।
हुइ समीप गहि लैहौं ततछिन गर मैं बसत्र पाइ बल संग।
करौं दीन तबि प्रापति पलटा जीवन होइ तबै सरबंग।
तौ पैंदा मैं नाम कहावौं, बैठौं खाननि सभा उमंग॥ १३॥

जिन महिं हुतो सनेह अधिक ही होनहार अस द्वैश उपाइ।
सदन प्रवेशयो तूशनि[3] मुख ते अग्र दमाद मिल्यो दुख पाइ।
बिसमति कहति बाज़ किन चोर्यो? पोशिश खड़ग समेत उठाइ।
नहीं सदन मैं को नर तसकर[4] को अस पहुंचयों लिये चुराइ॥ १४॥
सुनि दमाद ते दुखी अधिक मन ताड़ि बिलोचन बोलति बात।
पति मेरी महिं रखना पाइव करी हटावन रोज़ी खाति।

1. सेना 2. कठोर 3. खामोश 4. चोर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तऊ न बाज़ निकटि रखि साकयो दिन महिं चुरिवाइव लखि घात ।
क्रोधति गुरू मार करिवाइसु दियो निकासि मोहि हति लाति ॥ १५ ॥
कहि दमाद नहिं चिंता धरीयहि तुझ बल जानति जग बख्यात ।
शाहु जहां के संग मिलावौं अधिक जीवका दै है दाति !
लशकर संग हज़ारहुं लै कै पुन आवहिं हम चढ़ि करि घात ।
किधौं पकरि ले करि गुर चलि हैं शाहजहां ढिग तौ शुभ बात ॥ १६ ॥

बाज़ चुरायो पिख्यो न द्रिग मैं पहुंच्यो कुशल सहित तहिं जाइ ।
कैसो होति अनिक भट संगै मारि खड़ग देतो उथलाइ ।
सुपति म्रितक के समसर कहीयति कहां करौं कुछ कह्यो न जाइ ।
अबि पलटा लैंगे कहु समरथ दिन थोरन मैं करौं उपाइ ॥ १७ ॥

धरहु खान जी ! धीरज उर मैं त्यागो चिंता शोक न धारि ।
डील बडो अरु प्राक्रम दीरघ, कौन सकहि रण विखै सहार ।
अपनो बल न बिसारहु चित ते उदम धरहु लेहु रिपु मारि ।
करहु शनान बसन शुभ पहिरो जहिं कहिं निज हानी न उचारि ॥ १८ ॥

कहि पैंदा मुझ शांति न परि है करकति रिदै परी तन मार ।
अधिक अनादर ते दुख पावति मर्यो न मैं सभि लई सहार ।
जबि लौ पलटा लेउं न अपनो धिक् जीवन मेरो संसार ।
दिवस आज को बिसरै नांही मरण प्रयंत कर्यो निरधार ॥ १९ ॥

इत्यादिक करि बात परसपर कर्यो शनान पैंद खां वारि ।
नीठ नीठ ते खाना खायहु, खां असमान भन्यो वहु बार ।
चितवति चिंता चित महिं सुख बिन केतिक दिवस दिए इम टारि ।
सभि खानन महिं बिदति भई गति निमकहरामी कितिक उचार ॥ २० ॥

बसी नाम बहु ग्रामन को कहिं सकल पठाननि लीनि बसाइ ।
सभि महिं फिर्यो सलाह करति इम 'हिंदु गुर' सभि को दुखदाइ ।
सने सने छीनहि घर तुमरे, नहिं जानहु, कुछ करहु उपाइ ।
मिलहु सकल बल धरहु बिसाला, महां शत्रु को लें जिम धाइ ॥ २१ ॥

गुर मारे हज़रत उर हरखै मनसब सभि के करहि सवाइ ।
संच्यो दरब धर्यो जिस थल मैं सो जानों मैं बनहु सहाइ ।
लाखहुं लूट करहु सुख भोगन किम हिंदू ढिग रहिबो पाइ ।
सैना साथ लरहु तुम सगरे मैं गुर को रण लैंहों घाइ ॥ २२ ॥
थोरे जतन दरब बड पावहु पुन हज़रत बख़शहि समुदाइ ।
सभि बिधि भली बारता जानों क्यों न लेहु धन अरु जसु पाइ ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सभि बसीअनि महिं कहि कहि इस विधि अपने संगी करे बनाइ।
लोभ लगे धन के सभि मानी करि उदम तुम बनहिं सहाइ ।। २३ ।।

जे अफगान खान परधाने मिले पंच सै करी सलाह।
कितिक कह्यो इह निमक हरामी पार्यो जिनहुं होति समुहाइ।
फुल्यो मूर्ख लखै—गहौं गुर करति जतन चितवति चित मांहि।
पुन असमानखान सों बोल्यो 'सुनहु पुत्र ! अबि बिलमहु नांहि ।। २४ ।।

कुतबखान इक चचापुत्र मम सूबा नगर जलंधर मानि।
दिन थोरनि ते मनसब दीरघ पायो भले बसहि तिस थान।
पूरब मसलत करिकै तिह सों बहुर जंग संग गुर के ठानि।
भए पठान सहाइक इह सभि कारज होवहि सिद्ध महान ।। २५ ।।

इम उचारि करि संग चढायो अपर पंजसै चढ़े पठान।
मिलि सभि गए जलंधर पुरि को उतरे बागनि मैं रुचि ठानि।
कुतबखा नसों मिले जाइ करि बैठे चहुंदिशि खुशी महान।
कहि शुभ बात न करि मुसकावति पैंदखान तबि कीनि बखान ।। २६ ।।

सुनहु भ्रात ! हम सगरे मिलि करि तुझ ढिग अए लेनि को संग।
लखि लाइक को, मनसब दीरघ, सभि ते तोकहु जानि उतंग।
कुतबखान बोल्यो तुम कित को भए एकठे चढ़े तुरंग ?।
मुझ मिलाइ करि गमनहु किस थल को तुम कारज भयो कुढंग ?।। २७ ।।

गुर ढिग रहति महिद नित हरखति अबि कैसे कहु भई बिचार।
पैंदखान सुनि बात भ्रात ते कीनो सरब प्रसंग उचारि।
बिगर पर्यो गुर संग बिरस[1] भा सभा बीच पति दई उतारि।
अपर करी जबरी क्या उचरौं पर्यो वैर अबि रिस उर धारि ।। २८ ।।

जतन रच्यो जिम सुनहु भ्रात ! सो शाहजहां सो मिलिहौं जाइ।
हरिगोविंद को भेद बिलंदै सभि विधि ते दैहों समुझाइ।
भई शाहु की हार तीन रण सो पलटा अबि लैहैं पाइ।
पकरि गुरू को मैं ढिग ल्यावौं इस प्रकार ते धीर धराइ ।। २९ ।।

ज्यों क्यों करि बड लशकर लै करि गुर के संग जंग को पाइ।
करौं घात[2] कै पकरौं बल सों तबि मेरो तन मन सितलाइ[3]।
तुम भी बनहु सहाइक गमनहु लाइक भ्रात जानि करि आइ।
समां पाइ अस कारज परिहै बार बार हुइ नहिं इस भाइ ।। ३० ।।

1. अनबन 2. दाँव 3. शांत होगा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दोहरा

भीर परे रक्खयक बनैं भ्राता शुभ कै मीत।
तिम दाता दुरभिच्छ[1] महिं तीनहुं लें जसु नीत ।। ३१ ।।

भ्रातनि पर उपकार जो जिम धन संच्यो होति।
परै भीर दारिद जवै सभि संकट को खोति ।। ३२ ।।

राजनीति जानति भले मिलिनि लरनि के घात।
दानशवंद बिलंद तूं करीअहि मसलत[2] बात ।। ३३ ।।

कुतबखान सुनि बिसम मन तूशनि हुइ कुछ काल।
बुरा होनि तिस को लख्यो कृतघन जानि बिसाल ।। ३४ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे 'पैंदे खां प्रसंग' बरननं नाम इकादशमो अंशु ।। ११ ।।

---

1. अकाल 2. परामर्श

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंश १२

## पैंदे खान प्रसंग

**दोहरा**

पैंदे चचा को सुत हुतो कुतब खान बुधिवान।
तरकति बोल्यो भ्रात सों बिप्प्रै जानि महान ।। १ ।।

**निशानी छंद**

बाज बसन बखशश करे गुर निज पुन लीने।
बड पुरखनि के बहु मते कैसिहुं रिस कीने।
उत्तम बसतू तोहि दे बहु होति प्रसना।
प्रतिपार्यो करि प्रेम को सभि दारिद हंना ।। २ ।।

दई वसतु अपनी लई, तैं क्यों रिस धारी ?।
लरनि हेतु कहु कौन है जिस ते दुख भारी।
जिनहुं हाथ ते तन वध्यो सुख लहे घनेरे।
भयो पुकारू[1] तिनहु पर करि निंद बडेरे ।। ३ ।।

निमकहरामी नाम इम मरि दोज़क जावैं।
बैठहिं उमरावन बिखै अपजस को पावैं।
बनहिं कृतघनी लवन अचि उचित न इहु तेरे।
किधौं दिवस पहुंचे बुरे जम को घर हेरें ।। ४ ।।

गुर ऐसो घट क्या लख्यो जो रण ते हारै।
बडो बहादुर जंग मैं अरि ब्रिंदनि मारै।
किम जानति अनजान भा भावी मन प्रेरा।
जियनि चहति शरनी परहु मानहुं हित तेरा ।। ५ ।।

सुनति भ्रात की बात को पैंदे दुख पावा।
कर्यो भलो, मान्यो बुरो भावी बिचलावा।
कह्यो कि तेरे उदर महिं गुर केर कराहू[2]।
सो बोलति मिटि दीन ते जानी मन मांहू ।। ६ ।।

---

1. फरियाद 2. हलुवा



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मार्यो कै बंध्यो चहौं जिसको करि दावा।
निम्रि बनौं अबि अग्र तिस इहु सीख सिखावा।
महिमा बरनन करति है गुर की बहु बारी।
नहिं मानौं मैं मिलौं नहिं कुल कान हमारी।। ७।।

मुसकान्यो सुनि कुतबखां इह ठीक बखानी।
पारयो दे दे ग्रास मुख जग विदत सु जानी।
लाखहुं धन को पाइ करि लाइक को होवा।
अबि तिनकी महिमा सुने जनु सूल परोवा।। ८।।

मेरे उदर कराहु है कै अंतर तेरे।
हिंदु तुरक इहु सभि लखहिं बहु बरखनि हेरे।
हित के बाक् न मानतो कहि तरक सुनावै।
गारयो लशकर शाहु को तिस को तूं धावैं।। ९।।

ऐसी ही बुधि ठानि कैं निज काज बिगारा।
लघुता बडिता नहिं लखहि उर वधि हंकारा।
दीन वनति आगै सभिनि पुन जाइं पुकारू।
इही बात आछी लखी खावंद को मारू।। १०।।

घनि बक्रता गिरा सुनि पैंदे दुख पायो।
नीच ग्रीव लज्जित भयो कुछ बोल न आयो।
रिदै बिचार्यो कुतब खां —सभि मिले पठाना।
सभिहूं मिलि मसलत करी हज़रत ढिग जाना।। ११।।

बुरा न भला बिगारिओ मुझ ढिग चलि आए।
भयो समां इन गारकी अस जानी जाए।
क्यों सभि की कहिवति सहौं हित की कहि बानी।
जिम मति है सगरेनि को तिम करौं बखानी।। १२।।

एव बिचारति चित हुतो तबि पैंद उचारी।
लखि लाइक को भ्रात हम ढिग आइ तुमारी।
चलि पहुंचे धरि मान को, तैं करि अपमाना।
भ्रातनि की तजि कान को गुर सुजसु बखाना।। १३।।

कुतबखान कहि साच तूं पर लेहु बिचारी।
दीन इमान पछानि कै मैं बात उचारी।
जिनहुं दिया खावति रह्यो तिन मारन चाहा।
कहु इमान तबि कित रह्यो उर दीनि भुलाहा।। १४।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहि पैंदा सुनि भ्रात जी ! त्यागों न ईमाना ।
सदा दीन की बात पर हम हैं सावधाना ।
छीन वसतु गुर सरब हीं कीनसि त्रिसकारा ।
हिंदू गार उचारते मुझि वहिर निकारा ।। १५ ।।
लाखहुं भ्रातनि भ्रात मैं किम जाइ सहारे ।
जावद करि कै जंग को गुर लेहुं न मारे ।
पुन दुशमन है शाहु को शुभ घात बिचारी ।
खान पंच सै मिलि गए अबि निकट तुमारी ।। १६ ।।
दिहु उतसाहु सहाइ को मिलि हज़रत संगा ।
जिस ते लशकर ले बड़ो ठानौं बहु जंगा ।
इम पैंदा जबि दीन भा पिखि कुतुब उचारा ।
नहिं चिंता चित महिं धरहु बन काज तुमारा ।। १७ ।।
बनौं सहाइक सगल विधि बल जेतिक मोही ।
हज़रत संग मिलाइ करि कहि महिमा तोही ।
तुम सभि गमनहु अग्र अबि मैं आइ पिछेरे ।
शाहु मानि इस बात को दे सैन बडेरे ।। १८ ।।
कर्यो बहुत नुकसान गुर मारे उमराऊ ।
बाज रु बाजी[1] रखे लरि बिन त्रास सुभाऊ ।
याते जानी परति है दे लशकर संगा ।
बनहि बडाई तोहि कहु करि सनमुख जंगा ।। १९ ।।
सुनि पैंदे आनंद लहि तिह करी बडाई ।
धंन धंन तूं कुतुब खां इम ही बनि आई ।
भ्रातनि महिं सिरमौर हैं सभि की तुहि लाजा ।
लाइक हैं सभि बात के अस करिबे काजा ।। २० ।।
दीनी कसम कुरान की आवहु सहिसाई ।
सरहि न कारज तुझ बिना करि बुद्धि उपाई ।
बांधि अहद इस रीति सों पैंदे करि त्यारी ।
संग खान लै पंच सै हित करति उचारी ।। २१ ।।
मसलत ठानि दमाद सों हुइं काज हमारे ।
नीठ नीठ करि कुतुबखां भा पख[2] हमारे ।
लबपुरि के मारग परे निस ठानहिं डेरा ।
जथाक्रम सभि उलंघ करि पिखि नगर बडेरा ।। २२ ।।

1. घोड़ा 2. तरफ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उतरे सुंदर थल पिख्यो बिसरामति होए।
अनिक जतन को रचति भे रल मिलि सभि कोए।
किम पहुंचहिं हम शाहु ढिग चिंता बड धारी।
अरजी किस उमराव ने तिह नहीं उचारी ।। २३ ।।
खां वज़ीर के सुध भई गुर पर सु पुकारू।
निमकहरामी बनि गयो कीनसि प्रतिपारू।
बर्जंयो सभि उमराव को अरज़ी न उचारो।
यांते सभि हटि करि रहे उर महिं डर धारो ।। २४ ।।
सभि के ढिग पैंदा गयो रिशवत दे हारा।
तिमही खां असमान बहु कीने उपचारा[1]।
एक मास लगि बहु फिरे करि जतन अनेका।
हज़रत सुनहि पुकार को बस चल्यो न एका ।। २५ ।।
सहित दमाद बिलंद दुख चिंता नित बाढी।
रिदै बिसूरति सूल लगि गाढी नहिं काढी।
करकति ऊठति बैठिते बड पीर उपावै।
कहां करहि बस नहिं चलहि बिरथा सभि जावै ।। २६ ।।
क्या मुख लै घर कौ चलैं रोज़ी नित खोई।
कहां कहैंगे बैठि करि जबि मिलि सभि कोई।
जीवन ते मरिबो भलो, धिक् खाना खाने।
घर के रहे न घाट के—, इम लोक बखाने ।। २७ ।।
निशचा रहिबे चलन को ठहिरति नहिं कोई।
रूचि करि खाना खाइ नहिं द्रिग नींद न होई।
करति खुशामद थकि रहे नहिं सर्यो सु काजा।
दरब[2] सरब को खरच करि भा छीन समाजा ।। २८ ।।
एक मास बीतयो जबै इम भए बिहाला।
कुतबखान आगवन किय लवपुरि तिस काला।
कर्यो सुनावन किसू नर जालंधर सूबा।
उतर्यो आनि स-सैन के क्या हुइ मनसूबा[3] ।। २९ ।।
सुनति अनंदति पैंदखां जनु तरु कुमलायो।
सींच्यो जल किन आनिकै इसि बिधि टहिकायो।
चतर घड़ी जबि दिन रहयो गमने तिस डेरे।
जाइ तमाम सलाम किय मिलि प्रेम बडेरे ।। ३० ।।

1. यत्न 2. धन 3. विधि, ढंग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बैठे निकटि प्रसंग निज कहि सकल सुनायो।
हारे जतन अनेक करि कुछ भेव न पायो।
अबि लौ नहीं पुकार किन ढिग शाहु उचारी।
मेलकरनि सनमान सों बिसवास न धारी।। ३१।।
मिलि मिलि करनि खुशामदनि रिशवत को दैबो।
सभि उमरावनि के सदन उठि करि नित जैबो।
किनहूं कह्यो न शाह सों हम सभि करि लीने।
ढिग वज़ीरखां रहन ते डरपहिं ध्रित हीने।। ३२।।
रहे प्रतीखति तोहि कहु नातुर घर जाते।
धन को दीरघ खरच है मुझते सभि खाते।
मम कारज सगरे बिखै तुम बनहु जहाजू।
सभि भ्रातनि की राखिहैं पति दीरघ लाजू।। ३३।।
कहै कुतव सुनि पैंद खां इह निशचै जानी।
खां वज़ीर ते समि डरैं होहिं न समुहानी।
मुझ ते भी तिस त्रास ते इहु कही न जाई।
यांते कारज कठन है कैसे बनि आई।। ३४।।
अति सचिंत पैंदा भयो तूटी सभि आसा।
जनु मलाह विच धारके तहिं तरी निरासा।
दानशवंद[1] बिलंद तूं कुछ जतन बतावो।
जिस बिधि कारजु इहु सरहि सो जुकति बनावो।। ३५।।
तुम वाकफ दरबार के रहि शाहु नजीके।
पहुंचहि जाइ पुकार तहिं, हुइ कारज नीके।
अपर नहीं हमरो हितू सम तोहि सुजाना।
लख्यो अलंव[2] बिसाल उर आवन तबि ठाना।। ३६।।
कहति कुतव खां जतन सुनि लिहु वेणु[3] उतंगा।
मुरगी बंधि बुलाईए ऊची तिह संगा।
सुनहि शाहु हुइ प्राति जबि ले निकटि बुलाई।
सकल प्रसंग सुनाईए मैं बनों सहाई।। ३७।।
इस उपाइ बिन अपर नहि कीजहि ततकाला।
सुनति अनंदति पैंद खां लखि जतन सुखाला।
निशचै मसलत करि उठ्यो गा अपने डेरे।
सभि साथीन सुनाइकै हरखे तिस बेरे।। ३८।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे **'पैंदे खां प्रसंग'** बरननं नाम्र दुआदसमो अंशु।। १२।।

---

1. प्रवीन 2. आश्रय 3. बांस

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १३

## पैंदे ख़ान प्रसंग

**दोहरा**

पहुंचति डेरे जतन किय मुरगी मोल मंगाइ।
दीरघ बेणू संग तिह ऊपर भले बंधाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

तिस के तरे मसाल बंधाई। संग सनेह बिसाल भिगाई।
बीती अर्ध राति जबि जानी। अगनि लगाइ जगावनि ठानी ॥ २ ॥
संग पठान पंच सै करे। गमने शाहु महल के तरे।
करैं फिराद फिराद पुकारी। करति रौर को चले अगारी ॥ ३ ॥
ऐरावती[1] दिशा बड मंदिर। शाहजहां सुपत्यो तिस अंदर।
दिन महिं भेद पूछि सभि लीना। तिसी सथान पयानो कीना ॥ ४ ॥
ऐरावती तीर हुइ खरे। सो मसाल मुरगी ढिग करे।
त्रास पाइ तबि चीकति ऊची। शाहु निकटि सो जाइ पहूंची ॥ ५ ॥
ज्यों ज्यों छेरति हुइ करि नेरे। त्यों त्यों चीकति ऊच बडेरे।
सभिनि फिराद फिराद पुकारी। इम रौरा कीनसि जबि भारी ॥ ६ ॥
अरु मसाल को भयो प्रकाशा। जागी बेगम जनु लहि त्रासा।
शाहुजहां के सुपती संग। सो भी जाग्यो हालति अंग ॥ ७ ॥
कहि बेगम को है इस काल ?। किसने कीनसि कौन बिहाल।
दिन महिं सुनहु न नरन पुकारा। इस हित ते रौरा निस डारा ॥ ८ ॥
कहति शाहु प्राती हुइ जाइ। सुनौं पुकार समीप बुलाइ।
इम सुनि पहिरू दौरि उचारा। को गवार तुम रौर उचारा ? ॥ ९ ॥
जाग्यो हज़रत कीनि उचार। सुनहिं पुकार प्रभाति हकारि।
अबि नहिं बोलहु शाहु रिसै है। पठहि सिपाही मार करै हैं ॥ १० ॥
पैंदा हुइ अनंद तबि चाला। हज़रत सुनि पुकार बिसाला।
होति भोर हुइ न्यांव हमारा। इम भाखति निज सिवर[2] पधारा ॥ ११ ॥

---

1. रावी 2. डेरा



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भई प्रभाति कुतबखां पास। निज प्रसंग सभि कीनि प्रकाश।
तो मति ते कारज बनि जाइ। जबहि हकारहि बनहु सहाइ ॥ १२ ॥
कहै कुतब उर धारहु धीर। मैं हज़रत के पहुंचहुं तीर।
जेतिक मो ते तहिं बनि आवै। करौं सहाइ काज हुइ जावैं ॥ १३ ॥
हज़रत निकटि चलयो कहि सोइ। नगर जलंधर सूबा जोइ।
रुचिर कचहिरी को इसथान। चामीकर[1] ते लिप्यो महान ॥ १४ ।
नाना विधि के तरूवर लिखे। अनिक विहंग चित्र जिन विखे।
जहिं खुशवोइ महां महिकाई। मनहुं नरन को लेति वुलाई ॥ १५ ॥
आइ तुरकपति वैठ्यो वीच। खस टाटी पर जल बहु सींच।
नानाबिधि के पुष्प बखेरे। लरकाई माला चहुं फेरे ॥ १६ ॥
बैठि तखत पर लेति सलाम। चलि आए उमराव तमाम।
बहुत वज़ीरखान चलि आयो। कुतुब सलाम करी मुद पायो ॥ १७ ॥
कितिक देर महिं बोलयो शाहु। कौन हुतो अस निस के मांहू ?
जार मसालैं करी पुकारू। किसको छीन्यो ? कै किन मारू ॥ १८ ॥
दई नींद उचटाइ हमारी। नहिं पुन आए रही खुमारी।
महां दुखिति नर ब्रिंद पुकारे। सुनति पाहरू सो हटकारे ॥ १९ ॥
अस पायो अवकाश सखारे। हाथि जोरि करि कुतव उचारे।
'पैंदखान जो वली बिलंद। चाकर ढिग श्री हरिगोविंद ॥ २० ॥
गुर कुछ जबरी तिह सों करी। दियो निकासि वसतु सभि हरी।
बहुत दिवस को फिरहि पुकारू। रावरि पास न पहुंची सारू ॥ २१ ॥
सुनी शाहु गुर की गथ[2] जबै। खां वज़ीर दिश देख्यो तबै।
तिन कर जोरि प्रसंग सुनायो। हजरत पिखहु समां कस आयो ॥ २२ ॥
सुनति हुते त्रयौदसमी सदी। होवहिं नर खोटे करि बदी।
सो अबि लौ नहिं आवति भई। अगे ही लच्छन विदतई ॥ २३ ॥
इस पठान की सुनिअहि बात। जिम मैं सुनी कहौं वक्खयात।
मादर पदर हीन[3] इह रह्यो। रुलति फिरति कित थाउं न लह्यो ॥ २४ ॥
दयालु सुभाव गुरू जबि हेरा। राख्यो निकटि जथा हुइ चेरा।
डील बिलंद बली इह जाना। पार्यो इसको पुत्र समाना ॥ २५ ॥
निज कर देते रहे गिरास। करति प्रेम को राख्यो पास।
जबि इन अपनो आप संभारा। आयहु तिन पर करनि पुकारा ॥ २६ ॥
लवन खाइ करि देहि बधाई। निमकहरामी दाद उठाई।
यांते समां जानियति खोटा। अदब न राखहि बड को छोटा ॥ २७ ॥

1. सोना 2. कथा 3. अनाथ, यतीम

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुत्र पिता को करहि प्रहारा। पति को हति चाहति चित दारा।
करहि भले पर बुरा बिसाल। सुने न पिखे जाइं अस हाल।। २८।।
इम सुनि शाहु तूशनी[1] भयो। कुछक समां जबिहूं बिति गयो।
पुन अस काज आन करि पर्यो। खां वज़ीर को पठवन कर्यो। २९।।
जाइ सुधारहु बिगरै नांही। तुझ बिन बनै न वुधि बहु चाही।
गयो वहिर उठी खानवज़ीर। हरखे तवि उमराव जि तीर।। ३०।।
इत पैंदा ले संग दमाद। पहुंच्यो पौर पुचावन दाद।
संग पठान पंच सै भए। सभि इक थान बैठिते भए।। ३१।।
निस महिं हुतो पाहरू जोइ। आयो पौर[2] बिलोके सोइ।
जानि पुकारू वूझन कीने। रौर कर्यो तुमहूं निस चीने ?।। ३२।।
सुनति पैंदखां उठि सहिसाइ। हाथ जोर करि थिर अगुवाइ।
किम हज़रत ने राति उचारा। करहि कि नांही न्यांव हमारा।। ३३।।
जे अबि सिमरन देहु कराइ। दरव पंच सै हम ते पाइं।
कहति पाहरू न्याव तुमारा। करिबे कारन शाहु उचारा।। ३४।।
किस की वात होइ जे सिमरन। तुमहु हकारन करि है ततछिन।
लालच लगे पाहरू गयो। मेल सलावत ख़ां सों कियो।। ३५।।
निस महिं हज़रत सुनी पुकार। कह्यो-न्याव हम करहिं सकार[2]।
सो अबि आइ पौर पर वैसे। अरज़ सुनाइ दीजीअहि ऐसे।। ३६।।
कही सलावत तवि कर जोरि। निस के अए पुकारू पौर।
हुकम जथा हुइ तैसे करैं। सुनति शाहु इम चितवन धरैं।। ३७।।
गुर के संग भए रण जैसे। निकटि वुलाइ लखहिं सुनि तैसे।
थोरे सुभटनि बहुत खपाए। अदभुत भई लखी नहिं जाए।। ३८।।
इत्यादिक सभि सुनि हैं बाती। जानहिं सकल भेद बक्खयाती।
दयो हुकम ग्रानहुं हम पास। सुनति पाहरू हरख प्रकाश।। ३९।।
पैंदखान को जाइ हकारा। चलो होइ है न्याव तुमारा।
सुनि पैंदा अनंद के साथ। निज दमाद को गहि करि हाथ।। ४०।।
इक दुइ अपने संग मिलाई। अंतर दुर्ग[4] प्रवेश्यो जाइ।
आगे खरो सलावत हेरा। गमहु अग्र धन दिहु कुछ मेरा।। ४१।।
नांहि त दैहौं बात रुलाइ। दरव पंच सै लिय ठहिराइ।
शाहु समीप तबहि ले गयो। जाइ कचहिरी दाखल भयो। ४२।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे **'पैंदे खान प्रसंग'** बरननं नाम त्रौदसमो अंशु।। १३।।

---

1. खामोश 2. द्वार 3. वुला कर 4. किला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु १४

# उमरावन चढ़ाई प्रसंग

**दोहरा**

देखि दूर ते शाहु को निव निव करति सलाम ।
अग्र जाइ ठांढो भयो जिहठां सभा तमाम ।। १ ।।

**चौपई**

सुंदर डील बिलंद निहारा । बाहु बिसाल बड़े बलवारा ।
हज़रत मुदति भनी तबि बानी । तैं किम कीनि पुकार महानी ? ।। २ ।।
क्या तुम छीन्यो कै किन मारा? । है अस कौन दियो दुख भारा ? ।
सुनि पैंदे कर जोरि बखाना । हरि गुबिंद मम शत्रु महाना ।। ३ ।।
करति चाकरी रिपु बहु हने । ठांनति जंग कीनि बल घने ।
मम बाहन के होइ अलंब । तुमरे लशकर हने कदंब ।। ४ ।।
बडी बडी मैं जोखौं खाइ । लई फते बहु जसु उपजाइ ।
तिस को इह इनामु मुझ दीनो । आयुध बसत्र छीन करि लीनो ।। ५ ।।
जाट गवारनि ते मरिवायो । तुमरो त्रास तनक नहिं पायो ।
जबि रावर की दई दुहाई । सुनि बहुती तबि मार कराई ।। ६ ।।
जितिक चमूं गुर के संग रहै । मम सम अपर न बल मैं अहै ।
सुनति कुतबखां कहति बनाइ । इसको नाम रह्यो बिदताइ ।। ७ ।।
रण महिं प्राक्रम करे बडेरे । खड़ग खतंगनि[1] हते घनेरे ।
अबि हजूर ! इस डील निहारहु । अपर मनिंद न कोइ बिचारहु ।। ८ ।।
आयुध बिद्दया जानति सारी । निज बचाइ दे रिपुनि प्रहारी ।
नर उठाइ पटकै छित मांही । इह किम अरन देहि बल बांही ।। ९ ।।
रण बातनि ते हज़रत डर्यो । बहुत बूझिबो हसकै कर्यो ।
कहां कहां कहु जंग परे हैं ? । किम गुर दिशा प्रहार करे हैं ? ।। १० ।।
तबि पैंदे कहि सकल सुनाए । मुखलस खां सैना युति धाए ।
गुर पुरि महिं संग्राम उदारे । तहिं मैं जीत लीनि गन मारे ।। ११ ।।

---

1. तीर



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुनहि रुहेला ग्राम मझारा। ले दल अबदुलखान सिधारा।
तहां जुध ऐंसो कुछ भयो। हटि जीवति को ग्रिह नहिं गयो॥ १२॥
तहिं पुरशारथ कीन घनेरा। फते लई जसु पसरयो मेरा।
पुन रावर के तुरंग चुराए। ललाबेग जुति कंबर धाए॥ १३॥
तहि मैं करी लथेर पथेरा। काट्यो रावरि कटक बडेरा।
फते लई इम तीनहु बारी। हरिगुविंद अबि चिंत बिसारी॥ १४॥
करि मेरो त्रिसकार[1] निकारा। दरब चाकरी जानि उदारा।
चाकर हुतो अदब मैं राखा। नहिं सनमुख कुछ उत्तर भाखा॥ १५॥
नतु गुर हुतो अग्र मम ऐसे। तोरति ग्रीव काकरी जैसे।
देति बगाइ न लावति बारी। गिरति सीस जिम फल टुटि डारी॥ १६॥

क्या बल गुर को मोरि अगारी। जिस को लोक कहैं भुज भारी।
अबि आवन को हेतु बतावौं। तुम सहाइ ते बदला पावौं॥ १७॥
इक तुरंग रावर को मरयो। दूसर अहै तिनहुं ढिग खरयो।
हय समेत गुर कौ गहि ल्यावौं। पीछै रहनि जीवका पावौं॥ १८॥
अबि मुझ कौ दिहु लशकर संग। करौं जाइ मैं दीरघ जंग।
गुर के गर दुपटा गहि पावौं। ऐंचि आप के निकटि लिआवौं॥ १९॥
पैंदखान तबि नाम कहाऊं। नतुर आइ मैं मुख न दिखाऊं'।
सुनि बहादुरी के बच शाहु। महां अनंदति ह्वै मन मांहु॥ २०॥
अपनी सिफत जथा ते बरनी। अबहि लायकी सच इह करनी।
डील बिलंद बली बड बाहू। तिम दिखीयति मन को उतसाहू॥ २१॥
मन भावति लशकर समुदाइ। हम दै हैं तुव संग चढ़ाइ।
चमूं[2] चमूं सों मिलि कै लरै। तुम पहुंचहु जहिं गुर थिर अरै॥ २२॥
अपर सुभट गुर के बलवंते। तुझ ढिग पहुंचि न देहिं कदंते।
तेरो अरु गुर को रण दुंद। जुटहु जोर करि बाहु बिलंद॥ २३॥

जे बल करि गुर को गहि ल्यावैं। मनसब[3] मन सभि बांछति पावैं।
हय दिलबाग संग लै आउ। बिनां बिलंब लेहु सिरुपाउ॥ २४॥
पैंदे कह्यो हजूर अगारी। करि हकार न कूर उचारी।
बाल अवसथा ते मैं संग। लखों डील बल जेतिक अंग॥ २५॥
हेतु जीवका रहे बधावति। मैं दबि जाति जि ओज[4] लगावति।
रावर हाथ धरहु सिर मेरे। अबि ल्यावौं गहि गुरू अगेरे॥ २६॥
इम सुनि शाहु दईकर शारत। तूशनि रहु समुझाइ बिचारत।
थिर उमराव लेते समुदाई। सभा बिखै सभिहूंनि सुनाई॥ २७॥

1. अपमान 2. सेना 3. पदवी 4. बल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगन तेग अरु पानन बीरा[1]। धरहु आनि करि बिच बड बीरा।
जो उतसाह जंग को धरै। हरिगुबिंद पर चढ़िबो करै ॥ २८ ॥
पैंदखान के संग सिधारै। करि बहादुरी अरि को मारै।
तीन बार करि रार[2] उदारा। जो उमराव चढ्यो सो कारा ॥ २९ ॥
इम पठान के बल करि जीता। अबि के गहि लीजै दे भीता।
इस प्रकार सभि सभा मझारा। तीन बार जबि शाहु उचारा ॥ ३० ॥
मुगलस खान भ्रात इक अहै। कालेखान नाम जग कहैं।
सूबा पुरि पिशौर को भारा। सैना संग पचास हज़ारा ॥ ३१ ॥
तिन सुनि कै उर बिखै बिचारा। भ्रात मरे को बैर संभारा।
तिस को पलटा मैं नहिं लीनो। खान ब्रिंद सभि भाखहिं हीनो ॥ ३२ ॥
अबि अवकाश भलों मुझ पावैं। गहौं गुरू को शाहु पठावै।
इक तौ हज़रत कारज अहै। दुतीए जसु मेरो जग रहै ॥ ३३ ॥
त्रितीए पलटा मुगलसखान। इम मेरो हुइ काज महान।
उठि कर जोरति बोल्यो सोइ। हज़रत हुकम मोहि कउ होइ ॥ ३४ ॥
सैना सकल जंग करि घैहैं। हरिगुबिंद जीवति गहि लैहैं।
निकटि आप के जब हम ल्यावैं। भ्रात मरे की करक मिटावैं ॥ ३५ ॥
भयों रिदा रिस ज्वाल प्रकाशी। सो सुभि गुर पर करव निकासी।
तिस दिन सुपतौं नींद सुखारी। हरिगोबिंद गहि लेहुंकि मारी ॥ ३६ ॥
सुनति शाहु तबि हरख वधावै। काले खां! इम ही बनिआवै।
पैंदखान के संग सिधावहु। सजहु सैन दुंदभि बजवावहु ॥ ३७ ॥
इम सुनि कालेखां हरखायो। करि सलाम को सीस झुकायो।
नगन तेग बिच सभा उठाई। पानन बीरा लीनि चबाई ॥ ३८ ॥
पिखि उतसाह शाहु तिस काला। सिरेपाउ मंगवाइ बिसाला।
ज़री वसत्र सुंदर मुद धारे। कलगी जिगा जिनहुं पर धारे ॥ ३९ ॥
कंकन कंचन हीरन चरे। द्वै मंगवाइ सु बखशन करे।
कंठा बड कीमत मुकतन को। उज्जल गोल दियो पहिरन को ॥ ४० ॥
सवा लाख को खिलत कहावै। ले कालेखां उर हरखावै।
हज़रत हुइ प्रसंन जबि दीना। सभि उमरावनि हेरन कीना ॥ ४१ ॥
हुतो मीत इक अबदुलखान। खोजा अनवर नाम बखानि।
तिन भी देखति चौंप बढाई। चही गुरू पर करन चढाई ॥ ४२ ॥

1. पान बीड़ा 2. झगड़ा, लड़ाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुनहि रुहेला ग्राम मझारा। ले दल अबदुलखान सिधारा।
तहां जुध ऐसो कुछ भयो। हटि जीवति को ग्रिह नहिं गयो ॥ १२ ॥
तहि पुरशारथ कीन घनेरा। फते लई जसु पसरयो मेरा।
पुन रावर के तुरंग चुराए। ललाबेग जुति कंबर धाए ॥ १३ ॥
तहि मैं करी लथेर पथेरा। काट्यो रावरि कटक बडेरा।
फते लई इम तीनहु बारी। हरिगुविंद अबि चिंत बिसारी ॥ १४ ॥
करि मेरो त्रिसकार[1] निकारा। दरब चाकरी जानि उदारा।
चाकर हुतो अदब मैं राखा। नहिं सनमुख कुछ उत्तर भाखा ॥ १५ ॥
नतु गुर हुतो अग्र मम ऐसे। तोरति ग्रीव काकरी जैसे।
देति बगाइ न लावति बारी। गिरति सीस जिम फल टुटि डारी ॥ १६ ॥
क्या बल गुर को मोरि अगारी। जिस को लोक कहैं भुज भारी।
अबि आवन को हेतु बतावौं। तुम सहाइ ते बदला पावौं ॥ १७ ॥
इक तुरंग रावर को मरयो। दूसर अहै तिनहुं ढिग खरयो।
हय समेत गुर कौ गहि ल्यावौं। पीछै रहनि जीवका पावौं ॥ १८ ॥
अबि मुझ कौ दिहु लशकर संग। करौं जाइ मैं दीरघ जंग।
गुर के गर दुपटा गहि पावौं। ऐंचि आप के निकटि लिआवौं ॥ १९ ॥
पैंदखान तबि नाम कहाऊं। नतुर आइ मैं मुख न दिखाऊं'।
सुनि बहादुरी के बच शाहु। महां अनंदति ह्वै मन मांहु ॥ २० ॥
अपनी सिफत जथा ते बरनी। अबहि लायकी सच इह करनी।
डील बिलंद बली बड बाहू। तिम दिखीयति मन को उतसाहू ॥ २१ ॥
मन भावति लशकर समुदाइ। हम दै हैं तुव संग चढ़ाइ।
चमूं[2] चमूं सों मिलि कै लरै। तुम पहुंचहु जहिं गुर थिर अरै ॥ २२ ॥
अपर सुभट गुर के बलवंते। तुझ ढिग पहुंचि न देहिं कदंते।
तेरो अरु गुर को रण दुंद। जुटहु जोर करि बाहु बिलंद ॥ २३ ॥
जे बल करि गुर को गहि ल्यावैं। मनसब[3] मन सभि बांछति पावैं।
हय दिलबाग संग लै आउ। बिनां बिलंब लेहु सिरुपाउ ॥ २४ ॥
पैंदे कह्यो हजूर अगारी। करि हकार न कूर उचारी।
बाल अवसथा ते मैं संग। लखों डील बल जेतिक अंग ॥ २५ ॥
हेतु जीवका रहे बधावति। मैं दबि जाति जि ओज[4] लगावति।
रावर हाथ धरहु सिर मेरे। अबि ल्यावौं गहि गुरू अगेरे ॥ २६ ॥
इम सुनि शाहु दईकर शारत। तूशनि रहु समुझाइ बिचारत।
थिर उमराव लेते समुदाई। सभा बिखै सभिहूंनि सुनाई ॥ २७ ॥

1. अपमान 2. सेना 3. पदवी 4. बल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगन तेग अरु पानन बीरा[1]। धरहु आनि करि बिच बड बीरा।
जो उतसाह जंग को धरै। हरिगुविंद पर चढ़िबो करै ॥ २८ ॥
पैंदखान के संग सिधारै। करि बहादुरी अरि को मारै।
तीन बार करि रार[2] उदारा। जो उमराव चढ्यो सो कारा ॥ २९ ॥

इम पठान के बल करि जीता। अबि के गहि लीजै दे भीता।
इस प्रकार सभि सभा मझारा। तीन बार जबि शाहु उचारा ॥ ३० ॥

मुगलस खान भ्रात इक अहै। कालेखान नाम जग कहैं।
सूबा पुरि पिशौर को भारा। सैना संग पचास हजारा ॥ ३१ ॥
तिन सुनि कै उर बिखै बिचारा। भ्रात मरे को वैर संभारा।
तिस को पलटा मैं नहिं लीनो। खान ब्रिंद सभि भाखहिं हीनो ॥ ३२ ॥
अबि अवकाश भलों मुझ पावें। गहौं गुरू को शाहु पठावै।
इक तौ हज़रत कारज अहै। दुतीए जसु मेरो जग रहै ॥ ३३ ॥
त्रितीए पलटा मुगलसखान। इम मेरो हुइ काज महान।
उठि कर जोरति बोल्यो सोइ। हज़रत हुकम मोहि कउ होइ ॥ ३४ ॥

सैना सकल जंग करि घैहैं। हरिगुविंद जीवति गहि लैहैं।
निकटि आप के जब हम ल्यावैं। भ्रात मरे की करक मिटावैं ॥ ३५ ॥
भर्यो रिदा रिस ज्वाल प्रकाशी। सो सुभि गुर पर करव निकासी।
तिस दिन सुपतौं नींद सुखारी। हरिगोविंद गहि लेहुंकि मारी ॥ ३६ ॥

सुनति शाहु तबि हरख वधावै। काले खां! इम ही बनिआवै।
पैंदखान के संग सिधावहु। सजहु सैन दुंदभि बजवावहु ॥ ३७ ॥
इम सुनि कालेखां हरखायो। करि सलाम को सीस झुकायो।
नगन तेग बिच सभा उठाई। पानन बीरा लीनि चबाई ॥ ३८ ॥

पिखि उतसाह शाहु तिस काला। सिरेपाउ मंगवाइ बिसाला।
ज़री वसत्र सुंदर मुद धारे। कलगी जिगा जिनहुं पर धारे ॥ ३९ ॥
कंकन कंचन हीरन चरे। द्वै मंगवाइ सु बखशन करे।
कंठा बड कीमत मुकतन को। उज्जल गोल दियो पहिरन को ॥ ४० ॥

सवा लाख को खिलत कहावै। ले कालेखां उर हरखावै।
हज़रत हुइ प्रसंन जबि दीना। सभि उमरावनि हेरन कीना ॥ ४१ ॥
हुतो मीत इक अबदुलखान। खोजा अनवर नाम बखानि।
तिन भी देखति चौंप बढाई। चही गुरू पर करन चढाई ॥ ४२ ॥

1. पान बीड़ा 2. झगड़ा, लड़ाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वै हज़ार प्रतना* को मालिक। बैर संभारि खरयो ततकालक।
जिते वकील शाह के जानों। तिन सभि को सिरमौर पछानों ॥ ४३ ॥

हज़रत ! हुकम आप को पाऊं। पैंदखांन के संग सिधाऊं।
अबदुल खान मीत मम मारा। अहै करज़ सिर करों उतारा ॥ ४४ ॥

दाव भेत बुधि के उपजाइ। कालेखां को बनौं सहाइ।
पंच हज़ारनि को सिरुपाइ। हरख शाहु करि तांहि दिवाइ ॥ ४५ ॥

ज्यों क्यों करि गुरि को गहि आनौं। लरति बाहनी रन करि हानौं।
सहित दमाद जु पैंदेखान। सिरोपाउ तिन देवन ठानि ॥ ४६ ॥

दे सनमान बिदा सभि करे। निकसे वहिर मोद उर भरे।
जबि अपने डेरे महिं गए। दुंदभि बजहि हुकम को दए ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे **'उमरावन चढ़ाई प्रसंग'** बरननं नाम चौदशमो अंशु ॥ १४ ॥

---

* सेना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १५

## लशकर चढ़न प्रसंग

**दोहरा**

कुतबखांन बैठ्यो पिख्यो हज़रत अपने तीर।
तूं भी करि प्रस्थान को सुमतिवंत बड बीर ॥ १ ॥

**चौपई**

नगर जलंधर तालक तेरे। दिहु लशकर उतसाह घनेरे।
सभि की सुध लिहु देखहु जंग। बनहु सहाइक पैंदे संग ॥ २ ॥
निकटि रहनि ते तूं सभि जानहि। गहयो जाइ गुर तिम बिधि ठानहिं।
अपनि चमूं सभि संग रलावौ। मिलि करि काज करो इत आवौ ॥ ३ ॥
सुनति कुतब्खां कहि कर बंदि। निशचै गहिं श्री हरिगोबिंद।
पैंदखान जबि ते उठि आवा। तबि को मोहि भरोस उपावा ॥ ४ ॥
पुन लशकर अबि चढ़्यो विसाला। किम गुर बचहिं नहीं इस काला।
जाइ संग मैं देउं गहाइ। सभि सैना को संग मिलाइ ॥ ५ ॥
शाहुजहां प्रसंन बड ह्वै कै। बहु मोला सिरुपाउ सु दै कै।
कुतबखान को दीनसि विदा। हरखति बहिर निकसि करि तदा ॥ ६ ॥
कालेखान संग सभि मिले। चड़नि हेतु करि मसलत भले।
पैंदखान ते आदिक कहैं। लूटहिं गुर धन गन को लहैं ॥ ७ ॥
सभि जानति मैं भेद बतावौं। कर गहि कै गुर कउ लै आवौं।
निज निज दल दुंदभि बजवाए। सरब भांति तयारी करिवाए ॥ ८ ॥
गन गुलकां[1] बारूद घनेरी। बरताई लशकर बहुतेरी।
हय हत्थयार अपर बरताए। धन दे करि मन सभिनि बधाए ॥ ९ ॥
निज निज सैन असूदी करिकै। पंचहुं बीर चढ़े रिस धरिकै।
मिलि आपस महिं भए शराबी। बोल अटपटे चहति खराबी ॥ १० ॥
गुर क्या वसतु हमारे आगे। चढ़हिं इरान, वलाइत भागे।
अबि पहुंचनि की बिलम हमारी। इक हमले रिपु दै हैं मारी ॥ ११ ॥

---

1. गोलियां 2. घोड़ा



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूबा कालेखान बिसाला। दुतिय कुतबखां चढ़ि तिस काला।
खोजा अनवर भयो अरुढन। प्रेरति काल सभिनि हूं मूढनि ॥ १२ ॥
पैंदेखान, खान असमाना। पंचहुं जोधा ठानि गुमाना।
पाप बिखै रति जे बड पापी। बार बार तबि होइ सुरापी ॥ १३ ॥
बादित अनिक भांति बजवाए। सकल अरूढे दल समुदाए।
मनहुं टीडगन[1] गमने ऐसे। हिम महिं गरन जाति हैं जैसे ॥ १४ ॥
मनहुं मकोरन लागे पंख। समुख बिहंगन चले असंख।
अपर भाव कबि के मन मिल्यो। जनु सलितापति[2] उछलति चल्यो ॥ १५ ॥

परति कुलाहल मारग मांही। उठी धूल रवि[3] ढांप्यो तांही।
धरा हलावति गमनी सैना। मानहुं आप चली जम ऐना ॥ १६ ॥
केतिक चढ़े उतंग मतंगनि। कितिक नचावति चपल तुरंगनि।
गजगाहन बंधे बड बीर। गहि कमान भरि तरकश तीर ॥ १७ ॥
कितिक तुफंगन[4] हाथ उठावैं। हयनि भगाइ नचाइ दिखावैं।
दीरघ तोमर हाथ उभारे। बंबलिआले खर[5] अनियारे ॥ १८ ॥

खर खंडे तेगे दरम्यानी। सैफ सरोही सांग महानी।
इम लवपुरि ते चढ़ि करि चाले। सभि समाज हित लरन संभाले ॥ १९ ॥
पंद्रह कोस जाइ किय डेरा। निस विश्राम करनि थल हेरा।
मौजूदात[6] लीनि सभिहिनि की। निज निज मिसल बनाइ भटनि की ॥ २० ॥

सभि को सावधान करि लीना। जो जिह चाहति सो तिह दीना।
खान पान करिकै तिस थान। लशकर सुपत जथा सुख ठानि ॥ २१ ॥
बडी प्राति ते बजे नगारे। जोधा उठे कीनि सभि तयारे।
पाइ हयनि पर निज निज ज़ीन। तूरन तबहि अरूढन कीनि ॥ २२ ॥

बड मतंग[7] पर पाइ अंबारी। लागी ज़री सतारन सारी।
चढ़ि काले खां मारग चाला। गमन्यो लशकर संग बिसाला ॥ २३ ॥
दुंदभि बजहिं सैंकरे आगे। चले जाहिं संघर[8] अनुरागे।
मारहिं गरहिं करति बकबादा। सुनि सुनि कालेखां अहिलादा ॥ २४ ॥

नदी बिपासा के तट आए। जहि कहिं ते केवट बुलिवाए।
करी समूह एकथल तरनी[9]। तूरन पार सैन सभि करनी ॥ २५ ॥
लगे उतारनि भरि भरि पूर। करति शीघ्रता उतरे सूर।
पंचहुं जोधा लशकर सारो। भए पार नहिं लगी अवारो[10] ॥ २६ ॥

1. टिड्डी दल 2. समद्र 3. सूर्य 4. बंदूकें 5. तीर 6. हाज़िरी 7. हाथी 8. जंग 9. किश्ती 10. देर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुतबखान को करि कै आगे। चले जलंधर के मग लागे।
पहुंचति भए कर्यो सभि डेरा। छाया सहित थान जहिं हेरा ॥ २७ ॥
तंबू ब्रिंद लगे चहुंफेरे। मनहुं समुंद्र पाइ करि घेरे।
दीप समान नगर द्रिशटावति। हय हिरेख जहिं कहां उठावति ॥ २८ ॥
जथाजोग सेवा सभि केरी। कुतबखान करिवाइ घनेरी।
खान पान सनमान समेता। बूझि बूझि सभिहिनि कहु देता ॥ २९ ॥
निस बिश्राम कर्यो सभि काहू। मिलि मिलि अपनी मिसलनि मांहू।
भई प्राति तुरक जु उमराव। चितवहिं चित्त महिं अनिक उपाव ॥ ३० ॥
भए एक थल मसलति करिवे। गीदी* डरति लखति हुइ मरिवे।
कीनसि काले खान बखान। कुतबखान सुनि तूं मतिवान ॥ ३१ ॥
आगे जंग गुरु बहु करे। गन उमराव सैन जुति मरे।
सो बिधि होइ न कहो उपाइ। निकटि रहहिं तूं जानहि दाइ ॥ ३२ ॥
कहति कुतब जोधा गुर बली। त्रास न करहि लरहि बिधि भली।
सभि लशकर को पावहु ज़ोर। मिलिकै संघर कीजहि घोर ॥ ३३ ॥
अपर भेद मैं लखौं न कोई। नहीं मेल गुर सों कबि होई।
करामात कामल जे होइ। तौ बस चलहि न हमरो कोइ ॥ ३४ ॥
पैंदा कहै वहिम क्या कीजै। मैं गुर पकरौं देखनि कीजै।
करामात कामल जे कहहु। सभि छित को मालिक हुइ लहहु ॥ ३५ ॥
कहि काले खां निशचै अहै। तऊ लरन को भेद जि लहै।
तौ आछे रिपु ते जै पावै। गाफ़ल होइ हार सो जावै ॥ ३६ ॥
दाब घाव जो जानहि नांही। तिन की फतह न ह्वै रण मांही।
रिपु को बल दल दुरग सु कोश। सखा सहाइक जांहि भरोस ॥ ३७ ॥
लखिबे उचित अहै इह सारे। बहुर आपने हेरि बिचारे।
अधिक शत्रु महिं जानहिं जोइ। तिह को जतन करहि बुधि सोइ ॥ ३८ ॥
यांते गरब बात को त्यागहु। करो बिचार नीति मग लागहु।
अनवर को अबि भेजनि कीजै। आए लरन भेद नहिं दीजहि ॥ ३९ ॥
परखहि गुर की सगरी बात। दल बल आदि पाइ है घात।
इस आए ते पुन रण मंडहिं। खड़ग खरन ते करि खंड खंडहिं ॥ ४० ॥

**दोहरा**

खोजा अनवर खान सुनि कीनि सराहनि बात।
इम ही आछी करनि है जानि लीजीऐ घाति ॥ ४१ ॥
अस मसलत निशचै करी काले खां उमराव।
भयो त्यार तबि चलन को अनवर जांको नाव ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटमि रासे **'लशकर चढ़न' प्रसंग बरननं नाम** पंचदसमो अंशु ॥ १५ ॥

---

* कायर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंश १६
# श्री गुरु प्रसंग

**दोहरा**

शाहु सहित इम पंद को भाख्यो सकल प्रसंग ।
श्री हरिगोविंद चंद को सुनहु प्रेम के संग ।। १ ।।

**सवैया छंद**

लाइ बिसाल सुधरमा[1] के सम दिपति सभा गुर इंद्र मनिंद ।
चहुं दिशि ते संगति नित आवहि दरसहि पूजहि पद अरबिंद ।
सुर सम सिख की भीर निकटि बहु अरपि अनेक अकोरनि ब्रिंद ।
मनोकामना प्रापति ह्वै कै जसु उचरहिं श्री हरिगोविंद ।। २ ।।
शुभति सिंघासन मनहुं बिशनु प्रभु चहैं सु करैं बिलंब न कोइ ।
तऊ मानवी लीला धारैं रामचंद के समसर सोइ ।
बार बार प्रिय रण को ठानहिं कृशन चद उपमा तबि होइ ।
करहिं भोग महिं जोग अनंदति रोग सोग सिक्खन के खोइ ।। ३ ।।
जिस पर करहिं क्रिपा प्रभु अपनी दें सिमरन सत्तिनाम कि ग्यान ।
ठांढी रहैं अठारहिं सिद्धां आइसु मानहिं जोरति पान ।
शकति बिसाल पाइ सभि विधि की नहिं न जनावहिं अपर समान ।
ऐसे सिक्ख हज़ारहुं गुर के दिवस पुरब के दरसहिं आनि ।। ४ ।।
कुक्को नाम हुतो सिख गुर को पठन श्रवण महिं प्रेम महान ।
तिह सुत नाम अनता जानहु गुर सेवा महिं रहि सवधान ।
सूपकार[2] कहि देगथान ढिग गहि गुलेल हनि बाइस[3] तानि ।
निकटि न होन देहु गन आवति इसी काज पर रहु सिख मानि ।। ५ ।।
गूंध चून पिखि बाइसु आयो गहि गुलेल तिह दयो डराइ ।
पुन आवति हटकावति पुन पुन जबि चित लख्यो नहीं इहु जाइ ।
तान गुलेला फर महिं मार्यो लंगरा भयो काग दुख पाइ ।
भोजन करनि गुरु तबि पहुंचे मन भावति अचिकै त्रिपताइ ।। ६ ।।

---

1. देव सभा 2. रसोइया 3. काग



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गन कागनि को टुकरा पाए ततछिन मिले खाइ समुदाइ।
तिन महिं लंगरा दुख ते बिचरति पिखि क्रिपाल इम श्राप अलाइ।
जाइ रसातल किन इह मार्यो तबि बाइसु की पीर नसाइ।
सुनति अनंता चिंत अनंता जाइ पिता सों कहीं सुनाइ॥ ७॥

सुत पित जुग मन महिं बिसमाए चिंता दुखिति शोक ते दीनि।
दुरबल भयो अनंता अतिशैं, कुक्को देखि देखि नित छीन।
बिनै करी बहु सिक्खनि आगे बखशावहु मम सुत सुखहीन।
तिनहुं कह्यो बिधीए ढिग गमनहु उपकारी गुर निकटि प्रवीन॥ ८॥

सुनति जाइ तिस के पग पकरे भाख्यो सकल प्रसंग सुनाइ।
गुर वच कह्यो रसातल जावहि इह बखशावहु जतन उपाइ।
शरन परे नहिं अपर सहाइक तुम बिन हम को थाइं न काइ।
बिनै सुनी करुना करि बिधीए कह्यो कि चिंता देहु गवाइ॥ ९॥

ज्यों क्यों मैं बखशावन करि हौं समां कहनि को जबि बन जाइ।
इम कहि गुर समीप तबि गमन्यो सुत पित सुनति रहे हरखाइ।
सतिगुर चढ़े अखेर करनि को चल्यो संग हय ज़ीन पवाइ।
बहिरी, बाज़, कुही, बहु शिकरे[1] चीते बली स्वान समुदाइ॥ १०॥

बन बिचरति बन जीवन धावति करे मुकति जे निज कर घाइ।
हटि करि टिके आन करि सतिगुर छोटे मीर ग्राम निकटाइ।
बिधी चंद अवकाश बिलोक्यो सिख सुत की सभि गाथ सुनाइ।
देहु रसातल मोहि प्रभु! अबि सिस[2] अपराध छिमहु सुखदाइ॥ ११॥

कह्यो गुरु सिस को न रसातल तूं मम प्रिय हैं अनंद बिसाल।
छोटा मीर रसातल पहुंचै जहां वसहिं नर कुटिल कुचाल।
इम कहि सिख सुत बखशन कीनसि भयो ग्राम को श्राप कुचाल।
चढ़ि आए करतारपुरे पुनि बैठे संध्या समैं क्रिपाल॥ १२॥

बिधी चंद सों पित सुत दोनहुं आइ वंदना पद पर कीनि।
दयासिंधु चरणांम्रित दीनो सिख सुत पान कर्यो दुख हीन।
तन मन संकट सकल नाश करि प्रथम समान भयो पल पीन।
इम सतिगुर कछु दिवस बिताए सदा सहाई सिक्खयनि दीन॥ १३॥

मास असाढ़ प्रविरतयो जग महिं इकदिन श्री प्रभु चढ़े शिकार।
बरण सुपैद तुरंगम को शुभ जिम रवि-वाहन[3] सुमति उदार।

1. शिकारी पक्षी 2. शिष्य, चेला 3. सूर्य का सफेद घोड़ा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जामा पर अभिराम झीन बहु सूखम सूत दिपहि तन चारु।
सिर उशनीक नीक बिधि बंधन हीरे स्वेत जिगा दुतिकार ॥ १४ ॥
मुकता गोल मोल वहु जिन को उज्जल माला दिपति बिसाल।
बाज सुपैद हाथ पर बैठ्यो मनहुं मानसर आइ मराल[1]।
चंद, कुंद, मानिंद, सुधा नहिं सजति स्वेतता इस बिधि नाल।
श्री गुरदित्ता अग्र सिधावति बिधीचंद गुर पाछै चालि ॥ १५ ॥

बंके बीर ब्रिंद बलवंते बाहु बिसाल चढ़े बाजीनि।
बान कमान तुफंग संभारति पीछे गमहिं बीर रस भीन।
श्री हरिगोविंद वाग गही कर, सुंदर शुभति तुरंगम पीन।
जनु ऐरावत[2] बत्स, चपल अति, चलति चाल चोरति चित चीन ॥ १६ ॥

मनहुं दुग्ध को उदधि मथन करि सार सेतता लई निकासि।
कमलासन इक चित हुइ सिरज्यो अंग अंग करिकै निरजास।
मनहुं काम कारीगर कर सों आक्रितकरी, रही सु प्रकाश।
किधौं तुरंगम रचि करि तन सभि लेपन कीनि सुधा पुन तास ॥ १७ ॥

अग्र नासका तीखन सुंदर ऊची ग्रीव चलति बल संग।
दोन श्रोन लघु तीखन ऊचे, रुचिर बिलोचन कुछकु उतंग।
करति कुंडली अगले पाइनि जथा जोग जिस के सरबंग।
सटकारी लांगुल[3] बहु फेरति, मन सों लीन होति इक रंग ॥ १८ ॥

रह्यो जाम दिन गमनति इस बिधि दोइ सिक्ख आए अगुवाइ।
पहुंचि अगेरे करि पगबंदन, पिखि सतिगुर ठाढ़े तिस थाइ।
बूझन करी कहां ते तुम हो ? क्या तुम काज करति सति भाइ ?।
कित कौ गमने ? क्या चित इच्छा ? सुनि दोइन मुख बाक अलाइ ॥ १९ ॥

करति चितेरे[4] की कृत सुंदर जाति हमारी लखहु तिखान।
रावर के दरशन हित आए, दिवस बहुत की चाह महान।
उचित हमारे कृत आप की, सोपि करहिं हम इच्छा ठानि।
सतिगुर दई न तबि कुछ आइसु बिधीचंद ने मन की जानि ॥ २० ॥

कहति भयो अबि पोशिश जैसी बाजी बाज़ समेत सुहाइ।
शस्त्र सहित इह मूरति सुंदर मोकहु लिखि दीजहि सुख पाइ।
करहु सुफल अपनी सभि विद्या हाथ बिलोचन को सफलाइ।
नख शिख लौ चित्रति करि आछे इहु उपकार करहु मन लाइ ॥ २१ ॥

1. हंस 2. हाथी 3. पूंछ 4. चित्रकार 5. शिकार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुन्यो नक्काश भनयो जुति बिनती, शेष गनेश सारदा भाइ ।
पार न पाइ सकहिं जिन केरा सो मम पास लिखे किम जाइं ।
निशचे सुनी बात इक ऐसे गुर कै गुर सिक्ख सिंधु तराइं ।
करहिं क्रिपा तौ मैं लिखि सकिहौं, अलप जीव के बनहिं सहाइ ॥ २२ ॥

करहु क्रिपा तबि लिखहि पुत्र मम बिधीचंद तिह निकटि बुलाइ ।
हे सुत ! लिखहु सहाइ गुरु नित पुरहु कामना मम हित लाइ ।
मानि बचन दोनहु तहिं बैठे लिखन लगे मन प्रेम उपाइ ।
नख शिख लौ मूरति गुर हय की शसत्र बसत्र जुति जथा सुहाइ ॥ २३ ॥

श्री सतिगुरु अखेर गए बन जीव अनिक को मुकती दीनि ।
तुरंग पलाइ फंदाइ चलाइ सु रिदै अनंदति अधिक प्रबीन ।
दिन लघु रह्यो जानि हटि आए संग बाहनी सगरी लीन ।
सिक्ख जलंधर ते इक आयो हाथ जोरि तिन बिनती कीनि ॥ २४ ॥

श्री प्रभु ! महाराज गुर सुनीअहि, सैना आन परी समुदाइ ।
नगर जलंधर के चहुंगिरदे, दिढ समाज हित जंग बनाइ ।
पैंदखान भी अहै इनहु संग, को कोकहै—इही दल ल्याइ ।
भेत न देति कपट किय चाहति सुन मैं सुध हित[1] पहुंचयो धाइ ॥ २५ ॥

सुनि करि सतिगुरु कह्यो धीर धरि चिंता करहु नहीं चित कोइ ।
चढ़ि आवहि, जम सदन सिधावहि, नहिं थिरता पावहि जग सोइ ।
श्री गुर नानक भली करहि सभि, बिघन अनेकनि ततछिन खोइ ।
इम बोलति चलि उतरे आइ सु बाग बिखै तरुवर[2] बहु जोइ ॥ २६ ॥

भयो फरश बैठे गुर तिह छिन, सो नकाश मूरति लिख ल्याइ ।
बिधीचंद को कीनि दिखावन देखति रह्यो रिदै हरखाइ ।
तिन ते लै गुर अग्र धरी जबि अविलोकति श्री मुख मुसकाइ ।
लिखयो तुरंग नख शिख लौ सुंदर भए प्रसंन सु बचन अलाइ ॥ २७ ॥
आछी करी हरी भव पीरा, क्यों न लिखहु, पिखि हो बुधिवान् ।
पिता पुत्र सुनि मोद उपंना जनम मरन के दुख भा हान ।
बार बार बंदति पग पंकज भए निहाल प्रेम को ठानि ।
श्री सतिगुर अविलोकन करिकै बिधीचंद के दीनसि पान ॥ २८ ॥
ले गुर बखशिश निज सिर पर धरि अदब साथ ढिग राखनि कीनि ।
अबिलौं तिसकी कुल जो उपजै तिन को ढिग सुंदर सो चीनि ।

1. खबर देने के लिए 2. वृक्ष

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दरशन करि मनबांछति पावहि आकृति* जानी जाइ प्रवीन।
देबे लग्यो चितेरनि को धन, भए दीन मन तिनहुं न लीन ॥ २९ ॥

दोहरा

इस प्रकार श्री सतिगुरु धीरज सहित बिलंद।
करति बिलास अनेक बिधि संकट दास निकद ॥ ३० ॥

उठे बाग़ ते सतिगुरु पहुंचे मंदिर जाइ।
खान पान करि जथा रुचि सुपति भए सुख पाइ ॥ ३१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे 'श्री गुरु प्रसंग बरननं' नाम षोड़समो अंशू ॥ १६ ॥

---

* चित्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १७

# अनवर चौंपर खेलन प्रसंग

**दोहरा**

दिवस आगले सतिगुरू बैठे लाइ दिवान।
पठ्यो हुतो खोजानवर सूवे काले खान ॥ १ ॥

**चौपई**

पूरब कई बार सो आवा। कहि बज़ीरखां जबहि पठावा।
गुरू के संग मिल्यो बहु बारी। यांते भेज्यो जानि चिनारी ॥ २ ॥
नगर जलंधर को तजि आयो। श्री करतार पुरा नियरायो।
तिह छिन मन महि कपट बिचारा। अबि मैं परखों करि निरधारा ॥ ३ ॥
श्री नानक अवतार कि नांही। करामात कामल धरि मांही।
प्रथम आवतो मसलत करने। अबि कै गुरू प्रान हम हरने ॥ ४ ॥
इम बिचार करि दुइ दीनार[1]। दोनहुं हाथनि पर तबि धारि।
तरे हाथ करि एक छपाई। इक कर ऊपर देहि दिखाई ॥ ५ ॥
जे अज़मत, लें दोनहुं जान। अपनी भेट धराइं बखानि।
सभा बिखै जहि बैठे सुने। पहुंच्यो गीदी तरकित घने ॥ ६ ॥
उतरि तुरंग ते गयो अगारी। तिम दीनार हाथ पर धारी।
जबि सतिगुरू को नज़र दिखाई। कीनि बिलोकन भनयो सुनाई ॥ ७ ॥
आवहु खान! सुमति बिपरीती। करी प्रथम ते अपर अनीती।
कहै सु अबि लौ पहुंच्यो आइ न। कहां कुमति किय, देहु बतावन ॥ ८ ॥
सुनि गुर उचर्यो, जबि जुग फूटें। तिस को शत्रु तुरत ही कूटें।
घर लगि जानि न देहिं सुजान। पहुंचहिं तुरत करहिं तिस हान ॥ ९ ॥
यांते तुम को भयो कुसौन[2]। मुशकल महां पहुंचिबे भौन।
श्री गुर नानक को घर अगम। इहां न चलहि शत्रु को छदम[3] ॥ १० ॥
करामात कामल बक्खयाती। तिस को देनि कहिरो सक्खयाती।
जे गीदी चित चाहहि कोइ। जल कन उदधि[4] न घाटो होइ ॥ ११ ॥

---

1. मोहर। 2. कुशगन। 3. छल। 4. समुद्र।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुरक सुनति मन मैं बिसमायो। छिमा हेतु कर जोरि अलायो।
धंन ! धंन ! पूरन गुर अहो। सभि घटि घटि की जानति अहो ॥ १२ ॥
हुई सु बिती छिमहु अपराधू। सरल सुभाउ सदा सम साधू।
तबि सतिगुर कहि अग्र हटायो। इक दिशि महि कहि तांहि बिठायो ॥ १३ ॥
संगति कुछक तबहि चलि आई। दरशन करनि भेट बहु ल्याई।
करि करि बंदन अग्र चढावैं। जोरति हाथ कामना पावैं ॥ १४ ॥
शसत्र बसत्र भूखन नग जरे। अनिक तुरंगम कीनसि खरे।
जबहि अकोरन लगे अंबारु। उर बिसमान्यो तुरक उदारु ॥ १५ ॥
शाहु मुलख मालिक जो अहै। एतो धन नितप्रति नहिं लहै।
जबरी करहि प्रजा ते लेति। दुखी होइ जेतिक नर देति ॥ १६ ॥
धनी कि रंक इहां धन ल्यावैं। अरपि अनंदति सीस निवावैं।
कर जोरति पुन बिनै बखानैं। या खुदाइ ! धन आइ महानैं ॥ १७ ॥
इत्यादिक बहु रिदे बिचारा। तबि लौ एक सिक्ख सुनिआरा।
अचरज चौंपर धर्‍यो अगारी। बसत्र बचित्र रच्यो चितकारी ॥ १८ ॥
डल[1] कंचन के नग विच जरे। अनिक रंग के दीपति खरे।
चामीकर[2] की नरद बिसाला। चूनी जरी जिनहुं महिं जाला ॥ १९ ॥
बहुत मोल को बन्यो अजाइब। अर्‍पयो आनि अग्र गुरु साहिब।
सो देखति इकठो करिवायो। ले प्रभु जानू तरे टिकायो ॥ २० ॥
जबि सभि संगति दरशन कीनि। सरब अकोर अरपि करि दीनि।
बैठे मनो कामना पाइ। तबि अनवर बोल्यो इस भाइ ॥ २१ ॥
'सुनहु पीर ! क्या मन महिं भायो। बे रुख तोर हमहिं दिखरायो।
मिलते प्रीति समेत हमेश। देनि लेनि करि कार अशेश ॥ २२ ॥
अबि के लई नज़र भी नहीं। अउर बात करनी कित रही।
गन रंकनि की दिश रुख करो। ले ले नज़र संभारन धरो ॥ २३ ॥
कहि श्री हरि गोबिंद सुजाना। सुनहु खान ! सभि करहिं बखाना।
रीति प्रीति की सम पै[3] पानी। मिलति होति हैं एक समानी ॥ २४ ॥
जबि मेलहि को कपट खटाई। लगहि न बिलम तुरत बिलगाई।
बहुर न मिलहि अनेक जतन ते। तथा फरक परिहै मन मन ते ॥ २५ ॥
पै पानी न खटाई सहै। तथा कपट ते प्रीति न रहै।
इम बिचार करि हूजै मौन। नतु उघरति जै है छल, जौन ॥ २६ ॥

1. चौंपड़ का पासा। 2. सोना। 3. दूध।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि अनवर सो तज्यो प्रसंग। बहुर मिलन हित कहि गुरु संग।
बैठे बोलति प्रापति भेति। तूशनि करे नही कुछ देति॥ २७॥
सुनहु पीर जी! चौंपर चास। जानूं तरे धर्यो संभारू।
अदभुत बन्यो पिखिनि ललचावौं। तुम सों बाज़ी खेल मचावौं॥ २८॥
धरियहि धन निज दाव विचारी। खेलति जै लिहुं कै दिहुं हारी।
सुनि श्री हरिगोबिंद उचारी। इह तो खेलहिं जूप जुआरी॥ २९॥
हम अलाह के फकर बिमाले। भल उपदेशति भले संभाले।
जेकरि चित परचा तुम धरो। बिना दाव धन खेलन करो॥ ३०॥
अनवर भने छूछ नहिं आछो। कुछ धरि करि खेलन चित बांछो।
जानि खान की अधिक खुटाई। कह्यो गुरु हम चाहि न काई॥ ३१॥
करहु आप जैसे मन भावै। प्रापति हार जीत नहिं पावैं।
अस कहि चौंपर अग्र बिछायो। बैठ्यो समुख मूढ हरखायो॥ ३२॥
चितवहि खेलन विद्या मेरे। चहौं सु ल्यावों डल को गेरे।
शाहु सभा महिं जीतति रह्यो। अनिक बार धन मैं बहु लह्यो॥ ३३॥
अपर बात मैं दाव न खावै। चौंपर खेलति दरब हरावै।
उठौं जीत करि जे धन संग। तौ लखिहौं गुर हारहि जंग॥ ३४॥
दाब पंच सै दरब[1] लगाइब। तबि सतिगुरु डल डारि रिड़ाइब।
चमकति चूंनी कंचन जरे। पुन ले खान गेरिबौ करे॥ ३५॥
सभा लगी सुभटनि को हेरहि। चलहि नरद निज डल को गेरहि।
दाउ बिसाल गुरु तबि ल्यावें। तुरक नरद को मारि हटावें॥ ३६॥
पुन काची हुइ वहिर निकासें। आनै फेरति चारहुं पासे।
अंतर नहिं प्रवेशिबे पावति। मार्यो कहि गुर मारि हटावति॥ ३७॥
अपनी आठहुं नरद पकाई। राखी तिस की चार कचाई।
हार्यो दरब पंच सै मूड़ा। सरबर हुयो चहति है कूड़ा॥ ३८॥
लज्जिति भयो कछुक पुन चप्यो। दाव पंचसै धन तबि थप्यो।
बाज़ी प्रथम हराइ सु चाहा। अबि कै दरब लहौं इन पाहा॥ ३९॥
चूंनी चमकति हेम लपेटी[2]। जनु सूरज की किरन समेटी।
तिन पर नव ग्रिह जनु थिर करे। अस डल शोभति हैं दुति भरे॥ ४०॥
बहुर दूसरी बाज़ी खेलति। गुर कर कमलनि ते डल मेलति।
करहि तुरक बिद्या बहुतेरी। गुर की नरद न मरि इक बेरी॥ ४१॥

---

1. धन। 2. स्वर्ण जड़त।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिस की नरद आइ जबि आगे। कहि गुर मारहिं जनु सर[1] लागे।
चप्यो तुरक बिधि करति अनेका। महिमा लखि न सकहि अबिबेका ॥ ४२ ॥
बाज़ी जीत लई जनु जंग। बेधहिं बाक बान के संग।
बैठ्यो दरब हराइ हज़ार। दुख चिंता बहु रिदे गवार ॥ ४३ ॥
नहिं ऊचे सनमुख करि नैन। बोलि न सकहि गरब के बैन।
चप्यो लाज ते पुन चहि खेला। अहि[2] ते गरड़ डराइ सपेला ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे 'अनवर चौंपर खेलन' प्रसंग बरननं नाम सपतदसमो अंशू ॥ १७ ॥

1. तीर। 2. सांप।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १८

# चौंपर खेल प्रसंग

### दोहरा

वेर तीसरी फेर जब्रि बाज़ी दई लगाइ।
बस नहिं मूरख को चलहि दुख जुति दरब हराइ ॥ १ ॥

### चौपई

श्री सतिगुरु प्रथम डल[1] डालति। निज नरदनि के जुग करि चालति।
तुरक गेरते जुग नहिं आवै। राखै दाव सु उठनि न पावै ॥ २ ॥
जहां नरद तिस की मिलि जाइ। आनहिं दाव हतहिं निस थाइं।
पौ बारां कैं आनि अठारां। खोड़स, पंद्रहि, कै दसचारा ॥ ३ ॥
तुरक तीन काने कै चार। पांच तीन कै नौ निरधार।
कबि जुग चलन तुरक ढिग आवै। नांहि त बिछुरी नरद चलावै ॥ ४ ॥
पुन घट बाढ चलनि को लागा। छल ते जीत चहनि अनुरागा।
जथा हली रुकमी संग[2] अर्यो। खेलति कूर घात सो कर्यो ॥ ५ ॥
तथा चहै मूरख करिवाई। लगहि दाव घट, बाढ चलाई।
तऊ छिमानिधि छिमा धरंते। जहां धरहि तहिं मार करंते ॥ ६ ॥
पुन पौंबारां राख्यो दाव। करति उपाव न सक्यो उठाव।
आनि ढुकी बाज़ी तबि नेरे। सतिगुर पाकी नरद अगेरे ॥ ७ ॥
चौदहिं दाव तुरक को पर्यो। पौंबारां कहि उठिबो कर्यो।
गुर डाले डल आइ सतारां। लगे उठावनि ग्रेह मझारा ॥ ८ ॥
गई तीसरी बाज़ी जानि। तुरक कूर तब्रि कीनि बखान।
भए कुफर के पीर बिसाले। चौंपर खिलति कुफर ही चाले ॥ ९ ॥
गुर बोले हमरे न दरोग[3]। फकर अलाही लखिबे जोग।
तुव सम छली दरोग उचारे। बसहि दरोग निकेत तुमारे ॥ १० ॥
जबि जानी बाज़ी अबि गई। गहि करि सों चौपर उलटई।
निंदा करनि लग्यो मतिमंद। तुमरे सदन दरोग बिलंद ॥ ११ ॥

---

1. पासा। 2. बलभद्र रुक्मणि के भाइ के साथ। 3. झूठ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिस की नरद आइ जबि आगे। कहि गुर मारहिं जनु सर[1] लागे।
चप्यो तुरक बिधि करति अनेका। महिमा लखि न सकहि अबिवेका ।। ४२ ।।
बाजी जीत लई जनु जंग। बेधहिं बाक बान के संग।
बैठ्यो दरब हराइ हजार। दुख चिंता बहु रिदे गवार ।। ४३ ।।
नहिं ऊचे सनमुख करि नैन। बोलि न सकहि गरब के बैन।
चप्यो लाज ते पुन चहि खेला। अहि[2] ते गरड़ डराइ सपेला ।। ४४ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे '**अनवर चौंपर खेलन**' प्रसंग बरनन' नाम सपतदसमो अंशु ।। १७ ।।

1. तीर। 2. सांप।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १८

# चौंपर खेल प्रसंग

### दोहरा

बेर तीसरी फेर जबि बाज़ी दई लगाइ।
बस नहिं मूरख को चलहि दुख जुति दरब हराइ ॥ १ ॥

### चौपई

श्री सतिगुरु प्रथम डल[1] डालति। निज नरदनि के जुग करि चालति।
तुरक गेरते जुग नहिं आवै। राखै दाव सु उठनि न पावै ॥ २ ॥
जहां नरद तिस की मिलि जाइ। आनहिं दाव हतहिं निस थाइं।
पौ बारां कै आनि अठारां। खोड़स, पंद्रहि, कै दसचारा ॥ ३ ॥
तुरक तीन काने कै चार। पांच तीन कै नौ निरधार।
कबि जुग चलन तुरक ढिग आवै। नांहि त बिछुरी नरद चलावै ॥ ४ ॥
पुन घट बाढ चलनि को लागा। छल ते जीत चहनि अनुरागा।
जथा हली रुकमी संग[2] अर्यो। खेलति कूर घात सो कर्यो ॥ ५ ॥
तथा चहै मूरख करिवाई। लगहि दाव घट, बाढ चलाई।
तऊ छिमानिधि छिमा धरंते। जहां धरहि तहिं मार करंते ॥ ६ ॥
पुन पौंबारां राख्यो दाव। करति उपाव न सक्यो उठाव।
आनि ढुकी बाज़ी तबि नेरे। सतिगुर पाकी नरद अगेरे ॥ ७ ॥
चौदहिं दाव तुरक को पर्यो। पौंबारां कहि उठिबो कर्यो।
गुर डाले डल आइ सतारां। लगे उठावनि ग्रेह मझारा ॥ ८ ॥
गई तीसरी बाज़ी जानि। तुरक कूर तबि कीनि बखान।
भए कुफर के पीर बिसाले। चौंपर खिलति कुफर ही चाले ॥ ९ ॥
गुर बोले हमरे न दरोग[3]। फकर अलाही लखिबे जोग।
तुव सम छली दरोग उचारे। बसहि दरोग निकेत तुमारे ॥ १० ॥
जबि जानी बाज़ी अबि गई। गहि करि सों चौपर उलटई।
निंदा करनि लगयो मतिमंद। तुमरे सदन दरोग बिलंद ॥ ११ ॥

---

1. पासा। 2. बलभद्र रुक्मणि के भाइ के साथ। 3. झूठ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बैसे फकर अलाही बने। सभि जग जानति गुन तिम भने।
मंत्रनि संग कर्यो बस भारी। जहांगीर की सुमति बिगारी ॥ १२ ॥
कहि करि कूरे कपट कुढाल। चंदू गइयो दिवान बिसाल।
बहु दिन महिं तरसाइ संधारा। बिनां रहिम जानहि जग सारा ॥ १३ ॥
पुन काज़ी की सुता लुभाइ। बसि मंत्रनि करि लई भजाइ।
शाहुजहां को ले पुन बाज़। मारन मरन कर्यो रण साज़ि ॥ १४ ॥
श्री हरिगोविंद कृशन मनिंद। कारन कूरे करनि बिलंद।
मौन ठानि सनमुख तिस हेरे। सम शिशुपाल सु बोलति बेरे ॥ १५ ॥
राखन सैना संग हज़ारनि। करनि अखेरनि जीव संघारनि।
भोगहु सगल जगत के भोग। कहति दरोग ठगहु बहु लोग ॥ १६ ॥
सुनति छिमानिधि छिमा धरंते। जानि वकील न मार करंते।
सो मूरख लखि लशकर ज़ोर। बोलति करति तरकना घोर ॥ १७ ॥
पुन घेरड़ भगवान संघार्यो। अबदुलखान सैन जुति मार्यो।
बहुर शाहु के हय चुरिवाए। लरे हज़ारहुं सुभट खपाए ॥ १८ ॥
लाखहुं धन दे चढहु तुरंग। बरतहु ग्रिहसत बिसाल अनंग।
जग के लोक अपर हैं जैसे। तुमरे करम दिखति सभि ऐसे ॥ १९ ॥
इम दरोग के फकर विसाले। नाम अलाह न कबहुं सम्हाले।
दुनीआं ते फारक[1] निरदावे। फकर अलाही सुऊ कहावे ॥ २० ॥
तुमरो मतो हेरि करि ऐसे। लखे गए पूरब गुर तैसे।
गुर नानक ते आदि जु सारे। जाने परे कूर मति वारे ॥ २१ ॥
गुरु कहाइ ठगति जग रहे। किनहुं न भेत तुमारो लहे।
नाम सुन्यो श्री नानक केरा। श्री हरिगोविंद क्रोध घनेरा ॥ २२ ॥
पिखि सुभटन दिशि ऊच उचारे। जो इस के सिर पनही[2] मारे।
तिस पर खुशी होइ गुर केरी। लात मुशट की मार बडेरी ॥ २३ ॥
रिस के सहित गुरु मुख देखि। उठे तुरत ही बली विशेख।
बिधीए गहि करि पाग उतारी। ऊची लाति उभारि प्रहारी ॥ २४ ॥
लियो खरे करि नर ते नयारो। लगे जूत मुख करति पुकारो।
पुन गुर कह्यो प्रथम गुर केरी। जिस मुख कीनि निंद बडेरी ॥ २५ ॥
तिस पर पनही अनगन मारहु। महां दोष इस केरि उतारहु।
सुनि भट बडे डील बलवारे। ऊच उभारति जूत प्रहारे ॥ २६ ॥

1. फारग, निर्लेप। 2. जूती।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होवन लगी मार तिस वेरे। जन बासन को घड़हिं ठठेरे।
सरब अंग पर मार परंती। इक रहिं खरे न थाउं दिखंती ॥ २७ ॥
जबि अनगन ही बरखे जूत। धरी मौन लखि महां कुसूत।
प्रान अंत की चिंता बनी। अंग अंग पर चोटां घनी ॥ २८ ॥
कंपति महां त्रास को धारे। उठि सतिगुर तबि सदन सिधारे।
गन सिक्खनि बहु मार मचाई। जानति भा-अबि ह्वै न बचाई ॥ २९ ॥
कंपति देहि गिर्यो तबि धरनी। प्रापति फल जस कीनसि करनी।
पिखि करि सिख गन चरन प्रहारैं। तरजति[1] गारी सगल निकारैं ॥ ३० ॥
पर्यो बिहाल नहीं सुध्र कोई। केतिक कहति मृतु इस होई।
जाती मलक धाइ तबि गयो। जाइ गुरु ढिग ठांढो भयो ॥ ३१ ॥
महाराज ! पैंदा चलि आयो। लाख गिनन तक सैना लयायो।
हेतु भेत इह पठ्यो गुसाईं। समता करति मार बड खाई ॥ ३२ ॥
अबि छुराइ दिहु सुभट हटाइ। नांहित मार्यो इह मरि जाइ।
जीत्यो दरब फेरि करि दीजै। आप जूप के नाहिन लीजै ॥ ३३ ॥
बिप्प्र बिनै सुनि भए कृपाल। दियो छोरि सगरो ततकाल।
पंद्रह सद बखश्यो धन जबै। लेकरि पहुंच्यो दिजवर तबै ॥ ३४ ॥
सुभट प्रहारति सकल हटाए। दई धीर सिर पाग बंधाए।
तीन लोकपति रावण बली। जिनहुं जीत लीनसि बिधि भली ॥ ३५ ॥
जरासिंधु गन चमूं[2] बटोरि। आइ अनेक बारि करि जोर।
जीत न सक्यो मर्यो बलवंत। तिन आगे कहु तूं क्या जंत ? ॥ ३६ ॥
दे पानी मुख पान पखारे। बैठ्यो सगरे बसत्र संभारे।
दरब सरब जबि धर्यो अगारी। पिखी हरखति भा रिदे मझारी ॥ ३७ ॥
झार पिछोर भले करिवाइ। मौन धरे गमनयो सहिसाइ।
तुरंग अरूड़ संग ले दास। गयो जलंधर नगर जहां सु ॥ ३८ ॥
चित महिं चितवति मम गति ऐसी। लख नहिं सकहिं इहां बिधि कैसी।
मोकहु तिम करनी बनि आवै। हतौ गुरु तबि पलटा पावैं ॥ ३९ ॥
निसा परी अबि हुइ अंधकारे। आइ न जाइ न को इस बारे।
अस बुधि बल ते करौं उपाइ। कालेखान सुनति चढि जाइ ॥ ४० ॥
परहिं जामनी बिखै लराई। हमला करे गुरु ले घाई।
पुरि करतार लूट सभि लै हैं। गुरु बाहनी सभि हनि दै हैं ॥ ४१ ॥

1. चेतावनी देते हैं। 2. सेना।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मृतक हज़ारहुं ह्वै घमसान। कै गुर भाजहि डर उर मानि।
रखना पर्‌यो आबरू मेरी। नहिं बिदतहि, इम गिन करि हेरी ॥ ४२ ॥
संध्या समैं सु उतर्‌यो जाइ। अपर बसत्र तन पर बदलाइ।
कालेखान पास चलि गयो। करि सलाम को बैठति भयो। ४३ ॥
पैंदेखान कुशामद कारन। बात मृदुल ढिग[1] करति उचारन।
सेवा हेतु कुतब खां बैसा। देति हुकम करि कारज तैसा ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे **'चौंपर खेल'** प्रसंग बरननं अशटदसमो अंश ॥ १८ ॥

---

1. कोमल।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १६

# लशकर चढ़ि आवन प्रसंग

**दोहरा**

अनवर खान बिचारिकै चतुराई उपजाइ।
कह्यो गयो गुर के निकटि भेत पाइ सुध ल्याइ ॥ १ ॥

**चौपई**

अबि लो सुध गुर को नहिं होई। कीनसि नहीं सुचेती[1] कोई।
लरहु जामनी महिं करि हेल। करि लैहो सभि काज सुहेला ॥ २ ॥
कुछ थोरी सी चमूं निहारी। परहु बिखबरी कीजहि मारी।
काज सुगम ही जे बनि जाइ। दानशवंद न बिलम लगाइ ॥ ३ ॥
तुम समरथ हो अधिक जदापी। शत्रु न गिनीअहि अलप कदापी।
कनका पावक[2] सुगम बुज्झयति। बने लगि बधहि न किमहुं मिट्टयति ॥ ४ ॥
प्राति होति लौ लरहु न जाई। बनहि सुचेत लेहि सुध पाई।
दीरघ लरहि कि जावहि भाजि। बडे जतन ते बनि है काज ॥ ५ ॥
सुनि पैंदे खां भले सराहा। इम ही बनहि हनहिं रण मांहा।
कारज होइ सु करि ही लेहि। मृग जिम सिंघ जान नहिं देहि ॥ ६ ॥
फते करहु लिहु सुजसु बडाई। हज़रत निकटि चलहु हरखाई।
सभि के मनसब होई सवाए। हय समेत गुर देहु पुचाए ॥ ७ ॥
कालेखान कह्यो तिस बेरी। कहां कुतब खां ! मसलत तेरी ?।
जंग जामनी कै दिन केरा। गह्यो जाइ जिम गुरु बडेरा ॥ ८ ॥
अस न होइ जयों प्रथम लराई। लला सु कंवर दल समुदाई।
सोवति अबि लौ पाइं पसारे। कारज सर्यो न रण मैं हारे ॥ ९ ॥
यांते म्रिग मारन के काजा। हतनि सिंध को करहि समाजा।
इम कहवति[3] लोकनि ते सुनी। परखन कीनि बात है घनी ॥ १० ॥

---

1. सावधानी। 2 आग। 3. कहावत, लोक-कथन।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कह्यो कुतब खां निसचे ऐसे। आप करी फुरमावन जैसे।
वऊ देखीए भले बिचारो। गुरु सूरमा हते हज़ारों॥ ११॥
एका एकी गह्यो न जाइ। खड़ग प्रहारहि सुभट गिराइ।
हरिगोबिंद बिना सवधानी। इहु नीकी सभि के मन मानी॥ १२॥
पाछल राति परो करि हेला[1]। करो चमूं हति रेल रु पेला।
पैंदा सनमुख तित के जै है। बल बिसाल ते गहि गुर लै है॥ १३॥
अलप बाहिनी मारन कहां। हतहिं तुरत हम लशकर महां।
इम ठानति मसलत जिस काल। चहति चढ़न कहु बीर बिसाल॥ १४॥
तबि लौ धीरमल की पाती। पहुंची तिन ढिग कुमति कुघाती।
अपना आप बचावन कारन। पित गुरु त्याग तुरक अनुसारन॥ १५॥
खोलि पठी सभि महिं बक्खयात। लिखतुम धीरमल निज बात।
पैंदखान ! मैं पक्खी तेरा। नहिं अपमान सहै मन मेरा॥ १६॥
अबि तूं आउ बिलंब न धारो। शाहु संग करि मेल हमारो।
मैं न बिरोध कमावन करों। हज़रत के हमेश अनुसरों॥ १७॥
सुनि सभि के मन हरखति होए। पर्यो भेद[2] घर मैं इम जोए।
उत्तर लिखहु देति सुध रहो। जिम हुइ फते हमारी कहो॥ १८॥
तुरकन ते लिखाइ करि ल्यायो। धीरमल्ल के निकटि पुचायो।
सभि लशकर तयारी तबि कीनि। जहिं कहिं ते हकारि नर लीन॥ १९॥
नहीं जंग की बात सुनावैं। कहैं सु रोपड़ को चलि जावैं।
कालेखान न्याज[3] तिह देनी। निज मुराद हासल करि लेनी॥ २०॥
पीरसखालत वली बिसाला। लशकर सहित तहां को चाला।
लवपुरि ते जबि के इत चाले। भेत न देति कहति इस ढाले॥ २१॥
केतिक दुआबे बिखे पठान। करे इकत्र हकारन ठानि।
अधिक बाहिनी करी बटोर। कितिक आइ मिलि लूटन लोर॥ २२॥
काले खां सभि को सनमानै। खान पान दे म्रिदुल बखानै।
लशकर बडो देखि करि फूला। जंग करनि को चित अनुकूला॥ २३॥
चढ्यो निसा महिं बजे निशान। ततछिन पाए ज़ीन किकान[4]।
गुलकां गन बरूद बरताई। पुरि ते वहिर निकसि थिर थाई॥ २४॥
अरध लाख अरु दोइ हज़ार। कालेखान साथ असवार।
सैना सहस्र इकादश आनि। कुतबखान के संग प्यान॥ २५॥

1. हमला। 2. फूट। 3. पीर को दी गई भेंट। 4. घोड़ा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सभि दुआबे ते करी बटोरि। चमूं सहस्र दोइ दस और।
सगरी भई पञ्चत्र हज़ार। अपर सँकरे मिलि असवार॥ २६॥
मिले आनि जित कित ते तुरक। प्रेरे काल होनि को गरक।
कितिक ऊन भा लशकर लाख। लेकरि साथ जंग अभिलाख॥ २७॥
निज निज मिसलनि बजे नगारे। निकसे नगर होइ सभि त्यारे।
पीवति मिलि शराब मतवारे। बाक अटपटे करति उचारे॥ २८॥
सागर मनहुं उछल करि चाला। गमन्यो लशकर एव बिसाला।
उडी धूल छाद्यो असमाना। करनि नैन महिं परहि महाना॥ २९॥
उड़गन चंद न परहि दिखाई। मनहुं घटा चहुदिशि घिर आई।
चल्यो शलभ[1] दल ब्रिंद मनिंद। सिंधु अहैं श्री हरिगोबिंद॥ ३०॥
बूडि बूडि सगरे मरि जै हैं। थिर होवनि को थांव न पैहैं।
लशकर संग लए इम सारा। कालेखां गमनयो मुद धारा॥ ३१॥
भए कुशगन सु मरन जनावें। बाम[2] बिलोचन सभि फुरकावें।
शिवा अशिवा समुख को धावें। मुख ते अगनी बमति दिखावें॥ ३२॥
उलकापात होति बहुतेरे। बोलति हैं उलूक चहुं फेरे।
भर्‌यो हुतो को नगर मझारी। रुदनि सुनावति हैं बहु नारी॥ ३३॥
पैंदा कुतबखान बलवाना। लीने संग खान असमाना।
× × × ×[3] मसलत करति लरन की, चाले॥ ३४॥
मारग अरध गए चलि जबै। मिल्यो मलक दातार सु तबै।
कुछक सैन है जिसके संग। कुतबखान को भ्रात सु अंग॥ ३५॥
करि सलाम को बूझति खर्‌यो। कित को सभिनि प्याना कर्‌यो ?।
कालेखां बोल्यो गरबाइ। केहरि बनी रहै इस थाइं॥ ३६॥
बहुत जीव संघारनि करे। को बल धारि न आगे अरे।
तिस के हित शिकार को चाले। अबि संघारहिं खोजि बिसाले॥ ३७॥
इम कहि सुनि करि हरख करंते। चलति अगारी चौंप धरंते।
छोटे मीर ग्राम लौ गए। जाइ सु लशकर इक थल भए॥ ३८॥
भर्‌यो धूर ते सो तबि ग्राम। लूट परी ढहिगे सभि धाम।
निसा बिखै नहिं जाहिं पछाने। मिल्यो गरद मैं भा सभि हाने॥ ३९॥
गुर को बाक साच सो भयो। उतरे जबहि उचरि जो दयो।
पैंदेखान खान असमान। मिलि करि कुतबखान इक थान॥ ४०॥

---

1. टिड्डी दल। 2. बाईं आंख। 3. पंक्ति मूल पाठ में ही नहीं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनवरखान मलक दातार। मिलि मसलत को करति उचार।
विनां शबद ते अबि चलि परीयहि। सकल अचानक प्रानि हरीअहि ॥ ४१ ॥
पैंदा कहै 'जाउ मैं तहां। गुर को पौर निकसिबे जहां।
निकसति अंक भरों बसि करौं। जीवति गहौं महां बल धरौं ॥ ४२ ॥
पुरि के लुट लेहु सभि ऐन। हनहु तुरत गुर की लघु सैन।
कारज सुगम भले बनि जाइ। इही रीति हमरे मन भाइं ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे 'लशकर चढ़ि आवन' प्रसंग बरननं नाम एक उनबिंसती अंशु ॥ १९ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २०

# जंग प्रसंग

**दोहरा**

सतिगुर हरिगोविंद जी बडे बहादुर धीर।
मार निकास्यो खान को लखि निंदक बेपीर ॥ १ ॥

**पाधड़ी छंद**

करि खान पान सवधान बीर। करतार पुरे चहुं दिशनि भीर।
हुइ सनध-बद्ध भट अरध जोइ। बिसराम हेतु लिहु अरध सोइ ॥ २ ॥
तुरकान सैन ते बनि सुचेत। सुनि शबद उनहु सभि जंग हेतु।
गुलकां बरुद लीजहि संभाल। सुनि सुभट गुरु के बलि बिसाल ॥ ३ ॥
गुर हुकम पाइ ह्वै कै सुचेत। गरजे बिलंद बड जंग हेतु।
गहि सिपर खड़ग कट कसनि कीनि। निज निज तुरंग पर पाइ जीन ॥ ४ ॥
हुइ सनध-बद्ध फिरते चुफेर। तुरकान हानि रण चहिं बडेर।
जबि सवा जाम रहि गी सु राति। गुर गिरा पढति सिख फिरत जाति ॥ ५ ॥
धुनि उठति ऊच सुनियति दूर। करतार पुरे चहुं गिरद भूर।
जबि सुनी आनि तुरकान कान। उर भए शुद्ध करि कपट हानि ॥ ६ ॥
तबि कालेखां बोल्यो सुनाइ। अबि भयो नेर जान्यो सु जाइ।
सम कातुर[2] दुंदभि नहिं बजाइ। इह अनुचित गति नहिं मुहि सुहाइ ॥ ७ ॥
तजि देहु कपट भा जंग भेर। धौंसनि बजाइ अबि करहु नेर।
कहि कुतबखान अरु पैंदखान। इहु आप जि मरज़ी दिहु निशान ॥ ८ ॥
अबि करहु न बिलम बिहाइ काल। इक बार परहु हमला बिसाल।
पुरि महिं प्रवेश हुइ करहु मार। नहिं अरन देहु सैना अगार ॥ ९ ॥
जबि कर्यो हुकम दुंदभि बजाइ। तबि दई चोब दुहरी लगाइ।
धुनि परी कान जोधनि आइ। सवधान हुते चहुंदिशि फिराइ ॥ १० ॥
दिज मलक जाति तिन महिं फिरंति। हूजहि त्यार सभि को कहंति।
सुध करो गुरु ढिग जाइ थाइ। सवधान बनहु हित लरन आइ ॥ ११ ॥

---

1. गुरु वाणी। 2. कायर।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हय को भजाइ पहुंचयो तुरंग। उतर्यो सु पौर अंतरि बरंत।
गुर अग्र सौच करिकै शनान। थिर रूप सच्चिदानंद ध्यान ॥ १२ ॥
तबि गयो बिप्र कीनसि बखान। दल तुरक आइ पहुंच्यो महान्।
जिम होइ हुकम कीजहि उपाइ। चढि चलहि बीर जिस लेहु नाइ ॥ १३ ॥
सुधि भाखि बिप्र रहि ठांढि तीर। श्री हरिगुविंद सुनि बीर धीर।
जपु कीनि पाठ चित एक होइ। प्रभु सरब कला समरत्थ सोइ ॥ १४ ॥
पठि अंत कीनि सिर को निवाइ। तबि सुनी तुफंगन[1] धुनि उठाइ।
सवधान बीर जे अग्र ठांढि। रण भयो प्रथम तहिं रोस बाढ ॥ १५ ॥
जिम भाठ बिखै भुजियंति यान। सुनियंति तथा बहु शब्द कान।
तबि भन्यो बिप्र सों छिप्र जाइ। लक्खू सुबीर दीजै चढाइ ॥ १६ ॥
जबि हती सांग रण प्रथम मांहि। किय सैनपती लखि सुभट तांहि।
गुर कह्यो पंच सै सैन संग। तुरकान हान हित रचहि जंग ॥ १७ ॥
भट मिहर चंद अमीआं सु दोइ। दल संग चार सै लेहिं सोइ।
तिस की सहाइ महिं सावधान। दुहुं दिशा रहहिं रिपु करहिं हान ॥ १८ ॥
नौं सै सऊर[2] हैं शेख जोइ। पुरि करहिं रच्छ दिशिनि सोइ।
भट हुते ग्रशट दस सै तुरंग। जो बचे करति जंगल सु जंग ॥ १९ ॥
सिख हुते बहुत देसान आइ। सभि हुईं सुचेत सतिगुर अलाइ।
दिज मलक जति सुनि हुकम थाइ। लक्खू प्रचंड दीनसि चढाइ ॥ २० ॥
पशचात् सैनपति जुग सुचेत। सुनि हुकम चढे बड जंग हेतु।
बहु भयो कुलाहल[3] सगल थान। चलि ज्वालावमणी[4] शबद ठानि ॥ २१ ॥
सूरनि अनंद कातुर डरंति। गुर के निशान ऊचे बजंति।
तबि श्री गुरदित्ता निकटि आइ। हुइ सनधबद्ध रिपु लरनि चाइ ॥ २२ ॥
पित की निदेश[5] चाहति बिसाल। कर धर्यो धनुख निशठुर कराल।
मिलि सुभटन महिं पूरब कहंति। रन समै न पित के ढिग रहंति ॥ २३ ॥
चित चहति रहति लहि मुदत्वान। लखि पुत्र कामना गुर बखानि।
जबि लगि सु निसा रहि अंधकार। पर अगर नरनि नहिं पीर दिनार ॥ २४ ॥
तबि लगे नगर महि रहु फिरंति। सवधान सभिनि जोधा करंति।
हुइ प्राति लरहिं तबि खेत मांहि। गन तुरक आइ हति प्रान तांहि ॥ २५ ॥
इम पिता बाक को सीस धारि। हय चढ्यो फिरति सूरनि मझार।
जित गोल तुरक को आइ जोर। तित जाति सूरमे दौरि दौरि ॥ २६ ॥

1. बंदूक। 2. सवार। 3. शोर। 4. बंदूक। 5. आज्ञा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तजि तुपक तुंड को तोरि तोरि। करि घोर जंग दें मोरि मोरि।
तीखन खतंग तबि छोरि छोरि। शत्रुनि सरीर गन फोरि फोरि॥ २७॥
गन तुरक जि हेला घालि घालि। हय सूर मारि छित डालि डालि।
घमसान घनो करि बारि बारि। जे परहिं आइ तिन मारि मारि॥ २८॥

**प्रमाणका छंद**

तुफंग छोरि छोरि कै। खतंग[1] चांप जोरि कै।
प्रहारि शत्रु गेरते। परे बिहाल टेरते॥ २९॥
तुरंग अंग भंग ह्वै। गिरंति सूर संग ह्वै।
तजंति फेर धाइ हैं। परंति एक आइ हैं॥ ३०॥
कुलाहलं हला हली। बलीन मैं चलाचली।
सु ज़ोर पाइ आवते। थिरंति लागि घाव ते॥ ३१॥
न तीर होनि पावते। सु चार ओर धावते।
परंति हूह देय कै। मुरंति घाव खेय कै॥ ३२॥
बिलंद कोप धारि ही। उचारि मारि मारि ही।
लगें तुफंग तीर ही। गिरंति धीर बीर ही॥ ३३॥
परे तुरंग सूरमा। मिलंति जाति धूर मा।
दिखंति ना अंधेर मैं। धवाइ जे दरेर मैं॥ ३४॥
गिरंति तांहि ऊपरे। बिना हते सु भू परे।
दरंति पाइ संग ते। पलाइकै तुरंग ते॥ ३५॥
तूफंग के तड़ाक ह्वै। खतंग के सड़ाक ह्वै।
मच्यो घमंड घोर ही। मरें न तुंड मोरि ही॥ ३६॥
कितेक त्रास पाइ कै। न होति सामुहाइकै।
टरंति आन थान को। प्रहान कै गुमान को॥ ३७॥
बजे जुझाऊ बादिता। उतंग जंग नादता।
प्रचार बीर आवते। मरें तुफंग घाव ते॥ ३८॥
बिलंब ना लगंति है। चटापटी जुझंति हैं।
बिसाल शोर माचिओ। लहू सु धूलि राचिओ॥ ३९॥

**दोहरा**

इस प्रकार संघर[2] मच्यो तिमर जामनी[3] मांहि।
धुखहिं पलीते ब्रिद ही उठहिं शबद बड जांहि॥ ४०॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे 'जंग' प्रसंग वरननं नाम बिसती अंशु॥ २०॥

---

1. तीर। 2. युद्ध। 3. अंधेरी रात।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २१

# निस जंग प्रसंग

### दोहरा

लिए बाहनी लरति भा लक्खू बीर विसाल।
जित दिश आवहि टोल रिपु हनहि तुफंग कराल ॥ १ ॥

### भुजंग प्रयात छंद

नहीं नेर ढुके कुप्यो खान काला। सु ऊचे उचार्यो कठोरं विसाला।
कहां त्रास धार्यो खरे देर लावो। करो क्यों न हेला सु आपा बचावो॥ २ ॥
गुरु सैन थोरी जथा लौन आटा। परो एक बारी असी काढि काटा।
चढे सूर जो लौ फते लेहु पाई। जबै क्रोध के खान बानी सुनाई॥ ३ ॥
हुते बीर सैनापति ओज धारे। चमू सों कह्यो करं ठांढे निहारे।
चलो क्यों न आगे करहु प्रान प्यारे। पर्यो शाह को काज कीजै सुधारे॥ ४ ॥
सुनी खान कालं जु बीसं हजारा। दलं चालि आगै चह्यो जंग भारा।
हकं हाक बाजी, तुरंगं धवाए। करै त्यार हाथै तुफंगैं उठाए॥ ५ ॥
हला हाल बोलैं धकाधक्क होए। अंधेरा महां धूर दीखे न कोय।
गिरे बीर केते मरे सो अटंके। परे ऊपरे ना उठे ह्वै अतंके ॥ ६ ॥
संभारैं किते हाथ डारी तुफंगैं। किते छूटिकै छूछ दौरे तुरंगै।
बिना भार कीने मरे शत्रु केतें। तरे ऊपरे होति भै के समेते॥ ७ ॥
सहंस्रं जु बीसं ढके वाइ धौंसे। इते बीर लक्खू लिए संग नौसैं।
भयो ठाढि आगे तुफंगैं चलाई। दड़ा दाड़ गेरे लगी बेग जाई ॥ ८ ॥
जिती छोरि गोरी सभी लागि बीरं। नहीं छूछ[2] कोई गई होइ तीरं।
इकंवार मैं सूर नौं सै गिराए। पुन पाई बारूद त्यारी कराए॥ ९ ॥
छणंकार होवैं गजं केर भारे। दु गोरी स पावैं टुकै छिप्प्र डारे।
पलीतानि बारूद मेलैं जमावै। कला पै जड़ै मोड़ तोड़े टिकावैं ॥ १० ॥
धरैं हाथ पै सामूहे शत्रु ब्रिंदा। चलावैं लगैं जाई जोधे निकंदा।
प्रकाशैं पलीते शुभैं जंग थाने। अंधेरी निसा मांहि समूहं टनाने[3]। ११ ॥

---

1. तलवार। 2. खाली। 3. पटबीजन।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनो बारिधारी[1] गिरै गाज भारी। इमं होति नादं तुफंगैं छुटारी।
दुहूं और धौंमानि धुंकार गाढा। मनो मेघ गाजो महां नाद बाढा। १२ ॥
परें ब्रिद गोरी वृठे खेत ओरे[2]। क्रिखी बीर बंके सु थोरे न तोरे।
तुफंगान दूजे प्रहारयो सु वारा। गिरे सूर गोरे भयो त्रास भारा ॥ १३ ॥
जुआला बमंती तबै दृष्टि आवै। अंधेरा सु दूरं न देखन पावै।
सु होए बिहालं महां मारमाची। हय सूर के शोण[3] सों भूमि राची ॥ १४ ॥
इसी रीति मारो घमंसान मेला। गुरु बीर मोरे जबै घालि हेला।
फटें तुंड आगैं मिटे जाहिं पाछै। नहीं फेर आवंन को चीत वांछैं ॥ १५ ॥
दिशा दूसरी को पुरं केर जावैं। तहां और बीरं तुफंगै चलावैं।
नहीं होनि दें नेर हेला जु घालैं। करैं मार गोरी ततंकाल डालैं ॥ १६॥
फिरैं आलवाले चलैं चुंग होय। जिते ज़ोर वालैं सकैं ना खरोए।
परै मार गोरीन की एक वारा। सहारैं न शत्रु गिरैं ह्वैं सुमारा ॥ १७ ॥
कितै प्रान हाने कितै भाज जै है। कितं देखि कै मूरछा ते गिरै हैं।
परैं भूम औंधे बहैं श्रोण अंगा। भए अंध जैसे बडी धल संगा ॥ १८ ॥
चढी स्वास सों भीस सों नासका मैं। गए कान पूरे तथा बाहिका मैं।
धका धक्क होई धवाए तुरंगा। गिरे खेत जोधा मले पाई संगा ॥ १९ ॥

दोहरा

अरे अधिक गर सूरमे मरे तुरक गन जानि।
कुतबखान सों रिसु कह्यो निगठुर कालेखान ॥ २० ॥
दव घटिका में फजर[4] ह्वै सर्‌यो न कारज कोइ।
पुरि समीपता नहिं भई कहां मारि लुटि होइ ॥ २१ ॥

पाधड़ी छंद

सुनि कुतबखान धारंति धीर। तम धूर अधिक ते कषट वीर।
लर सके न प्राक्रम[5] कुछ दिखाइ। नहिं शत्रु अग्र जान्यो सु जाइ ॥ २२ ॥
जबि करहिं हेल हय मेलि पेलि। भिर परहिं आप लागति धकेल।
गिर मरें ब्रिंद उठने न पाइ। दरडंति जाति ऊपर धवाइ ॥ २३ ॥
बहु लरे बीर नहिं सरहि कार। अबि होइ फजर तबि लेहु मार।
लशकर न बाद दीजै मराइ। पुरि सनै सनै लैहैं छुराइ ॥ २४ ॥
ढिग पैंदखान कहि नीक बात। सवधान करहु अबि होहि प्रात।
मैं मिलौं संग हेला[6] कराइ। इक बार गहौं गुर निकटि जाइ ॥ २५ ॥

---

1. बादल। 2. जैसे खेत में ओले पड़े हों। 3. खून। 4. प्रभात। 5. बल। 6. धावा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इत्यादि खरे सभि कहति बैन। बड जंग होति चहिं पिखनि नैन।
किम अरे बीर धोरे अगाइ। बिसमाइ रिदै लशकर लराइ ॥ २६ ॥
बहु नमसकारनी छोरि छोरि। सुभटनि सरीर को फोरि फोरि।
करि प्रान हानि छित डालि डालि। गन लोथ पोथ हय घालि घालि ॥२७ ॥
बहु तुरक तुरंग अंबार लाग। रणखेत परे तन त्यागि त्यागि।
इक मुख कराहते हाइ हाइ। दुख महां घाव गन खाइ खाइ ॥ २८ ॥
गुर सूर थोरहूँ लागि घाइ। प्रभु महाराज होवति सहाइ।
तुरकनि हज़ार हूं प्रान हानि। मिलि धूर परे सुपते महान् ॥ २९ ॥
बहु भयो पंक श्रोणंति चालि। इस लरति मरति रण घालि घालि।
बिति गई जामनी तम समेत। नभ चढ्यो दिनेश प्रकाश हेतु ॥ ३० ॥
तबि लगे दिखन भट आप मांहि। तकि तीर तुफंगनि हतहिं तांहि।
तोमर बिलंद ऊचे उभारि। किन कराचौल लीने निकारि ॥ ३१ ॥
जुट परे काटिं[1] सुभट अंग। खंडे प्रचंड दुइ धार संग।
बहि चलयो श्रोण[2] ते बसत्र लाल। जनु कुसमत किंसक तरु[3] बिसाल ॥ ३२ ॥
कै रंग पतंगी पाइ पाइ। भट फाग खेलते धाइ धाइ।
कहिं मार गीत जनु गाइ गाइ। मिलि जाहिं बीर चित चाइ चाइ ॥ ३३ ॥
हुइ जूथ जंबुकनि[4] करि पुकार। उर अनंद अधिक आसिख[5] अहार।
बहु फिरति जोगनी श्रोण पान। भरि भरि कपाल तृपतैं महान ॥ ३४ ॥
निज उदर पुरि लेती डकार। गावंति गीत पावति धमार।
गन कं क कंक कूकै कराल। बहु मिली ग्रिज्झ भक्खहिं विशाल ॥ ३५ ॥
बड भयो भीम रण खेत हेरि। नर तुरंग मरे धर पर घनेर।
दारुन महान कूकर शृगाल[3]। मिलि मास अहारी बिहंग जाल ॥ ३६ ॥
कह कह हसंति काली कराल। कर रकत खपर लटकंति बाल।
पोअंति मुंड माला बिसाल। बहु नचहिं जोगनी बजहि ताल ॥ ३७ ॥
छुटकंति तुपक फटकंति देहि। लटकंति गिरति मिलियंति खेह।
करतार पुरा दीपक मनिंद। जनु तुरक पतंग सु परति ब्रिंद ॥ ३८ ॥
बिन बिलम मरे लागे सु ढेर। जित कित दिखंति पुरि के चुफेर।
तबि कालेखां उमराव जोइ। लशकर सु मर्यो बहु नैन जोइ ॥ ३९ ॥
इह भयो कहां मन मैं हिरान। नहिं लग्यो काल भट नाश प्रान।
रहि शेख अरध, जाने सु जाइ। मन पाइ त्रास मुख नहिं अलाइ ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सुरज ग्रंथे अशटम रासे 'निस जंग' प्रसंग बरननं नाम एकबिसती अंशु ॥ २१ ॥

1. तलवार। 2. खून। 3. केसू के वृक्ष। 4. गीदड़। 5. मास।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २२

# जंग प्रसंग

### दोहरा

भई प्रभाति बिलोकि कै लशकर हति भा ब्रिंद ।
कुतब, पैंद, अनवर अपर लखि कै बली बिलंद ॥ १ ॥

### रसावल छंद

रिस्यो खान काला । इतो तातकाला ।
कह्यो कोप संगा । न कोट उतंगा ॥ २ ॥
नहीं दीह खाई । लरे दूर आई ।
मरे बीर आधे । नहीं शत्रु साधे ॥ ३ ॥
कहां बात होई । करो क्यों न ढोई ?
परै ब्रिंद हेला । रिपु रेलि पेला ॥ ४ ॥
जिती देर धारो । तितो ह्वै बिगारो ।
चहूं ओर घेरा । करो एक बेरा ॥ ५ ॥

### दोहरा

कुतबखान ! पूरब दिशा दस हजार लै सैन ।
पुरि के सनमुख हेल करि, मारि करहु बिन चैन ॥ ६ ॥
अनवर अरु असमान खां ! दक्खण दिशि की ओर ।
पुरि कै निकटि पहूचिकै करीए संघर घोर ॥ ७ ॥

### सोरठा

दस हज़ार लिहु संग, जबि हेला सगरे करहिं ।
कराचोल के जंग, लरति लरति पुरि महिं बरहिं ॥ ८ ॥
मैं पशचम दिशि ठांढि, इति ते करौं प्रवेश को ।
हतहिं खड्ग को काढि, रिहि जु आइ अशेष को ॥ ९ ॥
पैंदखान बलवान, उत्तर दिशि लरिकै परहि ।
लिहु बिचलाइ महान, मारि मारि करिकै बरहिं ॥ १० ॥



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इम मसलत को धारि, लै लै दसं हज़ार दल।
चार ओर हुइ चार, भनति परसपर अपन बल ॥ ११ ॥

### रसावल छंद

बजाए नगारे। चले चौंप धारे।
जुदी सैन कीनी। निजं संग लीनी ॥ १२ ॥
सुरा पान कीने। रणं रंग भीने।
बडे चुंग[1] होए। चहै शत्रु ढोए ॥ १३ ॥
बकैं बीर बंके। बिसाले निशंके।
गुरू थान कौने ?। पिखों क्यों न तौने ॥ १४ ॥
बली जो कहावै। नहीं दाव खावै।
गहो क्यों न जै कै। किधौं मारि धैंकै ॥ १५ ॥
इमं ऊच भाखें। बिसालाभिलाखै ।
भए चार ओरं। कर्यो जंग घोरं ॥ १६ ॥
तुफंगैं चलाई। तुरंगैं धवाई।
महा नाद होवा। बिधी चंद जोवा ॥ १७ ॥
चहूं ओर हेरा। जथा पाइ घेरा।
सभी भेत जाना। जथा शत्रु ठाना ॥ १८ ॥
पुरी के चुफेरे। फिर्यो बीर हेरे।
जथा चार थाईं। रिपु सैन आई ॥ १९ ॥
गुरु पास जै कै। सुनाई सबै कै।
बंधे चार गोलं। बकैं ऊँच बोलं ॥ २० ॥
चहैं बीच आए। बडो ज़ोर पाए।
सु कीजै उपाई। रिपु लेहु घाई ॥ २१ ॥
सुनी बात सारी। गुरु यौं उचारी।
जिती सैन भारी। करो थाउं चारी ॥ २२ ॥

### दोहरा

पूरब दिशि जाती मलक ले दल संग समुहाइ।
मिहरचंद अमीआं दूती दक्खण दिश को जाइ ॥ २३ ॥
लक्खू पशचमु दिशि लरै लै सैना सवधान।
रहहि पीन करि पुरि निकटि, हनहि तुफंग महान ॥ २४ ॥

---

1. मंडली।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिधीचंद ! संग चमु के, उत्तर दिशा पधारि।
वधहु अग्र नहि अधिक तुम, ढिग रिपु पहुंचहि गार ॥ २५ ॥

रसावल छंद

गुरु बैन श्रोने। लए मानि तौने।
करी संग सैना। चले वीर भै ना ॥ २६ ॥

जहां खान काला। बडो हेल घाला।
गयो वीर लक्खू। महां ओज रक्खू ॥ २७ ॥

तुफंगै चलाई। कि नेजे भ्रमाई।
बडे बान मारे। सु लोहा करारे ॥ २८ ॥

किते सांग मारैं। कृपानैं प्रहारैं।
तुफंगानि मेला। लियो झालि हेला ॥ २९ ॥

खरे थंभ जैसे। हले सो न कैसे।
अरे होई सौहैं। करी बंक भौहैं ॥ ३० ॥

दड़ा दाड़ गेरैं। तुरंगैं घनेरैं।
उत्थलैं पत्थलैं। नहीं पाइ हल्लैं ॥ ३१ ॥

महां शस्त्र खाए। रिपू[1] बृंद धाए।
भयो जंग भारी। परी भूर[2] मारी ॥ ३२ ॥

चले खग्ग खंडे। दुधारे प्रचंडे।
करे खंड खंडे। घने ही घुमंडे ॥ ३३ ॥

भए रुंड मुंडे। किनू जंर छंडे।
कटी ग्रीव[3] बाहू। परे भूमि मांहू ॥ ३४ ॥

किसू सीस काटा। किनू कोड़ डाटा।
रिपु नेर होए। सु नेजे परोए ॥ ३५ ॥

तुफंगानि छोरी। किसू मारि गोरी।
कि सांग[4] प्रहारी। भजे भीरु भारी ॥ ३६ ॥

महां लोह माचा। लहू धूल राचा।
किसू तुंड[5] खंडा। कि सीसं बिहंडा ॥ ३७ ॥

हथावत्थ होए। रिपू कीनि ढोए।
चलैं तीर तीखे। जु सरपं सरीखे ॥ ३८ ॥

---

1. वैरी। 2. अधिक। 3. गर्दन। 4. बरछी। 5. मुंह।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भयो भूर नादं। करें सूर बादं।
गुरु त्यार होए। महां जंग जोए॥ ३९॥
धरे जुद्ध चीरं। सुभंते शरीरं।
बडो खग्ग[1] भारा। गरे बीच धारा॥ ४०॥
लई ढाल चौरी। हुती भार गौरी।
लगाई पिछारे। महां शोभ धारे॥ ४१॥
शुभं भूर भाथा। भर्यो बान साथा।
लग्यो हेम[2] जांही। दिपैं हीर मांही॥ ४२॥
सु मोतीनि गुच्छे। भले गोल सुछे।
सज्यो अंग संगा। गह्यो चांप चंगा॥ ४३॥
कठोरें बिसाला। महां भार वाला।
हयं जान भाई। सु लीनो मंगाई॥ ४४॥
बडो रौर होवा। चहूं ओर जोवा।
मच्यो जंग भारा। सु लोहा करारा॥ ४५॥
गुरु कोट तीरं। खरे संधि तीरं।
महां शत्रु हेरे। लगंते घनेरे॥ ४६॥
तिन्हों ताकि मारा। चल्यो शूक मारा।
डसे शत्र जाई। जु आयो अगाई॥ ४७॥
बिध्यो एक दोऊ। त्रिती चौथ सोऊ।
जुऊ आइ आगे। गये बीध लागे॥ ४८॥
पर्यो पार जाई। रिपूना अगाई।
मरे बीर घोरा। इकं बान छोरा॥ ४९॥
जथा पौन केले। गिरावै धकेले।
तथा एक बारी। गिरे शत्र झारी॥ ५०॥
पुनं और जोरा। धनु[3] ऐंचि घोरा।
लग्यो कान पाना। करे तान ताना॥ ५१॥
तज्यो नाद होवा। रिपु कै परोवा।
नहीं जाइ जाना। परै पार बाना॥ ५२॥
इसी रीति छोरे। फिरे चार ओरे।
जहां ज़ोर घालैं। तहां छिप्प्र चालैं॥ ५३॥

---

1. तेग। 2. सोना। 3. धनुष।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हतैं तीर तीखे। जु सरपं सरीखे।
मरैं सूर घोरे। पुरं चार ओरे।। ५४ ।।
बडा हेल मेला। चहैं रेलि पेला।
परै मार आगे। गिरैं शसत्र लागे।। ५५ ।।
पिछै पाइ घालैं। नहीं अग्ग्र चालैं।
डरैं हेरि मारैं। नहीं धीर धारैं।। ५६ ।।
तुफ़ंगानि गोरी। लगैं अंग फोरी।
परैं झूम घूमैं। मिलैं धूलि भू मैं।। ५७ ।।
नहीं अग्ग्र आवैं। महां त्रास पावैं।
गुरु बान लागैं। तबै प्रान त्यागैं।। ५८ ।।
चहूं ओर मारे। सु लागे अंबारे।
तुरंगं कि बीरा। परे ह्वै बिखीरा।। ५९ ।।
परैं दौर कै कै। फिरैं मार खैकै।
तबै खान काला। हिरानं बिसाला।। ६० ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे 'जंग प्रसंग' बरननं नाम दोइ बिसती अंशु ।। २२ ।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २३

# खोजा अनवर बध प्रसंग

**दोहरा**

इम चहुं दिशि मैं गोल दल संग लिए सरदार ।
चहति बरन को जोर ते सभि श्री पुरि करतार ॥ १ ॥

**तोमर छंद**

गहि तीर तोमर फेर । तुरकान को हति गेर ।
मिहरा महां बर बीर । अमियां सहायक धीर ॥ २ ॥

गुर को प्रताप बिसाल । करि जंग कोप कराल ।
असमान खान महान । जहिं ठांढि मारति बान ॥ ३ ॥
जिह संग दूत सहाइ । जिन मार पूरब खाइ ।
बिन लाज मूरख फेर । गुर सों चहै भट भेर ॥ ४ ॥
दिश दौन मैं सरदार । बहु कोप ते भट चार ।
गन सैंन लैं करि संग । पग रोपिकै किय जंग ॥ ५ ॥
दिशि दक्खनी घमसान । बहु कीनि हा भट प्रान ।
गुलकान को बरखाइ । करका मनो घन पाइ ॥ ६ ॥
सिर फूटि हांडनि जैंस । उर फोरि मारति हैंस ।
तुरकानि हेल सु घालि । कर ऐंचि कै करवाल ॥ ७ ॥
गुर सैंन पै चलि आइ । मिलिगे तबै समुदाइ ।
मुख मारि मारि उचारि । गहि तोमरें तरवार ॥ ८ ॥
मिहरारुपयो धरि धीर । धनु ऐंचि मारति तीर ।
सुभटा नि को ललकारि । तुपकानि गोरिनि मारि ॥ ९ ॥
खर सांग मारि धसाइ । तरवार ते करि धाइ ।
गन तुंड मुंड बिहंड । करि खंड खंड घमंडि ॥ १० ॥
जुटि आप मैं तिस बार । इकसार होवति मारि ।
कटि अंग श्रोणत[1] भीज । रण खेत मैं जनु बीज ॥ ११ ॥

---

1. खून ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बहु बीर घाइल होइ। मरि भूम पै परि कोइ।
असमान खान खतंग। गुर बीर बेधति अंग ।। १२ ।।
किह सीस पै तरवार। किह कंध को कटि डारि।
मुख छेद कीनसि काहि। कटि जंघ को चलि नांहि ।। १३ ।।
दिश दक्खणी बड शोर। तुरकान दीनसि ज़ोर।
गुर तीर धाइ सुनाइ। ढिग आइगे समुदाइ ।। १४ ।।

बिधीआ हुतो तबि तीर। तिह संग बोलति धीर।
उत जाहु बीर ! शिताब। दल शत्रु लीजहि दाब ।। १५ ।।
हति आयुधानि हटाइ। दिहु काट जो समुहाइ।
सुनि बाक को हरिखाइ। ततकाल बाज धवाइ ।। १६ ।।
अमियां घिर्‌यो जहिं बीर। रुप मारितो गन तीर।
मिहरा सहाइ करंति। ललकार काटि गिरंति ।। १७ ।।
बिधीआ गयो जिम शेर। निज बीर देति दलेरि।
गुर ओजको उरधारि। तुरकानि को लिहु मारि ।। १८ ।।
तजि तीर आप कराल। बहु बेधिकै रिपु साल।
पग रोपि कै अगुवाइ। सम धभ के थिर थाई ।। १९ ।।
तुरकान आइ जि हेल। सभि मारिकै तिह झेलि।
तिन मोरि पाछल पाइ। रुपिकै रह्यो अगुवाइ ।। २० ।।

**पाधड़ी छंद**

तबि अनवरखान बिलोकि सैन। किम सुभट हटति रण लरति है न।
को अर्‌यो आइ नहिं जानि देति। गमन्‌यो अगाइ बिच जंग खेत ।। २१ ।।
लै बीर कितिक करि रेल पेल। बिच बर्‌यो आइ बकि हेल हेल।
पिखि बिधी चंद ललकार तांहि। मिलि परे बीर तबि आप मांहि ।। २२ ।।
कीनसि विचारि तबि खान देखि। गुरसिक्ख अधिक रहि ढिग विशेख।
इहकार दार श्री हरि गुविंद। लिहु मारि मिलहु चहूं ओर ब्रिंद ।। २३ ।।
असमान खान को संग लीनि। चहूं ओर ओरड़े ज़ोर दीनि।
बड पर्‌यो रीर छूटहिं तुफंग। इति गुरु सिक्ख मिलि एक संग ।। २४ ।।
हत्थयार हाथ लै सावधान, तबि बिधीचंद कोप्यो महान।
धनु[1] ऐंचि ऐंचि त्यागति तीर। तुरकानि ताकि वेधति सरीर ।। २५ ।।

---

1. धनुष।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिस लगहिं नहीं जाचंति नीर। परि पार शुशक गेरंति बीर।
तबि अर्यो आइ अनवर पठान। बहु कोप संग कीनसि बखान।। २६ ।।
विसकार कीनि बहु मार मोहि। बिच सभा आबरू खोइ तोहि।
अबि लेहुं सु पलटा करि विलाश। तजि देहु सरब जीवंनि आस।। २७ ।।
तव मार गुरु को गहहिं जाइ। तबि रहै मोहि पति पुरि लुटाइ।
नहिं शाहु त्रास को तनक कीनि। लशकर तमाम ढिग नाहिं चीन।। २८ ।।
नहिं करन उचित करि मोहि संग। अबि लेहु सु पलटा बीच जंग।
सुनि बिधीचंद कीनसि बखानि। बलवान केहरी गुर महान।। २९ ।।
सम तोहि म्रिग मारे अनेक। जिनको गिनंति नहिं हुइ बिबेक।
अर बडे मसत बल जुति मतंग। सो ललाबेग कंबर जि अंग।। ३० ।।
इति मुगलसखां अबदुल पठान। परिकै निचिंत सुपंते महान।
जे सुपति सिंघ को म्रिग जगाहि। तौ जीवन तिसको होति नाहिं।। ३१ ।।
अबि करहु जगावन तुमहु आइ। बलधार आज दें सभि खपाइ।
नहिं तजहिं करहु कितिक उपाइ। जे जियनि चाहि अबि ते पलाइ।। ३२ ।।
सुनि अनवर मन रिस अधिक धारि। धनु अैंचि ताकि करि सर प्रहार।
लगि जीन मांहि अटक्यो मझार। तबि बिधीचंद हय को संभारि।। ३३ ।।
इत उत धवाइ चौगिरद फेर। गुन नहिं अरोपि खपरा बडेर।
धनु तान कान लगि रिस महान। रिपु ताकि लच्छ छोड्यो सु बान।। ३४ ।।
सम सरप शंक चाल्यो बिसाल। बड वेग सहित लगि शत्रु भाल।
पंखनि समेत धसि होइ पार। कुछ रह्यो दिखति बागर[1] अकार।। ३५ ।।
जुग भौंह बीच सो असु सुहाइ। जनु तिलक लाल सुंदर लगाइ।
किह जतन संग कै गुल अनार[2]। बहु सजहि भाल राख्यो सुधारि।। ३६ ।।
जनु बैठि निड्डय महिं सिर निकारि। इहु बत्प सारका[3] मुख पसारि।
जनु बिधीचंद को क्रोध लाल। थिर भयो जाइ तकि शत्र भाल।। ३७ ।।
गिर पर्यो भूमि पर झूंम सोइ। लगि वायुबेग ज्यों ब्रिच्छ कोइ।
पिखि तुरक त्रास को पाइ भूर। तजि चले जंग पिखि शोर सूर।। ३८ ।।
गुर सैन अधिक हमला सु घालि। पुन परे रिपुनि पर बर कराल।
असि कौ निकासि चमकाइ हाथ। करि तछा मुच्छ बड बेग साथ।। ३९ ।।
भाजति कटंति नहिं टिकति पाइ। असमानखान बहु करि उपाइ।
जबि लख्यो कि मेरो हुइ बिनाश। तजि सामुहाइ टरि होइ पास।। ४० ।।

---

1. तीर का पिछला भाग। 2. अनार का फूल। 3. तोते का बच्चा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुर सैना सभि के पग जमाइ। भट करे ठांढि रण लेति नाइ।
तबि बिधीचंद इम जीत पाइ। गुर खरे लरति चलि निकटि आइ ॥ ४१ ॥
सभि कही गाथ अनवर पठान। रण लरतो पलटे हित महान।
पहुंचाइ भिशत निज दल टिकाइ। तुपकानि त्याग तुरकानि घाइ ॥ ४२ ॥
बहु लरति सुभट घमसान घालि। इम दिशा दक्खणी रण कराल।
गुर फते भई दुंदभि बजंति। सभि कहति शब्द जैकारवंति ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे **'खोजा अनवर बध'** प्रसंग बरननं नाम त्रैबिसती अंशु ॥ २३ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २४

## जंग प्रसंग

दोहरा

श्री सतिगुर जोधा बलि छोरति तीछन बान ।
करहिं एक ते नाश गन गिरहिं तुरक तजि प्रान ।। १ ।।

मधुभार छंद

लरिते सु बीर । बिधिते सरीर ।
हुई अग्र धीर । प्रविशंति तीर ।। २ ।।
तुपकैं तड़ाक । गुलकां सड़ाक ।
लगि अंग फोर । उकसैं न थोर ।। ३ ।।
गिरते बिहाल । बहि श्रोण लाल ।
छुटके तुरंग । असवार भंग ।। ४ ।।
गर क्रोध धारी । बहु बान मारि ।
टिकने न देति । बड जंग खेत ।। ५ ।।
उत पैंदखान । मुचकंति बान ।
लगि काहु नाँहि । निफले सु जाहिं ।। ६ ।।
बिसमैं बिसाल । कित जाहिं जाल ।
गुर बीर ब्रिद । थिरते बिलंद ।। ७ ।।
नहिं घाव खाहिं । तिमही दिखाहिं ।
तुरकान नाश । दिखते चुपास ।। ८ ।।
दर[1] पीस पीस । दल ब्रिंद ईश ।
सुभटानि[2] प्रेरि । हुइकै दलेर ।। ९ ।।
जबि होति मार । गिरते सुमार ।
ठटकंति हेरि । नहिं ह्वै अगेर ।। १० ।।

---

1. दांत । 2. शूरबीर ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिशि प्राचि मांहि । कुतुबा लराहि ।
जिस अग्र बिप्र । सर छोरि छिप्र ।। ११ ।।
चहि बीच जानि । पुरि के सथान ।
जबि हेल घालि । तजि शत्रु जाल ।। १२ ।।

दोहरा

थिर ह्वै जाति मलक दिज मारति कसि कसि बान ।
सय्यद मुगल पठान गन, गिरहिं प्रान करि हान ।। १३ ।।

रसावल छंद

गुरु सूर बंके । सु ह्वै कै निशंके ।
कबै शसत्र लागैं । कऊ प्रान त्यागैं ।। १४ ।।
नहीं त्रास मानैं । मिलैं शत्र हानैं ।
सभी बीच बिप्रं । तजैं तीर छिप्रं ।। १५ ।।
पर्यो आनि हेला[1] । महांशोर मेला ।
तुफंगानि नादं । बकैं बीर बादं ।। १६ ।।
रुपैं ढाल हाथे । दुती खग्ग साथे ।
सरोही सु खंडे । दुधारे प्रचंडे ।। १७ ।।
कटाकट्ट काटैं । मनो मास बाटैं ।
भए खंड खंडा । परे भूमि मंडा ।। १८ ।।
किसू काटि तुंडा । पिखे भीरु पंडा ।
चले जंग छंडा । नचै नंग खंडा ।। १९ ।।
फटे बसत्र झंडा । भयो बंस खंडा ।
बडो जुद्धा मंडा । परी मार चंडा ।। २० ।।

दोहरा

कुतबखान जाती मलक लरति करति घमसान ।
दुहूं दिशिनि के सूरमा लगि आयुध[2] हति प्रान ।। २१ ।।

सवैया

यौं चहुं ओर ते मार मची तुरकानि के ढेर लगे मरिकै ।
श्री हरिगोबिंद तीरनि ते बहु बीर सरीर परे थरकैं ।
बेधति पार परैं असु कै नर ना अटकैं खपरे बरि कै ।
बेधन को करि कै सरकैं पिखि कातुर ही धरकैं डरिकै ।। २२ ।।

---

1. शोर । 2. हथियार ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री हरिगोबिंद बीर बहादुर पंनग के सम बान चलावैं।
ब्रिद प्रहारति शत्रनि डारति छूठ निखंग ह्वै और मंगावैं।
लाघवता करि छोरति हैं इकसार ही सार महां बरखावैं।
एक को बेधति द्वै पुन तीनहु चार के पंच छठो सु गिरावैं॥ २३॥
जांहि स्थान लौ शत्र खरे हुई सूर बली कि समूह तुरंगा।
जाइ तहां तक बेधति तीर गिरैं ततकाल फुटैं जिन अंगा
मोट बडे अरु दीरध दारुण आयुत हैं खपरे सु खतंगा।
तीखण लोह पुलाद करे तन पार परे करि प्राननि भंगा॥ २४॥
धाक परी दल जीवति मैं नर कौन बली अस बान प्रहारै।
कौन कुदंड[1] कठोर खिचै इस लाइक ना जग बीच निहारै।
बेधति बीसक लौ चलि जाति परैं तजि प्रानन लोक हज़ारै।
तीर को घाव सरीर बिलोकि अधीरज बीर ह्वै भीरु पधारैं॥ २५॥
शूकति जाति सबेग सपंखन ज्यों चलि धावति तोप को गोरा।
ओट बचै नहिं कोट उपाव ते लोटति भूम परैं तनु घोरा।
पान न ह्लालति पान न जाचति तूरन देति है छोरा।
जांघ कटै कि भुजा कटि जाति फुटै सिर भाल कि दैं उर फोरा॥ २६।
जां दिशि देखति तीर सु आवति धावति तां दिशि ते टरिकै।
धावति प्रान गवावति नाहक ना समुहावति हैं अरिकै।
काहिं न भावति है लरिबे पछुतावति क्यों गमने चरि कै।
को समुझावति दूसर को इत क्यों चलि आवति ना डरिकै॥ २७॥

छोरि तुफंग हज़ारनि को गुलकां घन ओरनि ज्यों बरखावैं।
फेर बरुद उताइल डालति को गज काढति ठोकि उठावैं।
पाइ दुगोरनि को गुर सूर पलीतनि को करि जोर मिलावैं।
पावक डांभि उठावति नाद तड़ाभड़ यौं इक बार चलावैं॥ २८॥
क्रोध करैं चहूं ओर न ते मिलि हेल को घालति शोर मचाए।
ब्रिद तुफंग खतंगन को हति बेधति अंग तुरंग धवाए।
तोमर तुंग भ्रमाइ पहारति यौं तुरकानि परे तहिं आए।
रैन मैं दौं लगि कानन को[3] तिह देखि पतंग मरैं जनु आए॥ २९॥
काले खां प्रेरति टेरति है पुरि घेरति हेरति मार मचाई।
आगे तुफंगनि त्यार करी जब्रि नेर परै गुर सूर चलाई।

1. कमान 2. मस्तक। 3. रात को जैसे जंगल में आग।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पैंद पठान परैं दिशि दूसर तीसर पास मैं तांहि जमाई ।
ओरड़ि यौं चहूं ओरन ते करि ज़ोरकैं शोर लरैं समुहाई ।। ३० ।।
जित ज़ोर परै भट घोर महां तित ओर बिधि ससि जाइ प्रहारै ।
गुर श्री हरिगोबिंद आप किधौं तजि बान कठोर को शत्रु निवारैं ।
पिखि ईछन ते रण भीछन को बहु तीछन ऐंचति कान लौं मारैं ।
करि भंग तुरंगनि सुरनि अंगनि जंग में रंग सुरंग पसारैं ।। ३१ ।।
करि भंग तुरंगनि होति घनो नभ धूम महां पसरयो दृष्टावैं ।
मानहु श्याम घटा घन की गन गोरनि ओरन ज्यों बरखावैं ।
पावक होति बरुद भखे तड़िता[2] सम दीख महा चमकावैं ।
धूर ते पूरन होइ रह्यो पुरि तुरन सुरनि हूर लिजावैं ।। ३२ ।।
चावंड[3] चीकति मास अचैं बहु बाइसु[4] कंक अधावति हैं ।
कूकर जंबुक कूकति हैं गन आमिख ऐंचति खावति हैं ।
श्रोणत[5] पीवति आनंद थीवति जोगनी नाचती गावति हैं ।
दुंदभि ढोल पटे तुररी गन नाद उठाइ बजावति हैं ।। ३३ ।।
पुरि आवनि को रुकि पंथ गयो वड ढेर लग्यो म्रितु घोरन को ।
गन सूरनि के तन बीच परे वहिं श्रोण चल्यो दुहूं ओरन को ।
जनु गेरु के सैल श्रवै बहु थाननं होति नदी लघु बोरन को ।
जनु दूसर कोट रच्यो लरिबे हित ओट करे रिपु मोरनि को ।। ३४ ।।
भैरव थान भयो चहूं ओरन आमिख[6] हाड कि श्रोणत चाला ।
हाथ कटे कित मुंड पर्यो कटि जांघ कटी गन रुंड कराला ।
आइ सकैं न उलंधकै तांहि गिरैं हय हेरि कि त्रास बिसाला ।
छोरि तुफंगनि अंगन भंगनि रंग सुरंग बनैं ततकाला ।। ३५ ।।
सूर तुरंग सरीर परे म्रितु सैल मनिंद पर्यो दृष्टावैं ।
मुंड कटे जनु पाथर के गन जांघ भुजा कटि काठ लखावैं ।
श्रोणत के झरने सु झरैं, मिस ब्रिंद परी जनु फेन उठावैं ।
लांगुल[7] ग्रीवन केस पवंगम[8] ब्रिंद खरे त्रिन सो मन भावैं ।। ३६ ।।
हेर हिरान भए तुरकांन कहा इन की अबि क्यामत आई ।
होइ परे म्रित कौन हते इह शत्रुन थोरनि ते समुदाई ।
जंग कर्यो मिस काल बिसाल लखी इह जाइ हने तिन आई ।
मूढ भए पचि मौन धरी मुख सोचति हैं कुछ जानी न जाई ।। ३७ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे 'जंग' प्रसंग बरननं नाम एक चतुर्बिसती अंशु ।। २४ ।।

---

1. विधिचंद । 2. बिजली । 3. गिरझ । 4. काग । 5. लहू । 6. मांस । 7. पूंछ । 8. घोड़ा ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २५
# जंग प्रसंग

### दोहरा

अधिक गई मरि सैन जबि रही अलप सी आइ ।
करिबे हेल समरत्थ नहिं भे घाइल समुदाइ ॥ १ ॥

### रसावल छंद

रहे दूर ठांढे । महां चित बाढे ।
नहीं नेर आवैं । खरे दूर थावैं ॥ २ ॥
तबै खान काले । बिचार्यो बिसाले ।
रही सैन थोरी । थिरी चार ओरी ॥ ३ ॥
नहीं जंग ठानैं । रिदै त्रास मानैं ।
करै क्वै न हेला । भयो जान मेला ॥ ४ ॥
नहीं ओज धारैं । न आगै पधारैं ।
चमूं ल्यों बटोरी । लरों एक ओरी ॥ ५ ॥
करौं जोर सारे । अरै तांहि मारौं ।
चलें शत्र सौहैं । रिसे बंक भौहैं ॥ ६ ॥
गुरु को पलावैं । अरै ते गहावैं ।
बंगारैं सु पैंदा । नहीं त्रास कैंदा ॥ ७ ॥
बिलोकैं तमाशा । लरैं मोहि पासा ।
रिदै एव धारी । चमूं सो हकारी ॥ ८ ॥
कह्यो जाइ सारे । सभै ही हकारे ।
कहे बाक काले । मिलौ आनि जाले ॥ ९ ॥

### दोहरा

सुनि सुनि कै बच श्रौन[1] मंहि सनै सनै समुदाइ ।
गमने काले खां निकटि हतहिं तुपक पिछवाइ ॥ १० ॥

---

1. कान ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

**पाधड़ी छंद**

असमानखान पहुंच्यो सु धाइ। जो बची बाहनी संग लाइ।
दुंदभि बजंति हारे तुरंग। को भिगे अंग श्रोणत सु रंग ॥ ११ ॥
उतसाह हीन जै ते निरास। मुख मलिन बीर उर भूर त्रास।
सुनि कुतबखान दिशि अपनि छोर। चलि फिर्यो थिरे सभि जांहि ओर ॥ १२ ॥
जे बचे लरंति सभि लीनि संग। दुंदभि बजाइ नादंति उतंग।
जिम गिर बिसाल हड़ रोकि लीनि। टक्कर सु खाइ हटिवो सु कीनि ॥ १३ ॥
तिम जाति सैन बड घाइ खाइ। सुन पैंदखान बीरनि बुलाइ।
निज दिशा छोरि गमनयो सु बीर। उमराव जु कालेखान तीर ॥ १४ ॥
जिम चहूं ओर ते सिमटि नीर। इक थान होति सरुवरु गहीर।
तिम भई सैन इकठी बिसाल। मसलति करंति मिलि बीर जाल ॥ १५ ॥
जिम भए प्रथम रण हार पाइ। तिस रीति होइ जानी सु जाइ।
अबि लरहु एक थल ज़ोर घालि। तजि चहूं ओर घेरा कराल[1] ॥ १६ ॥
गुरु पकर लेहु सभि काज सिद्ध। जिस तसु करहि सुन शाहु ब्रिद्ध।
अबि पैंदखान! सवधान होइ। तुम करहु काज कहि प्रथम जोइ ॥ १७ ॥
सिरुपाउं देहि हज़रत बिसाल। बड बनहि जीवका लिहु संभालि।
नतु मरन नीक मन लेहु जान। सुनि काल बाक कहि कुतबखान ॥ १८ ॥
इम करनि उचित इस थल संभार। गहि लेहु गुरू अबि बिन अवार[2]।
दुहुं दिशिनि सैन जुझैं जुझार। इम लरन बिखै नहि पाइ हार ॥ १९ ॥
कहि लागि लरहु सभि घात होइ। सभि बाद जाहि पकरहु न कोइ।
सुनि पैंदखान बोल्यो गरूर। मैं रह्यो पिखति गुर रहहि दूर ॥ २० ॥
अबि ज़ोर पाइ पहुंचौ नजीक। तुम दिखहु खरे गहि लेहुं ठीक।
निज सैन बिखै आनहुं उठाइ। भट अपर जि पहुंचहि निकटि धाइ ॥ २१ ॥
तिन लेहु रोकि तुम हेलघाल। तबि तुरत सिद्ध कारज बिसाल।
असमानखान सुनि करि बखान। मैं हनौं बान तकि तान तान ॥ २२ ॥
नहि करहु बिलम गुर मान हार। नहि लर्यो दूर औ कै जुझार।
इम कर्यो मंत्र मिलि मूढ खान। प्रेरंति काल ढिग म्रितु जानि ॥ २३ ॥
इकठे समूह दुंदभि बजाइ। घेरा जु कीनि त्याग्यो तदाइ।
इति श्री गुरदित्ता धनु संभारि। त्यागति तीर रिपु मारि मारि ॥ २४ ॥
जित परहि जाइ घमसान मेलि। गेरंति तुरंग हति सुभट गेलि।
सर होहिं पार बल धारि मारि। तुरकनि ब्रिंद इम डारि डारि ॥ २५ ॥

---

1. भयानक। 2. देरी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हय[1] को कुदाइ चहुं गिरद फेर। पुरि रच्छ कीनि सभि हेरि हेरि।
जहिं तुरक ज़ोर घालंति आइ। सुनि शोर जाति उछलंति धाइ॥ २६॥
जबि पिखहिं बीर गुर पुत्र आइ। वधि अधिक हतहिं लखि करि सहाइ।
तुरकन पलाइ मारंति पाछ। करि त्रास बहुर नहिं जंग वांछ॥ २७॥
केतिक निखंग[2] छूछे करंति। सर खर मंगाइ पुन लै भरंति।
नहिं निफल तीर त्यागंति कोइ। हय भटनि अंग लगि परति सोइ॥ २८॥
पुन सूरज मल धनु को संभारि। करि चौंप सु छोरति सर प्रहार।
श्री तेग बहादुर फिरति मांहि। बरजंति बहुत घर हटति नांहि॥ २९॥
निज निज तुरंग फिरते धवाइ। पुरि महिं सहाइ इति उतहि जाइ।
सूरनि दलेर करते बडेर। कहि तुपक चलावहिं देति गेरि॥ ३०॥
गुर महिल अटारी जहिं उतंग। तहिं चढी नानकी पिखहि जंग।
निज नुखा सहति सुनि अधिक रौर। नर म्रितक हयनि लखि ठौर ठौर॥ ३१॥
चढि करि मरवाही ऊच थान। तुरकानि सैन देखति महान।
परिवार गुरनि चढि चढि निहारा। कड़कार तुफंगनि बार बार॥ ३२॥
गुरदिशा दिखहिं जहिं करति जंग। गुर नानक बनहिं सहाइ अंग।
सिमरंति नाम डर धारि धारि। तुरकानि फौज बहुती निहारि॥ ३३॥
पुत्रनि सनेह उर अधिक धाइ। चित चहिं हटाइबे नर पठाइ।
मानहिं न सोइ नहिं मुरति बीर। हम शसत्र धरति छत्री सधीर॥ ३४॥
रण त्यागि देनि इहु धरम नांहि। गन रिपुनि हनहिं हम जंग मांहि।
गुर पिता जथा हत्थयार धारि। तुरकानि सैन अनगन संघारि॥ ३५॥
हम हतहिं तथा नहिं हटहिं जंग। इम भाखि प्रहारति सर निशंग।
जबि लखे तुरक समुदाइ धाइ। इक थल सु भए सभि सिमटि आइ॥ ३६॥
सतिगुर समेत बिधीआ सु धीर। अरु बिप्प्र मलक जाती सु बीर।
इत्यादि सुभट समुदाइ आइ। सित बसत्र छीट श्रोणत लगाइ॥ ३७॥
रिपु समुख बांधि करि टोल ब्रिंद। हुइ खरे गुरु श्री हरिगुबिंद।
तीरन मंगाइ भरि करि निखंग। जनु गन बटोर प्रविशे भुजंग॥ ३८॥
गुलकानि बहुत बारूद दीनि। मन भाइ जिती सुभटानि लीनि।
जलपान कीनि सवधान होइ। तुरकानि अग्र रण मैं खलोइ॥ ३९॥
दुहिं दिशनि सूर गन दूर दूर। दुंदभि बजंति धुनि ऊच भूर।
ह्वै कै सुचेत पुन लरन चाहि। सरदार पहुंचिबे हित उमाहि॥ ४०॥

---

1. घोड़ा। 2. तूनीर।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

### दोहरा

इस प्रकार थिर वांधिकै दुहि दिशि ते सवधान ।
लरन मरन अरि सों अरन छुटहिं तुफंग महान ।। ४१ ।।
चढ्यो जाम दिन लरति तवि तुरक श्रमति वहु होइ ।
विते सवा दो पहिर जिन करते जंग खरोइ ।। ४२ ।।
सवा जाम निस रहे ते पर्यो जंग घमसान ।
दिवस जाम इक चढे लगि तुरकनि की गन हानि ।। ४३ ।।
पंथ चलति कछु श्रमति भे वहुरो जंग बिसाल ।
पुन सतिगुर समरत्थ बड नाश कीनि रिपु जाल ।। ४४ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे '**जंग**' प्रसंग बरननं नाम पंचबिसती अशु ।। २५ ।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २६

# लक्खू बध प्रसंग

## दोहरा

परे बंधि दल दो खरे छुटैं तुफंग रु तीर।
जोधा वधहिं प्रहार करि पुन निज थिर ह्वै तीर॥ १॥

## पाधड़ी छंद

तबि कुतबखान प्रेर्‌यो तुरंग। गहि धनुख ऐंचि बड ओज संग।
खर सर निकारि गुन महिं अरोपि। सभि कौ दिखाइ रण कीनि चौंप॥ २॥
तकि तान कान लगि बान छोरि। वेधति सु वेग भट गुरनि ओर।
बजियंति राग मारू निशान। दिखवंति बीर जूझति महान॥ ३॥
बिच बाहिनी सु गुर सथित होइ। अविलोकि जंग जिम लरति दोइ।
दुहि दिशनि दीह दुंदभि बजंति। उत खान सु काला रन दिखंति॥ ४॥
गुर सुभट बली लक्खू सु नाम। हय को फंदाइ करि जंग धांम।
पहुंच्यो समीप जहिं कुतबखान। भरि बान प्रहारहि तान तान॥ ५॥
तिह निकटि और उमराव बीर। हुइ अग्ग्र चांप ऐंचति सधीर।
गुरु सुभट वधहिं जबि समुख आइ। तकि तान बान को करति घाइ॥ ६॥
तन दिपहि बिभूखन हेम जांहि। जर जवर जवाहरि ज़ेब मांहि।
तिसके समीप लक्खू सिधाइ। खर सर निकारि मन मैं रिसाइ॥ ७॥
भरि बान कान लगि तानि भूर। त्याग्यो सबेग रिपु पै ग़रूर।
लगि रिदा फोर परि पारि जाइ। उथलाइ दीनि हय ते गिराइ॥ ८॥
उमराव सकल तबि देखि तांहि। ललकार वगार्‌यो जंग मांहि।
पिखि कुतबखान सनबंधि जांहि। ढिग हुतो क्रोध किय अलप नांहि॥ ९॥
लक्खू समीप प्रेर्‌यो तुरंग। कित चल्यो मारि थिर होइ जंग।
पलटा सु देहु लैकै न जाइ। तबि तीर प्रहार्‌यो हीय मांहि॥ १०॥
लगि बाम कंध मैं दिखति पार। तन घाइ खाइ ह्वै कै सुमार।
रिस खड़ग निकास्‌यो दुहनि हाथ। प्रेरयो तुरंग बड बेग साथ॥ ११॥



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तबि कुतबखान रहिगो सु दूर। बिच परयो आइ भट इक सऊर।
लिय रोकि अग्र भा समुख बीर। नहिं दियो जानि तबि कुतब तीर ॥ १२ ॥
अति हुतो क्रोध दिय नहिं संभार। सो खड़ग तांहि पर तमक झारि।
कटि मुंड ग्रीव ते आइ भूमि। पुन गिर्यो तुरंग ते रुंड झूमि ॥ १३ ॥
जहिं कुतब हुतो तित को सिधाइ। तिह चहति हतन भौंहनि चढाइ।
सभि सैन बिलोकति दोइ मार। आवति सु बेग कुतबा निहारि ॥ १४ ॥
जिह खड़ग हाथ दारुन बिसाल। सभि रह्यो भीज बहु श्रोण नाल।
मोढे खतंग बीधयो दिखंति। नहिं टरति बीर सनमुख अवंति ॥ १५ ॥
पुन ऐंचि बान खर कुतबखान। धनु तान कान लगि होति हान।
छुटि लग्यो जाइ हय के बिसाल। गिर पर्यो तवहिं नहिं अग्र चालि ॥ १६ ॥
लक्खू सु बीर उतर्यो तुरंत। कहि रहो ठांढ तो कौ हनंति।
पग संग बेग करि समुख जाइ। पुन ब्रिंद तुरक घेर्यो सु आइ ॥ १७ ॥
को हतहि तुपक को बान मारि। सभि ते बचाइ मारंति छार।
केतिक तुरंग के बदन काटि। इति उत फिरंति किह भटनि डाटि ॥ १८ ॥
चित चहति कुतब के पास जानि। बहु पहुंचि बीर रोक्यो महान।
बच आप खड़ग के घाइ घाल। हति करे तुरक केतिक बिहाल ॥ १९ ॥
उमराव कहति इक बीर एहु। क्यों डरति जाति संघार लेहु।
तबि कुतबखान रिसकैं बिसाल। प्रेर्यो तुरंग सर को निकालि ॥ २० ॥
तकि भाल घाव को घालि दीन। बिधगयो तुरत छित गिरन कीनि।
ढिग ढुकि मलेछ मुरछा निहारि। सिर दियो काट असि करि प्रहार ॥ २१ ॥
लक्खू सु बीर इम मरन कीनि। बहु तुरक जंग करि प्रान हीन।
पिखि सूर हूर ततछिन उठाइ। निज तन दिखाइ लीनसि चढाइ ॥ २२ ॥
तबि कुतब खान जसु लीनि पाइ। खर सर प्रहार रिपु इनहु घाइ।
इम लगे लरन दुहि दिशि सुभट्ट। तरवार तीर तुपकनि दबट्ट ॥ २३ ॥

### दोहरा

पैंदखान की दिशा तबि देख्यो कालेखान।
अबि ते आछो को समों गहो गुरु बल ठानि ॥ २४ ॥

### रसावल छंद

सुनी पैंदखाना। महां कोप ठाना।
अबै जाउं हेरो। जथा ओज मेरो ॥ २५ ॥
गहौं एक बारी। हयं ते उतारी।
सु ल्यावौं उठाई। न देरं लगाई ॥ २६ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पिखीजै तमाशा। बलं मे बिसासा।
नहीं संस कीजै। कहे पै पतीजै ॥ २७ ॥
तबै खान काले। सराह्यो बिसाले।
जथा शाहु पासी। गिरा तैं प्रकाशी ॥ २८ ॥
गहौं श्री गुरु मैं। बचै नांहि भूमैं।
करो बात पूरी। चलो ले हजूरी ॥ २९ ॥
भनै फेर पैंदा। नहीं त्रास कैंदा।
जबै जाउ आगं। गुरु जंग लागं ॥ ३० ॥
लिजै रोकि औरी। भरों जाइ कौरी।
दिखावौं तमाशा। जु बाकं प्रकाशा ॥ ३१ ॥
करौं ओज ऐसे। बसी होइ जैसे।
नहीं आन आवै। गुरू ना छुडावै ॥ ३२ ॥
बनो सावधाना। द्रिढ़ो जंग थाना।
सुनी खान काले। जु बीरं बिसाले ॥ ३३ ॥
लए बीन बीनं। जुदे ब्रिंद कीनं।
सभी को सुनाई। अबै पैंद जाई ॥ ३४ ॥
बनीजै सहाई। रहो घात लाई।
गुरु बीर जेते। रखो रोकि तेते ॥ ३५ ॥
पहूंचें न जाई। न लेवैं छुटाई।
सुने बैन कांना। भए सावधाना ॥ ३६ ॥
तुफंगें कि चांपू। गहे धारि दापू।
रखें रोकि सारे। लरैं देहिं मारे ॥ ३७ ॥

दोहरा

सभि मैं तबि असमान खां लख्यो बहादुर भूर[1]।
कर्यो मुक्खय तिनके बिखै पूरन सूर गरूर ॥ ३८ ॥
बंधि टोल इक थल भए बीने भट जे जाल।
इक दिश पैंदा प्रिथक ह्वै प्रेरन कीनसि काल ॥ ३९ ॥
निमक हरामी तुरक बन मरि है अपयश पाइ।
लखि करि दीरघ बल अपनि रह्यो मूढ गरबाइ ॥ ४० ॥

1. अधिक।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री सतिगुर सभि जानि कै चपल कुदाइ तुरंग।
भए प्रिथक बल करनि को भट बरजे निज संग ॥ ४१ ॥
रहहु सथिर रण समुख ह्वै हतहु तुफंग कराल।
बिधीचंद भट ब्रिद जुति ठांढो कीनि बिसाल ॥ ४२ ॥
हमला करि तुरक न परैं देखहु बनि सवधान !
इत हम ढिग जो आइ है करहि शत्रु को हान ॥ ४३ ॥
सुनि आइसु[1] सगरे थिरे तीर तुफंग प्रहार।
बद्धहि अग्र तिस को हतहि आप वधहिं अरि मारि ॥ ४४ ॥
श्री गुरदित्ता धनु[2] गहे सर खर को वरखाइ।
शत्रुनि के सनमुख थिर्‌यो रण महिं गन उथलाइ ॥ ४५ ॥
तुंद तुरंग बिलंदि करि अरि कै अंग परोइ।
लरहिं मरहि भट भव तरहि सगरे कलमल खोइ ॥ ४६ ॥
पैंदखान अरु गुरू को सुनो जंग जिम कीनि।
दुहि दिशि भट देखति रहे जाने जुग बल पीन ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे 'लक्खू बद्ध' प्रसंग बरननं नाम **षष्टबिसती अंशु ॥ २६ ॥**

---

1. आज्ञा। 2. धनुष।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २७

# पैंदेखान बध प्रसंग

दोहरा

खरे गुरु एकल पिखे चित की चौप बधाइ।
पैंदखान हय चपल को प्रेर्‍यो चल्यो फंदाइ ॥ १ ॥

रसावल छंद

पिखैं सैन दोऊ। लखैं जंग होऊ।
लगैं डंक घाऊ। सु बाजैं जुझाऊं ॥ २ ॥
वरोला तुरंगं। बडे बेग संगं।
हुतो कोट छोटा। भट कीनि ओटा ॥ ३ ॥
तहां बीच ठांढे। गुरु कोप गाढे।
पिखैं पैंदखाना। कुदायो किकाना[1] ॥ ४ ॥
पर्‍यो पार जाए। नहीं पैर छ्वाए।
पिखंते हिराना। बडो ओज ठाना ॥ ५ ॥
भयो लाख मोला। सु नामं वरोला।
चलाकी दिखाई। गुरु तीर जाई ॥ ६ ॥
लियो खैंचि खंडा। त्रिखी धार चंडा।
हटे और हेरे। नहीं होति नेरे ॥ ७ ॥
समै चौंप संगा। दिखैं दुंद जंगा।
भयो पैंद नेरे। कह्यो बाक टेरे ॥ ८ ॥
गुरु जी! संभारो। जथा ओज[2] धारो।
करो नांहि टारा। चितो मोहि मारा ॥ ९ ॥

दोहरा

सो पलटे को समो अबि लैहौं पकरौं तोहि।
शाहजहां के निकटि लै तिहठां छोरनि होहि ॥ १० ॥

---

1. घोड़ा। 2. बल।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जो जीवन चहु आपना चलीअहि आगै होइ।
हजरत संग मिलाइ करि खता बखशि है सोइ ॥ ११ ॥

रसावल छंद

नहीं तो संभारो। जितो ओज धारो।
करो वार खंडा। बनै दोइ खंडा ॥ १२ ॥
गुरु कोप धारे। सु वाकं उचारे।
जु गीदी सु त्रासै[1]। तकै शाहि पासै ॥ १३ ॥
हमैं जंग भावै। रिपू ब्रिंद घावैं।
नहीं मेल ठानैं। हनैं आयुधानैं ॥ १४ ॥
करैं तोर हाना। लिजै साच जाना।
अबै प्रान धारैं। न धामं सिधारैं ॥ १५ ॥
पर्‌यो काल तुंडा। बनैं रुंड मुंडा।
तऊ बात जैसे। सुनो कान तैसे ॥ १६ ॥
नहीं वार कीनो। रहै चित्त भीनो।
भयो ओज बादं। झूरैं धारि यादं ॥ १७ ॥

तोटक छंद

इस ते हम तोहि सुनावति हैं। बल आपन ते गरबावति हैं।
तुरकानि बिखै बहु बार कहो। बल मोहि बडो गुरु जाइ गहों ॥ १८ ॥
इस ते अबि पूरब वार करो। बल औ बुधि जो वपु बीच धरो।
चित हवस[2] न राखहु आपन की। करि लेहु बिधी सभि पापनि की ॥ १९ ॥
सुनि खान बिचारति मूढ बली। अबि छोर तुरंगम घात भली।
फिरि पाइन सों निज वार करौं। हुइ तीर किधौं कर मांहि धरौं ॥ २० ॥
बस को करि लै निज सैन बरौं। चिरकाल इहां अबि मैं न थिरौं।
सभि सैन रही रुकि सूरन ते। शुभ काज बनै अबि तूरन ते ॥ २१ ॥
हय ऊपर मो बल लाग नहीं। मिलि दोइ तुरंग लरंति सही।
चित बीच बिचार शिताब करी। बलवान तज्यो हय तांहि घरी ॥ २२ ॥
बल ते पकर्‌यो खग वार कर्‌यो। निज हाथ उभारति नेर धर्‌यो।
गुर पीन उरु तकि मारति भा। ढिग होइ सु बाहु पसारति भा ॥ २३ ॥
हरिगोविंद देखति धीर धरी। पग साथ शिताब रकाब करी।
दह सेर सु तोल बिखे जुग ते। बल दीरघ संग तहां लगते ॥ २४ ॥

1. भय खाता है। 2. इच्छा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

**दोहरा**

हुती भरत की पीन बड खड़ग लग्यो तिह संग।
सर्यो न कारज कुछ तबै निफल्यो वार कुढंग ॥ २५ ॥

**पाधड़ी छंद**

पुन पैंदखान कुपि कै प्रचंड। खंडा उभारि बल बांहु दंड।
करि तुरत फुरत कूद्यो उतंग। चित चहि प्रहार प्रभु के सु अंग ॥ २६ ॥
श्री हरिगोबिंद अति शीघ्र कार। ढाला बिलंद कर लीनि धारि।
रिपु खड़ग आवतौ निकटि देखि। तिह संग रोक करि बल विशेख ॥ २७ ॥
करि निफल शत्रु को वार फेर। धरि धीर खरे तिस के अगेर।
तबि पैंद खान चित चित पाइ। नहिं सर्यो काज सभि बाद जाइ ॥ २८ ॥
पुन छिप्प्र[1] उछल इत उत तकाइ। खर खड़ग प्रहारन करति दाइ।
हुइ दिशा दूसरी रिस बिसाल। कर की उभारि मार्यो कराल ॥ २९ ॥
गुर बीर बहादुर धीर साथ। करि छिप्प्र तांहि दिश कीनि हाथ।
बड सिपर[2] सवासिर फूल जोइ। तिह लग्यो खड़ग बल अधिक सोइ ॥ ३० ॥
खंडा दुखंड टूट्यो प्रचंड। रहि हाथ मुशट बड बांहु दंड।
श्री हरिगुविंद अविलोक तांहि। अबि हतन हेतु किय वार नाहिं ॥ ३१ ॥
ह्वैगो लचार निज चित विचार। बल बांहु करनि गुर सों जुझार।
दिस बाम जाइ तबि पैंदखान। गुर को तुरंग गहि डारि पान ॥ ३२ ॥
जहिं हुतो तंग इक हाथ पाइ। पुन दुतिय हाथ ऊपर उठाइ।
भर करि सु कौर जुग करन मांहि। बल ते उठाइ गेरंति चाहि ॥ ३३ ॥
समरथ उचाइ साकहि सुमेरु। तिस ते न उठहिं गुर गुर बडेर।
बल अधिक करति भरि कौरि मांहि। टिक रहे तुरंग हाल्यो सु नाहि ॥ ३४ ॥
श्री हरिगोबिंद पकरंति जाति। हय के छुटान हित जतन ठानि।
दोनहु रकाब मारि सु जोरि। चंचल तुरंग किय चलनि ज़ोर ॥ ३५ ॥
हलिबे न दीनि बल खान ठानि। राख्यो टिकाइ चहुं चरन थान।
बल मैं बिसाल गुर को किकान[3]। त्रिपताइ तिहावल करति खान ॥ ३६ ॥
जो सरब अंग तन करि बिसाल। शारत करंति चलि छौर चाल।
गुर बाग संग अलपैं जनाइ। जिम चहति करत चलिबो कि धाइ ॥ ३७ ॥
सोखा रकाब थिर भा सथान। अस अधिक बली भट पैंदखान।
गुर लख्यो तुरंग नहि चलन दीनि। कर जोर पाइ बस अपन कीनि ॥ ३८ ॥

---

1. जल्दी। 2. ढाल। 3. घोड़ा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खर खड़ग प्रहार सु लगहि नांहि । दिश बाम बिखै अति निकटि आहि ।
चितवंति गुरु रिपु हतन हेत । को करहिं जतन रहि जंग खेत ।। ३९ ।।
ततकाल गरुव ढाला संभालि । करिको उठाइ करि बल बिसाल ।
सिर पैंदखान के हतन कीनि । नहि सकि सहार कर छोर दीनि ।। ४० ।।
थिर भयो कुछक बहु घूमि घूमि । गिर पर्‌यो भूम बहु झूमि झूमि ।
जानून भार ह्वै कै बिहाल । छित पर सु पर्‌यो मुरछा बिसाल ।। ४१ ।।
तन स्वेद[1] सहित श्री गुर निहारि । सुध बिनां भयो नहि कीन वार ।
ततकाल तुरंगम छोरि दीनि । तर उतरि गुरु रण धरम चीन ।। ४२ ।।
जबि छुटी मूरछा सुध सरीर । दुहि दिशनि सैन के पिखति बीर ।
गुर केर जु अंतहिपुर बिसाल । चढि तुंग अटारनि ततकाल ।। ४३ ।।
अवलोकि झरोखनि महिं सत्रास । श्री गुर मनाइ धरि करि बिसास ।
श्री नानक आदि होवहु सहाइ । समुदाइ तुरक ते लिहु बचाइ ।। ४४ ।।
तिम अपर नगर की बाल जाल । बनकनि समेत पिखि तातकाल ।
अति त्रास पाइ थरहर करंति । भगवंत अराधति जगतकंत ।। ४५ ।।
प्रभू महाराज राखहु सु लाज । तुरकान हानि कै जाहिं भाज ।
सभिहूनि रिदै की गुर पछान । भा तपत तेज त्रिदत्यो महान ।। ४६ ।।
तुरकानि हान को जतन कीनि । तजि खरो भयो पैंदा सुचीन ।
बोले वंगार सुन रे पठान । मम वार देहु वनि सावधान ।। ४७ ।।
करि लीन तीन तैं बल लगाई । तबि पैंदखान वोल्यो रिसाइ ।
क्या करो वार ? गहि लेउं अंग । अबि के न छुटहु गहिहौं कुढंग ।। ४८ ।।
लैहो उठाइ बस करि महान् । कर लिजै ओज दैहों न जान ।
नहि गह्यो गयो छुटगा सुखैन । सुन गुरु कोप ते लाल नैन ।। ४९ ।।
पहुंचे समीप इति उत फिरंति । करि सिपर खान आगे करंति ।
गुर चहति एक ही वार संग । चीरहिं सरीर करि प्रान भंग ।। ५० ।।
तबि पैंदखान चित चाहि धारि । गुर गहौं अबहि कौरी[2] मझार ।
ले चलौं वहिर नहिं को छुराइ । दल खरो महद सभि धाइ आइं ।। ५१ ।।
इव चितवि रोकिबे ढाल त्यागी । करि फुरति तुरत गुर गहिन लाग ।
अवकाश पाई श्री हरगोबिंद । खर खग प्रचंड तड़िता मनिंद ।। ५२ ।।
बल ते उभारि शत्रु शरीर । कीनो प्रहार दीनो सु चीर ।
कलवत्र मनो लै कै त्रखान । जिम करति दोइ काशट महान् ।। ५३ ।।
जिम सत्रुनीगर लै लोह तार । साबुन दुखंड करि बिन अवार ।
जबि गिरन लाग कहि गुर उदार । तुव तुरक जनम, कलमा उचार ।। ५४ ।।

**दोहरा**

गिरन लग्यो पैंदा कहै, श्री गुर तुव तरवार ।
भई रूप कलमा अब्रहि करीयहि मोहि उधार ।। ५५ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रथे अष्टम रासे **'पंदेखान बध प्रसंग'** बरननं नाम सपत बिंसती अंशु ।। २७ ।।

---

1. पसीना । 2. अंक में लेकर ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २८

# असमान खान बध प्रसंग

दोहरा

पैंदखान जबि दीन ह्वै कीनसि बाक बखान।
श्री गुर तुमरे हाथ की मिसरी[1] कलमा जान ॥ १ ।

चौपई

सुनति सनेह रिदै हुइ आयो। प्रतिपारयो पूरब अपनायो।
निज कर ग्रास पाइ मुख मांही। उत्तम वसतु देति नित जांही ॥ २ ॥
भांति भांति पोशिश पहिराइ। भांति भांति के असन अचाइ।
पुनहिं बिलोकि जिसहि हरखावें। दान मान दे नित त्रिपतावैं ॥ ३ ॥
तिसकी दशा देखि दुखवारी। कमल बिलोचनि तें तजि वारी।
बदन स्वेद जिसके बहु होवा। तरफति पर्यो धाम[2] महिं जोवा ॥ ४ ॥
सिपर[3] साथ कीनसि तवि छाया। होत बदन पर धाम मिटाया।
देखति खरे अश्रु द्रिग झरैं। पैंदखान के मुख पर परैं ॥ ५ ॥
जिम काशट को पार बधावैं। अपनि जानि तिह जल न डुबावैं।
तरफति पर्यो छिनक मैं मर्यो। सतिगुर नेहु अधिक उर कर्यो ॥ ६ ॥
त्यागहिं शसत्र-मथोरथ धारा। हते हमहुं नर तुरक हजारा।
प्रतिपार्यो निज कर ते घायो। इत्यादिक सभि दोश उपायो ॥ ७ ॥
तजि अबि देति तऊ कठिनाई। लरन हेतु सेना समुहाई।
सकल कहैं-त्रासति तजि दए। इम बिचार नहिं त्यागति भए ॥ ८ ॥
जबि पैंदा गुर की दिशि धायो। खां असमान संग ही आयो।
श्री गुरदित्ते तिह अटकायो। कहां जाति इत रहहु अलायो ॥ ९ ॥
तानि धनुख को तीर प्रहारा। खांअसमान इनहुं पर मारा।
दोनहुं सुभट अरे रन माही। धरि उर त्रास मिटे किम नांही ॥ १० ॥
फेरहिं तुरंग प्रहारहिं तीर। कबहुं दूर कबि होवहिं नीर।
धनुबिद्या अपनी दिखरावैं। करि तूरनता तीर चलावैं ॥ ११ ॥

---

1, तलवार। 2, गर्मी में। 3. ढाल।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लग्यो न कोऊ इति उत टरैं। निज निज अंग बचावन करैं।
खां असमान क्रोध तबि कीना। तीछन अहि[1] सम भीछन लीना॥ १२।
जोड़ि जेह महिं ज़ोर समेत। छोर्यो बान हानि के हेतु।
लग्यो ज़ीन मैं जाइ महान। निफल्यो वार खान असमान॥ १३॥
श्रीगुरदित्ता क्रोधति जुद्ध। लियो बान खपरा इक सुद्ध।
तानिका लग तानमहाना। छुट्यो सु वेग जु सरप समाना॥ १४॥
लग्यो खान के भाल बिसाला। जनु निधि देखति पहुंच्यो बयाला[2]।
सिर को फोरि पार तबि पर्यो। खां असमान तुरंग ते गिर्यो॥ १५॥
पर्यो निकटि बाबा चलि गयो। जानि सखा सम तबि रुदनयो।
बिधीचंद पिखिकै ततकाला। हयको प्रेरति पहुंचि उताला॥ १६॥
तुरक तीर तुम ठांढे कहां। देखहु लशकर उमड्यो महां।
बनहु सुचेत लरन के हेत। कै अबि पहुंचहु जाइ निकेत॥ १७॥
सुनि करि श्री गुरदित्ता कहै। हम सों नित खेलति इह रहै।
बैंस[3] बरोबर धरति सनेहू। मिलवति बिहसति नितप्रति एहू॥ १८॥
बोलति वहिर अरुढि सिधारति। मिलि हम सों बनम्रिगन संघारति।
अबि नहिं उठति न बोलति कैसे। हम ढिग खरे देखि करि ऐसे॥ १९॥
बिधीचंद कहि इह मरि गयो। तुमरे कर ते शुभ पद लह्यो।
जीवति इहां क्रिपा बहु धारहु। भयो म्रितक भव ते अबि तारहु॥ २०॥
सुनिकरि श्री गुर सुत बिसमायो। शसत्र धरन को इहु फल पायो।
रन के लरन तनक नहिं दया। हुतोसखा सम हम हति दया॥ २१॥
एव बिसूरति गुर ढिग आयो। देखति मृतक बदन कुमलायो।
हेरि पुत्र की दशा कृपालू। सतिगुर धीरज दई बिसालू॥ २२॥
संग सुभट दे करि तबि दोई। घर अंतर पहुंचाए सोइ।
करि चित शांति बैठि करि रहे। भए तूशनी सुने न कहे॥ २३॥
जबि दोनहु खां ससुर जवाई। संघर घने घोर महिं घाई।
कुतबखान अरु काले खान। तयागी आसा बिजै महान॥ २४॥
लशकर जिस के संग चढायो। हुकम शाह करि हमहिं पठायो।
सो बाज़ी सभि होई नाश। गुर पकरन को छुट्यो बिसास॥ २५॥
कालेखान बखानति खरो। कहो कुतुबखां अबि क्या करों ?।
पैंदेखान जंग मरिवाइ। गुरु मवास रहहि इस थाइं॥ २६॥

1. सांप। 2. सांप। 3. आयु।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हटि करि लवपुरि ओर सिधारैं। किम हज़रत को बदन दिखारैं ?।
गुरको गहहिं कि मारहिं जंग। इम कहि चढे शाहु के संग॥ २७॥
दोनहुं महिं इक भी नहिं ब्नी। हराहि कचहिरी हम को घनी।
लाखहुं धन के दै सिरु पाउ। बडिआए देखति उमराउ॥ २८॥
कहां उपाइ करहिं कहि देहू ?। नातुर मरन मूंड पर लेहू।
लशकर लरति गयो मरि घनो। कबिहूं जननी[1] जने न मनो॥ २९॥
कुतबखान सुनि कीनि बखानि ?। लेहु विचार आप बुधिवान।
गहहु गुरु कै लीजै मारि। इस बिन मसलत अपर न सार॥ ३०॥
लरिबे बिना उपाइ न और। मारहु कै मरीअहि इस ठौर।
सभि लशकर को करि इक थाइं। समुख चलहिं दुंदभि[2] बजवाइ॥ ३१॥
मारे गए गिरे सो खेत। जीवति पहुंचहु होहु सुचेत।
कै लिहु मारि कि घेरहु गहो। इस कारज महिं बिलम न लहो॥ ३२॥
सवाजाम निस ते रण लरे। बासर[3] डेढ जाम अबि चरे।
भए थकति सभि हयनि समेत। अबि करि हेल जीतीऔ खेत॥ ३३॥
इम सुनिकै तबि काले खाना। बरजहिं जुझाऊ हुकम बखाना।
नर पठि सभि भठ लिए बटोर। बंध्यो टल भन्यो तिन ओर॥ ३४॥
जो अबि प्राननि पयारे करै। सुत बनिता धर प्रीती धरै।
सो हटि जाहु शसत्र को त्यागहु। अपर जीविका करिबे लागहु॥ ३५॥
जिसने करन होइ बड जंग। सो बनि सुभट चलौ हम संग।
जीत लेहु धन गन को पावहु। भोगहु सुख जग जसु सु बढावहु॥ ३६॥
मरहु जुद्ध महिं भिशत[4] सिधारहु। दुह लोकनि महिं सुख निरधारहु।
डरहिं जु मरिबे सो हटि रहै। मिहनत करहिं मजूरी लहै॥ ३७॥
मुगल पठान कि सय्यद नंद। तुम सभिहिनि के बंस बिलंद।
शाहु चाकरी करति हमेश। रहे भोगते अनंद विशेश॥ ३८॥
अबि इह हज़रत को लखि काज। दुतीये करहु बंस की लाज।
करि उतसाहु परहु इक बारी। गहहु कि गुर कहु लीजहि मारी॥ ३९॥
सुनि जोधे ह्वै कै सवधान। कह्यो देखीए अबि घमसान।
रण मरि रहैं कि मारहिं दौरी। कै गहि आनै गुर इस ठौर॥ ४०॥
इम लशकर करि उत उतसाहू। प्रेरे काल मरण रण मांहू।
सभि उमरावनि केर समेत। उमडे अग्र बीच बड खेत॥ ४१॥

1. माता। 2. नगाड़ा। 3. दिन। 4. स्वर्ग।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हेला करिबे मसलत करी। सतिगुर जान्यो पहुंचे अरी।
तीरनि संग निखंग[1] भर्‌यो है। सावधान दल अपनि कर्‌यो है ॥ ४२ ॥
प्रिथम हत्यो लशकर अरि घनो। बच्यो हेल इक ते अवि हनो।
मरहिं सुरग महिं पहुंचहिं जाइ। जीवति सुख भोगहिं धन पाइ ॥ ४३ ॥
इम कहि इक थल सभिनि बटोरे[2]। करे सुचेत रिपुनि की ओरे।
कहि करि सभि दुंदभि बजवाए। भए सकल तुरकनि समुहाए ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अष्टम रासे **असमान खान बध प्रसंग वर्णन** अष्टविसंति अंशु ॥ २८ ॥

---

1. तूनीर। 2. एकत्र किये।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु २६

# मेहरा और कुतब खान बध प्रसंग

**दोहरा**

ब्रिधीचंद सों गुर कह्यो लेहु संग असवार।
परहु बरोबर ते अबहि लीजै तुरक संघारि ॥ १ ॥

**रसावल छंद**

करे सावधाना। सभै मेल ठाना।
इते मांहि आए। महां शोर पाए ॥ २ ॥
तुफंगानि छोरी। चली ब्रिंद गोरी।
बडो हेल घाला। बमैं पुंज ज्वाला ॥ ३ ॥
मनो मेघ औना। उडायो सु पौना।
बह्दं प्रकाशैं। छटा जैस भासैं ॥ ४ ॥
कडंकार उठैं। मनो ज़ोर वुठ्ठैं।
त्रिखी बीर कुट्ठे। परे भूमि लुट्ठे ॥ ५ ॥
परी मार गोरी। कसैं पुंज छोरी।
धवावैं तुरंगं। चलावैं तुफंगं ॥ ६ ॥
भयो सुर मेला। मनो फाग खेला।
पतंगी सुरंगा। भए श्रोण संगा ॥ ७ ॥
परे एक वारी। बकैं मार मारी।
हलाहूल रेले। परी ना पिछेले ॥ ८ ॥
गिरे बीर मानी। बडे शसत्र पानी।
भयो अंधकारा। वधी धूंम धारा ॥ ९ ॥
उडी धूल छाई। दिनेशं[1] छपाई।
बजे राग मारु। सु जुझैं जुझारु ॥ १० ॥
दिशा दौन सूरं। रिदे क्रोध पूरं।
करे लाल नैना। बकैं बंक बैना ॥ ११ ॥

---

1. सूरज।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुरु बीर गाढो। कहां आप ठाढो ?
चलो तांहि तीरं। दिखैं कैस धीरं ॥ १२ ॥
गहो मेल कै कै। किधों प्रान धै कै।
करो जीत भारी। न कीजै अबारी ॥ १३ ॥
कहैं शत्रु खोटे। जवै लौ न होटे।
वधे अग्र आए। तुरंग धवाए[1] ॥ १४ ॥

दोहरा

मार मार इव करति रिपु जवि घाल्यो घमसान।
ओरड़ आए तुरक गन सकल मेल को ठानि ॥ १५ ॥

सवैया

श्री हरिगोविंद के गन वीर सहार सकैं न जवै रिपु आए।
चुंग[2] को बांधि निसंग गए वधि आगे तुफंग समूह चलाए।
जो गुलकां छुवि शूंकगई तुरकानि के अंग सभीलगि जाए।
भूम दड़ादड़ दीखति यौदल ब्रिच्छ हले फल सूर गिराए ॥ १६ ॥
तूरन ब्रिद बरुद को डालति अंचि निकालति हैं गज सूरे।
द्वै गुलकानि को ठोकति हैं हित रोकन के रिस मैं उर पूरे।
हाथ रवाँ करि छोरति संमुख मारति गेरति नेर कि दूरे।
भंग को खाइ मलंग परे जनु यौं रण खेत परे भट रूरे ॥ १७ ॥
जो मरिगे सु परे धर पै भट जीवति आनि मिले इक वारी।
दोनहुं बीर लए दल को अमियां मिहरा हत्थयारनि धारी।
छोरि दई इकवार तुफंगनि फेर निकारि जुटे तरवारी।
यौं चमकी जनु ब्रिद छटा घन मैं दमकै थहिरैं करि सारी ॥ १८ ॥
काटति आपस मैं भट अंग निसंग भए मन जंग मझारी।
मोढनि को कटि को कट देति किनू असि तुंड कि मुंड पै झारी।
हाथ कटे किह ग्रीव कटी किस जांघ कटी बड तूरन धारी।
रंग लई असि श्रोनत सों म्रितु चावति पान ज्यों जीभ निकारी ॥ १९ ॥
मानहु ब्याह समाज बनयो जन प्रीति करे जुग ओर ढरे।
सूरनि के पिखि नूरनि को करि तूरन हूरनि आनि बरे।
बादित बाजति मार उचारति गावति गीत जु मोद भरे।
होति महां उतसाहु मिले पट रंगति रंग सुरंग खरे ॥ २० ॥

---

1. दौड़ाए। 2. मंडली बांध कर।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुरकानि समूह जि आनि परे तिन बीच घिर्यो मिहरा अरि कै ।
चख लाल करे मुख ओठनि चावति भौंह चढी अरि सों लरि कै ।
कर फेरति धोप चहूं दिशि मैं भट ढूकति नेर गिरैं मरि कै ।
हय घात भयो तबि पाइन सों उछलति प्रहारति सो फिरिकै ।। २१ ।।
मारि समूहनि शत्रुनि को सहि घाव अनेक भयो डकरे ।
भूमि पर्यो न तऊ रण छोरति अंगन सों उछरै अकरे ।
हेरि तबै अमिया मन क्रुधति पुंज रिपू समुखैं टकरे ।
घालति भा घमसान घनो करि संघर घोर असी पकरें ।। २२ ।।
आनि परे तुरकानि थली तिन हानति घाव घने घर घालति ।
फेर तुरंग नचावति धावति आपन देहु अछेहनि झालति ।
अंग तछामुछ तूरनता करि आइ अरे रिपु काटति डालति ।
होति शहीद भयो रण मैं रिझ देव-बधू[2] तिह जुद्ध निहालति ।। २३ ।।

**दोहरा**

कुछ दल सों द्वै दलपती जूझे जंग मझार ।
सनमुख जे तुरकानि को तरवारनि सों मार ।। २४ ।।

**सवैया**

श्री हरिगोविंद बीर बहादुर यौं घमसान घनो जबि हेरे ।
तीर निकारति चांपमैं धारति तान प्रहारति हैं तिस बेरे ।
ब्रिद जहां रिपु मारति हैं तहिं बीधति जाति हैं घोर घनेरे ।
ब्रिद तुरंगनि कै भट अंगनि पार परे अवनी[3] पर गेरे ।। २५ ।।
एक प्रहार अनेक संघारति यौं सरमारति शत्रु निवेरे ।
सूरनि को अरु घोरनि को लगि घाव मरे जु लगे तिन ढेरे ।
एक कराहति चाहति है जल एक दले हय पाइन केरे ।
औंधे परे इक दाबे तरे इक हांक हकारति दीरघि टेरे ।। २६ ।।
यौं खररे[4] गुर केर चले भट मारि कै पार परे गन ते ।
श्री करतार पुरे ढिग को नहिं आवन दीनि रिसे मन ते ।
रोक लिए जिम होति नदी वध सैल अरै ठहिरै तिन ते ।
घाव लगे गिरते परते उर ते ध्रित को हरते तन ते ।। २७ ।।
खां कुतबे तबि क्रोध कर्यो पिखि प्रेरि तुरंग भयो समुहाई ।
श्री गुर हैं जिस थांन थिरे वहु बान प्रहारति सूरनि घाई ।

1, आँख । 2, अप्सरा । 3. धरती । 4. तीर ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आन मर्यो ललकार पर्यो उचर्यो अबि ठाढ रहो अगुवाई ।
यौं कहि तीर निकारति बीर अधीरज चांप को ऐंचि चलाई ।। २८ ।।
तांहि बचाइ गुरु करि तूरन तीर निखंग ते भीम निकारा ।
ज्यों हय प्रेरति अग्र कुदावति संधि कुदंड[1] मैं ऐंचति मारा ।
लागि गयो उर मैं प्रविशयो बरमी जिन मार[2] बर्यो तमि मारा ।
वेग ते बीधि तुरंगम को ततकाल पिछारी दिशा परि पारा ।। २९ ।।
ज्यों जल वेग ते कूल गिरै तिम बाज पर्यो कुतबे तबि छोरा ।
संमुख श्री हरिगोबिंद के तबि धाइ पर्यो गहि कै खग घोरा ।
आनि प्रहार कर्यो हय के मुख लीनि बचाइ लगयो कुछ थोरा ।
आप गुरु तबि अैंचि के मयान ते वेग समेत चलाई सु ज़ोरा ।। ३० ।।
घाव के दाव बचावन कारन कीनि अनेक पै नांहि बचयो ।
ग्रीव पै लाग गयो खग भीखन तीखन धारबिसाल तचयो ।
दूर कर्यो सिर को ततकाल रह्यो धर पै धर भीख नचयो ।
फेर गिर्यो कटि ज्यों कदली[3] बरि श्रोणत धूलके संग रचयो ।। ३१ ।।
खां कुतबा जबि मारि लयो तिस तीर के बीर परे अरिराई ।
ब्रिंद बिलोकि तबै बिधीआ भट संग लिए बहु मार मचाई ।
पावक[4] मांहि पतंग परैं जिम धावति आनि परे समुदाई ।
तीर तुफंगनि ते मरते तरवारनि ते खरसांग धसाई ।। ३२ ।।
मेलतिहेल धकेलति पेल मनो मिलि खेलति बालक ब्रिंदा ।
चीर सरीर लहू संग भीजति लै करि आयुध[5] शत्रु निकंदा ।
जंबुक जोगनि बाइस कूकर भा मनि भाइ बिलंद अनंदा ।
आमिख खाइ अघाइ रहे गन श्रोणत पीवति होति सुछंदा ।। ३३ ।।
की लगि मैं बरनौं बहु भांतिनि ज्यों तुरकानि को मारि निबेरा ।
भूम दड़ादड़ बीर गिरैं तजि प्रान परैं न उठैं गन फेरा ।
दारुन[6] थान भयो चहूं ओरन हेरति भीर को त्रास घनेरा ।
खंडनि तुंडनि मुंडनि को भट झुंडनि रुंडन काटि सु गेरा ।। ३४ ।।

**दोहरा**

मरे गुरु के भट घने हने तुरक समुदाइ ।
अवनी लगे अंबार बहु हेरति ही हरिराइ ।। ३५ ।।
कालेखां कुछ भटनि सों रह्यो शेष तिस बार ।
जीत आस को छोरिकै मारन मरनो धारि ।। ३६ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे '**कुतबखान बध**' प्रसंग बरननं नाम ऊनविंशति अंशु ।। २९ ।।

1. धनुष । 2. सांप । 3. केला । 4. आग । 5. हथियार । 6. भयानक ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३०

# जंग प्रसंग

### दोहरा

सूर हजारक बचे जबि कालेखांन बिचारि।
लरों आप गुरु संग मैं मरौं कि लैहों मारि ॥ १ ॥

### भुजंग प्रयात छंद

बचे बीर जेते भए एक थाईं। रिदे धीर खोई पिखे ते लराई।
नहीं देर लागी इती सैन जूझी। हनी आनि कौनै नहीं जाइ बूझी ॥ २ ॥
उडैं गिद्ध ब्रिंद रडैं कंक बंकं। भखैं मास गोमाय देखे अतंकं।
सिवा ऊच टेरैं मिलैं स्वान भौंकैं। किते घाइ खाए सुनैं नाद चौंकैं ॥ ३ ॥
मुखं भे मलीनं नहीं जंग चाहैं। लरै जो अबै जीवतो कौन जाहै।
तऊ खान काले दिशा को बिलोकैं। लरै नाहि कैसे कहो कौन रोकै ॥ ४ ॥
गुरु बीर जेते बचे प्रान संगा। करैं ओतसाहं सु ह्वै कै निसंगा।
कहैं ऊच टेरैं हने शत्रु सारे। बजैं जीत लै कै गुरु के नगारे ॥ ५ ॥
महां मूढ शाहू पठै सैन जोऊ। जगंईश संगं चहै पूर होऊ।
जिन्हो के अगारी बनैं हाथ जोरे। तिन्हो साथ लोहा करै धारि जोरे ॥ ६ ॥
चमूं ब्रिंद भेजी कई बार मारी। तऊ मूढ नाहीं कर्यो भाउ भारी।
कहैं आप मैं बीर बंके जुझारे। तुफंगानि तीरानि को हाथ धारे ॥ ७ ॥
उतै खान काले कर्यो चीत गाढा। गुरु साथ जूझौं रिदै चाव बाढा।
अबै जंग त्यागों चलौं मैं पलाई। नहीं बात आछी रहौं कौन थाईं ॥ ८ ॥
लजै बंस खानांनि निंदा उचारैं। मरौं होइ गीदी, सभै ही धिकारैं।
जसं हीन ह्वै कै सखं हीन जीवौं। परौं दोजकं मैं जबै मृतु थीवौं ॥ ९ ॥
सदा कौन जीवै मरै बैस बीते। भले जीव सेई जसं जांहि लीते।
इमी भांति भूरी रिदै चिंत कै कै। भयो सामुखं सूरता चीत लै कै ॥ १० ॥
जिते बीर बाचे समीपं हकारे। बडी धीर दै कै लए संग सारे।
गुरू को गहो ब्रिंद ह्वै कै नजीकं। गह्यो जेन जाई हतो तौ भि नीकं ॥ ११ ॥



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इही काज पूरो जबै होइ जावै। चलैं शाहु के तीर सारी सुनावें।
लहैं मौज भारी धनं चीर घोरे। गजं पालकी आदि शोभा न थोरे॥ १२॥
सुखं भोगि सारे धरो बैठि फेरी। करों काज को ओज ते एक वेरी।
पुनं बैस सारी जसं भूर पावो। शरावानि पीवो कबाबानि खावो॥ १३॥
इमं भाखिकैं संग लीने जुझारे। नवालानि पयालानि मेली[1] उदारे।
सवाधान ह्वै कैं करैं शसत्र त्यारी। तुफंगानि तीरानि सांगैं संभारी॥ १४॥
लए दीह नेजे कराचोल भाले। विसाले जु ढाले उछाले उताले।
कसैं दोइ गोरी पलीता मिलावैं। धरैं मोड़ि तोड़ा कला पै टिकावैं॥ १५॥
लए बान पैने जिनों चांप धारे। हयं प्रेरि कै धाइ चाले अगारे।
हलाहुल होई पर्यो रौर भारो। गुरु बीर बंके खरे धीर धारो॥ १६॥
गुरु ओज के आसगे मोद धारे। कहैं आइ आगै तबै लेहिं मारे।
तुफंगान बारूद गोरी मिलाए। धनू बान को संधि चाहैं चलाए॥ १७॥
जबै नेर ढूके मिलैं तुंड दौना। तबै एक बारी हनो जौन कोना।
दड़ादाड़ गेरो क्रिपानै संभारो। तछामुच्छ काटो जथा काठ आरो॥ १८॥
फिरैं देति बारूद गोरी खतंगा। दए दीह नेजे हनो शत्रु अंगा।
गुरु वीच ठाढे विधीचंद तीरं। खरो छिप्र जातो धनू संधि तीरं॥ १९॥
करे नैन सौहैं पिखैं शत्रु आवैं। हनै एक बारी नहीं पाछ जावैं।
लई मारि सैना रही शेष थोरी। लखी जाइ भाजैं अबै शाहु ओरी॥ २०॥
दिशा दौन ऐसे भए त्यार जुद्धं। तबै खान काला रिदे भूर क्रुधं।
बडे मोल केरा तुरगं चलायो। दलं हेल घाल्यो हलाहूल घायो॥ २१॥
कर्यो रौर ऊचे महां शोर माच्यो। चलाचाल बीरं रिदै रोस राच्यो।
परे हूह दै कै जबै नेर आए। पलीहते उघाड़े सु तोड़े धुखाए॥ २२॥
चले आइ सीधे ढुकैं ढोइ कीनी। दुहूं ओर गोरी तकी छोरि दीनी।
मलेछानि को वार कंधै मझारा। गुरु बीर वाचे न बंको सु बारा॥ २३॥
इन्हों जो प्रहारी लगी जाइ सारी। गिरे जंग मैं अंग भंगे सु मारी।
फुट्यो सीस तुंडं टुटी जंघ बांहू। विधे कंध छाती किसू पेट मांहू॥ २४॥
हयं संग केते गिरे जुद्ध मांही। मरे तातकालं उठे फेर नांही।
गुरु बान संधैं धनू ऐंचि मारैं। जिते होति आगे सु पारं पधारैं॥ २५॥
भिड़्यो भेड गाढो दड़ादाड़ डारे। बचे बीर जेते सु आए अगारे।
हुतो खानकाला हंकारी बिसाला। गुरु तीर ढूकयो सु क्रोधं कराला॥ २६॥

श्री हरगोबिंद बदन को देखि बुद्धि विध सुध।
तुरकन संग विरुद्ध कै, विधीचंद धरि क्रुद्ध।

1. खान पान के साथी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विधीचंद धर क्रुध धनु कर उधधि धरि सर संधध ।
धर मन बुद्ध, धिर जिस मद्ध धिर अरि मधध ।
धरा सु जुद्ध धर सुर सुद्ध धरि रिपु विद्ध ।
धसकव जुद्ध धरकत बोद्ध धधकत क्रुद्ध धमकत ॥ २७ ॥

### चाचरी छंद

तुफंगैं । उतंगैं । उठाई । चलाई ॥ २८ ॥
कमानैं । सु तानैं । प्रहारैं । संघारैं ॥ २९ ॥
जुझारैं । प्रचारैं । उभारैं । दुधारैं ॥ ३० ॥
प्रचंडे । उमंडे । घमंडे । सु खंडे ॥ ३१ ॥
महाने । प्रहाने । भयाने । पलाने ॥ ३२ ॥

### साबस छंद

लचति खतंगहिं । भट तनु भंगहिं ।
बरन सुरंगहिं । गिरति तुरंगहिं ॥ ३३ ॥
गहिति क्रिपानहि । खिचकरि मयानहिं ।
बल करि बाहति । रन फिर गाहति ॥ ३४ ॥
हति हति गोरनि । मरि जुग ओरनि ।
धर पर डारति । फिर फिर मारति ॥ ३५ ॥
सतिगुर हेरति । हय निज प्रेरति ।
करखति चांपहि । करि बल आपहि ॥ ३६ ॥
तुरक निबेरति । गिरि गिर टेरति ।
परति कराहति । जल कहु चाहति ॥ ३७ ॥
नभ[1] महिं हूरनि । पिखि बर सूरनि ।
चख[2] जिन चंचल । नचति दृगचल ॥ ३८ ॥
शुभति सु अंजन । करि मन रंजन ।
नचति सु खंजन । कर जनु कंजन[3] ॥ ३९ ॥
भट बर टोलति । चरब तमोलत ।
हसि हसि बोलति । हरखति डोलति ॥ ४० ॥
करति बधाइन । बहु चित चाइन ।
कर महिंदी जुति । बर नहं दी कृत ॥ ४१ ॥

---

1. आकाश । 2. आँख । 3. कमल ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

### दोहरा

इस प्रकार जुग सैन को रण माचयो घमसान ।
निबरि गए बहु सूरमा आपस मैं लरि हान ॥ ४२ ॥
नर तुरंग गन मृतक के लागे बड अंबार ।
भीखन भयो सथान सभि लाल रंग को धारि ॥ ४३ ॥
आमिख आंत्रनि मिज्झ ते श्रोणत केर प्रवाह ।
भई अधिक दुरगंधता गन हाडनि जुति तांहि ॥ ४४ ॥
ऐंचतमास गुमाइ गन लरि आपस महिं स्वान ।
चाटति श्रोणत मीझ को त्रिपति होतिकरि खान[1] ॥ ४५ ॥
कंक बंक बोलति उडति काक खाहिं बहु टेरि ।
गृद्ध बृद्ध भरमहिं टिकहिं मानव हयनि उधेर ॥ ४६ ॥
कहीं कहां लगि जंग को लरति बाहिनी दोइ ।
म्रितक भए कुछ बच रहे नर गिनती के जोइ ॥ ४७ ॥
काले खां अरु गुरु को भयो समुख जिम जुद्ध ।
सुनहु संत मन दै सभै करिकै सुद्धि सु बुद्धि ॥ ४८ ॥

**इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे 'जंग' प्रसंग बरननं नाम त्रिशंती अंशु ॥ ३० ॥**

---

1. कुत्ता ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३१

## काले खां बध प्रसंग

दोहरा

लगी सैन सों सैन तबि हत्थयारन कहु मारि ।
काले खां सनमुख गयो जहिं सतिगुरु निहारि ॥ १ ॥

चौपई

चंचल करति तुरंग नचायो । श्री हरिगोविंद सनमुख आयो ।
पहुंच्यो निकटि धनुख संभारति । खर खपरा गुन महिं संचारति ॥ २ ॥
गुरनि बंगारति बाक उचारे । प्रिथम तुमहु वहु खान संघारे ।
जे तीरन को अधिक चलावति । सभि महिं बड बलवान कहावति ॥ ३ ॥
अबि मैं चलि आयो तुम ओरा । कालेखान नाम लखि मोरा ।
तुमको पकरनि शाहु पठायो । बहु लशकर ले चढि मैं आयो ॥ ४ ॥
कै सभि को पलटा रण लैं हौं । नांहि त प्रान आपने दै हौं ।
सावधान हुइ सहु मम बाना । हतों महां तीखन हित हाना ॥ ५ ॥
श्री हरिगोविंद सुनि मुसकाए । जिस मग पूरब तुरक पठाए ।
सो अबि बंद नहीं कुछ भयो । सभिनि आइ भट रण करि लयो ॥ ६ ॥
नासहि शाहु बाहिनी सारी । हम ठांढे अबि तोहि अगारी ।
जसु बिद्दया तीरनि की पाई । सो अबि करहु देहु दिखराई ॥ ७ ॥
पूरब सहैं वार सर तोरा । पीछे करहु बिलोकनि मोरा ।
इम सुनिते श्रुति लउ धनु ताना । बल ते त्याग्यो तीखन बाना ॥ ८ ॥
छोरनि बोल्यो काले खाना । लेहु पता जिम विद्यावाना ।
मारा ही जानहु धर गिर्‍यो । आवति सर सतिगुरु निहर्‍यो ॥ ९ ॥
मसतक छुवति सु गयो अगारे । खर खपरा कुछ मास उतारे ।
बूंद रकत की निकसी लाल । मनहुं तिलक जै को लगि भाल ॥ १० ॥
रिदै क्रोध तबि दून चऊना । कर्‍यो निकासन सर खर तूना ।
तूरन पूरि कान लगि मारा । पिखि सरूप को डर बहु धारा ॥ ११ ॥



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तानति धनु को टरि करि चाला। प्रेरति बाजी बहु बलवाला।
छुट्यो तीर गुर कर ते ऐसे। बिखधर[1] रिस धरि उडिगा जैसे ॥ १२ ॥
तुरक गयो बचि तुरंग संघार्‌यो। लग्‌यो उदर महिं पार पधार्‌यो।
कालेखान उतर करि खर्‌यो। अपना आप संभारन कर्‌यो ॥ १३ ॥
कहति भयो अबि होति अनीती। जे तुम करहु जंग की रीती ॥ १४ ॥
खरो धरा पर मैं हय बिना। तुम चढि रहे वेग जिस घना।
जे करि सम हुइ रण को करहु। तजहु तुरंग चरण पर थिरहु ॥ १५ ॥
तौ मैं करौं खड़क संग्रामा। तकि बहु दाव दहिन अरु बामा[2]।
जे नहिं मानहु चहु संघारा। तौ करि लेह अपनो वारा ॥ १६ ॥
जथा प्रथम भा तीरनि संग। तथा खड़क को चहीयहि जंग।
होइ बराबर हेरहु वार। अपनो कीजै बल संभारि ॥ १७ ॥
सुनि सतिगुर कालेखां बैन। तजयो तुरंग जिनहुं कुछ भै न।
कह्यो तोहि चित हौंस[3] न रहै। लरहिं तथा जिम अबि तूं चहैं ॥ १८ ॥
खड़क सिपर दोनहूं कर धारी। भए समुख दोनहुं भट भारी।
द्वै दल के दोनहुं सरदार। दोनहुं कै उतसाह उदार ॥ १९ ॥
दोनहुं बीर, बीररस ढरे। दोनहुं दाव जंग को करें।
दोनहुं के आनन[4] पर लाली। दोनहुं विद्‌यावान बिसाली ॥ २० ॥
दोनहुं जीतन के अभिलाखी। दोनहुं को दल देखति आंखी।
दोनहुं इत उत विचरन लागे। दोनहुं बाम दाइं हुइं आगे ॥ २१ ॥
दोनहुं पटेबाज़ की विद्‌या। करि करि दोनहुं चाहति छिद्‌दया।
दोनहुं चरन चलाकी करैं। वार रोकि दोनहुं ढिग अरैं ॥ २२ ॥
सिपर[5] सिपर सों दोनहुं भेर। कर दोनहुं चमकति शमशेर।
जुटे बीर दोनहुं शमशेर। जनु दोनहुं बलि ब्रिखभ बडेर ॥ २३ ॥
सिंग खड़ग ते दोनहुं अरे। मनहु मसत द्वै कुजर[6] भिरे।
भुजदंडन हैं सुंडा जिनके। तीछन दसन असिनि बड जिनके ॥ २४ ॥
कालेखां उछर्‌यो बल धारे। खड़ग उभारि गुरु ललकारे।
रहु ठांढो, मारयो अबि जानि। नहिं जै हैं अबि लै करि प्रान ॥ २५ ॥
सतिगुर अधिक शीघ्रता धारी। करति चलाकी सिपर अगारी।
रोकि वार निज खड़ग प्रहारा। कालेखान तबि बल धारा ॥ २६ ॥
लियो खड़ग पर खड़क जु मारा। निकसति भई ब्रिंद चिनगारा।
मानहु चमकति रैन टनाने। टुटे न दोनहुं बचे महाने ॥ २७ ॥

1. नाग। 2. दाएँ बाएँ। 3. हवस, इच्छा। 4. मुख। 5. ढाल। 6. हाथी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गयो फरक करि कालेखान। भयो निफल द्वै वार क्रिपान।
थकति न दोनहुं जोधा भारी। पुन अभिलाखति करनि प्रहारी ॥ २८ ॥
लाइ घात पुन ढूक्यो नेर। दोनहु कीनि भीम भट भेर।
अंतहिपुर हेरति है सारा। त्रास टुरक ब्रिंदनि ते धारा ॥ २९ ॥
गुरु बीर अरु तुरक जि बाचे। रण हेरत संसै चित राचे।
अरयो तुरक नहिं मारयो गयो। घात खड़ग को फिरि फिरि कियो ॥ ३० ॥
बिधीचंद आदिक बड जोधा। पिखहिं तुरक उर बाढहि क्रोधा।
सभि के मन की सतिगुर जानी। चाहति भए करनि रिपु[1] हानी ॥ ३१ ॥
आइ परयो करि खड़ग प्रहार। कालेखान महां बल धारि।
श्री हरिगोबिंद ढाल संभालि। रोकि वार को मारी भाल ॥ ३२ ॥
बल ते हनी गिरन लगि पाछे। कराचोल[2] बांह्यो तत्रि आछे।
बिह्बल ते न बचायो गयो। लग्यो सीस चीरति बपु भयो ॥ ३३ ॥
एकै आंख एक ही श्रौन। इक कर, इक पग, खंड सु दौन।
अरधो अरध सु चीरन करती। पुंन तलवार वरी कुछ धरती ॥ ३४ ॥
हुइ जुग खंड परे तरफंते। गयो भिशत को भा सुखवंते।
देखति जै जै बाक उचारा। बज्यो फते को अधिक नगारा ॥ ३५ ॥
बचे तुरक कुछ चले पलाई। भूप बिना करैं लराई।
तजि रणखेत निकेत सिधारे। दई सभिनि की सुध रण मारे ॥ ३६ ॥
जहिं कहिं बिधवा गन तुरकानी। सिर मुख पीटति दुखी महानी।
उत काबल अरु दिल्ली देश। चाकर ग्रामनि नगर अशेष ॥ ३७ ॥
शोक बास करि बिच तुरकाने। भ्रात पितादि बंधु जिन हाने।
किस को पुत्र भतीजा कांहू। भए संघारण संघर[3] माहूं ॥ ३८ ॥
गुरु बीरता जाहर भारी। बच्यो कौन जो गयो अगारी।
जहां तहां तुरकन के ओक[4]। कीन अखारो कंजर शोक ॥ ३९ ॥
नाइण देति तलीमन नाचति। है है ओह गाइबो माचति।
सिरमुख को पीटति इकबारी। उठ हैं ताल जनु मिलिमिलि भारी ॥ ४० ॥
इस बिधि की गति लहि तुरकाना। भनहिं सिआने भा वहु हाना।
चार जंग मैं दियो खपाई। सय्यद मुगल खान समुदाई ॥ ४१ ॥
अबि भी पठहि शाहु जे लशकर। सरब निबेरहिं रन को करि करि।
नहीं चाकरी जो अबि करि हैं। प्रान सहित सो तुरक उबरि हैं ॥ ४२ ॥

---

1. दुशमन। 2. तलवार। 3. युद्ध 4. घर।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाहि त दे हैं गुरु खपाई। शाहि क्रोध करि तहां पठाइ।
इस ते आदि अनिक बिधि बाती। करहिं तुरक मिलि, संकट छाती ॥ ४३ ॥
सतिगुरु काले खां जबि हयो। चतुर घटी दिन तबि रहि गयो।
चहुं दिशि पुरि के दारुन थान। धुकि धुकि उठिन्ने लगे मसान ॥ ४४ ॥
जंबुक[1] बोलति ग्रास उपावैं। मास खाइ खग ब्रिंद भ्रमावैं।
कुछक ऊन लछ तुरक संघारे। गुरु के बीर सात सै मारे ॥ ४५ ॥
पुन सतिगुरु कीनसि बिसराम। जियति सुभट सभि लह्यो अराम।
कमरकसा तिम ही सवधाना। श्रमति जि पांच जाम रण ठाना ॥ ४६ ॥

**इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे 'कालेखान बद्ध' प्रसंग बरननं नाम एक त्रिसंती अंशु ॥ ३१ ॥**

1. गीदड़।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३२
# श्री सतिगुर तयारी प्रसंग

**दोहरा**

चहुंदिशि पुरि करतार के जोधा ब्रिंद तुरंग।
परे हज़ारहुं म्रितक भे भीम थान तिन संग ॥ १ ॥

**चौपई**

**बिधीचंद सों श्री मुख कह्यो। लक्खू आदि प्रलोक जि लह्यो।**
पठहु दास तिन लोथनि लेय। रचहिं चिता सभि दाह करेय ॥ २ ॥
सुनि आग्या बहु दास पठाए। अमीचंद मिहरादिक ल्याए।
काशट संचि दाहि सभि करे। ल्याइ उठाइ जि घाइल परे ॥ ३ ॥
इतने बिखै निसा हुइ आई। स्याल[1] पुकार कीनि चहुं घाई।
कूकर बोलति भक्खति मास। घाइल तुरक कराहति रास ॥ ४ ॥
पुनि महिं जहिं कहिं नर मिलि बैसे। बिती जथा बातन करि तैसे।
अस संघर नहिं भयो कदाई। पंच पहिर महिं दल समुदाई ॥ ५ ॥
दोनहुं दिशि ते लरि लरि मरे। सतिगुर बिना कौन अस करे।
कई मास लौ मास रहे है। असथी[2] बृंद परे दृष्टे हैं ॥ ६ ॥
मन सतिगुर कै भई गिलान। बहु बदबोइ प्राति लौ ठानि।
रह्यो न जाइ नगर के मांही। कुछ उपाइ इसको हुइ नाही ॥ ७ ॥
इक तो इहु कारन मन जाना। दुतीए वढण शाहु पछाना।
अंत समां पहुंचयो तिस आई। दरशन चाहति बैस बिताई ॥ ८ ॥
तिस की आसा पूरन हेतु। चढन चह्यो गुर कृपा निकेत।
त्रितीए जेतिक ग्राम समीप। हुते हज़ारहुं थांन महीप ॥ ९ ॥
लरति जंग महिं सो सभि मारे। सनबंधी तिन केर पिछारे।
रचहिं द्वैष बल छलके संग। मरे बृंद ते हुइ मन भंग ॥ १० ॥
इत्यादिक कारन कुछ और। चितवति भे सोढी सिरमौर।
बिधीचंद को निकटि हकारा। कहति भए हम कीनसि तयारा ॥ ११ ॥

---

1. गीदड़। 2. हड्डियां।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कीरतपुरि महिं पहुंचहिं जाई। जाहु सदन तूं बिलम बिहाई।
सयंदन डोरे[1] तयारि करीजै। बहिलनि वसतु सकट[2] भरि लीजै ॥ १२ ॥
करहु न लालच, प्रिय वथु लीजै। अपर सरब ही त्यागनि कीजै।
बहिर गंग सर पर हम खरे। तोहि प्रतीखहिं थिरता करे ॥ १३ ॥
जथा जोग दीजहि असुवारी। आनहुं संग सरब करि त्यारी।
बिधीचंद सुनि गमन्यो तूरन। कर्यो सुनाइ हुकम गुर पूरन ॥ १४ ॥

दोहरा

सुनि मरवाही नानकी घर की वसतु संभारि।
बिधीचंद के हाथ करि लागी सकट मझार ॥ १५ ॥

चौपई

खेम कुइर सूरज मल दारा। नुखा गूजरी दुती उदारा।
शीघ्र चढाइ रुचिर जुग डोरे। निकसी बहिर गंगसर ओरे ॥ १६ ॥
द्वै खासे[3] इक पर मरवाही। चढी नानकी दूसर मांही।
श्री गुरदित्ता सयंदन चरे। श्री हरिराइ निकटि थिर करे ॥ १७ ॥
बिधीचंद सिख आदिक नारी। सकल भई बहिलनि असुवारी।
श्री गुर तेग बहादर चंद। अणीराइ हय चढे बिलंद ॥ १८ ॥
बाबक गुरु रबाबी दारा। तुरत बहिल पर ह्वै असवारा।
बिधीचंद को नंदन स्यानो। लालचंद चढि कीनि पयानो ॥ १९ ॥
जाती मलक कुटंब समेता। गमन कीनि सभि तजे निकेता।
जे रण मरे सु गुर-पुरि गए। घाइल हुते कशट जिन थिए ॥ २० ॥
श्री हरिगोविंद निकटि हकारे। सभि सों करुणा द्रिषटि निहारे।
पीड़ा हरी सकल की जबै। चढि करि त्यार होति भे तबै ॥ २१ ॥
जहिं सतिगुर सभि दल जुति खरे। त्यार होइ तहिं आवनि करे।
गुर घर के समाज बड भारे। धरे तहां ही सरब संभारे ॥ २२ ॥
ले सभिहिन को संग ल्वायो। बिधीचंद गुर के ढिग आयो।
हाथ जोरि सभि गाथ बुझाई। प्रभु जी! चलि आए समुदाई ॥ २३ ॥
जेतिक सकटनि पर लदि गयो। तितिक समाज संग करि लयो।
धीर मल्ल को कह्यो घनेरे। सो नहिं आइव रावरि नेरे ॥ २४ ॥
कहति सु तजौं न पुरि करतार। रह्यो समाज सु लयो संभारि।
नहिं चाहति चित संग तुमारा। बक्क बाक प्रतिकूल उचारा ॥ २५ ॥

1. रथ तथा पालकियां। 2. गड्डा। 3. पालकी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri GyaanKosha

निज माता को राख्यो पास। कहि बहु बिधि की प्रीति अवास[1]।
बडनि हमारे नगर बसायो। मिल तुरकनि सों रहैं इथायो॥ २६॥

हम नहिं तिन सों वैर कमावैं। तुरकनि के अनुसारि बितावैं।
श्री गुरु ग्रंथे राखि करि लीनो। गुपत छपावनि कितहूं कीनो॥ २७॥

खोजि रहे सो हाथ न आयो। तारो कठन कोठरे लायो।
कहै सु मैं इह राखनि करौं। इसकी आस एक मन धरौं॥ २८॥

जिस ते चलै मोर गुज़राना। खान पान को खरच महाना।
जोर पाइ करि होइ बखेरा। कहहु त ले आवहिं इस वेरा॥ २९॥

श्री हरिगोविंद लखी खुटाई। अग्र तुरक ढिग पत्र पठाई।
बहुर भविखति करि अपराधू। जथा सु प्रिथीआ प्रथम असाधू[2]॥ ३०॥

अबि सज़ाइ जे कछू दिवावैं। नीकी नहीं किसू मन भावैं।
होइ अधिक ही अवगुनिआरो। तऊ अंत को अहै हमारो॥ ३१॥

इत्यादिक बहु रिदै बिचारी। श्री हरिगोविंद गिरा उचारी।
कुछ नहिं कहहु चहहि सो करहि। गुर घर सों हुइ मेल न धरहि॥ ३२॥

प्रथम पृथक प्रिथीआ जिम भयो। तिम इह रहै अपर मग लयो।
सुनि बिधीए कर जोरि अलायो। तुम आइसु ले ग्रंथ लिखायो॥ ३३॥

नहीं संपूरन अबि लौ भयो। राग बिलावल लौं लिखि लयो।
आधो रहै सु जानी परै। दैवो एहु नहीं किस करै॥ ३४॥

श्री हरिगोविंद बहुर उचारे। गुरु ग्रंथ लिखियहि जग सारे।
पुरि पुरि ग्रामन घर घर होइ। पठहि सुनहि जहिं कहिं सभि कोइ॥ ३५॥

बहुर समों ऐसो हुइ जाइ। जगत राज हम सिक्ख कमाइं।
देश बिदेशन बधहि प्रताप। वाहिगुरु कहु जापहिं जाप॥ ३६॥

इस ते आदि जि गुरु घर दोही। सभि अनुसारि तिनहुं के होहीं।
इह भी ग्रंथ ज़ोर को पाइ। लैहैं अपने निकटि मंगाइ॥ ३७॥

तिन सिक्खनि के होइ अधीन। करहि जीवका अपनी पीन।
इम कहि सतिगुर तयारी कीनि। बीती जाम जामनी[3] तीन॥ ३८॥

जहिं कहिं पुरि महिं जरहिं मसाल। आइं जाइं बहु वसतु समालि।
गुर जहिं खरे तहां लगि सारे। झार मताबी दिपहिं उदारे॥ ३९॥

तिमर बिनासे भयो प्रकाश। जनु दिनमणि ही चढ्यो अकाश।
सरब आनि जबि इकठे भए। कहि कहि भले संभारनि किए॥ ४०॥

सगरो गुरु कुटंब चलि आइ। संग सिक्ख सैना समुदाइ।
प्रिथक प्रिथक सभि बूझनि कीने। पुन प्रसथान हेत चित दीने॥ ४१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ अशटम रासे **'श्री सतिगुर तयारी'** प्रसंग **बरनन** नाम दोइ-त्रिशती अंशु॥ ३२॥

---

1, घर। 2. बुरा। 3. रात।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३३

# श्री कीरतपुर आगवन प्रसंग

दोहरा

झार मतावी बहु जरे संग मसाल अनेक।
डोरे सयंदन संग कुछ कीनसि जलधि-बिबेक ॥ १ ॥

चौपई

पिता सथान गंग सर जानि। करि बंदन कीनसि प्रसयान।
आगे चलें मसालें ब्रिंद कर्‌यो। पयान श्री हरिगोबिंद ॥ २ ॥
सने सने गमने मग जांही। बजहिं नगारें बहु धुनि तांही।
सैंन सकल को आइसु[1] दीनि। श्री गुरदित्ते के संग कीनि। ३ ॥
सभि कुटंब के संग रहीजै। सावधान ह्वै कै गमनीजै।
कितिक सऊर संग निज लीने। तजि मग बाम पयान कीने ॥ ४ ॥
जाम जामनी भई बितीत। प्रात हेरि सभि के मुद चीत।
अंतहिपुरि सों चमूं बडेरी। गमन करति रज उठति घनेरी ॥ ५ ॥
सूधे पंथ चले सभी जाईं। ग्राम नगर उलंघति समुदाई।
दिशा दाहिनी सतिगुर जाते। करति जुद्ध की बहु बिधि बातें ॥ ६ ॥
बिधीचंद ते आदि जि संग। कहति भयो प्रभु दीरध जंग।
जाम दिवस जबि ही चढि आयो। छाया सहित कूप दरसायो ॥ ७ ॥
उतरे हेरयो रंम सथान। सीतल नीर करति भे पान।
कितिक समै बैठे सुख पायो। बिधिचंद सों बाक सुनायो ॥ ८ ॥
साहिबजादे चमूं अशेख। कितिक दूर पाछे ? लिहु देखि।
हम ते जबि आगे हुई जाइं। तबि प्रसथान कहि इस थाइं ॥ ९ ॥
बिधीआ चढि करि तुंग[3] सथान। देखनि लग्यो सुनहि धुनि कान।
कितिक दूर आगे चलि गए। बजति निशान तबहि सुनि लए ॥ १० ॥
सवाजाम दिन चढ्यो निहारा। उतर पर्‌यो सभि गुर परिवारा।
कहि करि दीरध फरश करायो। गुरु सुत बैठि दिवान लगायो ॥ ११ ॥

1. आज्ञा। 2. सुंदर 3. ऊँचा।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बाबक शबद गावने लाग्यो। सुनि प्रभु महिमा मन अनुराग्यो।
बिधीचंद ते सुनि गुरु कान। आगे गए सकल करि पयान॥ १२॥
चढे तुरंग अगारी चले। तिस थल की महिमा कहि भले।
पहुंचे सतिगुर तिसी सथान। देख्यो आगे लग्यो दिवान॥ १३॥
गावति शब्रद सुनति सुत सारे। रिदै अनंद बिलंदै धारे।
सभिहिनि हेरे सतिगुर आए। खरे भए सनमान बिठाए॥ १४॥
सकटादिक नर जितिक पिछारी। सभिनि हेतु इसथिरता धारी।
चरन कमल को लखिकरि बेला। शबद भोग तबि पाइ सुहेला॥ १५॥
सकल तुरंगनि दई निहारी। मारग श्रम सागरो निरवारी।
सावधान बनि तूरन सारे। सतिगुर होत भए असवारे॥ १६॥
गमनति पंथ उलंघ्यो सारा। तबि सतुद्रव को कूल[1] निहारा।
सने सने उतरे सभि पारा। समुख निकटि जबि पिखे पहारा॥ १७॥
हेतु जनावन सीस निवायो। देखति बिधीए बाक अलायो।
किस को इहां बंदना कीनि ?। करहु बतावन प्रभु प्रबीन॥ १८॥
सुनि श्री हरिगोविंद बखाना। जानहु बहु कारन इसथाना।
रिखि बसिशट तप कीनि घनेरे। शत सुत[2] म्रितक सुने जिस बेरे॥ १९॥
बूडन लग्यो नदी इस मांही। तप के तेज डुबायो नांही।
सो प्रवाह अपने करि लीने। सभि थल महिं लघु जल करि दीने॥ २०॥
पुनहि पांस[3] निज गर मैं डारि। गिर्‌यो अपर सलिता के बारी।
तिसने पांस कटि रिखिजोवा। नाम बिपासा तबि ते होवा॥ २१॥
बहुर सुनहु देवी को थान। जगत-ईशरी असुरनि हान।
दसम रूप धरि जबि हम रहैं। अनिक बिलास करति सुख लहैं॥ २२॥
अबि ते भी रण करहिं बडेरे। शत्रु बिलास होहिं बहुतेरे।
सिरजहि पंथ बैठि हम इहां। जिसको तेज वधहि जग महां॥ २३॥
तुरकन को करिकै संघार। करहिं राज बड धरा संभारि।
इत्यादिक बहु गाथा सुनाई। मारग चलति गुरु सुखदाई॥ २४॥
तबि लौ दोइ घटी दिन रह्यो। दोइ कोस कीरतपुरि लह्यो।
तहां पिशाब करनि के हेतु। उतर परे प्रभु क्रिपा-निकेत॥ २५॥
बिधीचंद ने पकर्‌यो घोरा। करति भयो रुख सो जल ओरा।
ले तिन आगे पान करावा। निरमल नीर अच्यो मन भावा॥ २६॥

---

1, सतलुत का किनारा 2. सौ पुत्र। 3. फांसी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करति पान को हय गिर पर्यो। हेरति खरे तुरत ई मर्यो।
रण महिं लगे घाव गन भारे। गुर पहुंचावन हेतु जिवारे।। २७ ।।
बडे भाग सुर पुरि को गयो। नाम 'जानभाई' जिस भयो।
लोह सवामण जाहिं सरीर। करति जंग वेध्यो वह बीर।। २८ ।।
अवर तुरंग गुरु चढि चले। तिस हय के गुन बरनति भले।
कीरतपुरि तवही नियरायो। प्रविशे पिखि कहि भले वसायो।। २९ ।।
बुढन शाहु निकटि चलि गए। बैठ्यो जहां समाधी कए।
सिमरत श्री हरिगोविंद रूप। 'दिहु दरशन अबि आनि अनूप।। ३० ।।
कह्यो आइ मैं हरिगोबिंद। खोलि बिलोकहु चख अरबिंद।
देहु दरस निज वाक सुनाइ। जबि इहु कान परी धुनि जाइ।। ३१ ।।
अधिक अनंद ते नैन उघारे। पर्यो चरन जसु रुचिर उचारे।
नमो नमो तुम को जग स्वामी। नमो नमो प्रभु अंतरजामी।। ३२ ।।
नमो नमो गन तुरकनि हरता। नमो नमो उज्जल जसु करता।
सच्चिदानंद सरूप तुमारा। मच्छ कच्छ बावन तन धारा।। ३३ ।।
सूकर[1] श्री नरसिंघ बने हो। रामचंद श्री क्रिशन भने हो।
श्री नानक श्री अंगद अमर। राम गुरु अरजन रचि समर[2]।। ३४ ।।
छटम रूप धरि दरशन दीना। मम कल्लयान सकल विधि कीना।
घाव श्रोण जुति अधिक सुहाए। हति रावन जनु रघुवर आए।। ३५ ।।
कहि जसु बहु बिधि पग पर पर्यो। गुरु गहि भुज गर लावनि कर्यो।
सकल आस पूरन तबि भई। सभि ग्याता उर महिं विदतई।। ३६ ।।
श्री गुरदित्ता कबि चलि आयो। नमो परसपर करि सुख पायो।
सतिगुर भन्यो जाइं हम डेरे। इह अबि बैठहिंगे ढिग तेरे।। ३७ ।।
इम कहि गमन कीनि ततकाला। जातीमलक बिप्र ले नाला।
उतरि सैल[3] ते सदन प्रवेशे। दरशन दीनि कुटंब अशेशे।। ३८ ।।
कट कसि त्रौदश जाम बिताए। शसत्र बसत्र सभि अंग लगाए।
दोई घरी ऊपर बित जबै। कमरकसा खोल्यो गुर तबै।। ३९ ।।
शसत्र बसत्र सभि धरे उतारी। कीनि शनान लीनि बहु बारी।
तीर आदि के घाव बिशाला। लगे बहत्तर जबि रण घाला।। ४० ।।
कमरकसा खोलति गन गिने। सुनि सभि बिसमे सेवक भने।
चतुर घटी जबि जामनि गई। करि भोजन द्रिग निंद्रा लई।। ४१ ।।

1. वराह अवतार। 2. युद्ध। 3. पहाड़।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपर सरब ही करि करि खान। सुपति भए करि चिंता हानि।
उत बुड्ढण ढिग बाबा[1] थिरे। भगति ग्यान की रचना करे॥ ४२॥
सतिगुर के गुनं बरनति रहे। जिन को सुनि सिख दुरमति दहे।
श्री गुरदित्ते संग उचारा। जिस छिन छुटे सरीर तुमारा॥ ४३॥
करुना करि इत ही थल आइ। बनहि देहुरा सभि सुखदाइ।
प्रान अंत को सभा समा पहूचा। पायो गुरु दरशन चित रुचा। ४४॥
कहति सुनति इस भांति सु बानी। तीन जाम तबि निसा बिहानी।
गुरु अराधन के ह्वै तत्पर। महां तापसी बैस बडी धरि॥ ४५॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ अशटम रासे 'श्री कीरतपुर आगवन' प्रसंग बरननं नाम तीनविंसती अंशु॥ ३३॥

1. गुरदित्ता।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३४

# शाहु प्रसंग

**दोहरा**

श्री गुर हरिगोबिंद जी कीनो सौच शनान ।
पहुंचे बुड्ढणशाहु ढिग, भगत आपनो जानि ।। १ ।।

**चौपई**

देखति बंदे पद अरबिंदा । धंन धंन तुमको सुख कंदा ।
अंत समें मुझ दरशन दीन । कर्यो क्रितारथ संकट हीन ।। २ ।।
सुनि करि सतिगुर बाक उचारा । जीवन को चित चहि जि तुमारा ।
पिखहु अपर कुछु जगत तमाशा । करहु आपनी पूरन आसा ।। ३ ।।
हाथ जोरि तबि सकल सुनाई । बरख पंच सै बैस बिताई ।
ऐसो समां न प्रापत फेरी । भए द्रिषटि गोचर तुम मेरी ।। ४ ।।
महां तापसी जोगी घनो । तजि सुख जग बैरागी बने ।
अंत समें महिं दरस तुमारा । चाहति नहिं प्रापति तिस बारा ।। ५ ।।
'नेति नेति' जिस बेद पुकारे । शेख सारदा पाइ न पारे ।
सो तुम निकटि भाग बड मेरे । इम कहि बंदन करि तिस बेरे ।। ६ ।।
अवनी तल महिं पौढन कीनि । भौतक तन ततछिन तजि दीन ।
जिम गज[1] फूल माल को डारे । बिन संकट तिम तज्यो सुखारे ।। ७ ।।
सतिगुर बिखै लीन हुइ गयो । पुन बाबक तहिं पहुंचति भयो ।
आसावार गाइबो कीनि । पारब्रह्म सिफती सुख चीनि ।। ८ ।।
भई प्रभाति कबर खनवाइ । आछी बिधि तिस को दफनाइ ।
बिधीआ श्री गुरदित्ता साथ । सभिहिन संग लए तबि नाथ ।। ९ ।।
कीरतपुरि निकेत[2] को आए । अनिक प्रकारनि बाक सुनाए ।
बस करि बहुते दिवस गुजारे । सिक्ख हज़ारहुं जग निसतारे ।। १० ।।
धीरमल्ल रहि पुरि करतारा । सभि गुरु को सु समाज संभारा ।
डर धरि तुरकेशुर को मन मैं । पाती[3] लिखति भयो तिस छिनि मैं ।। ११ ।।

1. हाथी । 2. घर । 3. पत्र ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हम हमेश हज़रत अनुसारी। जथा अपर खलकत है सारी।
पठ्यो दूत लवपुरि को धायो। आगै सकल शाहु सुनि पायो॥ १२॥
जे कातुर भाज धरि त्रास। कह्यो जाइ काले खां नास।
कुतबा पैंदखान असमान। अनवर सहित चमूं सभि हानि॥ १३॥
सुनति शाहि दहिल्यो बिसमान्यो। खां बज़ीर के संग बखान्यो।
होति अचंभा मम उर मांही। कारज सर्यो न कुछु दल पांही॥ १४॥
कुछक ऊन इक लच्छ पठाए। सो गुर रण करि छित सुपताए[1]।
दल को बल को करि हंकार। गए जंग को पाइसु हार॥ १५॥
सुनि करि खांवज़ीर तबि बोला। हज़रत जी रावरि चित डोला।
हुते शाहु जिम बडे तुमारे। सेवति गुरु पग सिजदा धारे॥ १६॥
करि प्रसंन बर सभिने पाए। सकल समाज लए मन भाए।
श्री नानक संग बाबर मेला। राज तेज बर लीनि सुहेला॥ १७॥
शाहु हमाऊं जबहि निकासा। पहुंच्यो श्री अंगद के पासा।
तिन के बर ले करि पातिशाही। कर्यो राज बड अविनी[2] मांही॥ १८॥
सुमतिवंति वड अकबर भए। श्री गुर अमर अराधनि किए।
गड़ चितौड़ तिन बच ते टूट्यो। द्वादश बरखन जो नहिं छूट्यो॥ १९॥
मिलि करि भेट परगणा कीनि। तिन प्रसंनता ते सुख लीन।
पुन श्री अरजन, हरिगोविंद। मिल्यो पदर तुव द्वै कर बंदि॥ २०॥
साढसती आदिक दुख भारे। गुर प्रसंन करि सकल निवारे।
जबि की तुम पतिशाहित पाई। अनिक बार ही रार मचाई॥ २१॥
बहु नुकसान तुमारा भयो। लाखहुं लशकर तहिं खपि गयो।
मैं बहुबारि अरज़ करि रह्यो। भेत न कछू आप ने लह्यो॥ २२॥
अपर नरन सम जानति उर मैं। लाखहुं हतहिं जु एक बचन मैं।
जिन सों कर जोरे बनि आवै। तिन सों जंग कहां मन भावै॥ २३॥
मुगलसखां पुन अबदुल खान। लला सु कंवर, सैन महान।
बनि पैंदा अबि निमक हरामी। तुमरो लशकर करि अनुगामी॥ २४॥
मर्यो जाइ कुछ सरी न कारा। जे गुर संग लरै जग सारा।
तऊ न जीत सकै मरि रहै। कहां बात तुम लशकर अहै॥ २५॥
इत्यादिक जबि करते बाती। तबि लौ धीर मल्ल की पाती।
दई दूत नै आगै धरिकै। खांवज़ीर सगरी पठि करि कै॥ २६॥

1. धरती पर सुला दिए। 2. धरती। 3. पिता (जहांगीर)।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिसमै भयो कहां इन कीनि। गुर-पौत्रा इम भयो अधीन।
नहीं शाहु को बनहि सुनावनि। सुनि सुनि करहि न जंग मचावन॥ २७॥
कह्यो शाहु सों खत महिं लिखे। मर्‍यो तुरंग दुतिय रण बिखे।
पौन भरे खलड़े इहु स्वास। इनके जीवन कहां बिसास॥ २८॥
इसते भी तुम रोस निवारो। निंम्रि होइ अबि बंदन धारो।
जथा वडेरे मानति रहे। तथा आप को लाइक़ अहै॥ २९॥
किसी वसतु की कमी न तुमको। बनहु सरल, त्यागहु गुर गम को।
बहुर कुटिलता धारहु नांही। सुख भोगहु अपने घर मांही॥ ३०॥
सुनि उपदेश शाहु मन फिर्‍यो। निज क्रित लखि पछुतावन कर्‍यो।
ब्रिथा आपनी सैन मराई। जिस ते कारज सर्‍यो न राई॥ ३१॥
हाथ जोरि गुर दिशि मुख करिकै। सिजदा कीनि धरनि सिर धरिकै।
अबि मैं द्रोह न तुम संग करौं। जबि लगि प्रान देहि मैं धरौं॥ ३२॥
पाछल बात छिमा सभि करीअहि। मो पर नहीं कोप को धरीअहि।
खां वज़ीर पाती लिखि दीनि। धीरमल्ल पहि भेजन कीनि॥ ३३॥
गुर घर सों नहिं शाहु बिगारहि। बंदन करी, भयो अनुसारहि।
लेकरि हलकारा ढिग आयो। पठि करि धीरमल्ल हरखायो॥ ३४॥
शाह दिशा इस बिधि भी बाती। अबि गुरकथा सुनहु अवदाती।
कीरतपुरि को अधिक वसायो। सिख संतनि को अनंद उपायो॥ ३५॥
कबहुं जाइ गुर करहिं अखेरैं[1]। हुइ बिहंग[2] म्रिग मुकति घनेरैं।
बहुसंगति दरशन को आवै। धनी मसंद दरब बहु ल्यावैं॥ ३६॥
चारहुं दिशि ते गुर की कार। नितप्रति आवहि दरब उदार।
रात दिवस हुइ दीरघ देग। तज्यो जंग रहि बिन उदवेग॥ ३७॥
मेला लग्यो रहै दरबार। दरशन देखे अनंद उदार।
कथा कीरतन दिन प्रति होइ। सुनि सुनि मन निरमल सभि कोइ॥ ३८॥
इक दिन बैठे सभा लगाए। दूर देश ते द्वै सिख आए।
तिह की संगत लिखि अरदास। पहुंचाई सतिगुर के पास॥ ३९॥
करि बंदन धरि दीनि अगारी। खोलि सु पठी हकीकत सारी।
श्री सतिगुर! तुम हो बसि प्रेम। पहुंचहु सिखनि ढिग दिहु छेम॥ ४०॥
इहु सभि देश दास गुर केरा। चाहति है इति दरशन हेरा।
अपनो घर पावन को करैं। रावर के पावन जबि परैं॥ ४१॥

---

1. शिकार। 2. पक्षी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि सतिगुर श्री मुख मुसकाए। देश दूर बहु कित को जाए।
बिधीचंद की दिशा निहारा। हित भेजनि के बाक उचारा ॥ ४२ ॥
तोहि मोहि मैं भेद न कोई। पहुंचहु तहां सिदक लिहु जोई।
सभि संगत को दरशन दीजै। गुर की कार संभारि सु लीजै ॥ ४३ ॥
सुनि आइसु को बिलम न करी। चलन हेतु मनसा उर धरी।
चरन कमल को बंदन करिकै। गमनयो बिधीचंद हित धरिकै ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ अशटम रासे 'शाहु' प्रसंग बरननं नाम चतुर्त्रिशती अंशु ॥ ३४ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३५
# बिधीचंद प्रसंग

### दोहरा

अज़मत दे श्री सतिगुरु बिधीआ दियो पठाइ।
सत्तिनाम श्री मंत्र जपि पहुंच्यो मग सहिसाइ[1] ॥ १ ॥

### चौपई

पूरब दक्खण संधि जि अहै। आगन कोन महिंसे नर रहैं।
तितको अज़मतको करि ज़ोर। जाइ पहूंचति भा इक ठौर ॥ २ ॥
देउ नगर इक तहां बसंता। सुंदर शाह फकीर रहंता।
तहां शुषक[2] तरु हेरनि कर्यो। वैठि विधीचंद आनंद धर्यो ॥ ३ ॥
हर्यो होति भा सो ततकाला। पुरि जन पेखि अचंभ बिसाला।
आइ सभिनि सेवा वड कीनि। देखहिं जनु महातमा चीन ॥ ४ ॥
सुंदरशाहु बसहि तहिं कानन[3]। सुनति भयो महिमा इहु कानन।
महांपुरख इक आवन कर्यो। बैठति सुशक वृच्छ भा हर्यो ॥ ५ ॥
बिसमत हुइ हेरन कहु चाहा। केहरि[4] एक हकार्यो पाहा।
हुइ अरुढि बिधीए ढिग आयो। अपनि शेर ते चहति डरायो ॥ ६ ॥
हुती नरनि की भीर वडेरे। केहरि भीम आवतो हेरे।
भाजे लोक जाइ पुरि बरे। बिधीचंद इक थिरताधरे ॥ ७ ॥
सुंदरशाह निकटि जबि आयो। निज केहरि ते चहति गहायो।
तबि बिधीए चख ताड़ि बिलोका। आवति चल्यो तुरत ही रोका ॥ ८ ॥
भयो सथंभ सिला सम शेर। चरन बदन हालति नहिं फेर।
निज अज़मत को सुंदर शाहू। लाइ रह्यो जेतिक सी पाहू ॥ ९ ॥
गरब सरब निज उर को हर्यो। बडो आपने ते लखि पर्यो।
जाइ बंदना कीनि अगारी। महांपुरख तुमहो तपि भारी ॥ १० ॥
छिमहु अवग्गया हमते भई। केहरि को अबि दिहु मुकतई।
तबि विधीआ कहि जतन गहीर। सत्तिनाम कहि छिरकहु नीर ॥ ११ ॥

---

1. जल्दी। 2. सूखा वृक्ष। 3. जंगल। 4. शेर।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुंदर शाहु कर्यो जबि कह्यो। प्रान अंत केहरि तबि लह्यों।
अपर देहि सुंदर हुइ गई। बिधीचंद को बंदन कई॥ १२॥
देखति बिसमयो सुंदर शाहू। को हैं तूं कहु सचु हम पाहू।
सुनति आपनी कथा सुनाई। मोकहु जानहु किंनर राई॥ १३॥
देव सभा महिं बैठो हुयो। दुरबाशा तहिं आवन कियो।
मो को उलंधि अगारी जाइ। बैठ्यो रिखिबर सहिज सुभाइ॥ १४॥
मम ऊपर को उलंघयो जबै। रिस ते क्रूर द्रिष्टि मैं तबै।
दुरबाशे जबि मोकहु हेरा। क्रूर बिलोचन बदन बडेरा॥ १५॥
तप निधि क्रोधी स्रापब्रखान। मुझ दिशि देखति शेर समाना।
धरहु जूनि अवनी तल जाइ। सुनि मैं बूझ्यो बहु डर पाइ॥ १६।
स्रांप अंत कबि होवै मेरा। क्रिपा करति बोल्यो तिस बेरा।
श्री गुरु नानक कलि अवतारे। सो जबि खशटम बपु को धारें॥ १७॥
तिस को सिख ग्यानी इक देखि। तबि मुकतहिगो स्राप विशेख।
सो इहु मिल्यो जून छुटि मेरी। मैं अबि गमनों दरशन हेरी॥ १८॥
भाग धंन तूं अपने जानि। पूरि कामना होइ महान।
इम कहि नभ की ओर सिधायो। सुंदर शाहु सुनति बिसमायो॥ १९।
करि बिनती तजि गिनती आनि। राख्यो अपने निकटि सुजान।
अनिक भांति की सेवा करी। सुनति बचन दुबिधा सभि हरी॥ २०॥
तीन दिवस बसि बिधीया चाला। हित राखन कहि बनै बिसाला।
तुम मोरे गुर दीनसि ग्याना। फल प्रापति तप किय जु महाना॥ २१॥
रह्यो न जाइ तुमारे बिना। तन तजिबो तुम ढिग चहि घना।
बिधीचंद सुनि धीरज दीनि। मम तुम बैस[1] एक सम चीन॥ २२॥
मास रु बासरु घटिका सोई। मोर तोर तन त्यागनि होइ।
सुनति अनंद भा सुन्दर शाहू। करहु क्रिपा तबि होवहु पाहू॥ २३॥
दोनहुं तन त्यागहिं इक काल। गमनहु ले प्रलोक निज नाल।
दास जानि निज बिरद संभारहु। आप तरहु अरु मोकहु तारहु॥ २४॥
सुनि बिनती बिधीआ सुप्रसंन। तब संकलप होइ नहिं अंन।
जबहि समां तन तजिबे होइ। तुझ ढिग पहुंचौं लखि मैं सोइ॥ २५॥
इहां आनि मैं त्यागहुं प्रान। बैठहु आप धरहु गुर ध्यान।
सुनि अनंद बहु सुंदर शाहू। बंदति बिधीचंद पदपाहू॥ २६॥

1. आयु।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अबि मैं काज गुर के जावौं। तन के अंत समै पुन आवौं।
इम कहि गया देश तिस मांही। गुर संगति पत्री पठि जांही ॥ २७ ॥
सागर टापू महिं अभिराम। पुरि मैंनाक[1] तांहि को नाम।
दियो हुकमनामा गुर केरा। इहु सिख पिखहु रूप जिम मोरा ॥ २८ ॥
सुनति अनंद भए सिख सारे। देति उपाइन बंदन धारे।
श्री गुर हरिगोबिंद मनिंद। बिधीचंद को मानहिं ब्रिंद ॥ २९ ॥
बसन[2] बिभूखन जरे जवाहर। जबर अजाइब ज़ेब सु ज़ाहर।
भांति भांति के भोजन भावति। प्रेम भाउ ते भले अचावति ॥ ३० ॥
रैंण दिवस आइसु महिं रहैं। बांछति रिदै मनोरथ लहैं।
गुरबानी पढि अरथ समेत। बिधीचंद उपदेश सु देति ॥ ३१ ॥
गुर महिमा सिमरति सतिनामू। हउमैं त्यागनि मन बिसरामू।
दया खिमा सुच संजम धीरज। धरम पराइन साचु सु बीरज ॥ ३२ ॥
गुरसिक्खी निरमल संतोश। सदा गुरु के रहै भरोस।
इत्यादिक गुन सकल बताए। मन ब्रिकार दुबिधादि हटाए ॥ ३३ ॥
गुरमति सिक्खनि महिं उपजाई। दुरमति मतसर[3] आदि मिटाई।
करि करि बिनैं मास इक राखा। असन अचाइ म्रिदुल बहु भाखा ॥ ३४ ॥
गमन हेतु बहु बार उचर्‍यो। संगति तबहि विसरजन कर्‍यो।
अरपे हय जिन कीमत भारे। संग दास दीनसि रखवारे ॥ ३५ ॥
बहु समाज लै चढ्यो जहाजू। आयहु उतरि करे गुर काजू।
कीरतपुरि महिं आनि प्रवेशा। अग्र उपाइन कीनि अशेषा ॥ ३६ ॥
पर्‍यो चरन पर बंदन ठानी। मुख मुसकाइ देखि कहि बानी।
जनम धंन जग भयो तुमारा। रह्यो सुधारति गुरधरकारा ॥ ३७ ॥
बिधीचंद आनंद बिलदे। परसि पदारबिंद कर बंदे।
इहु सभ रावर की बहु करना। दास दीन ते क्या करना ॥ ३८ ॥
बसन बिभूखन धन गन ल्यायो। श्री सतिगुर के अग्र टिकायो।
घोरे चपल सकल दरसाइव। अरपे पग पंकज लपटाइव ॥ ३९ ॥
गहि भुज प्रभु निज कंठ लगायो। ब्रह्मगयान मन बिखै टिकायो।
अधिक प्रसंन होइ ढिग राखैं। निज मन बात तांह सो भाखैं ॥ ४० ॥
इस प्रकार दिन गुरु बितावैं। गुरसिक्खी मग बहु बिदतावैं।
तीरसत्तद्व जाइ निहारैं। जल निरमल की सिफति उचारैं ॥ ४१ ॥

---

1. एक पर्वत जो दक्षिणी भारत तथा लंका के बीच में स्थित है। 2. वस्त्र। 3. ईर्ष्या।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पावस रितु जग महिं प्रगटाई। चहुं दिशि सघन घटा धुरि आई।
बरण बरण के जलधर[1] बरखहिं। मिटी तपत जंतू जन हरखहिं ॥ ४२ ॥
नीर नवीन नदी महिं चलै। कूलनि को ढाहति जनु गिलै।
त्रिण काशट संचय बहु बहैं। जल जंतू उछलति सुख लहैं ॥ ४३ ॥
घनघोरन ते मोरन शोर। सुनीअति कीरतपुरि चहुं ओर।
बिना धूल ते सैल बिसाले। खरे तरोवर फलति रसाले ॥ ४४ ॥
भांति भांति की शोभा होति। सतिगुरु हेरति अनंद उदोत।
हरिआवल होई सभि रवनी। इंदु बधू जुति देखति अवनी ॥ ४५ ॥
सावण अरु भाद्रों जुग मास। कीरतपुरि मैं करहिं बिलास।
शबद कीरतन होइ सदाई। सुनि सुनि सिक्खनि गुरमति भाई ॥ ४६ ॥

इति श्री गूर प्रताप सूरज ग्रंथ अशटम 'विधीचंद' प्रसंग बरननं नाम पंचत्रिसंती अंशु ॥ ३५ ॥

---

1. बादल।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३६

# श्री गुरदित्ता प्रसंग

दोहरा

पावस बरखा अधिक ह्वै सरिता सैलन सैल।
श्री हरिगोविंद बहु करैं नीचे ऊचे गैल ॥ १ ॥

चौपई

पावन इसी प्रकार बिताई। सरद सुंदरी रितु पुन आई।
भए सेत घन जल को छोरि। बिमल अकाश भयो चहूं ओर ॥ २ ॥
कबि कबि श्री गुरदित्ता चर्हैं। वहिर अखेर ब्रिति को करैं।
बांछति लेति संग असवार। बिचरहिं जहिं कहिं बिपन[1] मझार ॥ ३ ॥
श्री हरिगोविंद थिरता गही। बहुर वहिर बहु गमनहिं नहीं।
करनि अखेर अरूढन बाज। तज्यो राखवो स्वान[2] रु बाज ॥ ४ ॥
जुगम समै शुभ सभा लगावैं। शबद रबावी सुंदर गावैं।
सिख संगति चहुंदिशि ते आइ। ल्याइ उपाइन को समुदाइ ॥ ५ ॥
अरपहिं दरस करहिं बड भागे। चरन सपरशहिं प्रेम सु पागे।
सुनहिं बदन सिमरहिं सतिनामू। पाइ श्रेय को गमनहिं धामू ॥ ६ ॥
महां जंग होयहु बहु अरे। काबल आदिक के नर मरे।
उत दिल्ली आदिक पुरि बासी। लरे गुरु संग भए बिनाशी ॥ ७ ॥
गुरु सूरता बिदत जहान। बडे बहादुर करहिं बखान।
अलप चमू[3] जिन के रहि पासी। लाखहुं शत्रुनि करे बिलासी ॥ ८ ॥
सिर पीरन के पीर बिसाला। बड मीरन के मीर सु चाला।
शाहुजहां जिन सों लरि हारे। अपर बापुरे कहां बिचारे ॥ ९ ॥
चार बार करि रार खपाए। जीवति को नहिं सदन पठाए।
बिदत्यो जगत बिलंद प्रसंग। मरे हज़ारहुं जोधा जंग ॥ १० ॥
देश बिदेशनि बिधवा तुरकीन। रुदति घनी सिर छाती हनि हनि।
लरे गुरु सों पीर जु पीर। करामात कामल बड मीर ॥ ११ ॥

1. वन। 2. कुत्ता। 3. सेना।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्यो सु मारयो बचयो पलायो। हज़रत लशकर ब्रिंद मरायो।
सभि देशनि महिं मुगल पठान। सय्यद आदि संबंधी जानि ॥ १२ ॥
मिलि मिलि सिफत घनी को ठानति। बडे बहादुर बहुत बखानति।
अलप चमूं जुति रहित हमेशा। लाखहुं आवति हतहिं अशेषा ॥ १३ ॥
किस को सुत रोवति बिललावैं। को भ्राता सिमरति दुख पावैं।
चचा भतीजा कितिक पुकारैं। किस को पित सुत गुननि उचारैं ॥ १४ ॥
देश बिदेश तुरक तुरकाणी। को आवंति को जाति मुकाणी।
जित कित ग्राम नगर समुदाया। सुनति शबद गन रुदन उठाया ॥ १५ ॥
मिलि मिलि पीटति सिर मुख छाती। लेहिं नाम गुन करि बक्खयाती।
इम जग महिं बड माच्यो शोर। भनहिं बीरता सतिगुर ज़ोर ॥ १६ ॥
सुनि सुनि सिख संगति हरखावें। देश बिदेशनि ते चलि आवें।
मग महिं सुनति आइं बिरतांत। जहिं कहिं मिलहिं करहिं नर बात ॥ १७ ॥
एक दिवस बाबा गुरदित्ता। चढे अखेर करनि दे चित्ता।
केतिक साथ चले असवार। चपल तुरंगम ज़ीननि डारि ॥ १८ ॥
संग तुफंग लई कसि गोरी। उठि प्रभाति गमने बन ओरी।
खोजति फिरत ससे[1] गन सूकर। म्रिगन अनेकन ले संग कूकर ॥ १९ ॥
गिर की जरन बिखैं बिचरंते। ऊच नीच थल चढि उतरंते।
फिरे बहुत ही खोजति झारन। सथल त्रिखम सम करहिं निहारन ॥ २० ॥
गुर सुत बिचरति भे बन मांही। प्रापति कितहुं अखेरा नांही।
दिवस चढ़यो बड घाम[2] उपंना। बिचरति रहे न को म्रिग हंना ॥ २१ ॥
दूर दूर लौ फिरे सऊर। खोजति गिरनि दरी थल भूर।
धेनू[3] चरति हुती इक बन मैं। संघने पात समूह ब्रिछनि मैं ॥ २२ ॥
इक असवार फिरत ने हेरी। जानी गई न दूर बडेरी।
उर महिं लख्यो सु पाड़ा महां। शृंगनि सहित चरति है इहां ॥ २३ ॥
ब्याकुल हुतो घाम ते सोइ। बिचरति अधिक थकति पुन होइ।
इन कारन ते नहिन पछानी। देखति शृंग मिरग लिय जानी ॥ २४ ।
नहिं तिसके चलि पहुंच्यो नेर। भाज न जाइ मोहि को हेरि।
थिर्यो दूर ते तुपक चलाई। लागी सीस बिखैं तबि जाई ॥ २५ ॥
ततछिन धेनु गिरी उथलाइ। प्रान नाश होए लगि घाइ।
तुरंग धवाइ जाइ करि हेरी। मरी गऊ उथली तिस बेरी ॥ २६ ॥

---

1. खरगोश। 2. गर्मी। 3. गऊ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महां पाप ते पायो त्रास। मुझ कर ते भा धेनु बिनासि।
इतने महिं गऊअनि चरवारा। आइ बिलोक्यो पातक[1] भारा ॥ २७ ॥
तिस भट संग लरन बहु लग्यो। ऊच पुकार करी रिस पग्यो।
शोर उठाइ ज़ोर को जबै। कितिक पहारी मिलिगे तबै ॥ २८ ॥
गहि सो लियो करहिं बल भारी। अनिक प्रकार निकारहिं गारी।
धेनु लेहिं तो छोरन करें। नांहि त बंधहिं घर महिं धरें ॥ २९ ॥
पर्यो रौर पुन और सऊर। सुनि सुनि आइ निकटि जे दूर।
श्री गुरदित्ते जबि सुधि पाई। गए तुरत तहिं तुरंग धवाई ॥ ३० ॥
पातक घोर बिलोक्यो जाइ। अधिक कोहीआं[2] शोर मचाइ।
हय के सहित सुभट को गह्यो। वहु झिरकति अपराधी लह्यो ॥ ३१ ॥
म्रिदुल बाक गुर पुत्र सुनायो। बिन जाने बड दोश कमायो।
सभि तजि देहु लरे क्या होइ। म्रितक भई अबि जियै न कोइ ॥ ३२ ॥
सुनति पहारी बाक उचारे। तुम गुरसुत अज़मत को धारे।
गऊ मरी को देहु जिवाइ। निज चाकर को लेहु छुडाइ ॥ ३३ ॥
जे बल करो पुकारु जै हैं। निज राजे के निकटि कहै हैं।
वधहि फसाद बिसाल अगारी। इहु पातक नहिं सकहिं सहारी ॥ ३४ ॥
कठन बात गुर पुत्र बिचारै। मरी गऊ जे अबै जिवारें।
इहु बी बात न आछी होइ। पिता रिसैं हैं सुनैं जि सोइ ॥ ३५ ॥
कष्ट अनेक देहि पर झालैं। अज़मत नहीं जनाइं बिसालैं।
इहु मत है गुर घर को सदा। जरहिं अजर, बिदताइं न कदा ॥ ३६ ॥
करामात नहिं आप लगावें। जो लगाइ तिस देखि रिसावें।
जे अबि गऊ न जीवति इहां। इक तौ पाप होति है महां ॥ ३७ ॥
दुतीए जै हैं करें पुकार। अपजस बिथरैगो संसार।
इस को नाम न लै है कोई। हमरी दिशा अरोपहि सोई ॥ ३८ ॥
रण ते शांति ब्रिती अबि भए। सुनहिं बिखेरा तौ रिस लए।
ठांढे भइ करे थिर लोचन। अनिक भांति की सोचति सोचन ॥ ३९ ॥
करहिं कहां असमंजस बने। दोनहुं बिधी कहिर हुइ घने।
सुरभी[3] मरी पाप है भारा। करामात दें दोश उदारा ॥ ४० ॥
थिरे रहे तहिं केतिक काला। रिदै बिचारत करहिं बिसाला।
झगरति खरे संबूह पहारी। अपने पर के भे नर झारी ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ अशटम रासे **'श्री गुरदित्ता'** प्रसंग बरननं नाम खषट त्रिसती अंशु ॥ ३६ ॥

---

1. पापी । 2. पहाड़ी लोग । 3. गऊ ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्‌यो सु मारयो बचयो पलायो। हज़्रत लशकर ब्रिंद मरायो।
सभि देशनि महिं मुगल पठान। सय्यद आदि संबंधी जानि ॥ १२ ॥
मिलि मिलि सिफत घनी को ठानति। बडे बहादुर बहुत बखानति।
अलप चमूं जुति रहित हमेशा। लाखहुं आवति हतहिं अशेषा ॥ १३ ॥
किस को सुत रोवति बिललावैं। को भ्राता सिमरति दुख पावैं।
चचा भतीजा कितिक पुकारैं। किस को पित सुत गुननि उचारैं ॥ १४ ॥
देश बिदेश तुरक तुरकाणी। को आवंति को जाति मुकाणी।
जित कित ग्राम नगर समुदाया। सुनति शबद गन रुदन उठाया ॥ १५ ॥
मिलि मिलि पीटति सिर मुख छाती। लेहिं नाम गुन करि बक्खयाती।
इम जग महिं बड माच्यो शोर। भनहिं बीरता सतिगुर ज़ोर ॥ १६ ॥
सुनि सुनि सिख संगति हरखावैं। देश बिदेशनि ते चलि आवैं।
मग महिं सुनति आइं बिरतांत। जहिं कहिं मिलहिं करहिं नर बात ॥ १७ ॥
एक दिवस बाबा गुरदित्ता। चढे अखेर करनि दे चित्ता।
केतिक साथ चले असवार। चपल तुरंगम ज़ीननि डारि ॥ १८ ॥
संग तुफंग लई कसि गोरी। उठि प्रभाति गमने बन ओरी।
खोजति फिरत ससे[1] गन सूकर। म्रिगन अनेकन ले संग कूकर ॥ १९ ॥
गिर की जरन बिखै बिचरंते। ऊच नीच थल चढि उतरंते।
फिरे बहुत ही खोजति झारन। सथल विखम सम करहिं निहारन ॥ २० ॥
गुर सुत बिचरति भे बन मांही। प्रापति कितहुं अखेरा नांही।
दिवस चढ़यो बड घाम[2] उपंना। बिचरति रहे न को म्रिग हंना ॥ २१ ॥
दूर दूर लौ फिरे सऊर। खोजति गिरनि दरी थल भूर।
धेनू[3] चरति हुती इक बन मैं। संघने पात समूह ब्रिछनि मैं ॥ २२ ॥
इक असवार फिरत ने हेरी। जानी गई न दूर बडेरी।
उर महिं लख्यो सु पाड़ा महां। शृंगनि सहित चरति है इहां ॥ २३ ॥
ब्याकुल हुतो घाम ते सोइ। बिचरति अधिक थकति पुन होइ।
इन कारन ते नहिन पछानी। देखति शृंग मिरग लिय जानी ॥ २४ ।
नहिं तिसके चलि पहुंच्यो नेर। भाज न जाइ मोहि को हेरि।
थिर्‌यो दूर ते तुपक चलाई। लागी सीस बिखै तबि जाई ॥ २५ ॥
ततछिन धेनु गिरी उथलाइ। प्रान नाश होए लगि घाइ।
तुरंग धवाइ जाइ करि हेरी। मरी गऊ उथली तिस बेरी ॥ २६ ॥

---

1. खरगोश। 2. गर्मी। 3. गऊ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

म्हां पाप ते पायो त्रास। मुझ कर ते भा धेनु बिनासि।
इतने महिं गऊअनि चरवारा। आइ बिलोक्यो पातक[1] भारा ॥ २७ ॥
तिस भट संग लरन बहु लग्यो। ऊच पुकार करी रिस पग्यो।
शोर उठाइ ज़ोर को जबै। कितिक पहारी मिलिगे तबै ॥ २८ ॥
गहि सो लियो करहिं बल भारी। अनिक प्रकार निकारहिं गारी।
धेनु लेहिं तो छोरन करें। नांहि त बंधहिं घर महिं धरें ॥ २९ ॥
पर्‌यो रौर पुन और सऊर। सुनि सुनि आइ निकटि जे दूर।
श्री गुरदित्ते जबि सुधि पाई। गए तुरत तहिं तुरंग धवाई ॥ ३० ॥
पातक घोर बिलोक्यो जाइ। अधिक कोहीआं[2] शोर मचाइ।
हय के सहित सुभट को गह्यो। बहु झिरकति अपराधी लह्यो ॥ ३१ ॥
म्रिदुल बाक गुर पुत्र सुनायो। बिन जाने बड दोश कमायो।
सभि तजि देहु लरे क्या होइ। म्रितक भई अबि जियै न कोइ ॥ ३२ ॥
सुनति पहारी बाक उचारे। तुम गुरसुत अज़मत को धारे।
गऊ मरी को देहु जिवाइ। निज चाकर को लेहु छुडाइ ॥ ३३ ॥
जे बल करो पुकारु जै हैं। निज राजे के निकटि कहै हैं।
वधहि फसाद बिसाल अगारी। इहु पातक नहिं सकहिं सहारी ॥ ३४ ॥
कठन बात गुर पुत्र बिचारै। मरी गऊ जे अबै जिवारें।
इहु बी बात न आछी होइ। पिता रिसैं हैं सुनैं जि सोइ ॥ ३५ ॥
कष्ट अनेक देहि पर झालैं। अज़मत नहीं जनाइं बिसालैं।
इहु मत है गुर घर को सदा। जरहिं अजर, बिदताइं न कदा ॥ ३६ ॥
करामात नहिं आप लगावें। जो लगाइ तिस देखि रिसावें।
जे अबि गऊ न जीवति इहां। इक तौ पाप होति है महां ॥ ३७ ॥
दुतीए जै हैं करें पुकार। अपजस बिथरैगो संसार।
इस को नाम न लै है कोई। हमरी दिशा अरोपहि सोई ॥ ३८ ॥
रण ते शांति ब्रिती अबि भए। सुनहिं बिखेरा तौ रिस लए।
ठांढे भइ करे थिर लोचन। अनिक भांति की सोचति सोचन ॥ ३९ ॥
करहिं कहां असमंजस बने। दोनहुं बिधी कहिर हुइ घने।
सुरभी[3] मरी पाप है भारा। करामात दें दोश उदारा ॥ ४० ॥
थिरे रहे तहिं केतिक काला। रिदै बिचारन करहिं बिसाला।
झगरति खरे संबूह पहारी। अपने पर के भे नर झारी ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ अशटम रासे **'श्री गुरदित्ता'** प्रसंग बरननं नाम खषट त्रिसती अंशु ॥ ३६ ॥

---

1. पापी। 2. पहाड़ी लोग। 3. गऊ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ३७

# श्री बाबा गुरदित्ता समावन प्रसंग

### दोहरा

श्री गुरदित्ते संग महिं सुभट हुते तिस थान।
हाथ जोरि बोले सकल गुर सुत सुनहु सुजान ॥ १ ॥

### चौपई

मरी गऊ ते दोष घनेरे। जे जीवहि हुइ कुशल बडेरे।
ज्यों क्यों करि दीजहि इस प्रान। सभि दिशि ते कलहा[1] हुइ हान ॥ २ ॥
पातक मिटहि पुंन अधिकाई। पसरहि कीरति बिमल सदाई।
नर आदिक जे अपर जिवावन। सुनि सतिगुर तबि होइं रिसावन ॥ ३ ॥
इस ते पुंन अधिक को जानि। श्री प्रभु नहीं कोप को ठानि।
इत्यादिक सभिहूंनि सुनायो। गुर सुत सुनति रिदे हुइ आयो ॥ ४ ॥
अबि तो आछी अहै जिवावन। सहित पुंन अरु रार मिटावन।
पिता कोप को लेहिं सहारि। जथा कहैं सो करि हैं कार ॥ ५ ॥
इम उर ल्याइ तुरंगम छोरि। उतरि गए म्रितु धेनु ओर।
नीम तरोवर की नवला[2] सी। हाथ गही पहुंचे गो पासी ॥ ६ ॥
छरी लगाइ गऊ के गात। श्री मुख ते बोले इस भांति।
'उठहु मात! अबि निंद्रा त्यागहु। पूरब सम चरिबे त्रिण लागहु ॥ ७ ॥
सुभट सकल अरु खरे पहारी। मरी धेनु सो करति निहारी।
गुरु पुत्र जबि बाक बखाने। ततछिन उठी सु प्रथम समाने ॥ ८ ॥
त्रिणनि हरित को चरने लागी। देखि सभिनि बुधि बिसमै पागी।
हरखति होए हांक संभारी। लै गमने जहिं सुरभी सारी ॥ ९ ॥
करि बंदन को सुजसु उचारति। गए गुरु महिमा उर धारति।
गुरसुत चढे तुरंगम चले। सुभट संग गमने सभि मिले ॥ १० ।

---

1. झगड़ा। 2. नीम की टहनी।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिक्रमति मति कीरतपुरि आए। उतरि तुरंग, सथान लगाए।
दिन मधयान भयो तिह काला। भोजन करि मनभाइ बिसाला ॥ ११ ॥
टिकेसथान अपनि सभि जाइ। सतिगुर सुन्यो असन अबि खाई।
गयो जु संग सु बीर बुलायो। निकटि आइ पिखि बाक अलायो ॥ १२ ॥
आज कहां तुम समां बितायो ?। बिचरति वहिर असन अबि खायो।
सगरी साची देहु बताइ। कूर कहैं तौ दोष लगाइ ॥ १३ ॥
सुनति सुभट कंप्यो सभि गात। लग्यो बतावन साची बात।
कहौं कूर तौ जानैं सारी। मुझ प्रति दै हैं आप उचारी ॥ १४ ॥
अचरज आज गऊ मरि गई। जाने बिना मारि भट दई।
आइ कोहीआं शोर मचायो। श्री गुरदित्ता सुनि तबि आयो ॥ १५ ॥
महां दोष गो घात पछाना। भने सभिनि के दीनसि प्राना।
झगरा पर्यो रह्यो तिस थान। यांते आयो दिन मद्धयान[1] ॥ १६ ॥
श्री सतिगुर सुनि धर करि मौन। रिस उर कीनि न जानी कौन।
चार घटी सुनि फेर बिताई। डेढ जाम दिन रह्यो तदाई ॥ १७ ॥
जानि सुचेत होन को काल। आइ समीप सपुत्र विसाल।
करि बंदन को खरो अगारी। तौर पिता की अपर निहारी ॥ १८ ॥
ठटति रहे थिरता धरि अंग। नैन कमल शंकति, चित भंग।
सुत बिसाल पर कोप बिसाल। सतिगुर बदन द्रिगनि करि लाल ॥ १९ ॥
बोले करनि लगे अबि नीकी। हरि गुर संतनि लगे जु फीकी।
जिस क्रित को सुजन न सनमानें। सुमतिवंत सो कबहुं न ठानैं ॥ २० ॥
आनि परे सभि सहैं सरीर। नहीं छोरते धारति धीर।
सीस देहिं पर नहीं जनावैं। प्रभु दरगाह सु आदर पावैं ॥ २१ ॥
अटलराइ यांते तजि प्राना। तूं अबिलौ समुझ्यो न सयाना।
इम तो करनि सदानहिं आछी। पुन हम अछत कहा चित बांछी ?॥ २२ ॥
चहति गुरन ते अधिक बडाई। अजर न जरहु जहान जणाई।
करि अज़मत दे सुरभी प्राना। गनी गरीब सुनहिं जबि काना ॥ २३ ॥

म्रितक भए को हम ढिग ल्यावहिं। करहिं जाचना जथा जिवावहिं।
शाहु आदि सभिहिनि जग मरना। नदी प्रवाहि जथा इहु थिर ना ॥ २४ ॥
कौन कौन को हम जीवावैं। किस की बय[2] दे किसहि उठावैं ?
इस को भी कुछ जतन बिचारा ?। लियो बिचार त करो उचारा ॥ २५ ॥

---

1. दोपहर। 2. उमर।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जे इम करनी ही मन भावै। हमरे अछत हट्यो नहिं जावै।
तौ इक म्यान जुगम[1] शमशेर। मेय न सकहिं समुझि लिहु हेरि ॥ २६ ॥
जे तुम रहहु त हम तजि प्राना। हम जि रहें तुम करहु पयाना।
इस बिधि करे बिना नहिं बनै। इक राखहिं इक त्यागहि तनै ॥ २७ ॥
श्री गुरदित्ते द्वै कर बंदि। हुतो न हरख न शोक बिलंद।
इक रस ब्रिती जिनहुं की अहै। ब्रह्म ज्ञान द्रिड़ता चित रहै ॥ २८ ॥
श्री सतिगुरु पिता समरत्थ। भंजन घड़न सकल जिन हत्थ।
बचन अमोर जिनहुं के सदा। ब्रह्म असत्र जिम मिटहिं न कदा ॥ २९ ॥
बिन संसै मान्यो ही बनै। इस महिं भलो आपनो जनै।
इम बिचार करि ठानी नमो। तीन प्रकरमा दे तिह समों ॥ ३० ॥
धरे मौन को कीनसि प्यान। छरी धरी कर खरी महान।
किह सों मिले न बोलन कीनि। चलनि प्रलोक बिखै चित दीनि ॥ ३१ ॥
जो मग मिलहि चले जिह समो। हाथ जोरि नर ठानति नमो।
किस की दिशि न बिलोचन लाए। जाहिं एक रस सहिज सुभाए ॥ ३२ ॥
देखि देखि बिसमै सभि कोई। ब्रिति उदास सभिहिनि ते होई।
कीरतपुरि ते बहिर पयाने। अलप सैल[2] पर चढिबो ठाने ॥ ३३ ॥
जाइ इकाकी, दास न संग। सने सने चलि चढे उतंग।
बुड्ढन शाहु सथान निहारा। तिस ते कुछक अंतरा धारा ॥ ३४ ॥
छरी धरा पर धरी गडाई। अवलोकति भे सुंदर थाईं।
उर कुटंब को राग[3] न ठाना। नौका मेल सकल जग जाना ॥ ३५ ॥
अति सपुत्र जो है हरिराइ। मिलिनि हेतु नहिं किछु मन ल्याइ।
सुत सम अपर प्रेम किस मांहू। जिसको सिमर मिलहिं करि पाहू ॥ ३६ ॥
आसतरन[4] को अपने हाथ। सुंदर कर्यो कुशा के साथ।
तबि तन पर ते बसत्र उतारा। करि दुहर सिहजा त्रिण डारा ॥ ३७ ॥
ब्रिति संकोच बैठि तबि गए। निज सरूप महिं थिरता लए।
मूंदि बिलोचन पौढे फेर। दुती बसत्रले मुख पर गेर ॥ ३८ ॥
जोग शकति करि खैंचे प्रान। सभि तन ते सवधानी ठानि।
तातकाल तन छोरि सिधारे। जिम पंनग[5] कंचुरी निज डारे ॥ ३९ ॥
गए सुत्रैन तजी तबि कायां। हरख सोग नहिं भयो कदाया।
नई बैस महिं तन तरुनाई[6]। जिम जोगी माया तजि जाई ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ अशटम रासे '**श्री बाबा गुरदित्ता समावन**' प्रसंग बरननं नाम सपतत्रिंशति अंश ॥ ३७ ॥

---

1. दो। 2. छोटे से पहाड़। 3. प्रीति, मोह। 4. आसन। 5. सांप। 6. यौवन।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंशु ३८

# श्री गुरदित्ता प्रलोक गमन प्रसंग

दोहरा

लहि सुध तूरन सुर सरब चढे बिमान पयान।
गुरु सुत के तन तजन ते आए मंगल ठानि ॥ १ ॥

चौपई

जैं जैं मुख ते शबद उचारे। कुसमांजुल को भरि भरि डारे।
अनिक अपसरा हरखति नाचहिं। गावहिं गीत मधुर सुर राचहिं ॥ २ ॥
सभिनि सुरनि अभिबंदन कीनि। कह्यो करहु प्रसथान प्रबीन।
सभि देवन को बड उतसाहु। शुभ आगवन जानिकै पाहू ॥ ३ ॥
खषटम गुर को सुभट सपूत। सपतम गुर को पित मति पूत।
धंन्य धंन्य कहि करि ले गए। साजि आरती दरसति भए ॥ ४ ॥
सभि सुर गमने जाइं पिछारी। गुर सुत दिपहि बिमान अगारी।
तेज सहति सूरज जनु जाई। गीरबान[1] उडगन समुदाई ॥ ५ ॥
जहिं जहिं शकति सुरनि की जावनि। तहिं लौ सभिहिनि कीनि पुचावन।
करि करि बंदन हटे पिछारी। गुर सुत गमन्यो जाति अगारी ॥ ६ ॥
सभि सुर पुरि को हेरति जाइं। अति अनंद को रिदे समाइ।
पुन गुरपुरि लौ पहुंच्यो जाई। मिले सभिनि सों बंदन गाई ॥ ७ ॥
अच्युत पद महिं जाइ बिराजे। जिनके नाम लेति अघ भाजे।
इत कीरतपुरि महिं जे दास। सेवा हेतु रहति नित पास ॥ ८ ॥
लगे बिलोकनि द्रिषटि न आवैं। इत उत खोजति कहू न पावैं।
बूझति बिचरति जहिं कहिं जाइ। जिनहुं पिखे तिन दीनि बताइ ॥ ९ ॥
पुरि ते बहिर गए गिर[2] ओर। एकाकी[3] सभि संगी छोरि।
सुनति दास हित सेवा धाए। हमहुं प्रतीखति ह्वैं कित धाएं ॥ १० ॥
उतहुं गए सु बूझति दास। चढे उतंग थान तिस पास।
जाइ बिलोके पौढन करे। कहां कीनि अवनी पर परे? ॥ ११ ॥

---

1. देवते। 2. पहाड़। 3. अकेले।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सदन प्रयंक[1] छोरि करि आए। हम किसहूं को संग न ल्याए।
करि तूरनता निकटि सु जाइ। लगे बिलोकन स्वास न आइ ॥ १२ ॥
बिसमे बहुरो हाथ लगायो। चरन पलोटति चहति जगायो।
निशचै भई जबै उर मांही। धाइ आइ इक सतिगुर पाही ॥ १३ ॥
ऊची कूक निकटि हुइ मारी। निकसी नैनन ते जल धारी।
बूझन कीनि कहा तुझ भयो ?। क्यों रोदन तुम सो कियो ? ॥ १४ ॥
सुनि गुर ते बोल्यो तबि दासा। पुत्र आपको बड गुनरास।
ऊचे थल पर कुशा डसाई। पौढे प्रान नहीं बिच पाई ॥ १५ ॥
सुनि करि सभि ते अंतरजामी। उठे तुरत सेवक अनुगामी।
चलहु कौन थल मैं म्रितु होए ?। इम सतिगुर गमने सभि जोए ॥ १६ ॥
अंतह-पुरि गुर के सुधि गई। सुनति बात सगरी रुदनई।
पर्यो रौर कीरतपुरि मांही। सुनि सुनि शोक वध्यो लघ नांही ॥ १७ ॥
बिधीचंद आदिक नर ब्रिंद। संग लए श्री हरिगोविंद।
उतलावति[2] पहुंचे तिस थान। पिखयो पुत्र पौढयो बिन प्रान ॥ १८ ॥

नर अपरन सम शोक उपायो। कहु नंदन[3] किम कहां सिधायो ?।
सुभट सिख हैं संग जितेक। रोदति करति पुकार अनेक ॥ १९ ॥
तरुन बैस महिं काल न काल[4]। रावर कहां गए करि ख्याल।
सुनि कीरत पुरि के नर नारी। धाइ पहुंचे काज बिसारी ॥ २० ॥
सभि रोदति अरु बंदन करैं। गुर सिमरहिं शोक सु चित धरैं।
आइ नानकी अरु मरवाही। मुख को देखि देखि बिललाहीं ॥ २१ ॥
अहो पुत्र जोधा ! सभि लाइक !। गुर सुत जेषट गन सुखदाइक।
बदन प्रसंन सदीव बिलोकें। कारन कवन गवन परलोकें ॥ २२ ॥
श्री हरि राइ पिता को देखि। अरु रोदति परिवार विशेख।
अलप बैस महिं मुख मुरझायो। कहैं बदन कुछ बाक न आयो ॥ २३ ॥

कमल बिलोचन ते जल डारा। मनो शोक को छुट्यो फुहारा।
सतिगुर बैठे लाइ दिवान। सिक्ख सुभट ढिग रुदति महान ॥ २४ ॥
हित ससकारन सौज[5] मंगाई। चंदन भार लयाइ समुदाई।
तिल, जव, घ्रित आदि सभि आनें। करति कार सभि रोदन ठानें ॥ २५ ॥
छरी खरी गुर खरी निहारी। रहनि देहु इह तरु हुइ भारी।
कहि करि चंदन चिख बनवाइ। क्रिया हेतु थिर श्री हरिराइ ॥ २६ ॥

1. पलंघ। 2. तेज़ी से। 3. पुत्र। 4. मौत का समय नहीं। 5. सामग्री।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देखति कहि शनान करवाइव। नए बसत्र तन महि पहिराइव।
बहुर चिखा पर देहि धराई। पावक[1] श्री हरिराइ लगाई ॥ २७ ॥
बिधि समेत ससकारन कीने! सभिनि बिलोचन जल भरि लीने।
कहि करि बहु कराह करिवायो। नर को गन उठाइ करि ल्यायो ॥ २८ ॥
सभिनि बापका कीनि शनान। पुन बैठे गुर लग्यो दिवान।
पंचाम्रित सु दयो बरताइ। सभि सुनाइ श्री बदन अलाइ ॥ २९ ॥
धरहि कामना जो सिख आवैं। करहि तिहावल इत अरपावैं।
शरधा सहित दरस को पाइ। मन बांछति पुरवहि समुदाइ ॥ ३० ॥
नींम तरोवर होइ बिलंद। श्री गुरदित्ते दरस मनिंद।
करहि बंदना देखहि नैन। सकल कामना प्रापति ऐन ॥ ३१ ॥
नितप्रति इहां तिहावल आइ। त्रिपतहिं सिख संगति सभि खाई।
देश बिदेशीं जो चलि आवैं। इस थल ते सु तिहावल खावैं ॥ ३२ ॥
पुंन स्थान महान बनै है। दरशन ते कलमल बिनसैं हैं।
सेवे उर निरमल बन जाइ। भगति ग्यान गुरु सिक्खी पाइ ॥ ३३ ॥
बरखा महां अंधेरी जोइ। तऊ तिहावल इस थल होइ।
इत्यादिक महिमा कहि थान। उठति भए श्री गुर भगवान ॥ ३४ ॥
अशट घाट सत्तरा सैं संमत[3]। अस्सू मास सुदी दसमी थित।
करि सभि क्रिया गुरु चलि आए। श्री गुरदित्ता जोति समाए ॥ ३५ ॥
गुर की गति किछु जाइ न जानी। बिसमत मति सभि तूशनि ठानि।
पीछे आइ चली गन नारी। आदि नानकी पुरि जु मझारी ॥ ३६ ॥
अधिक बिलाप करति सो आवैं। सिमरि सिमरि गुन कूक सुनावैं।
होति शबद बड करति पुकारा। तरुन बैस परलोक सिधारा ॥ ३७ ॥
धीरमल्ल निज मात समेत। अंत दरस नहिं आइ निकेत।
बिछुरे रहैं सु जानी परै। नहीं मेल हमसों कबि धरै ॥ ३८ ॥
इत्यादिक बोलति चलिआई। वधयो शोक सभि कै समुदाई।
गुरसुत लाइक मर्यो अचानक। कहां भयो, जानैं श्री नानक ॥ ३९ ॥
सदन प्रवेशे सगरे आइ। आदि नानकी मन दुख पाइ।
त्रिय ते पूरन भे घर सारे। गुज़रयो अचरज रुदति पुकारे ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ अशटम रासे 'श्री गुरदित्ता प्रलोक गमन' प्रसंग बरननं नाम अशट-त्रिसती अंशु ॥ ३८ ॥

---

1. अग्नि। 2. बावली। 3. १६९२ वि०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३६

# धीरमल्ल प्रसंग

**दोहरा**

कीरतपुरि की नारि सभि मिली आनि समुदाइ।
मिलि मिलि रोदति शबद को ऊचे रौर उठाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

पुरिजन सगरे गुर ढिग आए। बैठे सभा बिलंद लगाए।
अचरज भयो अचानक एह। नहिं जानी इम तन तजि देहिं ॥ २ ॥
तरुन बैस बहु म्रिदुल सुभाउ। सुख्द सभिनि दुखदाय न काऊ।
सादर पुरि महिं लोक बसाए। बूझति कुशल सदा अपनाए ॥ ३ ॥
उर उदार जाचहि जिम कोई। हटि करि छूछ न गमन्यो सोई।
नहि बिकार मन, शांति सरूप। महां सुशील प्रसंन अनूप ॥ ४ ॥
श्री करतारपुरे रण ठानति। अग्र सभिनि ते हुइ रिपु हानति।
जोधा अधिक बान बड मारे। अरे अगारी सो नर हारे ॥ ५ ॥
इत्यादिक गुन भनहिं सुनावहिं। श्री सतिगुर दे धीर बतावहिं।
हुकम सत्ति परमेशर केरा। कौन समर्थ देइ तिस फेरा ॥ ६ ॥
सभिहिनि के सिर भावी बली। सिर धारति नित बुरी कि भली।
भाणा मानहिं हरखति रहैं। नहीं तरक प्रभु की दिशि कहैं ॥ ७ ॥
इहु संतन को मति बीचार। ग्रहण कर्यो नीके निरधार।
इत्यादिक कहि बाक गुसाईं। सभि को धीर दीनि हितवाई ॥ ८ ॥
पुन अंतहिपुर दास पठाए। ऊचे रोदति सकल हटाए।
मानहु हितकरि प्रभुका भाणा। जिस अधीन सभि आवण जाणा ॥ ९ ॥
पुन सगरे सनबंधन पास। सुध भेजी तूरन गन दास।
धीरमल्ल ढिग प्रथम पठायो। ब्रिध साहिब के सदन पुचायो ॥ १० ॥
राइ जोध रूपे ढिग गयो। आदि वटाले कहि करि दयो।
श्री करतार पुरे महिं जाइ। धीरमल्ल को कही सुनाइ ॥ ११ ॥



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री गुरदित्ता जोति समायो। सतिगुर तुम को बोलि पठायो।
जेषट पुत्र चलहु ततकाल। तुमको उचित क्रिया सुभ ढाल ॥ १२ ॥
ले करि चलहु ग्रंथ निज साथ। पाठ करावन चाहति नाथ।
बिलम[1] न धरहु गुरु फुरमायो। इम सेवक सभि हुकम सुनायो ॥ १३ ॥
धीरमल्ल तबि रिदै बिचारी। पित पहुंचयो परलोक मझारी।
को कारन भा? बूझ्यो दास। संकट कौन भयो तन तास ॥ १४ ॥
कहां अचानक तज्यो सरीर?। भई कौन ऐसी तन पीर[2]?।
तब प्रसंग सभि दास सुनायो। धेनु जिवाइ सदन[3] को आयो ॥ १५ ॥
सुने भने कुछ गुर सों बैन। ततछिन गमन्यो तजि करि ऐन।
अलप सैल पर चढि करि थिरे। आसतरन कुश के पर परे ॥ १६ ॥
तन को त्यागि गए परलोक। सुनति सभिनि के उपज्यो शोक।
धीरमल तबि सुनति बखानी। गुर की गति मैं पूरब जानी ॥ १७ ॥
सुत पौत्रनि को मोह न लेश। ज्यों मन भावति करति अशेष।
अटल राइ को तिम तन त्यागा। नहिं अनुराग बिलंब न लागा ॥ १८ ॥
मो सों रहैं सदा रुख फेरे। निज बुधि बल ते भल बिधि हेरे।
रहौं संग तौ नहिं कल्ल्यान। यांते त्यागि रह्यो इस थान ॥ १९ ॥
पिता हमारे जंग मझार। हति शत्रुनि नित रहि अनुसारि।
अवगुन कौन हुतो तिन मांही। जग मैं जियनि दियो जो नांही ॥ २० ॥
धेनु जिवाइ पुंन को ठाना। तिनहुं जानि तजवाइव प्राना।
मैं अबि जाउं कहां इह जोग। कहां कहैंगे पिखि सभि लोग ॥ २१ ॥
जिनहुं बाक कहि मम पित हत्यो। मो संग कहां भलो अबि चित्यो।
लरति शाहु सों सकल बिगारा। लाखहुं लशकर तुरकनि मारा ॥ २२ ॥
श्री करतारपुरा धन धाम। तजि गमने बहु करि संग्राम।
उर बिचार अपनी बुधि भले। लिखि मैं पठ्यो शाहु जिम मिले ॥ २३ ॥
होति उपाधि अनेक प्रकारा। करी संधि सभि काज सवारा।
नतु पुरि बडिनि बसाइव जेतो। तुरकेशुर अपनाइ सु लेतो ॥ २४ ॥
सभि धन धाम नगर को राखा। निज बुधि बल ते मैं करि कांखा।
अबि मैं जाउं बिगर सभि जावै। गुर ढिग ते कछ हाथ न आवै ॥ २५ ॥
को जानै किस दैहैं गादी। लै है कौन करहि मुद शादी।
यांते मैं नहिं जैहै जोग। बरजहिं मोहि मुसाहिब लोग ॥ २६ ॥

1. देरी। 2. दु:ख। 3. घर।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनति दास तिस माता पास। गयो तबै जहि बीच अवास।
सरब प्रसंग सुनावनि कर्यो। धीरमल को कह्यो उचर्यो॥ २७॥

नेती[1] सुनति दहल उर भयो। रिदै बिखाद बहुत उपजयो।
बैठि भूम पर रोदन ठाना। पति हृति ते किय शोक महाना॥ २८॥

सुनि पुरि त्रिय पहुंची समुदाई। मिलि मिलि रोदन शबद उठाई।
सगरे मानव तबि बिसमाए। धीरमल्ल के निकट सिधाए॥ २९॥

चतर घटी लगि मिलि मिलि गए। गुर सुत गुन गन सिमरति भए।
जबहि इकाकी[2] निस महिं होवा। नेती जाइ पुत्र को जोवा॥ ३०॥

तिह समुझावन को तबि कह्यो। सुनहु पुत्र क्या चित मैं चह्यो।
चलिबो कीरतपुरि बनि आवै। इहां रहन अबि क्यों तुम भावै॥ ३१॥

सुत जेषट ते होति बिधान। बहुर पाग लैबो मन जानि।
निकटि पितामे के चलि लीजै। इम नीको निज रिदै लखीजै॥ ३२॥

नांहि त पाग न पावें हाथ। निरने करि हेरहु मति साथ।
बडे पुत्र को सभि अधिकार। गुरुता आदिक लखहु उदार॥ ३३॥
सभि ते छूछो[3] ही रहि जै हैं। पुन संगति ते किम पुजवै हैं।
सुनति धीरमल्ल गिरा बखानी। मैं तो उर निरनै करि जानी॥ ३४॥

गुर ते कछू हाथ नहिं अै है। मो पर तरकन अनिक उठै हैं।
तहां गए ते ग्रंथ मंगाइ। तबि हम छूछे ही रहि जाइं॥ ३५॥

ग्रंथ निकटि ते गुर मैं अहौं। सभि संगति ते पूजा लहौं।
कियो गुरु को गुर नहिं बनौं। तिन ढिग जाउं न मैं सच भनौं॥ ३६॥
तुव चित मैं जे पहुंचनि तहां। गमनहु प्राती मैं थिर इहां।
करनि उचित अरु कहिबे जोग। करहु जाइ नीके जिम होगु॥ ३७॥

इम त्यार होइ तबि नेती। बड नंदन की मसलत सेती।
उठि प्रभाति सयंदन[4] जुरिवायो। कर तूरनबिच पंथ चलायो॥ ३८॥
सगरो मग उलंघि सो गई। कीरतपुरे प्रवेशिति भई।
अधिक शोक ते रुदति पुकारति। गुर घर मैं प्रापति दुखिआरति॥ ३९॥
जुग सासन सों मिलि करि रोई। अंत समैं पति नहिं अविलोई।
कितिक देर महिं धीरज धारी। धीरमल्ल की गाथ उचारी॥ ४०॥

1. धीरमल्ल की माता। 2. अकेला, एकाकी। 3. खाली। 4. रथ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिम जिम कह्यो न आवन कीनि। दासी को सुनाइ सभि दीनि।
सो चलि गई गुरु के तीर। धीरमल्ल की भनी अधीर॥ ४१॥
सुनि सतिगुरु तूशन[1] ही रहे। कुटिल महां प्रिथीआ सम लहे।
गुर सुत की जु क्रिआ समुदाई। सादर श्री हरिराइ कराई॥ ४२॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ अशटम रासे 'धीरमल्ल' प्रसंग बरननं नाम उनचत्वरिंसती अंशु॥ ३९॥

1. खामोश।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४०

# जोधराइ आगवन प्रसंग

दोहरा

अपर जहां कहिं सुध गई सुनि सुनि सभि बिसमाइं ।
भए त्यार आगवन हित सनबंधी समुदाइ ।। १ ।।
बसहि ग्राम रमदास के, ब्रिध को पुत्र[1] सुभाग ।
सुनि त्यारी तूरन करी गुर दिशि आवन लाग ।। २ ।।

चौपई

चल्यो वटाले के मग आयो । रामै संग मिल्यो सभि गायो ।
करति शोक सो भी हुई त्यार । गमन कीनि पिखि भई सकार ।। ३ ।।
श्री कीरतिपुरि पहुंचे आई । सतिगुर सों मिलि ग्रीव निवाई ।
रामे सहित बैठि तबि गए । बात करति गुर सुत की भए ।। ४ ।।
हरीचंद भागण अरु द्वारा । इह सभि गे परलोक मझारा ।
साहिबज़ादे भल्ले, तेहण । सुनति शोक कीनसि जुति गेहण ।। ५ ।।
मिलि आपस महिं दोनहुं चले । सने सने मग उलंघति भले ।
पूरब पहुंचे पुरि करतारा । निसा परी लखि कीनि उतारा ।। ६ ।
धीरमल्ल सों मेला भयो । अपनि प्रसंग सगल कहि दियो ।
मैं नहिं गयो तिनहुं के पाही । शाहु संग मिलि रहुं पुरि मांही ।। ७ ।।
मिले सुनै बिगरहि ततकाला । सकल खसोटहि धन पुरिशाला ।
जहां जान ते हुइ उतपात । क्यों करि सकहि सुमति सो बात ।। ८ ।।
उचित न तुम को भी तहि जाना । सुनहि शाहु रिस धरहि महाना ।
मुशकल बनें रहनि घर मांही । मुलख मालकी तुरकनि पाही ।। ९ ।।
सुंदर परमानंद तबि कह्यो । हम तो सुन्यो शाहु हटि रह्यो ।
श्री नानक की गादी जानी । बार बार तबि बंदन ठानी ।। १० ।।
कह्यो बिदत अबि ते गुर संग । बिगरौं कबी न करिहौं जंग ।
सुनति धीरमल्ल तबहि बतायो । मैं लिखि करि तहिं पत्र पठायो ।। ११ ।।

---

1. बाबे बुड्ढे का पुत्र । 2. स्त्रियों के साथ ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संधि[1] करनि को आशै जिस महिं। सुनि हज़रत हरखयो. उर रिस महिं।
तऊ लोक जे अहैं नरेश। रहीअैं इन ते डरति हमेश ॥ १२ ॥
कितहुं की रिस कहुं निकारैं। यांते रहनि बनै अनुसारैं।
सुंदर कह्यो न हम ते बनै। इतिक गमी मैं मिलैं न भनैं ॥ १३ ॥
वधे बखेरे मिलते रहे। हमहिं कबहि नहिं किछु किन कहे।
आप गुरु लरि करि बहु वेरे। बसे बिचरते लवपुरि[2] नेरे ॥ १४ ॥
कलपहिं वास जितिक तूं अबै। सुनयो न देखयो पूरब कबै।
हम तौ होति प्रभाति जरूर। पहुंचहि तूरन जाइ हजूर ॥ १५ ॥
सुनि सुंदर ते तूशनि होयो। गाढे भाव गुरु महिं जोयो।
सरब भांति सेवा करिवाई। निस महिं रची अपर चतुराई ॥ १६ ॥
दातू सुत को नयारो करिकै। समुझायो बहु रीति उचरिकै।
करि लीनो अपने अनुसारि। सुंदर, परमानंद ते पारि ॥ १७ ॥
राख्यो अपने सदन टिकाइ। नहिं कीरतपुरि को तबि आइ।
श्री गुर अमर अंस चलि आए। मिले परसपर सीस निवाए ॥ १८ ॥
राइ जोध सुत भ्रात समेत। संग भारजा चलिबे हेतु।
होइ त्यार ततछिन चढि आयो। रुपा निकटि बुलाइ मंगायो ॥ १९ ॥
भा प्रलोक सद्धू सिख केरा। जीत्यो जनम. न भवजल फेरा।
क्रम क्रम पंथ उलंघन कीनो। डेरा बहिर आनि करि दीनो ॥ २० ॥
सुभट सैंकरे संग सुहाए। ब्रिंद सभासद करि इक थाएं।
जहिं बैठे जगदीश गुसाईं। धरति शोक न्रिप नर समुदाई ॥ २१ ॥
पहुंचे जाइ गुरु के तीर। लग्यो दिवान अग्र नर भीर।
फरश दराज भयो अविलोका। दिशि दोनहुं मैं भा बधि शोका ॥ २२ ॥
चरन सरोज गुरु के बंदे। बैठारे सनमान बिलंदे।
जोधराइ कर जोरि बखाना। श्री गुरदित्ता परम सुजाना ॥ २३ ॥
कारन कौन भयो दुखियारा ?। जिस ते पहुंचे सुरग मझारा।
कहां अचानक अस गति होई ?। पूरब सुनी नहीं हम कोई ॥ २४ ॥
भाना आदि सुननि सभि बैसे। श्री हरिगोबिंद उचर्यो थैसे।
जे म्रित के कारन हैं नाना। सो सभि जानहुं कीनि बहाना ॥ २५ ॥
जिम पूरब हुइ लिखति लिलारा[3]। तिस अनुसार रहति जगु सारा।
जियबो जेतिक बरख महीना। दिवस पहिर घटिका[4] लगि चीना ॥ २६ ॥

---

1. मिलाप । 2. लाहौर । 3. माथा । 4. घड़ी ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जेतिक स्वास लेनि हैं लिखे। तेतिक लेति, जियति तिन बिखै।
बहुर न होवैं अलप उदारा। करनैहार न भूलनहारा ॥ २७ ॥
सो छिन टपहि न करहि उपाया। करहि भरम ते मोहित माया।
यांते लखहु न कारन कोई। जो बिधि करति सहहि सिरसोई ॥ २८ ॥
क्रितपरमेशुर की सभि जानें। करहि अपर इह मूरख मानैं।
दुख सुख देनहार करतारा। अपर नहीं को जगत मझारा ॥ २९ ॥
हतन जिवावन अपरै कौन ?। सकल संत जानति हैं तौन।
जिम केहरि को लाठी हानहिं। हतनहार पर द्रिषटि ठानहिं ॥ ३० ॥
जे कूकर को मारति कोई। दोष लशटका[1] जानति सोई।
मुख पसार तिसको गहि लेति। हतनहार को त्याग सु देति ॥ ३१ ॥
स्वान द्रिषटि इहु मनमुख धारै। कलपहि नरन बिखै, इह मारै।
इहु मुझ को देवति सुख आछैं। इहु नर दुखद मोहि इम बांछै ॥ ३२ ॥
शेर दृष्टि गुरमुख नित धारै। सुखद दुखद जानहि करतारै।
राग द्वैख इस ते नहिं होति। लखहि प्रमेशुर शांति उदोति ॥ ३३ ॥
स्वान[2] द्रिषटि महिं अनिक बिकार। जिन ते पुन पुन परहि संसार।
राइ जोध ! तुम समझहु अैसे। श्री गुरुदित्ते की बिधि तैसे ॥ ३४ ॥
जिम प्रभु चहै होइ तिम साची। क्रिपा अपर की जानहु काची।
सुनति जोध बोल्यो द्रिग बारी। श्री प्रभु जी ! इहु साच उचारी ॥ ३५ ॥
क्रिपा आप की जिस पर होइ। इस मारग को बूझै सोइ।
सुनति सभा अभि आंसू गेरति। गुर सुत सिमरति धरनी हेरति ॥ ३६ ॥
सभि के मन मैं शोक बिसाला। रहे मौन करि केतिक काला।
जुग घटिका महिं गुरु उचारा। अबि बिसराम लेहु सुख धारा ॥ ३७ ॥
जथा जोग सेवा के हेतु। कहि गुर करे मसंद सुचेत।
त्रिण दाना हय हेतु निहारी। खरे होइ लीनी सुध सारी ॥ ३८ ॥
सभि डेरे हित देग पुचाई। कीनो खान पान समुदाई।
ब्रिंद मसंद हुते जे देश। ले ले संगति आइ अशेष ॥ ३९ ॥
गुर सुत की सुध जहि जहिं गई। सुनि सुनि तुरन आवति भई।
गुरु सुता वीरो चलि आई। रोवति ऊचे कहि कहि भाई ॥ ४० ॥
जोध राइ' को रोदति दारा[3]। त्रिय गन शबद भर्यो पुरि सारा।
जनु करुनारस कटक बटोरा। धाल्यो डेरा शोर न थोरा ॥ ४१ ॥
सतिगुर दे दे धीर हटाई। हित बरजन दासी सु पठाई।
वऊ अधिक प्रिय सभहिन केरा। रुदति सरब ही घनेरा ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ अशटम रासे **'जोधराइ आगवन'** प्रसंग ब[illegible]नन नाम चतवारिंसती अंशु ॥ ४० ॥

---

1. लाठी। 2. कुत्ता। 3. स्त्री।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४१

# श्री हरिराइ पिता पाग बंधावन प्रसंग

दोहरा

नर नारी नितप्रति नए कीरतपुर महिं आइं।
सनबन्धी सिख संगतां रोदति शोक बधाइ। १।

चौपाई

अलप बैस महिं श्री हरिराइ। क्रिया पिता हित करहिं बनाइ।
बीन पुषप सुरसरि पहुंचाइ। अपर जथोचित बिधी कराए॥ २॥
दिवस तीनदस जबहि बिताए। भयो समाज मनुज समुदाए।
जहिं लौ पहुंचि आइबे केरी। मिली संगतें आनि घनेरी॥ ३॥
जोध राइ अरु साहिब भाना। श्री हरिगोविंद संग बखाना।
श्री गुरदित्ते के जुग नंद। धीरमल है बैस बिलंद॥ ४॥
सोनहिं चलि कीरतपुरि आवा। तुट्यो सभिनि ते, क्या लखि पावा।
पित परलोक भयो अस समां। आइ न पहुंच्यो कीनि न गमां॥ ५॥
देनी बनै अबै दसतार। को रावर ने कीनिस ढार।
पुरि करतार देनि को जाइं। अपर नहीं को बनैं उपाइ॥ ६॥
तिस ते श्री हरिराइ छुटेरे। धीर शील गुनबिखैं बडेरे।
असमंजस लखियति श्री गुर जी! तऊ हमारी सुनीअहि अरज़ी॥ ७॥
अरु हम लख्यो चहैं तुव मरज़ी। लघु पर ही प्रसंन हैं हरिजी।
देनी बनै इन्हें दसतार। बडिआई के उचित उदार॥ ८॥
मुख प्रसंन रहि बिकसयो सदा। धीरज सहित गहीर सु रिदा।
सभि सों बोलति म्रिदुल सुभाऊ। मतसर आदि कुतरक न काऊ॥ ९॥
सुनि सतिगुर दोनों समुझाए। बड बडिआई उचित सुहाए।
सभि कुटंब ते इन के भाग। जाने परें बडे अबि जागि॥ १०॥
बडे गुरनि संग प्रिथीआ द्वैशी। नहिं सुधर्‍यो बय बिती अशेषी।
तथा धीरमल्ल मतसर[1] धरि धरि। होहि अधीरज हेरहि जरि जरि॥ ११॥

---

1. ईर्ष्या।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिसी मनिंद खोट बहु बोवैं। गुर घर ते न्यारो तिम होवैं।
श्री परमेशुर इमही भावै। सभि महिं हरीराइ बडिआवै ॥ १२ ॥
नहीं अपर के है कुछ हाथ। करहि करावहि श्री जगनाथ।
आज लगहि सगरो दरबारा। बैठारहु इन सभा मझारा ॥ १३ ॥
दिहु दसतार बंधावनि कीजै। वडिआवहु सभि महिं दिखरीजै।
सुंदर परमानंद तबि आए। सादर अपने निकटि बिठाए ॥ १४ ॥
बूझे दातू सुत नहि आयो ?। कहां काज जिस महिं बिरमायो।
सुनि गुर ते सभि बिर्धं बतावा। धीरमल्ल जिम चहति हटावा ॥ १५ ॥
हम ने कपट जानि तिह लीनि। कह्यो बहुत नहिं मान्यो, चीन।
निस महिं दातू सुत समुझायो। चतुराई छल साथ हटायो ॥ १६ ॥
निकटि आपने राख्यो ताहि। मुझ ते बिन किह के ढिग जाहि।
बडो पुत्र मैं उचित बडाई। निकटि ग्रंथ ते लई गराई ॥ १७ ॥
अहै पितामाकेतिक दिन के। मैं पुजवावौं पुन गुर बनि के।
कौन हटाइ सकै गुरिआई। ग्रंथ प्रताप साथ मैं पाई ॥ १८ ॥
इत्यादिक बाकनि को कहै। गरब बिसाल रिदै जिस अहै।
सुनि भाना साहिब ते आदि। कपट जानि तिस भे बिसमाद ॥ १९ ॥
देखहु कहां द्वैष उपजायो। मनमति ते निज गुरु बनायो।
इम सुनिकै निशचै सभि धारा। श्री हरिराइ देहिं दसतारा ॥ २० ॥
अंतर बहिर प्रगट तबि भई। बडिआई लघु सुत[1] कह दई।
जाम दिवस चढिबे लगि मसलत। इम कहि उठे सुनति भे हरखति ॥ २१ ॥
खान पान सभिहिनि तबि कीनि। बरतहि देग रात दिन दीन।
ढरे दुपहिरे ठानति तयारी। सुध मसंद लहिं संगति सारी ॥ २२ ॥
फरश बिसाल हेतु छिरकाइव। सभा सथान सुद्ध करिवाइव।
जाजम[2] अरु शतिरंजी संग। अवनी तल छादयो बहु रंग ॥ २३ ॥
जाम दिवस जबि रह्यो निहारे। श्री हरिगोविंद तहां सिधारे।
शोभति पौत्र साथ हरिराइ। हाथ गहे म्रिदु पहुचे जाइ ॥ २४ ॥
अति सुंदर मसनंद डसाई। तिस पर थिरे जाइ गोसाईं।
चमरदार ले चमर ढुराए। पठेमेवरे[3] सकल बुलाए ॥ २५ ॥
सुभट[4] पंच सै लेकरि संग। आइव जोधराइ मुद अंग।
प्रथम सभिनि ते पहुंच्यो भाना। सकल सबंधनि आवन ठाना ॥ २६ ॥

---

1. छोटे पुत्र। 2. छापा हुआ कपड़ा। 3. सेवक। 4. शूरबीर।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रूपा आइ चरन गुर लागा। परमानंद सुंदर बड भागा।
केतिक पहुंचे निकटि मसंद। ले ले संग संगतां ब्रिंद ॥ २७ ॥
लग्यो दिवान महान सथाना। खरे जि कंचन दंडन पाना।
भाट नकीब गावते[1] जसु को। सभिनि प्रेम ते पाइ दरस को ॥ २८ ॥
भाना अधिक प्रेमरस पाग्या। उठति भयो ले प्रभ् की आग्या।
श्री हरिराइ सीस दसतार। करी बंधावन हाथ उभारि। २९ ॥
सतिगुर निज कर संग सुधारति। नभ महिं जैजैकार उचारति।
श्री गुर अमरदास की अंसु। दई पाग सुंदर अवितंश ॥ ३० ॥
पुनहि मसंदनि अरपी सभिहूं। जोधराइ भा देवति तबिहूं।
सनबंधी अरु संगति केर। अरपति सगरे लाग्यो ढेर ॥ ३१ ॥
बाजनि लगे पीर शदिआने[2]। सुजसु कबित्तन भाट बखाने।
शोक नसाइ कीनि उतसाहू। आनद भा सभि के उर मांहू ॥ ३२ ॥
श्री हरिराइ हाथ ते दान। मंगति जननि दिवाइ महान।
बादित सगल बजावनहारे। ले बखशीश असीस उचारे ॥ ३३ ॥
हयनि आदिकनि दास बिसाले। बसत्र बिभूखन ले धन जाने।
सगरे श्री हरिराइ सराहैं। गुरु-पौत्र इहु भाग महां है ॥ ३४ ॥
अदभुत् शोभा पाइ रहे हैं। गुरता पद जनु आज लहे हैं।
औचक सभिनि रिदै फुरि आई। जानी परै पाइ गुरिआई ॥ ३५ ॥
इम मंगल करि शोक नसावा। अंतर बहिर प्रमोद वधावा।
देति असीसां श्री हरिराइ। धीरमल की निंद अलाइ ॥ ३६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ अशटम रासे **'श्री हरिराइ पिता पाग बंधावन' प्रसंग बरननं नाम एक चलवारिंशती अंशु ॥ ४१ ॥**

---

1. चारण। 2. खुशी के बाजे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४२

# दीपमाल मेला प्रसंग

**दोहरा**

इस प्रकार श्री सतिगुरु केतिक दिवस बिताइ ।
सभा लगाइ बिराजही गावहिं शबद सुनाई ॥ १ ॥

**चौपई**

केतिक संगति लिए मसंद । करि करि बंदन जुग कर बंदि ।
हुकम पाइ निज सदन सिधारे । जहां कहां गुर सुजसु उचारे ॥ २ ॥
केतिक सतिगुर के ढिग रहे । दीपमाल को मेला लहे ।
थोरे दिवस अहैं तिस मांहि । सो करि कै निज घर को जांहि ॥ ३ ॥
कबि कबि सतिगुर चढहिं तुरंग । देखहिं सतुद्रव तीर तरंग ।
मंद मंद हय पंथ चलावैं । कूलहि कूल[1] बिलोकति जावैं ॥ ४ ॥
नेत्र तुंग[2] के सैलनि तरे । सैल करति सुंदर थलफिरे ।
अलप उतंगनि थल को हेरहिं । कबिहूं कंदरा महिं हय प्रेरहिं ॥ ५ ॥
कहि भाने कहु संग चढ़ावैं । चढ़हि जोध, आनंद उपजावैं ।
कित बैसहिं थल नीको जानि । लगहि सभिनि को तहां दिवान ॥ ६ ॥
बिधीचंद बहु कार सभारी । गुरु सदन की ठानहि सारी ।
दिनप्रति देग होहि अधिकाई । सिख संगति अचवहिं समुदाई ॥ ७ ॥
आवहिं जाहिं समूह हमेश । त्रिपतहिं भोजन देग अशेष ।
नाना भांति बनहि रस स्वाद । मिलहिं संत सिख भनि संबाद ॥ ८ ॥
सतिगुर सभा लगावहिं लबिहूं । दरसहिं लघु दीरघ मिलि सभिहूं ।
हाथ जोरि गुर मुख ते बैन । सुनहिं भगति आतम रस ऐन ॥ ९ ॥
गुरमति को प्रापति गन होइं । मन बांछति पूरहिं सभि कोइ ।
दीपमाल दिन नेरे जानि । मेला आवनि लग्यो महान ॥ १० ॥
सफल जनम निज करिबे हेतु । लई उदाइन तजे निकेत ।
बहु दिन की संची गुर कार । केतिक ले पहुंचे दरबार ॥ ११ ॥

---

1. किनारे-किनारे 2. नैणा देवी



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गावति सुनति सिक्ख गुरबानी। मग महिं चलति बिकारन हानी।
चहुंदिशि ते उमड़े नर नारी। चलि पहुंचे काबल कंधारी ॥ १२ ॥
खुरासान अरु बलख बुखारा। धंनी घेप पिशौर उदारा।
पुरि मुलतान आदि कशमीर। सभि देशनि ते आइ बहीर ॥ १३ ॥
ठट्ठा भक्खर पुरि गुजरात। दक्खण पूरब जसु अवदात।
कहिं लगि गिनीअहि देश बिदेश। संगति पहुंची आइ विशेष ॥ १४ ॥
दीपमाल को दिन जबि आयो। कहि सतिगुरु बड फरश करायो।
निकसि बहिर गुर सभा लगाई। चवर छु ढुरति चारू चपलाई ॥ १५ ॥
भ्रात समेत जोध अवनीप[1]। बैठ्यो बंदन ठानि समीप।
कंचन दंडधार तहिं खरे। भाट नकीब गुरु जसु करे॥ १६ ॥
सगल देश ते संगति आई। अनिक उपाइन अदभुत् ल्याई।
खरो मेवरो हित अरदास। लेति अकोरन[2] अरपत्ति पास ॥ १७ ॥
दरब बिभूखन बसत्र अजाइब। उचित पहिरिबे सतिगुर साहिब।
भेटन के अंबार अगारी। लगे सफल वसतू मुल भारी ॥ १८ ॥
सुंदर परमानंद ढिग हेरे। चितवति वध्यो प्रताप वधेरे।
पीरी मीरी जुगल बिसाला। बरती भले, रिपुनि घर घाला ॥ १९ ॥

श्री अरजन सुत जोधा बली। जग बिसतीरति कीरति भली।
इम साहिबजादे चहुं घर के। करहिं बिचारनि गुन सतिगुर के ॥ २० ॥
चहुं दिशि महिं दरसहिं नर नारी। कर जोरति अरु बंदन धारी।
मनो कामना सभिहिनि केरी। अंतरजामी पुरहिं घनेरी ॥ २१ ॥
सुत बित आदि चाह जे जाए। करि बंदन पाए समुदाए।
इम प्रब्रिरति को पूरहिं काम। अहैं संत जिन चित निशकाम ॥ २२ ॥
सिखी बखशहि भक्ति उपावहिं। आतम ज्ञान सु रस को पावहिं।
सभा मझार हजारहिं थिरे। चहुंदिशि महिं समूह नर खरे ॥ २३ ॥
पिखहिं सरूप होहिं बलिहारी। दीरघ दरशन दुखन बिदारी।
मुक्खय मसंद किधौं सिख आए। गुर सुत हित की बात चलाए ॥ २४ ॥
अरपहिं हाथ जोरि दसतार। ऊपर धरि धरि दरब उदार।
सतिगुर निकटि बिठाइव पोता। आतम ग्यान महान जि पोता ॥ २५ ॥
बहु आदर ते करहिं सनेहू। जानहिं हम पाछै गुर एहू।
अजर जरन आदिक गुन भारे। जिन महिं लखीयत हैं शुभ सारे ॥ २६ ॥

1. राजा, राय 2. भेंट

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निकटि सुहावति हेरति ब्रिंद। बँस अलप मुख सुंदर चंद।
गुरमुख सिख अनुमान करंते। गुरुता उचित बिदत गुनवंते ॥ २७ ॥
जानी परहि गुरु ते पाछे। तखत बिराजहिंगे दुति आछे।
कहिं लगि कहौं मेल की बात। दरसहिं करहिं सुजसु अवदात ॥ २८ ॥
मनभावति कीरतिपुरि रहैं। बहुर गमन निज घर को चहैं।
गुर ते होइ बिसरजनि भले। निज निज देश ब्रिंद सिख चले ॥ २९ ॥
जानि जोध को प्रेम बिसाला। राख्यो अपने निकटि क्रिपाला।
तिम भाई रूपा ढिग रहयो। दरशन को अनंद नित लहयो ॥ ३० ॥
भाने को करि म्रिदुल दिलासा। राखति भए गुरु निज पासा।
अपर सिक्ख प्रेमी बहु रहे। जिनहुं परमपद बांछति अहे ॥ ३१ ॥
गुर संगति ते हति अग्यान। सिक्खी उपजै रिदै महान।
अनिक बिकारन को परहरि कै। रिदै मुकर[1] कहु निरमल करिकै ॥ ३२ ॥
अपर सरूप जानि करि लेति। मन को रोकति होइ सुचेत।
बिधि प्रपंच को कूरा जानहिं। यांते राग द्वैख जुग हानहिं ॥ ३३ ॥
इह दोनहुं जबि मन ते हने। मतसर आदि कौन तबि जने।
सति संतोख, शांति जबि निपजैं। सुगम ग्यान को रस उर उपजै ॥ ३४ ॥
सिद्ध अशटदश औचक आइ। थिरैं अगारी मन बिरमाइ।
निज निज शकति जनावहिं सोइ। जिम चाहहि सो ततछिन होइ ॥ ३५ ॥
नभ को चढ़न पताल सिधावन। मेरु मनिंद सरीर बनावनि।
अणु ते अणु ततछिन बनिजावनि। गुपतहिं बिदतहिं जिम मन भावन ॥ ३६ ॥
तिन को गुर सिख नहिं सनमानहिं। अंतर ब्रिती महां सुख ठानहिं।
निस दिन ठांढी रहति अगारी। अस गुरमति अति चित हितकारी ॥ ३७ ॥
रहैं सिक्ख गुर ढिग बडभागे। पग पंकज के प्रेमहिं पागे।
सत्तिनाम जाचहिं करि अरज़ी। अजर जरन बरतहिं गुर मरज़ी ॥ ३८ ॥
ऐसे सिक्ख रहैं गुर पास। अपर मेल सभि गयो अवास।
पाइ कामना सुजसु उचारैं। देश बिदेशनि महिं बिसतारैं ॥ ३९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे **'दीपमाल मेला प्रसंग'** बरननं नाम दोइचतवरिंसती अंशु ॥ ४२ ॥

---

1. शीशा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४३

# श्री तेगबहादर प्रसंग

**दोहरा**

थिरहिं गुरु सभि सभा महिं शवद सुनहिं बिच राग।
जिन ते मन पावन बनै उपजै प्रभु अनुराग ॥ १ ॥

**चौपई**

भगति, ग्यान, बैराग, बिवेक। निगुन सगुन की आतम टेक।
इत्तयादिक चरचा संग भाने। सुनति जोध सतिगुरु बखाने ॥ २ ॥
रुपे आदि सिक्ख बहु सुनैं। गुर उपदेश रिदै पुन गुनैं।
सतिसंगति की पंगति होति। ब्रह्म ग्यान को रिदै उदोति ॥ ३ ॥
मुकति उचित नर भए अनेक। गुर प्रताप ते पाइ बिबेक।
बिती सरद, हिम[1] रितु पुन आई। पारा परहि जगत अधिकाई ॥ ४ ॥
कीरतपुरि ही सतिगुर बासे। भए शांति चित सुजसु प्रकाशे।
शत्रु तुरक लाखहुं रण मारे। अरे आइ सगरे सो हारे ॥ ५ ॥
श्री हरिराइ संग बहु नेहू। म्रिदुल बाक ते करति अछेहू।
निस दिन निज समीप ही राखैं। प्रिथक् होन को कबहुं न कांखैं ॥ ६ ॥
सदन थिरहिं तौ बैठहिं तीर। जे करि चढ़हिं कबहि गुर धीर।
हय चढ़ाइ करि संग लिजावैं। सिवका[2] चढ़ैं त साथ चढ़ावैं ॥ ७ ॥
सतुद्रव कूल सैल को जाइं। कै सैलनि[3] के शिखर सिधाइं।
हेरति कवहुं कंदरा बिचरति। श्री हरिराइ संग रहिं जित कित ॥ ८ ॥
सुंदर बसत्र अनिक पहिरावैं। भांति भांति भूखनि बनिवावैं।
पहिरावैं करि प्रेम घनेरे। शोभति श्री हरिखाइ बडेरे ॥ ९ ॥
सूरज मल बैठहिं बहु पास। नांहि त अपने बसैं अवास।
कबि कबि आवहिं तेग बहादर। करहिं सभिनि ते इन बहु आदर ॥ १० ॥
नहिं बोलहिं बहु धारहिं मौन। जग बिवहार न जानहिं कौन।
अंतर ब्रिती मसत की न्याईं। सभि जानहिं, इह लखहि न काईं ॥ ११ ॥

---

1. हिमकर, शीत ऋतु 2. पालकी 3. पर्वत



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री हरिगोविंद होइ इकंत। किधौं बहुत नर महिं भगवंत।
बासर बीस पचीसनि बिखै। जबि चित हुइ—पित दरशन पिखैं॥ १२॥
सनै सनै चलि पाइनि धरति। लाज सहित द्रिग नीचे करति।
गुर पग पंकज बंदहं जाइ। हाथ जोरि करि ग्रीव निवाइं॥ १३॥
पुत्र सधीरज पिखि गंभीर। सादर बोलि बिठावहिं तीर।
कबिहूं ज्ञानू लेति उचाइ। बैठहु निकटि सथान बताइ॥ १४॥
कबिहूं गहि करि भुजा बिठावैं। सनमानहिं सुत को दरसावैं।
पिखहि नानकी कबि घर मांही। आदर देति बिठावैं तांही॥ १५॥
रिदै बिचारै—इह सुत मेरो। लखहि न जग बिवहार बडेरो।
किह सों प्यार न बैठहि बोलहि। नहीं चतर मत एकल डोलहि॥ १६॥
घर महिं बैठि इकांकी रहै। किह मसंद सों मेल न लहै।
पख पात काहूं संग नांही। लैबौ दैबो करै न कांही॥ १७॥
श्री गुरदित्ता जानहि सारा। सभि घर को बिवहार संभारा।
तिस को भी आदर नहिं एतो। मम लघु सुत को ठानति जेतो॥ १८॥
सो परलोक गए अबि पाछै। सूरजमल जानति मति आछै।
घर की कार करति सभि भावति। अपनि पिता को भले रिझावति॥ १९॥
अणीराइ की बात कहां है। जनमति ही जो मसत महां है।
गुरु प्रसंन पौत्र पर रहैं। निस दिन प्रीति सहित ही लहैं॥ २०॥
ममसुत को आदर क्यों करैं। इह कुछ भेद न जानयो परै।
रिदै बिचारति दिननि बितंति। बूझहुं कबहि कंत भगवंत॥ २१॥
इक बासर सतिगुर घर मांही। बैठी हुती नानकी पाही।
तेगबहादर तबि चलि आए। पित गुर दरस करनि ललचाए॥ २२॥
सादर निकटि बिठावन कीनि। वंदन करति गही भुज पीन।
बैठे तरे विलोचन करे। पिता निकटि नहिं ऊच निहरें॥ २३॥
लखि अवकाश इकांकी कंत। कहति नानकी सुनि भगवंत॥
सभि ते लघु नंदन इहु मेरो। जिस को सूध सुभाव बडेरो॥ २४॥
पुत्र आपके अपर बडेरे। चित जानति बिवहार घनेरे।
घर के कार संभारन करे। लेनि रु देनि जथोचित धरे॥ २५॥
सरब प्रकारनि चहति बडाई। मिलहिं मसंद जिनहुं समुदाई।
इह मम सुत नहिं जानति कोई। रहति इकांकी तूशनि होइ॥ २६॥
तुम सनमानहु सभि ते घनो। कारन कहां सुमति लखि मनो।
मुझ मन संसै होति सदाई। रही बिचार न जानयो जाई॥ २७॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रिपा करहु अबि साच बतावहु। किव सनमानहु भेव बुझावहु।
सुनि करि श्री मुख ते मुसकाए। सुत की दिशा बिलोचन लाए ॥ २८ ॥
पिखि श्री हरिगोविंद वखाना। कहां भोलीए! भेव पछाना।
अजर जरन उर धीर धुरंधर। इस मनिंद न अपर जग अंदर ॥ २९ ॥
इक तो इह गुन मानन ठौर। सुनहु दूसरो कारन ग्रौर।
इसको पुत्र होहि बलवंड[1]। तेज़ प्रचंड झुंड खल खंड[2] ॥ ३० ॥
रुंड मुंड बड शत्रु बिहंड। घालहि संघर घोर घमंड।
जगत गुरु श्री नानक केरा। नाम करहि उज्जल बहुतेरा ॥ ३१ ॥
महां पुरख बड तेज अमंद। देग तेग को धनी बिलंद।
गुरनि प्रताप बिसाल वधावहि। चहुंकुंटनि पर छाया छावहि ॥ ३२ ॥
तिन के जनम होनि करि घर मैं। माननीय इह सभि सुर नर मैं।
इस कारन करि बडो सभिनि ते। करि बादर म्रिदु को हम भनते ॥ ३३ ॥
सुनति अनंद नानकी होई। वंदन कीनि बंदि कर दोई।
सुत को सुत गुन निध हुइ सुनयो। बनहि साच इनको जिम भनयो ॥ ३४ ॥
अति प्रताप जुति बली बिसाला। सकल दिशा महिं करहि उजाला।
अधिक बिभूति मोहि घर आवहि। पौत्रा सभि समाज विरधावहि ॥ ३५ ॥
जबि ते सुधि सतिगुरु सुनाई। भई प्रफुल्लिति अंग न माई।
रही प्रतीखति भई ग्रनंद। होहि पौत्र कबि बांहि बिलंद ॥ ३६ ॥
जबि जनमैं दसमे पतिशाहू। देखि अनंदति बहु मन मांहू।
पति को बच सिमरत ही रही। ज्यों ज्यों वधि प्रताप भा मही ॥ ३७ ॥
श्री गुर तेग बहादर तवै। द्वै घटका बैठे सुनि सवै।
वंदन करि निज थान पधारे। पौढि कीनि बिसराम सुखारे ॥ ३८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे '**श्री तेग बहादर प्रसंग**' बरननं नाम तीनचतवारिंसती अंशु ॥ ४३ ॥

---

1. शक्तिशाली 2. दुष्टों को मारने वाला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४४

# विधीचंद तन तजन प्रसंग

**दोहरा**

राइ जोध रामा रहयो धरमा सतिगुर तीर।
साहिब भाना ततबिता[1] अपर कितिक सिख भीर ।। १ ।।

**चौपई**

परमानंद अरु सुंदर रहयो। गुर समीपता को सुख लहयो।
बाक बिलास अनिक बिधि होति। भगति ग्यान को अनंद उदोत ।। २ ।।

नाना प्रशन गुरु संग करैं। सुनहिं भले उर आनंद धरैं।
बिधीचंद गुर सेव कमावै। सुभट तुरंगनि की सुध पावै ।। ३ ।।

लेनि देनि को बड बिवहार। चलहि देग अनतोट अहार।
गुर के अंतहिपुर पहुंचावन। बसत्र बिभूखन जो मन भावन ।। ४ ।।

गुर मरजी को लखि इक बेर। तिसी रीति बरतहि नित हेरि।
लालचंद निज नंदन[2] भायो। निस दिन गुर सेवा महिं लायो ।। ५ ।।

जनम मरन नित भवजल फेरा। सिक्खी मग चलि सकल निबेरा।
रण को करति रिपुनि कहु जेता। आनंद लहयो महां ततबेता ।। ६ ।।

चिरंकाल गुर भगति कमाई। दरशन ठानति बैस बिताई।
श्री मुखवाक सुनति सुखु मानि। करे क्रितारथ द्रिग अरु कान ।। ७ ।।

सफल सीस पदबंदन धरति। तिम हाथनि ते सेवा करति।
गुर कारज महिं इत उत चले। कीनसि चरन क्रितारथ भले ।। ८ ।।

सेवति सगरी बैंस बिताई। धंन जनम करि कै गति पाई।
भयो ब्रिद्ध गुर दरस निहारति। सरब प्रकार शकति को धारति ।। ९ ।।

अंत्रजामता आदिक भई। गुर क्रिपाल ते गति मति लई।
सगल आरबल बिती पछानी। अंत गती अपनी मन जानी ।। १० ।।

1. तत्त्व वेता, ज्ञानी 2. पुत्र



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुंदर शाहु संग तकरार। पहुंचनि तिसके निकटि पधारि।
चित मैं समुझि गुरु ढिग आइव। हाथ जोर करि बिनै अलाइव ॥ ११ ॥
लालचंद को पास बिठाइ। सभिकिछु आप लखहु सुखदाइ।
तऊ बूझिबे हेतु गुसाईं। कहौं, बैस मम सकल बिताईं ॥ १२ ॥
अंत समां पहुंच्यो अबि ग्राइ। तजौं देहि तुमरे गुन गाइ।
इस महिं एक हेतु है और। सुंदरशाहु बसहि जिस ठौर ॥ १३ ॥
हुकम आप को ले ताहिं जाऊं। तहिं तन तजि परलोक सिधाऊं।
करि आयो तिह सों तकरार[1]। मिल दोनहुं इक थल निरधार ॥ १४ ॥
एक समै तजि दोनहुं देहि। गमनहिं श्री सतिगुर के ग्रेह।
सो अबि चहौं कर्यो मैं साचा। पहुंचनि महिं तहिं चित हित राचा ॥ १५ ॥
श्री हरिगोविंद सुनि मुसकाए। निज त्यारी करि हम ढिग आए।
कह्यो बाक सो साच करीजै। सुंदर शाहु मिलहु संग लीजै ॥ १६ ॥
इकठे हुइ गुर सदन सिधारो। म्रिखा[2] जगत को मेल बिचारो।
बिधीचंद बंदति कर बंदि। लालचंद देख्यो ढिग नंद ॥ १७ ॥
सो सतिगुर के पाइनि पायो। सेव करनि निशकपट सिखायो।
भुगति मुकति दोनहुं गुर पास। नहिं त्यागहु नित रहो अवास ॥ १८ ॥
जो आइसु दें तूरन करीअहि। गुर कारज को बिलम न धरीअहि।
श्री हरिगोविंद गहि करि बांहू। दई धीर तुम सम इस चाहू ॥ १९ ॥
तोर मोर महिं भेद न कोई। गुर सिख नाम रहे अबि दोई।
रूप एक मेरे संग भयो। गुर घर काज बहुत तैं कियो ॥ २० ॥
आगे लालचंद अबि सेवहि। हम पाछे गुरता जो लेवहि।
सदा सांझ तेरी पुशतैनी। निबहै गुर घर संग सुखैनी ॥ २१ ॥
इत्तयादिक कहि कर्यो बिसरजन। बार बार हेरति करि अरज़न।
चरन सरोज नमो करि चल्यो। कमल बिलोचन ते जल ढल्यो ॥ २२ ॥
साहिब भाने आदि घनेरे। जोधराइ सों मिलि तिस बेरे।
ले करि खुशी सभिनि ते चाला। रोग न, सोग न, ब्योग न, राला ॥ २३ ॥
श्री हरिगोविंद मूरति सुंदर। करी टिकावनि तबि उर अंदर।
प्रेम महातम श्री गुर केरा। भए ग्यान भी रह्यो बडेरा ॥ २४ ॥
गयो तुरत ही तौनै देश। जहिं सिख सुंदर शाहु विशेष।
जिम जोगीशर लाइ समाधि। बिधीचंद को रह्यो अराधि ॥ २५ ॥

1. इकरार से भाव है 2. झूठा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिमरन सत्तिनाम मुख अंतर। मुरु पराइन बैठि निरंतर।
कह्यो जाइ उठीअहि मम प्यारे। चलि आयो इत हेतु तुहारे॥ २६॥
जो तकरार तोहि संग कीनों। पहुंच्यो आनि समा सो चोंनों।
जबहि श्रोन महिं शबद प्रवेशा। छुभयो रिदा जिह शांति विशेषा॥ २७॥
कमल बिलोचन खोलि विलोका। आगे खरो गुरु, हति शोका।
पग पंकज पर सीस निवायो। धूल लीनि मुख चख[1] पर लायो॥ २८॥
धंन भाग मैं भयो क्रितारथ। पहुंचि दूर ते कर्यो सकारथ।
रह्यो प्रतीखति तुम ग्रागवनू। थिर्यो ध्यान धरि मैं इक भवनू॥ २९॥
बचन संभार आप हो आए। अंत समै निजं साथ मिलाए।
बैठ्यो बिधीचंद तबि भाखा। पूरन कीनि तोहि अबि कांखा॥ ३०॥
भौतक तनु अंत इस हेरा। म्रितु समा मेरा अरु तेरा।
इसी हेतु मैं तूरन आवा। चाहति तोकहु संग रलावा॥ ३१॥
श्री नानक को ले करि नामू। रिदै धरहु मूरति अभिरामू।
तन कहु त्यागहु चलहु सुखैन। पहुंचहु सादर सतिगुरु ऐन॥ ३२॥
सुनि अनंद करि सुंदर शाहू। वधी चौंप, चलि बेगुर पाहू।
उठि शनान ठानि कुश डासहु। बिना त्रास गुर आस हुलासहु॥ ३३॥
सुनि अनंद करि सुंदरशाहू। वधीचौंप चलिबे गुर पाहू।
उठि दोनों तबि निरमल पानी। करि शनान पावनता ठानी॥ ३४॥
कुश के आसतरन जुग[2] कीने। कुछक फरक सों दौन असीने।
श्री हरिगोविंद सुजसु उचारा। निज दासनि पर दयालु उदारा॥ ३५॥
लोक प्रलोक सहाइक भारे। सेवक अपनि हज़ारहुं तारे।
बचन बिलास एव कुछ करे। पुन द्रिग मूंदि ध्यान को धरे॥ ३६॥
निज निज बदन छादि पुनलीने। आसतरन पर पौढन कीने।
तजे सुखेन प्रान पुन दौन। मंगल भयो देवतनि भौन॥ ३७॥
हित आदर के आगे आइ। दोनहु लीनि बिमान चढ़ाइ।
जै जै शबद उचारति भए। सतिगुरपुरि को ततछिन गए॥ ३८॥
तपत स्वरन सम[3] तन कौ बरन। दिव्ब बसन धारे ग्राभरन।
जाइ गुरु पुरि इसथित भए। बंदन आदि जथोचित किए॥ ३९॥
इस प्रकार गुर को सिख भारी। काया त्यागनि कीनि सुखारी।
देउ ग्राम ते तबि नर आए। दोनहुं बिना प्रान दरसाए॥ ४०॥
दफन कर्यो तिन सुंदर शाहू। पूजन हेतु थान करि तांहू।
तैसे बिधीचंद को दाहा। अबि लौ मानहिं बांछति पाहा॥ ४१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे '**बिधीचंद तन तजन प्रसंग**' बरननं नाम चतरचतवारिंसती अंशु॥ ४४॥

---

1. नेत्र 2. दो आसन 3. तपाए हुए सोने की तरह रंग है

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ४५

# श्री हरि राइ प्रसंग

**दोहरा**

श्री हरिगोविंद चंद जी बिरह बिधीचंद पाइ।
बहु उदास उर महिं रहैं भेव न कछू जनाइं ॥ १ ॥

**चौपई**

लालचंद को राखहिं पासा। बहु भांतनि ते देति दिलासा।
बिधीचंद पाछे दसतार। बंधिवाई म्रिदु बाक उचारि ॥ २ ॥
तिस बिधि ही दीनसि बडिआई। ले हरखयो गुर सेव कमाई।
करन कार पर तिसही लायहु। बडे मसंदनि संग मिलायहु ॥ ३ ॥
एक दिवस श्री हरिगोविंद। पहुंचे उपबन पिखिनि बिलंद।
खरे जहाँ बहु तरुवरु जाती। चंपक, राइ बेल बहु भांती ॥ ४ ॥
आरू आमरूद, अरू अंब। निंबू, कदली खरे कदंब।
दारम, सेउ, फारसे[1], खिरनी। फूलन डारी बहू बिधि बरनी ॥ ५ ॥
कठल[2], बठल, नौरंगी सुंदर। इततयादिक अरु उपवन अंदर।
राइजोध अरु भाना संग। वहिर उतरि तजि दए तुरंग ॥ ६ ॥
अंतर बरे तरोवर हेरहिं। पुष्प पुष्प पर द्रिष्ट प्रेरहिं।
करैं सराहनि इह बर बिकसयो। इसको टौर[3] उचेरे निकसयो ॥ ७ ॥
इसको सुंदर बरन बिसाला। इह आछो सोहै विच माला।
चार पांखुरी इसकी सोहति। आक्रिति[4] महां बनी मन मोहति ॥ ८ ॥
श्री हरिराइ सु कछुक पिछेरे। हुते तुरंग पंथ के नेरे।
रुक्यो पौर उपबन को तबै। कहि कर कीने बरजन सबै ॥ ९ ॥
सगरे मग ते दूर हटाए। तबै प्रवेशन कौ चलि आए।
अलप बैस महिं लखि करि सारे। लरहिं न हय इत उतहि निवारे ॥ १० ॥

1. फालसा 2. कटहल 3. नतीजा 4. मूर्त्ति



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रच्छक दास जिनहु के संग। हुते अरोहन बली तुरंग।
यांते सभि कहु दए हटाइ। उतरे आप तबहि हरिराइ ॥ ११ ॥
शतपालन को सूखम जामा[1]। नितप्रति पहिरहिं बहु अभिरामा।
सुंदर पर्यो सिकंध दुकूल। मनहुं म्रिदुलता को तन मूल ॥ १२ ॥
मिलैं पितामा के संग जाई। यांते चाल चलति चपलाई।
बायू बेर चलन ते परस्यो। शत पालन जामे को सरसयो ॥ १३ ॥
पसरयो घनो छिप्प्र[2] चलि जाहीं। सुंदर फूल हुतो मग मांही।
सो जामे लगि अटकति टूटा। ऐंचन करे शाख ते छूटा ॥ १४ ॥
टूट्यो पुष्प रह्यो तहिं पर्यो। श्री हरिराइ बेग तिम धर्यो।
मिलिनि पितामे को चित चाही। कहां रहे जबि लगि कहिं नांही ॥ १५ ॥
संग दास तिम गमनति गए। सतिगुर निकटि पहूचति भए।
सने सने फिर उपबन सैल। श्री हरिगोबिंद सिख बहु गैल ॥ १६ ॥
सुंदर रवश सथंडल घने। हाथ प्रबीन निकेल गि बने।
तिन पर चले जांहि सभि आगे। गमनहिं भीर लार को लागे ॥ १७ ॥
पिख्यो तरोवर[3] सुंदर छाया। बैठन हेतु रिदा बिसमाया।
हुती सघन बहु तिस के तरे। फरश कराइ बैठिबो करे ॥ १८ ॥
अनिक भांति की बातनि करते। त्रिण सबज़ी चहुं ओर निहरिते।
कितिक समै महिं उठि करि चाले। श्री हरिराइ निकटि है नाले ॥ १९ ॥
सनै सनै जिम आगे गए। तिस प्रकार हटि आवति भए।
टूट्यो पर्यो पुष्प जिस थाईं। तहां पहूंचति भे जग साईं ॥ २० ॥
प्रथम गए देख्यो बिधि भले। हुतो सराह्यो सुंदर खिले।
जबहि बिलोकयो टूटो पर्यो। सतिगुर बाक उचारन कर्यो ॥ २१ ॥
शाखा लग्यो हुतो हम हेरा। अबि इह किह तोर्यो छित गेरा ?।
उपमा मुख प्रसंन की पावति। खिरी पांखरी हुतो सुहावति ॥ २२ ॥
शाखा सहित तरोवर अवनी। निज छबि ते दिखरावति रवनी।
अबि छिन छिन प्रति इह कुमलावति। शोक सहित मुख समता पावति ॥ २३ ॥
कारज कहां सर्यो इस तोरे। धरनी पर्यो भई दुति होरे।
इम सतिगुर कहि बहु तिस बेरे। बूझन हेतु नरन मुख हेरे ॥ २४ ॥
हुते संग सो किनहुं न जाना। टूटन कारन नहीं बखाना।
जबि सभिहिनि मुख तूशनि ठाने। श्री हरिराइ, दास तिन जाने ॥ २५ ।

1. सौ पल्लों वाला चोला 2. जल्दी 3. वृक्ष

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हाथ जोरि सभि हेतु सुनाए। श्री हरिराइ चलति उतलाए।
दीरघ जामा अटकयो या सों। पर्यो टूट धर तूरनता सों ॥ २६ ॥
सुनि श्री मुख ते सुमति बतावैं। जो दीरघ जामा गर पावै।
क्यों न संकोचि संभारि चलंते ?। जिंह पसरति गन बिघन परंते ॥ २७ ॥
सुनी पितामे की इम बानी। श्री हरिराइ बंदना ठानी।
तुरत संकोच्यो जामा गर को। कर्यो संवारन पाइ सु कर[1] को ॥ २८ ॥
तबि ते मान्यो बचन भले हैं। जबि ली जिए न छोरि चले हैं।
शतपालन को जामा पावैं। चलन समैं कर ते सुकचावैं ॥ २९ ॥
सीख पितामे की न बिसारी। श्री हरिराइ प्रतग्या धारी।
जिम श्री नानक सेवति रहे। गुर अंगद बड रूज[2] दुख सहे ॥ ३० ॥
सरब रीति करि समरथ भए। रुज तन को न मिटावनि किए।
तिम श्री अमरदास तिन आगे। दुशक्रित सेवा महिं नित लागे ॥ ३१ ॥
एक समैं गहि तित की बाहूं। श्री अंगद गमने मग मांहूं।
सहिज सुभाइक बाक कहंते। अपनि बरोबर लियो चलंते ॥ ३२ ॥
दुती बांहु लटकति अर हालति। जबि मग बिखे चरन को डालति।
एक बार भुज अधिक हिलाई। गुर अंगद ते भी अगुवाई ॥ ३३ ॥
देखति दहिलयो रिदा घनेरा। भई अवग्गया इहु कर मोरा।
गुर आगे होयो बड हाला। उचित पिछारी रहिबे वाला ॥ ३४ ॥
अवि इस को त्यागनि बनि आवै। छेदन करि गेरन ही भावै।
श्री अंगद दिशि बहुर बिचारें। उग्र करम पिखि कोप न धारें ॥ ३५ ॥
यांते नहिं छेदन शुभ रीते। त्यागन करौं बांहि निज जीते।
तजौं अपनपौं इस ते अबै। कार न करौं इसी ते कबै ॥ ३६ ॥
नहिं अबि पोखन कबिहूं करौं। बनहि सुकावन इम परहरौं।
अस बिचार करि छाती लाइ। निस दिन राखी तहां टिकाइ ॥ ३७ ॥
बिन हाले इक थल जबि रही। शुषक भई पुन पोखी नहीं।
इत्तयादिक प्रण गुर घर केरे। नहीं नेम करि गिरे पिछेरे ॥ ३८ ॥
तिम ही प्रण धार्यो हरिराइ। सीख पितामे ते जबि पाइ।
शतपालन ही पहिरहिं जामा। सूखम बसत्र सजहि अभिरामा ॥ ३९ ॥
चलिबे समैं न कर ते छोरैं। कर धरि सकुचावति चहुं ओरैं।
इम श्री हरिगोविंद सुनाइ। अपन सथान बिराजे आइ ॥ ४० ॥
खान पान करिकै बिसरामे। सेवा करहिं सिक्ख शुभ कामे।
केतिकदिन इम भए बिताइ। करहिं उधारन जनसमुदाइ ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे '**श्री हरिराइ**' प्रसंग बरननं नाम पंचचतवारिंसती अंशु ॥ ४५ ॥

---

1. हाथ 2. रोग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४६

# मात मरवाही को प्रसंग

**दोहरा**

अलप बैस महिं सुमति करि प्रण ठान्यो हरिराइ ।
बाक पितामे के सुने राखे रिदे टिकाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

श्री हरिगोविंद पौत्र निहारा । बचन आपने के अनुसारा ।
जबि कबि देखहिं कर सों जामा । गमनति संकोचति अभिरामा ॥ २ ॥
दीरघ छोर न कबिहूं चाले । पहिरहिं सूखम जिह सौ पाले ।
गुर प्रसंनता करिबे लागे । निकटि बिठावहिं उर अनुरागे ॥ ३ ॥
दिनप्रति अधिक होति रुख जावै । म्रिदुल बाक् कहि अनंद उपावैं ।
सिख संगति सभिहिनि लखि लीनसि । पौत्रे पर करुना मन भीनसि ॥ ४ ॥
सूरजमल पित आशै चीना । श्री हरिराइ चहैं गुर कीना ।
निज जननी संग गाथ बुझाई । दई चहिति पौत्रे बडिआई ॥ ५ ॥
तथा नानकी सुधि सुनि पाई । मरवाही जुति चित दुचिताई ।
करहि बिचार कहां इहु भावै । सुत तजि पौत्रहि को बडिआवैं ॥ ६ ॥
गुन गन सहित सदा अनुसारी । पिता अग्ग्र कछू नहिं हंकारी ।
प्रथम गुरनि तिज पुत्र न दीनि । नहिं अपने अनुसारी चीनि ॥ ७ ॥
सिरीचंद अरु लखमीदास । पित सेवा नहिं कीनि हुलास ।
तिम ही दासू दातू सुने । पित अनुसारी नांहिन बने ॥ ८ ॥
मोहन अपर मोहरी दोइ । तिस बिधि ही तिनकी गति जोइ ।
सभि ते ऊचो पिता हमारो । जग जाचक, गुर एक दतारो ॥ ९ ॥
हम उत्तम सभि ते बडि भागे । इम हंकार न सेवा लागे ।
लोकनि महिं बहु रहै बड़ाई । यांते गुरु गिरा न कमाई ॥ १० ॥
मम सुत तेग बहादर नीको । पित आग्या महिं उज्जल जीको ।
रहि मरज़ी, नहिं अरज़ी कहै । गुर को कर्यो पिखति मुद लहै ॥ ११ ॥



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपर बिकार आदि हंकार। इन के लेश न रिदै मझार।
आप सराहति भे बहु बारी। हुइ बिसाल इहु धीरज धारी॥ १२॥
बहुर बचन शुभ कर्यो सुनाई। इस के सुत ह्वै गुन समुदाई।
रिदै कहां अबि कंत बिचारा। चहैं दैन पद, पौत्र उदारा॥ १३॥
इत्तयादिक तरकति उर मांही। तिस चितवति चित नित मरवाही।
सूरजमल को देखि बिचारै। इहु गुर सुत सभि काज संभारै॥ १४॥
पित आइसु महिं बरतनहारा। देशनि देश मसंद उदारा।
लैबो देबो काज बिसाले। सगरे करति सुमति के नाले॥ १५॥
देग खरच आदि गुर घर के। सकल चलावति है बुधि करिके।
जग गुर इस की दिशि नहिं देखा। चहैं पौत्र को कर्यो विशेखा॥ १६॥
इत्तयादिक गुर धरनी दौन। चितवहिं गुरता निज निज भौन।
समैं पाइ श्री हरिगोविंद। अंतहि-पुर[1] महिं आइ अनंद॥ १७॥
निज सुत हेतु कहहि मरवाही। उचित बात कीजहि चित चाही।
सूरज मल वडिआई जोग। वडो पुत्र इहु सुमति संजोग॥ १८॥
श्री गुरदित्ता हुतो वडेरो। गुरता उचित सभिनि शभ हेरो।
प्रान अंत औचक[2] तिन होवा। दीरघ अचरज नर गन जोवा॥ १९॥
अबि सूरजमल सुमति बिलंद। अहै आप को दीरघ नंद[3]।
तिस के होति अपर नहिं लाइक। बनहु आप वडिआई दाइक॥ २०॥
जेष्ट पौत्र ग्रंथ ले राखा। मैं हौं गुरु संगति महिं भाखा।
कपट आप ते कर तहिं रह्यो। तुम अधीन ह्वै नहिं पद लह्यो॥ २१॥
अंश गुरु अंगद की जोइ। आवति हुते आप ढिग सोइ।
करि सनमान कपट को धारि। कर्यो सथापन तिह सों पयारि॥ २२॥
रावरि ढिग नहिं आवन दीनि। राख्यो अपने निकटि प्रबीन।
संगति महिं कहिवावन कारन। धीरमल्ल गुर करहि उचारन॥ २३॥
इत्यादिक छलबल बहु धरै। संगति ते पुजवावन करै।
पास ग्रंथ ते जानी परि है। बहु धन पूजा को तहिं चरि है॥ २४॥
इम आपन करि लीनि गुजारा। तुमरे अछत रह्यो हुइ न्यारा।
पौत्रा अलप अहै हरिराइ। लघु बय समरथ बिना लखाइ॥ २५॥
सो तुम पास रह्यो हित धरिकै। निज भ्राता को संग संग प्रहरिकै।
निस दिन संगति रावर[4] केरी। करति रहति शुभि रुख को हेरी॥ २६॥

1. रनवास, अन्त:पुर 2. अचानक 3. बड़ा पुत्र 4. आपकी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिस पर आय प्रसंनता धारति। हेरति सगरे लोक उचारति।
गुरता गादी देहिं बिठाइ। सभि ते हरिराइ बडिआइ ॥ २७ ॥
सुनि सुनि चित मैं ह्वै दुचिताई। मम सुत सभि लाइक बनि आई।
गादी उचित लेनि के एहि। सुत तजि किम पौत्रे को देहि ॥ २८ ॥
मुझ मन संसै होति बिसाला। यांते ते बूझति हौं इस काला।
इत्यादिक मरवाही बैन। सुनि सतिगुर उर करुना ऐन ॥ २९ ॥
कह्यो न चिंता कीजै कोई। गुरु सुतनि को कमी न होई।
सभिजग सिखसंगति सुख पावहि। गुरकी कार इनहु अरपावहि ॥ ३० ॥
अरु जो चाहति अधिक बडाई। पूरब की हुई जांहि कमाई।
उचित जु श्री नानक मनसंद। सो बैठहिंगो भाग बिलंद ॥ ३१ ॥
इहु किसहूं के कर महिं नांही। करे जतन नहिं प्रापति पाही।
पुत्र आदिक सनबंधी सारे। होइं सखा सेवक उर पयारे ॥ ३२ ॥
अजर जरन को पावै सोई। प्रभु की क्रिपा जास पर होई।
छलबल आदि सुमति बहु करनी। जतन अनेकनि बहु बिधि बरनी ॥ ३३ ॥
इह किसहूं के हाथ न आवै। करहि खोट जो तस फल पावै।
इम कहिकै पतिब्रता सु दारा*। समुझाई म्रिदु बाक उचारा ॥ ३४ ॥
तऊ इकमना भई न सोई। सुत दिशि ते चिंता चित पोई।
पौत्रे सकल वसतु को लेति। सुत बैठे कहु क्यों नहिं देति ॥ ३५ ॥
जबि कबि गुर दरशन को पाइ। इस प्रसंग को देति चलाइ।
मन मेरो नहिं थिरता पावै। तजहिं पुत्र पौत्रा बडिआवै ॥ ३६ ॥
म्रिदु बाकनि लहि दें गुर धीर। सकल वसतु है तुमरे तीर।
तुव सुत को न कमी किस रीति। निशचे धरहु आपने चीत ॥ ३७ ॥
हो सुमते ! नहिं संसै धरीअहि। गुर सुत सभि के पूज विचरीअहि।
मानहिंगे सिख संगति सारे। अरपहिंगे शुभ वसतु उदारे ॥ ३८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशट रासे **'मात मरवाही को प्रसंग'** वरननं नाम खषटचवारंसती अंशु ॥ ४६ ॥

---

* स्त्री

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ४७

# श्री अनंद जी को प्रसंग

**दोहरा**

श्री सतिगुर जोधा वलि वसि भगतनि के नीत ।
इक दिन बैठे सभा महिं दरसहिं सिख मुद चीत ।। १ ।।

**चौपई**

किनहू खबर आइ तवि दीनि । गोइंदवाल बास जिन कीनि ।
भल्लयन की कुल भगति बिसाला । सिक्खी को प्रकाश सभि काला ।। २ ।।
श्री गुर अमरदास की अंस । सुत पौत्रे नाती[1] बडवंस ।
मोहन अपर मोहरी जोई । भा परलोक देहिं तजि सेई ।। ३ ।।
संत मनोहरदास बिसाला । सो भी पहुंचति भा हरिशाला ।
सुनिकै श्रीगुर हरिगोविंद । हरि पुरि जाइ बसे इह ब्रिंद ।। ४ ।।
अपर नरन सम शोक कर्यो है । रुचिर बिलोचन नीर भर्यो है ।
पौंछति हैं रुमाल के साथ । वहिर द्वार ते निकसे नाथ ।। ५ ।।
बैठे अपर नरन सम सोइ । सुनि सुनि आइ गए सभि कोइ ।
थिरि सभि महिं तवि गुरु अगाध । धरे मौनता लगी समाधि ।। ६ ।।
दुइ घटिका आसन थिर रहे । लोचन मुंदे न तन सुध अहे ।
रहे अडोल अंग तिस काल । पुन खोले द्रिग रुचिर बिसाल ।। ७ ।।
'वाहु वाहु मुख ते तब्रि कह्यो । दास मनोहर बड पद लह्यो ।
बूझन को सभिहूंनि सुनायो । कौन करम तप फल तिन पायो ? ।। ८ ।।
कशमीरी इक्क सिखज बिसाला । गुर ढिग रहै सु नाम कमाला ।
तिन कर जोरि कह्यो सुनि स्वामी । सभि किछ जानहुं अंतरजामी ।। ९ ।।
तऊ दास के गुन बिदतावन । बूझति हो मैं करौं सुनावन ।
श्री गुरु अरजन को ले गोद । रह्यो खिलावति पाइ प्रमोद[2] ।। १० ।।

---

1. प्रपौत्र 2. खुशी



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इक तो इहु शुभ करम महाना। अपर सुनहु जो तिस क्रित ठाना।
गुरु अमर जी सेवन करे। पूरनमासी मेला भरे॥ ११॥
तबहि प्रीत धरि करहि अहारा। अनिक प्रकारनि के करि त्यारा।
श्री गुर अमर केर संतान। तिनहि अचावहि करि करि मान॥ १२॥
मन भावति दे मोद प्रबीन। पुन पहिरावहि बसत्र नवीन।
तिनको सेवहि अनिक प्रकारे। करहि कीरतन जाइ चुबारे॥ १३॥
कबहि बावली बैठहि आइ। आसावार शबद जुति गाइ।
गुरु अमर संतति के पास। करि गुर भगति, मनोहर दास॥ १४॥
इन शुभ करमनि को फल होवा। लह्यो महां पद जो तुम जोवा।
कहे आपके हम जान्यो। इस प्रकार तप तिस ठान्यो॥ १५॥
इम सुनिकै श्री हरिगोविंद। बोले बाक सुनावति ब्रिंद।
श्री गुर अमरदास संतान। हम नहिं सेवे कवि निज पान॥ १६॥
कर सों टहिल न हम ते होई। देति महां पदपी को जोई।
जबि ते तुरकनि कीनि बखेरा। तबि ते गोइंदवाल न हेरा॥ १७॥
श्री गुर अमरदास संतान। किम हम सेवा करहिं महान।
तिस पुरि हम ते जाइ न काई। चिरंकाल भा खबर न पाई॥ १८॥
हम को रहे जु बिघन बिसाला। तुरकनि संग जंग सभि काला।
भाई गड़ीआ संत प्रबीन। तिस की दिशा बिलोकन कीनि॥ १९॥
कह्यो तांहि सो तुम अबि जावहु। कहि अनंद को इह ठां ल्यावहु।
सिवका लेकरि संग सिधावहु। गोइंदवाल जाइ दरसावहु॥ २०॥
इम अनंद के संग बखानउ। करहु क्रिपा बिघनै गन हानउ।
'दरशन दीजै बिरद संभारहु। आवहु इह ठां बिलम बिसारहु॥ २१॥
लिखी पत्रिका दीनसि हाथ। गमन्यो लीनि पालकी साथ।
सनै सनै चलि गोइंदवाल। मिल्यो आइ गड़ीआ तिस काल॥ २२॥
पद अरबिंद अनंद के बँदे। दई पत्रिका पठि बिलंदे।
लिखी प्रेम करि बांची जबै। मगन अनंद, अनंद सु तबै॥ २३॥
गुरु लीला के चलित बिचारे। आपनपौ दुराई[2] बिवहारे।
अपर नरन के करहिं समान। करता हरता सरब जहान॥ २४॥
जिसकी माया महां अपार। जिस को कवि किन लह्यो न पार।
तिन को अबि दरशन मैं पाऊं। धंय जनम अपनो करि आऊं॥ २५॥
ले अपने संग मानव ब्रिंद। भई त्यार चलिबे आनंद।
चढ़े पालकी आवति भए। गड़ीआ अपर लोक संग लए॥ २६॥

1. पालकी 2. छिपाकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पहुंचे निकटि जबहि सुध लए। श्री गुर हरिगोबिंद तबि गए।
मिले जाइ करि दूरि अगारे। तूशन वरे हटाइ कहारे ॥ २७ ॥
अपन कंध सिवका सु उठाई। तिसी रीति चाले अग्रवाई।
मान बढ़ावनि हेतु क्रिपाला। धरे कंध पर मग महिं चाला ॥ २८ ॥
जान्यो जबै अनंद जी ऐसे। भए सूत[1] अरजन के जैसे।
निंम्री होनि हेरि गति मन की। इम ही रीति पुरातन इन की ॥ २९ ॥
तबिही कूद पालकी त्यागी। मिले परसपर अति अनुरागी।
जग के नरन बंचना करिहो। अति प्रताप धरि सभि ते दुरहो ॥ ३० ॥
इम उचरति ग्रिह महुं ले आए। रुचिर प्रयंक बिछावनि छाए।
करि पूजा सनमान बिठाए। म्रिदुल मधुर मुख बाक अलाए ॥ ३१ ॥
विरहा तुमारो भा चिरकाला। नहीं मिले मन प्रेम बिसाला।
तबि के सेवा ते रहि गए। कबहुं भई नहिं कांखा[2] किए ॥ ३२ ॥
जबि के बिछुरे सुख नहिं पाइव। बाद द्रुंद नित तुरक उठाइव।
हम को आप जानते कैसे ?। करुना करहु बतावहु तैसे ॥ ३३ ॥
सुनति अनंद, अनंद बिसाले। प्रेम मगन ह्वै कहति उताले।
श्री गुर नानक अंगद रूप। त्रितीए श्री गुर अमर अनूप ॥ ३४ ॥
सतिगुर रामदास श्री अरजन। हरिगोबिंद खषटम तुम तिन तन।
पारब्रह्म की जोति गहीला। धरि माया तन ठानति लीला ॥ ३५ ॥
करहु चरित्र बिचित्र उदारे। नर हेरति भरमति हैं सारे।
जिम नट बाज़ी पाइ दिखावै। अचरज को दिखाइ भरमावै ॥ ३६ ॥
पुनतिह सेवक निकट जमूरा। सो नहिं भरमहि जानहि कूरा।
त्यों निज दासनि करुना धरो। सो जानैं जैसी बिधी करो ॥ ३७ ॥
हम जानहि माया ते परै। तुम अलंब हुइ जग को करै।
निरबिकार, गुनहीन, अलेप। तुमरे महिं बिसतार संछेप ॥ ३८ ॥
सभि महिं बयापक सभि ते न्यारे। साखी रूप बसहि जग सारे।
करता भरता हरता एक। बिध प्रपंच के, जलधि बिबेक ॥ ३९ ॥
तुम बिन अपर न दूसर मानैं। सभि को जानो इम हम जानैं।
अदभुत् कह्यो न जाइ चरित्र। कहनि सुनन ते होइ पवित्र ॥ ४० ॥
इम अनंद ते सुनि करि काने। श्री गुर हरिगोबिंद मुसकाने।
तुम अनंद हो लह्यो अनंद। सुजसु बिलंद संपूरन चंद ॥ ४१ ॥
पुन सभि संगति महिं नर फेरा। सभि अकोर[3] आनहुं इस बेरा।
श्री अनंद की पूज चढ़ावहु। फल अनंद ही जिस ते पावहु ॥ ४२ ॥

1. सारथी 2. आकांक्षा 3. भेंट

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि गुर आगया को सभि आए। अनिक उपाइन को अरपाए।
माया ब्रिंद चढ़ी को हेरि। कह्यो अनंद भगत जी फेरि॥ ४३॥
यहि पूजा सभि तुमहिं सुहाति। जगु गुर समरथ हो सभि भांति।
रूप दरिद्र हमहि दिख परै। नहिं कबहूं कर छूवनि करैं॥ ४४॥
सुनि गुर भन्यो अबहि इहु लीजै। निज कर ते किसहूं बखशीजै।
तबि अनंद नहिं बाक हटायो। मान सिंह को निकट बुलायो॥ ४५॥
धन दे करि समुझाइ सुनायहु। हे सुत! बित लिहु भोग भुगायहु।
सुख पावहु तुम लेख सु माथे। मन भावति भोगहु धन साथे॥ ४६॥
केतिक दिन राखे पुन पास। भांति भांति के बाक प्रकाश।
सुनि कहि बिदा भए जु अनंद। करे परसपर महद अनंद॥ ४७॥
हित असवारी सिवका दीनि। पुन भाई गड़ीआ संग कीनि।
गोइंदवाल जाइ पहुंचाए। सभि सों लिलि गुर सुजसु अलाए॥ ४८॥
अबि लगि धरी पालकी सोई। हेरि नमो ठानहि सभि कोई।
श्री गुर हरिगोविंद जी दीनि। गोइंदवाल धरी दुति भीन॥ ४९॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे **'श्री अनंद जी को प्रसंग'** बरननं नाम सपत चतवारिंसती अंशु॥ ४७॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४८

# बाबक प्रलोक गमन प्रसंग

**दोहरा**

श्री हरिगोविंद सतिगुरु इस बिधि समैं बिताइ ।
सिख संगति आवहि अनिक मन वांछति को पाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

बावक हुतो अगारी गावै । सदा कीरतन करति सुनावै ।
भांति भांति के रागनि साथ । करहि रिझावन सतिगुर नाथ ॥ २ ॥
अंत समां पहुंचयो तबि आई । जानि लई तबि म्रितु नियराई ।
श्री हरिगोविंद ढिग चलि आयो । प्रान अंत बिरतंत सुनायो ॥ ३ ॥
करहु खुशी सतिगुरु बिसाला । गमनौं मैं परलोक सुखाला ।
अपनि समीपी सदा रखीजैं । इही आस मम रिदै पुरीजै ॥ ४ ॥
श्री नानक जी ढिग मरदाना । सदा राग को करति सुजाना ।
इह जग महिं मा बड बक्खयात । पायो सुजसु बडो अविदात ॥ ५ ॥
जिम बावन[2] को ले करि संग । हाथ लशटका वधी उतंग ।
तिम रावरि की संगति पाइ । हम आदिक जग महिं बिदताइ ॥ ६ ॥
भले भाग ते भए भलेरे । सदा गुरु के दरशन हेरे ।
सुनि श्री हरिगोविंद बखाना । कर्यो प्रेमसर आवन जाना ॥ ७ ॥
निज निज समैं पयानहिं सारे । अपनी वारी धीरन धारे ।
आवन धंन अहै तिन केरा । सिमर्यो सत्तिनाम सभि बेरा ॥ ८ ॥
सतिगुर की सेवा महिं लागे । कीरत करहिं सुनहिं बडभागे ।
इसके सम अपर न कलि काल । हरता पातक[3] बिघन बिसाल ॥ ९ ॥
कलमल[4] मल मन पट को लागी । बिशियन की कारख सों पागी ।
चहैं निवारन इस को जेई । सतिसंगति महिं मिलि करि तेई ॥ १० ॥

---

1. प्रकट 2. बावन अवतार 3. पाप नाश करने वाला 4. पाप



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सत्तिनाम जल को तहिं लेय। धोवन किरतन भले करेय।
उज्जल मन को करहिं सुजान। चढ़हि रंग गूढो तत ग्यान॥ ११॥
कबहुं न उतरै सदा नवीन। इस बिधि की बुधि अधिक प्रबीन।
यांते बाबक तूं चित जानहु। अंत समें लौ नाम बखानहु॥ १२॥
रह्यो करति किरतन को नीत। अहै भलो तुव निरमल चीत।
पिता तोहि आछी गति पाई। तिम ही तुम को हुइ सुखदाई॥ १३॥
हम सुनिकै गुर वद अरबिंद। करे सपरशन पुंन बिलंद।
लोक प्रलोक सहाइक अहो। नहीं अपर को हम ने लहो॥ १४॥
निज सुत को पायो शरणाई। प्रतिपारहु मम सम इस तांई।
हम रावरि के अहैं सदीवे। पुशतन लगौं रबाबी थीवे॥ १५॥
सुनि सतिगुर पुन धीरज दीनि। होइ इसी बिधि कहिबो कीनि।
रहै रबाबी नंदन तेरो। लहै राग को भेव वडेरो॥ १६॥
हम पाछै गुरघर महिं रहै। खान पान तुम सम ही लहै।
इह भी चिंत न चित महिं करीए। अंत समां सत्तिनाम सिमरीए॥ १७॥
थिर चित ह्वै कै सदन पधारो। पौढहु बसन[1] बदन पर धारो।
त्यागनि करहु सुखैन सरीर। पुत्र बिठाइ आपने तीर॥ १८॥
सुनि आइसु सतिगुर ते चल्यो। जाती मलक संग पुन मिल्यो।
म्रिदुल बाक कह्नि पैरी पाणा। मैं अबि अपनो करौं पयाणा॥ १९॥
हुते हमारे भाग बिलंद। जिस ते ढिग श्री हरिगोबिंद।
जाती मलक कह्यो, 'तुव धंन। अंत समै करि गुरु प्रसंन॥ २०॥
चल्यो चहैं परलोक मझारा। जहिं को गमन सभिनि सिर धारा।
मैं तन त्यागों देरि न कोई। केतिक दिवसति आयू होई॥ २१॥
पुन बाबक सतिसंगति सारी। मिलि मिलि भले बंदना धारी।
ले सभिहिनि ते खुशी बिसाला। ले सुत संग सदन को चाला॥ २२॥
आइ भारजा[2] बहु समुझाई। हमरे सिर पर नित गुर सांई।
किसी बात को नांहि अंदेशा। दुहु लोकन के कटे कलेशा॥ २३॥
दोइ जाम निज धाम बिताए। पुन मुख की दुति कछु कुमलाए।
जान्यो प्रान अंत अबि ह्वै है। सत्तिनाम सिमरति गुन गैहै॥ २४॥
पर्यो, बदन पर बसन सु पायो। ततछिन तन को छोरि सिधायो।
अपर जि हुते डूम की जाति। सकल बुलाए कहि म्रिदु बात॥ २५॥

1. वस्त्र 2. स्त्री

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सैना महिं जे तुरक हकारे। सभि चलि आए बाबक द्वारे।
क्रिया म्रितक की जेतिक होइ। ताके सुत करिवाई सोइ ॥ २६ ॥
ऊपर पायो रुचिर दुशाला। ले निकसे बाहरि ततकाला।
कबर खनाइ धर्यो तिस मांही। दफनायहु जसु भाखहिं तांही ॥ २७ ॥
गुर प्रसंन करि अंत समें इह। शुभगति पाई संसे को नहिं।
इस प्रकार करि तांहि चलाना। पीछे क्रिया करी कुल नाना ॥ २८ ॥
केतिक दिवस बिते जबि मरे। तिस के पुत्रनि सभि विधि करे।
तबि सतिगुरु आछो दिन जानि। बिना कीरतन रहित दिवान ॥ २९ ॥
धन दसतार बिसाल दुशाला। दे करि बिप्प्र हाथ तबि घाला।
चतुर सुतनि[1] को देकरि धीर। इह सभि बिनसनहार सरीर ॥ ३० ॥
अबि इहु सिरोपाउ गुर दीना। सिर पर बंधहु पान नवीना।
शोक तजहु अरु भजहु सुनाम। गुर को सेव बसहु निज धाम ॥ ३१ ॥
ऊपर सुंदर लेहु दुशाला। करहु कीरतन सभाविसाला।
सनिकै बाक देखि गुरदया। मन ते शोक सभिनि तजि दया ॥ ३२ ॥
सिर पर बांधी पाग बनाइ। आछे बसत्र पहिरि हरिखाइ।
ले करि साज़ पिता सम गए। सभा बिखै गुर दरशन लिए ॥ ३३ ॥
खरे होइकै करी कलान[2]। गुर साहिब सोढी सुलतान।
श्री गुर रामदास को पोता। दीन दुनी धंभि भार खलोता ॥ ३४ ॥
श्री अरजन सुत जोधा बली। तुरक मार करि कीरति भली।
पीरी मीरी को बड थंभा। पिखि प्राक्रम सभि जगत अचंभा ॥ ३५ ॥
मुगलसथान जंग करि मार्यो। अवदुल खां जुति चमू संघारयो।
ललावेग सहि कंवर घाती। शाहु जहां की दाहसि छाती ॥ ३६ ॥
लूणहरामी पैंदा धायो। प्रतिपालक सो लरिबे आयो।
अरयो न शत्रु सकल ही मारे। मौन शाहु भा मानी हारे ॥ ३७ ॥
को को गुन रावर के कहैं। शेष सारदा[3] अंत न लहैं।
गुर जसु कहि वैठे दरबार। लगे कीरतन करनि उदार ॥ ३८ ॥
भांति भांति को रागन गाइ। सभा सहित गुरु लए रिझाइ।
करी मौज तिन कौ ततकाला। रिदै अनंदति भए बिसाला ॥ ३९ ॥
इसी भांति निज पित की न्याई। लगे कीरतन करनि बनाई।
नित आवहिं गुर के दरबार। चौंकी करते संझ सकार ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अशटम रासे **'बाबक प्रलोक गमन'** प्रसंग बरननं नाम अषटचतवारिंसती अंशु ॥ ४८ ॥

---

1. पुत्र 2. कीर्ति 3. शेष नाग और सरस्वती

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४६

# जाती मलक प्रसंग

**दोहरा**

इस प्रकार श्री सतिगुरु समा बितावन कीनि ।
नंम्री श्री हरिराइ पिखि करहिं सनेह नवीन ।। १ ।।

**चौपई**

अपनि समां तन तजन पछाना । बीतति बासर हुइ नियराना ।
गुरता दई चहैं निज पोते । लखि करि धीर आदि गुन पोते ।। २ ।।
दिन प्रति दान देति दिज दीन । दरब जवाहिर कीमति पीन ।
बरन बरन के बसत्र नवीन । बली तुरंग पाइ करि ज़ीन ।। ३ ।।
गुर कर ते पूरब खर धारा । करवारन की बही उदारा ।
जिसहि पाइ काइर बहि गए । तर करि सूर सुरग को गए ।। ४ ।।
तथा दान धारा गुर कर की । निस दिन चली जाती इकसर की ।
दीननि को दारिद बहि गयो । दसहूं दिशि जसु ते भरि गयो ।। ५ ।।
अधिक दारिदी जे चलि आवैं । पहिरि बिभूखन तुरंग नचावैं ।
जबि अपने धीर पहुंचहिं जाइ । सनबंधी जे हैं समुदाइ ।। ६ ।।
तिन ते तुरत न होइ चिनारी । देखि वेश को देहिं बिसारी ।
केतिक सैन बनाइ सिधावैं । वडे मोल पट[1] तुरंग[2] लिजावैं ।। ७ ।।
तिनहुं हेर करि जे लघु ग्राम । भाजहिं त्याग भरे धनु धामु ।
तिनसों ऊचे कहैं सुनाइ । हम को देखति नहीं पलाइ ।। ८ ।।
श्री हरिगोविंद जोधा भारी । हम तिस के चल जाहिं भिखारी ।
जो जिस समैं आइ जसु कहै । दरव तुरंग बसन को लहै ।। ९ ।।
अवदुल नत्था रणकी वार । करी वनावनि सकल सुधारि ।
जिम संघर घाल्यो घमसान । मारे सय्यद मुगल पठान ।। १० ।।

1. वस्त्र 2. घोड़े



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फते लई हति करि तुरकाना। हने डंक रणजीत निशाना।
गुर आगे थिर होइ सुनाई। सुनि कर दान दीन समुदाई॥ ११॥
गज तुरंग ऊपर शुभ ज़ीन। कंचन कंकन[1] जटति नवीन।
सुंदर बसत्र बरन बहु केरे। दियो संग बहु दरब घनेरे॥ १२॥
फुरमायहु सिख संगति मांही। करहु सुनावनि मुद उपजाही।
तुम को दै हैं दरब घनेरा। सुनहि पंथ चालहि जगु मेरा॥ १३॥
इसते आदि दान बिधि नाना। करहिं नितप्रति गुरु महाना।
दूर देश ते जाचक आवैं। सुनि सुनि जसु निज घर ते धावैं॥ १४॥
लेति दान को जसु उपजाइ। देति असीसनि श्री गुर राइ।
इक दिन वैठे सभा मझारी। जाती मलक बिप्प्र गुन भारी॥ १५॥
सतिगुर घर को प्रौहत अहै। आयुध धारी ह्वै ढिग रहै।
रण महिं कीने प्राक्रम भारे। शत्रु तुरक अनेक संघारे॥ १६॥
पूरब गुर ढिग सिंघा नाम। सो भी लरत रह्यो रण धाम।
तिस पीछे इहु भा सवधान। चढ़हि तुरंग बीर बलवान॥ १७॥
दया राम उपजयो इस नंद। दसम गुरु ढिग रहै अनंद।
रण को करहि कथा तबि आवै। शत्रु पहारी लर करि धावै॥ १८॥
जातीमलक जानि निज अंत। गयो जहाँ बैठे भगवंत।
हाथ जोरि करि अपनि प्रसंग। भनयो सकल ही गुर के संग॥ १९॥
करहु खुशी मो पर इस काल। प्रान अंत हुइ चहति उताल।
प्रोहत मैं हौं रावर केरा। चहौं दान ब्रह्म ग्यान बडेरा॥ २०॥
जिस ते बहुर जनम नहिं धारौं। करमफास सगर निरवारौं।
अस सरूप मुहि दिहु समुझाई। जिस हित जोगी करति उपाई॥ २१॥
मन बिसराम पाइ नहिं धावै। निज अनंद के बिखै समावै।
इम सुनिकै प्रोहत को आशै। श्री मुख ते गुर बाक प्रकाशै॥ २२॥
जाती मलक! धंन तुम अहो। तन हंता को त्यागन चहो।
दुविधा महिं मन बिगर्यो सदा। इकता महिं प्रापति नहिं कदा॥ २३॥
निज सरूप तन को नहिं जानि। जनमति अरू इह बिनसनवान।
बालक तरुन ब्रिद्ध हुइ जाइ। अहै प्रणामी एव उपाइ॥ २४॥
तव सरूप महिं इहु सभि नाहिं। सदा एक रस जानहु तांहि।
तन के सूखम अहै रिखीकी। तिन की गति जानहु बिधि नीकी॥ २५॥

1. सोने के कड़े। 2. पुत्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इह भी नहिं सरूप निज जानहु । इक तौ प्रिथक प्रिथक इन मानहु ।
सभि को इक सुभाव नहिं अहैं । देखहिं सुनहिं गंध रसु लहैं ।। २६ ।।
तवु सरूप महिं इहु कुछ नाही । इन ते परै लखहु उर मांही ।
जो संकलप विकलप उठावै । दौरित जाति तुरत हटि आवै ।। २७ ।।
इहु रिखीक ते सूखम मन है । शुद्ध अशुद्ध होति, बुध भनि है ।
मन ते थूल[1] प्रान जे अहैं । से भी आवन जानो लहैं ।। २८ ।।
खट बिकार इह तीनहुं मानी । जनम मरन तन महिं हुइ जानी ।
छुधा[2], पिपासा प्राण धरंते । हरख शोक मन को लिखयंते ।। २९ ।।
इन ते भी सूखम तव रूप । शषट बिकारनि प्रिथक अनूप ।
सदा अचल नहिं आवति जाइ । मन आदिक प्रेरक समुदाइ ।। ३० ।।
मन की गतागती जो लखै । सभि ते नयारो सभि के बिखै ।
जाननीय जो बुधि ते अहै । विषय रिखीकनि को नहिं लहै ।। ३१ ।।
सभि ते निकटि सभिनि ते दूर । सचिदानंद रह्यो भरपूर ।
जिस अलंब को लहि समुदाइ । जड़ सभि जे चेतन हुई जाइं ।। ३२ ।।
सो सरूप तूं अपनो जानि । निर विकार अबिनाशी मान ।
आतम सों सबंध बुधि पाइ । नहीं वासतव कलपति गाइ ।। ३३ ।।
बुधि सों मन स्बंध हुइ जावै । मन सों इंद्री तिम ही पावै ।
इंद्रै संग पदारथ होइ । जान्यो परै जगत है जोइ ।। ३४ ।।
इंद्रै ते मन लेहु हटाइ । उर अंतर ही राख टिकाइ ।
मिटहि जगत आतम सों मिलै । थिरता लहै बहुर नहिं चलै ।। ३५ ।।
इम श्री हरि गोबिंद बखाना । दिज उर अंतर कीनसि पयाना ।
गुरु क्रिपा ते खुल्हे कपाट[3] । राग द्वैष को नास्यो ठाट ।। ३६ ।।
दुबिधा की सांकर[4] छुटि गई । ब्रिती सरूप बिखै थिर भई ।
अपनि रिदै महिं अचरज जाना । प्रापति रस भा अनंद महाना ।। ३७ ।।
नेत्र मूंद करि केतिक काल । लखयो रिदै महिं अदभुत ख्याल ।
बहुर गुरु बैठे ढिग हेरे । बंदन करि गुन जानि बडेरे । ३८ ।।
महिमा कही न तुम सम आन । को उपमा मैं करौं बखान ।
अपनो जानि ग्यान मुझ दीनि । जिस को जोगी सकहिं न चीन ।। ३९ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अषटम रासे **'जाती मलक प्रसंग'** बरननं नाम एकउनपंचासती अंशु ।। ४९ ।।

---

1. स्थूल 2. भूख । 3. दरवाज़ा 2. जंजीर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५०

# संगत मसंद अगवन प्रसंग

दोहरा

इस बिधि प्रापति ग्यान को अंत समा ढिग चीनि ।
गमनयो श्री गुर के निकटि दया राम संग लीनि ।। १ ।।

चौपई

श्री प्रभु मैं अबि तजौं सरीर । दयाराम सुत तुमरे तीर ।
गहि भुज को राखहु निज पास । अलप बैस इस की, सुखरास ।। २ ।।
इक अलंब रावर को अहै । नहीं अपर को जाचन लहै ।
सतिगुर कह्यो होहि बडभागा । रहै सदा गुर घर संग लागा ।। ३ ।।
दसम गुरु होवैं जिस काला । देग तेग के धनी बिसाला ।
मचहि घोर संघर भट लरैं । तबि इहु शसत्र जुध महिं करैं ।। ४ ।।
तिनके संग सदा सुख पावैं । जस बिदतहि जग महिं नर गावैं ।
जाती मलक सुनति हरखायो । करि बंदन को सदन सिधायो ।। ५ ।।
करि शनान पावन हुइ गयो । कुश पर पौढि प्रान तजि दयो ।
सुनि सतिगुर बहु मनुज पठाए । दाहन को चंदन समुदाए ।। ६ ।।
जव,तिल,घ्रित आदिक सभि ल्याइ । रची चिता पिखि पावन थाइं ।
दया राम सभि कीनि बिधान । कर्यो भसम तन पिता सु ठानि ।। ७ ।।
गुरपुरि को पहुंच्यो सुख पाइ । गुर की महिंमा अलख लखाइ ।
जथा जोग जो क्रिया पिछारी । क्रम क्रम ते तिस नंद सुधारी ।। ८ ।।
दिन त्रौदस जबि ही बिति गए । भोजन दिजनि ब्रिंद[1] को दए ।
जाती मलक हेतु वथु आन । सेजादिक दीनी करि दान ।। ९ ।।
तबि सतिगुर भेजी दसतार । पठ्यो दुशाला मेल उदार ।
अधिक दरब[2] तिह संग पठायो । दया राम को बहु हरिखायो ।। १० ।।

---

1. समूह ब्राह्मण 2. धन



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शोक दूर करि आवन लाग्यो। सतिगुर निकटि रहै रसु पाग्यो।
पुन केतिक दिन भए बितीत। निज तन तजन बिचारति चीत॥ ११॥
गुरता गादी श्री हरिराइ। चहैं कितिक दिन आगे पाइ।
जिसते को नहिं करहि बिखेरा। अलप बैस पौत्रा निज हेरा॥ १२॥
इक तौ धीरमल बड खोटा। नहिं त्रिसकारहि लखि करि छोटा।
जिम दातू सुत लिय पख धारे। तथा मसंद न लेहि बिगारे॥ १३॥
सिख संगति सभि देश बुलाइ। सभिहिनि मैं बिठाइ हरिराइ।
गुरता गादी देनी करैं। इम बिचार श्री सतिगुर धरैं॥ १४॥
दियो हुकम जे निकटि लिखारी। हैं मसंद गन देश मझारी।
लिखहु हुकमनामे सभि आवैं। संग संगतां अपने ल्यावैं॥ १५॥
सुनि आज्ञा कहु देश बिदेश। लिखि लिख भेजे चार अशेष।
हुते दूर से प्रथम बुलाए। धनी मसंद बिलंद सवाए॥ १६॥
जाइ हुकमनामे जबि दए। पठि मसंद सभि त्यारी कए।
ले करि संग संगतां ब्रिंद। अरु ले गुर की कार बिलंद॥ १७॥
क्रम करि पंथ उलंघति आए। कीरत पुरि गुर जहां सहाए।
ब्रिंद अकोरनि अरपैं आगे। नंम्री होइ* चरन गुर लागे॥ १८॥
बलख बुखारा आदिक पुरि गन। पशचम दिशि ते पहुंचे नर गन।
संग मसंद लए मुलतानी। सिख गन अनिक उपाइन आनी॥ १९॥
दक्खण दिशि ते आदि उजैन। चलि पहुंचे गुर दरशन लैन।
अंग बंग आदिक जे देश। कौन गनहि पहुंचे सु अशेष॥ २०॥
वसतु अनूठी मोल बडेरी। दुरलभ ते आए तिस बेरी।
अनिक प्रकारन बसत्र अजाइब। अरपहिं दरस करहिं गुर साहिब॥ २१॥
तिम पूरब के चलि करि आए। ढाका आदि देश समुदाए।
पुरि पटणे आदिक सिख जेई। लए उपाइन पहुंचे तेई॥ २२॥
तिम परबत बासी चलि आए। सतिगुर हरि गुबिंद दरसाए।
कीरति पुरि के चहुंदिश डेरे। आनि संगतां कीनि घनेरे॥ २३॥
बेदी, त्रेहण, भल्ले जेई। अनुसारी गुर पहुंचे तेई।
जंगल देश संगतां संग। भगतू गयो रिदै गुर रंग॥ २४॥
तिम भाई बहिलो चलि आयो। संग अनेक गुरु सिख ल्यायो।

* विनम्र होकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इत्तयादिक जे ज्ञानी भए। गुर ते मंजी पद को लए ॥ २५ ॥
सो सभि आए गुर के द्वारे। भई भीर वहु पुरि परवारे।
दरशन करहिं अकोर चढ़ावैं। मन बांछति सिख संगति पावैं ॥ २६ ॥
मद्र देश लवपुरि ते आदि। सिख आए देखे अहिलादि।
प्रथम गुरनि ते मंजी लहे। पंचहुं ते जीवति जे रहे ॥ २७ ॥
सो सभि आए चितवति ऐसे। गुरु नै करे एकठे कैसे ?
किनहूं क्योंहुं न जानी बात। सुनि सुनि हुकम पहुंचि अवदात ॥ २८ ॥

देश दुआबा पुनहिं पुआध। पुरि ग्रामनि ते सुनि सिख साथ।
आनि पहूंचे सतिगुर पुरि मैं। पुरवहिं करहिं कामना उर मैं ॥ २९ ॥
पुन सतिगुर दासी समुझाई। पठी नुखा ढिग सगल सुनाई।
धीरमल्ल निज सुत को आनहु। मिलहि सभिनि सों हुकम बखानहु ॥ ३० ॥
सुनि गमनी तबि पुरि करतार। सुत सों, जाइ मिलि हित धारि।
धीरमल्ल को बहु समुझायो। अबि गमनहु तुझ गुरु बुलायो ॥ ३१ ॥
श्री हरिराइ अनुज[1] है तेरो। तिस पर गुर को रुख बहुतेरो।
लखी जाइ अरु बिदती बात। तिसको गुरता दें अवदात ॥ ३२ ॥

तूं जे निकटि रहैं अनुसारी। जेष्ट भ्रात महां मति धारी।
उचित अहैं गादी पर बैठनि। सिख संगति सभि कीनि इकैठनि ॥ ३३ ॥

पृथक रहनि तुझ क्यों बनि आवै। गुर ते गुरता क्यों नहिं पावैं ?।
इत्यादिक समुझाइ घनेरा। धीरमल्ल सुनि करि तिस बेरा ॥ ३४ ॥
मो ढिग अहै ग्रंथ बडिआई। तिसी जोर ल्यों गुरता पाई।
अहै बडिन की बडी निशानी। सिख संगति अस को नहिं मानी ॥ ३५ ॥
रह्यो प्रथम ही प्रिथक इसी ते। ले न सकै को ग्रंथ जिसी ते।
तुरकेशुर[2] सों मम बनि आई। पुरि राखौं असवार चढ़ाई ॥ ३६ ॥
देउं नौकरी बिगरै नांही। सुख सों वसौं सदा पुरि मांही।
इम सुनि पुन नेती समुझायो। तूं बुधिवान करहिं मन भायो ॥ ३७ ॥
तऊ बिचार हेरि मन मांही। बिगरहि कहां गए गुर पाही।
ग्रंथ न छीनहिं त्रास जि धरिहो। नहिं निज संग लिजावन करिहो ॥ ३८ ॥
जे गुर क्रिपा तोहि पर धारहिं। गुरता गादी पर बैठारहिं।
बनहि बात तौ सभि बिधि तेरी। जित कित पूजा होइ घनेरी ॥ ३९ ॥

1. छोटा भाई 2. बादशाह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जे तुव अनुज पाइ बडिआई। तऊ भली जानहु मन भाई।
तोहि चचे जे गुरुता पावहिं। रिसहिं गुरू तौ दुहि न बिठावहिं ।। ४० ।।

यांते समुझि चलौ गुर पास। अपना भला करो निरजास।
अनगन संगति तहिं चलि आई। निकटि पितामे लेहु पुजाई ।। ४१ ।।

फेर न फेरि सकैगो कोऊ। अबि जे हेरि लेहिंगे जोऊ।
गादी देहिं किधौं नहि देहिं। निज पुजवावन बैठि करेहिं ।। ४२ ।।

इस सुनि करि होयहु तबि त्यार। भई सकार भयो असवार।
तूरन मग चलि आइ पहूंचा। जहां बिराजहि सतिगुर ऊचा ।। ४३ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अषटम रासे **'संगत मसंद अगवन प्रसंग'** बरननं नाम पंचासती अंशु ।। ५० ।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५१

# धीर मल्ल को अपमान

**दोहरा**

श्री हरिगोविंद निकटि ह्वै धीरमल्ल कर बंदि।
वंदन करि अरविंद पद बैठ्यो मान बिलंद ॥ १ ॥

**चौपई**

सतिगुर कह्यो कुशल सों अहैं ? पुरि करतार रहनि शुभ चहैं ?।
हाथ जोरि कर गिरा[1] बखानी। तुमरे पुरि की रच्छा ठानी ॥ २ ॥
करि कै संधि शाहु कै संग। रिस निवार करि राख्यो रंग।
सुनति कपट की बात बडेरी। आछो कर्यो ! कह्यो तिस बेरी ॥ ३ ॥
डेरा करि तवि निसा बिताई। हुतो फाग होरी नियराई।
नेरे पुरि ग्रामन को मेला। आयो दरशन करनि सुहेला ॥ ४ ॥
गुर की कार कितिक ले आए। ढिग ढिग को मेला समुदाए।
खेलति फाग संगतां सारी। रंग, गुलाल, अंबीरनि डारी ॥ ५ ॥
गावहिं शबद अनंद बिलंदै। सतिगुरु को सथान दरबंदै।
श्री हरिगोविंद आज्ञा दीनि। पूरनमाशी महिं दिन तीन ॥ ६ ॥
तिस दिन ह्वै है दरस हमारा। इतनै करहु मंगलाचारा।
एकम दूज रहै पुन मेला। सदन जाइं सभि फेर सुहेला ॥ ७ ॥
निकटि दूर के नर सभि रोके। सुनति मुदति गुर चहति बिलोके।
संगति बिखै मेवरो सारे। हुकम गुरु को ऊच उचारे ॥ ८ ॥
धीरमल्ल सुनिकै चितवंता। रुख नहिं करहिं गुरु भगवंता।
किसू पुत्र को गुरता दैहैं। कै मम अनुज[2] महां पद पैहै ॥ ९ ॥
कहे मात के मैं चलि आयो। संगति बिखै अनादर पायो।
पूजा अलप होइ है मेरी। ऐसी रीति लेहिं जबि हेरि ॥ १० ॥

---

1. वचन 2. छोटा भाई



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुरता देहिं त मम रहि आवै। देनी मोहू कउ बनि आवै।
बडे पुत्र को पुत्र बडेरो। बिदत बात सभ लखहिं घनेरो॥ ११॥
तऊ रचौं मैं कुछ चतुराई। जिस ते संगति लखहि बडाई।
प्रथम पितामे ते पुजवावौं। थिरि मंजी पर हुइ दिखरावौं॥ १२॥
गुरु अछत जे लेऊं अकोर। पिखि करि सिख बंदहिं करि जोरि।
सदा रहैंगे पुन अनुसारी। पूजा करहिं सदीव हमारी॥ १३॥
गुर निकसैंगे परसों वाहरि। मैं इह प्राति थिरौं बिच ज़ाहिर।
ब्रिंद उपाइन[1] आनी सभै। हेरि हेरि अरपहिंगे तबै॥ १४॥
गुर सम बत कै देउं दिखाई। जिस ते मानति रहैं सदाई।
संग मसंदनि मसलत कीनि[2]। तिनहुं सराह्यो तूं मतिपीन।। १५॥
सदा संग तिसके सो रहैं। गुर बिगरहि तिमही नित कहै।
लाखहुं संगति अबि चलि आई। देशनि के मसंद समुदाई॥ १६॥
अबिकै देखैं तोहि प्रतापू। पुनहि भेट ले पहुंचहिं आपू।
निस मैं इम निशचै करि सोए। जागे सकल प्राति के होए॥ १७॥
मुट्ठा चमर सेवकनि दीनि। बडो पखंड रचन तबि कीनि।
बीच बज़ार फरश करिवायो। रंग अनेक बिसाल सुहायो॥ १८॥
पहिरयो आप गरे तबि जामा, बहु सूखम दीरघ अभिरामा।
कंचन दंड चमर सिर फेरैं। भूखन पहिरे दिपति घनेरैं॥ १९॥
जिगा आदि ते शोभा पाए। गयो आप जहिं फरश कराए।
दीरघ सुंदर डसि मसनंद। धर्यो एक उपधानु[4] बिलंद॥ २०॥
तिस पर बैठ्यो मोद उपाइ। चहुंदिशि दास थिरे समुदाइ।
श्री सतिगुर तुम अंतरजामी। करहिं कुशामत कहि कहि स्वामी॥ २१॥
सिर ऊपर चंदोआ बन्यो। रेशम डोरैं चहुं दिश तन्यो।
बिचरति इत उत सिख समुदाए। कर्यो बिलोकनि मेल जु आए॥ २२॥
सिक्खय ओपरे अरु अनुजाने। गुर गुर' करति बंदना ठाने।
निज डोरे महिं तबि जाइ। कितिक उपाइन ल्याए धाइ॥ २३॥
खरो मेवरो भयो अगारी। लै धन को अरदास उचारी।
इक को दिखि दूसर लै आयो। अरपहि गुर के सम लखि पायो॥ २४॥
देखा देखी बहु सिख आए। अरपन कर्यो दरब समुदाए।
चहुंदिशि महिं नर परवारे। इक आवैं इक जाहिं सिधारे॥ २५॥

---

1. भेंट 2 विचार विमर्श 3. चौर 4. सिरहाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सवाजाम दिन जबि लौ चर्यो। बैठ्यो आप पुजावनि कर्यो।
संग मसंद जि दरव संभारैं। महिमा सिक्खयनि महिं बिसतारैं ॥ २६ ॥
सतिगुर देहिं इसै गुरिआई। वहु सनमानति लीनि बुलाई।
वडे पुत्र को पुत्र वडेरो। गुन गन सहित उचित इहु हेरो ॥ २७ ॥
पूजनीय सभि जग को जान्यो। निज पाछै यांते गुर ठान्यो।
सुनि सिख जे अनजान महाने। अरपहिं धन को बंदन ठाने ॥ २८ ॥
सवाजाम थिर ह्वै पुन गयो। खान पान सभि ठानति भयो।
करि बिसराम दुपहरि ढर्यो। निकटि गुरु किन जाइ उचर्यो ॥ २९ ॥
धीरमल मंजी को लाइ। गुरिआई को तौर बनाइ।
बैठि प्राति ते बीच बज़ार। पुजवायो, धन चढ्यो उदार ॥ ३० ॥
सिक्ख सैंकरे थिर भे पास। लेहिं उपाइन करि अरदास।
सवा जाम लगि मेला रह्यो। 'इह गुर हुइ' सभिहिनि महिं कह्यो ॥ ३१ ॥
स्याने सिक्ख मसंद जि स्याने। सो नहिं गए हास को ठाने।
तीनहुं पुत्र सु सौ पौत्रे दोइ। जिस गुर थापहिं सो गुर होइ ॥ ३२ ॥
बिन थापहिं हम मानें नांही। नहिं पहुंचे इम लखि मन मांही।
सुनि सतिगुर कै होयो छोभ। जान्यो धीरमल्ल वड लोभ ॥ ३३ ॥
बे मिरजाद करति इहु रह्यो। श्री गुर ग्रंथ कपट करि लह्यो।
अबहि हकारयो कारन और। बन गुर बैठ्यो है इस ठौर ॥ ३४ ॥
निकटि दास को कह्यो सुनाइ। अबि के जे बैठहि किस थाइं।
करहु निरदार देहु उठाइ। पुरि ते वहिर करहु सहिसाइ ॥ ३५ ॥
इम दासनि सों हुकम बखाना। रहयो जाम दिन भे सवधाना।
धीरमल प्राती जिम बैसा। सजि तन बस बनायहु तैसा ॥ ३६ ॥
तिसी थान पर बैठ्यो आनि। वड मसनंद डसावनि थान।
निज पर चमर फिरावन करिही। लोभ दरब को दीरघ धरिही ॥ ३७ ॥
रिदै प्रमोदति मैं गुर बन्यो। सभि संगति महिं जे अबि मनयो।
बहुर न मेरी पूजा जाइ। चहुंदिशि के सिख पिखि समुदाइ ॥ ३८ ॥
इसते आदिक रिदै बिचारति। अनिक बिधिन के दंभ पसारति।
इतने महिं सतिगुर के दास। बैठ्यो सुनि पहुंचे तिस पास ॥ ३९ ॥
संग मसंद अपर नर जेई। दई गार अरु मारे तेई।
केतिक की पगीआ गिर परी। कितिक पलाइ[3] गए तिस घरी ॥ ४० ॥

1. दु:ख 2. जल्दी 3. दौड़ गए

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छीन चमर सो दयो बगाइ। दूर कर्यो उपधानु उठाइ।
तरजि तरजि बहु बरजन करे। मार कितिक जन के कर धरे॥ ४१॥

सतिगुर अछत, आप बन वैठे। ठगहु सिक्ख हित दरब इकैठे।
बहुर जि बैठहु करहु पखंड। मुशकैं बांधि देहिं बहु दंड॥ ४२॥

हुकम गुरु को मिटि है नांही। संकट सहहु कैद के मांही।
इत्तयादिक बहु करि अपमाना। धीरमल सों बहुर बखाना॥ ४३॥

जे निज भला चहो चढ़ि जावहु। नतु अपमान कषट को पावहु।
हुकम गुरू को थिर नहिं रहीयहि। अबि ही उठि मारग को लहीयहि॥ ४४॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अषटम रासे **'धीरमल्ल को अपमान प्रसंग'** बरननं नाम एक पंचासनी अंशु॥ ५१॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५२

# होली खेलनि प्रसंग

**दोहरा**

अधिक निरादर पाइ कै धीरमल्ल दुख हीय[1]।
सभि संगति मैं बिदत भे वेम्रियाद जिम कीय ॥ १ ॥

**चौपई**

सुनि करि संगति महिं सिक्ख स्याने। प्रिथीए सम कै कपट महाने।
अपनी जानि छिमा गुर धरैं। इह तिन ते कुछ त्रास न करैं ॥ २ ॥
पाती[2] लिखति रिपुन सों रह्यो। गुर प्रताप को नैकु न लह्यो।
बहुर संग नहिं आवनि कीना। ग्रंथ दुराइ सदन महिं लीना ॥ ३ ॥
तऊ न सतिगुर रिस उर भए। अपनो जानि छिमा करि गए।
अबि क्यों हूं करि निकटि हकारा। निश डर ह्वै पखंड इह धारा ॥ ४ ॥
को जानै गुर कहां रज़ाइ। कहां करहिं नहिं जानी जाइ।
इत्तयादिक सभि बिखै ब्रितंत। कहैं सुनैं बहु सिक्ख मिलंति ॥ ५ ॥
धीरमल्ल इम लखि अपमाना। चिंता सलिता[3] बह्यो महाना।
नहिं अंतर पुन प्रविशयो आइ। वहिर जाइ हय लीनि मंगाइ ॥ ६ ॥
चढ़ि एकल ही तुरत पयाना। खरो जाइ कोसकु इक थाना।
सरब समाज हकारन कीनि। पछुतावति तहिं मेल सु लीनि ॥ ७ ॥
दुखी होइ भा सलिता पार। गिनति अनगन मनहि मझार।
मैं जननी भाखे चलि आयो। जिस ते महां अनादर पायो ॥ ८ ॥
पूरब को जानति को नाहीं। भयो कुजसु अबि सभि दिश मांही।
दूर दूर के हुते मसंद। संग संगतां जिन के ब्रिंद ॥ ९ ॥
भा त्रिसकार सकल ने जाना। बिगरि गयो मम काज महाना।
जिस ते पूजा होइ न मेरी। दियो निकारि कहैं इस बेरी ॥ १० ॥

---

1. हृदय 2. डर 3. पत्र 4. नदी



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इत्तयादिक तिस को पछुतावा। कहों कहां लगि जो दुख पावा।
रिदै बिसूरत पुरि करतार। बह्यो जाइ बहु चिंत मझार ॥ ११ ॥
कीरतपुरि महिं लाखहुं दास। संग मसंद संगतां रास।
धीरमल को कपट कुढाली। सभि महिं बिदती किय जु कुचाली ॥ १२ ॥
तीनहुं सतिगुरु के सुत धीर। गुन गन सहित सु लाइक बीर।
सभि श्रीगुर की दिशा निहारैं। सेवा बिखै नंम्रता धारैं ॥ १३ ॥
देखहिं गुरु कहां क्रित करैं। रिदै प्रतीखति संसै धरैं।
सतिगुर को रुख जान्यो परै। लघु पौत्रे पर करुन ढरैं ॥ १४ ॥
इह बड ढीठ आप गुर बन्यो। बहुर निकटिं कुछ नांहिन गिन्यो।
प्रिथीए सम अबि भयो निराला। रह्यो न मेल गुतु घर नाला ॥ १५ ॥
जानी परै बिगार उठैहै। गुर संग द्वैत अधिक उपजैहै।
तुरकन सों मेली बहु बन्यो। पद ऊचो सु मनोरथ हन्यो ॥ १६ ॥
इत्तयादिक बहु आपस मांही। सिक्ख मसंद कहैं धिक तांही।
इम दिन दोनहु बहुर बिताए। खेलति होरी मिलि हुलसाए ॥ १७ ॥
गावैं शबद मोद चहुं कोद[1]। बरसति रंग, गुलाल पयोद।
फाग दयोस को कीनसि त्यारी। निकसन कीनि वहिर गुर भारी ॥ १८ ॥
फरश बिसाल करायहु चारू। सुभट मिले सभि आयुध[2] धारू।
पुन सुंदर मसनंद बिलंद। करी डसावन रंग अमंद ॥ १९ ॥
पुन उपधानु महानो आना। गिरदा बसत्र बरण बन नाना।
सभा बिसाल राखि मैदाना। फूलन माला रचति सुजाना ॥ २० ॥
पोशिष बिसद[3] महिद बपु पाई। निकसे चाचर[4] हेतु गुसाईं।
कंचन दंड[5] धरे जिन हाथ। दिस दांएं आगे कुछ नाथ ॥ २१ ॥
सुंदर चमर ढुरावति पाछे। गह्यो हाथ भाहे कहु आछे।
मंद मंद मुसकावति आए। कमल बिलोचन को बिकसाए ॥ २२ ॥
सवा बिलशत[6] सभिनि ते ऊचे। बोलति दिपत दसन[7] दुति सूचे।
भुजदंडनि जनु सुंड प्रचंडे। जिन ते खंड खंड रिपु दंडे ॥ २३ ॥
मुकता माल बिसाल सुहाई। बीच बैडूरज[8] बहु छबि पाई।
आयुध बिना आइ थिर भए। चहुंदिशि ते नंम्री थिर थिए ॥ २४ ॥
सुनि सुनि सुधि सिख ब्रिंद मसंद। आए धरे अकोर बिलंद।
अनिक संगतां देशनि देश। बहु मोली ले वसतु अशेष ॥ २५ ॥

---

1. बादल। 2. हथियार 3. सफेद पोशाक 4. होली 5. सोने की छड़ी 6. सवा बालिश्त 7. दाँतों की शोभा 8. एक प्रकार की मणि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अरन बरण[1] अरु पीत बिसाले। केतिक पिचकारी जुति चाले।
अलता ब्रिंद गुलाल अंबीर। ले करि पहुंचति भे सिख तीर ॥ २६ ॥
प्रथमै चरक सरोजन बंदहिं। आगे धरहिं अकोर बिलंदहिं।
उड़ति गुलाल घटा जनु होई। रंग, बूंद बरखति है सोई ॥ २७ ॥
जनु संध्या मिलिबे कहु आई। हरि गोविंद मुख, चंद सुहाई।
मिल्यो गुलाब गुलाल उडंता। खेलति होरी श्री जगकंता ॥ २८ ॥
छुटति अंबरीन मूठ बडेरी। दुहिं दिशि ह्वै करि हेलो गेरी।
होली खेल छुटति पिचकारी। भरि भरि मूठ सामुहे डारी ॥ २९ ॥
ब्रिंद मसंद संगतां संग। खेलति फाग डारि वहु रंग।
देखति सभि मन मुदति बिसाला। पर्यो वदन पर जम्यो गुलाला ॥ ३० ॥
सभि के बरण लाल हुइ गए। चित्रति बसत्र बचित्रति भए।
इम सतिगुर वहु करे बिलासा। सिक्ख मसंद मिले गन दासा ॥ ३१ ॥
रिदे मुदिति सभि के हुइ रहे। कुशल प्रशन सभिहिनि सौं कहे।
ब्रिंद मसंद जि सिख परधाने। कर जोरति निज श्रेय बखाने ॥ ३२ ॥
महां दिवान लग्यो दुति पावति। शबद रबाबी सुंदर गावति।
गुर सिक्खन को मेल सुहेला। दुहि लोकन को जहिं मुद मेला ॥ ३३ ॥
दरशन देखि देखि बलिहारी। अधिक प्रेम ते सुखद उदारी।
सवापहिर सतिगुर तहिं थिरे। दास अनेक उधारनि करे ॥ ३४ ॥
कृपा दृष्टि दासनि पर डारति। बहुर उठनि की इच्छा धारति।
पूर कामना करि सभि केरी। अंतर सदन गए तिस बेरी ॥ ३५ ॥
करि शनान पोशिष ले और। बैठति भे सोढी सिरमौर।
खान पान करि निसा बिताई। जाम रही जागे गोसाईं ॥ ३६ ॥
एक दिवस पुन अवर बितायो। तिथी दूज को समियै आयो।
बीच बज़ार सथंडल[2] ऊचे। रचहु फरश दीरघ नर मूचे ॥ ३७ ॥
तनहु चानणी चारहुं कौन। तरे चंदोवा बांधहु तौन।
सरब समाज सु चारू नवीन। त्यारी करहु बिलम ते हीन ॥ ३८ ॥
इस प्रकार दासनि के साथ। हुकम बखान्यो जग गुर नाथ।
करहु सुनावनि सभि के डेरे। आइ संपूरन सभा सु हेरे ॥ ३९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अषटम रासे **'होली खेलनि प्रसंग'** बरननं नाम दोइ पंचासती अंशु ॥ ५२ ॥

---

1. लाल रंग 2. चबूतरे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५३

# श्री हरि राइ गुरता देन प्रसंग

**दोहरा**

सुनिकै फिर्यो नकीब तबि सिखसंगत के मांहि।
राइजोध कौ सुध दई, अपर सभिनि के पाहि ॥ १ ॥

**चौपई**

आज लगहि गुर को दरबार। सगरे आवहु सभा मझार।
राउ रंग संगति के सारे। आइ लहैं दरशन सुख सारे ॥ २ ॥
कीरतपुरि के चहुंदिशि डेरे। गन मसंद जुति सिक्खनि केरे।
सभिहिनि को सुध कही पुकार। सुनि पहुंचहु गुर के दरबार ॥ ३ ॥
बीच बज़ार सथंडल चारू। ऊपर फरश भयो दिशि चारू।
सेतु चांदनी करी लगावनि। तन्यो बितान[2] महान सुहावन ॥ ४ ॥
झालर ज़री झलकती झूलति। कुसम ज़री के जथा प्रफूलति।
रेशम डोरन ते बहु तन्यो। बहुत मोल को सुंदर बन्यो ॥ ५ ॥
दिपति अमंद दीह मसलंद[3]। धरि ऊपर उपधानु बिलंद।
लग्यो मोल बहु शोभति आछे। कारीगरनि कीनि मन बांछे ॥ ६ ॥
भयो त्यार सुध जवैं सुनाई। उठि प्रभु गमन कर्यो तिस थाईं।
श्री हरिराइ संग निज लीनि। म्रिदुल सरूप सु बैस नवीन ॥ ७ ॥
सूरजमल श्री तेग बहादर। करे हकारन तिहठां सादर।
अणीराइ जुति सभि चलि आए। निज निज दास संग समुदाए ॥ ८ ॥
भाना साहिब ब्रिध की अंश। जो होए सिक्खी अवितंश।
लेकरि साथ नाथ तहिं गए। बंदति गादी बैठति भए ॥ ९ ॥
चमर चारु चंचल चतुराई। ढोरति हंसनि समता पाई।
सूरज मुखी लीनि निज खरे। जनु सूरज दूसर बिधि करे ॥ १० ॥

---

1. ऊँची आवाज़ से यशगान करने वाला 2. चंदोआ 3. मसनंद, गद्दी



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राइजोध तबि चलिकरि आयहु। सुभट समूहनि को संग ल्यायो।
चरन सरोजनि को करि नमो। निकटि होइ बैठ्यो तिह समो ॥ ११ ॥
गुर घर के जोधा गन भारे। सभि चलि आए आयुध धारे।
जो जिस देश मसंद बिलंद। संग संगतां लै करि ब्रिंद ॥ १२ ॥
पहुंचति भे सभि सभा मझारे। करि करि नमो सु दरस निहारे।
पुरि के पंच जि नर परधान। सरब हकारे करि सनमान ॥ १३ ॥
सुंदर परमानंद अनंदति। बैठे आइ गुरु को वंदति।
चोबदार ले कंचन आसे[1]। खरे भए गन अग्रय पासे ॥ १४ ॥
चहुंदिशि महिं दिवान भरि गयो। सभि समाज तहिं आवति भयो।
शबद रबाबी इक दिशि गावैं। चारन भाट कवित्त सुनावैं ॥ १५ ॥
तीनहुं पुत्र बिठाए तीर। श्री गुर हरिगोविंद बर बीर।
पैसे पंच नालियर एक। कहि मंगवायो जलधि बिबेक ॥ १६ ॥
साहिब भाने सभि विधि जानी। पठ्यो दास त्यारी निज ठानी।
केसर चंदन को घसवाइ। कलगी जिगा लई मंगवाइ ॥ १७ ॥
श्री हरिगोविंद देखि बखाना। उठहु प्रथम अबि साहिब भाना।
इम कहि आप उठे गुर पूरे। पौत्र बिलोकति मुख रूरे ॥ १८ ॥
तीन प्रदछना फिर करि दीनि। पैसे पंच नालियर लीनि।
खरे होइ धरि भेट अगारी। हाथ जोरि करि वंदन धारी ॥ १९ ॥
पुन साहिब भाने किय टीका। कौनसि कुल सोढी महिं नीका।
पुन सभि सों गुर कही सुनाइ। मम सम अबि जानहु हरिराइ ॥ २० ॥
सगल मसंदनि पिखि सुनि बैन। अदभुत् रस दे फुल्लयति नैन।
देहि अंत गुर को पहिचान्यो। जिस ते तखत देनि कौ ठान्यो ॥ २१ ॥
परमेसुर की अचरज बात। देखहु कहां भई बक्खयात।
गुरता उचितै श्री गुरदित्ता। प्रथम प्रलोक पंथ को लित्ता ॥ २२ ॥
बड पौत्रे कीनसि क्रित खोटे। मालिक तखत सभिनि ते छोटे।
तीनहुं सुत ढिग बैठे रहै। श्री हरिराइ परमपद लहै ॥ २३ ॥
इम कहि सकल मसंद सु संगति। उठे सु भेट देनि तजि पंगति।
कीनि तिलक केसर बर चंदन। हाथ जोरि करि ठानी वंदन ॥ २४ ॥
प्रथम उपाइन साहिब भाना। हीरे जड़ती जिगा महाना।
मुकता[3] गुच्छनि कलगी संग। धरी सीस पर दिपति उतंग ॥ २५ ॥

1. चोब 2. तिलक 3. मोती

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चंचल बाजी बाज़ बिसाला। अरपन करति भयो ततकाला।
ब्रिंद मसंद बिलोकनि कीनि। जथा जोग भेटनि सभि दीनि ॥ २६ ॥
धन पट भूखन चपल तुरंग। अरपि बंदहिं कर बंदि।
सतिगुर को चलिबो परलोक। यांते सभि के चित महिं शोक ॥ २७ ॥
अभिखेकन[1] पिखि श्री हरिराइ। रिदै अनंद बिलंदै पाइ।
बहुत बिचारि सोचते सोचनि। करहिं बिलोकनि जुग भवमोचन ॥ २८ ॥
तिस छिन श्री हरिराइ अगारी। लगे अंबार सु वसतु उदारी।
राइजोध तबि पंच तुरंग। दई वसतु अर कुछ धन संग ॥ २९ ॥
भगतू, बहिलो, रूपा आदि। गुर क्रित हेरि भए अहिलाद[2]।
सभिहिनि उठकरि ग्रीव निवाई। अरपि उपाइन को समुदाई ॥ ३० ॥
सभिहिनि गुर की आज्ञा माने। श्री हरिराइ गुरु सम जाने।
ततछिन जोति दिपी अधिकाई। बदन सदन दुति रह्यो सुहाई ॥ ३१ ॥
अति समरथता प्रापति भई। हतनि त्रिलोकी अरु उपजई।
इम दे करि गुरता बडिआई। श्री सतिगुरु अनंद उपाई ॥ ३२ ॥
सभि मसंद अरु संगत बिखै। गुरु बनाइ पौत्र दिशि पिखैं।
क्रिपा करति बहु प्रेम उपावैं। सभि को कहि कहि अग्र निवावैं ॥ ३३ ॥
भाट नकीब सुजसु को कहैं। दरब बिभूखन बखशिश लहैं।
धन गन दीनि रबाबी गावति। बिप्र आदि सगरे बित[3] पावति ॥ ३४ ॥
इम उतसाहि बिसाल भयो है। सपतमगुर बड तखत लियो है।
जथा जोग करि हरिगोबिंद। बिदत ब्रिंद महिं कीनि बिलंद ॥ ३५ ॥
पुन उठि करि गमने निज थान। पौत्रा संग लीनि गहि पान।
जाइ प्रवेशे शुभ घर मांहि। बैठि प्रयंक बिठाए पाहि ॥ ३६ ॥
संगनि अरु मसंद उठि चाले। सभिहिन के उर छुभति बिसाले।
सतिगुर तन त्यागन को चहा। तौ इह क्रित करी सभि महां ॥ ३७ ॥
मिलि मिलि आपस महिं बहु कहैं। लघु पौत्रे गुरता सभि लहे।
तीनो पुत्र छुछ ही रहे। जेष्ट पौत्रा कछू न लहे ॥ ३८ ॥
गुर तन तजनि बिलंब न होई। आदि कुटंब लख्यो सभि कोई।
तेज बिसाल जिनहुं बिरधायहु[4]। पीरी मीरी तख्त बनायहु ॥ ३९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अषटम रासे **'श्री हरिराइ गुरता दैन प्रसंग'** बरननं नाम तीन पंचासती अंशु ॥ ५३ ॥

---

1. तिलक देना 2. प्रसन्न 3. धन 4. बुढ़ापा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ५४

# सूरज मल्ल मरवाही प्रसंग

**दोहरा**

सुध के सुनति कुटंब सभि चिंताके बसि होइ।
बहुत बिसूरति दुखी मन विप्रै दुहि बिधि जोई॥ १॥

**चौपई**

भई छुभति उर, सुनि मरवाही। जिस को हित होयो किम नांही।
मोहि पुत्र उचिती सभि बात। धारति गुननि रिदा अवदात॥ २॥
लखि अवकाश गुरु ढिग आई। बैठि आपनी बिथा सुनाई।
मो सुत महिं क्या अवगुन जाना? जिसते राख्यो छूछ सुजाना॥ ३॥
रावर के अनुसारी सदा। मानति रह्यो हुकम जद कदा।
जिसको चित सेवा महिं रह्यो। अंत समै लौ कुछ नहिं लह्यो॥ ४॥
कहां करहिंगे रावरि पाछै। किम गुज़रान चलावैं आछै।
घर के खरच अनेक प्रकारा। अबि लौ आपि लेति सभि सारा॥ ५॥
जग गुर सभि ते अहो बडेरे। देति उपाइन लोक घनेरे।
पुत्र आपके जे इम रहैं। देखहिं नर तबि क्या जस कहैं॥ ६॥
परहिं मंद इन की गुज़रान। तब इह कहां क्रित को ठानि।
अबि लौ सीखे नहिं करिबो। पिता समरथ उदार बिचरिबो॥ ७॥
इह मालिक थे पुत्र तुमारे। सभि बिधि छूछे राखि लचारे।
कहां करहिं अबि देहु बताइ। जथा जीवका एह चलाइ॥ ८॥
पौत्रा मालिक आप बनायहु। गुरता दे करि बहु बिदतायहु।
चचे शरीकनि को मन जानहि। किम हरिराइ प्रेम को ठानहि॥ ९॥
सुनि श्री हरिगोविंद बखानी। क्यों चिंता चित कीनि महानी।
मतसर आदि त्याग उर दीजै। नहीं छोभ को मन महिं कीजै॥ १०॥

---

1. उलट 2. ईर्ष्या



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुर को सिक्ख जि सिदक कमावैं। तिन परवाहि न सभि किछ पावैं।
दुहिं लोकन को सुख को लेति। कमी न कोई रहै निकेत ॥ ११ ॥
इहु गुर के सुत सभि किछ लाइक। सकल संगतां चरन मनाइक।
इन को कहां रहै परवाहू। सरब पदारथ ह्वै घर मांहू ॥ १२ ॥
गुरता की दीरघ बडिआई। सो प्रभु के कर[1] अहै सदाई।
जो लाइक सोई इस पावै। नहिं उपाइ ते किम बनि आवै ॥ १३ ॥
सुत पौत्रे आदिक प्रिय जोइ। नहीं समरथ लेयबे कोइ।
प्रथम गुरनि को चितवैं नांही। सकल कुटंब हुतो तिम पाही ॥ १४ ॥
देख्यो उचित दास को दई। प्रिय सनबंधी किनहुं न लई।
सुनि मरवाही रिस उर भारी। करहिं बारता टारनवारी ॥ १५ ॥
इन को तन त्यागनि कौ समै। पाछै कौन मानि है हमैं।
पति पर ही हमरो भरवासा। इनते भी अबि भए निरासा ॥ १६ ॥
पति के जीवति वहिर सिधाऊं। कै अबि वसतु इन्हो ते पाऊं।
इम बिचारि चित महिं उपजाई। गुरु निकटि ते उठिकरि आई ॥ १७ ॥
निज धरमहिं सभि त्यारी कीनि। सूरजमल बुलाइ ढिग लीनि।
सुनहु पुत्र ! अबि क्यों हम काजू। करे निरास गुरु महाराजू ॥ १८ ॥
इनको तन जबि लग थिर अहै। तबिलौ इहां रहनि हम लहैं।
पुन हरिराइ मालकी लीनि। किम कुछ देइ शरीका चीन ॥ १९ ॥
बडे पौत्र पुरि करतार। छल करि लीनो सरब संभार।
तहां ग्रंथ साहिब भी राख्यो। नहीं पितामे को ढिग कांख्यो ॥ २० ॥
तुम नित निकटि रहे क्या पायो ? यांते अबै रहनि नहिं भायो।
चलहु जीवका कुछ कित करीए। इन ते आस न उर कुछ धरीए ॥ २१ ॥
इत्यादिक सुत को समुझायो। उठि चलिबो चित महिं तबि भायो।
वसतु सकट[2] पर सभि लदवाई। हम नहिं बासहिं सभिनि सुनाई ॥ २२ ॥
निज सयंदन जुरिवाइ मंगायो। चपल तुरंग पुत्रहित आयो।
दासी बहिल विखै चढ़िवाइ। सभि समाज निज संग लवाइ ॥ २३ ॥
निकसे कीरतपुरि को छोरि। दौरे दास गए गुर ओर।
निकटि होइ अरदास उचारी। करसि मात सूरज मल त्यारी ॥ २४ ॥
निकसि गए पुरि वहिर निहारे। को जाने किस थान सिधारे।
सुनि गुर हरिगोविंद तबि कह्यो। भाने साहिब को ढिग लह्यो ॥ २५ ॥

1. हाथ 2. बैल गाड़ी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गमनहु तूरन करहु बहोरन[1]। समुझावहु आनहु करि मोरन।
सुनति गयो ततछिन तहिं भाना। रोकि अगारी बाक बखाना ॥ २६ ॥

सुनहु मात! जबि लगि गुर तन है। तुमरो गमन कहुं नहिं बनि है।
एक बाक् ते सभि कुछ होइ। अस पति को सेवन शुभ जोइ ॥ २७ ॥

सूरजमल भी तिन सुत प्यारे। सभि किछ दैहैं रखैं सुखारे।
प्रिय बाकनि को कहति हमेश। सतिगुर करुना करति विशेष ॥ २८ ॥

तिन सों रूठनि नहिं बनि आवैं। भूत भविख्य जु सभि लखि पावैं।
अबहि वसहु परवार कि बीच। क्यों मानति हो रिस मन बीच ॥ २९ ॥

सुत की कुशल वंस बिरधावन। इह चित चहु पति ते करि पावन।
सभि के मन की जानहिं स्वामी। छपहि नहीं कुछ अंतरजामी ॥ ३० ॥

सुनि मरवाही बाक् बखाना। अवि सूरज मल वैस महाना।
चहियति गुरता इसको लई। को अवगुन पिखि नाहिंन दई ? ३१ ॥

लियो भ्रात बड के सुत टीका। पति पीछै वधिजाइ शरीका।
किम इह बसन देहिं निज नेरे। अबहि न प्रापति जे सुत मेरे ॥ ३२ ॥

सुनि भाने शुभ वैन बखाने। पावहु निकटि कि दूर पयाने ?
रहहु समीप करहु निज बिनै। चित बांछति सभि ही तबि बनै ॥ ३३ ॥

इत्तयादिक कहि बहु समुझाई। ल्याइ बहोरि बिनै बहु गाई।
मरवाही निज सदन सिधारी। धरी वसतु ले ले पुन सारी ॥ ३४ ॥

सूरज मल को ले संग भाना। श्री हरिगोविंद निकटि पयाना।
पहुंचि बंदना कीनि अगारी। भाने सगरी बात उचारी ॥ ३५ ॥

महांराज रावर के पाछै। प्रिथक् जीवका इह सभि बांछै।
निकटि खरे सुत ओर निहारा। श्री हरिगोविंद बाक् उचारा ॥ ३६ ॥

कहु सूरजमल! क्या चित अहै ? गुरु बनन को मन महिं चहैं ?।
हाथ जोरि थिर समुख बखाना। मैं न मनोरथ मन इम ठाना ॥ ३७ ॥

जे प्रसंनता अपनी ठानहु। मुझ को देनो उचितै जानहु।
तौ सिक्खी अपनी मुझ दीजै। गुरुता भार न सहौं लखीजै ॥ ३८ ॥

सुनति प्रसंन क्रिपानिधि होए। सो प्रसंन हुइ सुत अविलोए।
साध साध[3] तैं सभि किछ लीना। गुरता आदिक जे वधु पीना[4] ॥ ३९ ॥

---

1. जल्दी मोड़ कर लाओ 2. पुत्र को देखा 3. शाबाश 4. बड़ी वस्तुएँ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिक्खी के अधीन हैं सारी। बधहि बंसु बहु तोहि अगारी।
गुरता भी प्रापति हुई जै है। अधिक बडाई को तबि पैं है।। ४० ।।
चलहि पंथ मेरो जग भारी। सो सभि पूजा करहिं तुमारी।
किसू वसतु की कमी न होइ। अस निज बंस तोहि जग जोइ।। ४१ ।।
सिक्खी जाचन ते सभि पाई। तोहि बंस की वधहि बडाई।
गुरु पिता के सुनि करि बैन। बंदन कीनि नीच करि नैन।। ४२ ।।
सकल बाक जननी संग कहे। सुनि कछु रिस उर हानी लहे।
निशफल बाक न इनके होइं। इहु बिसवास सदा मन मोइ।। ४३ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अषटम रासे '**सूरज मल मरवाही प्रसंग**' बरननं नाम चतरपंचासती अंशु ।। ५४ ।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५५

# श्री नानकी प्रसंग

**दोहरा**

इम मरवाही धीर कुछ रही पाइ घर मांहि।
तऊ अधिक चिंता रिदै, जरी जाति सो नांहि ॥ १ ॥

**चौपई**

भूर बिसूरति बिप्प्रै होवा। छूछा अपनि पुत्र को जोवा।
गुरता लही शरीक बिचारैं। हम निरवल हुइ सो बल धारैं ॥ २ ॥
कंत शरीर कितिक दिन केरा। वधहि उताइल पीछै झेरा।
निस दिन गिनहि गटी इत्यादि। सोचति सोचनि हुइ बिसमादि ॥ ३ ॥
कहां हुती अबि क्या हुइ जै है। कंत प्रभू बिन किम सुख ऐहै।
इत्यादिक ब्रितंत मरवाही। सुनहु नानकी जिम चित चाही ॥ ४ ॥
अति चिंतातुर भई बिचारी। औचक कहां कंत क्रित कारी।
पुत्र गरीब न जानै काऊ। सदा मसत जिम सरल सुभाऊ ॥ ५ ॥
जग के चतुराई बिवहारे। कबि न आज लगि अंगीकारे।
किस मसंद सों मेल न ठाना। आवति दरब जिनहुं के पाना ॥ ६ ॥
सिख संगति को जानहि भेव। मसतक टेकहि सम गुरदेव।
नांहि त एकाकी बहु बैसे। नहिं जानहिं घर की क्रित कैसे ॥ ७ ॥
इत्यादिक बहु रिदे बिचार। गुर आवहिं जबि करनि अहार।
बैठहि तबि समीप सो आइ। चित को संकट देति सुनाइ ॥ ८ ॥
हुतो आसरा एक हमारे। क्रिपा करति बखशति सुख सारे।
किसू वसतु की चिंत न ब्यापे। सकल पदारथ दीनसि आपे ॥ ९ ॥
पीछे कहां करहि सुत मेरो। जिनहुं न जग महिं कुछ क्रित केरो।
उदासीन ब्रिति रहै इकाकी। मिलिबो मुलाकात नहिं काकी ॥ १० ॥
लखहु आप भी तांहि सुभाऊ। हेतु जीवका कारन काऊ।
छूछे छोरि चहहु तुम चाले। कहहु सु किस के लागहिं पाले ॥ ११ ॥



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दई शरीकनि को बडिआई। तिनके संग न किम बनि आई।
इक पौत्रे गुर ग्रंथ संभारा। दुती आपने थल बैठारा।। १२ ।।
श्री हरिगोविंद कहि समुझाई। चित महिं चिंता करहु न काई।
गुर सुत पूजनीय जग केरे। देहिं उपाइन सिख घनेरे।। १३ ।।
इनके आश्रित ह्वैं नर ब्रिंदा। खान पान गुज़रान बिलंदा।
बहुतनि के दाता इहु होवैं। सेवहिं सिक्ख भले निज जोवहिं ।। १४ ।।
इस बिधि बहु प्रकार समुझावैं। तऊ नानकी धीर न पावै।
निस दिन बीतैं गिनतयों गिनती। चित ते करहि गुरु नि सों विनती ।। १५ ।।
श्री नानक जी! बनहु सहाई। मम सुत को होवहि बडिआई।
अहो निमाननि के तुम मान। सदा नितानिन के बड तान।। १६ ।।
बुधि चतुराई केरि सहाइ। निज निज हित सभि करहिं उपाइ।
मम सुत सभि बातन ते हीन। मसत सुभाव न कछू प्रबीन।। १७ ।।
इम दिन केतिक जबहि बिताए। श्री हरिराइ सु गुरता पाए।
कहति नितांप्रति प्रभु के साथ। चितवि नानकी चिंता गाथ।। १८ ।।
भूर बिसूरति रिदै दुखारी। कुछ बस चलै न होति लचारी।
उर तपताइ अजोग बिचारै। अस गुर के सुत शकति न धारैं ? १९ ।।
पौत्रे सरब भांति बडिआए। रखि छूछे सभि नंद[1] बिठाए।
इक दिन महिं श्री हरिगोविंद। हित अहार के बाहु बिलंद।। २० ।।
रिदै अनंदति चलि करि आए। दीरघ दरशन दुती सुहाए।
कुंजर[2] मद बिलंद जुति जैसे। गमनति शोभा प्रापति तैसे।। २१ ।।
बैठे आसन पर शुभ थान। थार परोस्यो असन महान।
सूखम चावर अनिक प्रकारे। सूपकार[3] बुधि साथ सुधारे।। २२ ।।
मधुर, सलवण, तुरश चरपरे। पाइस आदि अहार जि करे।
पान पखारि पानि के साथ। अचवन करनि लगे जबि नाथ।। २३ ।।
लखि अवकाश नानकी आई। बैठी अभिबंदन करि सांईं।
सनै सनै गुर अचहिं अहारा। हाथ जोरि पति साथ उचारा।। २४ ।।
'सुनहुं गरीबनिवाज़! सु अरज़ी। मोहि बतावहु आपन मरज़ी।
सभि ते लघु नंदन इह मेरो। इस दिशि ते शंशै बहुतेरो।। २५ ।।
कहां भविख्यत मैं इहु करि हैं ? दुधि बिवहार एक नहिं धरि है।
कित इह जाइ बसै किस थान ? किम ठानहि अपनी गुजरान ? २६ ।।

1. पुत्र 2 हाथी 3. रसोइया 4. हाथ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दई शकति अरु दोनो नगरी। पौत्र भए मालिक वथु सगरी।
सो गरीब तुम जान्यो नांही। लघु नंदन शकति न जिस मांही ॥ २७ ॥

करहि विरोध धीरमल भारा। प्रविशनि देय न पुरि करतारा।
कीरति पुरि के सहित सु गादी। श्री हरिराइ पाइ सुख शादी ॥ २८ ॥

सूरजमल को बाक् बखाना। तिसको बरधहि बंस महाना।
गुरता भी कबहुं कि तुव दंस। पावहिगो दारिद बिध्वंस ॥ २९ ॥

मम सुत को किम देति न गुरता ? तुमरे अनुसारी नित बरता।
गन बिकार हंकार जि आदि। धरहि न कबिहुं, करहि प्रमादि ॥ ३० ॥

बिन गुरता की शकति बिहीन। मम सुत को कौ सकहि न चीन।
कौन सिख चलि करि ढिग आवै। को अरपहि भेटनि को ल्यावै ॥ ३१ ॥

मरौं बिसूरत देखति नंदन। बनहिं शरीकी सभि जग बंदन।
तिनकै सकल पदारथ आवैं। हम वैठे तिन ओर तकावैं ॥ ३२ ॥

अस सुत पर क्यों दया न धरिते। निज सम जग गुरु क्यों नहिं करते।
सुनहिं गुरु भोजन को खाहिं। चितवहिं इस भरवासा नांहि ॥ ३३ ॥

त्रिपति होइ पुन पानी लीनि। पान पखारि चुरे को कीनि।
कह्यो बाक धीरज को धारि। निज सुत सभि लाइक निरधारि ॥ ३४ ॥

बिन गुरता गुर ही सम सोइ। पूजन उचित लखहि सभि कोइ।
सुनति नानकी नैननि नीर। रुदति बोलती सतिगुर तीर ॥ ३५ ॥

गद्गद् गिरा दुखी बहु होई। परालबध हम सुख नहिं कोई।
अटलराइ सुत जियो न जानि। कहे आप के त्यागे प्रान ॥ ३६ ॥

तैसी गति कुछ जाती जाइ। तेग बहादुर अबि दुख पाइ।
मुझ समेत जिय सकहि कि नांही। कर्यो आदर सह्यो न जाही ॥ ३७ ॥

तुमरे तन त्यागनि के आगे। मरि हैं हम दोनहुं दुख पागे।
हुइ नहिं सकहिं शरीक अधीन। यांते मरिबो नीके चीनि ॥ ३८ ॥

तुम पाछे मरि हैं नहिं आछे। संध्या प्राति मरन अबि बांछे।
इत्तयादिक बहु कीनि उचारी। सुनि गुर काइल भे तिस बारी ॥ ३९ ॥

बहु परिवार जानि जंजार। नहिं समुझति इह रिदै मंझारि।
हुतो रुमाल पौंछते हाथ। सो इकठो करिकै तबि नाथ ॥ ४० ॥

झोरी बिखै डारि सो दीनि। कुछक कोप ते बोलनि कीनि।
चहति रहति जिह कहति बिसाला। सो गुरता लीजहि इस काला ॥ ४१ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हम को काइल करि तैं लीनि। संकट सहति होइ जसु पीन।
गुरता पाइ कषट को धारहिं। अनिक बखेरे उठहिं न टारहिं ॥ ४२ ॥
सहि शरीर पर बिघन अनेक। तव सुत राखहि गुरता टेक।
पुन पौत्रा तुव हुइ गुर भारी। सहहि कषट जे अनिक प्रकारी ॥ ४३ ॥
सुनति नानकी झोरी पाइ। सो रुमाल लीनो तनु लाइ।
हाथ बंधि गुर दिशि करि बंदन। निशचै कीनि होइ गुर नंदन ॥ ४४ ॥
सदन आपने बैठि जाइ। सुति सों सरब प्रसंग सुनाइ।
नहिं मन कुछ श्री तेग बहादर। इक रस ब्रिती अनादर सादर ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अषटम रासे **'श्री नानकी प्रसंग'** बरननं नाम पंचपंचासती अंशु ॥ ५५ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५६

# श्री हरि राइ बर देन प्रसंग

**दोहरा**

इस प्रकार श्री सतिगुरु दे दे करि बर सार।
कीनि बिलंद अनंद जुति अपनो सरब प्रवार ॥ १ ॥

**चौपई**

गुर तन तजिबे को बड रौरा। मिलि मिलि करहिं बैठि बहु ठौरा।
आप अछत ही सभि समुझाए। जथा जोग पद को गन पाए ॥ २ ॥
रिदा शांति बर ले करि होवा। तऊ चलनि गुर को ढिग जोवा।
पर्यो सरब परिवार खभारु। सोचति सोचन, संकट भारु ॥ ३ ॥
किस को सुध क्या होइ पिछारी। हुते समरथ लेति संभारी।
अलप बैस महिं तखत बिठायो। अपर नहीं कोऊ बडिआयो ॥ ४ ॥
शाहुसंग नहिं मेल बिखेरा। सो पुरुषारथ करहि बडेरा।
इत्तयादिक बहु रहे बिचार। निज निज तकहिं अलंब उदार ॥ ५ ॥
इक दिन नर सरूप धरि आए। बंदन गीरबान[1] समुदाए।
अगनि परोगम[2] सुरपति आदि। दरशन देखि भए अहिलादि ॥ ६ ॥
पद अरबिंद बंदना धारी। गुरु इकाकी संग उचारी।
हे प्रभु ! जग के काज सुधारे। संत उबारि दुषट गन मारे ॥ ७ ॥
महां प्रताप सहित रण घाले। मनमख दुख लहि, सिक्ख सुखाले।
अबहि सुरन को देहु अनंद। चलहु आपनी पुरी मुकंद ॥ ८ ॥
श्री हरिगोविंद तबहि उचारा। हम कीनो है पूरब त्यारा।
अबि परलोक गमन बनि आयो। गादी श्री हरिराइ बिठायो ॥ ९ ॥
कारज अपर सरब करि लीने। आनि अबहि तुम दरशन दीने।
अति सुंदर आगवन तुमारा। दैबो बर सच श्राप उदारा ॥ १० ॥

1. देवते 2. मुख्य देवते



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सफल सु पावन दरस बिसाले। करति जगत सभि की प्रतिपाले।
आश्रित सकल तुमारे अहैं। सेवति जो सु कामना लहैं॥ ११॥
सुनि सुर गन अपनी बडिआई। कह्यो म्रिजादा रखहु गुसाईं।
दई आप की बहु उचिताई। परे भीर तुम होहु सहाइ॥ १२॥
जबि कबि संकट कटे हमारे। बली बिलंद सु द्वैखी मारे।
निशकंटक करि राज बिठाए। उसतति करति भए समुदाए॥ १३॥

**सुरोवाच**

**भुजंग प्रयात छंद**

सदा देव पालो बिनै आप मानो। सहाई बनो, ब्रिंद देखीनि हानो।
महाराज! राजानि राजा-धिराजो। महां तेज धारी करो संत काजो॥ १४॥
जगंनाथ माधो सरुपं छबीला। करो लोक मैं मानवी चारु लीला।
नयो पंथ सिक्खी बिथारी मुकंदा। बिकारं बिहीना, कुबंधं निकंदा॥ १५॥
भई बुद्धि मंदं कली काल जानी। लियो वेद सारं रची चारु बानी।
पठंते सुनंते हनंते कलंका। लहैं मोख को अंतकै न अतंका[1]॥ १६॥
भए बंस बेदी बिखै संत मंता। दियो सत्तिनामू महां मंत्र जंता।
नवो खंड मांही करी कित्त मंडं। गुरु रूप होए मतं खंड खंडं॥ १७॥
अर्यो को न आगे करामात भारे। जसं चारु फैला, जपैं नाम सारें।
महां मोह सौंडी[2] रिदै काननो मैं। बडो बाक शेरं तुमारो जनों मैं॥ १८॥
कई कोट दासानि को पार कीनो। खटं रूप धारे भले पंथ दीनो।
गुरु सिक्ख कै नेर जावै न दूतं। धरै ध्यान के, होहि सो बुद्धि पूतं॥ १९॥
रिपू संग जंगं करे अंग भंगं। बिजै लीनि भारी सु धारे अतंगं।
नमो पाद कंजं, क्रिपालं सरुपं। मुकंदं, सुछंदं, अनंदं, अनूपं॥ २०॥
सदा जै सदा जै, सदा जै, तुमारी। गुरु रुप सारे नमो ह्वै हमारी।
मनो कामना पूर दासनि केरो। करो देव ब्रिंद्वान रच्छा बडेरी॥ २१॥

**दोहरा**

इम अषटक सुर सरब करि उर महिं आनंद पाइ।
दरशन परसन सरस ही गमने पुन समुदाइ॥ २२॥

**चौपई**

इक कोषठ सतिगुरु करायो। नाम पतालपुरी तिस गायो।
होंनि प्रवेश तिसी महिं चाहा। सभिहिनि को बुलाइ करि पाहा॥ २३॥

1. यम का दुःख 2. हाथी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आप जानि परलोक मझारे। जुति कुटंव सभि संग उधारे।
पूरब श्री हरिराइ समीप। वैठ्यो आनि जोध अवनीप ॥ २४ ॥
गुर घरनी दोनहुं सुनि आई। छुभित[1] रिदा अश्रुन बहाई।
ब्रिंद मसंद बिलंदै आए। सिख संगति इकठी समुदाए ॥ २५ ॥
सभि सों ऊच ऊचारि सुनायो। हम सों कहहु जथा जिस भायो।
हमरी त्यारी है परलोक। धरहु अनंद न कीजहि शोक ॥ २६ ॥
सुनति सभिनि के मन मुरझाए। शीघ्र बिलोचन जल भरि आए।
बदन सदन दुति जिम अरविंद[2]। करे प्रेम को हेरति ब्रिंद ॥ २७ ॥
बोलनि को समरथ नहिं होए। इक टक गुर सरूप कहु जोए।
थिरे हज़ारहुं तूशनि धारे। बिसमति रिदै कषट जिन भारे ॥ २८ ॥
सभि दिशि देखि बहुर गुर कह्यो। इस महिं क्या अचरज तुम लह्यो ?
सलिता सम जग को प्रवाहा। थिरहि न कोऊ सभि चलि जाहा ॥ २९ ॥
जे अनहोत होति को हेरो। उचित सोचिबे लखहु बडेरो।
इहु तौ सदा होति ही आई। करहु विचारनि थिर किह पाई ॥ ३० ॥
महां समरथ बुद्धिबल केरे। थिर्यो न जग को, भए घनेरे।
यांते कहहु सु निज निज कांखा। अंत समा हम अपनो भाखा ॥ ३१ ॥
श्री हरिराइ संग पुन कह्यो। जथाजोग करिवो जिम लह्यो।
सो तुम करहु सदा उपदेश। काटहि सिक्खयनि केर कलेश ॥ ३२ ॥
हम सम जागहु पाछलि राती। सौच शनान करहु तिस भांती।
आतम ज्ञान रिदै महिं राखनि। भगति उपासन कीजहि भाखन ॥ ३३ ॥
जिस ते हुइ मिरजाद भलेरी। सो करतूत उचित है तेरी।
अपर जि बूझनि को कुछ चाहो। मन की बात कहहु हम पाहो ॥ ३४ ॥
धरहु धीर अबि शोक न करीअहि। संगति सहित मसंद संभरीअहि।
बरतहु जथा जोग सभि संग। मम समान है तेरो अंग ॥ ३५ ॥
सुनति पितामे की शुभ बानी। श्री हरिराइ सु बिनै बखानी।
तुरक मुलखपति शत्रु हमारे। सैना कोष[3] आदि महिं भारे ॥ ३६ ॥
तिन सों कहां करहिं बख्याती ? कौन सथान बनहिं रिपु घाती।
इस पुरि बसि, कै अपर सथान। घालौं तुरकनि सों घमसान ? ॥ ३७ ॥
करौं लथेर पथेर बिसाला। परहि जंग, रिपु हतहिं कराला।
सुनति सभा सभि अदभुत भए। देखहु कहां सुमति इन थिए ॥ ३८ ॥

1. दु:खी 2. कमल 3. खज़ाना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अलप बैस वृद्धनि सम बोले। भे समरथ गुरिआई को ले।
सतिगुर पौत्रे को मुख देखि। होइ प्रसंन सु बीर परेखि।। ३९ ।।
कह्यो तबै तुम कबहुं न लरहु। शत्रुनि दिशि में शांती थरहु।
किस बिधि ते नहिं करहु बिखेरा। नहीं संभारहु बैर बडेरा।। ४० ।।
सैना दो सै दोइ हज़ार*। राखहु संग सुचेती धारि।
नहीं कदाचित रण को चाहो। भोगहु अनंद बैठि घर मांहो।। ४१ ।।
श्री हरिराइ कह्यो सुनि फेर। जे रिपु लै करि सैन घनेर।
चढ़ि आवै हम पर बल धरै। भरहि गरब ते जे लरि परै।। ४२ ।।
तबि क्या करहिं हुकम सो करो ? होइ अवश्यक रण, उर धरों।
सुनि क्रिपालु शुभ बाक् बखाना। जो तुम पर चढ़ि करहि पयाना।। ४३ ।
सो नहि आवन पावहि कैसे। निफल परहि घन धुंदहि जैसे।
ओरे सम गरिहैं मग मांही। तुम लौ प्रापति होवहिं नांही।। ४४ ।।
इह बर तुम को अनमिट जानहु। बैठे सदा अनंद को ठानहु।
सुनि करि श्री हरिराइ अनंदे। चरन पितामे के जगबंदे।। ४५ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अषटमि रासे **'श्रीहरिराइ बर देन प्रसंग'** बरननं नाम खष्ट पंचासती अंशु।। ५६।।

---

* बाई सौ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५७

# श्री गुर हरिगोविंद परलोक गमन

**दोहरा**

साहिब भाने सों कह्यो तुम निज नंदन आनि ।
श्री हरिराइ समीपि रखि सदा रहै सुख ठानि ॥ १ ॥

**चौपई**

रामदास के ग्राम मझारे । तन को त्यागहु तहां सुखारे ।
राइ जोध सों बहुर बखाना । हम पाछै अविलोक विधाना ॥ २ ॥
पुन कांगड़ को जाहु सुखारे । भोगहु परालबध तन धारे ।
अंत समै हम होहिं सहाइ । सत्तिनाम सिमरहु लिवलाइ ॥ ३ ॥
तिम ही रुपा निज घर रहै । अंत परम पद को इहु लहै ।
करहु देग गुर हित बरतावहु । सिक्खी को कमाइ सुख पावहु ॥ ४ ॥
तुम दोनहु की संतति जोई । मेली गुर घर सों नित होई ।
पहुंचहिं अनिक बार तिस देश । मिलहिं सदा सुख लहहिं अशेष ॥ ५ ॥
रुदति अधिक गुर तनुजा* आई । पित को मोह रिदै उमगाई ।
देखि तांहि को धीरज दीना । क्यों ऐसे होई मन दीना ॥ ६ ॥
सरब सुखनि को लहैं सदीव । संतति तोर वीर बड थीव ।
जसु को लेहिं रहैं गुर संग । धरहु अनंद शोक दुख भंगि ॥ ७ ॥
बिधीचंद को सुत मतिवंता । लालचंद को कहि भगवंता ।
तुव हित सुर सिंघ ग्राम मझारे । भागमल्ल शुभ सदन सुधारे ॥ ८ ॥
मूरति ग्रंथ सैंचीआं लै कै । तहिं माता जुति रहु सुख पै कै ।
परमानंद सुंदर सों कह्यो । सदन बसहु निज सभि सुख लह्यो ॥ ९ ॥
श्री गुर अमर अंस बडभागी । अपर छुटहिं तुमरे संग लागी ।
बहुर नानकी दिशि को देखि । कर्यो हुकम बिधि सकल परेखि ॥ १० ॥

---

* बेटी बीबी वीरो



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हमरी जननी केरि सथान। नाम बकाला ग्राम सु जान।
तहां बास अबि करहु सुमारे। समा उडीकहु जथा उचारे ॥ ११ ॥
सुत को सुत प्रताप जुति देखि। तव शरीर की बैस विशेख।
अनिक रंग को समां निहारिकै। पुन आवहु तन त्यागनि करिकै ॥ १२ ॥
तबि सूरजमल द्रिग जल छोरा। हाथ जोरि बोल्यो गुर ओरा।
मुझ प्रति हुकम करो जिम रहों। किह ठां जाइ बास को लहों ? १३ ॥
श्री हरिराइ समीपी होहिं। किधों अपर ही आज्ञा मोहि ?
सुनि सतिगुर सुत की दिशि हेरे। कह्यो कि जथा भाउ उर तेरे ॥ १४ ॥
तथा करहु बड बंस बधै है। फिरति घिरति गुरता को पै है।
सिख संगति महिं तुमरो बंस। होहि पूज सभ के अवतंश[1] ॥ १५ ॥
अणीराइ रहि मसत न बोले। ब्रह्मज्ञान महिं वृती अडोले।
तिम श्री तेग बहादर दोए। हाथ जोरि निंम्री सिर होए ॥ १६ ॥
पुन संगत अरु ब्रिंद मसंद। श्री हरिगोविंद कह्यो बिलंद।
मम सरुप अबि श्री हरिराइ। मम समान हुइ मोद उपाइ ॥ १७ ॥
इह सभिहिन को लेहिं संभार। करहिं उतारनि भवजल पार।
शरधा धरहिं कामना पावैं। जो तरकहिं सभि अपनि गवावैं ॥ १८ ॥
लोक परलोक दुखी सो रहैं। सुख को लेश मात्र नहिं लहैं।
सभि सुनिकरि तबि ग्रीव[2] निवाई। आप जथा आइसु फुरमाई ॥ १९ ॥
सो सभि के सिर पर हितवारी। मानहिं सादर आनंद धारी।
जिम श्री अरजन ते तुम लखैं। तिम तुम ते इन को सभि पिखैं ॥ २० ॥
सपतम गुरु सरुप इहु होए। गुरता दई तबहि ते जोए।
जिस थल दिपहि आपकी जोति। तेज प्रताप उदार उदोति ॥ २१ ॥
ब्रिंद मसंद बिलंद बखानी। सभि संगति बोली तबि बानी।
सिक्खयनि को करतब जु सार। श्री मुख ते अबि करहु उचारि ॥ २२ ॥
जिस ते परमगती को पावैं। जनम मरन संताप मिटावैं।
सुनिकै रावर को उपदेश। हति विकार सुख लहै अशेष ॥ २३ ॥
इम सुनि सभि संगति की बानी। हित अपने कर जोरि बखानी।
श्री हरिगोविंद धीर विशेष। कह्यो शबद द्वारा उपदेश ॥ २४ ॥

**मारु महला ५**

चांदना चांदन आंगन प्रभु जीउ अंतरि चांदना ॥ १ ॥
आराधना आराधन नीका, हरि हरि नामु अराधना ॥ २ ॥

---

1. शिरोमणि 2. गरदन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्यागना त्यागन नीका काम क्रोध्र लोभ त्यागना ॥ ३ ॥
मांगना मांगन नीका, हरि जसु गुरु ते मांगना ॥ ४ ॥
जागना जागन नीका, हरि कीर्त्तन महिं जागना ॥ ५ ॥
लागना लागनु नीका गुरचरणी मन लागना ॥ ६ ॥
इह विधि तिसहि प्राप्ते, जां कै मस्तक भागना ॥ ७ ॥
कहु नानक तिस सभ किछु नीका, जो प्रभु की सरणागना ॥ ८ ॥

**दोहरा**

जिस नर के बडभाग जग इह मानहि उपदेश ।
मम पद को प्रापति भले त्यागहि सकल कलेश ॥ २५ ॥

**चौपई**

सिख संगति मेरो परवारु । करहु अनंद मंगलाचारु ।
पठहु शबद सिमरहु सत्तिनामू । मैं गमनों अबि अपने धामू ॥ २६ ॥

करहु न शोक ओक महिं कोई । थिरीअहु गुरु पराइन होई ।
सो प्यारो जो कह्यो कमावै । अंत समैं मम पद को पावै ॥ २७ ॥

सदा सनेह करहि गुरबानी । पठनि सुननि ते आनंद ठानी ।
सत्तिनाम सिमरहु रंग राते । दिन प्रति प्रेम अधिक मन माते ॥ २८ ॥

इम सतिगुर कहि कै उपदेश । सभि को धीरज दीनि विशेष ।
बचन पताल पुरि जहिं कर्यो । कोठा सुंदर तहां सुधर्यो ॥ २९ ॥

चंदन संग लीपबो ठाना । सगल गंधि ते बहु चरचाना ।
कुंकम[1] अरु धनसार[2] मिलाए । सगरी कंधनि को महिकाए ॥ ३० ॥

फूल सुगंधति रचति बिसाला । लरकाई चारहुं दिशि माला ।
बहु पवित्रता करी बनाइ । पुन सगरे महिं कुशा[3] डसाइ ॥ ३१ ॥

म्रिदुल बिछौना भले करायो । म्रित कौ दीपक अधिक जगायो ।
तबि सतिगुर विच संगति सारी । क्रिपा द्रिसटि चहुंदिशि पर डारी ॥ ३२ ॥

सभि कुटंब को दीनि दिलासा । शोक न धरहु अनंद प्रकाशा ।
चहुंदिशि ते नंम्री सभि कोए । कोष्ठ बिखै प्रवेशन होए ॥ ३३ ॥

जोध रु साहिब भाणा नेरे । तिन सों हुकम कर्यो तिस वेरे ।
सपत दिवस महिं श्री हरिराइ । कोष्ठन को दर खोलहि आइ ॥ ३४ ॥

---

1. केसर 2. कपूर 3. घास

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तबि लौ नहिं समीप को आवै। जोधा गन चहुं दिशि थिरि थावैं।
निसदिन राखहिं सभि तकराई। कीरतन करहिं सुनहु मन लाई॥ ३५॥

इम कहि कोष्ठ महिं बरि गए। द्वार किवार असंजति किए।
सांकर लाइ करे दिढ़ सोए। बैठे प्रभू इकांकी होए॥ ३६॥

पदमासन कहु करिकै बैसे। सिद्ध जोग जोगी हुई जैसे।
जिम श्री क्रिशन जाइ बन मांही। जहां दूसरो लखियति नांही॥ ३७॥

करि समाधि तन त्यागि सिधारे। श्री हरिगोविंद तिसी प्रकारे।
सभि दिशि ते मन रोकन कीनि। इंद्रै गन संकोच करि लीनि॥ ३८॥

आतम रस महिं थिरे गुसाईं। जहां द्वैत को लेश न पाईं।
खषट दिवस लौ साधि समाधि। थिरे अचल ही रूप अगाध॥ ३९॥

सपतम दिन के अंम्रित वेले। तन को त्यागन कीनि सुहेले।
लाइ कंध के संग पिछारी। बैठे रहे प्रभू तिस वारी॥ ४०॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अ्रषटमि रासे **'श्री हरिगोविंद परलोक गमन प्रसंग'** बरननं नाम सपतपंचासु अंशु॥ ५७॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ५८

# श्री हरिगोविन्द जोती जोति समावन प्रसंग

**दोहरा**

वहिर खरे जोधा रहैं निसदिन महिं समुदाइ।
चहुंदिशि भजन अखंड ह्वै शवद राग जुति गाइं ॥ १ ॥

**चौपई**

चहुंदिशि कोषठ के परवारे। भई संगतां आनि हज़ारे।
भाउ सभिनि के भयो विसाला। सिमरहिं सतिगुर प्रभू क्रिपाला ॥ २ ॥
गुर आगवन सुरनि सुध पाई। ब्रह्मादिक मन मोद बढ़ाई।
गीरवान[1] सभि चढ़े बिवान। तूरन आइ थिरे असमान ॥ ३ ॥
कमलासन[2] आरुढि मराला। चंद्रचूड़[3] चढ़ि ब्रिखभ[4] विसाला।
लैकरि अपने गन समुदाया। आवति भे 'जै' शवद अलाया ॥ ४ ॥
तथा पाकशासन[5] चलि आयो। बायू बंन्ही अनंद उपायो।
द्वादश दिनकर[6] मूरति धरी। आइ निसापति[7] थिरता करी ॥ ५ ॥
पौण उणंजा, रुद्द्र इकादश। ब्रिंद अपसरां, नाचति हसि हसि।
बिद्याधर, किंनर चलि आए। गोरख आदि सिद्ध समदाए ॥ ६ ॥
करति मंगलाचार बिलंदै। गुर प्रलोक हुइ मिलति अनंदे।
जै जै कार सकल ही करंते। हित पूजन सामग्री धरते ॥ ७ ॥
इतने महिं इक महां बिमान। आयो जगमग करति महान।
मुकता की झालर लरकंती। मणि गणि जोति अधिक चमकंती ॥ ८ ॥
सींचन कीनि सुगंधि महानी। मुदित नासका जिह त्रिपतानी।
पुतली चमर झुलावहिं खरी। दीपक गन मणि दीपति खरी ॥ ९ ॥
बिच मंदर सुंदर दर करे। तिस महिं रचे सथंडल खरे।
कंचन चित्रति हीरनि संग। चमकहिं चारु कलस उतंग ॥ १० ॥
लघु लघु अहैं पताका ऊचे। जित चाहति तित जाहिं पहूचे।
बेगवंत बहु रह्यो प्रकाश। ब्रह्मादिक सुर जहिं चहुं पास ॥ ११ ॥

---

1. देवते 2. ब्रह्मा 3. शिवजी 4. बैल 5. इंद्र 6. सूर्य 7. चंद्रमा



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिस पर सतिगुर भए अरोहनि। शोभा अधिक वधी मनमोहिन।
सिंघासन इक हुतो डसायो। आसतरन[1] सुंदर बर छायो ॥ १२ ॥
दीरघ सुंदर हैं उपधानु[2]। बैठे तिस पर जाइ सुजान।
कमलासन हुइ पूरब नेरे। कुसमांजुल को छोरि घनेरे ॥ १३ ॥
कलप ब्रिच्छ की फूलनि माला। पहिराई करि प्रेम बिसाला।
तिम चंदन चरच्यो चहुं ओर। सुरगन आइ मिलेकर जोरि ॥ १४ ॥
गावति नाचति बिबुध बधूटी। भरि भरि बहु कुसमांजुल छूटी।
दीपक बार थार महिं धरे। बार बार दिखरावनि करे ॥ १५ ॥
धूप धुखाइ गंध महिकावैं। अभिखेकहिं, जै शबद सुनावैं।
शुभ आगवन आपको भयो। देवन को अनंद उपज्यो ॥ १६ ॥
जग महिं कारन कीनि घनेरे। भए सहाइक संतनि केरे।
तुरक तेज रण कर दमनाथो। लाखहुं हति करि जसु उपजायो ॥ १७ ॥
भो प्रभु ! रावरि कीरति पावन। पठहिं सुनहिं जे करहिं सुनावन।
सो नर गुर सिक्खी को पावैं। जनम मरन के कषट मिटावैं ॥ १८ ॥
श्री हरिगोविंद देखि अशेख। म्रिदु बोलति दे धीर विशेख।
सुनि सुनि अनंद सुरनि के गन को। फिरि फिरि हेरि प्रेम करि मन को ॥ १९ ॥
सघन अधिक घन लाली संग। पिखति संगतां अचरज रंग।
सभिहिनि गगन बिलोचन लाए। कौतक होति सुरन समुदाए ॥ २० ॥
श्री हरिगोविंद को प्रसथाना। हेरति नभ[3] को, सभि नर जाना।
अरुण बरण असमान महाना। भयो बिमाननि ते पहिचाना ॥ २१ ॥
जै जै ऊचे नाद बखाना। सिमरहिं सत्तिनाम सुखवाना।
पुन ऊरध को चल्यो बिमान। देवन उतसव करति सुजान ॥ २२ ॥
चलहिं चमर चारहुं दिशि चारु। अनिक प्रकार उचित महिकारु।
नाचि अपसरा गान सुनावैं। परवारति सुर संग सिधावैं ॥ २३ ॥
मंगल करति आदि कमलासन। वंदति गमनति धरहिं उपासन।
सने सने ऊरध चलि जाहीं। बिहसति बोलति अनंद उपाहीं ॥ २४ ॥
संख म्रिदंगनि की धुनि संग। गमनति करते चढ़हिं उतंग।
जै जै शब्द भनहिं वहु बारी। सभि ते गुर बिमान अगुवारी ॥ २५ ॥
जहिं लगि पहुंचन जिह सुर शकति। तहिं लौ पहुंचि सहित गुर भकति।
जहिं ते जाइ न सकहिं अगारी। तहिं ते हटि हटि बंधन धारी ॥ २६ ॥

1. आसन 2. तकिया 3. आकाश

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सादर इम ऊचे पहुंचाइ। हटनि लगे पुन सुर समुदाइ।
तेज बिसाल दिपहि गुर केरा। गमनति जाति विमान अगेरा ॥ २७ ॥
तप जन आदि लोक को छोरि। जाति वेग ते ऊरध ओर।
ब्रह्म लोक लौ ब्रह्मा संग। पुन तहिं ते प्रसथान उतंग ॥ २८ ॥
जाइ बिकुंठ मझार प्रवेशे। निज निज पुरि सुर पहुंचि अशेषे।
इस प्रकार सतिगुर निज थान। पहुंचे जोनि रुप भगवान ॥ २९ ॥
निज कीरति जग महिं बिसथार। सिक्खी मग बिदताइ उदार।
दास अनेक उधारन कीने। दुहिं लोकनि महिं सभि सुख दीने ॥ ३० ॥
सरब ब्यापी सतिगुर पूरे। जिन को ज़ाहर जगति ज़हूरे।
सिमरे हाज़र होहिं हज़ूर। चहुं चक महिं सिख इच्छा पूरि ॥ ३१ ॥
सदा भविख्यत महिं तिम रीति। होति बिदत देखहिं चित प्रीति।
मनसा पूरहिं दासन केरी। सिक्खनि करहिं सहाइ वडेरी ॥ ३२ ॥
अबि सुनीअहि गुर पाछल गाथा। श्रोता होहु सुचेती साथा।
'सपत दिवस लौ निकटि न आवहु। कोषठ द्वार न हाथ लगावहु ॥ ३३ ॥
इम कहि सतिगुर अंतर बरे। आवहु पास न बरजन करे।
सकल कुटंब सहित सभि संगति। वैठहिं दूर दूर करि पंगति ॥ ३४ ॥
खषट दिवस इस भांति गुज़ारे। सपतम प्राती चिंन्ह निहारे।
भयो अकाश अरुण[1] बहु वरण। कुछक परी सभि के धुनि करण[2] ॥ ३५ ॥
घटिका चतुर जामनी रहे। गुर प्रसथान सरब ही लहे।
कलमलाइ इत उत बहु फिरैं। कोषठ निकटि न पहुंचन परैं ॥ ३६ ॥
जोधा सनधवद्ध बहु गाढ़े। बरजहिं सभि को चहुंदिशि ठांढ़े।
सवाजाम दिन चढ़िवे तुमै। हुकम गुरु को तवि ढिग निमै ॥ ३७ ॥
श्री हरिराइ प्रथम ढिग जाइं। निज कर द्वार किवारि खुलाइं।
तिन पाछै दरसहि सभि कोइ। अपर कामना पूरन होइ ॥ ३८ ॥
इम सभि महिं बिदताइ ब्रितांत। मिलि करि वैठि करहिं बख्याति।
सवा पहिर दिन जबि चढ़ि आयो। श्री हरिराइ रिदै लखि पायो ॥ ३९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अषटम रासे **'श्री हरिगोविंद जोती जोति समावन प्रसंग'** बरननं नाम अषटपंचासती अंशु ॥ ५८ ॥

---

1. लाल 2. कान में

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५९

# श्री गुरु हरिगोविंद सरीर ससकारन प्रसंग

**दोहरा**

साहिब भाना जोध पुन, सूरज मल्ल सुजान ।
भाई रुपा आदि सिख आनि मसंद महान ।। १ ।।

**चौपई**

थिरु समीप श्री तेगबहादुर । श्री हरिराइ सभिनि महिं सादर ।
कह्यो उठहु अबि खोलहु द्वारा[1] । जिम श्री हरिगोविंद उचारा ।। २ ।।
सवाजाम अबि सपतम दिन को । करहु संभारनि गुरु बचन को ।
चतुर घटी के अंम्रित वेले । लखि लीने सभि चिंन्ह सुहेले ।। ३ ।।
सुनि शनान करि श्री हरिराइ । चीर शरीर नवीने पाइ ।
जपुजी पठि करि द्वार अगारी । हाथ जोरि तबि वंदन धारी ।। ४ ।।
अंतर ते शांकर[1] खुल्हि गई । वहिर इनहुं ते धुनि सुनि लई ।
खोल्हे द्वार किवार हटाए । लगे कंध सों गुर दरसाए ।। ५ ।।
पदमासन करि थिरे गुसाईं । लोचन मुंद्दति जोगी न्याईं ।
अंतर बरि करि जाइ निहारे । स्वास न आवत देहि मझारे । ६ ।।
जाइ तिनहु अभिबंदन करी । दियो हुकम सभि को तिस घरी ।
चंदन आदि समिग्री भारी । कीजहि त्यारी बिलम बिसारी ।। ७ ।।
श्री हरिराइ सु भाना सादर । सूरज मल्ल श्री तेग बहादुर ।
राइ जोध पुन मुक्खि मसंद । आह बिलोकैं मिलिकैं ब्रिंद ।। ८ ।।
कुश आसन पर गुर पौढ़ाए । सतद्रव[2] को सुच नीर अनाए[3] ।
मिलि बहु करिवाइसि इशनान । मुख की जति सु जियत समान ।। ९ ।।
सुंदर सूखम पटि पहिराए । नर बहु लाग बिमान बनाए ।
छादि पटंबर[4] सों पशमंबर । पाइ बहुर जरीअनि के अंबर ।। १० ।।

---

1. सांक्ल, ज़ंजीर 2. सतलुज 3. लाए 4. रेशमी कपड़े



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सभी उपबन के फूल मंगाए। करि करि माल बिसाली ल्याए।
सभि विमान के चहुंदिशि मांही। लरकावन कीनी दुति जांही ।। ११ ।।
पुष्पन सों छाद्यो तबि सारे। अनिक सुगंधनि पाइ उदारे।
शबद रबाबी गावन गावैं। मारु अर वडहंस सुनावैं ।। १२ ।।
दोनहुं गुर पतनी तबि आई। संग नगर नारी समुदाई।
सतिगुर के गुन बरनन करती। अश्रु बिलोचन ते बहु ढरती ।। १३ ।।
खुल्हे सीस पर केश बिसाले। आनि थिरी तहिं सभि इक नाले।
संगति आन हज़ारहुं खरी। इक दिश अखिल बाहिनी थिरी ।। १४ ।।
जय जय कार होति चहुंफेरे। धंन गुरु सुख देति बडेरे।
निज निज बातनि नरनि सुनावहिं। जिन महिं सतिगुर के गुन गावहिं ।। १५ ।।
इक सुनि करहिं सराहिन तबै। इम जस को भाखति मिलि सबै।
संख अनेक बजावन करहिं। बादति ब्रिंद बजहिं धुनि भरहिं ।। १६ ।।
आनि आन फूलन बरखावहिं। निकटि होइ सभि सीस निवावहिं।
भीर भूर[1] होई तिह समैं। थिरे दूर को तहिं ते नमैं ।। १७ ।।

सूरजमल श्री तेग बहादुर। राइ जोध अरु भाना सादर।
इन ते आदिक ब्रिंद मसंद। लियो उठाइ विमान बिलंद ।। १८ ।।

धन, गन कंचन पुश्प बनाए। बहु करि गेरति सो बरखाए।
श्री हरिराइ चमर गहि हाथ। करहिं ढुरावन उचिता साथि ।। १९ ।।

आगे चलति रबाबी गावति। पौड़ी लाई दरब को पावति।
बरखावति पुश्पनि करि हेम। बंदहिं कर बंदहिं हित छेम ।। २० ।।

निकटि थान पिखि जाइ उतारे। चिख चंदन की ऊचि सुधारे।
जव, तिल, घ्रित आने समुदाइ। कासट के अंबार लगाइ ।। २१ ।।

बहुर देहि तहि धरी सुधारि। सूरज मल कर लांबू धारि।
कूक मारि करि दीयो लगाइ। गुर को बिरहि शोक उपजाइ ।। २२ ।।

रुदति भए सगरे नर नारी। बहुर कपाल क्रिया तहिं धारी।
सिमरि सिमरि सद गुन सुखदाइक। रुदति सुभट ठांढे सभि पाइक[2] ।। २३ ।।
हे गुर! तुमरे बिनां हमारी। को सुध लेहि करहि प्रतिपारी।
को आयुध बिद्या सिखरावैं। को परखै बहुं दरब दिवावैं ।। २४ ।।
बहुर मसंद रुदति हैं खरे। हे प्रभु! को आदर हम करे?
जथाजोग बैठावति पास। दया करति हुइं कारज रास ।। २५ ।।

1 बहुत भीड़ 2. सेवक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तथा रुदन नारी बहु करैं। हे प्रभु कौन शकति अस धरैं ?
लाखहुं तुरकन को संघारा। आन्यो सभि परवारि सुखारा ॥ २६ ॥
गुरु रूप जोधा बल भारी। पीरी मीरी महां संभारी।
इक दिशि संगति प्रेम बिसाला। रोदति है पिखि चिख सिख जाला ॥ २७ ॥
दासी दास संबूह विरलापू। तजहिं बिलोचन ते बहु आपू।
जनु करुना रस छायो डेरा। सतिगुर बिरहु ते कषट बडेरा ॥ २८ ॥
भाना साहिब सभि समुझाए। किम नाहक तुम शोक उपाए।
दीनबंधु श्री हरिगोविंद। नित जीवति जिन शकति बिलंद ॥ २९ ॥
जो सिमरैं उर शरधा धरैं। बिदति होहिं सो दरशन करैं।
जो जाचहि, तिस देवनहारे। तिन को शोक कहां को धारे ॥ ३० ॥
यांते संगति अरु परिवार। नहिं कीजै इम शोक उदार।
अपर लोक जग के हुइ जैसे। सतिगुर नहीं जानिअहि तैसे ॥ ३१ ॥
इस बिधि कहि करि सकल हटाए। श्री हरिराइ सु प्रथम उठाए।
सूरजमल श्री तेग बहादुर। इनहुं उठाइ लियो करि सादर ॥ ३२ ॥
हित शनान सगरे तबि चाले। कहति परसपर धीर बिसाले।
करि मज्जन को लाइ दिवानि। सतिगुर शबद कीनि सभि गान ॥ ३३ ॥
पंचाम्रित[1] अरदास अलाइ। सभि संगति महिं सो बरताइ।
सभा सथल महिंपुन चलि आए। बैठि बैठि निज थान सिधाए ॥ ३४ ॥
संमत बिक्क्रम न्रिप को कहीअहि। सोलहिं सहस चेत सुदि लहीअहि।
पंचम सवाजाम दिन चरे। तनु गुर को ससकारन करे ॥ ३५ ॥
जे सिख मुखि सभिनि समुझावैं। कहि बहु भांतिनि शोक मिटावैं।
क्रिया रीति सूरज मल सारी। करति भयो बिधि जथा उचारी ॥ ३६ ॥
पुश्प चुनावन आदिक जोइ। त्रौदस दिवस बितन जबि होइ।
भोजन अनिक प्रकार कराइ। कई हज़ारन के त्रिपताइ ॥ ३७ ॥
सतिगुर हेतु दान बहु कीने। सिहजा बसत्र शसत्र को दीने।
बहु मोले गन दिए तुरंग[2]। अलंकार सुंदर सरबंग ॥ ३८ ॥
जथाजोग सभि ही करिवाइ। निज निज सदन गए समुदाइ।
राइ जोध कांगड़ को गयो। संग आपने रुपा लयो ॥ ३९ ॥
चिरंकाल के इकठे हुते। गमने सिख सेवक जित किते।
श्री हरिराइ अग्ग्र करि नमो। गुरु सुतनि सों मिलि तिह समों ॥ ४० ॥

1. हलुवा 2. घोड़े

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जहिं कहिं गए सरब जे आए। गुर कीरति बिसतीरति जाए।
धीरमल्ल सुनि नांहि न आयो। गुरू अनुज भा कुछ हरखायो ।। ४१ ।।
रिदै नानकी कीनि बिचारा। सिमर्यों बाक जु कंत उचारा।
मम सुत भी पै है वडिआई। समां प्रतिखति रहुं किस थांई ।। ४२ ।।
इहां शरीका बधहिं दुहेला। नहीं परसपर राखहिं मेला।
यांते प्रिथक् होनि भल मान। ग्राम बकाले बसन सथान ।। ४३ ।।
गुर की भी आइसु[1] तबि होई। कर्यो चहति अपने चित सोई।
सकल समाज[2] संभारनि कर्यो। सदन बिखै जेतिक धो धर्यो ।। ४४ ।।
मिल सभि सों बहु होइ दुखारी। होनि इकाकी रिदै बिचारी।
सुत को लियो आपने साथ। सिमरन करिकै जग गुरु नाथ ।। ४५ ।।
रहे हटाइ न मानी कोइ। त्यारि कराई स्यंदन जोइ।
सकटनि पर सामिग्री धरिकै। निकसि घर ते द्रिग जल भरिकै ।। ४६ ।।
सुत को चपल तुरंग चढ़ायो। कीरतिपुरि छोरनि मन भायो।
परे पंथ को, गए बकाले। तहां सदन चिनवाइ बिसाले ।। ४७ ।।
कर्यो बास तहिं समो बितावन। श्री गुरु तेग बहादर पावन।
पुत्र बधू गुजरी सुख पाइ। तीनहु बसे जाइ तिन थाइं ।। ४८ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अषटम रासे **'श्री गुर हरिगोविंद सरीर ससकारन प्रसंग'** बरननं नाम एकऊनखष्टी अंशु ।। ५९ ।।

1. आज्ञा 2. सामान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ६०

# भाई फेरु प्रसंग

**दोहरा**

साहिब भाने नर पठ्यो अपनो पुत्र हकारि ।
श्रवण नाम तिस को बहै ब्रिध के बंस उदार ।। १ ।।

**चौपई**

कीरतपुरि महिं जो चलि आयो । गुर जसु भले भाखि समुझायो ।
श्री हरिराइ बांहु पकराई । अपने निकटि रखहु सुखदाई ।। २ ।।
आप करी भाने पग नमो । गुर ते बिदा होइ तिम समो ।
पहुंचयो अपन ग्राम रमदास । केतिक समो सदन महिं बासि ।। ३ ।।
तन को त्यागि गुरु पुरि गयो । ब्रह्मज्ञान को जिह सुख भयो ।
कीरतपुरि महिं श्री हरिराइ । रहे बिराजति गुरुता पाइ ।। ४ ।।
सूरजमल रहि निकटि सदीवा । कहे पिता के करि मन नीवा ।
केतिक मास बितीते जबै । मरवाही तन त्याग्यो तबै ।। ५ ।।
जथा जोग तिह को ससकारा । करम कराइ पुत्र तबि सारा ।
दीनसि दान अधिक तिस काला । साथ दिजनि त्रिपतावति जाला ।। ६ ।।
जे नहिं आए सिक्खय मसंद । पुन सुध सुनि श्री हरिगोविंद ।
केतिक संमति[1] महिं चलि आवति । खषट मास महिं को दरसावति ।। ७ ।।
सो सभि लए अकोरनि[2] आए । भगतू, बहिलो सिख समुदाए ।
निज निज संगत को संग ल्याइ । पूजे चरन गुरु हरिराइ ।। ८ ।।
वैसाखी अरु दीपक माला । आनी मिलहिं कीरत पुरि जाला ।
मनो कामना चहैं सु पावैं । करामात कामल दरसावैं ।। ९ ।।
सूरजमल प्रापति सुख रासा । वैठहिं बिकसि भतीजे पासा ।
चहै सु पावै वसतु महाना । मिल्यो करति अपनी गुजराना ।। १० ।।

---

1. साल में 2. भेंट



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिम श्री हरिगोविंद डिग आवैं। तिम चहुंदिशि ते सिख उमडावैं।
केतिक चित महिं चितवति बाती। परखन हित अज़मत[1] वख्याती ॥ ११ ॥
करामात रतनाकर भर्यो। किम सो दुरहि भरनि जनु चर्यो।
चहुचक्कनि संसै जु अंधेरा। कर्यो दूर नहिं लागी देरा ॥ १२ ॥
भगतू रहै निकटि हित धरै। प्रेम सहित दरशन को करै।
ब्रिद्ध भयो वहु बैंस बिहाई। चहै गुरु ढिग सेव कमाई ॥ १३ ॥
बीत गयो केतिक जबि समों। रहै निकटि दरसहि करि नमो।
इक दिन हाथ जोर करि कह्यो। 'सेवा बखशो मैं चित चह्यो ॥ १४ ॥
बिन सेवा ते बैंस अकारथ। मैं न बितावौं करौं सकारथ।
निस दिन बैठ्यो भी बित जावै। सफल तिन्हों गुरसेव कमावै ॥ १५ ॥
मनको राखन सद गुर साथ। गुर सेवा महिं पग अरु हाथ।
तिन की बय[2] सकारथी होवै। जनम जनम की मल को धोवै ॥ १६ ॥
श्री हरिराइ ब्रिद्ध को देखि। हरखति करहिं बिलास बिशेख।
अबि सहेरबो चरखा चहीअहि। जिसते बिरथापन निर्बहीअहि ॥ १७ ॥
बिगसति देखि कहि बंदि हाथा। सभि हुइ रावरि मरजी साथा।
निफल न वाक् गुरु को होइ। किस हित निकसहि साचो सोइ ॥ १८ ॥
अबि सेवा निज घर की दीजै। सफल शरीर हमारो कीजै।
कह्यो गुरु सेवा सभि करी। अधिक सफलता निज तन धरी ॥ १९ ॥
सिखनि बिखैं रीति निति पावनि। रिदै मनोरथ करहु उठावन।
क्रिखी[3] करावो गुर घर केरी। कामे राखि इस सिक्ख इस बेरी ॥ २० ॥
अपर सेव लाइक नहिं तेरे। जिमीदार तुम जनम भलेरे।
या ते क्रिखि की टहिल बताई। सिख बिसाल तुम लेहु कमाई ॥ २१ ॥
सुनि भगतू कीनी पग नमो। उद्दम को धार्यो तिह समो।
ब्रिसभ[4] सु कामे करे तिआरी। नीके अविनी जाइ सुधारी ॥ २२ ॥
बीज्यो निस बासुर रखवारी। करी पकावन भली प्रकारी।
पुन कामे वाढ़नि को लाए। भोजन ले तिनके ढिग जाए ॥ २३ ॥
गुर की देग बिखै ते लेय। वहिर जाइ सभिहिनि को देय।
इक दिन ले करि आप अहार। गयो करहिं कामे जहिं कार ॥ २४ ॥
खेत डौर पर[5] सरब हकारे। पांति बिठाइ सु दीनि अहारे।
सभि हूं लै करि निज निज हाथा। हेरति बोले भगतू साथा ॥ २५ ॥

---

1. शक्ति 2. आयु 3. खेती 4. बैल 5. खेत की मेंढ पर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाई साहिब ! करहु बिचारा। घ्रित अधिक बिन आनि अहारा।
सगरे बासर कार कमावैं। बिन खाए अंधे हुइ जावैं ॥ २६ ॥

इक इक प्रति पाइआ घ्रित होइ। किरत करति महिं बल दे सोइ।
शुसक रोटका[1] दीनसि आनि। कहु भाई ! किम करि हैं खान ॥ २७ ॥

सुनि जथारथ गिरा अलाई। इत उत भगतू द्रिसटि लगाई।
निकटि जात इक तहां बपारी। लवन मिरच गुड़ आदिक धारी ॥ २८ ॥

इक कुप्पी कर महिं लरकाई। भरी हुती घ्रित सों तहिं जाई।
पिखि भगतू तिह निकटि हकारा। उरे आउ जे करहिं वपारा ॥ २९ ॥

सुनति वपारी चलि ढिग आयो। वक्खर[2] अपना तरे टिकायो।
चहो सु लेहु मोल मुझ दीजै। निज कारज तुम सारन कीजै ॥ ३० ॥

तबि भगतू इम बाक उचारा। गुर कामे इह करति अहारा।
चहैं घ्रित के संग सु खैबे। दिहु इनको धन कीजै लैबे ॥ ३१ ॥

तबि कुप्पी धरि दीनि अगारी[3]। इक पली भरी कर धारी।
सभि को दई खाइ हरखाए। लै लै घ्रित अधिक त्रिपताए ॥ ३२ ॥

कुप्पी विखे कुछक रहि गयो। बहुर वपारी गमनति भयो।
सौदा आज बेचि मैं आऊं। अगले दिवस मोल मैं पाऊं ॥ ३३ ॥

संध्या लगि फिरि कै घर गयो। किलक भीत महिं सो लखि लयो।
कुप्पी तांहि साथ लरकाई। चित महिं इम बिचारि ठहिराई ॥ ३४ ॥

तोल्यो हतो प्रथम घ्रित मेरा। भगतू लीनि जितिक तिस बेरा।
उठि प्रभाति को तोलनि करिकै। जितो लियो सो लेउ बिचरिकै ॥ ३५ ॥

इमि गिनि मन महिं सुपतयो राती। उठति भयो होई जबि प्राती।
कुप्पी तोलन हेतु उतारी। तिह मुख खोल्यो जबहि निहारी ॥ ३६ ॥

भरी हुती जेतिक तबि दीनो। गुर के सिख्यनि खाइ सु लीनो।
तितिक भरी मुख लौ तिन हेरी। रही बुद्धि बिसमाइ बडेरी ॥ ३७ ॥

इह क्या भयो न जान्यो जाइ। तहां घ्रित लीनो तिन खाइ।
हुतो अलप ही सो मैं आन्यो। भयो तितो कुछ जाइ न जान्यो ॥ ३८ ॥

रह्यो बिचारति केतिक समो। लख्यो प्रताप करति भा नमो।
भगतू निकटि गयो ततकाला। गहे चरनकहि बिनै बिसाला ॥ ३९ ॥

---

1. सूखी रोटी 2. सामग्री 3. दीवार में खूंटी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मैं रावर की शरण पहूंचा। तुम गहीर आशै मति ऊचा।
अनुराग्यो मैं त्यागयो नांही। करहु सिक्ख राखहु निज पाही ॥ ४० ॥

सुनि करि भगतू बाक् उचारा। श्री सतिगुर है पुरख उदारा।
महांराज राजन को राजा। राजति तीन लोक सिरताजा ॥ ४१ ॥

तिनके हम समान परधान। सम सैनप[1] के सुभट महान।
सतिगुर अछत न उचित हमारे। सिख बनाइ तुहि करहिं उधारे ॥ ४२ ॥

जाहु शरन अबि श्री हरिराइ। करहिं मोख निज दास बनाइ।
सुनि कर जोरति बाक् बखाना। मैं अवि इक रावर को जाना ॥ ४३ ॥

सतिगुर निकटि चलहु ले साथ। धरौं चरन कमलनि पर माथ।
कहिकरि तिन को सिक्ख बनावहु। जनम जनम को कसट मिटावहु ॥ ४४ ॥

भयो दयाल भगतू तिन काल। ले करि चल्यो आपने नाल।
जहां बिराजति श्री हरिराइ। पहुंचे, बैठे सीस निवाइ ॥ ४५ ॥

बिहस बदन ते गुरु उचारी। आवहु भाइ ! परउपकारी।
आन्यो कौन आपने संग? क्यों न अजाइब रंग्यो रंग ? ४६ ॥

तबि भगतू कर बंदि बखाना। जहां बिराजति चंद महाना।
कहां शकति परकाशहि तारा। एव जथोचित रिदै बिचारा ॥ ४७ ॥

दिहु चरनांम्रित सिक्ख करीजै। गुरमति उपदेशहु सुख दीजै।
चलि आयो ह्वै के शरधालू। तुम क्रिपाल करि देहु निहालू ॥ ४८ ॥

तबि सतिगुर बनवाइ सु जल को। करे पखारनि[2] चरन कमल को।
क्रिपा सहित हुई पाहुल दीनि। कहां नाम तुहि ? बूझन कीनि ॥ ४९ ॥

बोल्यो सुनीअहि करुना धाम ? पित राख्यो मम संगत नाम।
लवन घ्रितादि उठावनि करौं। इक दुइ ग्रामन फेरा फिरौं ॥ ५० ॥

इम फिरिते मम जीवा होइ। बिती आरबल पूरब जोइ।
सुनि बोले सतिगुर हरिराइ। अबि ते हुइ फेरु तुव नाइ ॥ ५१ ॥

फेरा करति मिल्यो हरिजन को। पर्यो शरन करि सुधा मन को।
अबि सभि तजि करि देग चलावहु। सत्तिनाम सिमरहु गुन गावहु ॥ ५२ ॥

तो पर भगतू को उपकार। इनके पग पर सिर को धारि।
जो चेले तुव बनहिं विशेष। सो मानहिं इस बंस हमेश ॥ ५३ ॥

---

1. सेनापति 2. धोना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि सतिगुर ते भयो निहाल। कदम पदम सम धरि करि भाल*।
पुन भगतू पद बंदन कीनि। भयो नाम फेरु जग चीन ॥ ५४ ॥

कार देग की लई संभालि। करिबे लग्यो अहार बिसाल।
अधिक भाउ ते सभि को देति। त्रिपतावै बहु खुशीयनि लेति ॥ ५५ ॥

अबि लगि जहिं समाधि तिस केरी। चलहि देग दिन रैनि बडेरी।
चेले अनगिन तिसके भए। अनिक थान महिं फैलति भए ॥ ५६ ॥

दसमे पातशाहु लगि जीवा। धनी बिसाल देग को थीवा।
कुछ प्रसंग आगे इस कहौं। जिस बिधि सुनि संतनि ते लहौं ॥ ५७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अषटमि '**भाई फेरु प्रसंग**' बरननं नाम कवि संतोख सिंह बिरचतायां भाखायां नाम षसटी अंशु ॥ ६० ॥

## आठवीं रासि संपूरणम्

---

* मस्तक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# नवम रासि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १

# श्री हरि राइ नित्त कर्म प्रसंग

मंगल—

सवैया

श्री पुरशोतम पूरन है, परमातम पालक, लेप न माया ।
श्री परमेशुर माधव, पावन, पोखक, प्रेंरक. पार न पाया ।
जै करता जगदीश जजे जगजीवन, जोनि बिना, जस छाया ।
श्री पति, जोति सरूप अनूपम, भूपन भूप, नमो हरिराया ॥ १ ॥
श्री मुख पंकज की सम है, जग ब्यापक होइ बनी गन बानी ।
नौ निधि दा सिधि दा शुद्धि देति, निकेत क्रिपा, सुख हेतु महानी ।
देवन के गन मानति हैं, जसु ठानति हैं, बरदाइक जानी ।
सारसुती ! कर बेणवती ! मुझ देहु मती, पद बंदन ठानी ॥ २ ॥

दोहरा

पारब्रह्म, करता पुरख, श्री नानक अवतार ।
दासन ब्रिंद अनंद दे तिन पद बंदन धारि ॥ ३ ॥
श्री अंगद दूसर गुरु दरशन ते सुख देति ।
चरन सरोजनि बंदना आनंद क्रिपा निकेत ॥ ४ ॥
अधिक वृद्ध सेवन लगे, अधिक वृद्ध करि सेव ।
बंदौं जो वृद्ध अधिक ह्वै भए जगत गुरदेव[1] ॥ ५ ॥
राम राम इक नाम है भए बिशेषन दोइ ।
राजा भगति सरूप ते चंद दास लखि सोइ ॥ ६ ॥
तांहि बान बानी इनहुं छेदति लच्छ बिकार[2] ।
नाम दोइ इक रूप जिन श्री अरजुन सुखकार ॥ ७ ॥
महाबीर, अगनी, मनहुं, अरि बन, जारति ब्रिंद ।
जोति नाम तो एक है, तन जुग हरिगोबिंद ॥ ८ ॥

---

1. गुरु अमरदास से तात्पर्य है 2. अर्जुन के तीर तथा गुरु अर्जन देव जी की वाणी विकारों को नष्ट करने वाली है



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हरी राइ सभि सुरनि को सो सरूप हरिराइ।
जग गुरता इहु अधिकता बंदौं पंकज पाइ॥ ९॥
नाम एक अरु जोति इकु इस ते परहि पछान।
कहै नाम इक बार द्वै, गुर, हरि कृशन सुजान॥ १०॥

तेग बहादुर सतिगुरु सादर सिमरे जोइ।
हादर देर बिहीन हुइ बंदौं तिन पद दोइ॥ ११॥

नाम पितामो[1] को लियो हरि पद भ्रिगपति जानि।
आगल पद पाछे कहे गोबिंद सिंह बखानि॥ १२॥

नवमी बरनौं रासि अबि, सभि सतिगुरु मनाइ।
बीसहुं पद अरबिंद को बार बार सिर न्याइ॥ १३॥

**दोहरा**

कथा गुरु हरिराइ की सुनि श्रोता सवधान।
पावन पुंन उपावती गन पापन की हान॥ १४॥
श्री सतिगुर हरिराइ जी बैठे तखत सुहाइं।
पद साचे पतिशाह को तिनही को बनिआइं॥ १५॥

**सवैया**

जामनि जाम रहे जबि, जागति, सोच करैं पुन नीर शनानैं।
गागर एक सौ एक के संग मलैं निज अंग को, सेवक आनैं।
आसन पै थिर होइ अगाध बिलोचन मूंदि समाधि को ठानैं।
आनंद रुप अनूप बिखै निज ब्रित्ति टिकाइ थिरैं इक थानैं॥ १६॥

बैठे अडोल रहैं गुर पूरन आतम ब्रह्म समाधि लगाए।
बाहर गाइक गावति हैं सत्तिनाम महातम को सुखदाए।
बादत बाजति ताल मिलावति प्रेम वधे सुनिबे चित लाए।
सेवक बैठि सुनैं समुदाइ सु वाहिगुरु मुख जापु अलाएं॥ १७॥

अंम्रितवेल[2] ते होति प्रभाति समाधि छुटै द्रिग को बिकसाएं।
चंदन कुंकम सों घनसार मिलाइ घसाइ कै सेवक ल्याएं।
भाल पै सुंदर टीको लगाइ महां दुति पाइ मनोज लजाए[3]।
सुंदर सूखम चीर शरीर तबै पहिरैं गुर अंग सजाएं॥ १८॥

1. बाबा-गुरु हरिगोविंद—का नाम ग्रहण किया है 2. प्रभात की वेला में भोर के समय 3. कामदेव लज्जित होता है

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

**कबित्त**

एक सत एक पाट* जामे को बनाइ ठाट,
सूखम अधिक अंग सुंदर सजावईं।
पाग पर जिगा लगे जबर जवाहर सों,
शोभै मुख मंडल ते कुंडल डुलावईं।
कंचन के कंकन जराऊ ज़ेव जाग रही,
फूलमाल कंठ मैं बिसाल छबि पावई।
अतर सुगंधि लाइ दीननि को बंधु,
पुन चोआ अरु चंदन ते अंग महिकावईं॥ १९॥
उठिकै चलति जबि जामेको समेटे तबि,
बाक् जो पितामे कह्यों फूल टूट जानिते।
उमर प्रयंत सोऊ नेम को निबाह्यो आप,
छोरि करि चीर नहिं कबिहूं ध्यानते।
होति ही प्रभाति आइ बैठति दिवान विखै,
बाजति रबाब सो म्रिदंग धुनि ठानिते।
सुनैं मौन ठानिते, महान सुख मानिते,
कसट गन हानिते, सु उधरैं जहान ते॥ २०॥
गुरु के दरस हेतु आइ तिह समै सिख,
देखिबे ते भगति अंकूर होइ आवई।
प्रेम सों प्रतीत करि दरसैं हजूर कोऊ,
तातकाल फल मन बांछति को पावई।
बैठे रहैं केते काल श्री गुरु क्रिपाल महां,
संगति निहाल करैं दरस दिखावईं।
दास उर भावईं अनंद उपजावईं,
बदन बिकसावईं सुछबि ते सुहावईं॥ २१॥
चरन कमल संग आरती को गावैं जबि,
कीरतन भोग ते करति अरिदास को।
सूपकार आइ कै अगारी थिर होइ पुन,
देग भई तयार करै बाकनि प्रकाश को।
आइसु ले गुरु हरिराइ की सिधारैं फेर,
आनति हकारि सिख संगति से दास को।

---

* एक सौ एक कलियों वाला जामा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लंगर मैं जाइ समुदाइ को मिलाइ करि,
भोजन को खाइं त्रिपताइं साद रास को ।। २२ ।।

जैसे उड मंडल मैं चंद्रमा बिराजै बहु,
तैसे दुति होति गन संगतां प्रवार ते ।
चौंके की म्रिजाद संग, असन पुनीत बनै,
स्वादल बिसाल होइ अनिक प्रकार ते ।
आमिख[1] न परै देग, सगरे बरज दीनि,
खैभ नहिं कोऊ गुर आइसु को धारते ।
बाबे गुरदित्ते तन त्याग कीनि जबि ही ते,
नेम धारि तबि ते रहैं सु ऐसी ढार ते ।। २३ ।।

**दोहरा**

ब्रह्मचरज की जुगति[2] महिं रहैं बिसाल क्रिपालु ।
अचि अहार करि देग ते प्रिथक होइं तिस काल ।। २४ ।।

**सवैया**

पौढि रहैं शुभ सेज पै फेर करैं सुख सैन गुरु हरिराए ।
फेर ढरे दिन ऊठति हैं तबि, आयुध[3] लेति समीप मंगाए ।
कंचन मूठ दिपै शमशेर गरे पहिरैं समशेर सुहाए ।
हीरे समूह जरे मुकता, भरि तीरनि संग निखंग[4] लगाए ।। २५ ।।

हाथ पसारन धारि कठोर, कसे कटि को घर पौर मैं आवैं ।
चंचल अंग तुरंग अरुढति जाति शिकार बिसाल कुदावैं ।
कानन[5] के पसु ब्रिंद बिहंगम आइसु दीनि नहीं तिन घावैं ।
दे करि खेद गहैं गन जीवति, ल्यावति पालन को करं लावैं ।। २६ ।।

संग चढ़ैं भट आयुध को धरि, ब्रिंद चमूं महिं राजति हैं ।
बोलति अग्ग्र नकीव चलैं बडि धुंकति दुंदभि बाजति हैं ।
कानन ते गहि जीवन को ग्रिह ल्याइ तिनै सुख साजति हैं ।
बाघ, बिलाउ, ससे, म्रिग, रोझ, झंखारनि[6] ब्रिंद जि भाजति हैं ।। २७ ।।

सूर तुरंग बभावति हैं पसु ब्रिंद हरावति धाइ गहैं ।
आनति हैं ग्रिह मैं प्रतिपालति खान को देति जितो जि चहैं ।
एकठे होइ हज़ारनि लाखनि भीर महां जिस थान रहैं ।
आप गहैं कितनेक तहां बलवान किकान पलाइ लहैं ।। २८ ।।

1. मास 2. तरीका, ढंग 3. हथियार 4. तूणीर 5. वन 6. बारह सिंगा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कानन ते पुन आइ बिराजति केतिक काल कथा करिवावैं ।
संगति संगम मैं बहु शोभति आइ रबाबी सु रागनि गावैं ।
चौर ढुरैं जुग ओर ते ऊपर, साध औ सिद्ध अनेक ही आवैं ।
मानहुं अंम्रित को बरखैं हरखैं गुरवाक सुनैं मन भावैं ॥ २९ ॥
देश बिदेशनि ते मिलि संगति ब्रिंद उपाइन ल्यावति हैं ।
आनि पिखैं सुख खान महान को प्रेम करे अरपावति हैं ।
मेवरो होहि खरो तबि अग्र करै अरदास सुनावति हैं ।
लोचन ज्यौं दल पंकज के सभि हूं पर दृष्टि चलावति हैं ॥ ३० ॥

**कबित्त**

ब्रिति है अचल चित्त, नित्त सो सिंघासन है,
सत्तिनाम छत्र झूलै सहिज सुभाइ सों ।
ब्रह्म ज्ञान सीस पै मुकट सु बिराज रह्यो,
सुजसु परमेसुर को चवर ढुराइ सो ।
आज्ञा है भगति फिरै सगरे जगत बीच,
अगतिनि गति देनि परम पसाइ सों ।
सारे सदगुन संग बाहिनी बिसाल बलि,
महाराज राज राजैं गुरु हरिराइ सो ॥ ३१ ॥

**सवैया**

सार्वभौम[1] यथा पहिरै नव पोशिश को करि त्याग पुरानी ।
त्यों प्रभु सातम रुप धर्यो इक जोति महां, सगरे जग जानी ।
सेवक कोटि निहाल करे गिनती कछु नांहि, नहीं इह छानी ।
श्री हरिराइ सहाइ सदा जम ते छुटकाइ सु दें निरबानी ॥ ३२ ॥
ज्यों इक रास को सूरज भोगिकै सयंदन त्यागि लहै थिति आदी ।
और अरुढिकै भूर अंधेर को दूर करै हुइ जीवन शादी ।
त्यों गुर सातवों बैठि शुभ्यो, दुति देवन को गुरता बर गादी ।
श्री सत्तिनाम प्रकाश धरै सुख ज्ञान को दे जग कीनि अबादी ॥ ३३ ॥
संगति को उपदेशति हैं सत्तिनाम भजो, भगती उरधारो ।
मानुखदेहि दुलंभ लहो बिशिआनि बिखै इसको नहिं हारो ।
कूर पदारथ जानि अकारथ, स्वारथ आपनो नीक बिचारो ।
ज्ञान को पाइ, निधान लहो जग, आप तरो पितरानि को तारो ॥ ३४ ॥

---

1. चक्रवर्त्ती राज

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

**दोहरा**

सुनहि मानि उपदेश जो चलहि गुरु अनुसार।
सदा सहाइक तिसी के गन बंधन दें टारि ॥ ३५ ॥

दरशन करिबे अघ* मिटैं उर उज्जल हुइ जाइ।
बचन सुनहि लहि ज्ञान को धंन गुरु हरिराइ ॥ ३६ ॥

प्रेम भगति बैराग दृड़ करनि जोग ब्रह्म ज्ञान।
बरतावति हैं जगत महिं सतिगुर क्रिपा निधान ॥ ३७ ॥

बडे भाग जिनके हुते शरन परे गुर चरन।
कोटि जनम भरमति हुते, मिटे जनम तिन मरन ॥ ३८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे अषटमि रासे **'श्री हरिराइ नित्त कर्म प्रसंग'** बरननं नाम प्रथमो अंशु ॥ १ ॥

---

* पाप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु २

# हरड़, लौंग शाह को देन प्रसंग

### निशानी छंद

शोभा श्री सतिगुरु की जग भी बिसतारे।
सरब सिद्धि नौ निद्धि जे ठांढी रहिं द्वारे।
हिंदू तुरक तरीफ करि मिलिकै हरखावैं।
रिदे करहिं जिम कामना सो तूरन पावैं ॥ १ ॥

सतिगुर दाता नाम का उपदेश द्रिडंता।
आनि आनि दरशहिं बहुत जो चहिं सु लभंता।
शाहुजहां दिल्ली बिखै वड राज कमावै।
तिसके निकटि तरीफ गुर कहि बहुत सुनावैं ॥ २ ॥

चारपुत्र तिसके भए वड दारशकोहा।
वलीग्रहिद कीनो तिसै, बहु ठानसि मोहा।
शुजामुहंमद दूसरो, है त्रिती नुरंगा।
चौथो हुतो मुरादबखश, राखे निज संगा ॥ ३ ॥

दार शकोह बिसाल सों करिकै उर द्रोहा।
नौरंग ने तिह बुरा किय मन धार्यो क्रोहा[1]।
शेर मुच्छ कतराइ कै चावर महिं पाई।
कहिकै तिस के दास को करि दगा खुलाई ॥ ४ ॥

भयो बडो बीमार तबि होइ न उपचारे[2]।
हुते नजूमि हकीम जे करि करि सभि हारे।
दिनप्रति दुरबल होति सो नहिं मिटहि बिमारी।
शाहजहां चिंता महां उर प्रीति उचारी ॥ ५ ॥

गन हकीम पतिशाहु के नहिं चल्यो उपाई।
तबि सभिहूंनि बिचारिके इम गिरा अलाई।

1. क्रोध 2. इलाज



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हरड़ आइ बडि तोल की चौदें सिरसाही ।
इक मासे को लौंग हुइ अनवावहु पाही ।। ६ ।।

इस अंतर मुछ शेर की बाहर निकसै है ।
तबहि बिमारी जाइहै जबि तिसको खै है ।
जे हकीम हिकमति महत सो सकल कहंते ।
शाहजहां सुनि कै पठे निज दास तुरंते ।। ७ ।।

जहां जहां इह उपजती तहिं लगि नर धाए ।
लौंग हरड़ एती बडी सो कहूं न पाए ।
बहुत विलाइत मैं फिरे परवत बन हेरे ।
करहिं वपार जहाज के जे फिरति घनेरे ।। ८ ।।

अवनी मंडल[1] महिं फिरे कित हाथ न आई ।
शाहजहां को होति नित अतिशै दुचिताई ।
होति वज़ीर जु शाह को गुर सिक्खन पासे ।
करामात साहिब गुरु सुनि भयो हुलासे ।। ९ ।।

श्री गुर हरिगोबिंद जी तिन संग लराई ।
करति रह्यो बहु शाह जो क्योहुं न बनिआई ।
सो तन तजि बैकुंठ गे अबि तिनको पोता ।
गुरता गादी पर टिक्यो बड अज़मति पोता[2] ।। १० ।।

अस अनमोली वसतु बड तिन ते कर आवै ।
सेवक हुइ जाचन करे कहि बिनै पठावै ।
इम वज़ीर ने सुन्यो जबि निशचै उर कीना ।
ठीक बात नीकी अहै पै है दुख हीना ।। ११ ।।

तबि वज़ीर ढिग शाह के ह्वै अरज सुनाई ।
श्री गुर हरिगोबिंद की बैठ्यो अबि थाईं ।
पोता श्री हरिराइ जी वड अजमतवंता ।
श्री गुर घर निरवैर है दीननि दुख हंता ।। १२ ।।

तिन के ढिग इहु वसतु है, जाचहु तिन पाहीं ।
बिनती जुति लिखि भेजीए तजि रिस उर मांही ।
शाहुजहां हरख्यो सुनति लिखि अरज़ पठाई ।
हम पर तुमरे बडे नित बहु करति भलाई ।। १३ ।।

---

1. भूमंडल 2. करामात का भंडार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री नानक बाबर मिले, बखशी बडिआई।
अंगद गुरु हुमाउ सों मैं सुनी भलाई।
अकबर श्री गुर अमर सों मिलि कारज सारे।
जहांगीर अरजन गुरु मिलि बचन उचारे॥ १४॥

श्री गुर हरिगोबिंद सों मम बाद[1] भयो है।
लोकनि परिकै बीच को बहु बीच[2] कियो है।
तऊ न मैं ओरक कर्यो बडि बैर पर्यो है।
अबि मेरो कारज इही बड आन पर्यो है॥ १५॥

सुत मेरो बीमार है तुम ढिग उपचारे।
दुलभ वसतु खोजी घनी नहिं पाइ उदारे।
इत्तयादिक लिखि करि पठी भेज्यो उमराऊ।
तूरन पंथ उलंघि कै कीरतपुरि थाऊं॥ १६॥

आइ कर्यो डेरा तबहि निस पुरी बिताई।
दिन अगले लागी सभा गुर बीच सुहाई।
आइ करी पद बंदना दीनसि परवाना।
कर्यो सुनावनि सकल पठि गुर के अगुवाना॥ १७॥

हरड़ एक बड तोल की चौदहि सिरसाही।
इक मासे को लौंग हुइ सो सुनि तुम पाही।
इक गज मोती भेजीए तिह देखनि चाहू।
अपर भनी बिनती बहुत सुनि गुर श्रुति मांहू॥ १८॥

सुनिकै श्री हरिराइ तबि थोरे मुसकाए।
चमकति हैं सुंदर दसन केतिक दरसाए।
बोले सभिनि सुनाइकै तुरकेशुर भारो।
इम जे प्रीति प्रतीति है तिस रिदै मझारो॥ १९॥

उचित देनि वसतू दुलभ पुन सुत बीमारी।
हुइ लचार जाचन करी शरधा उर धारी।
दारशकोह सु भलो है परमेशुर प्यारो।
संत संग अभिलाखतो परहरहि बिकारो॥ २०॥

एते कारण जानिकै तीनो मंगवाए।
कोषप[3] को आज्ञा करी आनहु इस थाएं।

---

1. झगड़ा 2. भेद, अन्तर 3. खज़ानची

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सगरी सभा दिखाईए तोलहु पुन दीजै।
शाहजहां पतिशाह को कारज इहु कीजै॥ २१॥

जाइ निकासी कोषपति आनी गुर पाही।
पूरब तोली हरड़ तबि चौदह सिरसाही।
पूरन मासे को भयो सो लौंग बिसाला।
मनहुं प्रथम ही तोलिकै लागे तरु डाला॥ २२॥

गज मोती दिपतहि बडो नहिं आन समाना।
बूझनि हित सभी सभा ने इम बाक् बखाना।
श्री गुरु जी! गुन इनहु के कहि बाक् सुनावहु।
वसतु अमोलक अदभुतं सभि बीच बतावहु॥ २३॥

श्री सतिगुर गुन तिनहु के बिच सभा बखाने।
उदर रोग जेतिक अहैं नर की छुध हाने।
पचहिं नहीं निशुठुर[1] वसतु दुख देति घनेरा।
दिवस मासकै बरस को रुज[2] टिक्यो बडेरा॥ २४॥

सो रोगी ले हाथ महु लागहिं अतिसारा।
सरब उदर ते झर परहि कुछ होइ न बारा।
जबि लगि अंतर कस ह्वै तबि लगि कर धारै।
हुइ अरोग जागहि छुधा संकट निरवारै॥ २५॥

तजहि हाथते, तिह समै अतिसार मिटंते।
जबहि धनंतर निकसिओ जल निधी मथंते।
इसी जाति की हरड़ कर आनी निज साथा।
अपर जलउका रुधरपा गहि दूसर हाथा॥ २६॥

जग महिं रोग अनेक जे हैं मूल सि जोई।
उदर रुधिर ते उपजते तिनके हित सोई।
रुज की जर द्वै हरन को दोनहुं उपचारा।
ल्याइ जगत महिं बिदत किय बधि बैद उदारा॥ २७॥

बाइ सीत के मिलति ही होवति संपाता[3]।
इस ते आदिक रुज अपर उपजहिं उतपाता।
गहे लौंग इस कर जबै सभिहूं मिटि जावैं।
सीत बाइ के दुख किते सगरे बिनसावै॥ २८॥

1. कठोर 2. रोग 3. संन्निपात

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तीसर गजमुकता महां इस के सम आना।
नहीं कहीं इस देश महिं दुति दमक महाना।
रुचिर गुलाई इस बनी लोलक[1] महिं पावैं।
शोभा भूखन की करहि तन बिखै सुहावैं ॥ २९ ॥

तीनहुं दुरलभ वसतु हैं नहिं प्रापति शाहू।
अपर कहां ते लेइ इन खोजहु कित जाहू।
श्री नानक को घर महां, जहिं कमी न काहू।
करहि जु प्रीति प्रतीति धर इच्छत ले पाहू ॥ ३० ॥

इम कहि गुन उमराव को ततछिन त्रै दीनी।
महिमा सतिगुर की सभिनि पीनी अति चीनी।
ह्वै प्रसंन गमन्यो तवहि दिल्ली महिं आयो।
शाहजहां को तबि दई देखति हरखायो ॥ ३१ ॥

दुरलभ पाइ पदारथिन ढिग दारशकोहा।
जान्यो अबि इह जीव है रुज नाशन होहा।
इक तौ पुत्र सनेह ते पुन दुरलभ पाए।
शाहजहां के मोद बडि कछु कह्यो न जाए ॥ ३२ ॥

मन महिं लग्यो बिचारने कहि सभिनि सुनावैं।
मुझको बड अफसोस है कुछ कह्यो न जावै।
अवनी मंडल को पती मम आज्ञा सारे।
कित ते नहिं प्रापति भई खोजति नर हारे ॥ ३३ ॥

कादर बेपरवाह बड हिंदू घरि सोई।
जाचे मुझ प्रापति भई, नतु पाइ न कोई।
इम कहि हिरस[2] बिसाल करि ले दीरघ स्वासा।
तूशनि करे बिसूरतो जनु चिंता ग्रासा ॥ ३४ ॥

ज्ञानी दारशकोह ने लखि हिरस महाना।
कह्यो पिदर सों दूर करि अफसोस सु ठाना।
रब की ज़ाति फकीर सो बेखाहश[3] भारे।
करामातज़ाहर जिनहु जग बिदती सारे ॥ ३५ ॥

श्री गुर नानक शाह को घर महद महाना।
लाखहुं अज़मति जुति करे दे ज्ञान निधाना।

---

1. एक आभूषण 2. लोभ लालच 3. निर्लोभ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कामल आप खुदाइ कै नहिं संसा कीजै ।
करन जोग है बंदगी हिरसी न बनीजै ।। ३६ ।।
तुम भी सभि बिधि ते तिनहुं जानति बडिआई ।
हमरे बडिअनि संग मिलि बहु करी भलाई ।
सुनि कै सुत ते शाहु ने पुन बाक बखाना ।
जिन के हिरस न हीयरे से अहैं महाना ।। ३७ ।।
जिन पर फज़ल अलाह को दे सिदक सबूरी ।
हिरस बखीली तिस रिदै करि दै सभि दूरी ।
दुनिआं हिरस हवाइ है नहिं मिटहि कदाईं ।
प्रीति प्रतीति खुदाइ की से पाक सदाई ।। ३८ ।।
जानों नीकी रीति सों गुर की बडिआई ।
तऊ हिरस हंकार ते हुइ है दुखदाई ।
अबि न करौं कबि मैं रिदै, उतरौं नहिं पूरा ।
मैं मानुख अज्ञान् जुति सो अलह ज़हूरा ।। ३९ ।।
अदल मती उर धारि कै तबि हिरस मिटाई ।
ले श्री नानक नाम को निज ग्रीव निवाई ।
तबि हकीम हिकमति महद निज निकटि हकारे ।
लौंग, हरड़, दीनसि दोऊ अचरज पिखि धारे ।। ४० ।।
बहु तरीफ सभि ने करी दुरलभ बहु पाई ।
हिकमति दारशकोह की तबिहूं करिवाई ।
भयो अरुजि[1] ततकालही करि खुशी बिसाला ।
मंगल नाना बिधिन के उपजे दरहाला[2] ।। ४१ ।।

**चौपई**

सतिगुर के घर को धन धंन । शाहु आदि सभि कहैं प्रसंन ।
राज जोग जो करति हमेशा । सगरे जग महिं विदत विशेषा ।। ४२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'हरड़, लौंग शाह को देन प्रसंग'** **बरननं** नाम दुतियो अंशु ।। २ ।।

---

1. रोग रहित 2. जल्दी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ३

# प्रेम को प्रसंग

**सवैया छंद**

इम श्री सतिगुर महिद प्रतापं जगत बिखै होवति बिसतार।
आवहि देश बिदेशनि संगति दरशन करि अरपहि उपहार।
मन बांछति सिख पावति हैं फल खरे अग्र[1] अरदास उचारि।
कीरतपुरि महिं भीर होति नित अरज़ गुज़ारहि मिले हज़ार॥ १॥
इक बिरधा शरधा सतिगुर की प्रेमा भगति रिदै लिवलाइ।
धरहि ध्यान निस दिन गुरमूरति चित महिं चितवति बल बलि जाइ।
घर ते निरधन असन[2] न पावहि चहति करवि गुर सेव बनाइ।
मम कर ते किस बिधि बनि आवहि तबहि सफलता मैं निज पाइ॥ २॥
इक दिन धरम किरति कुछ करिकै टका एक मिहनति को लीनि।
असन समिग्री करी खरीदन निज ग्रिह आइ लीपबो कीनि।
अपने बसत्र पखारनि करिकै जल मज्जन ते ह्वै मल हीन।
सभि बिधि सचि ते इकठी करिकै रिदै प्रेम परवाह प्रबीन॥ ३॥
दोइ रोटिका करी पकावन घ्रित अरु सिता[3] ऊपरे पाइ।
नीकी बिधि सों करि तिआर तिह बासन महिं धरि करि हित लाइ।
शादि रुमाल साथ कर धरिकै निकसी घर ते बहिर सिधाइ।
कैम पहुंचौं मैं निकटि गुरु के मन महिं गिनति को उपजाइ॥ ४॥
कमि मेरे कर ते लैं अचवहिं लोक हज़ारन की जहिं भीर।
चरकाल की मेरी चितवन सेवौं सतिगुर के हुइ तीर।
अंतरजामी पुरहिं कामना जथा भीलनी की रघुबीर।
प्रेम परखना है गुर हरिके, तंदुल[4] लए सुदामे चीर॥ ५॥
इम गिनती बिनती की ठानति सतिगुर के जानी सभि बात।
भए अरुढि अखेर कर्यो मिसि, तूरन ते तिस मार्ग जाति।

---

1. संमुख 2. भोजन 3. घी-खांड 4. चावल



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चढ़े संग असवार सैंकरे आयुध[1] गहे आइं पशचात्।
चंचल करति तुरंग कुदावति अति शोभा धारित अविदात ।। ६ ।।

त्याग सु पंथ खरी हुए इक थल, मन ते चरन बंदना कीनि।
जाति वहिर किमि अचर्वाहं मुझ ते भई बिफल सेवा उर चीन।
हुइ बलिहार सरुप बिलोकति संमत बीसक बैस नवीन।
बिरधा सिखनी शरधा अधिकति खरी भाउ ते भोजन लीनि ।। ७ ।।

गन असवार भजावति आवति मग की धूरि उठी तिस बारि।
कहि सतिगुर ने सगल टिकाए रहहु अटक नहि आउ अगारि।
फेरि तुरंग, निकटि तिस गमने अंतरजामी कर्यो उचार।
'हम को छुधा[2] भई दिहु माई! त्यार अहार जु तैं कर धारि ।। ८ ।।

पुन अखेर को बाहर गमनें तहां छुधति हुइ लगहि बिलंब'।
सुनिकै हरखी सुधा सु बरखी, परखी प्रीति, नहीं ले अंब।
हाथ पखारनि बिन लिय भोजन अचवति सतिगुर सिख्य अलंब।
बडो स्वाद इस महिं कहि खावति करहि बिलोकन सैन कदंब[3] ।। ९ ।।

बिरधा; अचवति गुर को पिखि करि, बिनती करति अनेक प्रकार।
मैं अनाथ दासी प्रभ तेरी मम शरधा राखी इस बार।
करमा बाई[4] करी खीचरी जिम अचवी तम रुप मुरारि।
करति रही मैं जतन दोइ दिनतुम हित आन्यो त्यार अहार ।। १० ।।

पूरन प्रेम कर्यो करि करुना दीन बंधु यांते तम नाइ।
नहिं अभिमानी के तुम गमनहु, गए बिदर घर भोजन खाइ।
निज दासन की पुरहु भावना यांते वत्सल भगत कहाइ।
दीन दयाल की बान तुमारी है निशचै मेरो इसि भाइ ।। ११ ।।

घ्रित सिता जुति दोनि रोटिका महां छुधति जिम कीनसि खान।
त्रिपत होइ इम, दे करि बर को सतिगुर आगै कीनि प्यान।
सिक्ख सेवक सभि सूर संग के देखि देखि भे बिसम महान ।। १२ ।।

शंकमान मन ह्वै करि सगरे मिलि कर जोरि करी अरदास।
'श्री सतिगुर इस बिरधा ढिग ते ले अहार कीने मुख ग्रास।
जल सों हाथ न करे पखारनि करी न चुरी नीर नहिं पास।
चढ़े तुरंग पर कीनसि अचवन इहु क्या कारन करहु प्रकाश ।। १३ ।।

---

1. हथियार 2. भूख 3. समूह सेना 4. एक भक्तिनी जो भगवान् को प्रतिदिन खिचड़ी खिलाया करती थी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नवतन जुगति आपने कीनसि नहीं पूरब होई इह रीति।
सुचि सों करति अहार आप तुम अंतर चौंके परम पुनीति।
सभि को मन शंकति, हे प्रभु जी ! करहिं बिचारनि बिसमति चीति।
सुनि सभि ते सतिगुर मुसकाने नहीं बखाने बचन बिनीति ॥ १४ ॥
कछू न उत्तर किसको दीनसि गए खेलिबे बहिर शिकार।
पकर्यो मिरग हराइ दूर लगि दासन दयो रजू गर डारि[1]।
पुन हटि करि निज ग्रिह को आए सैन समूह तुरंग असवार।
मंगल भए अनंद बिलंदै बैठे सतिगुर सभा मझार ॥ १५ ॥
भई जामनी[2] निज निज डेरनि सिख सेवक सभि कीनि बिचार।
समें शिकार चढ़नि के सतिगुर होइ छुध्रति को चहति अहार।
सुच संचम बिन अचवन कीनसि ले बिरधा ते निज कर धारि।
इम चितवन करि अगले दिन महिं सिखयनि कर्यो असन को त्यार ॥ १६ ॥
चढ़े अखेर पंथ मैं गमने तबि सेवक ह्वै करि अगवाइ।
कर धरि असन बिनै बहु ठानी, प्रभु जी ! लीजै भोजन खाइ।
होहि आप को छुधा समैं इस यांते हम आन्यो करि भाइ।
मधुर सलवन अनेक प्रकारनि रुचि सों अचहु होहु त्रिपताइ ॥ १७ ॥
सुनि सतिगुर हरिखाइ वखान्यो वे मिरजाद बनाइ अहार।
चढ़े जाति अबि घोरे ऊपर कौन समो तुम कर्यो बिचार।
सुच ते होइ पुनीत असन जबि उचित अचन के तबि निरधार।
अबि कैसे इह खाइ त्रिपति ह्वै मारग मैं गमनति इस वार ॥ १८ ॥
हाथ जोरि सिख संगति सगरे शंकति प्रथम कीनि अरदास।
बिरधा ते तुम लीनसि भोजन तबि तौ नहीं हुतो जल पास।
चढ़े तुरंग महां रुचि ते अचि, करी न चुरी, हेरि हम तास।
जानी छुधा होइ है इस छिन कर्यो त्यार धारि हुलास ॥ १९ ॥
सो किम अच्यो रुच्यो चित उचितै, इह क्यों नहिं अचवहु हित धारि ?
इह शंका है सभि के मन महिं, उत्तर दीजहि करहु उचारि।
हमरे चित शांती हुइ तबि ही, नांहि त कुछ कुछ करहिं बिचार।
जानहु दास, प्रकाशहु आशय, सभि के हिरदे हुइ निरधार ॥ २० ॥
श्री हरिराइ भन्यो सुनि सिखहु ! बिरधा कर्यो पुनीत अहार।
मन सुध भगति भाइ संजुगतै निंम्रि भूत उर प्रीती धारि।
करि मिहनति निज कर ते हित करि सगरे दिवस विखै शुभ कार।
तिस ते अंन मोल करि आन्यो अति पवित्र हुइ सभि करि कारि ॥ २१ ॥

1. रस्सी गले में डाल दी 2. रात

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहिं खैबे कहु लालच हमरे हेरौं प्रेम जहां अधिकाइ।
प्रेम भगति ते स्वाद होहि मुझ अचौं पहुंचिकै हुइ जिस थाइं।
लाज न आइ अकरन करौं तहिं, परौं प्रीति के बसि सति भाइ।
इही सनातन धरम सुभाइक सगल जुगनि महिं करतो आइ ।। २२ ।।
त्रेते जुग महिं तिसके आश्रम पहुंचयो बदरी फल[1] को ख़ान।
जाति भीलनी पुन त्रिय को तनु महां स्वादि ते मैं सुख ठानि।
प्रेमी कै मिरजाद नहीं को, करन अकरनो[2] नहिं पहिचानि।
बेद रीति अर लोकिक तजिकै बरतहुं मैं अरु प्रेमी जानि ।। २३ ।।
प्रीति प्रतीत मोहि को प्यारी, क्रिया प्रेम की न्यारी सार।
प्रेम स्वाद ते प्रीतम त्रिपतै अपर स्वाद सभि देति निवार।
धंना जाट छाछ तिन प्याई नामदेव को दूध सु धारि।
दुरजोधन आदिक हंकारी, त्याग सभिनि गे बिदर अगार[3] ।। २४ ।।
प्रेम कहानी गुरु बखानी, सिखनि मानी महिमा तांहि।
सुनि सगरे पग पंकज बंदहिं तुमरे चलित लखे नहिं जाहिं।
खेल आप के अचरज दीरघ, देखति सुनति सगल बिसमाहिं[4]।
श्री नानक तजि उत्तम जातिनि जाइ बसे लालो घर मांहि ।। २५ ।।
सुनि सतिगुर ते संगति सगरी पगे प्रेम रस गुर के सोइ।
प्रेम भगति कर जोरति जाचति क्रिपा करहु शुभ मग दिहु जोइ।
हलति पलति अविलंब आप के रच्छहु सदा सहाइक होइ।
लाज बिरद की सदा संभारहु सिक्खय् नाम भाखहिं सभि कोइ ।। २६ ।।
सुनि गुर क्रिपा करी मग गमने गए अखेर महां बन मांहि।
निकस्यो म्रिग सु क्रिपन पीठ जिस[5] श्रिंग बिसाल[6] बधे सिर जांहि।
अपरन को तजि तिसके पीछे कर्यो पलावन जवते वाहि[7]।
कूदति, करति चौंकरी चक्कित श्री हरिराइ रहे हरखाहि ।। २७ ।।
तुरंग धवाइ गए पशचाती अधिक दूर लगि लीनि हराइ।
हीइ बरोबर गहि बिखानको[8] राख्यो तिस ही थल अटकाइ।
आइ सेवकनि रज्जू पाई ग्रिह को हटे गुरु हरिराइ।
अपर समें गहि केतिक आने बन पशुगन महिं दियो मिलाइ ।। २८ ।।

**दोहरा**

ख़ान पान सभिहूंनि कीनित सुध सतिगुर लेति।
कितिक काल देखहिं तिनहिं बिगसहिं क्रिपा निकेत ।। २९ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'प्रेम को प्रसंग'** बरतनं नाम त्रितीओ अंशु ।। ३ ।।

---

1. बेर 2. करने अथवा न करने योग्य 3. घर 4. हैरान होते हैं 5. पीठ जिसकी काली है 6. लम्बे सींग 7. तेज़ चाल का घोड़ा उसके पीछे लगा दिया 8. सींग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ४

# अजगर प्रसंग

**दोहरा**

इक दिन बैठे सभा महिं श्री सतिगुर हरिराइ।
संगति दरशन को करहि मन बांछति फल पाइ॥ १॥

**सवैया छंद**

देश बिदेश ब्रिशेष संगतां दरस अशेष करति हैं आइ।
जहिं कहिं सुजसु विसद[1] जग पूरन मनहुं चांदनी बडि दिपताइ।
करामात साहिब उपकारी जथा बचन कहिं तिम हुइ जाइ।
रिसि प्रसंनता सफल[2] तुरत जिन दें बर श्राप नहीं निफलाइ॥ २॥
चौर दुरति दुहुदिशि छबि पावति चोआ अतर गंध महिकार।
इक सौ इक पट जामा गर महिं अंग विभूखन भूखति चारु।
करहिं सिख अरदास अगेरे क्रिपा भरे द्रिग लेति निहार।
आयुध गहे सथित गन योधा चहूं कोनि गुर के परवार॥ ३॥
इक सिख हाथ जोरि करि बोल्यो श्री सतिगुर तुम नाथि अनाथ।
किव सेवा रावर की करि है जे निरधन सिख पाइ न आथि ?
होइ दारिदी करे जतन भी तऊ न प्रापति कित धन हाथि।
सो क्या करै प्रसंन करनि को जिस ते ह्वै है जनम सनाथ ? ४॥
श्री हरिराइ सभा महिं बोले मो सो प्रेम करति सिख दास।
सो मुझ को प्रिय निस दिन सिमरै जिनके उर मैं शबद प्रकाश।
अंन दरब धरि शरधा अरपहि तिन के दारिद होति बिनाश।
इस पर इक इतिहास सुनीजहि भयो जथा उर धारहु तास॥ ५॥
इक पुरि महिं सिख वसहि सु निरधन अंन दरब घर महिं कुछ नांहि।
नीठ नीठ करि उदर पूरना[3], दारिद को दुख सदा सहाहि।
चिरा चिरी जोरा तिस ग्रिह रहि प्रथम जनम सिख सिखनी आहि।
सहित ज्ञान के गुरु महातम क्रिसू करम ते खग तन[4] वाहि॥ ६॥

---

1. उज्जल कीर्त्ति 2. सफल 3. मुश्किल से पेट भरता था 4. पक्षी शरीर



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निरधन अपदा तिस के देखति अति चिंता चित महिं बिलखाइं ।
रिदे बिचारति बिपता हरिवे चिरा चिरी तबि कीनि सहाइ ।
तिस ग्रिह ते लै अंन चुंच भर गुर अहार मैं आनि मिलाइं ।
कितिक दिवस महिं भई संपदा धन अरु अंन भयो समुदाइ ।। ७ ।।

करि मिहनत को आनि मजूरी तिस ते अंन ल्याइ ग्रिह माहि ।
शुषक करन को पाइ अजर[1] महिं, कूटहिं पीसहिं; पुन सो खाहिं ।
तहिं ते चुंच बिखै कुछ ले करि मम संगति के लंगर पाहि ।
सिक्खनि जुति मैं भोजन करिहौं यांते भयो पुंन अधिकाहि ।। ८ ।।

इह उपकार भयो दिन केतिक भई संपदा तिस ग्रिह आइ ।
बहु धन अंन भए ते तिस ने छपरी तोरि आपनी थाइं ।
सुंदर घर चिनाइ करि कीनसि बसहि तहां आनंद उपजाइ ।
चिरी चिरा तबि अपर थान महिं कीनि आल्हना[2] ब्रिच्छ बसाइ ।। ९ ।।

तबि ही ते संपद तिस ग्रिह की सनै सनै होई ब्रिनसाइ ।
लंगर अंश परन ते हटिगी तिस को फल कैसे पुन पाइं ।
भयो अधीन दारिदी ह्वै करि आइ पर्यो हमरी शरनाइ ।
हे प्रभु ! तुम बिन कोई न रक्खयक करहु क्रिपा अबि बनहु सहाइ ।। १० ।।

सिख तुमारे नाम जगत कहिं इसकी लाज आप को होइ ।
दारिद ते संपति बड बिरधी अबहि बिनाशवान बनिसोइ ।
अपदा आनि परी निरवाहु अस समरथ जुति अपर न कोइ ।
जथा चहहु तुम तथा रचहु प्रभु ! राखहु किसे, किसे दिहु खोइ ।। ११ ।।

बिनती सुनि हमने समुझायहु होनि संपदा कारन जोइ ।
गुरकी देग अंश तव घर ते ल्यावहि चिरा चिरी जे दोइ ।
सति संगति अचवन ते जानहु तोहि संपदा प्रापति सोइ ।
छपरी तोरि गए से अनते[4] नहिं अबि कुनका[5] आवन होइ ।। १२ ।।

जिसके चाह संपदा होवहि सतिसंगति भोजन अचवाइ ।
जथाशकति थोरे महिं थोरो, देकरि सेवहि प्रेम उपाइ ।
तिसके जाइ सहाइ करौं मैं दारिद दुखदा सभि बिनसाइ ।
सो तूं करि अबि, अंन और धन होइ अधिक, सुख को लिहु पाइ ।। १३ ।।

यांते किरत धरम की करिकै निज अहार ते अंस चुथाइ[5] ।
जो हुइ रंक सु अरपै गुर हित, दिन प्रति संपद ग्रिह बिरधाइ ।

1. आंगन में 2. घोंसला 3. अन्य स्थान 4. अंन का अंश 5. चतुर्थ भाग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है सरूप मेरो सति-संगति सो अचवहि मुझ को पहुंचाइ।
हलति पलति[1] सुधरहि तिस सिख के करि भोजन को सिख अचवाइ ।। १४ ।।
सभा बिखै गुर सभिनि सुनाई 'करहु सदा इस विधि की कार।
जो मुझ अरपहि शरधा उर धरि, होइ सहंस गुना बिसथार।
थोरो बहुत विचार न काई जथा शकति अरु प्रेम मझार।
इस महिं भलो आपनो जानै तिह प्रापति जिह भाग उदार ।। १५ ।।
सुनिकै सभा धरी उर शरधा 'धंन धंन सतिगुर हरिराइ'।
जेकरि अ्ररपहि अलप भाउ जुति, तिसको देति सम्रिद्ध[2] बनाइ।
जथा शकति तबि गुर के लंगर ल्यावति हैं बहु चित करि चाइ।
थोरे देनि, लेनि अति बहुतो अस बिवहार तज्यो किम जाइ ।। १६ ।।
बहु प्रसंनता संगति मांही अपने भाग बडे सभि जानि।
लोचन गोचर तीन लोक पति पुन सिच्छया शुभ करहिं बखान।
सेवक लखहिं क्रिपानिधि हमको, हुइ प्रसंन उपदेशति दान।
दरसहिं चरन सपरसहिं हरखहिं परखहि अपनी लबधि महान ।। १७ ।।
पुन अगले दिन सतिगुर पूरन बसत्र शसत्र निज देहि सजाइ।
अंग बिभूखन भूखति सुंदर कमल-पत्र लोचन बिकसाइ।
भुज प्रलंब कर धर्यो सरासन[3] बहुर कंध धरि लीनि टिकाइ।
मुकता हीरनि जर्यो जराऊ तीखन तीर निखंग[4] सुहाइ ।। १८ ।।
कटि शमशेर मुशट जिस हाटक[5], रेशम ज़री गातरा पाइ।
आइसु करि कै अस्व[6] मंगाइव धरति चपलता जुति छिति पाइ।
हीरे जरे अग्र महिं जिस के सुंदर ज़ीन ज़री दिपताइ।
भए अरुढ गूढ़ गुन जिन के गही बाग गमने अगुवाइ ।। १९ ।।
कहि मुख शबद तेज असु कीनसि पद लघुता ते कुदिति बिसाल।
जनु घन सुनि सुनि मन गनि मुद करि ग्रीव मोरि करि मोर उताल।
नाचति जाति सुभति अति शोभा गर कंचन चौंकी इस ढाल।
मनहुं चंचला[7] धरकनि ते धिर लपट रही इक थल हित नाल ।। २० ।।
कानन[8] गमने हित अखेर के सकल बाहनी शसत्र सजाइ।
चढ़े तुरंग कुरंगनि सम से ब्रिंद भए पशचात धवाइ।
सघन ब्रिछनि महिं सैल समीपहि निकसहिं बन पशु लेति गहाइ।
इत उत बिचरति, जित कित देखति शूकर ससे रोझ गन धाइ ।। २१ ।।

---

1. लोक परलोक 2. अमीर 3. धनुष 4. तूणीर 5. सोना 6. घोड़ा 7. बिजली 8. जंगल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निकटि निकटि परबत के गमनति खग म्रिग त्रासति जाति पलाइ ।
चमूं चलहि पशचात् ब्रिंद शुभ आगै सरप चल्यो इक आइ।
अजगर संज्ञा कहैं लोक जिस बहु पपीलका[1] काटति खाइं ।
पटकति पुंछ, सु फटकति फन को, तड़फति, लिटति बिकुल अकुलाइ ।। २२ ।।
बडो लंबु अरु मोटे तनु को प्रापत जिस को कशट बिशाल ।
काटति कीटी उलट पुलट ह्वै भए देहि मैं छिद्द्र[2] कराल ।
कुछ न उपाउ बचाउ होनि को लाखहुं खाइं महां बिकराल ।
श्री हरिराइ बिलोकन कीनसि क्रिपा धार करि धनुख संभालि ।। २३ ।।
तरकश ते सर कर्यो निकासनि अरध सु चंद्राकार महान ।
जेह[3] बिखै आरोपन करि दिढ हाथ तान ते केतिक तानि ।
श्री हरिराइ सु बान प्रहार्यो काटि दीनि सिर कीनसि हान ।
म्रितक भयो शुभगति को प्रापति गमन्यो उरध अरुढ़ि बिमान ।। २४ ।।
कंतक देखि चमूं चित चक्रति बूझति भए गुरनि के पास ।
कौन हुतो. प्रभु ! करहु बतावन, कौन पाप को फल भा तास ?
आमिख[4] काटि काटि करि कीटी कीने छिद्द्र पाइ दुख रासि ।
तरफति को बिलोक करि करना आप बान ते कर्यो बिनाश ।। २५ ।।
सुनि अरदास सेवकनि केरी सरब ब्रितंत गुरु समुझाइ ।
प्रथम जनम मैं पंडित दिज इहु 'गुरु' कहावति नर समुझाइ ।
अहंकार ते अफर्यो नितप्रति सभिहिनि को उपदेश बताइ ।
मति बिदांत, को भाउ भगति तजि, करति पखंड रह्यो अधिकाइ ।। २६ ।।
'अहंब्रह्म' को वचन बखानै, रिदै न लेश भयो प्रवेश ।
सुत बनिता सों प्रीति निबाहक, सभि ते धन ले कीनि विशेष ।
संतनि आगै निंम्रि होइ नहिं, अभिमानी मन रहै हमेश ।
'मैं हौं सभि ते बडो' बिचारति, मैं बिद्दया पठि लीनि अशेष ।। २७ ।।
अपर लोक बिद्दया नहिं जानैं, तिन सों निंम्रि बनौं किस भाइ ।
लघु मति है, आशै नहिं जानति, मैं सभिहिनि को पंथ बताइ ।
सिक्ख करै बहु, सेव न ठानै 'अहंब्रह्म' सो बचन अलाइ ।
निशचा नहीं रिदे महि जिस के भाउ भगति महिं, मंद सुभाइ ।। २८ ।।
भयो काल बसि अहंकार जुति, सरप जूनि पाई बिकराल[5] ।
सिक्खयनि की गति करि न सक्यो कुछ सो पपीलका ह्वै करि जाल ।
जिन ते धन लिय भलो नहीं किय, सो काटति हैं मास कराल ।
भक्खन करति देति बड संकट पलटो अपनो देति बिशाल ।। २९ ।।

1. कीड़ियां 2. घाव 3. धनुष का चिल्ला 4. मांस 5. भयानक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

म्रितक होति अबि दुख कराल ते, मेरो दरशन पावन कीनि।
शुभ गति को इह प्रापति होवा, पूरब जनम भए अघ* हीन।
बिना ज्ञान जग गुरु कहावति संकट घोर लहै सुख छीन।
काचे गुरु के सिख ह्वै जग मैं मानुख जनमु बाद तिन चीन ॥ ३० ॥

सहित सिक्ख के गुरु ज्ञान बिन, संकट घोर अंत को पाइ।
तांते भो संगति ! सभि सुनीअहि, पूजा अंस न लिहु कबि खाइ।
होइ दुखद, को बनहि सहाइ न, बहुत बिसूरहि जम बसि पाइ।
धर्म किरति करि संतनि सेवहि तिस को मैं सभि थान सहाइ ॥ ३१ ॥

**दोहरा**

दे करि इस उपदेश को कानन ते ग्रिह आइ।
सभि बिसमे हुइ कहति भे 'धंन गुरु हरिराइ' ॥ ३२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'अजगर प्रसंग'** बरननं नाम चतुरथो अंशु ॥ ४ ॥

---

* पाप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ५

# गोंदे को प्रसंग

### दोहरा

भाई गोंदा गुर भगत गुर मूरति को ध्यान।
दरसहि दरशन रिदे महिं सदा नेम इम जानि ।। १ ।।

### चौपई

श्री सतिगुर पूरन हरिराइ। कितिक समो ढिग सेव कमाइ।
भए प्रसंन एक दिन हेरा। कह्यो बाक् श्री मुख तिस बेरा ।। २ ।।
काबल केर वलाइत जोइ। तहिं की संगति सिख सभि कोइ।
तहां रहहु सभि की सुध लेहु। सिक्खी को उपदेश करेहु ।। ३ ।।
तहिं की जो गुर कार अशेष। करहु सकलनि सगरे देश।
संत, अथित[1], सिक्यनि अचवावहु। गुर की देग बिसाल चलावहु ।। ४ ।।
सो मुजरे सगरी पर जाइ। अपर देग जेतिक समुदाइ।
सकल हजूर पठावन करो। सिख संगति ते जेतिक धरो ।। ५ ।।
सुनि आज्ञा को हुइ करि बिदा। बंदन करि गमनयो सो तदा।
जाइ वलाइत[2] मैं तबि रह्यो। सभि संगत ते धन को लह्यो ।। ६ ।।
सिक्ख अथितनि जितकि अचावहि। सो सगरी गुर मुजरे पावहि।
धरमसाल काबल महिं कीनसि। तहिं को छुधति रहनि नहिं दीनसि ।। ७ ।।
सतिगुर प्रेम करे नित माता। सत्तिनाम सिमरति सुखदाता।
ध्यान परायन रहि अधिकाई। बहु चिर राखहि ब्रिति टिकाई ।। ८ ।।
प्रेम भगति तिस की बडि जाणी। श्री सतिगुर के मन महिं भाणी।
सभा मांहि श्री बदन बखाणी। गोंदा सेवति प्रीति महाणी ।। ९ ।।
दिन प्रति धरै ध्यान गुरु मूरति। अंग प्रत्यंग जथा शुभ सूरति।
नेम करति सो जितिक समें को। धरै ध्यान गुर चरननि मैं को ।। १० ।।

1. अतिथि 2. दूसरे देश



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इक दिन गोंदे मज्जन ठाना। प्रथमैं श्री जपु पाठ बखाना।
पुन सतिगुर को लायहु ध्याना। बढ़यो अनंद ब्रिती ठहिराना॥ ११॥
ध्यान बिखै गुर के निज हाथ। पद अरविंद गहे रति साथ।
इस अनंद मैं लै हुइ गयो। निरबिकलप समाधि थित ठयो॥ १२॥
नहिं सरीर की सुध कुछ रही। निशचलता ऐसी तिन गही।
सुनहि न देखहि, परस न जानै। रसना, घ्राण बिषय नहिं मानै॥ १३॥
टिकी ब्रिति महिं भयो अनंद। कर महिं गहि गुर पद अरबिंद।
अचल होइ करि बैठ्यो रह्यो। अपर न किनहूं तिन कुछ कह्यो॥ १४॥
गुर दरशन महिं गयो समाइ। सागर बिखै बूंद के भाइ।
श्री कीरति पुरि गुर हरिराइ। सिंघासन पर थिरे सुहाइ॥ १५॥
दोनों चरन इकत्रहि करे। बैठि रहे नहिं हलिबो धरे।
भई भोर[1] ते निशचल भए। जबि दुइ जाम बीत दिन गए॥ १६॥
गुहज बात नहिं किनहूं जानी। थिरे समीप मौनता ठानी।
त्यार अहार अनेक प्रकारे। आनि रसोईआ खरो अगारे॥ १७॥
हाथ जोरि अरदास बखानी। गुर महाराज न बोले बानी।
पिखि सुभाइ को बिसमै होए। सतिगुरु किस की दिशि नहिं जोए॥ १८॥
लील्हा महां प्रेम की स्वामी। कौन लखै बिन अंतरजामी।
दुइ घटिका बित गए पिछारी। पुन सेवक अरदास उचारी॥ १९॥
सतिगुर नहीं कह्यो कछु फेरे। बैठि रहे सभि बिसम बडेरे।
चतुरघटी बीते पुन दास। हाथ जोरि कीनसि अरदास॥ २०॥
सिद्ध अंन सभि सीतल भयो। रावरि बिन किनहूं नहिं खयो।
हुकम आप को होइ सु करैं। बरतहि देग किधों हम धरैं॥ २१॥
सुनि गुर तूशनि[2] करि तिस काला। रहे सिंघासन अचल क्रिपाला।
दोइ घटी दिन रह्यो सु जाइ। कह्यो बहुर सेवक समुदाइ॥ २२॥
गुरु गरीब निवाज क्रिपाला। लील्हा तुमरी अधिक बिसाला।
हम अलपज्ञ जीव क्या जानैं। बिना आप के करे बखानै॥ २३॥
सरब द्योस[3] बैठ्यो सु बितायो। रावर ने पग नहीं हिलायो।
देग बिखै भोजन सभि तयार। धर्यो रह्यो सो किसी प्रकार॥ २४॥
सिख्यनि केरे संदेह महाना। क्या कारन भा करहु बखाना।
दासनि की सुनि कै अरदास। बिकसति मुखि ते कीनि प्रकाश॥ २५॥

---

1. प्रभात 2. खामोश 3. दिन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

काबल महिं गोंदा सिख रहे। धरे ध्यान दोनों पद गहे।
किस बिधि तिस ते चरन छुटावौं। बिना छुटे किम लंगर जावौं ।। २६ ।।
रह्यो उडीकति छोरहि मोही। दिढ़ गहि राख्यो त्याग न होही।
जबि संध्या होई दिन गयो। तबि गोंदा जागति तहिं भयो ।। २७ ।।
छुटी समाधि देहि सुध होई। तजे चरन गुर के तबि दोई।
उठि करि गमने श्री हरिराइ। सदा प्रेम बसि जिनहुं सुभाइ ।। २८ ।।
सिख बिसमाद रहे सुनि देखि। जान्यो सिख को प्रेम विशेख।
क्रिपा सिंधु लंगर महिं आए। भोजन अनिक प्रकार वरताए ।। २९ ।।
संगति, सेवक, सिख्यनि, सूरनि। कर्यो अहार छुधित संपूरन।
सुनि सतिगुर ते सरब ब्रितांत। सभि संगति जान्यो बख्यात ।। ३० ।।
निरनै करैं जि गोंदा आवै। मिलि बूझैं सो सकल बतावै।
केतिक द्योस बहुर बिति गए। गोंदा बड संगति संग लए ।। ३१ ।।
जिते विलाइत के सिख ब्रिंद। ले करि अपने संग बिलंद।
चलि काबल ते दरशन कारन। आवति करते शबद उचारन ।। ३२ ।।
प्रेम भरे बहु आइ पहूंचे। सतिगुर प्रेम जिनहुं मन रुचे।
कीरतिपुरि महिं आनि प्रवेशे। संगति ब्रिंद अकोर[1] विशेषे ।। ३३ ।।
श्री सतिगुर थित सभा मझारे। दरशन कर्यो आनि सिख सारे।
ढुरति चमर दुइ दिशि बहु सेत[2]। उडहि मराल[3] तथा छवि देति ।। ३४ ।।
गाइं रबाबी राग अनेक। सुंदर शबद बिसाल बिबेक।
जोधा ब्रिंद सभा सभि भरी। छरीदार कंचन की जरी ।। ३५ ।।
करति मेवरो सिख अरदास। पुरहिं कामना सतिगुर पास।
काबल की संगति तिस काल। दरसति भे धरि भेट बिसाल ।। ३६ ।।
गोंदा मुख्य जिनहुं के मांहि। आइ मिले बैठे पुन पाहि।
खुशी क्रिपाल सरब पर करी। रिदे कामना जस जस पुरी ।। ३७ ।।
तबि सिख्यन सो बात चलाई। किम समाधि गोंदे सु लगाई ?
सुनि काबल के सिख्य अलावैं। जो तिस के नित पास रहावैं ।। ३८ ।।
इक दिन बैठ्यो करि इशनान। मूंदि बिलोचन लायहु ध्यान।
सभि दिन बीत गयो थित बैसा। नहिं सुधि तन की लघु, गिर[4] जैसा ।। ३९ ।।
नहीं कह्यो किस ने इह भांति। बिन अहार इंदै मन शांती।
सूरज असत भयो तिस काल। तबि होयो तन सुध के नाल ।। ४० ।।

1. भेंट 2. सफेद 3. हंस 4. पहाड़

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इम होई इक दिन धर्मसाल। चारहुं जाम समाधि बिसाल।
तुम किम बूझति देहु सुनाई ? किस प्रकार सुध इह ठां आई ॥ ४१ ॥

सुनिकै तिन सभि कह्यो ब्रितांत। जिम सतिगुर कीनसि बख्यात।
चार जाम बैठे ही रहे। कहित भए हमरे पद गहे ॥ ४२ ॥

किम लंगर महिं करहिं पयाना। थिरे सिंघासन क्रिपा निधाना।
सुनि दुहिंदिशि के सभि ब्रितांत। बिसमै होए लखि सिद्धांत ॥ ४३ ॥

सतिगुर महिंमा महां महाने। क्या अलपग्ग्य जीव हम जानें।
भाई गोंदे की वडिआई। भई अधिक श्री मुख ते गाई ॥ ४४ ॥

प्रेम अधीन परमेशुर जाना। नित प्रेमी के बसी महाना।
अस प्रभु को जो मनहु बिसारे। मानुख जनम जगत से हारे ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथें नवमि रासे **'गोंदे को प्रसंग'** बरननं नाम पंचमो अंशु ॥ ५ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ६

# सिक्खन उपदेश प्रसंग

### दोहरा

श्री सतिगुर हरिराइ जी सिक्खनि दें उपदेश।
गुर नमित्त लंगर करहु हुइ कल्लयान विशेष ॥ १ ॥

### चौपई

इम सतिगुर ते सुनि सिख जावैं। निज निज ग्रिह लंगर वरतावैं।
भूखा रहनि न कोई पाइ। सति संगति को दें त्रिपताइ ॥ २ ॥
पुरि ग्रामनि महिं गुर सिख जहां। छुधित सु भोजन प्रापति तहां।
निरधन, रंक, अनाथ महाने। अंग भंग हुइ, मिलै न खाने ॥ ३ ॥
सो सगरे पुरि ग्राम मझारा। गुर सिक्खनि के करहिं अहारा।
जिन के बहु धन ग्रिह मैं नांही। सो मिलि करिकै आपसि मांही ॥ ४ ॥
इक थल देग गुरु हित करैं। छुधित होति सो उदर सु भरैं।
गुरसिख गुर सिखयनि पै जाइ। तिह सनमानहिं करि बहु भाइ ॥ ५ ॥
दे भोजन को तिह त्रिपतावै। भूखा सिख को रहनि न पावै।
प्रीति धारि गुर सिखयनि सेवैं। सादर सतिसंगति मिलि जेवैं ॥ ६ ॥
इह सभि दिशि ते सतिगुर पास। आनि आनि ठानहिं अरदास।
अमुके पुरि मैं अमुके ग्रामू। चलहि देग अमुके सिख धामू ॥ ७ ॥
सुनि सुनि सतिगुर होइं प्रसंन। निज सिखयनि को भाखहिं 'धंन'।
देग गुरु की बहुत सथान। पुरि पुरि महिं महिमा महीआन[1] ॥ ८ ॥
सुजसु होइ श्री सतिगुर केरा। ऊच नीच बहु देश घनेरा।
जो दरशन गुर के चलि आवै। हुइ क्रिपाल उपदेश द्रिड़ावैं ॥ ९ ॥
मम सिख होइ जु सेवा करे। नीवें[2] मन भगती को धरे।
परउपकार सदा उर धारे। किसहूं की नहिं निंद उचारे ॥ १० ॥

---

1. बहुत यश फैल रहा है 2. विनम्र मन



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सत्तिनाम को नहीं बिसारे। ऊठति बैठति रिदे संभारे।
किरत धरम की सदा कमावै। सेवै सिक्खनि को त्रिपतावै ॥ ११ ॥
एक बेर बैसाखी मेले। देश देश के सिख सकेले।
गुरसिक्खनि चित चाउ बिसाले। चलि आए मिल करि हित नाले ॥ १२ ॥
जथाजोग उपहारनि लीने। आइ सभिनि गुर दरशन कीने।
हेरि हेरि उर भयो अनंद। गन चकोर जिम पूरन चंद ॥ १३ ॥
सतिगुर सूरज नदरी आए। लोचन कमल सभिनि बिकसाए।
जिम चात्रिक हुइं अधिक त्रिखाए। बूंद गुरु दरशन त्रिपताए ॥ १४ ॥
जिस प्रकार म्रिग त्रिषना धाए। सुधा समुंद्र मिल्यो हरखाए।
मनहुं भौर गन भ्रमति बिलंद। भए स्थिर पिखि पग अरबिंद ॥ १५ ॥
दरशन करि, दै करि उपहार[1]। हाथ जोरि पग बंदन धारि।
बैठे श्री सतिगुर परवार्यो। जथा चंद्रमा उड[2] दिशि चार्यो ॥ १६ ॥
बहु सिक्खनि तबि बात चलाई। अमके सिक्खनि देग बनाई।
बहु संगति की सेवा करिही। देति अहार भाउ को धरिही ॥ १७ ॥
पुरि ग्रामनि सतिगुर जसु भयो। नित लंगर को सिखयनि दयो।
रावर को उपदेश कमावैं। गुर के प्रेम अहार अचावैं ॥ १८ ॥
श्री हरिराइ बाक् जबि सुन्यो। सभा मझार सभिनि सों भन्यो।
सिक्ख कौन सो हमै बतावहु। देग देति, तिन को दिखरावहु ॥ १९ ॥
सेव भगति की जुगति बिसाला। हम बूझहिं तिन को इस काला।
तबहि सिक्ख उठि करि दुइ फिरे। जहिं जहिं बैठे देखनि करे ॥ २० ॥
करि इकत्र गुर ढिग ले आए। खरे समुख निज सीस निवाए।
श्री हरिराइ हेरि तिन ओरे। खरे अगारी जुग कर जोरे ॥ २१ ॥
बूझनि करे कौन बिधि सेवा ? तुम ने कीनसि हित गुरदेवा ?
तबि सिख्यनि सभि भेद[3] सुनायो। दया धरि जो सिख चलिआयो ॥ २२ ॥
तिस को भोजन दे त्रिपताइव। सभिनि पिछारी ते हम खाइव।
जितिक अतिथि क्रिपा करि आवैं। लंगर ते अहार सभि खावैं ॥ २३ ॥
निज सेवा करते जिम रहे। अपने करम समूहनि कहे।
सुनति खिमां करि रुहे गुसाइं। नहिं श्री मुख ते कछू अलाई ॥ २४ ॥
तबि संगति सभि कीनसि बिनती। रही प्रभू जी हम उर गिनती।
जथा आप को आज्ञा होइ। तथा करैं सुनि कै सभि कोइ ॥ २५ ॥

---

1. भेंट 2. तारा 3. शंका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तबि श्री मुख ते सतिगुर बोले। जगत भगति की रीति अमोले।
सुनहु सिक्खय ! तुम अति प्रिय मोरे। करनि प्रेम की नित उर लोरे ॥ २६ ॥
यांते शुभ उपदेश बतावौं। जम संकटि ते तुमहिं छुटावौं।
निसदिन चितवन चिसंवति चित मैं। मम सिख प्रापति हुइ शुभ गति मैं ॥ २७ ॥
समें चुके ते जौ सिख आइव। तिह भी किनहुं अहार खुलाइव ?
इस को फल उत्तम इह जानो। अंन दान सम दान न मानो ॥ २८ ॥
सुनि सिख बूझति इहु किम लहीऐ ? समो चुक्यो किह को प्रभु कहीऐ।
इस को जानि करहिं पुन तैसे। हित को करनि आप को जैसे ॥ २९ ॥

**दोहरा**

फुरमाइव श्री बदन ते बीतयो समो अहार।
छुधित सिक्खय आयो तबहि, त्रिपतावहि करि त्यार ॥ ३० ॥

**चौपई**

अस सेवा महिं प्रेम बिसाल। करै त्यार पुन दे हित नाल।
चुके समै अतिथि सिक्ख आवै। भाउ भगति सों तिस त्रिपतावै ॥ ३१ ॥
अस सेवा मैं करौं प्रमान। मुझ को त्रिपति सु करै महान।
अति प्रसंन मैं तिस पर होवौं। जनम मरन के संकट खोवौं ॥ ३२ ॥
हलति पलति मैं रहौं सहाइक। रच्छौं दे कर बिघन नसाइक।
इम सेवति सिमरति हरिनामू। सतिसंगत ते पावन धामू ॥ ३३ ॥
सोई सिक्ख मोहि को प्यारो। स्वास स्वास मैं सदा समारौं।
बसी रहौं तिस के संग होइ। प्रेम फास ते ऐंचति जोइ ॥ ३४ ॥
सुनि संगति कीनी अरदास। इह सभि बिधि है रावरि पास।
जिस पर करहु क्रिपा जन जानि। तिस कउ देते सेवा दान ॥ ३५ ॥
हम अलपज्ञा जीव तुम शरनी। क्रिपा ग्राप की संकट टरनी।
गिरा गुरु भवसागर तरनी[3]। मथन ज्ञान ग्रगनी कहु अरनी[4] ॥ ३६ ॥
सत्तनाम सिमरन जनु परनी[5]। तिस निपजावनि को शुभ धरनी।
तिह लखि अरथ, करि जिन करनी। राग द्वैख अध जुति तिन दरनी ॥ ३७ ॥
गुरबानी बर जन आचरनी। रिदे बिकारनि तिन के छरनी।
प्रेम परमेसर की इह घरनी। मिली रहै नित सुवरन बरनी ॥ ३८ ॥
निज दासन की कैवल[6] करनी। सिंघनि सम है त्रिशना करनी।
महद अविद्या चंचल हरनी। करि निज बल को ततछिन हरनी ॥ ३९ ॥

1. लोक परलोक में 2. वाणी 3. बेड़ी 4. एक प्रकार का लकड़ी का यंत्र जिसका यज्ञ में प्रयोग होता है 5. वृक्ष 6. मुक्ति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुभबानी की सुनी प्रसंसा। जो दासनि के नाशनि संसा।
संगति पर प्रसंन गुर होए। क्रिपा द्रिषटि सौं सगरे जोए॥ ४० ॥

भगति अंकुर सभिनि के उग्यो। तजि बिशियनि मनसिमरन लग्यो।
करे क्रितारथ शुभ मग पाइ। लखी गुरु महिमा अधिकाइ॥ ४१ ॥

लाखहुं सिखयनि शुभ गति पाई। कहिं लग कथहिं गुरु वडिआई।
इस प्रकार नित करति बिलासे। श्री सतिगुर हरिराइ प्रकाशे॥ ४२ ॥

करहिं चेषटा किस बिधि कोइ। सभि बिधि सिखयनि की श्रेय होइ।
नितप्रति संगति आइ हज़ारनि। दें उपहार लगाइ अंबारनि॥ ४३ ॥

बड मेला वैसाखी होवा। पुरहिं कामना सतिगुर जोवा।
कीरतपुरि बहु डेरे परे। बडभागी गुर दरशन करे॥ ४४ ॥

जै जै कार संगतां करिहीं। धंन गुरु हरिराइ उचरिहीं।
जिस को बाक जथा हुइ जाइ। सो नर ततछिन फल को पाइ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'सिक्खन उपदेश प्रसंग'** बरननं नाम षषटमो अंशु॥ ६ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ७

# परबतेशरनि प्रसंग

**दोहरा**

श्री सतिगुर हरिराइ जी भुगति मुकति दें दान ।
नित अनेक ही होति हैं सिक्ख सहित कल्यान ।। १ ।।

**चौपई**

देश बिदेशनि ब्रिंद अकोर । अरपति कहिं बिनती कर जोरि ।
श्री सतिगुर जी कारज मोहू । सिद्ध भयो हति बिघन संदोहू ।। २ ।।
रावर की करुना बल पाइ । ततछिन होए मोहि सहाइ ।
कोइक कहति पुत्र मुझ दीनसि । प्रथम अकोर इही कहि लीनसि ।। ३ ।।
को भाखति मम दारिद खोवा । इह दसवंध आप को होवा ।
केतिक कहति पुरहु मम आस । यांते मैं आन्यो धन पास ।। ४ ।।
इत्तयादिक कहिं बिनै हज़ारनि । आनि चढ़ावति हैं उपहारनि ।
घटि घटि की लखि अंतरजामी । पुरहिं कामना सिक्खयनि, स्वामी ।। ५ ।।
केतिक नर परलोक सिधारनि । उपहारनि अरपाइं हज़ारनि ।
रिदे शुद्ध हित, दरशन देखैं । दुखद बिकारनि हरहिं अशेखै ।। ६ ।।
दूर देश ते इक गज[1] आइव । कांहू न्रिप ने भेट चढ़ाइव ।
सुंदर महां बिसद जिस रंग । गुन समुदाइनि सहित मतंग[1] ।। ७ ।।
सतिगुर निकटि रहै बलवंता । तिस गज को भा बिदति ब्रितंता ।
जहिं कहिं सुन्यो गुन्यो गुननी को । केचित् आवहिं पिखिनि तिसी को ।। ८ ।।
बिच कहिलूर, हुतो बड राजा । रहै संग बहु सैन समाजा ।
दुतिय हंडूरी मिल्यो नरिंद[2] । करति परसपर अनंद बिलंद ।। ९ ।।
श्री गुर बसहिं हमारे देश । तिन के निकटि मतंग विशेष ।
नहीं आप ते देवहि कोऊ । चढ़ि कै चलहु मांग लें सोऊ ।। १० ।।

1. हाथी 2. हंडूरिया राजा



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भेद हजारहुं नितप्रति आवै। मेला भर्यो रहै अरपावै।
अबिलगि तिन ते कछु न लीनो। हमरे देश बास चिर कीनो ॥ ११ ॥
इम मसलत जुग राजे करिकै। मंदमती लालच को धरिकै।
सैन सकेलि दिखावनि कारन। ले करि चढ़े, न कीनि बिचारन ॥ १२ ॥
दरशन के मिसि करि चलि आए। कीरतिपुरि पहुंचे हरखाए।
निस महिं डेरा कर्यो सु बासे। खान पान गुर पठ्यो सु पासे ॥ १३ ॥
उठे प्राति को करि इशनाना। बसत्र शसत्र जुति ह्वै सवधाना।
दरशन हित श्री गुर ढिग आए। सुभट संग बड भीर सु ल्याए ॥ १४ ॥
आगै सतिगुर बहिर निकसि कै। सभा लगाई महा फरश कै।
जोधा सनध-बद्ध हुइ सारे। बसत्र शसत्र भूखन तन धारे ॥ १५ ॥
सिपर[1] क्रिपानै कंचन खचे। धनु इखधी[2], सुंदर बिधि रचे।
शबद रबाबी गावति रागे। जिन को सुनि गुर गुन अनुरागे ॥ १६ ॥
खरो नकीब[3] अवाज प्रकाशति। गुरु सुजसु ते रिदा हुलासति।
चोबदार को गन है खरो। कंचन दंड सुहावत खरो ॥ १७ ॥
खरे मेवरे भूखन सने। सिक्खयनि की अरदासनि भने।
केतिक मखमल फरश करावा। चहूं और तें रुचिर सुहावा ॥ १८ ॥
बहुत मोल के बिछे गलीचे। चोआ अतर सुगंधि उलीचे।
चहुं दिशि ते महिकार उठंती। जरीदार गादी दुतिवंती ॥ १९ ॥
बड उपथानु[4] धरे इक ओरे। गुंफे ज़री सु रेशम डोरे।
बैठे बीच गुरु हरिराइ। को उपमा कवि कहै बनाइ ॥ २० ॥
शक्र[5] सहति सुर गर परवारति। बैठे बिशनु मनहुं दुति धारति।
इक सौ एक पाट गर जामा। बहु सूखम शोभति अभिरामा ॥ २१ ॥
कुंडल करन दिपति हैं मोती। कटक जराऊ जोति उदोती।
नवरतने सोहिति इस भांती। नवग्रह बैठे करि जनपांती ॥ २२ ॥
मुकता माल अमोल बिसाला। सुरसरि[6] जल धारा जनु चाला।
पाग पेच बांधे बिधिखरी। ऊपरि जिगा ज़राउनि जरी ॥ २३ ॥
सबज़े[7] सभि जे हीरन संग। ससि इकरे जनु उज्जल रंग।
चमर चारु ऊपर को फिरिही। बिसद मरालनि के समसर ही ॥ २४ ॥
सिपर खड़ग गुर धारनि कर्यो। निकटि सरासन इखुधी धर्यो।
इत राजे दोनहुं मिलि करिकै। आवति, भे मसलत को धरिकै ॥ २५ ॥

1. ढाल 2. तूणीर 3. चारण 4. तकिए 5. इंद्र 6. गंगा 7. पन्ने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जे करि जाच्यो देहिं न हाथी। सुभट सैन बड दोनो साथी।
बल करि छीन लेहिं ले चलि हैं। कहां गुरु क्या हमरे तुल है ॥ २६ ॥
इह बुधि करि भूपति अज्ञानी। आए निकटि राज मद मानी।
अंतरजामी श्री हरिराइ। जानी सभि जो मति ठहिराइ ॥ २७ ॥
नाश करें इनको हंकार। बेमुख मति के अंध गुबार।
इम सतिगुर ने मति ठहिराई। तबि न्रिप आए भट समुदाई ॥ २८ ॥
पद अरबिंद बंदना करिकै। बैठे निकटि हरख हूं करिकै।
भट सभि सचिव[1] पहारपती के। करि करि नमो सभा थित नीके ॥ २९ ॥
कुशल प्रशन करि श्री हरिराइ। कितिक बारता अपर चलाइ।
बहुर कह्यो मल्लयनि को धरिबो। भे भूपति ! तुम करहु निहरिबो ॥ ३० ॥
इम कहि श्री गुर मल्लय बुलाए। सुनति हुकम को सो चलि आए।
जिन के तन दीरघ बल भारे। न्रिपनि कबहुं अस नहिं निहारे ॥ ३१ ॥
किस को मल्ल भिरै अबि आइ। प्रान हानि करि देति गिराइ।
डरति न सनमुख होवहि कोई। कुशती करति परसपर दोई ॥ ३२ ॥
आनि तिनहुं अभिबंदन ठानी। देखि दुहनि दिश गुरु बखानी।
भिरहु परसपर न्रिपन दिखावहु। ज़ोर आपनो सकल जनावहु ॥ ३३ ॥
हुकम पाइ, करि वंदन दोऊ। भिरे, बिलोकति है सभि कोऊ।
भुजनि ठोकते शबद उठावैं। नरन पहारी रिदे डरावैं ॥ ३४ ॥
ऊपर तरे दाव बहु करें। धरती गरत[2] भयी जित फिरें।
इत उत होति अंक भरि परें। कबि ऊपरि कबि होवसि तरें ॥ ३५ ॥
भेख भयानक भूर भए हैं। महां ओज ते तेज तए हैं।
द्वै घटिका लगि आपस मांही। भिरति दाव नाना दिखराहीं ॥ ३६ ॥
दोनों सम बल धारति रहे। निकटि बुलाइ गुरु बच कहे।
अपर मल्ल नहिं थिरहि अगारी। हेरति, रहे त्रास करि भारी ॥ ३७ ॥
तुम सम हो, कम बल नहिं कोऊ। देखे सभिनि भिरति अबि दोऊ।
निरने करि निजबल को कहीअहि। कितिक धरति हो, हम तिस लहीअहि ॥ ३८ ॥
हाथ जोरि बोले तिह समैं। क्रिपा आप की को बल हमैं।
कूर न कहैं सभा महिं अबै। निज बल शकति सुनावति सबै ॥ ३९ ॥
तुम ढिग राजे जो इन राज। सकल बाहनी सहत समाज।
इन दोइनि के सैल उठाइ। निज हाथनि ते दें उलटाइ ॥ ४० ॥

---
1. वज़ीर 2. गर्त, गड्ढा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गिर कहिलूर हंडूरनि जोइ। दो हम करें उचावनि दोइ।
कहहु परसपर देहं भिराइ। चूरनि होइ परहिं धर जाइ॥ ४१॥
हुकम आप करिबे की देरि। कहो करहिं, नहिं बिलमहिं[1] फेरि।
कह्यो हमारो कूर न जानहु। लखहु कूर, पतीआवन ठानहु॥ ४२॥
सुनि तिन ते राजे उर डरे। कहां त्रास ते कंपा धरे।
हमरे मन की गुर ने जानी। यांते इह लीलला अबि ठानी॥ ४३॥
करामात साहिब बड जाने। राज हंकार आपनो हाने।
उठि दोनहु तबि चरनी परे। निरहंकार बिनै बहु करे॥ ४४॥
हम अज्ञात राज हंकारी। बुद्धी भूलनहार हमारी।
बखश लेहु प्रभु करुना करिकै। दास आपने रिदै बिचरिकै॥ ४५॥
बिकसे सतिगुरु पिखे नरेश[2]। क्रिपा ठानि कीनसि उपदेश।
गुर घर सों हंकार न करीअहि। नहिं आप को अधिक बिचरीअहि॥ ४६॥

**दोहरा**

सुनि सतिगुर उपदेश को नंम्रि तेज हंकार।
बिदा होइ गमने सदन राजे जुगम उदार॥ ४७॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'परबतेशरनि प्रसंग'** बरननं नाम सपतमो अंशु॥ ७॥

---

1. देर नहीं करेंगे 2. राजे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ८

# भगत भगवान प्रसंग

**दोहरा**

संन्यासी भगवान गिर बिचर्यो देश बिदेश ।
आवति भयो पंजाब महिं जिसके भाग विशेष ॥ १ ॥

**चौपई**

जहिं कहिं महिम सतिगुर केरी । सभिहिंनि ते सुनि श्रोन[1] घनेरी ।
मन अनुराग जागिबे लागा । दरशन चाहति भा वडभागा ॥ २ ॥
संन्यासी के पंथ मझारा । धन कुल को अभिमान निवारा ।
धरि लालस दरशन को आवा । रिदे मनोरथ एव उठावा ॥ ३ ॥
जे करि परमेशुर अवतारु । अवनी[2] परि ठानति बिवहारु ।
तौ मुझ को दरशन इम देवैं । रुप चतुरभुज को धरि लेवैं ॥ ४ ॥
मैं पुन बनौं सिक्ख इन केरा । जिन को पसर्यो जस बहुतेरा ।
सतिगुर अंतरजामी जाना । बने चतुरभुज रुप सुजाना ॥ ५ ॥
श्यामल अलसी कुसम[3] मनो है । द्रिग बिसाल दल कमल बनो है ।
संख गदा धरि पदम चक्क को । मुख मंडल सुठ भ्रिकुटि बक्क को ॥ ६ ॥
पीतांबर शोभति बनमाल । को कवि बरन सकै दुति जाल ।
क्रिपा भरे द्वै नैन रसीले । मुसकावति मुख मंद छबीले ॥ ७ ॥
सरितापति सुदरता सार । शेष सारदा पाइं न पार ।
आइ कर्यो दरशन जबि ऐसे । अनंद निमगन न तन सुधि कैसे ॥ ८ ॥
कितिक समे मैं जबि सुधि पाइ । पर्यो दंडवत गुरु अगुवाई ।
'शरनि शरनि' राखहु दे हाथि । मुख अनाथ को करहु सनाथ ॥ ९ ॥
सिख्य आपनो कीजहि स्वामी । तीन लोकपति अंतरजामी ।
दीन दयाल है बिरद तुमारा । भवसागर ते लेहु उधारा ॥ १० ॥

---

1. कान 2. धरती 3. अलसी का फूल



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बेस पलटि गुर वाक सुनायो। हरि दरशन तुम इह ठां पायो।
सिरीचंद गुरु नानक नंद। तिन अनुकंपा[1] कीनि विलंद।। ११।।
मिहरचंद पर सो अत्रि तहां। बेदी वंश बिखे जसु महां।
तिह को मिलहु सु पूरहि आसा। दरसहु जाइ धरहु बिस्वासा।। १२।।
इह ठां उह ठां भेद न कोऊ। एकहि रूप जानियो दोऊ।
तबि भगवान देहुरे गयो। मिहरचंद पग परसति भयो।। १३।।
मिलि करि भेद उदासी लीनि। सत्तनाम को मंत्र सु दीनि।
भगत भगवान नाम तबि धर्यो। ले आज्ञा पुन जग मैं फिर्यो।। १४।।
बिचरति जिसी देश को जाइ। गुर मारग उपदेश द्रिड़ाइ।
रुचि करि लोक मिलहिं तिस नांही। देखति अचरज ह्वै मन मांही।। १५।।
बहुत सथान फिर्यो अकुलायो। बावे मिहरचंद ढिग आयो।
जगत ब्रितंत सुनावनि कीनि। नहिं उपदेश मोहि किस लीनि।। १६।।
सतिगुर की महिमा को जानैं। गुरबाणी पर निशचा ठानैं।
मिहरचंद तबि कह्यो सुनाइ। भगत भगवान गमहुं[2] तिस थाइं।। १७।।
जिन ढिग गुरता रहे प्रकाश। सो पूरहिंगे तुमरी आस।
तखत हुकम ले कारज कीजै। तबि उपदेश जगत कउ दीजै।। १८।।
बहुरो करैं प्रतीत तुमारी। नर मानहिं जिम करो उचारी।
प्रिथम सिखी तैं महिमा भारी। क्यों नहिं शरधा उर महिं धारी ? १९।।
सुनि पुन गमन्यो तहिं भगवान। चाह्यो सतिगुर दरस महान।
बहुत बिसूरत मैं बड भूला। नहीं रह्यो गुर के अनुकूला।। २०।।
गुर के बचन, भेख मैं पाइव। पुन दरशन को नहीं सिधाइव।
सकल घटनि के अंतरजामी। मोहि पतित को जानसि खामी।। २१।।
हरि बनि दरशन मोहि दिखाइव। कोटि जनम के पाप मिटाइव।
मैं नहिं लख्यो, भयो अपराधी। रह्यो समीप न, सेव न साधी।। २२।।
सतिगुर ते मुहि अपनो कीनि। कर्यो सु दरशन भा बुध हीन।
अपनि आप को अधिक धिकारति। गुर पूरन के गुन बिचारति।। २३।।
उमगयो प्रेम द्रिगनि जल छावा। गदगद गिरा अधिक बिकुलावा।
प्रेम बिबसि हुइ मग नहिं बूझै। जहिं कहिं गुर मूरति ही सूझै।। २४।।
कबहूं ऊचे बोलति दौरे। कबहूं रुदति बैठि बनि बौरे।
चल्यो न जाइ, थिर्यो नहिं जाइ। मोन न रहै, न बोलि सकाइ।। २५।।

1. कृपा 2. जाओ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कबि घूंमति जिम अमली होइ। सुध शरीर की बिसरयो सोइ।
पंथ न सूझै द्रिग[1] जल रुकयो। महां प्रेम ते इंद्रै थकयो ॥ २६ ॥
इम ब्याकुल बहु दिन मैं आवा। जहिं सतिगुर को थान सुहावा।
प्रेम मगन हुइ द्वारे आइव। चरन धूरि ले मसतक लाइव ॥ २७ ॥
अंतर जाइ दरस जबि पावा। भयो मुकति, सतिगुरु बुलावा।
आगे आउ भगति भगवान। अब तौ दरगहि भा परवान ॥ २८ ॥
सुनि गुर ते चरननि परि रह्यो। इंद्रै थकति जाति नहिं कह्यो।
पूरन प्रेम हेरि करि तास। दियो रिदै हरिनाम प्रकाश ॥ २९ ॥
क्रिपा धारि निज हाथ लगायो। सिर उठाइकै बाक् सुनायो।
'अबि तुम गमनहु पूरब देश। मम बच ते महिं दिहु उपदेश ॥ ३० ॥
सुनति बाक को सगरे धारहिं। मिलहिं जि तुमहिं अदेश उचारहिं।
गुर आज्ञा को ले तबि गयो। पूरब को उपदेशनि कियो ॥ ३१ ॥
भयो प्रकाश रिदे हरि हरे। जो देखै सो चरनी परे।
जहां ठहिर त्रिकुटि बनावै। ध्यान गुरु हरिराइ लगावै ॥ ३२ ॥
एव भगत भगवान बिसाला। कीनसि पूरब देश निहाला।
नरनि हज़ारनि की कल्यान। करति भयो दे नाम सु दान ॥ ३३ ॥
किसू देश ते संगति आई। बंदन करी भेट अरपाई।
केतिक दिन रहि बैठे पास। करति भए पुन इम अरदास ॥ ३४ ॥
नाम धरीक सिक्ख सतिगुर के। करउ बिनासनि संसे उर के।
पाठ करें हम नित गुरबानी। अरध प्रमारथ रीति न जानी ॥ ३५ ॥
जो मारग गुर शबद बताइव। सो हम ते नहिं जाइ कमाइव।
पाठ करन को नेम निबाहैं। पढ़ें सदा बानी अवगाहैं ॥ ३६ ॥
क्या होवै गति अंत हमारी। इह संदेह नित रिदे मझारी।
अस उत्तर बूझें अति बाढे। कहि सभि हाथ जोरि भे ठांढे ॥ ३७ ॥
श्री हरिराइ कछू नहिं कह्यो। सभि के मन मैं संसै रह्यो।
तिह छिन होइ तुरंग असवार। गमने बाहर हेतु शिकार ॥ ३८ ॥
बरखा होइ हटी तिस काला। सूरज निकस्यो द्योत बिसाला।
मग महुं हंडी[2] पुरातन हेरी। तहां ठीकरी चमक घनेरी ॥ ३९ ॥
घ्रित बासन की फूटी परी। थित हुइ गुरु मंगावनि करी।
निज कर महिं धरि बाक् बखाना। बानी पाठ प्रशन तुम ठाना ॥ ४० ॥

---

1. आँख 2. हांडी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिस को उत्तर लीजहि सारे। जो गुर शबद कमावहिं प्यारे।
सो जनु भुगति मुकति सुख पावैं। चलहिं पंथ, जो शबद बतावैं ॥ ४१ ॥
पाठ सधारनि जो नित करे। नेम निबाहनि मैं अनुसरे।
पाठ प्रताप करै गति ऐसी। सुनहु श्रोन हम भाखहिं जैसी ॥ ४२ ॥
जिम ठिकरी बहु बरख बिताई। लगे तेज निकसी चिकनाई।
तिम जे पठहिं नेम गुरबानी। अंत देति कल्यान महानी ॥ ४३ ॥
रही चिकनता ठीकरि मांहि। त्यों बानी गुन रहि मन तांहि।
अंतकाल[1] फल करहि प्रकाशे। जथा कुसम तिल पाइ सु बासे ॥ ४४ ॥
पाठक की सहाइता करिही। अंत काल पीड़ा परहरिही।
गुरमुख ते सिख्यनि सुनि करिकै। दई प्रदच्छन[2] चहुं दिशि फिरिकै ॥ ४५ ॥
सभि के रिदै वधी सु प्रतीत। बानी पढ़िवे की बड प्रीति।
सतिगुर मैं पग पंकज बंदे। जानि आपने भाग बिलंदे ॥ ४६ ॥
गुर बानी जानी सुख कारन। गुरबानी बहु पतिति उधारन।
गुर बानी पढ़ि करि गति लहैं। ज्यों क्यों पढ़नि सदा चित चहैं ॥ ४७ ॥
अरथ समुझि कै समुझे बिना। बिना प्रेम कै प्रेम सु घना।
पठनि नेम गुरबानी करैं। घटिका, जाम[3] कि निस दिन ररैं ॥ ४८ ॥
चलि आए पुन खेत शिकारे। देखति पालति म्रिगनि हज़ारे।
दे उपदेश करति कल्याने। पर उपकार सदा गुर ठाने ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे '**भगत भगवान प्रसंग**' बरननं नाम अषटमो अंशु ॥ ८ ॥

1. फूल 2. परिक्रमा 3. घड़ी या पहर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ६

## तुरकेशर प्रसंग

### दोहरा

अबि तुरकन की बारता कछुक सुनहु वुधिवान ।
करे खोट सतिगुरनि सों यांते करौं बखान ।। १ ।।
बिना कहे सु प्रसंग को सुनिते संसै होइ ।
यांते सुनीए विती जिम गुर सों बादत सोइ ।। २ ।।
शाहुजहां तुरकेश के सुत उपजति भे चार ।
करति राज सभि देश को बध्यो समाज उदार ।। ३ ।।

### चौपई

चक्क्रवरति इम राज भयो है । चार चक्क इक हुकम थियो है ।
जहिं तहिं देशनि विखे अशेष । दोही सुनिते त्रास विशेख ।। ४ ।।
जिते न्रिपति सभि आज्ञाकारी । हाथ जोरि हुइं खरे अगारी ।
रजपूतनि तनुजा[1] के डोरे । सुनि सुंदर लेवति करि जोरे ।। ५ ।।
हिंदवाइनि को महां कलंक । जथा अंक लाग्यो सु मयंक[2] ।
जिन ते भयो उपाइ न कोए । धीर सूरता छोरि खलोए ।। ६ ।।
तुरक अधीन होइ करि सारे । आइं छिप्र, जबि लेति हकारे ।
जहां पठावहिं तहिं चलि जांही । शकतिहीन हुइ रहिं अगवाही ।। ७ ।।
किस पर किम जे रिस हुइ जाए । बिकट मुहिंम पठहिं मरिवाए ।
तनकु हुकम जो मोरनि करिही । लरहिं, करहिं अपने अनुसरही ।। ८ ।।
पोशिश जहिर अज़ाहर[3] लाइ । रिस करि कइ दे पहिराइ ।
करहिं संघार, न जीवति छोरहिं । हुइ मवास चड़ तिस को तोरहिं ।। ९ ।।
सैना कोश[4] दुरग[5] बड भारे । जिन को पय्यति नहीं शुमारे ।
सभि देशनि को दरब बिसाला । दिल्ली आनि भरहिं नर हाला[6] ।। १० ।।

---

1. बेटी 2. जिस तरह चाँद को दाग 3. गुप्त 4. ख़ज़ाना 5. किला 6. आबियाना



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बीर शसत्रधारी महिपाला। जे रजपूत कहाइं बिसाला।
तिनकी भई दशा जबि ऐसे। सुता देनि लौ बरनी जैसे।। ११।।

अपर हिंदुवनि की क्या गिनती। तुरकनि अग्र करहिं सभि बिनती।
छीन धरम दिन प्रति बड होवा। समुख दुषट के को न खरोवा।। १२।।

राज कर्यो चिर काल बिसाला। बली भयो पूरब तप घाला।
जेठो नंदन दारशकोहा। शाहुजहां को तिस संग मोहा।। १३।।

जान्यो नेक निकटि सो राखा। तखत बिठावौं इस अभिलाखा।
वलीअहिद कीनिस तिस ताईं। शुभ गुन पूरन उचित बडाई।। १४।।

दुतिय पुत्र तिस ते लघु नाना। नाम मुहंमद शुजह बखाना।
तिस को देश अशेष बंगाला। दीनि पठाइ कीनि महिपाला।। १५।।

पुत्र तीसरो हुतो नुरंगा। दुरमति लखहि शाहु मन भंगा।
तिसको दीनसि दक्खण देश। तहां पहुंचि करि बन्यो नरेश।। १६।।

चतुरथ शाहुजहां को ढोटा[1]। नाम मुराद बखश सो छोटा।
दियो देश इस को गुजरात। कीनसि राज तहां वख्यात।। १७।।

अपने अपने जाइ टिकाने। करे भोग जैसे मन भाने।
किते बिरख बीते इस रीति। सैन दरब कहु संचति नीति।। १८।।

तखत बैठिबे सरब लुभावैं। निज सथान थिति दाव तकावैं।
यांते फिकर करति रहिं भारी। संचहिं दरब चमूं करि त्यारी।। १९।।

निज निज देश अब सनि बासे। मन भावति सभि करति बिलासे।
शाहुजहां रहि दिल्ली मांहि। दारशकोह रख्यो सुत[2] पाहि।। २०।।

चिरंकाल जबि बीत गयो है। शाहजहां तन रोग भयो है।
दिन प्रति प्रबल बधी बीमारी। जो किसहूं ते जाइ न टारी।। २१।।

सूबे अरु उमराउ बडेरे। रोके सकल होति नहिं नेरे।
जे समीप नित आवति जाति। सभि को बरज्यो रहति इकांत।। २२।।
व्याकुल कीनसि रोग महांने। कछू न आछो मन महिं माने।
वडो पुत्र इक पहुंचै तास। कै हकीम दे औखधि रास।। २३।।

बहिर बात पसरी बिपरीति। शाहु जियनि महिं संसै चीति।
घने दिवस देख्यो नहिं काहीं। यांते लखीयति जीवति नांही।। २४।।

1. युवराज 2. पुत्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कर्यो छुपावन पुत्र बडेरे। बंदुबसतु करि कै सभि केरे।
करति दलील अनेक प्रकारा। लोकनि बिखै रौर प्रसतारा[1] ॥ २५ ॥

देश देश महिं सुध बिसतरी। मर्यो शाहु, पर तूशनि करी।
सुनि करि चोर धारवी बली। लूटनि लगे देश बिधि भली ॥ २६ ॥

निबलनि को बलवान बडेरे। हतहिं प्रान ले दरब घनेरे।
मच्यो फतूर दूर अरु नेरे। नाश होनि लगि देश चुफेरे ॥ २७ ॥

दारशकोहु तबै इम जाना। कबज़ा करनि आपनो ठाना।
जो खत पत्र वहिर के आवैं। आप सु लैवे लग्यो पड़ावै ॥ २८ ॥

समुझहि सुनहि, हुकम को देति। किसहूं गहै कैद करि लेति।
केतिक को करतो बखशीश। आइ वकील निवावहिं सीस ॥ २९ ॥

कार-गुज़ार होति भा सोई। तिसे सलाम सभिनि को होई।
शाहुजहां के बिनां बिलोके। निकटि जानि को जबि के रोके ॥ ३० ॥

नहिं यकीन लोक उर लहैं। शाहुजहां जीवति अबि अहै।
ज़िंदा ही मुरदा भयो जानै। घर अंतर है कही न मानै ॥ ३१ ॥

यांते पर्यो देश मैं रौरा। सूबे सभि आकी निज ठौरा।
छीनि छीनि धन, धुजनी[2], राखी। करहिं जंग इम भे अभिलाखी ॥ ३२ ॥

पंथचलन ते नर हटिरहे। लेति खसोटि फिरति जे लहे।
इस प्रकार जबि भा अंधकारा। को नहिं सुनिहै किनहू पुकारा ॥ ३३ ॥
सभि देशनि मैं गयो प्रसंग। सुनति शज़ादे भए निशंग।
हुतो मुराद बखश जो तात[3]। तिस काइम कीनसि गुजरात ॥ ३४ ॥
कारदार, बेगम के तहां। गहि लीनसि छीनसि धन महां।
कहि करि अधिक मार करिवाई। गाड्यो काढि दियो अगुवाई ॥ ३५ ॥
बेतकसीर[4] जु अपनि दिवान। तिसको हत्यो प्रान करि हान।
निज कबज़े महिं सभि कुछ कर्यो। निकटि निकटि जो देश निहर्यो ॥ ३६ ॥
लूटि सरब को गरद मिलायो। लशकर लरिबे हेतु बनायो।
तोप तुपक बारूद सु गोरे। शसत्र बंद बहु दीनसि घोरे ॥ ३७ ॥
निज सुभटनि बखशीश करी है। कंकन जिगा जराव जरी है।
जबि इह गाढ़ो भयो बिसाले। इम सुनिकै जो हुतो बंगाले ॥ ३८ ॥

1. शोर पड़ गया 2. सेना 3. पुत्र 4. बेकसूर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिसी रीति तिसने तहिं कीनो। निकटि जु देश छीन करि लीनो।
धन दिलेश को हुती जो नेरे। लीनि खसोट पाइ करि घेरे॥ ३९॥

बंदुबसत करि ले धनुरासी। पटने हुइ पुन आवा काशी।
कबज़ा अपन कर्यो तहिं सारे। आन जु मिले तिनहि सतिकारे॥ ४०॥

शस्त्र सुभट घोरा गज भारे। दे करि दरब सरब शिंगारे।
ज़ोर शोर अपनो दिखरायो। काशी लगि सभि राज दबायो॥ ४१॥

हरख मुहंमद शुजा बिलंद। सैन सकेलनि कीनसि* ब्रिंद।
अपर देश महिं रौरा महां। लूटहिं बली न्रिबल जहिं कहां॥ ४२॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे '**तुरकेशर प्रसंग**' बरननं नाम नवमो अंशु॥ ९॥

---

* इकट्ठी कर ली

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १०

# दारशकोह प्रसंग

### दोहरा

पर्यो रौर सभि ठौर महिं मग अटके चहुं ओर ।
नर नारी महिं त्रास भा जथा पोत[1] जलघोर ।। १ ।।

### चौपई

दारशकोह सुनि सुधि सारी । शाहुजहां के तीर उचारी ।
गरदश कीनसि देश अशेष । ग्राम नगर भे दुखी विशेष ।। २ ।।
शहज़ादनि बड धूम मचाई । सरक्श हुइ आफात[2] उठाई ।
निकसहु वहिर करहु कुछ गमन । इत उत देखति ह्वै हैं दमन ।। ३ ।।
नांहि त लशकर परे पठावहिं । बंधहि ज़ालमनि, हतहिं, पलावहिं ।
आफताब[3] सम उदे न होवहिं । सुख प्रकाश कहु किम जग जोवहि? ४ ।।
जोर, उलूका श्रिगाल अंधेरा । दबकहिं दषट देखि इक वेरा ।
शाहुजहां सुनिकै सुत बाति । भयो लचार, मौन पछुताति ।। ५ ।।
तन महिं रुज, उत राज बिनाशे । दोनहुं कठन पर गर फासे ।
सलिता सोच बिखै मन बहिऊ । नहिं अलंब थिरता कित लहिऊ ।। ६ ।।
सुख दुख सदा रहैं सभि साथ । कहां रंक अरु अविनी नाथि ।
गिनती ठानति राति बिताई । हठ ते निज त्यारी करिवाई ।। ७ ।।
श्री जमना जल महिं कल तरनी । दिढि सुंदर चित्रति बहु बरनी ।
तिस पर जाइ प्रयंक टिकावा । घटा टोप[4] ऊपर करि छावा ।। ८ ।।
सने सने तिह छोरि चलावा । तीर तीर बडि कटक सिधावा ।
जहां अकबरावाद सथान । जाइ पहूंचे करति पयान ।। ९ ।।
कर्यो निवेस अशेष स सैना । खान पान करि सुपते रैना ।
सभि राजपूत भूप चलि आइ । लाखहुं धुजनी भी इक थाएं ।। १० ।।

---

1. जहाज़ 2. विद्रोही होकर उपद्रव शुरू किए 3. सूर्य 4. बड़ा चंदोआ



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तोप, जंबू, व्रिंद जंजैल[1]। छुटति बिदारहिं जे बड सैल।
तहिं भी नहिं यकीन नर क़रैं। शाहुजहां को नहिं निहरैं ॥ ११ ॥
कर्यो दिखावा नवका माहि। मर्यो शाह जीवनि हुइ नांहि।
देखा देखी न्रिप[2] उमराव। थिरे साध सभि तिसही थांव ॥ १२ ॥
पुन जसूस सुध देशनि ल्याए। मुहंमदशुजा प्राचि दिशि राए।
वंगला जुति देश घनेरे। कबज़ा करि दिढि भयो वडेरे ॥ १३ ॥
पटने ते काशी चलि आयो। लशकर जंगी संग सुहायो।
जंग अरादा करति बिलंद। छीन लीनि धन कीनसि व्रिंद ॥ १४ ॥
दारशकोह सुनति रिस भर्यो। निज मसलति करि मसलत ढर्यो।
जै सिंह भूत हुतो कछवाहा। तिह बुलाइ सादर वच प्राहा ॥ १५ ॥
लशकर लिहु तमाम पतिशाही। तोप जंबूरनि जेतिक चाही।
फील तुरंग संग निज लैके। मोहि पुत्र लिहु साथ मिलैकै ॥ १६ ॥
जाहु मुहंमदशुजा समीप। बजरहु तिह फतूर, अवनीप[2]।
जै सिंह जै करना रण भारी। इस कारन ते पठ्यो बिचारी ॥ १७ ॥
इम सुनि चढ्यो बजाइ नगारा। लशकर चल्यो संग जिस भारा।
गोरे बहु बरूद ले साथ। गमन कीओ जै सिंह नर नाथ ॥ १८ ॥
मारग शीघ्र उलंघि करि गए। रण मुकाबले लशकर भए।
नहिं सुचेत हुइ जंग मझारे। गाफल, गरव गरब कहु धारे ॥ १९ ॥
कांशी निकटि बहादर पुरा। तहां मुहंमद शुजा उतरा।
तबि जसूस सुध हेत पठाए। आइ तिनहुं अस घात बताए ॥ २० ॥
सुपति पर्यो अबि नहीं सुचेत। जै सिंह चढ्यो जुद्ध के हेतु।
जाइ पर्यो डेरे पर भारो। तोप तुपक तीरनि तरवारो ॥ २१ ॥
भयो जुद्ध घमसान घनेरा। कटे बीर श्रोणित[3] छित गेरा।
गज बाजी बहु तरफति गिरे। चटपट सुभट सु कटि कटि मरे ॥ २२ ॥
हलाहली बड रौर मचावा। सुनति शाहु फरज़ंद[4] डरावा।
चड़ि तरनी पर चल्यो पलाई। नहीं संभार्यो करी लराई ॥ २३ ॥
शहिर मुंगेर पहूच्यो जाइ। डेरा लूटति भयो समुदाइ।
अधिक त्रास पायो मन मांही। तहिं भी ठहिर सक्यो सो नांही ॥ २४ ॥
गयो बंगाले की दिशि दौरि। जाइ संभारी पूरब ठौर।
तहां जाइ कीनसि तकराई। सभि सैना पुन भले बनाई ॥ २५ ॥

1. बड़ी बंदूक 2. राजा 3. खून 4. बादशाह का बेटा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पटणा नगर मुंगेर महाना। जै सिंह तहां बिठायो थाना।
सरब नरनि को धीरज दीना। बिजै लीनि कारज सभि कीना ॥ २६ ॥
शुजामुहंमद के उमराव। गहे कितिक नहिं भाजनि पाव।
तिनहुं समेत फते की बात। लिखि भेजी जै सिंह बख्यात ॥ २७ ॥
तूरनगामी दए पठाइ। पहुंचति भए शाहु जिस थाइं।
सुनति फते सुधि दारशकोहु। अधिक प्रसन रिदे महिं होहु ॥ २८ ॥
जो पकरे सो निकटि बुलाइ। तिन को हास करति बिगसाइ।
कहां मुहंमदशुजा तुमारा। भाजि गयो पट लाज उतारा ॥ २९ ॥
जिस ऐसे के तुम उमराव। भई दशा डर प्रान बचाव।
अबि तुम जाहु बंगाले फेर। देहु मुमारख* जीवति हेरि ॥ ३० ॥
पुनहि न करहु काम कबि ऐसे। पाउं कुहारी मारन जैसे।
अस कहि तिन कउ दीनसि छोरि। गमने तुरत बंगाले ओर ॥ ३१ ॥
जाइ तांहि को खबर बताई। इम भाखति तेरो बड भाई।
कर्यो कुकाज निलाज बिसाले। इम पुन नहीं करहु किस काले ॥ ३२ ॥
पुनहि पठायो लिखि परवाना। जै सिंह ! समुख रहो तिस थाना।
बंदुबसत इस देशनि करहु। उतरहु तहां काल कुछ थिरहु ॥ ३३ ॥
इस प्रकार करि कै तिस देश। होति भयो सु प्रसंग अशेष।
रह्यो अकबराबाद मजार। आगे अपर सुनहुं बिसथार ॥ ३४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे '**दारशकोह प्रसंग**' बरननं नाम दसमो अंशु ॥ १० ॥

---

* वधाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ११

# दाराशकोह प्रसंग

**दोहरा**

दखण अरु गुजरात हित करि बिचार मनु माहि।
हुतो जोधपुर को न्रिपति तिस बुलाइ करि पाहि ॥ १ ॥

**चौपई**

सादर कह्यो देखि शुभ नैन। भो जसवंत सिंह ! सुनि बैन।
करहु काज गुजरात सिधारहु। जो अनुसारि न होइ संघारहु ॥ २ ॥
जोधा महां बली तूं अहैं। रजपूतनि मैं बिदत्यो रहैं।
दखन दिशते करि तकराई। रोकहु सैन जि नौरंग आई ॥ ३ ॥
जे नौरंग रहि अपने देश। जाहु मुराद बखश के पेश।
तिसको करिकै देहु निकासि। कै गहि ल्यावहु हमरे पास ॥ ४ ॥

इम कहि वहुत करी बखशीश। हरखति हुइ करि दिल्ली ईश।
गज अरु तुरंग दरब को दीनि। जरे जवाहर कंचन भीन। ५ ॥

महांराज को कीनि खिताब। लिए भूप तबि साथ अदाब।
अपनो कासमखां उमराव। दीयो संग करि लरनि बनाव ॥ ६ ॥

तोप, तुपक, जंबूर, जंजैल। चलैं संग कुंचर[2] जनु सैल।
महां बाहनी ओरड़ चली[3]। मनहुं लोह घट बड कलमली ॥ ७ ॥

प्रथम मालवे महिं चलि गए। दुरग उजैन आइ दिढ कए।
पुनहि नरबदा को दरीआउ। बंदुबसत को कीनि बनाउ ॥ ८ ॥
मारग घाट रोबिबो कीने। ब्रिंद सैन कहु डेरा दीने।
कासम खा़ं तिस ही थल छोरा। चल्यो मुराद बखश की ओरा ॥ ९ ॥

बीजा पुर महिं आदलख़ान। हुतो मवासि दुरग बड थान।
निकसि मिल्यो साहस को छोरि। दीए रजतपण[4] आनि अकोर ॥ १० ॥

---

1. सावधानी 2. हाथी 3. सेना टूट पड़ी 4. रुपए



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

**दोहरा**

जसवंत सिंह पति जोधपुरि रिदे बिखे हरखाइ।
लिखिकै खत पठवनि करयो शाहजहां जिस थाइं॥ ११॥

**चौपई**

सुनिकै सुधि[1] सगरी बिगसाई। शाहिजहां तबि इम ठहिराई।
इहां आगरे नगर कझारे। हवा माफकति[2] नहिं हमारे॥ १२॥
यांते दिल्ली चलिबो बनि है। बधति जाति बीमारी तन है।
दारशकोह फरेबनि भनिकै। करे टिकावन केतिक दिनकै॥ १३॥
पुनि द्योस इक कीनसि त्यारी। गमन्यो रजधानी निज प्यारी।
सने सने जमुना जल मांहू। नवका पर चढ़ि करि नरनाहू[3]॥ १४॥
सने सने गमने दिन तीन। कितिक कोस पर डेरा कीनि।
इतने महिं सुधि पहुंची आइ। लर्यो मुरादबखश बल पाइ॥ १५॥
जसवंत सिंह भजि करि गयो। सिवर[4] लूटिबो तिसने कियो।
दारशकोह सुनि जबि कान। छुटि कमान जनु लाग्यो बान॥ १६॥
पुन बूझ्यो हलकारनि साथ। किम किय जंग जोधपुरि नाथ?
कित पलाइकै गमन्यो सोऊ? कहां शजादे हैं अबि दोऊ? १७॥
सुनति चार ने सकल सुनाई। जिस प्रकार तहिं परी लराई।
दोनो दल मुकाबले होए। बरखति लोह मनहुं घन होए॥ १८॥
तोपन की पंकति करि ठांढी। गोरनि[5] मार करी दलगाढी।
तुपक, तीर, तोमर, तरवारैं। तकितकि तर बीरनि संघारैं॥ १९॥
हलाहली बोलति ललकारहिं। समुख शसत्र खावहिं अरु मारहिं।
कितिक काल की भई लराई। जसवंत पर्यो रिपुनि पर धाई॥ २०॥
खैंचि म्यान ते तीव्र सरोही। रुंड मुंड कीने निज द्रोही।
जित जित धावहि हेला मेला। लशकर लरितो अधिक धकेला॥ २१॥
गिरे तुरंग बीर रण मारे। मुगलखान ज्यों परे मुनारे।
कड़ा कड़ी करवारनि[6] माची। श्रोणत बह्यो धूलि छिति राची॥ २२॥
फौज मुरादबखश की सारी। करी पलावनि रण इक बारी।
फिरे होइ काइर बड बीरा। लरति लराई धरहिं न धीरा॥ २३॥
लख्यो मुरादबखश इव जंग। गिरे अनेक कटे जिन अंग।
दिश तोपनि की पहुंच्यो जाइ। साहस धारि जुद्ध महिं आइ॥ २४॥

---

1. खबर 2. अनुकूल 3. बादशाह 4. डेरा 5. गोले 6. तलवारों की

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सभि रजपूत रु सैन तुमारी। लूटति मारति जाति अगारी।
तोपैं करी बरोबर सबै। अनिक-घातनी छोरी तबै ॥ २५ ॥
दुहुं दिशि तो तोपैं धमकाईं। अवनी रन की सरब हिलाई।
महां शबद जनु नभ पटि गिरा। कै क्यामिति[1] को दिन तबि करा ॥ २६ ॥
बधे जाति रजपूत सु जेते। गोरे लगे उडे सभि तेते।
जे अभीत जोधा तिस थाइं। भए घाति नहिं देखनि पाइं ॥ २७ ॥
तिनहुं संघारि भए पशचाती। धरधराति कातुर नर छाती।
मरे जंग ते परहि न रोके। भाजति लाज तजी अविलोके ॥ २८ ॥
जसवंत करति जतन का हारि। भाजे सो न हटे तिस बारि।
देखि बाहनी केरि हवाल। निज जीवन महिं त्रास बिसाल ॥ २९ ॥
धीरज त्यागि पलायनि होवा। जसवंत रन महिं नहीं खलोवा।
कियो मुरादबखश तबि हेला। मारहु धरहु रौर बहु मेला ॥ ३० ॥
सिवर बिखै भी थिर नहि रह्यो। पाछे आवति हेला लह्यो।
कटति जाति जे रहित पिछारी। पाइ न जमे जतन किय भारी ॥ ३१ ॥
राजपूतनि जबि डेरा छूट्यो। आनि मुरादबखश सभि लूट्यो।
रह्यो ठहिर, नहिं गयो अगारी। उतरि पर्यो तहिं हरख्यो भारी ॥ ३२ ॥
फते होनि कहु दियो नगारा। शलखैं करिवाइव बहु बारा।
सुभटनि कहु दीनसि बखशीश। पेश खुदाइ निवाइव सीस ॥ ३३ ॥
इह सभि सुनिकै नौरंग धाइव। इत आवन कहु कूच कराइव।
चमूं ज़ोर बहु तोपनि[2] तयारी। सरब समाज कीनि जिनि भारी ॥ ३४ ॥
लेहा देह शीघ्र ही आवति। करि बखशीशनि सुभट बधावति।
केतिक दिन में पहुंच्यो जानहुं। रावरि करहु जीअ जिम ठानहुं' ॥ ३५ ॥
सुधि सुनि दारशकोह सचिंता। पदर[3] समीप बखानि ब्रितंता।
नौरंग दिशि ते त्रास महाने। सुत पित चित महिं नित अति ठाने ॥ ३६ ॥
सो अबि हादर बिदतै होवा। तिह मेटैं किम जतन न जोवा।
डेरा हटहि आगरे होहि। इम ठहिराइव दारशकोहु ॥ ३७ ॥
शाहजहां के मन नहिं भाई। तऊ पुत्र हित कहि न सकाई।
हटे अकबराबाद नगर को। तोपादिक ले चमूं सगर को ॥ ३८ ॥
तीन दिवस महिं पुनि चलि आए। टिके आगरे सिवर लगाए।
मौजूदाति[4] लीनि सभिहिनी की। करि बखशीश जराउ सु धन की ॥ ३९ ॥
जिस पहि जो नहिं सो तिह दीनसि। आरासत लशकरि सभि कीनसि।
मिले आनि जेतिक उमराव। निज निज ले करि संग प्रभाव ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे 'दारा शकोह प्रसंग' बरननं नाम इकादशो अंशु ॥ ११ ॥

1. प्रलय 2. कई बार बंदूकें चलाईं 3. पिता 4. हाज़िरी 5. तैयार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १२

# दाराशिकोह नौरंग जंग प्रसंग

**दोहरा**

शाहजहां को कहति भा इम आवति मन मोहि।
रोकहुं नवरंग भ्रात कहु चढ़ि करि आगे होहि ॥ १ ॥

**चौपई**

सुत को समुझावनि हित कह्यो। नौरंग दुरबुद्धी बड लह्यो।
कुटिल महां हठ करनि अरुढ़ा। छल बल बिखै अधिक मति मूढ़ा ॥ २ ॥
तोहि सुभाव सरल म्रिदु रुरा। तिह संग उतरि सकहिं नहिं पूरा।
यांते टरे रहो नहिं जाहू। आइ त आवनदिहु उतराहू ॥ ३ ॥
दारशकोह सुनति नहिं मानी। पदर साथ इम भाखति बानी।
इहां आइ जे करहि कुचाला। पुनहि चलहि क्या बस तिस नाला ॥ ४ ॥
अबि मैं जाइ अगारी तहां। रोकवि चंबल सलिता जहां।
शाहुजहां सुनि रह्यो हटाइ। दारशकोह न मन मैं ल्याइ ॥ ५ ॥
बजवाइव कहि कूच नगारा। सभि उमरावनि करि कै त्यारा।
गज बाजनि पर पाखर डारी[1]। पैदल जुगति बाहनी भारी ॥ ६ ॥
चल्यो उमड़ करि लशकर ऐसे। क्यामत महिं सलितापति[2] जैसे।
तोप नकर[3] जनु बदन पसारा। तोमर गन पंनग[4] आकारा ॥ ७ ॥
कहां लगे बरनौं बिधि सारी। सनै सनै चलि पंथ मझारी।
चंबल सलिता कूल बिसाला। तहां पहुंचि डेरा सभि घाला ॥ ८ ॥
निज बसि नवका करि तकराई। पाइ आव ढिग धुजनी[5] छाई।
बंदुबसत सलिता कहु ठान्यो। रोकहिं इहां न दें तिस जान्यो ॥ ९ ॥
इम तहिं रह्यो ठानि तकराइ। रितु ग्रीखम की बहु तपताई।
दुसहा[6] उमरावनि कहु तेई। रहत 'सरद-खानहिं महिं जेई ॥ १० ॥

---

1. हाथी तथा घोड़ों पर ज़ीनें डाल दीं 2. समुद्र 3. तेंदुआ 4. बड़े साँप
5. सेना 6. कठिन



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दुखी होइ बस चलहि न कोई। तऊ रिदे महिं इरखति होई।
इम इन डेरा कीनसि तहिं जबि। रह्यो आगरे शाहि जहां तबि ॥ ११ ॥
आगे तिन कहु सुनहुं प्रसंग। मिल्यो मुराद वखश नौरंग।
एक होइ करि धुजनी प्रेरी। लरिबे की दिढ सौज घनेरी ॥ १२ ॥
तोप तुपक रहकला जंजैल। ब्रिंद जमूरे तोरहिं सैल।
गज बाजी आसूदे करिकै। सभि जोधानि धीर कह धरिकै ॥ १३ ॥
सने सने गमनति जबि आए। सलिता की सुध को सुनि पाए।
फिकरबंद बहुते हुइ रहे। उतरनि घाट कहूं नहिं लहे ॥ १४ ॥
अनिक जतन ठानति मनि मांहि। उतरनि सलिता पावति नांहि।
बसन हार तिह ग्राम जु नेरे। करे हकारन सुमति जि हेरे ॥ १५ ॥
तिनसों बूझन कीनसि राहू। वख्शयो दरब अधिक नरनाहू।
तिनहुं खोलिकै आनि जनाइव। बीस कोस इस ते मग पाइव ॥ १६ ॥
बिन तरनी[1] तुम चढ़े चढ़ाए। होवहु पार नहीं बिलमाए।
सुनि हरख्यो नौरंग चढ़ि पर्यो। तहां नदी को जाई उतर्यो ॥ १७ ॥
सैना सभि सुखैन उतराई। तोप रहकला लीनि लंघाई।
आइ उरार सिवर कहु घाला। निस दिन रहे सुचेत बिसाला ॥ १८ ॥
दारशकोहु जबहि सुधि पाई। बैठ्यो रह्यो बहुत बिसमाई।
सभि उमराव समीप हकारे। लरन हेतु मसलत कहु धारे ॥ १९ ॥
भई भोर करि कूच नगारा। चढ्यो बजाइ बंब बल भारा।
तुरंग बाहनी पैदल सारी। तोप तुपक की करि बहु त्यारी ॥ २० ॥
दल मुकाबले दोनों होए। बांधे पंगति ब्रिथरि खरोए।
रची जमूरनि की बहु सैना। शसत्र हतनि हित शत्रुनि सैना ॥ २१ ॥
कई हजार तोप करि खरी। छोटी बडी बरोबर करी।
हाथिनि के हौदनि पर राइ। गाढे होइ चढ़े उमराइ ॥ २२ ॥
तेज़ तुरंग तुराए ताजी[2]। फांदति मनहुं पाइ नट बाजी।
पैदल दिढ़ पिखि त्रास गनीम। जे नौकर पुशतैनि कदीम ॥ २३ ॥
निज निज मिसल सकेलि कठोर। गहि गहि शसत्र करे रन रौर।
दुंदभि, ढोल, पणव समुदाए। पूर्यो शबद गगन गरजाए ॥ २४ ॥
इसी रीति नौरंग वड मानी। दिढ़ रचना धुजनी सभि ठानी।
उमरावनि कहु करि करि गाढ़े। सैना सहित जमूरे ठांढ़े ॥ २५ ॥

---

1. किश्ती 2. एक किस्म के बढ़िया घोड़े

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लरन लगे दोनहुं दल ऐसे। गरजति भरे महां धन जैसे।
गोरी अरु गोरनि की मार। बरखा करका की इकसार ॥ २६ ॥
आतश अरु बरूद के मेल। धूम धार परसति नभ[1] गैल।
मनहुं घटा बड शोर उठावहिं। जहिं कहिं अविनि गगन कहु छावहिं ॥ २७ ॥
तोप तुफंग महां करकंती। बार बार जनु गाज गिरंती।
धौंसे धुंकारति चहुं ओरी। जन घन गरजहि घुमड़ति घोरी ॥ २८ ॥
सुभट गिरहिं घाइल तरफंते। श्रोणित बमते कितिक मरंते।
गरे लगहिं उडहिं नर बाजी। दुहिदिशि भिरहि सैन, नहिं भाजी ॥ २९ ॥
गुलका[2] लागे फूटहिं अंगा। टूटहिं असती[3], श्रोणत रंगा।
तोप तुपक आदिक गरंजति। मार मार जनु सुभट भजंति ॥ ३० ॥
करति हिरेखा बाजी घने। गज चिंघारति त्रासन सने।
आमिख श्रोणित करदम[4] होवा। परे म्रितक भीखन थल जोवा ॥ ३१ ॥
जाइ परहिं गन करि करि हेला। ज्वाला बमणी[6] तजि तिस बेला।
मुंड तुंड फोरति इम गोरी। मनहुं गुलेलनि हंडीअनि फोरी ॥ ३२ ॥
दुहुंदिशि तोपनि चलहिं हज़ारों। अविनी कंपनि जनु डर भारो।
पर्यो शबद को रौर महाना। कही बात जनु सुनिय न काना ॥ ३३ ॥
अंधा धुंधबारूद उठायो। धूम धूम जुति चहुंदिशि छायो।
मनहुं मेघ सगरो इक थाइं। छित पर फिरि छाए इक भाइ ॥ ३४ ॥

### भुयंग प्रयात छंद

बडे बीर बांके करैं जुद्ध सुद्धं। बध्यो बंधु वैरं बली बोलि क्रुद्धं।
धहाधाहि तोरें छुटैं ब्रिंद गोरे। पलीने धुखैं त्रास ते दौर घोरे ॥ ३५ ॥
भजे जाहिं ऐसे न थांभे थंभे हैं। महां नाद ते छोभ कुंडी कुभे हैं।
किते धीर छोरी भए भीरु[6] भारी। भजे जाति मारे, न होशं संभारी ॥ ३६ ॥
मरे सूर कोई महां रौर[7] माचा। वह्यो श्रोण ऐसो रंज रंग राचा।
परे बीर चीरं भयो लाल रंगं। उडे संग गोरानि जोधानि अंगं ॥ ३७ ॥
कित घाइ घाए घने घोर घूमी। झठाझट्ट जूझे जुझारे त झूमी।
उलत्थे पलत्थे फुलत्थे खिलारी। हथावत्थ[8] होए मथे शीघ्रचारी ॥ ३८ ॥
अमूरेनि गोरेनि सूरे खपाए। प्रलै काल जैसे गिरे भूम छाए।
मनो लाग दावा[9] बनं बंस केरा। पतंगानि जोधा अपे आपि गेरा ॥ ३९ ॥

---

1. आकाश 2. गोली 3. हड्डी 4. कीचड़, पंक 5. बंदूक 6. कायर 7. शोर 8. हाथापाई 9. जंगल की आग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छटे जाति हाथी गए टूट हौंदा। मनो ह्वै बपारी चले बेचिसौदा।
महां नाद होयो दिशा पूर सारी। भयो अंधकारं उडै धूर भारी॥ ४०॥
कई लाख जोधा जुटे अंग मांही। हजारों भरे घाइ घूमे तहां ही।
परी मार ऐसी भयो मेल शत्रुं। शुभे शसत्र असत्रं महां रंग चित्रं॥ ४१॥
वंधं टोल बोलैं उपायं करंते। तजैं एक बारी तुफंग हनंते।
क्रिपानैं लई ऐंचि म्यानैं तरंगी। मनो चमकती चारु श्यामं भुजंगी[1]॥ ४२॥
मिले आप मांही सु ढालं ढनंके। तका तक्क ताडैं सु तेगं तमंके।
कटैं ग्रीव[2], बाहू, मिटैं पैर नांही। अधो आध चीरे परे भूम मांही॥ ४३॥
कथै कौन केतो भयो जुद्ध घोरं। सुनै नांहि दीसै मच्यो शोर ज़ोरं।
गिने कौन एते मरे जंग मांही। किते घाइ बोलैं भकाभक्क तांही॥ ४४॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे 'दाराशकोह **नौरंग जंग प्रसंग**' बरननं नाम दवादशमो अंशु॥ १२॥

---

1. काले साँप 2. गरदन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १३

# दाराशकोह प्रसंग

**दोहरा**

मच्यो जंग भीखन महां तबि हांडे[1] राठौर।
परे नुरंग सैन पर रौर मचाइव दौर॥ १॥

**चौपई**

राम सिंह आदिक जे हांडे। भिरे जुद्ध जनु रन थंभ गाडे।
कतल करति नौरंग की सैना। चली सरोही बाढ़ सु पैना॥ २॥
न्रिभै बीर डोले रण मांहहू। खेलहिं गन चाचर[2] चित चाहू।
तुपकैं चलति रुचिर पिचकारी। श्रोणति भिगति रंग बहु डारी॥ ३॥
चलहिं जबूरनि के गन गोरे। सो कुमकुमे लरति दुहुं ओरे।
मार मार करि गीतनि गावहिं। बादति बाजति उमग बढ़ावहिं॥ ४॥
तबि नुरंग को लशकर भागा। नहीं रठौरनि को लिय आगा।
कातुर होइ पीट दिखराई। तमक[3] तेग की सहि न सकाई॥ ५॥
छोर लाजभाजे जबि हेरे। नौरंग पहुंचि तोप गन नेरे।
भरि बरूद छररे छुटवाए। दई दलेरी सु दिल बधाए॥ ६॥
जबहि तोपखाना बड छूट्यो। राठौरनि कहु कर जनु टूट्यो।
राम सिंह आदिक मरि गए। अपर सुभट सनुदायन हए॥ ७॥
रहि गए दिल्ली के उमराव। सरद घरनि जे बैठहिं छाव।
सभा बिखे जे बनि ठनि आवहिं। जो संकट कुछ सहिन सकावहिं॥ ८॥
कितिक नुरंगे के ढबदार[4]। सो कैसे ठहिरैं बिच रार।
पासा करनि लगे जबि सोइ। धीरज तबि करि सकिहै कोइ॥ ९॥
लशकर हट्यो नुरंगे केरा। जबहि सिथल शत्रु दल हेरा।
मार मार करि छुटी तुफंग। परे दौरि सनमुख बिच जंग॥ १०॥

---

1. राजपूतों का एक गोत्र 2. होली 3. तेज़ी 4. तरफ के



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाज परी धुजनी गन इत को। ठहिर न सकी धीर तजि चित को।
केतिक नौरंगे ढिग मिले। संघर[1] बिखे होति नहिं खले ॥ ११ ॥

इम कुसूत पिखि दारशकोह। भेद सैन को जान्यो द्रोह।
अस न होहि मुझि दिहिं पकराइ। इह नुरंग है दुष्ट बडाई ॥ १२ ॥
इत्तयादिक गन तरक बिचारि। सरल सुभाव त्रास को धारि।
चल्यो भाज डेरे लगि आइव। तहिं कुछ अपनी वसतु संभाइव ॥ १३ ॥
तुरत तहां ते आगे चल्यो। नगर आगरे भी नहिं मिल्यो।
दिल्ली दिशि को मुख करि दौरा। सभि कुछ तज्यो, हुन जिह ठौरा ॥ १४ ॥
द्वादश संग सऊर[2] सु आए। बड मंज़ल करते श्रम पाए।
देखहु श्री परमेशुर भानो। जो समाज महिं महिद महानो ॥ १५ ॥
इक दिन महि तिस अस गति होइ। निकटि त्याग गमने सभि कोई।
दिल्ली दुरग मझार प्रवेशा। अत चिंतातुर तज्यो अशेषा ॥ १६ ॥
उत नौरंग करि फते लराई। अनिक दुंदभी[3] महद बजाई।
दारशकोह सिवर जहिं घाला। आइ ठाढि तहिं हरख बिसाला ॥ १७ ॥
सकल समाज सकेल्यो तहां। भई निसा करि बासा रहा।
उमरावनि कहु दे बखशीश। हीरनि मुकतागन दिपती सु ॥ १८ ॥
तांते कर्यो नुरंगे कूच। नगर आगरे आनि पहूच।
सभि उमराव मिले संग आइ। भे अनुसारि ज़ोर इन पाइ ॥ १९ ॥
शाहिजहां तहिं पर्यो बिमारी। नज़रबंद कीनसि दल भारी।
पिता जानि नहिं राखि बडाई। कर्यो कैद उर बड दुषटाई ॥ २० ॥
पुन कुपेच[4] चितवयो मति मंद। भ्रात मुरादबखश दल ब्रिंद।
दारशकोह संग इक होइ। बिगर परहिं नहि मुझ सों दोइ ॥ २१ ॥
कपट ठानि तिस को गहि लयो। जो इस केर सहाइक भयो।
दोनहु गहि लीनसि करि गाढ़े। शसत्र गहे गन भट रहिं ठांढ़े ॥ २२ ॥
निज अनुसारि करे दल तीनो। पुनहिं कूच दल करि करि दीनो।
दिल्ली के सनमुख हुइ गमना। पतिशाहनि के जहिं बहु भवना ॥ २३ ॥
दारशकोह सकेली सैन। यांते त्रास धारि दिन रैन।
शीघ्र बाहनी करि समुदाई। दिल्ली गहौं जाइ बड भाई ॥ २४ ॥
दारशकोह सुन्यो करि त्रासा। जिह उमरावनि नहिं भरवासा।
नहीं गहाइ देहिं मिल सारे। यांते निकसि चल्यो डर धारे ॥ २५ ॥

1. रणभूमि 2. सवार 3. नगारा 4. बुरी विधि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ब्रिंद जवाहर ज़ाहर जोति। चहुंदिशि मैं प्रकाश जिन होति।
सरब निकासि संग ले चल्यो। पंच हज़ार सुभट गन मिल्यो॥ २६॥
करे कूच गंगा दिशि गयो। तहां जाइ कुछ ठहिरति भयो।
गिरन बिखै श्री नगर जु पुरिहै। तहिं पहुंचनि को इच्छा धरिहै॥ २७॥
ले सैना तहिं जाइ पहूंचे। दुरग चुगिरदे गिर गन ऊंचे।
कितिक काल तहिं करिकैं बास। सुख सों रह्यो छोरि उर त्रास॥ २८॥

श्री नगरेशुर तबै बिचारा। बराबाद हुइ देश हमार।
क्रिखी उजारहिं फिर करि सारे। उजरि जाहिं दिन कितिक मझारे॥ २९॥
पंच हज़ार तुरंगम पर्यो। गज समुदाइ सु आनि उतर्यो।
प्रजा भई सभि रीति दुखारी। केतिक होए ग्राम उजारी॥ ३०॥

इम बिचारि गिरपति* ने कह्यो। दारशकोह सुन्यो, मन लह्यो।
नहिं होवहि इस थान गुज़ारा। उतरन चाह्यो देश मझारा॥ ३१॥
सिवर कूच ते कीअसि पयाना। सने सने चलि मग गिर थाना।
कितिक दिवस महिं चलिकरि आवा। श्री कीरतपुरि जहां सुहावा॥ ३२॥

श्री हरिराइ हुते तिस मांही। अनिक संगतां जहिं चलि जाहीं।
मनो कामना पूरन होइ। दरशन करहि आनि सभ कोइ॥ ३३॥
घनी भीर नितप्रति तहिं होवै। आइ जाइ गुर दरशन जोवैं।
अनिक आनि उपहार चड़ावैं। दरब जवाहर जे दुति पावैं॥ ३४॥

शसत्र बसत्र बहु मोले आनैं। धरि धरि दरसैं गुर पग मानैं।
दारशकोह पहूंच्यो आइ। पिखि सुंदर थल सिवर लगाइ॥ ३५॥
तंबू शमिआने गन ताने। झंडा गाड्यो ऊच महाने।
सकल बाहनी डेरा कीनसि। छाया जल को सुख जहिं चीनसि॥ ३६॥
शाहिजहां सुत बैठ्यो तबै। कीरतपुरि को पिखि कै तबै।
बूझनि लग्यो निकट उमराव। कौन बसै ? पति को इस थांव ? ३७॥
वलीअहिद ते सुनि करि कान। हुतो संग को सिख तिस थान।
सरब बारता भाखि सुनाई। प्रथम भए गुर नानक राई॥ ३८॥
पीर मीर सिध साधिक जेते। अज़मत वल नंम्री किय तेते।
ऐसो भयो न जग मैं कोई। मिलि करि नंम्रि होइ नहिं जोई॥ ३९॥
बिदति भयो दस चार तवक महिं। सत्तिनाम उपदेश सबक महिं।
मिलि मिलि करामात जिनि पाई। ते भी या जग गिने न जाई॥ ४०॥

---

* पहाड़ी राजा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिह गादी पर सपतम थान। श्री हरिराइ बिराजति जानि।
श्री गुर हरिगुबिंद बज्र धामा। महां सुभट इन केरि पितामा ॥ ४१ ॥

तोहि पदर सों बिगरि परे हैं। चार बारकरि ओज लरे हैं।
लल्ला, कंबर लशकर सने। जंगल बिखै जंग करि हने ॥ ४२ ॥

अबहि बिराजति तिन को पोता। ब्रह्मज्ञान अरु अजमत[1] पोता।
जिन मिलिने कहु फल हुइ भारा। क्रिपा द्रिषटि ते ह्वै न संसारा ॥ ४३ ॥

तिन के दरशन कउ बडभागे। पुरहिं काम, आवहिं अनुरागे।
देश बिदेशनि सागर, दीप। आइं समीपहि रंक महीप[2] ॥ ४४ ॥

अनिक उपाइन कछु अरपावहिं। अबि सतिगुर इस पुरि दरसावहि।
दाराशकोह प्रशंसा सुनिकै। हरख भयों उर, निज भल गुनिकै ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासि '**दाराशकोह प्रसंग**' बरननं नाम त्रोदशमो अंशु ॥ १३ ॥

---

1. चौदह लोकों में 2. ग़रीब-अमीर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १४

# दाराशकोह प्रसंग

**दोहरा**

प्रथमै दारशकोह को देउ प्रसंग सुनाइ।
लिख्यो पठ्यो खत सुध लई जिस बिधि श्री हरिराइ ॥ १ ॥

**चौपई**

दारशकोह महां सतिसंगी। परमेशुर पद प्रीति उमंगी।
मीआं मीर पीर इक पूरो। आतम ज्ञान लहै मन रुरो ॥ २ ॥
तिसको खादम* दारशकोहु। ब्रह्मज्ञान अभिलाखी होहु।
करी पीर ने क्रिपा सुनाइव। रुप आतमा केरि जनाइव ॥ ३ ॥

पतिशाहित महिं रीति फकीरी। मिहर पीर की मीरी पीरी।
करहि बिचारन निस दिन आतम। मिलि संतनि खोजहि परमातम ॥ ४ ॥
जहिं कहिं उत्तम सुनिकै संत। करहिं मेल, चरचा भगवंत।
पित ते कहि बहु बार सुनावा। बरिआई करि तखत बिठावा ॥ ५ ॥
तऊ मेल संतनि सों राखै। ब्रह्मज्ञान निशचै अभिलाखै।
मीआं मीर निकटि इक दिन मैं। बैठ्यो हुतो प्रेम बहु मन मैं ॥ ६ ॥

अपर संत केतिक तहिं बैसे। चरचा करहिं ज्ञान लहिं जैसे।
करी बारता काहूं संत। श्री नानक सतिगुर भगवंत ॥ ७ ॥
नरनि उधारनि करे हजारों। गिनती करे न आइ शुमारो।
कृपा द्रिषटि ते रूप दिखावैं। जनम मरन को कषट मिटावैं ॥ ८ ॥
पुन तिन ते गादी पर पाछे। गिनहि कौन गुन जेतिक आछे।
अबि सोहति सतिगुर हरिराइ। दीन बंधु सिख बंध मिटाइ ॥ ९ ॥
ब्रह्म ज्ञान के हैं बड दानी। ब्रिती समान लाभ अरु हानी।
मीआंमीर तबहि सुनि कह्यो। सो तो तन खुदाइ को अह्यो ॥ १० ॥

---

* सेवक



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करिबे लोकनि की कल्लयान। धरि सरूप भे बिदति जहान।
श्री हरिगोबिंद तिनहुं पितामा। आयुध धरि कीने संग्रामा ।। ११ ।।
मुलाकात तिन साथ हमारी। भई हुती सुख करने हारी।
बंधे शर्हा तुरक मतिमंद। तरकति कीनो शोर बिलंद ।। १२ ।।
पाक अलहि की मूरति अहैं। जिनके गुन को पार न लहैं।
दरशन उचित सदा तिन केरा। सिमरे नाम अनंद बडेरा ।। १३ ।।
सुन्यो सुजसु अस दारशकोहु। चितवति किम दरशन तिन होहु।
पतिशाहित के काज बडेरे। पुन दुश्मन हुइ रहे घनेरे ।। १४ ।।
यांते अवसर मिलनि न भयो। रिदे प्रेम दिन प्रति बिरधयो।
खत महिं लिखिकरि प्रेम पठाइव। मिलिन शौक नामा उपजाइव ।। १५ ।।
श्री हरिराइ निकटि पहुंचायहु। कासद गयो बंदगी गायहु।
श्री गुर सुनति भए खुलवाइ। प्रेम शौकनामा जु पढ़ाइ ।। १६ ।।

### बैंत

वलाइत वली अहिलि आरफ कमाल।
जिन्होंके मिले रब्ब पाइ अहि जमाल।
आरफ फकर रब्ब की पाक ज़ात।
जिन्हों की मिहर संग होयहि निजात ।। १७ ।।
कादर पिखिनि इक शक्ल दरमियां।
जिन्हों पै मिहर तुम तिन्हों इहु लियां।
मिलों आप के संग अल्लहु करम*।
हासल मुरादैं, मिटावो भरम ।। १८ ।।
मिलिनि शौक मोको बिलोकौं दरस।
लगौं आनि कदमनि ह्वै दिल हरश।
न औसर मिलै पातशाहति जंजाल।
सु माही मनिंदे फसे म्यानि जाल ।। १९ ।।
मुरशद मीआंमीर मोहू कहा।
मुनीदम सिफत बड सु दीदन चहा।
शबो रोज़ दीदार को शौक है।
जो तालब फकर का तिसे जौक है ।। २० ।।
मिहर की नजर आप राखो कमाल।
कि खाहश भई मोहि दरशन जमाल।

* बख्शिश

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पदर बादशाही दई बहु कही।
दिले मो फ़ज़ीहत[1] की खाहिश नहीं॥ २१॥
कि लाचार होकरि सु कीनी कबूल।
पदर को हुकम मैं न करि सक अदूल।
करो मिहर साहिब मदद आप एहु।
कि दोज़ख अगनि से मुझे राखि लेहु॥ २२॥

दोहरा

श्री सतिगुर हरिराइ जी सुन करि भए क्रिपाल।
तिस आशै को जानि करि संतनि प्रेम बिसाल॥ २३॥
परमेश्वर प्रापति बिखै दिल मों शौक बिलंद।
तबि लिखवाइ जबाब दिय कहि करि बाक मनिंद॥ २४॥

बैंत

तुम पर फज़ल[2] रब्ब कादर भया।
कि मुरशिद जु आरफ करी है दया।
बडी बादशाही लई कीन शौक।
लख्यो आप में अपन आपा सु ज़ौक॥ २५॥

तुमैं खौफ दोज़क नहीं, जानि लेहु।
कि पीरां फकीरां सों लाग्यो सनेहु।
जु गाफल बडे बादशाही सु पाइ।
परैं बीच दोज़क न लागै हवाइ॥ २६॥

खतरा न कीजै पतीजै सदीव।
न दोज़ख बहिशतै, भयो एक सीव।
करो दीनकी बादशाही अट्टल।
हज़ारों जुग मों रहोगे अच्चल॥ २७॥

बडे भाग जागे पग्यो प्रेम रंग।
जु मोला मिल्यो वे नमूना बिरंग।
सदा आफरी[3] जो कमाई तैं कीनि।
मुरशदनि मिलिकै लियो रुप चीन॥ २८॥

रहो अनंद माते नहीं खौफ कोइ।
भई खैर तुमरी जिता जनम जोइ।

1. दुर्दशा 2. कृपा 3. शाबाश

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खलक चिहलबाज़ी[1] न कीना सनेहु।
फनाह, चंदरोज़ा, न काइम रहेहु ॥ २९ ॥

**चौपई**

श्री सतिगुर लिख पठ्यो जवाब। दारशकोह सु गयो शिताब।
पढ़ि करि महां अनंद को पायहु। मनहुं रंक सुरतरु[2] कर आयहु ॥ ३० ॥
जिन के वचन सदा हैं साचे। हमरे बडिअनि संग उवाचे।
भए तथा नहिं मिटहिं कदाई। जग महिं नर लाखहुं पतिआई ॥ ३१ ॥
दीनसि दीन सलतनत मोहू। अवचल पद महिं प्रापति होहू।
अबि निशचा प्रापति मन मेरे। सतिगुर बाक् भने जिस वेरे ॥ ३२ ॥
भयो रोग जबि मम तन मांही। पठी हरड़ चौदहि सिरसाही।
लौंगु रु मुकता दीनसि ऐसे। खोजिय जग पईअहि नहिं तैसे ॥ ३३ ॥
जिन की सति कीरति दिशि चारी। संत महंतनि महिं बिसतारी।
जहिं कहिं सुनी न छानी अहै। ब्रह्म ज्ञानी जिन को जसु कहैं ॥ ३४ ॥
मौला पाक मिहर जबि धरै। तबि सतिगुर को दरशन करैं।
इम चितवति बीत्यो चिरकाल। वहुर जंग भा नौरंग नाल ॥ ३५ ॥
सिरी नगर ते चलि करि आयहु। कीरति पुरि मैं डेरा छायहु।
पूरवले प्रसंग चितआए। मिलौं अबहि सतिगुर जिस थाएं ॥ ३६ ॥
श्री हरिराइ सिख जे तहां। तिनहि बुलाइ बूझिबे चहा।
कौन देश अबि गुरु बिराजें? कबिके गए समेत समाजे? ३७ ॥
हमरो मेल होहि कै नांही? कहहु सकल, सुधि हुइ तुम पाहीं'।
तबि सिखनि सभि कह्यो सुझाई। बिते दिवस कुछ, गुरु चढ़ाई ॥ ३८ ॥
तीर बिपासा गोइंदवाल। माझे देश गए गुर दयालु।
आप मिलिनि की लालस धरो। नर परधान पठावनि करो ॥ ३९ ॥
अभिलाखा सो कहै तुमारी। सुध पावहिं जबि गुरु अगारी।
रहैं टिके, नहिं इत उत होइं। प्रेम आप को परखहिं सोइ ॥ ४० ॥
दारशकोह सुनी सिख बानी। कीनि सराहनि, नीके मानी।
मुख्य पास को मनुख पठावा। सकल हकीकत को समुझावा ॥ ४१ ॥
क्रिपा ठानि दरशन इक बारी। मोकहु देहु, लालसा धारी'।
तूरन गमन्यो गुर ढिग गयो। सकल प्रसंग सुनावति भयो ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे '**दाराशकोहु प्रसंग**' बरननं नाम चौदशमो अंशु ॥ १४ ॥

---

1. चलायमान 2. कल्प वृक्ष

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु १५

# श्री हरिराइ गोइंदवाल खडूर आगवन प्रसंग

**दोहरा**

श्री सतिगुर हरिराइ जी कीरतिपुरि को छोरि ।
निज बडिअनि गुर थांन को देखनि माझे ओर ।। १ ।।

**चौपई**

पतिशाहित मैं रौरा परे । शाहिजहां के सुत जबि लरे ।
श्री सतिगुर सत्तुद्रव[1] को तरिकै । सैना संग सकेलनि करि कै ।। २ ।।
देश दुआबा उलंघे सारे । बाजति दुंदभि जाति अगारे ।
ज़री बादले चारु निशान । फहिरति आगे, चलहिं किकान[2] ।। ३ ।।
कबि सतिगुर सिवका चढ़ि चालें । कबहुं तुरंग अरुढि बिसालैं ।
कबि मतंग पर हुइं असवार । संग वाहिनी[3] कितिक हज़ार ।। ४ ।।
सुभट कुदावति चलहिं तुरंग । गुरु दिखावहिं मनहुं कुरंग ।
इम गमनति गे पास बिपासा । सिंधु गामनी सुजल बिलासा ।। ५ ।।
नौका करी सकेलनि सारी । चढ़ि सैना गन उतरी पारी ।
अहै तीर पर गोइंदवाल । जाइ पहूंचे गुरु क्रिपाल ।। ६ ।।
नमो करी दूरहि ते हेरि । गए बापिका[4] पर गुर फर ।
करि पूजाको नीर शनाने । अंम्रित जल पुन कीनसि पाने ।। ७ ।।
श्री मुख साथ महातम कहा । मुकति सथान कह्यो गुर महां ।
श्री गुर अमर जु संतति[5] सारी । जहिं कहिं ते निज निकटि हकारी ।। ८ ।।
सिक्ख आइ करि बंदन भले । श्री हरिराइ संग सभि मिले ।
किरतन को करिवाइ अगारे । सने सने गुर पुरी पधारे ।। ९ ।।
प्रेम करे सुनिते गुरबानी । भल्यनि[6] की कुल बसै महानी ।
श्री गुर अरदास चौबारे । जहां वसे बहु वरख गुज़ारे ।। १० ।।

---

1. सतलुज 2. घोड़े 3. फ़ौज 4. बावली 5. संतान 6. भल्ला, खत्रियों का एक गोत्र



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तहां गए सतिगुर हरिराइ। प्रथम सुपान[1] थान सिर न्याइ।
चरन धूरि मसतक पर लाई। महिंमा महां बखानि सुनाई॥ ११॥
श्री सतिगुरु अमर इस थान। इह रज करति पुनीत महान।
भए सधित आगै चौबारे। दीप सु धूप कुसम बिसतारे॥ १२॥
संगति मेल भयो बडि आइ। भई भीर बहु थाइं न पाइ।
बैठि गए सतिगुर द्रिढ़ आसन। होति अखंड कीरतन भाशन[2]॥ १३॥
भांति भांति की बहु मठिआई। कर्यो तिहावल नर समुदाई।
नीकी रीति सभिन वरतायो। तूशनि धरे शबद मन लायो॥ १४॥
श्री गुर अमर जु संतति आई। इकठी हुइ सभि मिलि समुदाई।
गुर ने निज गर संग लगाई। करि आदर निज निकटि बिठाई॥ १५॥
कुशल प्रशन सभिहिनि संग कीने। सूखम बसत्र पहिरिबे दीने।
सभिहिनि को पोशिश पहिराई। दरब मंगाइ दियो समुदाई॥ १६॥
करि संतुशट अधिक सनमाने। नमो ठानि करि पुनि तिस थाने।
वहिर आइ डेरे महिं गए। खान पान करि पुन सुपतए॥ १७॥

जाम जामनी ते पुन जागे। सगरी सौच करिनि गुर लागे।
नीर बावली को मंगवाए। इक सौ इक गागर भरि ल्याए॥ १८॥
तिन सभि सों गुर कीनि शनान। हुइ एकाकी ठान्यो ध्यान।
निज सरूप महिं ब्रिती टिकाई। आनंद-मगन भए गोसाईं॥ १९॥

प्राति होति बिकसे द्रिग कंज[3]। नमो करी मिलि सेवक पुंज।
इक सौ एक पाट को जामा। सूखम बहुत सेत अभिरामा॥ २०॥
पहिरनि तन महिं तबिहूं कर्यो। सिपर खड़ग को आगै धर्यो।
तरकश धनु जुति शसत्र बिसाला। धारन करे चारु सभि द्याला॥ २१॥
तहिं ते पुरि दिशि सीस निवाअहु। श्री गुर अमर नाम सिमराअहु।
असु[4] अरुढि हुइ चले अगारी। दुंदभि बज्यो भई धुनि भारी॥ २२॥
कछु तोपनि की शलख चलाई। चल्यो नकीब बुलति अगुवाई।
चले तुरंगम भट गमनंते। खुर सों अविनी शबद उठंते॥ २३॥
उलंघे पंथ सगल ततकाल। पहुंचे जाइ खडूर क्रिपाल।
ग्राम वहिर डेरा करिवाइ। उतरी सैन थिरी समुदाइ॥ २४॥
आप उतर करि श्री हरिराइ। गए गुरु अंगद की थाइं।
दुख सुख ते जे नित निरबान। मुकति रूप श्री गुरु भगवान॥ २५॥

1. सोपान, सीढ़ी 2. कीर्त्तन का उच्चारण 3. नेत्र कमल खोले 4. घोड़ा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रथमै जाइ प्रदखना करी। कर सों लई धूरि सिर धरी।
दीपक ब्रिंद घ्रित के बारे। धूप धुखाइ सुगंधति सारे।। २६ ।।
सुमनस माला[1] तहिं लरकाई। पूजन करे सु ग्रीव निवाई।
सनमानति गुर अंगद अंस। करी हकारनि महा प्रशंश।। २७ ।।
उठि करि सगरे गरे लगाए। प्रथमो दयो दरब समुदाए।
भाउ भगत्ति सभि की बहु कीनि। पोशिश बहु पहिरनि को दीनि।। २८ ।।
कुशल पूछ करिकै सनमाना। बहुर मंगायो बहु पकवाना।
सभिहिनि को बैठाइ अचावा। परम प्रसंन होइ तिन खावा।। २९ ।।
पुन तिन को सगरो विवहार। बूझन कीनसि सरब प्रकार।
सगरी संगति जेतिक आई। सभिनि देग ते भोजन खाई।। ३० ।।
जाम जामनी लगि सभि पोसे। दानमान दे करि संतोसे।
भूमासन पर श्री हरिराइ। खान पान करिकै तिस थाइं।। ३१ ।।
श्री अंगद इस थान अगारी। बैठे सगरी निसा[2] गुजारी।
किरतन भजन अखंड भयो है। बहु संगति को मेल थियो है।। ३२ ।।
इक सिमरन दूजे गुर दरशन। करहिं सिक्ख संगति उर हरशन।
रही जामनी जबहिं जाम। उठे गुरु आनंद के धाम।। ३३ ।।
नित की क्रिया करी इशनाने। इक सौ इक गागर जल आने।
होति प्रभाति चढ़नि की त्यारी। सैना को श्री गुरु उचारी।। ३४ ।।
ज़ीन तुरंगनि पावनि लागे। भट भे सनध[3] पहिरि तन बागे[4]।
करि त्यारी गुरु भए अरुढ़ि। कौन लखै जिन आशै गूढ़।। ३५ ।।
दारे की उर प्रीति बिचारी। हटिबे त्यार करी असवारी।
इतने महिं सऊर चलि आयो। निकटि होइ करि सीस निवायो।। ३६ ।।
दियो शोक-नामा[5] तिन फेरि। लिख्यो भाउ ते प्रेम घनेर।
तुम दरशन को चित उमगायो। चाहति रह्यो न अवसर पायो।। ३७ ।।
मैं अबि आवति हौं इस देश। दिहु दरशन मन प्रेम बिशेष।
घाट बिपासा मैं चलि आयो। नहीं बिलम मुझ को लखि पायो।। ३८ ।।
इत उत किते दूर जे होहू। क्रिपा धारि दिहु दरशन मोहू।
लार लग्यो नौरंग को लशकर। आवति उमड्यो ज्यों बड जलधर[6]।। ३९ ।।
नांहि ता मैं आवति जित होते। तुम दरशन ते अनंद उदोते।
सुन्यो शोकनामा हटि चले। गोइंदवाल पंथ जो भले।। ४० ।।

1. फूलों की माला 2. रात 3. तैयार 4. वस्त्र 5. प्रेम-पत्र 6. बादल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दारशकोह जु दूत पठावा। गमनति बूझनि हेतु अलावा।
किह थल वलीजहद* को छोरि ? आइ पहूंच्यो हमरी ओर ? ४१ ॥
सुनि तिसनै सभि कह्यो बनाए। तजि श्री नगर तरे उतराए।
कीरतपुरि रावरि इसथाने। निस बिश्रामति कूच पयाने ॥ ४२ ॥
लग्यो अरुढनि मोहि पठायो। अधिक वेग करि मैं इति आयो।
मम पीछे ही आवति सोइ। तीर बिपासा देरि न कोइ ॥ ४३ ॥
इत ते क्रिपा करे तुम चाले। उत ते आइ मिलै सुख नाले।
इम बूझति गमने मग जाइं। श्री सतिगुर पूरन हरिराइ ॥ ४४ ॥
आइ पहूंचे गोइंदवाल। दुंदभि बाजति चमूं बिसाल।
उतरे कूप बिपासा हेरे। जुति बिसतार सैन के डेरे ॥ ४५ ॥

**दोहरा**

सिख सेवक पुरि ग्राम ढिग लीने सकल बुलाइ।
आयुधधारी सूरमे दास भए समुदाइ ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'श्री हरिराइ गोइंदवाल खडूर आगवन प्रसंग'** बरननं नाम पंचदसमो अंशु ॥ १५ ॥

---

* युवराज (दाराशकोह)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १६

# दाराशकोह प्रसंग

**दोहरा**

कीरति पुरि डेरा कियो जसु गुर को सुनि कान।
उर हरख्यो सुख को लहयो दारशकोह सुजान ।। १ ।।

**चौपई**

अपने उमरावनि के साथ। बोल्यो तबहि सुनि मैं गाथ।
श्री नानक भे पीरनि पीर। जिन महिं अज़मत महां गंभीर ।। २ ।।
बहु लोकनि को दीनसि ज्ञान। करे उधारनि बिदत जहान।
गादी पर तिनते पशचात्। जो बैठे तिस जसु अविदात[1] ।। ३ ।।
संत अनेक बेस के मिले। जहां प्रसंग इनहुं का चलै।
तहिं सुजसु सकल ने कह्यो। बहु लोकनि शुभ मारग लह्यो ।। ४ ।।
हमरे पितामें पिता केरे। हुते पीर अज़मती बडेरे।
इस घर की राखति बडिआई। मिलि मुरीद सम ग्रीव निवाई ।। ५ ।।
रज्जू शर्हा जिनहुं गर परी[2]। मूढ मुलानि सु चरचा करी।
बने असूयक[3] ज्ञान विहीने। जथा अंध कर माणिक लीने ।। ६ ।।
भए प्रभाती, चलैं अगेरे। मिलि करि सुनिहैं बाक भलेरे।
संतनि को मिलिबो सुखदानी। जग महिं जिस के को न समानी ।। ७ ।।
इम कहि दारशकोह सुजाना। निसा बास कीनसि तिस थाना।
खान पान करि कै सभि भांती। भई बितीत जथा सुख राती ।। ८ ।।
प्राति उठ्यो करि सौच शनाना। कछु उपनिखद पाठ मुख ठाना।
सगल नेम करिकै नित केरे। अलप अहार अच्यो जल फेरे ।। ९ ।।
करे कूच सत्तद्रव को तर्यो। तूरन पंथ पयाना कर्यो।
पास बिपासा उतरयो तीर। पंच हज़ारनि लशकर भीर ।। १० ।।

---

1. प्रकट 2. जिन मूर्ख मुल्लाओं के गले शरियत की रस्सी पड़ी हुई है 3. ईर्ष्याल



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री हरिराइ हुते जिस थाईं। सुधि निज मिलिवे प्रथम पठाईं।
भयो सु त्यारि आप पुन पाछे। लेकरि दिपति जवाहर आछे॥ ११॥
बहुत मोल के बसत्र सुहाए। चल्यो सु शील जांहि अधिकाए।
सने सने मग मों पग धारि। पहुंच्यो सतिगुर के दरवार॥ १२॥
दोइ रकेबी केर मझार। धरे जवाहर अरु दीनार।
कछुक नंम्रि हुइ बैठ्यो पास। पहिरे भूखन रह्यो प्रकाश॥ १३॥
दीरघ शमस[1] बदन पर श्यामू। सिर पर कुलहि दिपहि अभिरामू।
अपन सरूप समुझबे हेतु। बोल्यो दारशकोह सुचेतु॥ १४॥
बहु संतन सों गोषटि मेरी। लखनि ब्रह्म कउ इच्छ अछेरी।
सभिहिनि मोकहु भले बतायो। पाप पुंन जिस छुवनि न पायो॥ १५॥
सभि के बीच, अलेप सभिनि ते। पदमपत्र जिम रहति जलन ते।
सभि सूखम ते सूम जोइ। दुर्यो अगोचर लख्यो न कोइ॥ १६॥
जो महान ते अति महीयाने। बिदतहुं ते अति बिदत बखाने।
फुरन पलक को जिस बिन नांही। दीनसि चेतनता सभि मांही॥ १७॥
इत्तयादिक जिस वेद बखाने। इकरस सदा सु गगन समाने।
स्वगति, सजाति, बिजाती भेद न। देश काल वसतू जु प्रछेद न[2]॥ १८॥
चारहुं बेद करहिं सु बतावनि। जो उत्तम उपनिशदैं पावन।
बीच पारसी सभि लिखवाई। आदि अंत लौ नीक बनाई॥ १९॥
सकल पठी मैं भले बिचारी। सार असार जनावति सारी।
मेटे बहु उत्तम संन्यासी। क्रिपा ठानि भाख्यो मुझ पासी॥ २०॥
मुरशद मीआं मीर महाना। जिस की मिहर हन्यो[3] अज्ञाना।
तिनको संग भयो मुझ नीका। जनम मरन काट्यो दुख जीका॥ २१॥
तिन ढिग मैं अभ्यास कमावा। अंतर ब्रिती मोहिं मन लावा।
कीनसि बहु संतनि की संगति। बैठति रह्यो तिनहुं की पंगति॥ २२॥
निस दिन इम मुझ को सभि जान्यो। मिलि तुरकनि रौरा बहु ठान्यो।
दीन शरा ते होयहु बाहर। जहिं कहिं करैं मुलाने जाहर॥ २३॥
तबि तुरंग वादी[4] जु कुशील। हित समुझावनि पठ्यो वकील।
जीव नरक महिं ज्यों दुख पावैं। निकसै कोन, रखैं समुझावैं॥ २४॥
तिम मुझ को कहि बुद्धि बतावैं। मंदमती कुछ नहीं लखावैं।
मैं तिन कउ गहि गहि कहि मती। दिए छोरि पुन मूरख अती॥ २५॥

---

1. दाढ़ी 2. देश काल द्वारा जो बाँटा नहीं जा सकता 3. दूर हुआ 4. झगड़ालू

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निंदा करहि सगल तुरकाना। बंधे शर्हा फासि, बुधि हाना।
मैं तिन की कबि एक न मानी। कुमति नारकी तन अभिमानी॥ २६॥
संतनि की करुना मुझ होई। ऐसे बिघन छुवे नहिं कोई।
बधै लालसा नित अधिकाई। हुइ सरुप मैं निशचलताई॥ २७॥
मिथ्या जग के दुख सुख जोई। अगनी सम दहीयति सभि कोई।
तुम अबि क्रिपा करहु अस होही। तिन की आंच न लागहि मोही॥ २८॥
निज सरुप महिं थिरता पावउं। जिस ते जनम रु मरन मिटावउं।
उपजै ब्रह्म बिखै बिसवास। कटहि पुरातन दुबिधा फास॥ २९॥
ब्रह्म सरूप ब्रिती थित होइ। तन हउमैं तजि लहि सुख सोइ।
मिटहु अनिकता मन मेरे की। होहि सफलता तुम हेरे की॥ ३०॥
अपर जाचना[1] करौं न कोई। आदि रु अंत समैं तजि होई।
नाशवंत जो सुख जग केरो। तिस जाचनि को नहिं मन मेरो॥ ३१॥
तन धरिबे के जे बिहार। प्रापति परालबध अनुसार।
तिनको जतन करनि है बाद। हान लाभ शोकद अहिलाद॥ ३२॥
सहज सभाइक जिम चलिआवै। हरख सोग बिन तथा बितावै।
करनि उपाइ लख्यो मैं नीको। जिम ते कटहि कष्ट नित जी को॥ ३३॥
यांते लालसा अहै हमारी। प्रापति होवहि क्रिपा तुमारी।
श्री नानक ते बहु बरु सोए। सभि जग महिं जस जिन को छाए॥ ३४॥
तिस गादी के मालिक अहो। निज उपदेश मोहि को कहो।
जिस सरूप कहु वेद बतावै। तिस महिं मन इसथिरता पावै॥ ३५॥
पंचहुं इंद्रै ते रहि परै। जिस के इह अलंब हुइ थिरैं।
अखिल तेज कहु दायक तेज। सभि कउ सत्ता देति अमेज़[2]॥ ३६॥

**दोहरा**

क्रिपा आप की ठानिकै तहिं मन देहुं टिकाइ।
राग द्वैष नहिं छ्वै सकहि, सतिगुर संत सहाइ॥ ३७॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'दारशकोह प्रसंग'** बरननं नाम खोडसमो अंशु॥ १६॥

---

1. माँग 2 मिल कर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १७

# श्री हरिराइ उपदेश दाराशकोह प्रति प्रसंग

**दोहरा**

श्री सतिगुर हरिराइ जी भुगति मुकति दे दान ।
रिदा शुद्ध देखनि कर्यो दारशकोह सुजान ॥ १ ॥

**चौपई**

तुरकेशुर के बंस मझारे । शुभ मति उपज्यो गुन बीचारे ।
मरु देश जिम सुरतरु[1] होवा । जिम काकनि के कोकिल जोवा ॥ २ ॥
बकनि वंस कलहंस उपंना । को खुदाइ दरवेश प्रसंना ।
परमारथ महिं सुमति लगाई । जनम मरन की खवै दुचिताई ॥ ३ ॥
बिखै बाशना दुरमति नाशी । करी निकंद शर्हा गर फासी[2] ।
उत्तम पंथ चलिनि चित चह्यो । पूरब बडभागनि ते लह्यो ॥ ४ ॥
भोगनि राज समाज बिसाल । इसत्री आदि बिश्यनि जंजाल ।
नाशवंत इह केतिक दिन के । छिन भंगर जिस ओसनि कनके[3] ॥ ५ ॥
फसि फसि इन महिं कष्ट लहंते । सत्यनाम कउ नहिं सिमरंते ।
साधु साधु यांते मति तेरी । छुटनि, पर्यो बिशियनि की बेरी ॥ ६ ॥
ब्रह्म आतमा मैं थित चाहति । अनंद होनि को महर उमाहति ।
तिह साधन साधति सभि भांती । जिस ते परे अपर नहिं बाती ॥ ७ ॥
करिबे लगहि जु कारज रास । तांहि सहाइक चहिअहि पास ।
जग महिं उच्चावच[4] जे काज । लोक प्रलोक के सुख साज ॥ ८ ॥
कितिक सहाइक बिन नहिं होति । निशफल जाइ अरंभ उदोत ।
केतिक हैं दुहसाध्य महान । करि सकि हैं जे समरथवान् ॥ ९ ॥
जिन कउ मिले सहायक भारे । सो सभि कारज करहिं सुखारे ।
नहीं सहाइक, समरथ नांही । संसै है तिस कारज मांही ॥ १० ॥
होइ सहाइक समरथ भारो । तबि कारज निशचिंत सुधारो ।
जो कारज ब्रह्मज्ञान बिसाला । सत्यनाम ते पुरहि सुखाला ॥ ११ ॥

---

1. कल्प वृक्ष 2. शरियत की फांसी गले से काट दी है 3. शबनम की बूदें 4. धर्म कर्म



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सो सत्तिनाम सतिगुरु पास। जिस को बखशहिं करहिं प्रकाश।
तिस को सभि सुखैन हुइ जावैं। अनिक बिघन दै हाथ बचावैं॥ १२॥

### दोहरा

मारग इह बिन सतिगुरु दुश प्रापति अति जान।
गुरु ग्रंथ मैं कह्यो सो सुनि कान प्रमान॥ १३॥

नानक गुरु न चेतनी मनि अपने सुचेत।
छुटे तिल बूआड़ ज्यों सुंत्रे अदरि खेत।
खेतें अंदरि छुटपा, कह नानक सउ नाह।
फलियहि फुलीयहि वपुड़े, भी तन विचि सुआह।

पुन :—जेतू तारु पालि ताहूं पुच्छि तिड़ेन कल।
तांहूं खरे सुजाण, वजा एनी कपरी।

### चौपई

पठि पठि ग्रंथे होइ सवधान। चाहति आनंद ब्रह्मज्ञान।
नहिं सिमरहि सतिगुर सत्तिनामु। तिस के निशफल हुइं सभि कामु॥ १४॥

तिल बुआड़ ज्यों राख मझार। अंतकाल तिम हुइ न संभार।
जिस की सतिगुर करहिं सहाइ। निशचै ब्रह्म ज्ञान कहु पाइ॥ १५॥

जो सागर को तरिबो चाहै। पार परनि कउ बल भुज मांहै।
तऊ जि केवट तहिं के होइं। तिन सों बूझति रहिं सुख होइ॥ १६॥

नांहि त कपर* जि सागर मांही। तिन कउ भेद लखि सकै नांही।
तरति जाति कहु खैंच सु लेते। राखहिं बीच न उबरनि देते॥ १७॥

तरति जि नर तिन गिनती कउन। ऊपर उडे जाहिं खग जौन।
तिनहुं ऐंचि करि लेति डुबाई। केवट बूझे देति बताई॥ १८॥

दाहन बाम बिचार बचावउ। सूधे पार उतरि करि जावउ।
तिम सतिगुर तिह भेद बतावैं। कामादिक सभि ते सु बचावैं॥ १९॥

सिमरन सत्तिनाम दे रंग। जीवति म्रितु सदा रहिं संग।
जस जस भीर जहां जहिं होई। सुखद सहाइक तहिं तहिं होई॥ २०॥

सत्तिनाम सिमरन ते हीन। श्रवणादिक जु करहिं हित चीन।
तिन कहु ज्ञान होनि मैं संसै। को बिकार ते सकल बिधुंसै॥ २१॥

---

* भँवर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छुटहि न तिन की आवागउन। बिन सहाइ बपुरे नर जौन।
को नहिं देकरि हाथ बचावै। क्या सो करहि अंत बिललावैं॥ २२॥

यांते सुनि हमरो उपदेश। सभि सुखेन ही मिटैं कलेश।
करहु अराधनि सभि जग नाइक। प्रभु बिसाल, हुइ दास सहाइक॥ २३॥

'इक मेवा दुतीयो'[1] जो ब्रह्म। इस को श्रवण करिहु तजि भरम।
सुभट रथी सम इसको जानि। इक सौं लरहि जु हुइ सवधान॥ २४॥

रिपु गन जुटे जु रहे सहाइ। श्रवण सहाइक चहि इस भाइ।
सत्तिनाम कहु सिमरन करवे। हतहि बिकार काम जुति सरवे॥ २५॥

अयं आतमा ब्रह्म सु जोइ। मनन करन निद्‌ध्यासन सोइ।
महांरथी समबल कहु धरै। दस हज़ार संग एकहु लरै॥ २६॥

अनिक रिपुनि सों जबि इह जूटे। चहति सहाइक तबि बल खूटे।
सत्तिनाम सों लिवहि लगावनि। सभि बिकार अति करहि भजावनि॥ २७॥

जबि सख्यातकार उर भयो। भरम भद सभि ही छुटि गयो।
इह अतिरथी सहाइ न चाहति। एकाकी रिपु लाखहुं गाहति॥ २८॥

फुरहि द्वैत नहिं होइ बिकारा। निज सरुप लखि सगल पसारा।
वसतादुतिय भासि है जवै। मन संकलप उठावै तवै॥ २९॥

श्रवण सु दावागनि बन बार। बुझति बार बिन[2] बरखे बार।
मनन करनि निध्यासन दोइ। बिजरी की अगनी सम सोइ॥ ३०॥

कबि जागै कबि ही छिप जाइ। नाश वासतव हुइ न सकाइ।
अरु साख्यातकार जवि भयो। बड़वागनि की समता लयो॥ ३१॥

सदा अच्चल रहै अविनाशी। नितप्रति जागति है जल रासी।
सिंध अज्ञान बिनाशनि सोइ। हतनि बिकारनि को सभि कोइ॥ ३२॥

यांते सुनीअहि दारशकोह। सत्तिनाम को प्रेमी होहु।
सिमरन की सहाइता पाइ। निशचा निज सरुप टिक जाइ॥ ३३॥

सनै सनै तन हंता त्यागहु। नाशवंत लखि नहिं अनुरागहु।
भाणा प्रभु को लागहि मीठा। देखहु सत्ति सरुप अडीठा॥ ३४॥

आदि अंत जो वसतू नांही। मध्य कुतो साची ठहिराही।
तन रिखीक अंतहिकरन परै। सो सरुप तव निशचा धरै॥ ३५॥

1. छांदोग्य उपनिषद् का कथन—'एकमेवा द्वितीपम्'—वह सत्य एक है और द्वैत रहित है 2. पानी बिना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साधन तोहि बतावनि कीनि। करति जिसे आतम लें चीन।
जगत पदारथ लखहु अनित्य। इन महिं नहिं अनुरागहु चित्त ।। ३६ ।।
परालबध अनुसारी एहु। मिलि बिछरनि इन बिखै अछेहु।
हरख सोग ते रहीअहि न्यारो। सत्ति आतमा एक बिचारो ।। ३७ ।।
जिसते परे अपर नहिं कोइ। जिस जाने जग बंधन खोइ।
जिस निशचै करि जनम न मरै। सगल कलेशनि को परहरै ।। ३८ ।।
इह तो परमारथ की बात। कहै सुनै उपजै सुख शांति।
अबि भाखहु आपनो बिवहारे। कित ते आए कहां पधारे ? ३९ ।।
शत्रु प्रबल गह्यो तुझ चाहति। दाव घाव करि दुषट उमाहति ।। ४० ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'श्री हरिराइ उपदेश दारशकोह प्रति प्रसंग'** बरननं नाम सपतदसमो अंशु ।। १७ ।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १८
# दाराशकोह प्रसंग

**दोहरा**

सतिगुर की सुनि बारता दारशकोह सुजान।
सत्तिनाम सिमरनि लग्यो बांछति ब्रह्म ज्ञान ॥ १ ॥
कही कथा बिवहार की जिम दल जूटे जंग।
मिले जाइ उमराव सभि देखति नौरंग संग ॥ २ ॥

**चौपई**

नहिं दिल्ली महिं थिरता पाई। कितिक दिवस बसि गिर के थांई।
अबि लवपुरि[1] मैं जाउं अगारी। जुद्ध करनि कहु नहिं दल भारी ॥ ३ ॥
सरब देश राजे रजपूत। मिलि नौरंग[2] संग कीनहु सूत।
पतिशाहित को सकल समाजू। निज कब्ज़े महिं कीनसि राजू ॥ ४ ॥
तोप जमूरनि की क्या गिनती। न्रिप सभि करहिं अगारी बिनती।
सरब रीति ते बध्यो समाजा। लरिबे हित अनगन दल साजा ॥ ५ ॥
शाहिजहां पित को गहि लीना। भ्राता एक कैद करि दीना।
दे करि खान पान तिन थोरा। दिन प्रति देत कष्ट कहु घोरा ॥ ६ ॥
दुष्ट बिसाल सु नौरंग ऐसे। नित छलबल को ठानति तैसे।
यांते अबि लवपुरि को जाइ। पुन करिहौं जैसे बनि आइ ॥ ७ ॥
श्री हरिराइ सुनि सभि गाथा। धीर देनि हित कहि तिस साथा।
भूपन[3] कहु इहु धरम महाना। शसत्र गहनि संघरु घमसाना ॥ ८ ॥
मारन अरु मरनो रिपु संग। धन अविनी हित करिबो जंग।
अबि दिढ ह्वैके सैन सकेलि। मिलहिं न्रिपति सो लेवो मेलि ॥ ९ ॥
करि लवपुरि मैं बहु तकराई। पावहु फते मचाइ लराई।
हम तेरी दिशि ह्वै करि लरैं। जितिक सैन सभि सनमुख करैं ॥ १० ॥
हिंमत को हिमाइति हरि है। एक बार जे तिह मुख मुरिहै।
राजे अनिक मिलैं तुझ आइ। जानैं तेरो भलो सुभाइ ॥ ११ ॥

---

1. लाहौर 2. औरंगज़ेब 3. राजा



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है दल चढ़ै हज़ार अढ़ाई। हमरे साथ सदा सुखदाई।
अबि लरिबे हित राखैं और। करहिं जंग थित ह्वै जिस ठौर॥ १२॥
तहिं तेरे हम बनैं सहाइक। ज्यों क्यों करहिं तुरक गन घाइक।
बिनां जुद्ध ते अपर उपाइ। तहि तेरे ढिग को बनि आइ॥ १३॥
नांहि त दूर लगौ गन देश। दिली के अनुसार अशेष।
रहिबे की बिधि बनै न कतहू। सभि अपनाइ लेहिं जित तितहुं॥ १४॥
जावद[1] सगरे देश दुहाई। फेरहि नहिं नौरंग बरिआई।
तावद है उपाइ के योग। लरिबे हेतु सकेलहु लोगु॥ १५॥
दल मुकाबले रन के होवहिं। तबि हम आइ तोहि कउ जोवहिं।
सिखसखा सभि लेहिं हकार। तव सहाइ को करहिं उदार॥ १६॥
दारशकोह सुनति कर जोरे। ह्वै अधीन मन करति निहोरे।
निशचै निज सरुप के माहूं। तुमरी तहिं सहाइता चाहूं॥ १७॥
चार दिवस कहु जगत तमाशा। इस महिं क्या करनो भरवासा।
सगल पदारथ जोगु विजोगु। होवति प्रारबध के भोग॥ १८॥
अर्यो गयो जहिं कहिं रिपु संग। लशकर मेलि मचावौं जंग।
जहिं लगि हुइ मुझ ते उतशाहु। करौं महद दुषटनि दल गाहु॥ १९॥
रचि राखी जैसे करतार। हुइ सोई सो करहि न टार।
इत्तयादिक कहि करि निज गाथ। भयो बिदा बहु नमता साथ॥ २०॥
डेरे बिखै रैन पुन रह्यो। खान पान निंद्रा सुख लह्यो।
भोर भई पहुंचे हलकारे। शत्रु भेन कउ सरब उचारे॥ २१॥
कई हजार सैन चढ़ि धाई। तुरत तुरति तुमरे पर आई।
नौरंग लहु भेजे उमराव। धाए तुम पर ताकति दाव॥ २२॥
तोप जंबूरनि लैन वडेरी। धावति आइ न करिहैं डेरी।
सुधि हम सुनति आप ढिग आए। पीछै लशकर चढ्यो रिसाए॥ २३॥
दारशकोह सुनति किय त्यारी। मिलि सतिगुर सों गिरा उचारी।
लाखहुं सैना अबि चढ़ि आई। बीच न बडो रह्यो, नियराई[2]॥ २४॥
मैं लवपुरि मैं चाहति वर्यो। लशकर आनि नेर बड कर्यो।
जे पुरि वहिर पलाइत जावौं। नहिं मिलि है इह, दूर सिधावौं॥ २५॥
लवपुरि प्रविशनि मत है मेरो। जानिं न देहि जि लशकर नेरो।
इती मदत अबि रावर कीजै। चमूं सकल अटकाइ सु दीजै॥ २६॥

1. जब तक 2. नज़दीक आ गई है

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जथा फरक मुझ सों पर जाइ। तैसे आप रखहु अटकाइ।
सुनि संमति को सतिगुर कह्यो। कुतो त्रास तुम एतो लह्यो ? २७ ॥
इहां ठहिर हम लरहिं अगारी। हमरै तोप तुपक सभि त्यारी।
नांहि ते टोपी सिर पर धरो[1]। बैठि प्रमेशुर सिमरनि करो ॥ २८ ॥
लोक प्रलोक तखत चहिं जोई। हम समरथ, जाचहु, दें सोई।
रण करि दिल्ली तखत दबावैं। सभि देशन को राज कमावैं ॥ २९ ॥
नतुर दीन को ह्वै पतिशाहू। अचल तखत प्रापति तुम पाहू।
श्री गुर ! तुम ते जग पतिशाहित। को दिन की कूरी नहिं चाहति ॥ ३० ॥
बनहु सहाइक बिच परलोक। नित अनंद जहिं होइ न शोक।
कह्यो पदर को मैं इहु माना। हरख सोग जिस बिखै महाना ॥ ३१ ॥
कुछ मेरी नांहिन अभिलाखा। श्री हरिराइ बहुर बच भाखा।
तखत दीन को तुमरे भाग। सदा आफरीं तहिं लिव लाग ॥ ३२ ॥
अबि तूं गमनहु हुइ सवधाना। हम लशकर अटकाइं महाना।
सुनति बंदगी करि जबि गयो। पंच सहस्र सुभट संग लयो ॥ ३३ ॥
नौरंग को लशकर तबि आइव। तोप जंबूरनि को गन ल्याइव।
तरी[2] सकेलनि सकल कराइ। सावधान ह्वै श्री हरिराइ ॥ ३४ ॥
निज दल सकल तोप बल भरे। तीर बिपासा सनमुख खरे।
इक द्वै शलख सकल करिवाई। धुनि ते अवनी नभ गरजाई ॥ ३५ ॥
धूम उड्यो अंधेरा भयो। जनु सावन को घन उमड्यो।
नदी तीर पर करि बिसतारो। खरो कर्यो अपनो दल भारो ॥ ३६ ॥
ज़री बादला ब्रिंद निशान। बीच चमूं के दमक महान।
बहु धौंसे धुंकारति ऐसे। घोरति घटा घोख बड जैसे ॥ ३७ ॥
नौरंग को लशकर जबि आवा। जान्यो दारशकोह थिरावा।
नहीं पारखा[3] तिन ते होई। टिके तहां, नहिं गमने सोई ॥ ३८ ॥
सुधि लैबो को पठि हलकारे। तरि सलिता के उतरे पारे।
जाइ तहां दल गुरु निहारा। उमड्यो लरनि हेतु बलि भारा ॥ ३९ ॥
सरब भेद सो ले करि आए। दारशकोह गयो अगुवाए।
इह तो गुरु की चमूं खरी है। अपने हित सवधान करी है ॥ ४० ॥
भेत पाइ करि दूत पठाए। श्री हरिराइ निकटि सो आए।
करी बंदना अरज़ गुज़ारी। इम नौरंग उमराव उचारी ॥ ४१ ॥

1. फकीरी की निशानी— टोपी पहन लो 2. नौका 3. परीक्षा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुम क्यों लरनि हेतु भे खरे। बिन कारन क्यों मग मों अरे।
सुनि सतिगुर हरिराइ बखाना। अपन हेतु हम हैं सवधाना ॥ ४२ ॥
पतिशाहित मैं रौरा अहैं। यांते हम भरोस नहिं लहैं।
प्रथम कूच करि हम चलि जावैं। पुन पीछे को उतरनि पावैं ॥ ४३ ॥
अपर हमारो हेतु न कोई। मग महिं मिलहिं न सैना दोई।
सुनति दूत ने आनि बखाना। हित करि इन भी लीओ माना ॥ ४४ ॥
टिके रहे सरिता ते पार। सतिगुर भए बहुर असवार।
सने सने करि कूच प्याना। शलख बंदूकनि करति महाना ॥ ४५ ॥
इक दिन लशकर को अटकावा। सलिता बार[1] न उतरनि पावा।
कीरति पुरि के मग चलिआए। पुन नौका त्यागी समुदाए ॥ ४६ ॥
दिवस आगले उतरे पारी। जो लशकर नौरंग को भारी।
दारशकोह सुखैन प्याना। लशकर अपनो करि सवधाना ॥ ४७ ॥
तीर बिपासा ते उठि गयो। लवपुरि बिखै प्रवेशनि कियो।
जाइ दुरग मैं कीनसि डेरा। दरब जवाहर जेतिक हेरा ॥ ४८ ॥
कोष बिखै ते सभि निकसाइव। लै निज संगै त्यार कराइव।
कितिक काल तहिं कीनि मुकामू। कर्यो सु श्रम बिन दल अभिरामू ॥ ४९ ॥
नौरंग को लशकर जबि आवा। कई लच्छ भट, इम सुनि पावा।
कीनसि त्यारी तुरत तहां ते। दरब जवाहर लिए महां ते ॥ ५० ॥
संग बाहनी कीनसि प्याना। चल्यो पंथ जहिं पुरि मुलताना।
क्रम क्रम करि उलंघ्यो सभि देश। पीछैं लशकर चल्यो अशेष ॥ ५१ ॥
कई कोस सो चलति अगारी। नौरंग को दल पर्यो पिछारी।
जाइ बर्यो मुलतान मझारा। दरब जवाहर लीए उदारा ॥ ५२ ॥
कितिक मुकाम नगर तिस करिकै। चढ़ि पुन चल्यो शीघ्रता धरिकै।
कूच मुकाम निरंतर कीनो। ढट्ठे भक्खर[2] को मग लीनो ॥ ५३ ॥
ज्यों ज्यों जाति अगारी धायो। त्यों त्यों कटक पिछै उमडायो।
चलति चलति उलंघ्यो सभि देश। तजि दिल्ली को राज अशेष ॥ ५४ ॥
भयो निचिंत रह्यो तहिं जाइ। सैन सकेली पुन समुदाइ।
ढट्ठे भक्खर ते रहि परे। केतिक मास बितावनि करे ॥ ५५ ॥
अपने राज सीम जहिं अही। तहिं नौरंग की सैना रही।
अंतर कितिक पाइ तिस थान। बसति भए निज देश महान ॥ ५६ ॥

1. दरिया का पानी 2. एक नगर का नाम

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुन चढ़ि गमन्यो दारशकोहु। तितको दक्खण की दिशि होहु।
पहुंच्यो जहां देश गुजरात। लूट कूटि लीनसि तहिं जाति ।। ५७ ।।
लशकर समुख जाइ पुन होवा। दुहु दिशि ते रिस कीनसि ढोवा।
दारुण संघर[1] रच्यो महाना। छुटे शसत्र हुति भे भट प्राना ।। ५८ ।।
भई लथेर पथेर घनेरी। गरजी तोपैं तुपक बडेरी।
मार सुभट गहे हथ्यारनि। बिजै करनि निज स्वामी कारन ।। ५९ ।।
वाजी चढ़े बीर वलवान। छिप्प्र छुटति हैं तुपक महान।
हनहिं फेर करि तोमर[2] तीछन। हलाहली रण माच्यो भीखन ।। ६० ।।
छुटि छुटि प्रान बीर गन गिरे। केतिक तरफति घाइल परे।
धौंसे धुंकारति चहुं ओरे। चलहिं बेग ते गोरी गोरे ।। ६१ ।।
लोधें जुथपोथना भई[3]। वाहन पगनि धूल ते छई।
श्रोणित गिरहिं रकत, रणठौर। बर्धहि बीर, रण माच्यो रौर ।। ६२ ।।
जबि जान्यो नौरंग दल घने। जुद्ध करनि इन सों नहिं बने।
दारशिकोह बिलोकि बिचारा। ले दल अपनो कीनि किनारा ।। ६३ ।।
टलि करि गयो न सनमुख भयो। फरक साथ निज डेरा कियो।
कवि संतोख सिंह इसी प्रकार। नौरंग लीनसि राज उदार ।। ६४ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे '**दाराशकोह प्रसंग**' बरननं नाम अषटदशमो अंशु ।। १८ ।।

1. भयानक लड़ाई 2. बर्छा 3. लाशों का ढेर लग गया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु १६

# दाराशकोह् प्रसंग

दोहरा

इम लरि दारशकोह बहु चित महिं कर्यो विचार ।
कूर पदारथ हेतु मैं क्या क्या किय उपचार ॥ १ ॥

चौपई

नीके है इन को हिति त्यागनि । बुरो बहुत जुति जतन अराधनि ।
करे उपाव हाथ नहिं आवहि । परालबध पर मन सु टिकावहि ॥ २ ॥
सत्य आतमा करों बिचारनि । जो सबि बंधु बिनाशनि कारन ।
सलततन[1] हित बहु करे उपाइ । परालबध बिन किम करि आइ ॥ ३ ॥
अबि निरवैर होइ मैं फिरौं । कै गिर मैं वसि तब को करौं ।
हम निशचै करि सभि किछु त्यागा । लशकर जितिक हुतो संग लागा ॥ ४ ॥
सभिहिनि को दै मुकता हीर । करे बिसरजन बली सु बीर ।
जथा जोग सभि को दे मोद । दिए खिडाइ चारहुं कोद ॥ ५ ॥
एक नफर को राख्यो संग । त्याग्यो शाह बेस जो अंग ।
चाह्यो परबत बासी होइ । भोगहिं परालबध तन जोइ ॥ ६ ॥
चलि बहु देश उलंघनि कर्यो । आन पुआध बिखै पुन बर्यो ।
हुतो दाइरा पिखि इक ग्राम । उतर्यो जहां करनि बिश्राम ॥ ७ ॥
हय लगाइ हित भोजन त्यारी । करति भए आन्यो ढिग बारी ।
पावक दई जारिबे कारन । नफर सु ईंधन लग्यो निहारन ॥ ८ ॥
दारशकोह फूक जबि मारी । परी राख ऊपर मुख दारी ।
जारी गई न जानति जारनि । तहिं फकीर ने कर्यो निहारन ॥ ९ ॥
अतिशै भागवान नर कोई । दीरघ मसतक दीपति जोइ ।
देखति जान्यो जाइ सुशीला । रूप छबीला, रिदा गहीला ॥ १० ॥
इतने बिखै नफर सो आवा । भसम शमस[2] पर पिखि मुरझावा ।
दुख्यो अधिक ही गिनति दुहेला । अखिल बैस जो रह्यो सुहेला ॥ ११ ॥

---

1. सलतनत— बादशाहत 2. दाढ़ी



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सकल मुलख की सलतनत वारो। गन अवनीपति करति जुहारो।
जहिं कहिं हुकम जांहि को मानैं। कहैं कहां लगि महद महानैं ॥ १२ ॥

सो एकाकी पावक जारति। बदन समीप फूक को मारति।
दीरघ शमस भसम पर रहो। चित महिं किछु दुख पावति नहीं ॥ १३ ॥

करति फकीरनि की नित संगति। सुनति वचन बहु बैठहि पंगति।
बरजि रहे कहि कहि नर स्याने। हान लाभ लखि कह्यो न माने ॥ १४ ॥

अपनो करम जानि करि ऐसे। अबि न बिसूरति दुःख करि कैसे।
इस ते छोभ होति चित मेरे। नफर चितव इम कहि तिस बेरे ॥ १५ ॥

शमस हाल क्यों देखति नांही? परी भसम उड करि जिस मांही।
संगति करति जु रह्यो फकीरनि। पूजति वसतु देति सम पीरनि ॥ १६ ॥

सलतनत काज न चित करि करै। छलबल को उर फिकर न धरै।
अपने सम साधन सिखरायो। तिस क्रित को अबि अस फल पायो ॥ १७ ॥

सीख देति सगरे हितकारी। मैं तबि कहति रह्यो बहु बारी।
सुनिकै नहिं एक की मानी। सहहु कषट आपदा महानी ॥ १८ ॥

सुनि कै दारशकोह सुजाना। हेरि नफ़र को झिरकनि ठाना।
सुनि मूरख! तैं कछू न जानी। महिमा जो सतिसंग महानी ॥ १९ ॥

देखहु गुन मुझको जिम भयो। इतो समाज सलतनत गयो।
देश; कोश कुछ गिनती नांही। सभि जग की प्रियता जग मांही ॥ २० ॥

तिस ते मुझ को शोक न व्यापा। नहिं किह समैं रिदै संतापा।
इक बिराटिका[1] जाइ गवाई। तिम समसर भी नहिं दुखदाई ॥ २१ ॥
लाभ हान जग राज महाना। रही मोहि चित ब्रिती समाना।
इह संतन को अधिक प्रतापू। हरख न शोक मोहि चित व्यापू ॥ २२ ॥
सुनि करि नफर न महिमा जाने। तऊ तरकबो तिस को ठाने।
गज मुकता की जथा बडाई। चिरमर[2] गाइक लखि न सकाई ॥ २३ ॥

हुतो दाइरे महिं दरवेश। जिसको निशचे ज्ञान विशेष।
बोलनि सुनि बिलोकबो कीनि। दारशकोह चीनि तिन लीनि ॥ २४ ॥

जिस खोजन हित चमूं विशेष। फैली देश बिदेश अशेष।
गह्यो चहै नौरंग मति मंद। सो इह जान्यो परै बिलंद ॥ २५ ॥

1. कौड़ी 2. गंजा, घुंघची, अरुण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सतिसंगी बड सुन्यो अगारे। भले जानि चित चहति निहारे।
आइ फकीर सु बैठ्यो पास। सादर म्रिदुल सु बाक् प्रकाश ॥ २६ ॥

धंन तोहि ! जननी बड धंन। संत समूह करे सु प्रसंन।
कूर पदारथ बिनसनहारे। कहां शोक, तम को इह धारे ॥ २७ ॥

अबि जहान ते फारक होहु। त्यागहु जितिक बाशना मोहु।
बनहु निशंग त्रास को डारि। जित कित अपनो रूप निहारि ॥ २८ ॥

तनु की परालबध करि जोइ। संकट परहि कि सुख कित होइ।
भोगहु आवशक सो जानि। मिटै न क्यों हूं छूट्यो बान ॥ २९ ॥

रूप अभुगता सदा अकरता। ताहि संभारहु रिदे बिरतता[1]।
ऊच अवसथा महिं ब्रिती तेरी। ठहिरी संतनि क्रिपा बडेरी ॥ ३० ॥

सदा असंग[2] आप को जानि। तन को हान नहीं तुव हान।
तव तन दुख ते दुख भी नांही। कहां पदारथ ते सुख पाहि ॥ ३१ ॥

प्रापति भा सुख बड अबिनासी। 'अहंब्रह्मासमि महिं ब्रिति बासी।
तजहु उपाधि बिचारहु रूप। मिल्यो अनंद समुंद्र अनूप ॥ ३२ ॥

जिस पद योगी सदा अराधहिं। कोटि जतन करि क्यों हूं लाधहिं।
सो तेरे हसतामल होयो। सतिसंगति करुना तो जोयो ॥ ३३ ॥

इत्तयादिक करि बाक् बिलासा। जिन के तन अभिमान बिनाशा।
दारशकोह मसत सुनि होयो। अंन मनोरथ उर तो खोयो ॥ ३४ ॥

जैबो आन थान को त्यागयो। अंतर ब्रिति के रस महिं पाग्यो।
दुशमन गह्यो आज ही आइ। कर्यो जि चहै देहि मरवाइ ॥ ३५ ॥

अंत वंत तन कहां सनेहु। निशचै बिनसन गति कवि लेहु।
द्रिड़ संकलप जबहि इम कीनि। सकल समाज नफर को दीनि ॥ ३६ ॥

ज़ेवर जरे जवाहर सारे। शसत्र बसत्र हय सहित उदारे।
दे सरबंस कह्यो अबि जाहु। बैठि सदन महिं सभि सो खाहु ॥ ३७ ॥

देखि कुचाल नफर दुख पाइ। रुदति आपने धाम सिधाइ।
न्रिभै होइ करि दाराशकोहु। बैठ्यो बिनसे मान रु मोहु ॥ ३८ ॥

हित हेरनि नर मिले घनेरे। सभि महिं बोलि उठ्यो तिस बेरे।
इहु तन दारशकोहु निहारो। आइ गहहु रिपु ! चहै कि मारो ॥ ३९ ॥

1. बिरक्तता 2. निरलेप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि सुनि लोक सकल बिसमाए। क्यों नहिं दुरैं त्रास को पाए।
केतिक गए सुनावनि कारंन। जो जहिं कहिं फिर करहिं निहारन ॥ ४० ॥

नौरंग के उमराव बडेरे। खोजति लशकर फिरति घनेरे।
तिन सों कह्यो जाइ ततकाला। सुनि करि दौरे कीनि उताला ॥ ४१ ॥

समसर परमहंस जहिं वैसा। निरभै त्रिलोकी पति है जैसा।
आनि बिलोक्यो दुघटनि धाइ। गहि करि लीनि मतंग[1] चढ़ाइ ॥ ४२ ॥

लेकरि दिल्ली पुरि को गए। दुशमन दुष्ट हरख जुति भए।
पाप आतमा नौरंग महां। करिकै कैद बिठायहु तहां ॥ ४३ ॥*

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे 'दाराशकोह प्रसंग' बरननं नाम एक ऊनबिंसती अंशु ॥ १९ ॥

---

1. हाथी

*कवि ने यह प्रसंग जैसे सुना, लिख दिया लेकिन दाराशकोह भागता हुआ जब कच्छ के आगे जून पहुँचा तब वहाँ के हाकिम ने इसे गिरफ्तार करके दिल्ली भिजवाया था

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २०

# दाराशकोह प्रसंग

**दोहरा**

हरख्यो नौरंग दुरमती शर्हा फास गर जांहि ।
चाहति हति बड भ्रात को ले मसलत सभि पाहि ।। १ ।।

**चौपई**

जहिं दरवेश, कि निपुन मुलाने । चलहिं शर्हा महिं, जो वहु माने ।
सभिके निकटि पठावनि कर्यो । ले कागद भ्राता जिम धर्यो ।। २ ।।
शरा वहिर ऐसे इह चल्यो । अबि लौ संकट नहिं को मिल्यो ।
मारनि उचित लखहु बुधि साथ । लिखहु निशानी निज निज हाथ ।। ३ ।।
सुनि नौरंग को सवाल मुलाने । मूढ जि नहिं खुदाइ को जाने ।
मारनि उचितै लिखि लिखि दीन । नौरंग को डर उर वहु कीनि ।। ४ ।।
जे लोभी लंपट कूड़िआरे । लिख्य सभिनि दीजहि इस मारे ।
देश बिदेशनि जहिं कहिं सारे । लिखि लिखि पठि दीने हलकारे ।। ५ ।।
'अहंब्रह्म' बोलनिं इन कीनि । बन्यो खुदाइ आप को चीन ।
इस की अपर सज़ाइ न कोइ । हुति शमशेर[1] प्रान दिहु खोइ ।। ६ ।।
अरथी गन दरवेश मुलाने । लिखि लिखि दीन त्रास को माने ।
जे निशंग, मग लख्यो खुदाइ । नहीं त्रास नौरंग ते पाइ ।। ७ ।।
तिनहुं साच लिखि कागद पठे । चित महिं दुखी भयो जिन पठे ।
सभि विधि दारशकोहु सुजाना । प्रान हानि के उचित न जाना ।। ८ ।।
जो जिस को होवहिं दुखदाई । शर्हा बीच सो उचित सज़ाई ।
इम लिखि विरले संतनि भेजा । जिस पढ़ि दुख जनु फटति करेजा ।। ९ ।।
लिखति तीन सै अपर वहत्तर । जहिं कहिं ते भेजे कहि उत्तर ।
बेमुहताजे संत जि पूरे । तिनहुं न लिख्यो कह्यो तिस कूरे ।। १० ।।
महां दुषट होयहु चहि साचा । लिख्यो शरीअनि को सभि वाचा ।
जिनहुं जथारथ बाक् बखाने । पक्खी दारशकोहु सुजाने ।। ११ ।।

---

1. तलवार मार कर 2. एक सूफ़ी फ़क़ीर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिन के साथ विरोध वधायो। केतिक को गहि गहि मरिवायो।
सरमद[2] नाम एक दरवेश। रहहि पुरि महि मसति विशेष ॥ १२ ॥
प्रभु के रंग रच्यो नित रहै। कबि कबि मौज आपनी कहै।
'दारशकोह शाह हम कीनि। सलतन अबिनाशी तिन दीनि[1]' ॥ १३ ॥
सुनि सुनि, अवरंग को नर कहैं। रिस ते जरै अधिक दुख सहै।
जिन कित पूरन संत महाने। तिन ते सुनहि भ्रात जसु काने ॥ १४ ॥
पाइ कषट को चित रिस भीना। तबि दुरमती हुकम करि दीना।
राशभ पर चढ़ाइ ले जावहु। चहुं दिशि पुरि के बिदत फिरावहु ॥ १५ ॥
सभि उमराव आदि जे लोक। सुनि करि बिसमें धरि उर शोक।
करि नहिं सकहिं अधिक डर धारैं। महां कूर दुरमति बिचारैं ॥ १६ ॥
तऊ किनहुं साहस करि भारी। हाथ जोरि करि अरज़ उचारी।
शाहुनि के सुत जोग न ऐसे। हुकम दियो राशभ को जैसे ॥ १७ ॥
नहिं कबहूं इह भई अगारी। बेमिरजादा लेहु बिचारी।
सुन सयाननि ते बहुर बखाना। जाइ चढ़ावहु करी महाना ॥ १८ ॥
पुरि के जे द्वादश दरवाजे। सभि पर फेर करहु बिन लाजे।
पुन सरमद बासहि जिस थान। तहिं ले जावहु करहु बखान ॥ १९ ॥
'दे सलतनत जो कहित सदीव। आज करहिं बिन यांको जीव।'
सुनति हुकम को चाकर[4] गए। दारशकोहु बिलोकति भए ॥ २० ॥
हरख न, शोक न, मन महिं कोई। दुख सुख बिखै ब्रिती सम होई।
तोरी तन हंता द्रिढ़ फांस। जिसकै मरिवे को नहिं त्रास ॥ २१ ॥
हौदे सहित तबै गज आयो। कहिके तिस ऊपरि चढ़वायो।
सिर पर बंधि सेहरा दीन। 'मारनि' हुकम सुनावनि कीनि ॥ २२ ॥
पुरि सगरे महिं हाहाकार। अधित शोक ते करहिं उचार।
डरति न ऊँचे कहूं सुनावैं। अवरंग महां क्रूर लखि पावैं ॥ २३ ॥
संतनि करुना दारशकोह। धीरज सहित त्रिभै उर होहु।
गज फेर्यो द्वादश[3] दरवाज़े। ले गमने जहिं सरमद राजे ॥ २४ ॥
अवरंग को तबि हुकम सुनायो। दारशकोहु निकट तुम आयो।
बखशति सलतनत जिसहि हमेश। सभि महिं बड कहाइ दरवेश ॥ २५ ॥
बोलति कूर लाज नहिं आवति। सलतनत कितहुं प्रान अबि जावति।
सुनि सरमद सतिसंगी जानि। हुइ आयहु मन प्रेम महान ॥ २६ ॥

1. उस को अमर बादशाहत दी है 2. गधे पर 3. बारह दरवाज़े

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पिखति बिलोचन जल भरि आए। नहिं सनेह ते बोल्यो जाए।
दारशकोहु जानि करि प्रेम। टारि सेहरा बोल्यो एम ॥ २७ ॥
पठनि सुननि अरु भाखनि करनो। 'अहं ब्रह्म' उर निशचै धरनो।
इसी समें के कारज हेतु। लखहु संत जी! बनहु सुचेत ॥ २८ ॥
क्यों डोलहु तन हंता[1] मांहि। क्रिपा आप की ते मिट जाहिं।
बिनसनहार आज कै काली। तिसकी चिंता कहां बिसाली ॥ २९ ॥
सुनि धीरज धरि सरमद बोला। हम ने सलतनत दीनि अडोला।
जो किसहूं ते जाइ छीनी। अखै सदीव थीव दुख हीनी ॥ ३० ॥
सलतनत कूर पाइ गरबाइ। सो केचित् दिन महिं खप जाइ।
अलप काल महिं हम तन त्याग। आवहिं चले तोहि संग लागि ॥ ३१ ॥
इम कहि कर्यो परसपर हेरनि। चल्यो महावत करि गज प्रेरनि।
जाइ उतार्यो दारशकोहु। संत सरूप, न जिस के मोहु ॥ ३२ ॥
निरद्यालू जिह नरक सथान। बहु तीखन ले हाथ क्रिपान।
मारि उतार्यो सिर धर[2] हूं ते। निकस्यो शबद तबहि उर हूं ते ॥ ३३ ॥
'अहं ब्रह्म' ही लोकनि सुन्यो। निशचै पाको सभि ने गुन्यो।
बडो भ्रात इम गहिकै मार्यो। करे पाप परलोक बिगार्यो ॥ ३४ ॥
अपर भ्रात दुइ छल करि मारे। राज हेतु कीनसि अघ[3] भारे।
जहिं कहिं करी कुमति बड पापी। दरवेशनि अरु संत सरापी ॥ ३५ ॥
कथा सुनति श्रोता सवधान। सरमद कथा सुनि जवि कान।
बूझनि कर्यो 'कौन इह भयो? किम खुदाइ को मारग लयो ॥ ३६ ॥
सुनि श्रोतनि ते प्रशन बिसाला। सरमद की जिम कथा रसाला।
करी सुनावनि जिस बिधि भयो। जिम अवरंग मरिवावनि कियो ॥ ३७ ॥
संतपनो संतनि को जिस महिं। पापनि को बड पाप अहै जहिं।
सुनि करि सिख भलो उर धारें। नहिं साधन को कवि त्रिसकारें[4] ॥ ३८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'दाराशकोह प्रसंग'** बरननं नाम बिसति अंशु ॥ २० ॥

---

1. अक्षय, न नाश होने वाली 2. धड़ 3. पाप 4. निरदार न करें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २१

# सरमद प्रसंग

**दोहरा**

सरमद की सुंदर कथा श्रोता सुनहुं रसाल।
आतम को बख्यात भा ज्ञानी संत बिसाल ॥ १ ॥

**चौपई**

माता पिता धनाढ बडेरे। एक पुत्र जनम्यो तिन केरे।
बहु दुलारि तिन पारन कीना। खान पान मनभावति दीना ॥ २ ॥
तन महिंआनि भई तरुनाई[1]। बीसक बरसनि बैस बिताई।
भा परलोक मात पित केरा। रह्यो इकाकी दरब घनेरा ॥ ३ ॥
पूरब जनम भाग वड जागे। सतिसंगति कहु करिबो लागे।
संत बिदेशी उतरनि हेतु। दरब लगायहु रचे निकेत[2] ॥ ४ ॥
कितहूं ते को चलि करि आवै। चांप पाव निस त्रिखै टिकावै।
खान पान की सुधि लै आछे। देति प्रयंक[3] सुपनि चित बांछे ॥ ५ ॥
सरब भांति की सेवा करै। चांपहि चरन प्रेम को धरै।
स्वेद[4] भए पंखा करि वायू। सीत लगे पावक[5] दिपतायू ॥ ६ ॥
इत्तयादिक के आनंद देति। टहिल करनि पर रहै सुचेत।
प्राति होति जबि संत पधारै। हेत बिसरजन संग सिधारै ॥ ७ ॥
कितिक दूर लगि तिस पहुंचाइ। हटनि लगहि निज सीस निवाइ।
हाथ जोरि करि बिनै बखानै। जे तुम मग खुदाइ को जानै ? ८ ॥
क्रिपा करहु मुझ देहु बताइ। दास जानि लिहु मोहि मिलाइ।
दीन देखि करि दया करीजै। दीनद्याल की सुधि मुझ दीजै ॥ ९ ॥
सुनि करि संत साधु उपदेशें। नाम अलाह सु पाक विशेषें।
सिमरन करि सतिसंग मिलीजै। सेवहु निरहंकार बनीजै ॥ १० ॥

---

1. यौवन 2. घर 3. पलंग 4. पसीना 5. अग्नि



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रभु को प्रेमी मिलति न भयो। इमही करति बहुत दिन गयो।
नगन साध के बसन[1] बनावै। पनही[2] आदि देखि पहिनावै॥ ११॥
सभि को बूझै पंथ खुदाइ। सेवा करति रात दिन जाइ।
तहीं संत नित ही चलि आवैं। करि खिज़मत[3] सभिहूंनि रिझावै॥ १२॥
बिदा करति जबि जाइ अगेरे। बूझै मग खदाइ तिस बेरे।
शाहुहुसैन किधों को और। पूरन संत आइ तिस ठौर॥ १३॥
तिम ही सेवा तिस की करी। खान पान पद-चांपी भरी।
कर्यो प्रसंन अधिक ही तांहि। त्यार भयो उठि प्राती मांहि॥ १४॥
गयो बिसरजन करनि अगारी। जाइ दूर अभिलाख उचारी।
'कहहु संत जी! पंथ खुदाइ। जे तुम जान्यो, देह बताइ॥ १५॥
करहु दीन पर दया उदारा। हुइ दरवेश दयाल दतारा।
जानि घाल तबि सरमद केरी। संतनि सेवा कीनि घनेरी॥ १६॥
हित परखनि के संत अलाइ। पंच रजतपण[4] खरचहु जाइ।
मम हित सुंदर पनही ल्यावहु। अबि ही गमनहु गहुर न लावहु॥ १७॥
सुनि सरमद कर जोरि बखान्यो। ठहिरहु लखहु शीघ्र ही आन्यो।
इम कहि तुरत बज़ार सिधायहु। जस चाह्यो तस ततछिन ल्यायहु॥ १८॥

निज कर ते पहिरावनि कीनि। तबि दरवेश कह्यो शुभ चीन।
जो खुदाइ की खाहिश तोहि। इहां थिरहु आवन लगि मोहि॥ १९॥
इम कहि चल्यो गयो कित संत। सरमद ठांढो रह्यो इकंत।
करति प्रतीखनि को थिर भयो। लयो कपट पर कितहुं न गयो॥ २०॥

इक दुइ दिवस बिते तबि आयो। देख्यो शरधा सहित थिरायो।
अपर कसौटी को इक दीन। सकल रीति ते परखन कीनि॥ २१॥
पुन क्रिपालु ह्वै गरे लगायो। मग खुदाइ को तुरत बतायो।
प्रभु को प्रेम भयो मन पीन। तिसही रस मैं ह्वै गयो लीन॥ २२॥
निसदिन रहै अल्लहि[5] सों माता। चढ्यो नवीन रंग मन राता।
जितिक हुतो धंन सरब लगायो। दरवेशनि को खाना खवायो॥ २३॥
वेच्यो घर जेतिक धंन लीनि। हित संतनि सभि खरचनि कीनि।
अपर जि वसतू हुती अशेप। अरपन करी हेरि दरवेश॥ २४॥
भयो मसत सुधि तन की थोरी। निस दिन रहै प्रेम मति बोरी।
दिल्ली के बजार महिं परै। भयो सुछंद[6] तिसी पुरि फिरै॥ २५॥

1. वस्त्र 2 जूता 3. सेवा 4. रुपए 5. प्रभु 6. स्वतंत्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिन दिन प्रति ब्रिति चढ़हि सवाई। निधि सिधि आनि थिरी अगुवाई।
तिन को आदर नहीं करंता। परमेशुर को प्रेम धरंता ॥ २६ ॥
हुइ बेतमा[1] जगत की दिशि ते। प्रभु रस ते बन करि मन मसते।
शाहि रंक एकै करि जाना। रिदे अनंदति मन मसताना ॥ २७ ॥
इक दिन ठांढो बीच बज़ार। हतो नगन, को बसत्र न धारि।
नौरंग निकस्यो चढ़ि करि हाथी। चाकर भए हज़ारहुं साथी ॥ २८ ॥
लोक हटावनहार निहारे। दूर दूर सभि करति उचारे।
सरमद सों तिन आनि उचारी। नगन थिरहु नहिं, शाहु अगारी ॥ २९ ॥
सुनि नौरंग तिस दिशा निहरिते। बसत्र दीनि द्वै गज निज करते।
कह्यो सु नगन छादिबो कीजै। बिन छादे नहिं बहिर थिरीजै ॥ ३० ॥
इम कहि गमन्यो शाहु अगेरे। मन वांछति फिर करि पुरि, फेरे।
तितिक समें महिं मुर करि आयो। तहिं छांठो सरमद दरसायो ॥ ३१ ॥
बांध्यो सिर पर दियो सु चीर। खरो प्रथम सम नगन शरीर।
नौरग नेरे कीनसि हाथी। कुछ रिस करि बूझ्यो तिह साथी ॥ ३२ ॥
कहां मकर को धारनि कीनि? लाज जहान त्याग करि दीनि।
थुर्यो बसत्र ते लखि हम दयो। क्यों नहिं नगन छाद करि लियो ॥ ३३ ॥
डर को परिहरि करि उर भायो। क्यों कुचाल करिवे चित लायो।
सुनि सरमद तबे उत्तर दीनि। तो कहु पिख्यो बुद्धि ते हीन ॥ ३४ ॥
इसी अकल ते करि पतिशाहित। लोकन मैं बड जसु को चाहति।
तैं बनि शाहि करी बखशीश। साथ अदाब धरी हम सीस ॥ ३५ ॥
रिदे न जानी इह वडिआई। उलटी हम सों शिदत[2] उठाई।
जे ले करि बखशीश तिहारी। धरति लिंग पर करति खुआरी ॥ ३६ ॥
तौ प्रसंन होवति लखि आछी। इम बिप्रीत बुद्धि ते बाछी।
इसी अकल पर सलतनत करता? तुरक हिंदु को न्याउं निबरिता? ३७ ॥
सुनि नुरंग जरिबरि[3] उर गयो। उत्तर नहीं आवतो भयो।
लज्जिति होइ कपट को पावा। रिसति आपने सदन सिधावा ॥ ३८ ॥
रिदे ईरखा अधिक उठाई। महिमां हरवेश न लखि पाई।
समझौं फेर, कुतरक उठाई। किसी खुनामहिं जबि इहु आई ॥ ३९ ॥
सरमद खरो रह्यो तिस थान। रह्यो नगन ही प्रथम समान।
इक रस ब्रिती अनंद मैं झूलति। लिव लागी सो कबहुं न भूलति ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे '**सरमद प्रसंग**' बरननं नाम एकबिंसती अंशु ॥ २१ ॥

---

1. निरिच्छत 2. सख़्ती 3. जल बल गया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २२

# सरमद प्रसंग

**दोहरा**

इम सरमद मन मसत ह्वै थिरहि बज़ार मझार ।
इक खुदाइ संग लिव लगी दूसर सों न चिनारि ।। १ ।।

**चौपई**

कबि कबि बिजीआ पान करंता । इक चित ब्रिती करति मतिवंता ।
आनि देहि जो भोजन कोई । त्रिपत रहै खैहै मुख सोई ।। २ ।।
बैखाहश[1] बन समां बितावै । बैठ इकाकी अनंद उपावै ।
इक दिन करति भंग[2] को पाना । ढिग महिजिद[3] के पिखति मुलाना ।। ३ ।।
शर्हा वहिर इह बिजीआ पानि । तूं क्यों करति, न डरको मानि ।
सरमद कह्यो 'तोर हम डारी । इह फासी है ग्रीव तुमारी' ।। ४ ।।
मन को खोटा सुनति मुलाना । जाइ संग नौरंग बखाना ।
पुरि महिं भी न शर्हा परपाकी । बहुर बारता कहीअहि कांकी ।। ५ ।।
हुइ तोरे ते शरा उदारा । नांहि त परि है दीन[5] बिगारा ।
सरमद मसत होइ करि तोरी । तोरा शर्हा न जानहि तोरी ।। ६ ।।
सभि महिं ब्रिदति भंग को पीवै । कहै कि शर्हा फांस तुम थीवै ।
सुनति शाहु रिस प्रथम संभारी । नौकरानि हों निरा उचारी ।। ७ ।।
'गहि लीजै पग पावहु वेरी । देहु कैदखाने महिं गेरी ।
जबहि शर्हा समुझै अरु मानै । तबहि खलासी करहु बखानै ।। ८ ।।
तात्काल तिन पकर्यो जाइ । दई चरन महिं वेरी[6] पाइ ।
रह्यो कैद महिं रिदै अनंद । सिमरति प्रभु को प्रेम बिलंद ।। ९ ।।
मन मैं गनी न कछु कठनाई । देख्यो लोकनि जाइ बताई ।
नौरंग संग बखान्यो जाइ । तहां मसत चित गमी न काइ ।। १० ।।
गहिबे ते कुछ दुख नहिं माना । बोलहि बैठहि प्रथम समाना ।
कह्यो शाहि अबि करहु खलास । आगे को उपजावहु त्रास ।। ११ ।।

---

1. भंग 2. इच्छा-रहित 3. मस्जिद 4. हुक्म 5. इस्लाम 6. ज़ंजीर



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चलहि शर्हा मैं तउ सुख पावै। नांहि त बहुर कैद महिं आवै।
सुनि कै आज्ञा आनि छुडायो। कह्यो शाहु को सकल सुनायो ॥ १२ ॥
तबि सरमद सभि बिखै बखाना। जो बंध्यो तिस बंध महाना।
बिरलापहि दुख पावहि सोई। प्रभु करुना बिन छुटइ न कोई ॥ १३ ॥
हक्क मिहर[1] ते जो छुटि गए। बहुर न बंधन मैं से पए।
जाने परे अलह दरगाह। को बंध्यो को छुट्यो जाहि ॥ १४ ॥
गयो बज़ार जाइ करि रह्यो। जिस ने मग खुदाइ को लह्यो।
करहि न कान कांहु की कैसे। रहै मसत मन अमली जैसे ॥ १५ ॥
दारशकोह गह्यो जबि आयो। बाति करति तिन तांहि सुनायो।
सुनि सरमद तबि ऊच पुकारैं। हम तिस को निज तखत बिठारैं ॥ १६ ॥
सभि सलतनत दे दारशकोहू। निशचै बादशाह बड होहू।
बार बार दिन बिखै उचारैं। बहु लोकनि के काननि डारै ॥ १७ ॥
सुनि सुनि नौरंग निकटि बतावैं। बस न बसाइ अधिक जर जावैं।
करै कहां बकवाद अजाना। इसके प्रान करों मैं हाना ॥ १८ ॥
इह सलतनत पर कहां बिठावै। खोज्यो खोज नहीं कित पावै।
बडो कहावति है दरवेश। बोलहि कूरे बाक् अशेष ॥ १९ ॥
ब्रिंद साध पाखंड को धारे। दारशकोह सहाइक सारे।
सभि को देउं तिदारक[2] फेर। सने सने गहिकै बहु बेर ॥ २० ॥
इम नौरंग बड दुषट बिचारै। बिनां शर्हा नहिं भला उचारै।
अपनो तोरा[3] करहि बिसाल। सभिनि चलावै शर्हा कुचाल ॥ २१ ॥
हिंदू तुरक संत गन जेई। दारशकोह सराहहिं तेई।
सुनि सुनि एह सहहि नहि कैसे। सुंदर चंद चकवा चित जैसे ॥ २२ ॥
कई बार सरमद को गह्यो। बहु बिधि ते समुझामनि चह्यो।
नहीं शरा की मानहि कान। मन मसताना महिद महान ॥ २३ ॥
बैठि बहुत महिं ऊच पुकारै। दारशकोहै तखत बिठारैं।
दै हैं सलतनत अचल बिसाला। कीनसि मिहर खुदाइ क्रिपाला ॥ २४ ॥
सुनि कै लोक नुरंग सो कहैं। ईरखा ते दीरघ दिल दहैं।
अपर कहां लगि कहौं कहानी। कई बार गहि भा दुखदानी ॥ २५ ॥
एक दिवस आयो चलि शाहू। महिजिद ज़ुमां[4] कहति हैं जाहू।
अंतर प्रविश्यो करनि निमाज़। बहु लोकनि को संग समाज ॥ २६ ॥

1. प्रभु कृपा 2. सज़ा 3. हुक्म, तौर तरीका 4. जामिया मस्जिद

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खरे भए तूशनि हुइ सारे। काज़ी ठांढ़ो सभिनि अगारे।
तबि काज़ी नें बांग पुकारी। ऊची कूक अधिक मुख मारी ॥ २७ ॥
सरमद वहिर पुकार उचेरे। सभिनि सुनावति भा तिस वेरे।
'भो काज़ी ! अंधे मतिमंद। किसहि सुनावति कूक बिलंद ॥ २८ ॥
जो खुदाइ तेरो अनि प्यारो। सो मम पाइन तरे निहारो।
कूक कूक नित छूछो रहैं। बिना बताए हाथ न लहैं ॥ २९ ॥
कितिक खरे उमराव सुनंते। अपर लोक गन मिलि चितवंते।
कहहिं कहां सरमद तूं बौला। सुनहि शाह करि दे बहु हौला ॥ ३० ॥
शरा वहिर हेरहि कै सुनै। रिस करि तातकाल तिहि हनै।
भलो बुरो लखहि न दरवेश। अजमत को जानहि न विशेष ॥ ३१ ॥
कहि सरमद कछु नहीं हमारा। कहां शाहु करि सकहि बिगारा।
तन आदिक की ममता नासी। दंड उचित कछु रखहिं न पासी ॥ ३२ ॥
तद नौरंग निकस्यो बर पौर। कर्यो सुनावनि को तिस ठौर।
पैरनि तरे खुदाइ बतावै। तुम ते तनक[2] त्रास नहिं पावै ॥ ३३ ॥
हुकम कठोर कीनि मति अंध। गेरहु कैद पाइ बहु बंध।
पाइन अरु हाथनि महिं पावहु। ग्रीव तौक[3] करि तरै बिठावहु ॥ ३४ ॥
इस जैसे नर दंभनि धारैं। बिगर शर्हा ते अपर बिगारैं।
जबि सज़ाइ को लहै बिसाला। रहहि शर्हा महिं बनै दुखाला ॥ ३५ ॥
कै दैहों सिर को कटिवाइ। नहिं बिगरहिं नर डर उर पाइ।
गयो दुरग महिं कहि इम शाहू। सरमद गह्यो कैद के मांहू ॥ ३६ ॥
नहीं खेद को मन महिं ठाना। आतम ज्ञान सहित सुखवाना।
जिम छूट्यो, तिम बंधन मांहि। कहै निशंग त्रास[4] किस नांहि ॥ ३७ ॥
तुरक क्रूर बहु देति सज़ाइ। नहिं मन गनहि एक लिवलाइ।
अनिको भांति के त्रास बतावहिं। बहुर शाहु के निकटि जनावहिं ॥ ३८ ॥
मानति नहिं शर्हा की बात। किधौं करहु तनु तिस को घात।
बोलति है आनन[5] जिम आवै। सुनि नुरंग उर कोप उपावै ॥ ३९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'सरमद प्रसंग'** बरननं नाम द्वैबिसती अंशु ॥ २२ ॥

---

1. दीवाना, पागल 2. थोड़ा-सा 3. जंजीर 4. भय 5. मुँह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २३

# सरमद मरन प्रसंग

दोहरा

तिन दिवसनि महिं दूत इक दिल्ली पुरि मैं आइ।
रुम वलाइत शाह ने लिखि करि दियो पठाइ[1] ॥ १ ॥

चौपई

शुकर सबर दो नाम जु कहैं। कहां माइना इनको अहै?
बूझनि हेतु नुरंगे पास। होइ जथारथ करहु प्रगास ॥ २ ॥
नहीं माइना इन ते आवै। तौ सरमद इक संता कहावै।
तिस ते बूझहु भले बिचारि। लेहु माइना जो हुइ सार ॥ ३ ॥
सो दिल्ली महिं आनि प्रवेशा। डेरा कीनसि पिख्यो अशेषा।
बहुर शाहि के निकटि पधारा। मुलाकात करि हेतु उचारा ॥ ४ ॥
हज़रत जसु तुमरो बहु भाखै। चौदां सै उलमावनि[2] राखै।
इम सुनिकै इत मोहि पठावा। हेतु मायने बूझनि आवा ॥ ५ ॥
शुकर, सबर ए नाम जु दोइ। इन को कहां मायना होइ?
सो मोकहु दीजै समुझाइ। दानशवंदनि[3] ते करिवाइ ॥ ६ ॥
सुनि नौरंग उमराव बुलाए। अनिक मुलाने तबि चलि आए।
बहु भांतनि ते रिदै विचारहिं। निज निज मति अनुसारि उचारहिं ॥ ७ ॥
खातर जमा[4] न तिस की होइ। अनिक दलील उठावति सोइ।
दिल्ली महिं जेतिक मतिवाने। सकल सकेले[5] शाहु बखाने ॥ ८ ॥
बहु भांतनि ते करहिं उचारि। निज निज मति अनुसार विचारि।
तऊ न निशचै तिसके होवा। करहि दलीलां संसे पोवा ॥ ९ ॥
केतिक दिन लौ चरचा रही। खातरजमा भई किम नहीं।
भयो निरास सभिनि ते जबै। सरमद को सिमर्यो तिन तबै ॥ १० ॥

---

1. रूम के बादशाह ने लिखकर कर भेजा 2. आलम, विद्वान् 3. बुद्धिमान 4. तसल्ली 5. इकट्ठे कर लिए



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बूझ्यो लोकन ते कित रहै ? महद् विदत दरवेश जु अहै ।
'पर्यो कैद मैं' तिनहुं बतावा । शर्हा बहिर चलिबे अटकावां ।। ११ ।।
रुम शाहिको दूत सुनी जबि । जान्यों नौरंग कुटिक बडो तबि ।
गयो कैदखाने महिं देखा । तन जिह बंधन परे विशेखा ।। १२ ।।
हाथ जोरि करि सिजदा कीनि । बैठ्यो चित महिं जानि प्रबीन ।
अपनो सकल प्रसंग सुनावा । रूम वलाइत ते चलि आवा ।। १३ ।।
तहां नाम शुभ सुन्यो तुमारा । बहु लोकनि जसु बडो उचारा ।
इहां आइ अस गति जुति हेरा । तऊ माइना कहहु भलेरा ।। १४ ।।
शुकर, सबर जे आखहिं दोइ । किसको कहैं ? बखानो सोइ ।
सुनि सरमदतिह सों तबि कह्यो । लेनि मायना जे चित चह्यो ।। १५ ।।
होति प्राति के चलि करि आवहु । जल की मशक संग करि ल्यावहु ।
तहमद* नयो एक तबि आनहुं । लेहु माइना जथा बखानहुं ।। १६ ।।
सुनिकै दूत गयो निज डेरे । निसा बिताइ त्यार भा फेरे ।
तहमद हित लै द्वै गज चीर । मशक लीनि भरिवाहु सु नीर ।। १७ ।।
सरमद निकटि जाइ करि खर्यो । तहमद जल को अरपन कर्यो ।
देखति उठ्यो कर्यो इशनान । निज सरीर पावनता ठानि ।। १८ ।।
तहमद कीनो तेर नवीन । खरो रह्यो दरवेश प्रबीन ।
कह्यो दूत सों हुइ करि खरो । पिखहु बिलोचन मूंदन करो ।। १९ ।।
सुनि करि ठांढो भयो अगारी । द्रिग मुंद्रित करिकै तिस बारी ।
सरमद हाथ सीस पर धर्यो । अचरज बडो दिखावनि कर्यो ।। २० ।।
भूत प्रेत हैं लाखों खले । पुरि सगरो निज हाथनि धरे ।
सरमद बदन दिशा सभि हेरैं । हमको आज्ञा दे किस बेरैं ।। २१ ।।
जमना महिं गेरहिं उथलाइ । सभ दिल्ली पुरि को बिनसाइं ।
सरमद नहिं हुकम को देति । सभि सजाइ सहि तन पर लेति ।। २२ ।।
सगरे घर हाथनि पर धरे । लाखहुं शकतिवंत हैं खरे ।
इह दिखाइ करि हाथ उतारा । बहुर दूत प्रति बाक् उचारा ।। २३ ।।
लह्यो माइना कैधों नाहि ? खातरजमा भई चित मांहि ?
सुनि करि हाथ जोर करि कह्यो । आंख मूंदि जो अचरज लह्यो ।। २४ ।।
नहिं माइना समुझयो कोइ । निरनै करहु बतावहु सोइ ।
तबि सरमद कहिकै समुझावा । हेतु माइने महिं दिखरावा ।। २५ ।।

*धोती

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एती शकति मोहि को दीनि। करी मिहर जान्यो बहु दीन।
यांते शुकर रब्ब के घर को। कर्यो अलप ते एतिक बर को ॥ २६ ॥
बहुर मोहि दिशि देखनि करीअहि। इती समरथ समेत बिचरीअहि।
तऊ सबर, मैं उर महिं धार्यो। नहिं कुबाक्[1] भी किसू उचार्यो ॥ २७ ॥
सरब सजाइनि सहौं सरीर। देहिं कितिक ही मोकहु पीर।
सिर जाने लगि सबर धरौं मैं। शकति दिखावनि नहिं करौं मैं ॥ २८ ॥
सुनति दूत पद बंदन करी। खातरजमा अधिक पिखि धरी।
पाइ माइना गमन्यो देश। अवरंग की करि निंद विशेष ॥ २९ ॥
पीछे कैद रह्यो, कुछ काल। त्रास न मानहिं मसत बिसाल।
शर्हा न मानहिं रच्यो खुदाइ। नर बपुरा क्या अग्र लखाइ ॥ ३० ॥
ढिग औरंग जाइ करि कहैं। समरद नहिं त्रास मन लहै।
बिना त्रास ते शर्हा न चालहि। जिम चित चाहै चलहि कुचालहि ॥ ३१ ॥
सुनति पापकरमा रिस[2] भर्यो। कतल सीस को हुकम उचर्यो।
चली घौंस बाजति तिस तीर। दुइ तोमर[3] दीरघ धरि बीर ॥ ३२ ॥
बिदत हुकम पुरि सभि महिं भयो। सरमद सिर काटनि को कियो।
हेतु बिलोकनि लोक सिधाए। पहुंचे जाइ हुते जिस थाएं ॥ ३३ ॥
सुनि करि बिनां त्रास ही बोला। ध्यान प्रभू ते मन नहिं डोला।
ढिग महिजिद[4] के तिसै बिठाइ। हनी तेग सिर दीओ गिराइ ॥ ३४ ॥
कितिक समै लगि धर सो जीवा। बैठ्यो रह्यो तथा थिर थीवा।
निज श्रोणत सों अंगुरी भरि भरि। भीत मसीत तिसि पर धरि धरि ॥ ३५ ॥
लिखी बंत आछी सु बनाइ*। जिस को पठि बैराग उपाइ।
इस प्रकार सरमद[5] को मारा। द्रोही शाहु महां कुरिआरा ॥ ३६ ॥
करति घात पातक नहिं जानहिं। राज तेज निज सुख को हानहि।
दारशकोह भ्रात मरवाए। तिस ते पंद्रा दिवस बिताए ॥ ३७ ॥
सरमद बड दरवेश संघार्यो। नरक परन को त्रास न धार्यो।
अपर तुरक कै हिंदू कोइ। गहै शर्हा हित मूरख सोइ ॥ ३८ ॥

---

1. बुरा वचन 2. गुस्सा 3. बरछा 4. मस्जिद 5. झूठा

*सरमद अच्छा शायर था। उस का अंत समय लिखा यह शिअर कहा जाता है—

सर दरे राहे दिलदार अदाशुद चि बजा शुद
ईं बारि गिरां बूद अदा शुद, चि बजा शुद।

मेरा सीस प्रीतम के मार्ग पर भेंट हो गया, अच्छा हुआ। बहुत बोझ था, जो उतर गया, अच्छा हुआ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

केतिक को गहि करि मरिवावैं। नातुर शर्हा के मध्य चलावै।
हुतो कैद महिं पिदर विचारा। तेज सु राज अधिक जिह धारा ॥ ३९ ॥

अलप अहार नीर को देति। बहु दुख पाइ छुधित त्रिख हेतु।
गह्यो इकाकी रालि बिठाइ। संकट दै दै बहु तरसाइ ॥ ४० ॥

जिस ते उतपति मूरख होवा। तिसी पिदर[1] को सुख ते खोवा।
कैद बिखै ही मारनि कर्यो। इत्तयादिक पापनि गन धर्यो ॥ ४१ ॥

अपर कुचाली कीनि अनेक। अति मतिमंदा हीन बिवेक।
जे निज पिदर संग इम खोटा। डरे सरब, पुन किनहुं न होटा[2] ॥ ४२ ॥

अपर कहां लगि कहौं खुटाई। करति भयो पातक[3] समुदाई।
कुछकु सुनावनि करौं सुजानि। जिस ते सलतनत[4] तुरकनि हान ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'सरमद मरन प्रसंग'** बरननं नाम त्रैविंसती अंशु ॥ २३ ॥

---

1. पिता 2. रोका नहीं 3. पाप 4. बादशाहत

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु २४

# तुरकेशुर प्रसंग

### दोहरा

इस प्रकार औरंग ने हते पिता अरु भ्रात।
दुषट, पाप करमा महां बहु लोकनि दुख दात ॥ १ ॥

### चौपई

शरा बीच सभि जगत चलावहुं। जो नहिं मानै तिसै मरावहुं।
अस संकलप कीनि द्रिढ़ मन मैं। अति बादी[1] तुरकनि के गन मैं ॥ २ ॥
हठ करता जिद में जु महाने। जिनहुं माइने अरबी जाने।
बीच पारसी निपुन सुजाने। अस राखे बहु निकटि मुलाने ॥ ३ ॥
आदर दरब दोइ बहुतेरा। तिन की संगति करति घनेरा।
परमेश्वर प्रापति मग[2] अंधे। गाढ़े शर्‌हा फास संग बंधे ॥ ४ ॥
अंधनि साथ बंध मिलि जैसे। ज्ञान रूप को होहि न कैसे।
तथा शर्‌हा सभि अंधे करे। मग खुदाइ क्यों द्रिषटि परे ॥ ५ ॥
रिदे नुरंगे कीनि बिचार। बेश्या ब्रिंद बज़ार मझार।
सभि हराम करि बैस बितावैं। शर्‌हा बीच ए नहिं द्रिषटावैं ॥ ६ ॥
सगरी करि कै हुकम हकारी। आई ब्रिद्ध तरुन अरु बारी।
कह्यो कार अपनी दिहु त्यागि। इक इक खसम संग लिहु लाग ॥ ७ ॥
नांहि व दोजक मैं दुख पावउ। बहु सों मिलो हराम कमावउ।
सुनि करि बेश्या बहुत पुकारी। इही कदीमी[3] कार हमारी ॥ ८ ॥
बरख हज़ारहुं बीत गए हैं। बडे बडे पतिशाहु भए हैं।
किनहुं न हम को रोकनि कीनि। करति रही निज कार धनीन ॥ ९ ॥
हम कैसे अबि त्यागनि करैं। जबरी करहु बैठि दर मरैं।
नौरंग सुनि खुनस्यो[4], नहिं भाई। नौका पर गन बोलि चढ़ाई ॥ १० ॥

---

1. झगड़ालू 2. प्रभु का मार्ग 3. पुरानी 4. क्रोधवान् हुआ



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जमना के प्रवाह मैं जाइ। गहि गहि सगरी दई डुबाइ।
हाहाकार पुरी महिं होवा। इहु दुरमति कुल को जसु खोवा॥ ११॥
करामात कुछ सों इक पीर। तिस ढिग गई बेशियनि भीर।
ब्रिथा आपनी सकल सुनाई। इह नौरंग बादी दुखदाई॥ १२॥
इस ते रच्छया करहु हमारी। नांहि त नासहिं सभि इक बारी।
सुनति पीर के करुना आई। गावन महिं दिय ख्याल बनाई॥ १३॥
गावहु जाइ दुरग पिछवारे। सुनि नौरंग तुम को नहिं मारे।
आज्ञा पाइ सीख करि आई। मिलि बेश्वा ह्वै कै समुदाई॥ १४॥
जहिं की धुनि सुनि नौरंग कान। तहां जाइ ऊचे करि गान।
पीर बनादट मन महिं जानी। हुकम शाहि ने कीनि बखान॥ १५॥
जे तिसकी मरज़ी है ऐसे। हम नहिं करहिं करहु क्रित तैसे।
पीर हुकम को कबि न हटावौं। जिस आगे मैं सीस निवावौं॥ १६॥
इम सुनिकै बेश्या हरखाइ। बचकरि रही बसी ग्रिह आइ।
जथा सरप घेरे मैं होइ। डसिबे ते बीच है बिधि कोइ॥ १७॥
तुरकनि महिं इक होति फकीर। सूफी के पहिरैं शुभ चीर[1]।
ढोलक बजति चढहि जिन हाल। सिर भरमाइं, बिशुद्ध बिहाल॥ १८॥
सो दिल्ली परिमहिं समुदाइ। तिन को नौरंग लीनि बुलाइ।
सभि इकठे किय, भए घनेरे। बूझनि लग्यो तिनहुं करि नेरे॥ १९॥
तुम कैसे बेसुध हुइ जावहुं? आपन पर का नहीं लखावहुं।
रिदे तुमारे महिं क्या होइ? बेइखत्यारी कारन कोइ॥ २०॥
इह तो शर्हा बिखै नहिं बात। लखीअति जांते दंभ कमाति।
सुनति फकीरनि उत्तर दीए। एव सिरड़[2] दरवेशनि कीए॥ २१॥
तुम क्या कहति, करै किम कोई। जथा फकीरनि मरज़ी होई।
मग खुदाइ के जे नर चाले। मन वंध जाइ प्रेम प्रभु नाले॥ २२॥
निस दिन सुरति टिकी जिन रहै। इक दर के आशिक नित अहैं।
ढोलक आदि बजावनि करि के। गुन खुदाइ गावनि संग सुर के॥ २३॥
तबि तिन रिदै चोट सी लागे। बेइखत्यार होहिं अनुरागे।
बिसरि जाति सुधि सरब शरीर। धीरज कहां संभारनि चीर॥ २४॥
संग खुदाइ मिलावहिं मन को। ब्रिति समेत बिसारहिं तन को।
जथा चोट को मुरछा पाइ। ऐसो ख्याल तिनहुं बनि जाइ॥ २५॥

1. वस्त्र 2. हठ, दृढ़ता।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिन ते सुनि नौरंग ने बरनी। जे करि तुमरे इहु सच करनी।
भोर होति मैं परखनि करिहौं। कूरे नहीं बहुर उर धरिहौं॥ २६॥
अबि तुम जाहु होहु समुदाइ। इह बिधि मोहि देहु दिखराइ।
होति प्रभाति निहारनि करौं। निज हजूर पतिआउ निहारौं॥ २७॥
पुन तुम को नहि कित ते त्रास[1]। करि दिखरावहु सचु मुझ पास।
सभि फकीर चलि बाहर आए। इकठे जहिं तहिं भे समुदाए॥ २८॥
रिदे बिचारहि करहिं बखानि। इह नौरंग बादी बलवान।
बिन परखे नहिं त्यागहि कांहू। शकति बिलोकि लेहु निज मांहू॥ २९॥
चिंता बसि सुपते निस नांही। भई प्रभाति जागवे मांही।
नौरंग ने इक थान बनाइव। ऊचे ते फिसलन गति पाइव॥ ३०॥
तरे तंदूर लोह को धर्यो। अगनि तपाइ लाल सो कर्यो।
जिसके देखति उपजति त्रास। दाहति है पहुंचे ते पास॥ ३१॥
ऊपर बैठक भली बनाइ। गाइक दीए तहां बिठाइ।
तबि सभि सूफी केर फकीर। करे हकारनि अपने तीर॥ ३२॥
तहिं बिठाइ ढोलक बजिवाई। सुर अलापकै तान बसाई।
पिखि फकीर करि त्रास घनेरा। किसहुं न चढ़यो हाल[2] तिस बेरा॥ ३३॥
तिन महिं इक ने तबहि विचारा। इक खुदाइ इस वखत हमारा।
परवदगार ! नाम पर बेस। राखि लाज निज, तव दरवेश॥ ३४॥
हम झूठे भी 'तबि तुम नाम। राखहु पति खुदाइ सुख धाम।
सभिनि अराध्यो पीरन पीर। भनी बिनै ह्वै करि भै भीर॥ ३५॥
तबि फकीर इक हाल चढ्यो है। सभि के मन आनंद बढ्यो है।
इत उत बिचारति बेसुध होइ। फिसल्यो पैर न ठहिर्यो सोइ॥ ३६॥
लाल बिसाल तपत तंदूर। गिर्यो तिसि मैं सभिनि हजूर।
जबि फकीरको परस्यो गात[3]। सीतल भयो सु अचरज बात॥ ३७॥
देखि देखि करि सभि बिसमाए। साचे रहे स्वांग निबहाए।
नौरंग कह्यो जाहु निज डेरे। बांछति करहु न अबि को फेरे॥ ३८॥
इम फकीर सो छुटि करि आए। सिमर खुदाइ रिदै हरखाए।
नौरंग बादी[4] को दें गारी। अरह मूढ़ दरवेश अगारी॥ ३९॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'तुरकेशुर प्रसंग'** बरननं नाम चतरबिसती अंशु॥ २४॥

1. परीक्षा करके देखूंगा 2. मस्ती 3. शरीर 4. झगड़ालू

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २५

# नौरंग प्रसंग

**दोहरा**

आवति जाते बेनवा[1] सभि पर करहिं अवाज़ ।
कितिक मुलाननि संग भी करहिं तरकना साज ।। १ ।।

**चौपई**

सभिनि मुलाने मतो मताइ । कहि नौरंग सो लीए बुलाइ ।
करे समूह एकठे सोइ । चलि आए मिलिकै सभि होइ ।। २ ।।
निकटि हकारि बूझना करी । शर्हा वह्रिर तुम क्यों मति धरी ?
सादर किसहि न बाक् बखानहु । हास समेत तरकना ठानहु ।। ३ ।।
क्या तुम ने अपने मन जानी ? महद होहि किम जिस ते मानी ।
त्यागहु सगल न मनमति कीजै । चलनि शर्हा कहु मारग लीजै ।। ४ ।।
नांहि त दोज़क महिं दुख पावहु । तांहि बचावहि तिसहि मनावहु ।
सुनति बेनवन कह्यो न माना । खोटा नौरंग संग बखाना ।। ५ ।।
हम पर तेरो हुकम न कोई । मन भावति हम बोलहिं सोई ।
चोर यार करनी बटपारी[2] । तिसै सज़ाइ देहु हित धारी ।। ६ ।।
हम फकीर दरवेशनि रीति । उचित सज़ाइ दोष नहिं चीत ।
हम दुनीआं ते फारक[3] अहैं । तुझ कहिबे महिं क्यों करि रहैं ।। ७ ।।
किनहुं न कबि कैसे कित कह्यो । त्रिभै सदा हम भै नहिं लह्यो ।
करति रहे जिम बडे हमारे । सिर धरि चलहिं तिसी अनुसारे ।। ८ ।।
सुनि नौरंग के रिस उर आई । सभि नौका पर दीए चढ़ाई ।
कह्यो नदी के बड प्रवाह । जाइ डुबावहु बाचहिं नांहि ।। ९ ।।
बहु मानुख ह्वै करि रखवारे । लेकरि नौका तितहि सिधारे ।
इतने महिं इक बेनव और । आइ पुकार्यो ऊचे ठौर ।। १० ।।
मैं दमाद[4] नौरंग को खरो । इस को त्यागनि कैसे करो ।
इन संग मोहि चढ़ाइ सिधरीअहि । इस की दुहिता[5] बिधवा करीअहि ।। ११ ।।

---

1. फ़कीर 2. ठगी का काम 3. मुक्त 4. जामाता 5. बेटी



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि नौरंग ने दिए छुटाए। इह तौ बडे ढीठ समुदाइ।
मरिबे मैं बिलंब अबि नहिं। तऊ निधरक बात इह कही ॥ १२ ॥
मरे न समुझहिं पाछल रहे। हठ ते अरहिं, पंथ अस अहे।
इनको त्यागहु कछु नहिं कहो। ढीठ मूढ़ता मैं बड लहो ॥ १३ ॥
देश देश ते इह चलि आइ। होहिं समूह फतूर उठाइ।
बचे बेनवा इम, चलि गए। मनहुं काल ते छूटति भए ॥ १४ ॥
इत्तयादिक तुरकनि संग बाद्या। नौरंग महां मूढ़ परमाद्या[1]।
पुन हिंदुनि पर तरक वढ़ाई। वुत पूजति इन समुझि न काई ॥ १५ ॥
थान थान मंदर बहु करे। घर घर पाथर घर घरि धरे।
चंदन फूल लाइ घनसारा। बारि[2] पखारहिं बारंबारा ॥ १६ ॥
धोइ बुतन को पीवहिं पानी। झूठहु अंन धरहिं अगुवानी।
पुनहि उठाइ आप ले खाहिं। इस ते कहैं भिसत हम जाहि ॥ १७ ॥
मिल काज़ी मुल्लां समुदाए। नौरंग को कहि कहि समुझाए।
आलमगीर अहैं तूं एक। तुझ कहिवे महिं खलक अनेक ॥ १८ ॥
मारग भले चलावनि चहीअहि। सभि पर हुकम अपनि निरबहीअहि।
शर्‌हा दीन बिरधावनि करीअहि। चिरंकाल जसु जुति जग थिरीअहि ॥ १९ ॥
महांदीन को ह्वै अति प्यारो। जो सुख देइ सभिनि ते भारो।
को न दीन महि तुझ सम भयो। ह्वै है, नहिं है, कबहुं न हुयो ॥ २० ॥
जो कछु कर्यो चहैं जग मांही। सो हुइ साच अंनथा[4] नांही।
नरी अगाध नीर बड बहे। होहि पगार[5] तोहि को लहे ॥ २१ ॥
जित दिशि रिस करि करहिं चढ़ाई। बहिर थहिर थिर रहि न सकाई।
पाइनि परहिं उपाइनि आनहिं। हुकम आप को सिर पर मानहिं ॥ २२ ॥
शत्रु ह्वै न सकै जग कोई। होइ जु खंड खंड तन सोई।
दुरगम थान दुरग सभि मारे। तब प्रताप जसु फैल्यो सारे ॥ २३ ॥
देश, दुरग, दल, दरब रु दान। पंच दकारी भूप प्रधान।
सो तुव सदन पायते सारो। अपर न को समता किम धारो ॥ २४ ॥
बखशिश करी पिकंबर तोहि। अति प्रसंनता हिरदे होहि।
सो इक कारण ते मन जान। करनि खलक महिं दीन महान ॥ २५ ॥
पैकंबर को कारज एहू। बांछति करहु क्यों न जसु लेहू।
चलहि सु मारग कलमा गाइ। पठि कुरान को लखहि खुदाइ ॥ २६ ॥
हिंदू चलहिं कुमग[5] दुख पाइ। क्यामत दोज़क लहैं सजाइ।
नहिं पैकंबर हामी भरिही। अपन न राखा तहां निहरिही ॥ २७ ॥

1. प्रमाद, मत्त, भूला हुआ 2. पानी 3. व्यर्थ 4. पैर तक 5. कुमार्ग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस लाइक तुम करे खुदाइ। सकल खलक पर हुकम टिकाइ।
दारशकोह भ्रात जो तेरो। संग काफरनि करति बडेरो ॥ २८ ॥
हजो[1] भई सभि मैं तिस केरी। पतिशाहिति ते खारज हेरी।
राह शर्हा के तुम मरिवावा। यांते जसु बिसाल जग पावा ॥ २९ ॥
तुम बिन सरै न किस ते कारी। तुरक बनावनि खिलकत सारी।
राह शर्हा के सकल चलावहु। हिंदुनि को पूरब समुझावहु ॥ ३० ॥
पुन लालच दीजै जिस चाहू। मानहिं जथा शर्हा के राहू।
भगनी कै तनिया[3] निज दैहो। ज्यों क्यों तुरक बनाइ सु लैहो ॥ ३१ ॥
पैकंबर प्रसंन हुइ जिस ते। हिंदू तुरक बनै जबि किस ते।
सरब भांति महिं समरथ तुम हो। बधहि दीन ठानहु बिधि तिम हो ॥ ३२ ॥
बुत पूजन ते बरजनि करीअहि। सभि ते कलमा अपना उचरीअहि।
अपने ढिग इक मथुरा पुरी। तहिं हिंदू सभि करते बुरी ॥ ३३ ॥

**दोहरा**

इहां भयो हमरो बडो तिस की कथा बताइ।
साथ अनिक इसत्रीनि के करे बिलास बनाइ ॥ ३४ ॥

**चौपई**

अबि तिस के सो चलित बनावहिं। करि शिंगार नाचहिं अरु गावहिं।
बकहिं कुफर कुछ सुन्यो न जाई। बिगसहिं खेलहिं मोद वढ़ाई ॥ ३५ ॥
करहिं पाप जिसते हुइ शोक। इम करि चाहति सुख परलोक।
तिस को बुत बनाइ बहु भांती। पूजहिं बिबिध दिवस अरु राती ॥ ३६ ॥
बारहिं दीपक पुषप चढ़ावहिं। चंदन चरचैं बाज बजावहिं।
मिलि करि इसत्री पुरख घनेरे। खोट परसपर करहिं बडेरे ॥ ३७ ॥
करे हज़ारों बुत के मंदर। लाइ दरब रचि राखे सुंदर।
सभि हिंदू इन मानति अहैं। धरम आपने को निरबहैं ॥ ३८ ॥
आप चलहु बुत देहु फुराइ। मंदर दिहु बिदार[4] समुदाइ।
त्रास उपावहु सभि के मांही। तुरक जि बनहि देहु सुख तांही ॥ ३९ ॥
उत्तम थान हिंदूअनि के जहिं। सभिहि बिदार मसीत रचहु तहिं।
हिंदु त्रास दिहु, तुरक बडाई। बिनां बनाए सभि बन जाईं ॥ ४० ॥
इत्तयादिक कहि बहु समुझावा। बादी नौरंग बाद उठावा।
दीन बधावनि की अभिलाखा। चलहिं भौर को चढ़ि करि भाखा ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे '**नौरंग प्रसंग**' वरननं नाम पंचाबिंसती अंशु ॥ २५ ॥

---

1. निंदा 2. जनता 3. बहन या बेटी 4. ढाह दो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २६

# तुरकेशुर प्रसंग

**दोहरा**

भई भोर नौरंग चढ्यो मथरा के समुहाइ।
बाद करनि हिंदुवान सों महां मूढ दुखदाइ॥ १॥

**चौपई**

चढ़ि असवारी नौरंग धायो। मथरा आइ सिवर निज पायो।
हेरे मंदर खरे हज़ारों। मूरति अंदर बिबिध प्रकारों॥ २॥
बड घंटनि के शबद उठंते। अनिक रीति उतसाह करंते।
पिखति तुरंगा जरब़र गयो। मुख्य मनुक्ख हकारति भयो॥ ३॥
बिप्र बिरागी जबि चलि आए। सभिनि साथ बच दुखद अलाए।
क्या तुम दंभ कमावनि कीनसि ? मग खुदाइ मिलिबे नहिं चीनसि ? ४॥
बुत पूजति अपराध महाना। सो तुम निसदिन करहु अजाना।
पाथरमहिं खुदाइ को मानि। लोकनि ठगहु देहिं धन आनि॥ ५॥
बुत पूजन को देहु हटाइ। नहिं दोज़क महिं 'मिलहि सज़ाइ।
कलमा पठहु दीन महिं आवहु। चलनि शर्हा महिं रुचि उपजावहु॥ ६॥
भिसत बिखै पहुंचनि कहु राहू। अनत भ्रमति दोज़ख महिं जाहू।
इत्तयादिक कहि बहु समुझाए। सभिनि कह्यो हमरो धरम जाए॥ ७॥
जे आगे भे बडे बडेरे। तिनहि बतायहु मग, जिन हेरे।
तुमरो हमरो दीरघ अंतर। निज निज मत महिं चलैं निरंतर॥ ८॥
क्यों करि धरम आपनो छोरैं। नरक परनि कहु क्यों करि लोरैं।
धेनु घात* लौ करहु अधरम। यांते सुख चहि भरमे भरम॥ ९॥
खान पान महिं सौच बिहीने। तुमरे नहिं गिलान किम चीने।
गमन भिशत को जान्यो जोइ। गिरै नरक, बिन संसै सोइ॥ १०॥

---

* गोहत्या



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस लाइक तुम करे खुदाइ। सकल खलक पर हुकम टिकाइ।
दारशकोह भ्रात जो तेरो। संग काफरनि करति बडेरो ॥ २८ ॥
हजो[1] भई सभि मैं तिस केरी। पतिशाहिति ते खारज हेरी।
राह शर्हा के तुम मरिवावा। यांते जसु बिसाल जग पावा ॥ २९ ॥
तुम बिन सरै न किस ते कारी। तुरक बनावनि खिलकत सारी।
राह शर्हा के सकल चलावहु। हिंदुनि को पूरब समुझावहु ॥ ३० ॥
पुन लालच दीजै जिस चाहू। मानहिं जथा शर्हा के राहू।
भगनी कै तनिया[3] निज दैहो। ज्यों क्यों तुरक बनाइ सु लैहो ॥ ३१ ॥
पैकंबर प्रसंन हुइ जिस ते। हिंदू तुरक बनै जबि किस ते।
सरब भांति महिं समरथ तुम हो। बधहि दीन ठानहु बिधि तिम हो ॥ ३२ ॥
बुत पूजन ते बरजनि करीअहि। सभि ते कलमा अपना उचरीअहि।
अपने ढिग इक मथुरा पुरी। तहिं हिंदू सभि करते बुरी ॥ ३३ ॥

दोहरा

इहां भयो हमरो बडो तिस की कथा बताइ।
साथ अनिक इसत्रीनि के करे बिलास बनाइ ॥ ३४ ॥

चौपई

अबि तिस के सो चलित बनावहिं। करि शिंगार नाचहिं अरु गावहिं।
बकहिं कुफर कुछ सुन्यो न जाई। बिगसहिं खेलहिं मोद बढ़ाई ॥ ३५ ॥
करहिं पाप जिसते हुइ शोक। इम करि चाहति सुख परलोक।
तिस को बुत बनाइ बहु भांती। पूजहिं बिबिध दिवस अरु राती ॥ ३६ ॥
बारहिं दीपक पुषप चढ़ावहिं। चंदन चरचैं वाज वजावहिं।
मिलि करि इसत्री पुरख घनेरे। खोट परसपर करहिं बडेरे ॥ ३७ ॥
करे हज़ारों बुत के मंदर। लाइ दरब रचि राखे सुंदर।
सभि हिंदू इन मानति अहैं। धरम आपने को निरबहैं ॥ ३८ ॥
आप चलहु बुत देहु फुराइ। मंदर दिहु बिदार[4] समुदाइ।
त्रास उपावहु सभि के मांही। तुरक जि बनहि देहु सुख तांही ॥ ३९ ॥
उत्तम थान हिंदूअनि के जहिं। सभिहि बिदार मसीत रचहु तहिं।
हिंदु त्रास दिहु, तुरक बडाई। बिनां बनाए सभि बन जाईं ॥ ४० ॥
इत्तयादिक कहि बहु समुझावा। बादी नौरंग बाद उठावा।
दीन बधावनि की अभिलाखा। चलहिं भौर को चढ़ि करि भाखा ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'नौरंग प्रसंग'** वरननं नाम पंचाबिसती अंशु ॥ २५ ॥

---

1. निंदा 2. जनता 3. बहन या बेटी 4. ढाह दो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २६

# तुरकेशुर प्रसंग

**दोहरा**

भई भोर नौरंग चढ्यो मथरा के समुहाइ।
बाद करनि हिंदुवान सों महां मूढ दुखदाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

चढ़ि असवारी नौरंग धायो। मथरा आइ सिवर निज पायो।
हेरे मंदर खरे हज़ारों। मूरति अंदर बिबिध प्रकारों ॥ २ ॥
बड घंटनि के शबद उठंते। अनिक रीति उतसाह करंते।
पिखति तुरंगा जरब़र गयो। मुख्य मनुक्ख हकारति भयो ॥ ३ ॥
बिप्र बिरागी जबि चलि आए। सभिनि साथ बच दुखद अलाए।
क्या तुम दंभ कमावनि कीनसि ? मग खुदाइ मिलिबे नहिं चीनसि ? ४ ॥
बुत पूजति अपराध महाना। सो तुम निसदिन करहु अजाना।
पाथरमहिं खुदाइ को मानि। लोकनि ठगहु देहिं धन आनि ॥ ५ ॥
बुत पूजन को देहु हटाइ। नहिं दोजक महिं मिलहि सज़ाइ।
कलमा पठहु दीन महिं आवहु। चलनि शर्हा महिं रुचि उपजावहु ॥ ६ ॥
भिसत बिखै पहुंचनि कहु राहू। अनत भ्रमति दोज़ख महिं जाहू।
इत्तयादिक कहि बहु समुझाए। सभिनि कह्यो हमरो धरम जाए ॥ ७ ॥
जे आगे भे बडे बडेरे। तिनहि बतायहु मग, जिन हेरे।
तुमरो हमरो दीरघ अंतर। निज निज मत महिं चलैं निरंतर ॥ ८ ॥
क्यों करि धरम आपनो छोरैं। नरक परनि कहु क्यों करि लोरैं।
धेनु घात* लौ करहु अधरम। यांते सुख चहि भरमे भरम ॥ ९ ॥
खान पान महिं सौच बिहीने। तुमरे नहिं गिलान किम चीने।
गमन भिशत को जान्यो जोइ। गिरै नरक, बिन संसै सोइ ॥ १० ॥

---

* गोहत्या



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रभु अवतारनि की बहु पूजा। जिस के सम समरथ नहिं दूजा।
सो हम मूरति बिखै अरोपि। मानति सकल सदा चिन चौप ॥ ११ ॥

कहिं तुमरो मति गमनि अधोगति। कहिं हमरो शुभ साध सुधो चित।
अविनी सकल राज तुम भयो। तिमरलिंग आदिक ते थियो ॥ १२ ॥

किसहुं न कबि इह गिरा बखानी। करि हंकार जु तुम अबि ठानी।
आप आपने मत सभि रहे। करि शुभ करम ऊच पद लहे ॥ १३ ॥

बिना करनी हिंदू क्या तुरक। सुख नहिं पय्यति परते नरक।
इत्तयादिक करकस[1] बच कहे। सुनति नुरंगे को मन दहे ॥ १४ ॥

कहति भयो इम मूढ़ गवार। तबि जानहिं जबि सिर हुइ मार।
हुकम दीओ मंदर दिहु गेरि। मूरति भगनहु अंग बखेरि[2] ॥ १५ ॥

होइ निकटि बोलहि जे कोई। कैद करहु गहि मारहु सोई।
दंड देहु करि कै जबराई। बाजहि संख न फिरहिं दुहाई ॥ १६ ॥

बहुत मिहनती देहु लगाइ। मुझ ढिग होते देहु ढहाइ।
जहिं जहिं मंदिर खरे बडेरे। तहिं मसीत चिनवहु बिन देरे ॥ १७ ॥

जहिं जहिं हिंदुनि के असथान। इनहि जेजव[3] लगहि महान।
सगल ठौर बहु दंभ कमावा। चलनि शर्हा को इनहि न भावा ॥ १८ ॥

दिहु सजाइ सभि भांतिनि इनै। तबहि पठनि कलमा मन मनै।
जिस को झगरो देहु जिताइ। तिसहि शर्हा महिं लेहु चलाइ ॥ १९ ॥

हिंदू ह्वै करि रहैं निताणे। हीन जीवका हुइं तबि जाणे।
जबि इम हुकम दुषट ने दीना। महां मूढ़ हंकार मलीना ॥ २० ॥

धाए जहिं कहिं दुशट घनेरे। करति बिदीरनि मंदिर गेरे।
हाइ हाइ हिंदुनि महिं होवा। को क्यों हूं नहिं समुख खरोवा ॥ २१ ॥

दुरे सदन महिं पंडित रोए। ब्रिथा अटल महिं रिदा पुरोए।
राम राम कहि भए लचार। नहिं मन आवहि को उपचार ॥ २२ ॥

जिम हरनाखश कीनि कुचाली। छीनि धरम ने करे कुढाली।
जिम सतिजुग महिं बेन महीशा[4]। शुभ करमनि को कीनसि खीसा ॥ २३ ॥

पुन त्रेते रावन बुरिआरी। सभि देवनि की पूजा टारी।
अपन आपको मानि महाना। सभि जग को दीनसि दुख दाना ॥ २४ ॥

---

1. कठोर 2. तोड़ दो 3. कर 4. वेणु राजा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुन द्वापुरि महिं दुषट बडेरे। कंस आदि दुरमति ने प्रेरे।
धरम लोप को चाहति मरे। छीन ओज[1] ह्वै छित पर परे ॥ २५ ॥

तिम कलिजुग महिं नौरंग होवा। महां मलेछ चहति धरम खोवा।
हिंदुनि ऊपर अनिक उपाधि। देति भयो दुख साध असाधि ॥ २६ ॥

तुरक तरकना करहिं अनेक। दीन बधावनि हीन बिबेक।
मथुरा महिं जेतिक शुभ मंदिर। बहु सुंदर मूरति जे अंदर ॥ २७ ॥

लगे मिहनती महत बिदारहिं। तुरक तेज की जरहिं उपारहिं।
कंचन कलस चिने संग चूना। फोरे सगल कर्यो जनु चूना[2] ॥ २८ ॥

लै लै मूरति अंग बिदारहिं। हाथ पाव ग्रीवा कटि डारहिं।
दूर बगावहिं नदी मझारा। करि बहु खंड देहिं छित डारा ॥ २९ ॥

भए देवता व्याकुल सारे। लखि तप तुरक न को निरवारे।
मंदिर भ्रिषट करे जहि कहां। प्रतिमा[3] तोरि फोरि करि महां ॥ ३० ॥

कित कित थल मसीत चिनवाई। देति बांग ऊचे किलकाई।
रोज़ ईद निवाज़ गुज़ारहिं। हिंदू पिखति झिरकिबो धारहिं ॥ ३१ ॥

जावति[4] मूरति मंदिर सारे। तोरि फोरि करि सकल बिदारे।
तावत नौरंग राख्यो डेरा। देति हिंदूअनि त्रास घनेरा ॥ ३२ ॥

बनहि तुरक झगरा जित जावहि। सकल शरीकनि ते बिरधावहि।
किसहूं दरब देहि चित चाहू। आनहि अपन शर्हा के मांहू ॥ ३३ ॥

किस हूं को तनिया दे आपनि। ज्यों त्यों धरम करहिं तिन खापनि।
भयो त्रास हिंदुनि महिं भारी। नहीं परसपर करते रारी ॥ ३४ ॥

जौ क्यों हूं लरि परि है कोइ। बनिहौं तुरक उठहि कहि सोइ।
तिस को लें ततकाल मिलाइ। चित इच्छा को देति पुजाइ ॥ ३५ ॥

पिता पुत्र को ताड़हि नांही। क्रुद्धति भ्रात न आपस मांही।
अपरनि की गिनती किन करी। अस हिंदुनि पर अपदापरी ॥ ३६ ॥

इम बिगार करि नौरंग हरख्यो। मनहुं कषट को बादर बरख्यो।
पूरब जनम कीनि तप घोरा। अतिशै तेज भयो जिह जोरा ॥ ३७ ॥

बरजनहार न दीखति कोऊ। जिम इच्छा चित करि है सोऊ।
मथुरा महिं इम खोज दिखाइ। दिज आदिक हिंदुनि दुखदाइ ॥ ३८ ॥

---

1. बल 2. नष्ट 3. मूर्त्ति 4. जब तक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करिकै सगरे भ्रिषट सथान। रोक्यो पूजनि पठनि महान।
चितवहि केतिक दिन महिं सारे। पाइं कषट हुइं शर्हा मझारे॥ ३९ ॥

बिना बनाए सभि बनि जाइं। जबहि जीवका* हाथ न आइ।
तुरकनि बिखै होहिं धनवान। चलनि शर्हा को लें मन मानि॥ ४० ॥

**दोहरा**

इम मथुरा भ्रिषट करि दुषट धारि हंकार।
अपर थान चलिबो चह्यो लोपनि धरम उदार॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे '**तुरकेशुर प्रसंग**' बरननं नाम खषटबिसती अंशु॥ २६ ॥

* रोज़गार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २७

# जै पुरि औरंग प्रसंग

**दोहरा**

तिह थल किसहूं दुषट ने नौरंग को समुझाइ।
बुत पूजनि की अधिकता जै पुर महिं बहु थाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

तहिं जै सिंह सवाई राजा। करे बहुत हिंदुनि के काजा।
बड़े बड़े मंदिर बनवाए। कंचन कलस महां छबि छाए ॥ २ ॥
जिनहुं बिलोकति शरधा जागै। मूढ़नि के भी अनुरागै।
बहुत जीवका तिनहुं बनाई। जे बुत पूजति हैं चितु लाई ॥ ३ ॥
रुचिर[1] सु प्रतिभा चतुर चितेरे। रची चौप चित रुचिर घनेरे।
कंचन अलंकार घरवाए। मुकता झालर दर लटकाए ॥ ४ ॥
चारु चुकौन चौकीअनि रची। शुभति जराउ खचन ते खची।
चौर चमक जनु चिकने चीनसि। ढोरति, झोरति बिजनो[2] लीनसि ॥ ५ ॥
दिन प्रति नए करति उतसाहू। बादित बजहिं अधिक धुनि जांहू।
दुंदभि, संख झांझ झनकंते। मिलि कबि जै जै शबद उठंते ॥ ६ ॥
बुत आगे निंम्री बहु होवैं। हाथनि जोरहिं समुख खरोवहिं।
जै सिंह आप जाइ धन देवै। भए धनी जो पूजा लेवैं ॥ ७ ॥
तीरथ पूजनि पाठ पुराना। इह हिंदुनि को थंभ महाना।
इन कहु जग ते करहु बिनाश। हुइ सुखेन पुन तुरक प्रकाश ॥ ८ ॥
हेरि हेरि धीरज नहिं रहै। कलमा बहुर चाह करि कहैं।
इन काज़ी मुल्लां बहु बादी। कहि नुरंग को करहि प्रमादी ॥ ९ ॥
चढ़ि मथुरा ते जैपुरी गमन्यो। गज बाजी साज्यो दल रवन्यो।
घंटन के ठनकार उठते। कुदहिं तुरंग हिरेख करंते ॥ १० ॥
तोपनि की शलखैं बहु चली। उठ्यो शबद अविनी कलमली[3]।
फररे छुटे निशान हज़ारों। जहिं कहिं दुंदभि अनिक धुंकारो ॥ ११ ॥

---

1. सुन्दर 2. पँखा 3. धरती कांप उठी



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आसूदै[1] लशकर जिस केरा। चलति कुलाहल[2] उठै घनेरा।
भूखन जटिति सुभट झमकंते। रंग रंग के बसत्र सुमंते॥ १२॥

त्रास पाइ रिपु रह्यो न कोई। नौरंग के अनुसारे होई।
क्रम क्रम पंथ उलंघनि कर्यो। पहुंच्यो जैपुरि नगर निहर्यो॥ १३॥

थान थान जहिं ठाकुरद्वारे। जिन महिं प्रतिमा शोभति सारे।
रंग रंग की बनी पताका[3]। सभि मंदरि पर ठट सुठ जांका॥ १४॥

बहु संखनि के शबद उठंते। गाइ ब्रिशनपद हरख करंते।
पुरी निकटि हुंइ डेरा कीनसि। पिखि समाज को रिस मन भीनसि॥ १५॥

बुत को पूजति हिंदु अजाना। दिखीअति दंभ सकल ही थाना।
क्या बालक सम बालक महां। खेल सकेलति ज्यों जहिं कहां॥ १६॥

मुझ आए को जान्यो सभिहूं। काफर संख बजावनि अबिहूं।
गमनहु बहुत मिहननी लेहु। लेह देह भंगनि करि देहु॥ १७॥
दुषट हुकम ते ह्वै समुदाइ। गमने तुरत लोह घन[4] ल्याइ।
लगे बिदारनि मंदर भारे। जो बोलै गहि तिस कौ मारें॥ १८॥
दाद पुकार करहि जे कोऊ। गहि लीजति कैदहि करि सोऊ।
देखि देखि तबि चले पलाई। निज जीवनि ते मन संकाई॥ १९॥
लगे बिदारनि मंदिर सारे। केतिक न्रिप ढिग जाइ पुकारे।
नौरंग बादी आनि पर्यो। महां उपद्रव नगर कर्यो है॥ २०॥
ढाहनि लागसि ठाकुरद्वारे। गहि प्रतिमा के अंग बिदारे।
तुरक बनावनि चाहति सारे। जो बोलति गहि कैद कि मारे॥ २१॥
सुनी बात जै सिंह सवाई। भा दिलगीर बधी दुचिताई।
अपर उपाइ न कोई जाना। मिलिबे को मत निज ठहिराना॥ २२॥
सभि सचिवनि[5] सों मंत्र पकायो। मिलिबे बिना न कछु बनि आयो।
निकस्यो ले मानव प्रधान। बहुत उपाइन लीनसि पान॥ २३॥
मुकता हीरनि के समुदाइ। लई बहुत मुहरैं उचवाइ।
द्वै मतंग[6] कंचन के हौदा। झालर दार झूलते मोदा॥ २४॥
करे तुरंग इकादश तयार। जांबूनद[7] के ज़ीन उदार।
चपल चलाक चतुर रुचि चारु। चमकति चलति चौंप बरिआरु॥ २५॥
पशमंबर बहु मोले लए। भयो त्यार द्वारे निकसए।
हाथ जोरि हुइ दीन बिसाला। नमो करति दूरहिं ते चाला॥ २६॥

1. तैयार 2. शोर 3. झंडे 4. हथौड़े 5. वज़ीर 6. हाथी 7. सोने के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सनमुख गयो समीप खरोवा। बिनती ठानि अधीनै होवा।
तुम एती क्यों खेचल करी? कारज अलप हुतो इस पुरी॥ २७॥
आप जि लिखि भेजति परवाना। मैं चाकर तुमरो इत थाना।
सभि कारज करि देति सुखारे। देति ढहाइ जि ठाकुरद्वारे॥ २८॥
जिस प्रकार तुमरे मन होई। सो मैं करति न मिटि है कोई।
पिखि करि नौरंग सुनि करि बात। बोल्यो मूढ़ महां दुख दात॥ २९॥
इस कारज महिं तुमरो ज़िकर। कछू नहीं कीजै तुम फिकर।
सदन आपने बैठे रहहु। बिन हमरी मरजी किम कहहु॥ ३०॥
जो जग महिं चलि रही कुचाली। मेटहुं मैं दिहुं दंड[1] बिसाली।
दरब लेनि कहु दंभ कमावैं। तहिं दोनहुं लोकनि दुख पावैं॥ ३१॥
इम सुनिकै न्रिप निज घर आइव। रिदै बिसूरति कछु न बसाइव।
सगरी भेट दई तुरकेश। बैठि रह्यो लखि बली बिशेष॥ ३२॥
बिप्र बिरागनि को कहि ऐसे। इह संग मेरो बल नहिं कैसे।
जिम ठाकुर की मरज़ी अहै। होइ सु साचु मिटनि किम लहै॥ ३३॥
सुनिकै पूजक[2] ठाकुर केर। महां अनीति बिबस कहु हेरि।
लै लै प्रतिमा गए पलाई। घर अंतर घर दुरे सु जाई॥ ३४॥
केतिक दौरति गहिं गहि लीने। सहित समाजनि प्रतिमा छीने।
अंग भंग घन संग कराए। खंड खंड करि अवनि गिराए॥ ३५॥
पूजनि के बासन सभि लीए। मंदिर वडे बिदारनि कीए।
सगल पताका दई गिराइ। पूजक जित कित अति बिकुलाइ॥ ३६॥
तिन सों कहै शर्हा महिं आवहु। कलमा पढ़हु तुरक बनि जावहु।
बडी मसीत देहिं बनवाइ। तिन महिं बैठहु धन बहु पाइ॥ ३७॥
पातिशाहि ते पटे लिखावहु। ग्राम ज़मीन लेहु हरखावहु।
सुख पावहु इस लोक मझार। मरि करि भिसत लहो हित धारि॥ ३८॥
अपर खिझावनि की बहु बात। कहैं मलेछ कपट उपजाति।
कुछ बस चलहि न उत्तर देइं। मन महिं 'राम राम' कहि लेइं॥ ३९॥
ग्यारह सै मंदिर तहिं खर्यो। तुरत बिदारनि सभि को कर्यो।
दिए उजार न पुन को करै। करै जु, दंड हमारो भरै॥ ४०॥
इम हिंदुनि कौ धरम बिगारा। जै पुरि महिं भा हाहाकारा।
त्रास करैं घर बैठे रहैं। मिलि करि कहूं न बातें कहैं॥ ४१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'जै पुरि औरंग' प्रसंग'** बरननं नाम सपत-बिंसती अंशु॥ २७॥

---

1. सज़ा 2. पुजारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २८

# तुरक पुषकर प्रसंग

**दोहरा**

ग्यारह सै मंदिर महद जैपुरि ते ढहिवाइ।
त्रास उपाइव हिंदू को तुरत तेज तपताइ ।। १ ।।

**चौपई**

भई प्राति जबि सभा लगाई। काज़ी अरु मुल्लां समुदाई।
ज़िद कै बाद करति जे गाढ़े। अपर अनिक आए हुइ ठांढ़े ।। २ ।।
सभिनि संग नौरंग ने कह्यो। इस पुरि को मंदिर गन ढह्यो।
आगै नहीं बनावै कोई। इम सज़ाइ सभिहिनि कहु होई ।। ३ ।।
भगनि करे बहु मंदर गिरे। त्रास बिलंद रिदै महिं धरे।
अपनि धरम ते धीरज छूटे। करहिं बिलोकनि इषट ज़ि फूटे ।। ४ ।।
अबि हिंदवाइनि को जहिं ज़ोर। चलि हैं तहां बतावहु ठौर।
जहिं इक थल सज़ाइ कहु दैवे। उत्तम अपनो मतो दिखैवे ।। ५ ।।
थान हज़ार सुनहिं अरु हेरे। उपजहि सभि मैं त्रास बडेरे।
आवहिं शर्हा बिखै बिन कहे। उत्तमता तुरकनि की लहे ।। ६ ।।
इम सुनि शर्हा बीच दिढ जोई। हरख बधावति बोले तेई।
सनमानति नौरंग को कह्यो। 'करति काज बांछति को लह्यो ।। ७ ।।
हज़रत सुनहु बतावहिं सोऊ। करहिं एकसो, डर बहु होऊ।
जस तीरथ मथुरा मुखि माना। तस पुशकर है निकटि सथाना ।। ८ ।।
लाखहुं लोक करहिं इशनान। नाना बिधि के दे बहु दान।
दूर दूर ते हिंदू आवें। बुत पूजहिं अरु दरब चढ़ावें ।। ९ ।।
सो सथान जे होइ हमारो। बनैं तुरक जे कहैं हज़ारों।
तहिं भी मंदिर ऊचे खरे। सुंदर ब्रिंद हिंदुवनि करे ।। १० ।।
सहति बुतनि के भंग करीजै। पूजक गन को त्रास दिखीजै।
सुनि नौरंग कहि करहु त्यारी। साजि हकारहुं सभि असवारी ।। ११ ।।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बजे सैंकरे दुंदभि तवै। बादित अपर बजाए तवै।
गज बाजी शिगारनि करे। भयो अरुढि प्यानो करे॥ १२॥
पहुंच्यो पुशकर तट ततकाला। जाइ तहां डेरा निज घाला।
तीरथ रुचिर बिलोकनि कर्यो। निकटि निकटि मंदिर गन खर्यो॥ १३॥
प्रतिमा सभि के अंतर सोहैं। भूखन बसन धरे जन मोहैं।
गाइं बिशन-पद भोग लगावहिं। करहिं आरती मोद बढ़ावहिं॥ १४॥
लख्यो दुमट को आयो डेरा। दुरे पलाए त्रास बडेरा।
लघु लघु प्रतिमा लई उठाइ। पुनहि तुरक ने दए हटाइ॥ १५॥
एक जामनी[1] तहां बिताई। उठिओ प्राति दुषट दुखदाई।
फिर्यो चुफेरे हेरे मंदिर। प्रतिमा जुगति बिराजे सुंदर॥ १६॥
इक ठाकुर को मंदिर ऊचो। अपर न समसर जास पहूचो।
श्री बराह[2] की प्रतिमा तहां। लोक सकल तिस मानहिं महां॥ १७॥
बड ऊचो मंदिर तिस केरा। गज पंचासी मिण करि हेरा।
अनख्यो दुषट हुकम को दीनसि। 'इसहि ढहावहु तूरन कीनसि॥ १८॥
पुन अपरान को देहु ढहाइ। भगनहु बुत ले करि समुदाइ।
बनहि तुरक जो लेहु बनाइ। दिहु कलमा तत्काल पढ़ाइ॥ १९॥
सुनति हुकम को लगे बिदारनि। बोलहि जो, किछु करहि पुकारनि।
तिस गहि लेहिं मार बहु करैं। किधों कैद करि दिढ तिह धरैं॥ २०॥
सुंदर मंदिर पाथर केरा। मिलि दुषटनि बहु शीघ्र सु गेरा।
जथा लुहार घरहिं बर आए। तथा प्रहारहिं शबद उठाए॥ २१॥
ले ले पाथर दूर बगावैं। तुरक बिलोकति हरख उपावैं।
मूरख नहिं जानहि इह बात। मेरो तेज नाश हुइ जाति॥ २२॥
अपर अलप जे ठाकुरद्वारे। सने सने सभि फोरि बिगारे।
प्रतिभा के कर पग[3] भगनंते। खंड खंड करि अवनि[4] गिरंते॥ २३॥
पूजन सौज खसोटनि करैं। यांते बहुत छपाइ सु धरैं।
बस नहिं चलै बिसूरति वैसे। कहैं भयो हरनाखश जैसे॥ २४॥
हिंदू सगरे भए दुखारे। तप मलेछ तपिबे ते हारे।
जिन ते बनहि उपाइ न कोऊ। साम दाम भेदादिक जोऊ॥ २५॥
तीर तीर तीरथ के खरे। सकल बिदारे थल सम करे।
मन भावति नौरंग करिवाइ। वैठ्यो देखै तरक उठाइ॥ २६॥
मंदिर प्रतिमा सगल बिगारी। इह तीरथ जिस महिं बड बारी।
इसहि बिगारे कारज सरै। बहुर कबहुं नहिं को किम करै॥ २७॥

1. रात 2. वराह अवतार 3. हाथ पाँव 4. किनारे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मथुरा पुरि महिं सरिता भारी। से किसहूं ते जाइ न टारी।
राति दिवस जहिं जल समुदाइ। नित नवीन आवति उमडाइ॥ २८॥
सो तो आइ न मिटि है बारी। हार परहि करहि जु उपचारी।
इह तलाउ मैं जल गंभीर। म्रितका[1] नारि सुकावौं नीर॥ २९॥

पुन हिंदुनि थल होइ बिनास। करि नहिं सकहिं इसहि परकाश।
सुनिकै बाक् सभासद सारे। सतिकारति कर जोरि उचारे॥ ३०॥

जो अभिलाखा होइ तुमारी। पुरवहु सगली बिनां अवारी[2]।
जे जमना फउ चहित हटाई। सोपि[3] लेति करि रचहि उपाई॥ ३१॥

अरु इह ताल अलप है बात। करहु पुरावनि अबि बख्यात।
रावरि हुकम देनि की देरी। पूरन होइ, आप लिहु हेरी॥ ३२॥

इस के पूरन बिनां कराए। होवहिं पुन मंदर समुदाए।
बडो हिंदूअनि को इह थंभा। हेरि हेरि जल मानि अचंभा॥ ३३॥

जु किछु मनोरथ रावर केरा। सो खुदाइ पूरहि बिन देरा।
इम नुरंग सुनि हरख उपायो। डारहु म्रितका हुकम अलायो॥ ३४॥

इस बिन पूरे मैं नहिं जाना। निज हजूर हेरों इसथाना।
बहुत मिहनती[4] देहु लगाइ। अधिक मजूरी तिनहिं दिवाइ॥ ३५॥
म्रितका ते जबि ह्वै है पूरन। बहु मानव ते थल सम तूरन।
अपनो डेरा बीच लगाइ। एक निसा बसि कै इस थाइं॥ ३६॥
पुन मैं अपर थान चलि जैहौं। बुत तीरथ सगरे मिटवैहौं।
सभ जग करौं एक तुरकाना। धरम हिंदानि करौं सभि हाना॥ ३७॥
इम कहि नौरंग सभि सों बानि। करी तगीद शीघ्रतावान।
अपने अपने लाइ मजूर। निज निज दिशि ते कीजहि पूर॥ ३८॥
इम कहि नौरंग सभिनि बुलाए। दे दे दरब कार तिस लाए।
परहिं टोकरी, पूरन करहिं। इत उत करति शीघ्रता फिरहिं॥ ३९॥
हुकम शाह को 'करनि शिताबी। करहु ताल सकलो बिन आबी[5]।
निज निज दिशि सूबे हुइ खरे। कार करावहिं तूरन करे॥ ४०॥
अपनि अधिकता को दिखराइ। चहैं प्रसंनता शाहु उपाइ।
लगे मजूर हज़ारहुं कार। करति शीघ्रता म्रितका डारि॥ ४१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'तुरक पुबकर प्रसंग'** बरननं नाम अषटबिसती अंशु॥ २८॥

---

1. मिट्टी 2. देरी 3. वह भी 4. मज़दूर 5. पानी के बग़ैर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु २९

# पुशकर प्रसंग

**दोहरा**

पुशकर के पूरन बिखै सभि मिलि कीनि उपाइ।
लगे मजूर सहंस्रही[1] पूरहिं रौर मचाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

इक पाटैं, इक म्रितका आनैं। इक उठाइं, इक शीघ्र पयानैं।
इक ले छटी कहनि पर खरे। इक धन देहिं कहैं लिहु भरे ॥ २ ॥
तीरथ तीर खरे इक हेरैं। शाहु सुनाइ शीघ्र इक प्रेरे।
जल महिं परै म्रित्तका गरै। उछलहि अधिक, फ़ेन[2] बहु करै ॥ ३ ॥
चहूं ओर पुशकर के भीर। लाखहुं लोक बिलोकति तीर।
त्रिण काषट को ल्यावत धाए। पाइ पाइ पूरति समुदाए ॥ ४ ॥
परै म्रित्तका लै हुइ जाइ। त्रिण काषट को आनहिं पाइ।
महां कुलाहल भयो नरनि महिं। जिन कित पूरहिं, पूर न ह्वै रहि ॥ ५ ॥
लाखहुं दरब खरच करिवाइव। देति मजूरी सभिनि बुलाइव।
सुनि सुनि ग्राम नगर महिं सारे। धाइ धाइ पहुंचहिं बलवारे ॥ ६ ॥
अधिक मजूरी पावनि करिहीं। शाहि कोष ते दरब निकरिहीं।
दिन प्रति संध्या कउ सभि लेति। बहु नर बैठहिं गिन गिन देति ॥ ७ ॥
केतिक दिवस बितीत गए हैं। रिदै कंतुहल सभिनि भए हैं।
अनिक उपाव करति ही हारे। त्रिण म्रितका काषट गन डारे ॥ ८ ॥
कहां परहिं खप जाहिं किथाईं। किधों उठावहि को ले जाईं।
इस प्रकार करि हैं अनुमाने। खरच संबूह दरब को जानें ॥ ९ ॥
तऊ करति हठ मूढ़ कुपत्ते[3]। करहिं जतन प्रेरे चवगत्ते[4]।
लाखहुं नर अकुलाइ रहे हैं। 'भरहु भरहु' मुख बाक् कहे हैं ॥ १० ॥
फिरहिं जतन करते चहू ओर। आवहिं जाहिं उठावहिं शोर।
कितिक दिवस गुज़रे इम जवै। इक दुइ थल ऊचे दिखि तवै ॥ ११ ॥

---

1. हज़ारों 2. झाग 3. बुरे 4. मुग़ल



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हरख भयों नौरंग उर मांहि। कह्यो अपनि लोकनि के पांहि।
शामियाने तंबू मम डेरा। दिहु लगाइ नहिं कीजहिं देरा॥ १२॥
करौं सैन को रैन मझारं। पुरवौं पैज अपनि इस बार।
बहुर कूच करि हैं हम काली। पुरवावहु इहु ताल उताली[1]॥ १३॥
सुनि फराश लायहु डेरा। ज़रीदोज़ सुठ मखमल केरा।
सुंदर लगी कनात बनाती। तानि बितान[2] रंग बहुं भांती॥ १४॥
रेशम की दीरघ गन डोरैं। गुंफे ज़रीदार चहूं ओरैं।
ऊपर कंचन कलस बनाए। चमतकार चहुंदिशि छबि छाए॥ १५॥
चार घटी जबि दिवसि लह्यो है। नौरंग बादी जाइ रह्यो है।
अपर समाज समीपी केरे। ले करि सकल धरे विच डेरे॥ १६॥
फरश अनेक रीति के करे। कंचन रजत[3] सू बासन धरे।
भई संझ खाने कहु खाइ। पर्यो मंदमति चौंप बढ़ाइ॥ १७॥
सुख सों सुपत्यो निस को पाइं। गाढ़ो अंधकार जग छाइ।
निज निज सिवर[4] परे सभि कोई। हिंदू मिले भजहिं प्रभु सोई॥ १८॥
अरध जामनी जबहि बिताई। उमड्यो जल पर्यो सभि थाइं।
एक बार ही बार उछाला। लेनि न दीनसि किसहि संभाला॥ १९॥
पूरब नौरंग सुपत्यो जहां। पसर गयो इकबारहि तहां।
गिलम गलीचे फरश बिसाला। सभि पर जल प्रवाह ते चाला॥ २०॥
जागति नर ते नीर निहारा। शाह संग धुनि ऊच पुकारा।
'जल बहु चढ्यो जाइ चलि आवति। करहु संभाल उठहु उतलावत॥ २१॥
सुनते तुरत मतंग अरुढ़ा। भाग चल्य बिहबल मति मूढ़ा।
सरब समाज बूड करि गयो। नहीं संभारनि कि हूं कियो॥ २२॥
धरे त्रस को भागति बीबी। नहिं सुध रही बंधिबे नीबी[5]।
दासी खासी चली पलाइ। अनिक मसालें लई जराइ॥ २३॥
ब्रिंद मताबी आग लगाई। भयो प्रकाश दिवस की न्याई।
हेरि हेरि थल ऊचे गए। निंम्रि सथल पर पुलते भए॥ २४॥
हाथी पर हौदा नहिं परे। बहे जाहिं किनहूं नहिं धरे।
ज़ीन तुरंगनि के बहि चाले। शसत्र बसत्र किनहूं न संभाले॥ २५॥
कूक पुकारति माच्यो रौरा। खरे होइं नहिं निज निज ठौरा।
पुशकर तीरथ रिस बहु कीनसि। सभि लशकर कउ संकट दीनसि॥ २६॥

---

1. जल्दी 2. चंदोआ 3. सोना चांदी 4. डेरा 5. नाड़ा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऐसो नीर उछार्यो निज ते। व्याकुल भए तुरक गन भजते।
निम्रि स्थल[1] के बूडे घने। सहित समाज न निकसनि बने।। २७ ।।
अंन लवन मिशटान महान। इत्तयादिक सौजनि करि हानि।
कहिं लौ गनौं समाज बिसाला। शाहु सैन को बहि करि चाला।। २८ ।।
बड अपदा तुरकनि पर आई। पुशकर ने कीनसि बिकुलाई।
तीरथ मांहि महातम महां। महां प्रतापवंत अघ दहा।। २९ ।।
पूरब सतिजुग केर मझार। कमलासन[2] शुभ रच्यो उदार।
तीन लोक महिं बिदत सुजसु है। जिह शनान ते कलमल[3] नसि हैं।। ३० ।।
तुरक अवज्ञा[4] कीनसि भारी। दियो दंड नहिं सक्या सहारी।
बहु बिहाल लशकर कउ हेरा। हाहाकर सुन्यो तिसबेरा।। ३१ ।।
सहत समाज नाश कहु पावैं। जल ते नहीं बचहिं, कित जावैं।
इम नौरंग चितवत चित मांही। —को उपचार बनै अबि नांही।। ३२ ।।
दिवस नहीं, मुशकल अबि यांते। सुध न संभारि सकहिं नर जाते।
किम दिल संकट सकल बिदारउं। कित मजूर लावउं जल टारउं।। ३३ ।।
कित ते उछर्यो पसर्यो जाई। सो थल निस महिं लख्यो न जाई।
अपर उपाइ न हुइ इस काला। खरो तुरकपति[5] चिंत बिसाला।। ३४ ।।
लख्यो महातम तीरथ केरा। जल उठालि डोबति मम डेरा।
करनी बिनै अबहि बनि आवै। हुइ प्रसंन दल मोर बचावै।। ३५ ।।
अज़मतवान महान सुजाना। भयो दीन जोरति जुग पाना।
छिमहु अवज्ञा मैं नहिं जान्यो। महां शकति के सहति पछान्यो।। ३६ ।।
सभि तीरथ मैं तुव बडिआई। बिदत महद अबि होहि सवाई।
जितो बिगार आनि मैं कर्यो। गन मंदिर को मूल उखर्यो।। ३७ ।।
सो रचना अबि फेर बनावउं। म्रितका गेरी सो कढवावउं।
तब निमित् करि भोजन देवौं। जीवति रहौं सु तावद सेवौं।। ३८ ।।
भयो दीन इत्तयादिक कहि कहि। गज ते उतरि नमो किय महि महिं।
पुन पुशकर जल थोरो कीनसि। सिमटयो भयो आइ बिच लीनसि।। ३९ ।।
हड़ के जल सम उतरि गयो है। पुन लशकर टिक स्थल भयो है।
भीगे गहि गहि बसत्र निचोरति। इत उत फिर फिर शसत्रनि टोरति।। ४० ।।
कहीं कहां लगि संकट दल को। टिके सकल पिखि निज निज थल को।
बडे कषट सों निसा बिताई। जागति ही प्रभाति हुइ आई।। ४१ ।।

1. नीची जगह के 2. ब्रह्मा 3. पाप 4. बियदबी 5. औरंगज़ेब

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सकल दरोगे शाहु हकारे*। तूरन तिन प्रति हुकम उचारे।
आगे ते दिहु दुगनि मजूरी। निकसावहु म्रितका करि दूरी॥ ४२॥
मंदिर बिसद बिलंद बिदार्यो। जिस प्रकार सों प्रथम निहार्यो।
उसरावहु तस बिधि करि त्यारी। अपर चिनावहु बिलम बिसारी॥ ४३॥
इम कहि तहिं के बिप्प्र बुलाए। दियो दान भोजन अचवाए।
कार कार पर करि नर खरे। सौंपि कह्यो तूरन लिहु करे॥ ४४॥
रचना तैसी दिहु बनवाइ। ब्रिंद मजूरनि अबि लगवाइ।
पुशकर मैं अज़मत युति जाना। इस महिं नहिं पखंड कछु छाना॥ ४५॥
इम कहि शाह करी असवारी। गमन्यो मारग बिलम बिसारी।
जहिं अजमेर समीप स्थाना। तहां जाइ उतर्यो दल नाना॥ ४६॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'पुशकर प्रसंग'** बरननं नाम उनत्रिसतीं अंशु॥ २९॥

---

* बुला लिए

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३०

## नौरंग प्रसंग

**दोहरा**

आज लगौं पुशकर बिखै इस प्रसंग के चिन्ह ।
प्रगट महातम जगत महिं, कर्यो तुरकपति छिन[1] ।। १ ।।

**चौपई**

डेरो जाइ कर्यो अजमेर । उतर्यो लशकर जाइ बडेर ।
एक जामनी करि कै बासा । मारतंड[2] जबि भयो प्रकाशा ।। २ ।।
सकल मुजावर तबहि हकारे । हित बूझनि इम बाक् उचारे ।
'तुमने क्या इह दंम कमायो ? करि बंचकता[3] धन उपजायो ।। ३ ।।
मोर कमान चढी नहिं कैसे ? दारशकोहु केरि किय जैसे ।
शाहिजहां के साथ बखानी । तब बड सुत की चढी कमानी ।। ४ ।।
भयो प्रसंन जि तिस पर ख्वाजा । मिस कमान के बिदत निवाजा ।
तौ पतिशहित क्यों नहिं पाई । भ्रमति मर्यो किछु हाथ न आई ।। ५ ।।
तखत बैठिबो मोहि न अयो । नहीं निवाज्यो सभि ने लह्यो ।
अबि मैं सभि पतिशाहित पाई । इह क्यो भयो देहु बतलाई ।। ६ ।।
यांते मैं जानति हौं ऐसे । तुम ही करहु दंभ किछु कैसे ।
कै तुम दीजै साच बताइ । नांहि त मैं देखव पतीआइ ।। ७ ।।
सकल मुजावर इकठे भए । नहिं नौरंग को उत्तर दए ।
कहैं कि अस खुदाइ की मरज़ी । बखशहि जिसहि सुनहि तिस अरज़ी ।। ८ ।।
इसी भांति मैं हमरो चारा । कहां चलहि, चित लेहु बिचारा ।
समुझ्यो नौरंग बोलहि पाज । है इन दंभ लेनि धन काज ।। ९ ।।
बेलदार गन लीए बुलाइ । कह्यो सथान उखारहु जाइ ।
इक दुइ संग करे उमराव । पिखहु जाइ क्या बिधि तिस धांव ।। १० ।।
हुकम पाइ नौरंग को गए । थल अंतरि को खोदति भए ।
हुतो पाज कछु तनक उखारा । तत्छिन तहिं पोलाड़[4] निहारा ।। ११ ।।

1. दु:खी 2. सूर्य 3. ठगी 4. खाली जगह



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खननि लगे जबि तिसहि अगारी। दीरघ सभिहिनि सुरंग निहारी।
तिस को पाटति जबि किछु गए। घर मुजावरनि को जहिं थिए॥ १२॥
तिन महिं गई सुरंग अगारे। छप्यो जु परदो कर्यो उघारे।
कहूं मुहिम चड़हि जबि शाहू। कै पतिशाहित दैनी कांहू॥ १३॥
इत्तयादिक जे काज महान। दिल्लीपति आवति इस थान।
कर जोरहि बड दरब चढ़ाइ। जिस कारज मैं संसै पाइ॥ १४॥
तिस हित अंतर धरहि कमान। करहिं कि नहीं संकलपहि ठानि।
सुंदर मंदिर अंदर धरहि। पुनहि कपाट असंजति[1] करहि॥ १५॥
पुन गाढे दें कुलफ लगाइ। दर पर पहिरु रहिं समुदाइ।
निज घर ते सुरंग के राहू। जाइ मुजावर मंदिर माहू॥ १६॥
अंदर देहि कमान चड़ाइ। इस बिधि राखी बणत बनाइ।
करहि मंनता शाहि घनेर। अपरनि की क्या गिनती फेर॥ १७॥
इव अज़मत को तहां जनावें। सिदक सहित पिखि दरब[2] चड़ावें।
जबि सुरंग घर प्रविशी जाइ। बहु दिन की जिम बनत बनाइ॥ १८॥
परदा ज़ाहर होइ सु गयो। जिस ते बहु लोकनि छल लयो।
चड़े कमान सकल बिसमावें। जानि खुआजो आनि चढावै॥ १९॥
सिदक सहित दिल्लीपति आइ। हार जीत इस ते पतीआइ।
इम शाहनि के सिदक निहारे। हिंदू तुरक पूज हैं सारे॥ २०॥
सो परदा नौरंग उघारा। बिन अज़मत किम नहिं पतिआरा।
इस आगै नहिं अटकै दंभा। तिस मानै जो करै अचंभा॥ २१॥
सुनति शाहि उर हरख बढ़ाइ। सभि मैं बोल्य—क्या छल लाइ।
चातुर मूरख किनहुं न जानी। राउ रंक गन सभिहिनि मानी॥ २२॥
महद पखंड करति इह रहे। मरम इनहुं कहु किनहुं न लहे।
कर्यो बिलोकनि नीके आजू। चिरंकाल को उघर्यो पाजू॥ २३॥
निकटि मुजावर लीए बुलाइ। धरे त्रास आए समुदाइ।
करे क्रोध नौरंग तबि बोला। सुनति तिनहुं के अंतर होला॥ २४॥
इह क्या कीनसि तुम बड दंभा? सभिनि दिखावति रहे अचंभा।
छल करि दरब हर्यो सभि केरा। कोइ न जानि सक्यो किस बेरा॥ २५॥
बहुत ख़ता[3] तुम ने नित करी। किती पुशत की दौलत हरी।
बडे तुमारे करति सु रहे। शाहु अचरित न किनहूं लहे॥ २६॥

1. बंद 2. ताले 3. ग़ल्ती

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रान हानि को दंड बिसाला। तुम को चहियति है इस काला।
इस प्रकार कहि करि वहु बारे। कूरे करे मुजावर सारे ॥ २७ ॥
सदन समाज खोस करि सारो। अपर लीनि धन करि करि मारो।
दे करि दंड छोरि सभि दीने। पुन आगे कहु बरजनि कीने ॥ २८ ॥
त्यागि देहु इह कपट कमावनि। इम को अरपहि करहि सु खावनि।
जे इस बिधि सों करहु कमाई। मैं सुनि लेहुं देहुं मरिवाई ॥ २९ ॥
इस प्रकार कहि दीनसि त्रासू। कूर डरे न उकासहिं स्वासू[1]।
छुटि करि सदन आपने गए। दुरे[2], न बदन दिखावति भए ॥ ३० ॥
करि कै इम नौरंग अजमेर। चढ्यो हरख करि रिदै बडेर।
सुनहि कहूं जबि ठाकुर द्वारे। देति हुकम तहिं ढाहि बिदारे ॥ ३१ ॥
प्रतिमा अंग भंग करिवावै। तहिं ते ले करि दूर गिरावै।
त्रास देहि जहिं पिखहि पुजारी। झिरकहि दंडहि करि करि मारी ॥ ३२ ॥
जहिं कहिं लिखत भयो परवाने[3]। जे सूबे उमराव महाने।
आमिल मुलखनि के जिस थाईं। सभिहिनि कहु सुध दीनि सुनाई ॥ ३३ ॥
बुतप्रसती क़ित होनि न पावै। मंदिर भगनहु को न चिनावै।
तुरक सु बनहि लोभ करि कोई। लेहु बनाइ वसतु दिहु सोई ॥ ३४ ॥
सभि देशनि पहुंचे परवाने। सनमानति सिर पर धरि माने।
सकल देश महिं हिंदू त्रासे। गहैं ओज[4] ते धरम बिनासें ॥ ३५ ॥
ठाकुर द्वारे भगन करंते। प्रतिमा फोरहिं कितहुं गिरंते।
नहिं बसि चलहि रहहिं पछुताई। मोन धरहिं घरि महिं प्रविशाई ॥ ३६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे '**नौरंग प्रसंग**' बरननं नाम त्रिसती अंशु ॥ ३० ॥

---

1. सांस नहीं लेते थे 2. छुप गए 3. शाही हुकम के पत्र 4. बल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३१

# काशी को प्रसंग

**दोहरा**

गाढे बडे जु शर्हा महिं मानी मूढ़ गवार ।
नोरंग को सिखरावहीं करि निज दीन हंकार ॥ २ ॥

**चौपई**

किनहुं न इन के पाज उघारे । बिन जाने देते धन सारे ।
मति खुदाइ तुमरे अस पाई । जिस ते छानी[1] बात न काई ॥ २ ॥
बुतप्रसती पर होयहु दंड । जहिं कहिं रावरि हुकम प्रचंड ।
भयो त्रास हिंदवान बिसाले । आइ शर्हा महिं बनें सुखाले ॥ ३ ॥
सुजसु बिलंद आप कहु होवा । तेज प्रचंड सभिनि थल जोवा ।
सुख पावें जे तुरक बनेंगे । बिना बने बहु ब्रिथा बहैंगे ॥ ४ ॥
इक मकान हिंदुनि को भारो । काशी नाम महिद बिसतारो ।
खरे सैंकरे ठाकुर द्वारे । बुत प्रसती नर करति अपारे ॥ ५ ॥
आप चलहु तहिं पिखहु पखंड । मेटहु दीजै दंड प्रचंड ।
तहिं हिंदुनि के धरम बिनाशहु । चलनि शर्हा महिं बिखे प्रकाशहु ॥ ६ ॥
सो मकान जे देहु बिगार । बनहिं तुरक सभि दिशि ते हारि ।
सुनति शाहु मन मोद[2] उपावा । तहां चलनि कहु कर्यो उपावा ॥ ७ ॥
गज बाजी पैदल संग घने । लशकर चल्यो दीह, को गने ।
क्रम क्रम मारग उलंघ्यो सारो । काशी पहुंच्यो सिवर उतारो ॥ ८ ॥
सुनि सुनि हिंदुनि को समुदाया । महां त्रास धरि धरि बिकुलाया ।
दुरि दुरि[3] जाहिं सदन सभि अपने । हे प्रभु ! इसे दिखाउ न सुपने ॥ ९ ॥
घर तुरकनि के होति बधाई । मिलि मिलि करहिं दीन बिरधाई ।
नोरंग शाहि शर्हा महिं गाढ़ो । जिसते तुरकाना[4] बहु बाढ़ो ॥ १० ॥

---

1. छिपी 2. खुशी 3. छिप छिप जाते हैं 4. इस्लाम मत



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एक निसा[1] करिकै बिसरामू। प्रविश्यो अंतर पुरि अभिरामू।
थान थान जहिं पुंज शिवाले। बाजैं घंटे संख बिसाले ।। ११ ।।
करहिं आरती केर उतारनि! पुषप पत्र पूजा बिसथारनि।
गाइं विशनपद बादित बाजहिं। गन मंदिर उतसाहनि साजहिं ।। १२ ।।
केतिक थान पुराननि बाचहिं। सुनि सुनि नर उर शरधा राचहिं।
बेद घोखि पावन कहु करिही। हाथनि के बहु भाव उसरही ।। १३ ।।
दिन बाहज[2] बहु बैस शुद्रगन। हिंदु धरम सभि करहिं भले मन।
'बिश्वनाथ' सरबोत्तम जहां। पूजा अधिक होति है तहां ।। १४ ।।
लोक हज़ारहुं आइं प्रभाती। बंदति पूजति हैं बहु भांती।
बिल्ल पत्र अरु अरक दलनि ते। कनकपत्र[3] बहु फूल फलनि ते ।। १५ ।।
श्री गंगा जल अतिशै पावन। भरि भरि लोटे करहिं सु पावनि।
देवहिं धूप प्रक्रमा करिकरि। अज[4] सम बोलहिं मुख पर कर धरि ।। १६ ।।
सभि मंदिर को शुभ सिरमौर। जिह ठां तुग लिंग सिरमौर।
प्रथम नुरंगा तहिं चलि गयो। ब्रिंद नरनि कहु देखति भयो ।। १७ ।।
तबि सो लिंग उखर करि उछर्यो। ज्ञान कूप मैं तूरन पर्यो।
तुरक दुषट के जानि करिकै। लखि तप तेज रह्यो नहिं थिरकै ।। १८ ।।
जिम रावण ते टरि करि रहे। ब्रह्मा, बिशनु आदि जे अहे।
जबहि समों तिस नाशनि होवा। रामचंद तन धरि सो खोवा ।। १९ ।।
तिम मलेछ नौरंग के गए। बिश्वनाथ थल त्यागति भए।
अपर जि प्रतिमा सगल बिदारी। अंग भंग करि कित कित डारी ।। २० ।।
जहिं भैरव को हुतो सथाने। लठ ठांढी गाढी जन माने।
दुषटनि भन्यो नुरंगे संग। इह क्या पाथर खरो उतंग ? २१ ।।
लठ भैरव की सगल वखाने। हिंदू देति दरब बहु माने।
आप करहु अविलोकनि ठौर। उचित भगनि के लखि, दिहु फोरि ।। २२ ।।
सुनि तुरकेश गयो तिस थान। लठ अविलोकी खरी महान।
ऊची अधिक सु गाढ़ी ठांढ़ी। बहुत महातम महिमा बाढ़ी ।। २३ ।।
जर नहि सक्यो जर्यो मति मंद। ततछिन दीनसि हुकम बिलंद।
खंड खंड[5] इसके करिवावहु। फोरि फोरि करि अवनि मिलावहु ।। २४ ।।
जर खनवावहु जहिं लगि अहै। करहु उखारनि फेर न रहै।
इम भनि नौरंग पुन बीचारो। कह्यो तोप संग गोरे मारो ।। २५ ।।
टूट परै जबि अवनी माहि। पुन खनवाहिं जहां लगि जाहि।
हुकम सुनति तूरन तुरकाना। गए धाइ करि हरख महाना ।। २६ ।।

1. रात 2. खत्री 3. धतूरा 4. बकरा 5. टुकड़े

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दीरघ तोप तहां लै आए। सहित समाज शाहु जिस थाए।
बहु बरूद की भरि भरि थैली। गज सों ठोकि तोप महिं मेली ॥ २७ ॥
अधिक भारि अयमय बड गोरा। भर्यो त्यार करि लठ[1] मुख ओरा।
लई ज्वलति जुति अगनि मताबी। भर्यो पलीता मिलति शिताबी ॥ २८ ॥
छुटी गरज जनु गाज परी है। धरकति उर जिस श्रवण करी है।
इक़ गोरा जबि लठ को मारा। दूसर कर्यो तयार बड भारा ॥ २९ ॥
नर संघट्ट अधिक तिस ठौर। पिखहिं खरे इक निकर्यो भौर।
शाह समाज साथ जहिं ठांढ़ो। करहि बिलोकनि दुषट जु गाढ़ो ॥ ३० ॥
गुंजारति करि बेग बिसाला। गयो नुरंगे निकटि कराला।
लठ ते निकसि उडति भा ऐसे। छूटहि बान धनुख ते जैसे ॥ ३१ ॥
तुरकेशुर के सनमुख गयो। लग्यो बदन पर बाढ़नि क्यो।
बुरक भर्यो तिस आमिख तेरा। जिस ते उपज्यो कपट वडेरा ॥ ३२ ॥
बल ते हतयो हाथ तिस तांई। लगनि न पायो उड्यो पलाई।
मुख सगरे पर सोज बढ़ी है। बस न बसावै ब्रिथा[2] बढ़ी है ॥ ३३ ॥
इतने महिं दूसर बड गोरा। छुट करि गयो सु लठ की ओरा।
लगे शबद भा अतिशै गाजा। जिस ते धरक्यो दिल्ली राजा ॥ ३४ ॥
तबि तिस लठ से निकसे भौर। ठौर ठौर दौरति करि रौर।
बाढ़हिं नरन तंद्दये फिरैं। सूजहि मुख बहु संकट भरें ॥ ३५ ॥
कुछ उपचार सकहि नहिं होइ। दौरे फिरे त्रसति सभि कोइ।
मिरड़ तंद्दये[3] ब्रिंद फिरंते। लशकर पर दौरे मुख हंने ॥ ३६ ॥
जहां कहां उड करि डसि लेति। सूजे मुख बहु अंग समेत।
करहिं तुरकपति की रखवारी। बसत्रनि साथ प्रहारहिं टारी ॥ ३७ ॥
दास सैंकरे हाथ भ्रमावैं। मारहिं दौरहिं रौर मचावैं।
केतिक की पगीआ गिर परी। शसत्र बसत्र की सुध न संभरी ॥ ३८ ॥
लशकर के नर रौरा कर्यो। दल तंद्दयनि आइ से पर्यो।
अज़मत लठ की लखी महाना। कुछुक त्रास तुरकेशुर माना ॥ ३९ ॥
बिसम्यो शाहु समेत समाजा। कित ते भे उतपति इह आजा।
जित कित फिरति असंख निहारे। बिसमति चित हुइ शाहु उचारे ॥ ४० ॥
करहु कबूल जु न्याज़ घनेरी। अज़मत के समेत लिहं हेरी।
करहुं अवज्ञा नहिं इम फेरी। बांटि शीरनी देहुं बडेरी ॥ ४१ ॥
छिमा करावहुं हाथनि जोरि। नहिं करनो किस हूं बिधि जोर।
तत्छिन सीस निवायो सभिहूं। निंम्रि नुरंगा होयहु जबिहूं ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'कांशी को प्रसंग'** वरनन नाम एकत्रिसती अंशु ॥ ३१ ॥

---

1. लोहा 2. व्यथा, पीड़ा 3. भिड़

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंश ३२

# नौरंग प्रसंग

**दोहरा**

सभि लशकर कर जोरि कै सभि हूं सीस निवाइ।
भौर, भिरंड़ ततकाल ही गए अकाश बिलाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

न्याज़ शीरनी सभिनि चढ़ाए। अज़मत कहु देखति पतीआए।
कहिनि लगे तारीफ बडेरी। महिमा अबि लाखहुं नर हेरी ॥ २ ॥
भौर, भिरड़, तंद्य्या घने। सभि के डस्यो डंग दुख सने।
लशकर महिं पायो बड रौरा। फिरति उडति जेतिक दल ठौरा ॥ ३ ॥
जबि की न्याज़ शीरणी दई। तबि की इनहुं मंद गति लई।
सने सने गमने, नहिं पाए। जानी जाइ नागे किस थांए ॥ ४ ॥
कित ते निकसे ? लठ नहिं पोली। मनहुं किनहुं इक थैली खोली।
एकहि बार नरनि पर परे। मनहुं तीर किन छोरनि करे ॥ ५ ॥
इत्तयादिक अनेक कहिं बात। लठ की अज़मत भी बक्खयात।
कीनसि कूच नुरंगे डेरा। निज रजधानी कउ किय फेरा ॥ ६ ॥
द्वै गोरे लागे लठ बीच। रहे चिन्ह पिखि ऊच रु नीच।
चिरंकाल पुन पीछे रही। खांड परे द्वै सभि हूं लही ॥ ७ ॥
पुनहि अठारहि सै अरु साठ। भयो बिघन तिस भैरव लाठ।
हिंदवाइन अरु बहु तुरकाना। बध्यो परसपर बाद महाना ॥ ८ ॥
कांशी पुरी सपरधा* बाढ़ी। दुहि दिशि ते रिस उपजी गाढ़ी।
हिंदू मिलि संबूह बल भारा। दाह्यो जहिं अमाम को बारा ॥ ९ ॥
चहुंदिशि ते पावक ज्वलताई। हन्यो तुरक तबि अर्यो जु आई।
पिखि इकठो हुइ करि तुरकाना। शसत्र संभारि भए सवधाना ॥ १० ॥
कई हज़ार मिले हित जुद्ध। मारहिं मरहिं बढ़्यो अति क्रुद्ध।
लठ भैरव की चहुंदिशि घेरी। भए सुचेत तुरक तिस बेरी ॥ ११ ॥

---

* ईर्ष्या



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ईंधन बहु सकेल करि लीनसि। चहुंदिशि लठ के सभि धरि दीनसि।
लेकरि अगली दई जलाइ। एकहि बार दार समुदाइ ॥ १२ ॥
भसम दई करि सगरी लाठ। जहिं कहिं ते बहु पायो काठ।
भई भसम सम तिस ते पाछे। नौरंग कथा सुनहु पुन आछे ॥ १३ ॥
दिल्ली बिखै सु आइ प्रवेशा। हिंदु धरम सों हठी विशेषा।
चितवति नित उपाइ चित मांही। तुरक जगत सभि जिम हुइ जांही ॥ १४ ॥
तिस प्रकार ही जतन बनावहि। देश बिदेशनि हुकम पठावहि।
बारबधू[1] हिंदवाइनि जेती। बीच बज़ारनि बरजी तेती ॥ १५ ॥
करीपठावनि सभि तुरकानी। इम बिचार उरमैं बिधि ठानी।
हिंदनी बेश्या नहिं जबि होइ। रमहिं तुरकनी हिंदू जोइ ॥ १६ ॥
ततछिन अपनो धरम नसावैं। तुरक मनो इम बधतो जावैं।
काम केल करिबे ते पाछे। पुन कैसे हिंदू रहिं आछे ॥ १७ ॥
रजक[2], कूजरे, पानीहार। सगरे तुरक करे तिस बार।
इत्तयादिक क्रित ठानहिं जेई। हिंदू करे हटावनि सेई ॥ १८ ॥
सगरे थल महिं तुरक बिठाए। इम सभि सने सने मिलि जाएं।
लिखि लिखि पठति भए परवाने। जहिं कहिं सूबनि केर टिकाने ॥ १९ ॥
पुरी सर्हंद, लहौर पठाए। काशमीर को पुनहिं पठाए।
पुरि मुलतान पठावनि करे। सुनि सुनि हिंदु त्रास उर भरे ॥ २० ॥
लिखि पूरब को पुनहिं पठाए। केतिक गिनीअहि पुरि समुदाए।
जिस जिस थल तुरकनि कहु राज। तहिं तहिं कर्यो तिसी बिधि काज ॥ २१ ॥
हिंदुनी बारबधू सभि बरजी। तुरकनि करी शाहि लखि मरज़ी।
अपर कारखाने सभि जेई। जहिं कहिं तुरकनि सांभे तेई ॥ २२ ॥
झगरति रिस करि सग जि भ्रात। जे सभि ते लघ परि जो जात।
सो ततकाल तुरक मत धरै। कलमा पठह्नि शर्हा महिं परै ॥ २३ ॥
सभि ते जीतहि झगरा सोइ। हारहि हिंदू रहै जि कोइ।
दरब लोभ ते केतिक बनि हैं। को ब्याहनि के झगरै मन है ॥ २४ ॥
इसी रीति बहु देशनि बीच। हिंदू धारहिं मतो जु नीच।
लोभ पदारथ को उर धरिकै। मुसलमान हुइं कलमा पड़िकै ॥ २५ ॥
शासत्रंनि ते सु जीवका हटी। पठनि सुननि ते सभि मति नटी।
पढ़ैं पारसी हिंदू जोइ। अधिक जीवका[3] प्रापति होइ ॥ २६ ॥

1. वेश्या 2. धोबी 3. रोज़गार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इम बिधि लखि कै हिंदू धनी। लगे पारसी पढिबे घनी।
'सलामालैकम' मुखहुं अलावैं। बैठ मसीते सबक पकावैं॥ १७॥
राम राम अरु वंदन करनी। सभिनि परसपर कीनसि हरनी।
मिलति सलाम करैं सभि कोइ। शासतर बिद्या निंद्या सोइ॥ २८॥
कहैं डकौती पढ़नो एहु। हे सुत! क्या इस पठि करि लेहु।
निज सिस तुरक समीप बिठावैं। कहैं पठहु इस ते धन पावैं॥ २९॥
कहैं सलामा-लेकम घनी। भंगन करी म्रियादा घनी।
तुरकनि सों मिलि दरब उपावैं। व्रिप्रनि अपनो धरम न भावै॥ ३०॥
छत्री पठहिं पारसी इलम। त्यागति धरम न लावैं बिलम।
धनी होइ पून गरबहि घने। बिनां इलम लखि हसि हसि भने॥ ३१॥
इक को देखति दुतीयो पढ़ै। तुरक तरीफैं तउ धन बढ़ै।
धरमाधरम न कछू बिचारहिं। लोभी भए दरब अनुसारहिं॥ ३२॥
एक बार जग बिगर्यो धरम। भरम हुइं तुरक बिशरम।
बैस शूद्र की क्या है गिनती। तुरकनि आगे करहिं सु बिनती॥ ३३॥
दिज, बाहज अरु बैस महाने। पोशिष तुरकनि की तन ठाने।
तबे तेर, पाइ करि जाइं। इत्तयादिक बिप्प्रै समुदाइ॥ ३४॥
तुरकनि मैं बैठैं रलि मिलिकै। मुख पर लगै स्वास तिन चलिकै।
गंदेधूम* निकासहिं आनन। छाइ हिंदू के मुख चख काननि॥ ३५॥
बैठे रहैं अनंद को मानि। मूढ़ सकुचि नहिं करैं गिलान।
बसत्र बसत्र सों भले मिलाइ। अतिशै निकटि बैठि मुद पाइं॥ ३६॥
'मीआं' आदिक तुरक बडाईं। ले ले हिंदू उर गरबाईं।
अपनों धरम न कछू बिचारहि। मिलि मिलि धन की लालस धारहिं॥ ३७॥
जिम रावन गन धरम हटाए। तपसी आदिक अधिक दुखाए।
तिम नौरंग बादी चवगत्ता। नाना भांतिनि कीनि कुमत्ता॥ ३८॥
हिंदू धरम बिगार्यो जग महिं। तुरक शर्हा बिरधावनि कउ चहि।
देश बिदेशनि राज बिशेषहि। औरंग दुषट सु करति अशेषहि॥ ३९॥
पूरब तप के बल को पाइ। जग महिं बहुतनि को दुखदाइ।
कवि संतोख सिंह इसी प्रकार। हिंदू अनिक धरम गे हार॥ ४०॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे '**नौरंग प्रसंग**' बरननं नाम दोइत्रिसती अंशु॥ ३२॥

---

* तम्बाकू का धुंआं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३३

# नौरंग प्रसंग

**दोहरा**

हिंदुनि संग बदबर[1] भयो इम नुरंग तुरकेश।
तुरकनि मिलि करि एक हुइ रचहिं उपाइ बिशेष ।। १ ।।

**चौपई**

भूमि भौन के धन के झगरे। साक करनि आदिक जे सगरे।
हिंदू होइ तुरक बन जाइ। तिस को सभि ते देहिं जिताइ ।। २ ।।
किधौं छुधातुर[2] हिंदू होइ। कै दारिद्‌द्री धन चहि कोइ।
तिस ते आदि अनेक प्रकारे। जिस किम तुरक बनाइ बिगारैं ।। ३ ।।
चहहिं सु देहिं, दीन महिं आवै। पुनहि जीवका तांहि बनावैं।
सभि देशनि महिं अस गति होई। राखा दुतिय न दानति कोई ।। ४ ।।
जहिं जहिं द्रिड़ता हिंदुनि केरी। तहिं तहिं ज़ोर पाइ करि ज़ेरी।
जिस ने अज़मत किछु दिखराई। तिस ते हटक रह्यो पछुताई ।। ५ ।।
बन्यो न तुरक, कर्यो हठ जांही। अरु अज़मत दीनसि किम नांही।
ततछिन तिसै गहै संघारै। अरु तिसको पक्खी गहि मारै ।। ६ ।।
महा कूर-करमा मतिमंद। काज़ी मुल्लां मूड़ बिलंद।
जिम हिंदुनि पर हुइ कठनाई। तिम नुरंग को देति सिखाई ।। ७ ।।
पूरब सो गुर घर के द्रोही। कहति सु मंद बात जिम होही।
शाहुजहां बिगर्यो जबि ही ते। ठानति अधिक द्वैख तबि ही ते ।। ८ ।।
कहि कहि कूरे क्रोध उपावैं। सतिगुर घर सौं बैर बधावैं।
सुनहु शाहु हिंदुनि गुर एक। जिसको मानहिं देश अनेक ।। ९ ।।
करामात के धनी कहावैं। जो जिम चाहैं तिम दिखरावैं।
जहांगीर शाहु जु तुव दादा। तिनहुं हकारे हित अहिलादा ।। १० ।।
ग्वालीएर के दुरग मझारे। कितिक दिवस सो तहां बिठारे।
रह्यो तहां साध्यो चालीसा। कर्यो काज जिम चह्यो महीशा ।। ११ ।।

---

1. ज्यादा बुरा 2. भूखा



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिस पशचात् साथ बहु रहे। जहिं लगि शाह जीअनि जग लहे।
शाहजहां होयो तिस पाछे। रहे संग कुछ दिन बिधि आछे॥ १२॥
बिगर पर्यो तबि शाहु रिसायो। लशकर तिस पशचात चढायो।
तिन को श्री अंम्रितसर थान। चढ़ि तूरन तहिं कीन पयान॥ १३॥
बडो जंग ऐसे तहिं भयो। लशकर ब्रिद लरति ही छयो।
गन सुभटनि अरु हयनि खपायो। जियति रह्यो दल त्रसति भजायो॥ १४॥
शाहिजहां सुनि रिसयो बिसाला। पठनि लग्यो लशकर जिस काला।
छोरि सुधासर को तबि गए। जंगल देश प्रवेशति भए॥ १५॥
पुन तहिं जाइ तुरंग कटिवाए। दरिआउनि तरि गुन समुदाए।
लल्ला, कंबर सूबे दोइ। करे पठावनि रिस मैं होइ॥ १६॥
जंगलदेश जंग करि भारो। दोनहुं को दल जुति संघारो।
पुन करतार पुरे महिं लरिओ। तहिं भी लशकर लर बहुमरिओ॥ १७॥
अबि गादी पर तिस को पोता। दीरघ करामात को पोता[1]।
दारशकोह मिल्यो तिस जाई। अपनि हकीकति सकल सुनाई॥ १८॥
देति रह्यो तिस को उपदेश। करि भ्राता सों जुद्ध विशेष।
हम संगी तुव लरबे मांहि। सेवक सैन सकेलहिं पाहि॥ १९॥
अपर भूप लें संग मिलाइ। ज्यों त्यों तुझको करैं सु राइ।
पतिशाहित को मालिक अहैं। तेरो साथ सदा निरबहैं॥ २०॥
अस मसलत बहुती सिखलाई। चहति भयो तुम संग लराई।
दारशकोहु साथ करि प्यारा। बैर ठानि चहि तुमहिं बिगारा॥ २१॥
तुमरे भयो खुदाइ सहाई। पतिशाहित सभि जग की पाई।
अबि सो देश तुमारे रहे। भलो आप को जो नहिं चहे॥ २२॥
करामात को धनी कहावै। हिंदू भेट असंख चढ़ावैं।
सभिहिनि को दे निज उपदेश। सेवक कीनसि देश अशेष॥ २३॥
अबि तिस को निज निकटि हकारो। करामात को लेनि उचारो।
जो कुछ कहो सु दे दिखराइ। हरख उपावहु अचरज पाइ॥ २४॥
नाहि त शर्हा बिखै लै आवहु[2]। वंछति रिदै मनोरथ पावहु।
हिंदुनि न अलंब बड भारे। इस बिन से हुइं तुरक सुखारे॥ २५॥
लाखहुं इनके कहे मझार। जिम इह कहित करति तिम कार।
दीन लेनि कहु इह उपदेशहिं। आइं शर्हा महिं हिंदु अशेषहिं॥ २६॥

1. जहाज़ 2. इस्लाम में ले आओ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपनि आप को गुरु कहावैं। सभिहिनि ते निज चरन पुजावैं।
राहु शर्हा इहु मानहिं जबै। बिना कहे तुरक सु हुइं सबै ॥ २७ ॥
दो महिं भली बात इक होइ। अज़मत कहे देहिंगे सोइ।
किती बिधिनि अनबन बनिवावहु। अदभुत् देखहु उर हरखावहु ॥ २८ ॥
नांहि ते अलप जतन ते सारे। हिंदू तुरक बनहिं इक बारे।
इस ते नीकी बात न और। पठहु हकारनि हैं जिस ठौर ॥ २९ ॥
वसतु जु अपनै हाथ न आवै। तिह कहि देवहु तुरत मंगावै।
जबि कुछ सुध किस बिधि ते लीनी। तबि तुम कहो, करहिं सो दीनी ॥ ३० ॥
इम काज़ी मुल्लां उलमाउ। कहि कहि बहुबिधि बाक् प्रभाउ।
भले प्रबोधैं लाभ दिखावहिं। फलहि मनोरथ तोहि जनावहिं ॥ ३१ ॥
अज़मत सों होवहिं भरपूर। किधों पुरख साहिब शाहूर।
किधों इलम को है उलमाउ। कै खुदाइ को सुमग जनाउ ॥ ३२ ॥
शाह आप तुम दानशवंद। सभि को समझ मगज़ बिलंद*।
तऊ हमैं कहिबो इम बनै। जिस ते प्रापति हुइ हितसनै ॥ ३३ ॥
इक तौ पाठल बैर संभारहु। अज़मत बहुत प्रकार निहारहु।
जे न होइ तौ मुशकल करहु। तिन को धरम ज़ोर ते हरहु ॥ ३४ ॥
सुनति शाहु के मन मैं भाई। मिलि मूढ़नि जो बात बताई।
राज तेज भेरो हुइ हानी। मूरख ने इह बात न जानी ॥ ३५ ॥
साहिब करामात जे नर हैं। चित बांछनि को ततछिन करि हैं।
तिन सों बनहि बेनती करनी। हलत पलत सुखदा इम बरनी ॥ ३६ ॥
पतिशाहित प्रापति ते गरब। निज को बडो लखहि लघु सरब।
मोहि समान न जग महिं आन। बल जुति दानशवंद महान ॥ ३७ ॥
पदर जि दादा तिन लगु जाने। अपरनि की क्या बात बखाने।
मुझ सम अकल न तिन मैं होई। करि न सकहिं, मैं करि हौं जोई ॥ ३८ ॥
इम लखिकरि अफर्यो हंकारी। सभिनि संग बिगर्यो बुधिहारी।
जिनके एकबाक ते होवैं। एतो बन्यो कहनि ही खोवैं ॥ ३९ ॥
तुच्छ पदारथ जग के पाइ। तिन सों अरनि चह्यो चित चाइ।
क्या प्रापति फल ह्वै, नहिं जान्यो। सकल हानलहि, इम न पछान्यो ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'नौरंग प्रसंग'** बरननं नाम तीनत्रिसती अंशु ॥ ३३ ॥

---

* बड़ा दिमाग़

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ३४

# नौरंग को प्रसंग

**दोहरा**

मिलि सूबे उमराव जे बहुर मुलाने ब्रिंद।
नौरंग को समुझावहीं गुर दिशि द्रोही बिलंद ॥ १ ॥

**चौपई**

दारशकोह सहाइक भए। मिले परस्पर प्रीती किए।
जिम भ्राता भा शत्रु हमारो। तथा गुरु हरिराइ बिचारो ॥ २ ॥
सुनि औरंग उर बिखै रिसायो। मकर फरेबनि को लिखवायो।
केतिक उपालंभ इस भाए। घर श्री नानक फकर सदाए ॥ ३ ॥
सभि को देखैं एक समाने। मित्र शत्रु किसहूं नहिं जाने।
दारा की तुम करी हिमाइत। सलतनत[1] दीनसि देश वलाइत ॥ ४ ॥
सो मैं पकरि दियो मरवाइ। कछून तुमरी भई सहाई।
भई सु भई बीत सभि गई। अबि मन करहु सफाई नई ॥ ५ ॥
हम सों मिलहु आनि अबि आप। सथिर तखत पर सहित प्रताप।
मिलिबे की बहु मुझ को लालस। तुम भी आवहु करहु न आलस ॥ ६ ॥
लिख्यो शौकनामा[2] इस रीति। अति मतिमंद कपट धरि चीत।
सने सने सतिगुर ढिग आयो। पठि करि सगल प्रसंग सुनायो ॥ ७ ॥
श्री अंतरजामी सभि जानी। कपटमती तुरकेशुर ठानी।
त मूरखता लखि बिगसाए। संतनि सों इह द्रोह कमाए ॥ ८ ॥
तबि जबाब खत को लिखवायहु। हमे जु मिलने हेतु बुलायहु।
तो संग नहिं कुछ काम हमारा। नहिं देश को राज उदारा ॥ ९ ॥
तेरे दाम नहीं हम देने। अरु नहिं खाहिश तुम ते लेने।
पीर मुरीदी नांहिन कोई। कौन हेतु करि मिलिबो होइ ॥ १० ॥

---

1. बादशाहत 2. पत्र



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अरु जे दारशकोह प्रसंग। सलतन देनि लिख्यो इम संग।
अटल सु छत्र तखत तिस दीनो। सदा दीन को दुखी न लीनो।। ११।।
दानशवंद दुनी लखि फानी। त्यागी, लैबे कहु नहिं मानी।
करहि दीन की सद पतिशाही। अचल बिसाल चलै कबि नांही।। १२।।
जिस पर मिहर रब्ब की होइ। दारशकोह मनिंदै[1] सोइ।
पतिशाहित हम ते नहिं लीनि। लई दीन की सलतनत पीनी।। १३।।
जे दिल शुभै तुमारे लहै। दारा सलतनत नहीं कि अहै।
तौ तुझ ख्वाब बीच दिखरावैं। तिस को निशचा रिदै टिकावैं।। १४।।
जबि सुपतहु तुम ऐसो करना। दारशकोह ध्यान उर धरना।
करहु सैन ह्वै ख्वाब[2] तुमारे। भलो बुरो सभि लेहु निहारे।। १५।।
करहुं कपट घट देहु मिटाइ। जानहु सभि को एक खुदाइ।
इत्तयादिक लिखि गुरु पठायो। कासद[3] लेअवरंग पहि आयो।। १६।।
ले करि पठ्यो तबै बदशाहु। दारा की जिस बिखै सलाहु।
जर्यो रिदै रिस करति बडेरी। बस कछु चलहि नहीं तिस बेरी।। १७।।
अबि भी मुझ को कछु न जाना। सकल जगत को भा सुलताना।
लिखी सिफत दारा की फेर। शर्हा वहिर लखि मार्यो गेरि।। १८।।
इम गिनती मन गिनति बिसाला। निसा भई भा सुपतनि काला।
दारा को चितवति रिस धरे। रुचिर प्रयंक पौढिबो करे।। १९।।
भयो नींद बसि सुपनो आयो। दारशकोह नूर दरसायो।
बैठ्यो तखत छत्र सिर ढुरे। महां जलूस चहूं दिशि करे।। २०।।
हूरां अनिक सरोदनि[4] गावैं। अनिक भाव करि तान रिझावैं।
ढुरति चमर चहुं दिशि चल चाला। चमतकार ह्वै रह्यो उजाला।। २१।।
दास अनेक खरे कर जोरे। आइसु देति, करति सो दौरे।
फूल अजाइब की गर माला। चहुंदिशि बिथरी शोभ बिसाला।। २२।।
चोआ चारु अतर खुशबोइ। महिकति चहुंदिशि अनंद होइ।
कंचन को मंदर मनि खचे। जिस महिं खग म्रिग सुंदर रचे।। २३।।
नौबत नाद होति[5] मुदकारी। बीना बर्जहिं अनेक प्रकारी।
चहुंदिशि सुजस करति बहु खरे। दारशकोह हुकम को करे।। २४।।
बहुत बाहनी भट बरिआरे। वाहन अनिक प्रकार शिंगारे।
तन्यो बितान देखि मनमोहति। सरब समाज शोभ ते सोहति।। २५।।

1. समान 2. स्वप्न 3. पत्र वाहक 4. राग 5. नगारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आपनपौं पुन पिखि बिकराला। बेस मलीन रुप चंडाला।
भर्यो टोकरा बिशटा साथ। रह्यो उठाइ आपने माथ ॥ २६ ॥
ऊपर सों बरखा जल परै। चख मुख पर सो बिशटा ढरै।
द्वै इस की तिशि दौरति आए। मारि लशटका[1] दयो हटाए ॥ २७ ॥
हट्यो तहां ते तिन को मार्यो। फिसलति मंदमंद पद धार्यो।
पुन सो मारति करति पल इन। दीन निबल ते भाज्यो जाइ न ॥ २८ ॥
भेस भयानक भै धरि भारी। भाजति गमन्यों गिर्यो अगारी।
तबि ही खुले बिलोचन जागा। श्री गुर के बच सिमरनि लागा ॥ २९ ॥
लिख जो पठ्यो, सु मुझ सों हुयो। बहुत बिसूरति संकट भयो।
दारा को जलूस बड देखा। उर अफसोसति क्रोध विशेखा ॥ ३० ॥
इह क्या भयो न जान्यो गयो। सिहर[2] किधों हिंदुनि गर कियो।
दुबिधा चित महिं भा मन भंग। कहि न सकहि प्रसंग किह संग ॥ ३१ ॥
बहुत बिचारति क्रोध बधाइ। समझयो नहिं मूरख इस भाइ।
श्री हरिराइ संग करि द्वैष। तिनहुं कीनि इह सिरर[3] विशेष ॥ ३२ ॥
मोहि दशा कैसी दिखराई। दारा को पातिशाहु बनाई।
पठौं सैन गहिवाइ मंगावउं। मैं अपनी अबि शकति दिखावउं ॥ ३३ ॥
इम निशचै करि मूरख मानी। कीनि बाहनी त्यार महानी।
इक उमराव पठ्यो कहि ऐसे। गुर कउ ल्यावहु जैसे कैसे ॥ ३४ ॥
जे करि जंग करै अर परै। सनमुख लोह तुमहुं सों करै।
तूरन लिखहु मोहि दिशि फेरि। बहु लशकर भेजउं बिन देरि ॥ ३५ ॥
करहु संघारनि कै गहि ल्यावहु। नहिं मारग महिं बिलम लगावहु।
जंग समिग्री ले करि सभै। तोप तुपक समुदाइन तबै ॥ ३६ ॥
गमन्यो दिल्ली ते करि कूच। एक मजल उमराव पहूचि।
भई जामनी कीनसि डेरा। खान पान करि सुपति बसेरा ॥ ३७ ॥
कुछ काचो आमिख[4] रहि गयो। भक्खनि कीनि सुपति सो भयो।
बिना हाज़मे, हैज़ा ह्वै कै। सो मरि गयो तहां दुख पै कै ॥ ३८ ॥
प्राति भई तिस को दफनायो। लिखि अवरंग के निकटि पठायो।
तहिं ते सो लशकर हटि गयो। महां शोक तिन हूं मैं भयो ॥ ३९ ॥
केतिक दिन बिताइ करि फेर। नहिं मुराद को प्रापति हेरि।
अपर कीनि त्यारी उमराव। देकरि लशकर जंग बनाव ॥ ४० ॥

---

1. लाठी 2 जादू 3. रहस्य 4. माँस

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शाहु निकटि ते रुखसत होइ। गमन्यो मग आवनि को सोइ।
कितिक मजल जबि चलि कर आयो। तोप जंबूर जंजैलनि[1] ल्यायो ॥ ४१ ॥
तिस के भयो रोग इस भांती। जलिबे लगी अचानक छाती
असवारी पर चढ्यो न जाइ। ज्यों हालहि त्यों हाड फुटाइं ॥ ४२ ॥
केतिक दिन मग महिं परि रह्यो। नीठ नीठ दिल्ली मग लह्यो।
सुनि अवरंग रिसहि अकुलाइ। तहिं लौ पहुँचि न कोई पाइ ॥ ४३ ॥
पुन केतिक दिन बीते जबै। श्री हरिराइ सिमरि करि तबै।
त्रितियो पुन उमराव चढ़ायो। हुइ रुखसद मारग गमनायो ॥ ४४ ॥
सो भी कुछ दुख ते मरि गयो। कई बार इम भेजति भयो।
आधो पंथ न उलंघ्यो कोई। होति बिघन पीछे हटि सोई ॥ ४५ ॥
संगति दिल्ली ते चलि आई। बंदन करि अकोर[2] अरपाई।
सो कर जोरति करि अरदास। श्री गुरु जी ! सभि बिघन बिनाश ॥ ४६ ॥
शाहु सैन बहु बार पठाई। भए बिघन तुम लगि नहिं आई।
सुनि करि श्री हरिराइ बखाना। गुरु पितामे प्रभू महाना ॥ ४७ ॥
तिन को कह्यो बाक् फुरि होता। जे तुमको को बिघन उदोता।
सो ततकाल हटहि दुख पावहि। अगनि निकटि ओरा गर जावहि ॥ ४८ ॥
तुमरे निकटि न आवै कोई। उद्दम करति बिनाशनि होई।
तिन को बाक् सहाइक सदा। दुषट बिनाशक है जद कदा ॥ ४९ ॥
कह्यो सभा महिं श्री हरिराइ। सुनि सिख भाखहिं तुम सुख भाई।
होइं बिनाशन शत्रु तुमारे। को समरथ जो सकहि निहारे ॥ ५० ॥
उतहि शाहु को कहति मुलाने। लिखहु सामता साथ महाने।
जिस ते प्रीति सु जानी जाइ। चहहु सु करहु जबहि इत आइ ॥ ५१ ॥
निशठुर हरफ न लिखीअहि कोई। करि सनमान हकारहु सोई।
एक बार लिहु निकटि बुलाइ। पुन बरतउ जैसे चित आइ ॥ ५२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'नौरंग को प्रसंग'** बरननं नाम चतुरत्रिंसती अंशु ॥ ३४ ॥

1. बंदूक 2. भेंट

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३५

## श्री हरिराइ हकारन प्रसंग

**दोहरा**

सुन्यो सकल तिनको कह्यो नौरंग सहित प्रमाद।
तिन की अकल सराहि कै रिदै महिद अहिलाद ॥ १ ॥

**चौपई**

ततछिन लिखवाइव परवाना। रामदास के तुम बड थाना।
मानहिं जग सगरे गुर लहैं। अज़मत धनी—लोक सभि कहैं ॥ २ ॥
आवत रहे हमेशा हमारे। मिले बोलनो भली प्रकारे।
मिहरबानगी अबि भी करीअहि। दरशन दिहु संसै सभि हरीअहि ॥ ३ ॥
मोकहु अज़मत आइ दिखावहु। मग खुदाइ के वाक् सुनावहु।
इत्तयादिक लिखि करि परवाना। बिनै सहित अरु निज बल नाना ॥ ४ ॥
दै करि दूत पठ्यो ततकाला। देर न करहु ल्याउ दरहाला[1]।
दिल्ली पुरि ते कीनि पयाना। सतिगुरको घर जिस पुरि जाना ॥ ५ ॥
तूरन गमन्यो मारग सारा। क्रम क्रम उलंघि गयो हित धारा।
रोपर पुरि ते चलि अगवाइ। कीरतपुरि पहुंच्यो तबि जाइ ॥ ६ ॥
तहां पहुंचि तिन कीनसि डेरा। श्री सतिगुर जहिं करति बसेरा।
द्वै सहंस्र द्वै सहस तुरंग। उतर्यो पर्यो रहित नित संग ॥ ७ ॥
वाहन पुषट खरे बहु मोले। थान सुहावति सुनीअति बोले।
रंग रंग के सुंदर घोरे। बहु कूद ति चंचल तनजोरे ॥ ८ ॥
सुभट अलंक्रित दरब समेता। सूखम बसत्र, शसत्र सों हेता।
मचे जुद्ध मुख मोरहि नांही। ऐसो दल उतर्यो पुरि मांही ॥ ९ ॥
कितिक सिक्ख सेवक संग रहैं। दरसहिं गुरु चाकरी लहैं।
कितिक लेहिं धन नौकर राखे। महां सूर नित रन अभिलाखें ॥ १० ॥
पुरी सुहावन हेरी दूत। लशकर पर्यो बन्यो शुभ सूत।
श्री हरिराइ गुरु सुखकारी। जानी सभि सुध रिदे मझारी ॥ ११ ॥
कहि करि सुंदर सभा लगाए। गिलम गलीचा पट बिछवाए।
चोबदार बहु गरे ढलैत। कंचन दंड करनि महिं लैत ॥ १२ ॥

---

1. शीघ्र



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चारु चंदोवा चित्रति ज़री। नग विच जड़ती मुकतनि लरी[1]।
रेशम की डोरैं सुठ तानी। झालर ज़री झुलति छबि खानी ॥ १३ ॥
सतिगुर मंद मंद चलि आए। बैठि सिंघासन मांहि सुहाए।
मनो शांतिरस धर्यो सरीरा। ज्ञान विराग भरे उर धीरा ॥ १४ ॥
चमक चारु ढोरति दिशि चारी। बिजना[2] चमकति रवि अनुहारी।
अनिक मसंद मेवड़े आए। बडे धनाढ बसत्र शुभ पाए ॥ १५ ॥
जे नौकर जोधा सवधाना। बसत्र शसत्र सजि कै बिधि नाना।
सभा बिखै चलि कै सभि आए। पंगति लाइ बैठि समुदाए ॥ १६ ॥
गन देशनि की संगति जोई। दरशन हित उतरी पुरि सोई।
सभि ले करि गुर भेट बिसाला। सभा बिखे पहुंची तत्काला ॥ १७ ॥
दरशन पिखति होहि अरदास। बंदहिं चहुंदिशि ते सुखरास।
केतिक घटिका जबहि बिताई। पठि जन लीनसि दूत बुलाई ॥ १८ ॥
आइ प्रवेश्यो सभा अनंदति। चहुंदिशि महिं पूजति बर बंदति।
हेरति नंम्रि भयो कर जोरे। बैठ्यो जहां बताइव ठौरे ॥ १९ ॥
पुन आगे धरि करि परवाना। नौरंग को बिरतांत बखाना।
याद कर्यो तुम को पातिशाहू। मोकहु पठ्यो छिप्प्र[3] निज पाहू ॥ २० ॥
बनहि आपको चलिबो तूरन। दिहु दरशन तिह, गुन गन पूरन।
अजमत ज़ाहर जाइ दिखावहु। करहु शकति निज ओर झुकावहु ॥ २१ ॥
करामात चाहति है देखा। नित अभिलाखा वधी विशेखा।
बिन देखे सो क्यों हूं न टरै। बिदति हठी अति हठ को धरै ॥ २२ ॥
गुर प्रताप पिखि मति बिरमाई। भने दूत बच माधुरताई।
सुनि सतिगुर डेरा करवाइव। खान पान सनमान दिवाइव ॥ २३ ॥
कितिक देर गुर दरशन दीनसि। पूर कामना संगति कीनसि।
पुन अंतहिपुर को गुर गए। सो सरवरी[4] बितावति भए ॥ २४ ॥
होति भोर पुन सभा लगाई। सरब हकारनि करे तदाई।
मुख्य सभिनि महिं वेदी आए। तेहण कुल भल्ले बुलवाए। २५ ॥
सोढी बीर बिसाल हकारे। आइ सकल सतिगुर परवारे।
परम जोति सूरज उजीआरा। रह्यो प्रकाश समूह मझारा ॥ २६ ॥
मोह तपत अतिशै जर खोवा। ज्ञान कला ते पूरन होवा।
कीरति बिमल चंद्रिका[5] चारु। अस रांकापति शुभति उदारु ॥ २७ ॥
अजमत सहित सभासद सारे। चहुंदिशि महिं उडगन[6] परवार।
अंम्रित बाक् अबिद्या म्रितु ते। करहिं उबारनि सिख को हित ते ॥ २८ ॥

1. मोतियों की लड़ी 2. पंखा 3. जल्दी 4. रात 5. चानणी 6. सितारे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देवराज देवन महिं जैसे। होति सुभाइमान गुर ऐसे।
सभिहिनि महिं गुर बाक् बखाना। तुम सगरे पूजनि असथाना॥ २९॥
बडे गुरनि के बंस बिसाले। बिदत सरोवर महद उजाले।
बिमल कमल तिन महिं तुम भए। शौरभ सुजसु सहित दुतिमए॥ ३०॥
अज़मत महिं पूरन सभि भांती। हतहु बिघन जिम सूरज राती।
दिल्लीपति नौरंग तुरकेश। तुरकदीन महिं हठी विशेष॥ ३१॥
गुर घर की महिंमा तिन सुनी। सभि जग विदत अनेकनि भनी।
करामात चाहति है देखा। पठ्यो दूत अभिलाखि विशेखा॥ ३२॥
गुर घर की जो राखहि लाज। परउपकार हेतु इह काज।
शकतिवंत उर धीरजधारी। सुगुन सहित हुइ सभा मझारी॥ ३३॥
जानि हेतु तुरकेशर पाहू। सभि महिं करहि जु अति उतसाहू।
सरब रीति अज़मत दिखरावै। बध्या दुषट को दरप[1] दबावै॥ ३४॥
सो अबि त्यार होइ तहिं जाने। सभा बिखै इम बाक् बखाने।
सुन्यो सभिनि पुन रिदै बिचारा। नौरंग हठी महद कुरिआरा[2]॥ ३५॥
अज़मत जुति कितने मरिवाए। लखि पूरब तप नहीं रिसाए।
हठ करि देति भए तिस प्रान। अस बदत्र हैं बिदत जहान॥ ३६॥
कांशी मथुरा आदिक सारे। तीरथ हिंदुनि केर बिगारे।
सभि जग तुरक बनावनि चाहति। धरम बिसाल काल जिम दाहति॥ ३७॥
सभि तुरकनि की सभा मझार। बडे बडे जहिं गुनी हज़ार।
इलम एक ते एक महाने। बहस परसपर गन बुधिवाने॥ ३८॥
केतिक पीर अजमती भारी। नौरंग के नित रहिं अनुसारी।
अपर अनेक भांति की बाती। जहां होति है बासर राती॥ ३९॥
अस बिचार करि तूशनि[3] होए। नंम्रि नार करि ऊच न जोए।
कितिक देर लौ रहि कै मौन। तर्कहिं परसपर, भाखहि कौन॥ ४०॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'श्री हरिराइ हकारन प्रसंग'** बरननं नाम पंचत्रिंसती अंशु॥ ३५॥

---

1. अहंकार 2. झूठा 3. खामोश

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३६

## श्री रामराइ को पठन त्यारी प्रसंग

### दोहरा

सभि ही सभा बिचारिकै बोले मुख्य जितेक।
नौरंग ढिग जानो कठन, अवगुन गिनैं कितेक ।। १ ।।

### चौपई

प्रान हान लौ जहिं कठनाई। हिंदु धरम-द्रोही[1] बिदताई।
किस की जहिं सहाइता नांही। दुशमन सम पय्यति पुरि मांही ।। २ ।।
नहीं उबार सकै जहिं कोई। अपनि पख्य की बात न होई।
तहिं पहुंचनि को अति उपसाहू। नाहिन लखीअति हम सभि मांहू ।। ३ ।।
उचित जानि के हो अबि आपू। सभि ते अति बिसाल परतापू।
ऐसो जग महिं दिखति न दूजे। तुमरी समसरता कहु पूजे ।। ४ ।।
जिन को नाम सिमरिबो करिबे। बिघन अनेकनि तत्छिन हरिबे।
सो तुम आप जहां चलि जावहु। काज संपूरन सगल बनावहु ।। ५ ।।
दुषट दरप कहु दमनहु जाइ। रावरि बाक् न निशफल गाइ।
तुरकेशुर द्रोही मद मत्ता। दीरघ हंकारी चौगत्ता ।। ६ ।।
इस ते बिना थान जो आन। जहिं पठवहु तहि करैं पयान।
बुधि वल ते कै अजमति करिकै। कारज आनहिं सकल सुधरिकै ।। ७ ।।
रावरि सरब भांति समरत्थ। जिस के सीस धरहु निज हत्थ।
सो सभि किछु करि सकै जु चहै। तिस के आगे अर्यो न रहै ।। ८ ।।
त्रास देहि सुरपति[2] सुर भौन। तिस आगे इह बपुरा कौन।
पहुंचनि तहां जोगता रावरि। अपर सुनति ही होति डराउर ।। ९ ।।
सरब सभा के सुनि करि बैन। श्री हरिराइ जिनहुं कित भैन।
श्री मुख बाक् सधीर बखान्यो। हम नै प्रण पूरब ही ठान्यो ।। १० ।।
'नहिं मलेछ कहु दरशन देना। नहिं कबि तुरक पती को लेना।
यांते हमरो होइ न जानो। मिलहिं न बोलहिं निशचै जानो ।। ११ ।

1. हिंदू धर्म का घातक 2. इंद्र



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसी धरम को करैं निबाहनि। हम तिसके अनुसारी नांहिन।
इक तो जनम तुरक घर पायो। दुतीए जग सों द्रोह मचायो ॥ १२ ॥
त्रितीए पिता भ्रात संघारे। चतुरथ संत करे दुखिआरे।
पंचम ब्रह्म ज्ञान जिस होवा। तिस को हति पुन सुख सों सोवा ॥ १३ ॥
सरमद नाम कहैं जिस केरा। सरव शकति मैं प्रभू वडेरा।
इत्तयादिक गन पापनि पुषट। कौन संत मिलि है इस दुषट ॥ १४ ॥
किस ते बखशन जोग न एही। अधम अधी[1] अति दुरमति तेही।
पक्ख वाद मैं हठी कुपत्ता। कुल[2] दुखक उपज्यो चवगत्ता ॥ १५ ॥
इत ते गयो न को तिस तीर। करहिं क्रोध तबि मूढ़ अधीर।
लरन हेतु निज सैन पठावै। बल दिखाइ आपनि गरबावै ॥ १६ ॥
करैं जंग तिह संग निसंगै। तोमर तीरनि तबर तुफंगै।
तोरि मोरि मुख लशकर केरा। जंगल देश करहि चलि डेरा ॥ १७ ॥
रहैं तहां सभि सुखको पावैं। जिस थल इन को बस न बसावैं।
सुनति सभासद् शुभ मति सारे। श्री गुर सों पुन बचन उचारे ॥ १८ ॥
आप करैं सोई शुभ सनै। हुइ जु अमंगल मंगल बनै।
तदपि हमारे मन हम आवै। राखहु सूत इही बनि आवै ॥ १९ ॥
कीरतिपुरि महिं राजहिं डेरा। पिता पितामे जहां बसेरा।
श्री हरिगोबिंद तज्यो शरीर। श्री बावा गुरदित्ता धीर ॥ २० ॥
इसी सथान बिखै ससकारे। आप बसहु सभि रीति सुखारे।
सतुद्रव कूल रुचिर[3] इह देश। निकटि खरे गन सैल विशेष ॥ २१ ॥
त्रिण सुंदर सभि वाहन कारन। फल दल फूल बार विसतारन।
किम त्यागनि इह चहहु गुसाईं। बहु नुकसान जि बधहि लराई ॥ २२ ॥
यांते हम सभिहिनि की मरज़ी। सिख, सेवक, सुभटनि की अरज़ी।
राखहु सूत, न त्यागहु देश। सभि किछु तुमरे हाथ विशेष ॥ २३ ॥
जथा रिदै रुचि तथा करंते। तुम सभिहिन सिरमौर महंते।
इम प्रविरत रह्यो ब्रितांत। आयो राम राइ वड तात ॥ २४ ॥
सहित सुभाइक वैठो आइ। चहुंदिशि देखति द्रिषटि चलाइ।
कहति भयो 'क्या हुइ अहिलादे ? आनि मिले सभि साहिबज़ादे ॥ २५ ॥
बेदी तेहण भल्ले बंस। सोढी इकठे भे जनु हंस।
करनो है अस कारज कौन ? सकल मिले कहि के इक भौन ? २६ ॥

---

1. पापी 2. कुल कलंकित करने वाला 3. सुंदर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनिकै इक बेदी ने कह्यो। नौरंग बादी अति तप रह्यो।
करामात हेरनि के कारन। पुरि दिल्ली महिं करहि हकारनि ।। २७ ।।
द्रोही सभि हिंदुनि को जोइ। अपनो दीन बधावहिं सोइ।
करहि सभिनि सों तरक घनेरे। मुल्लां काज़ी गन जिस हेरे ।। २८ ।।
करहिं दलील अनेक प्रकार। सभा सकल दुशटनि इकसार।
को अजमत[1] अबि जाइ दिखावै। अपनि शकति ते तांहि दबावै ।। २९ ।।
जीतै सभा, करावै मौन। तिसे बिचारति, होइ सु कौन ?
सुनि श्री रामराइ तबि कह्यो। क्यों न जाहु जैबो जहिं लह्यो ? ३० ।।
बिना गए जहिं बनि नहिं आवै। तहां बिचारहु चलनि सु भावै।
क्या सयानप होवहि इस मांही। ज्यों क्यों करे मिटहि जो नांही ।। ३१ ।।
सुनि करि सकल अकल के बैन। बोलति भए चपल करि नैन।
इस प्रकार जो धीर तुमारो। क्यों नहि नौरंग निकटि सिधारो ? ३२ ।।
दमनहु दुषट दरप कउ जाइ[2]। सभि के तुम ही बनहु सहाइ।
अपर बिचारनि क्यों अबि करैं। जे इह कारज तुम ते सरै ।। ३३ ।।
सतिगुर के तुम पुत्र वडेरे। सरब भांति के लाइक हेरे।
इह कुछ बात नई नहिं जानो। तुम सम करति, रहति नहिं छानो ।। ३४ ।।
पिता आदि पुन सभा जि सारी। मरज़ी मिली सु एक बिचारी।
मुझ को ही चाहति हैं भेजा। दमन करन तुरकेशुर तेजा ।। ३५ ।।
इम लखि रामराइ ने कह्यो। जे करि सभिहिनि इह मत चह्यो।
तहां जाइ जो करिव दिखावनि। करामात सो दिहिं मन पावन ।। ३६ ।।
सतिगुर पिता प्रसीदनि[3] होइ। पठिबे उचित करहिं मुहि सोइ।
तौ मैं तुम सभि की ले आइसु। करौं काज तिह निकटि सिधाइसि ।। ३७ ।।
तुम सभि ही लिहु रिदे बिचार। तहां अहै अज़मत की कार।
धरम द्रोह तुरकनि महिं जानो। तहां जाइ कछु रहनि न छानो ।। ३८ ।।
कहै तुरकपति जैसी बात। तस दिखावनो चहि बख्यात।
तौ बनि आइ तांहिके संग। नांहि ते हुइ तिह सों बदरंग ।। ३९ ।।
सुनि श्रीरामराइ जो कह्यो। सभिनि सराह्यो लाइक लह्यो।
उचित बारता कही बनाइ। अज़मत बिना जाइ किस भाइ ।। ४० ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'श्री रामराइ को पठन त्यारी प्रसंग'** बरननं नाम खषटत्रिसती अंशु ।। ३६ ।।

1. करामात 2. दुष्ट के अहंकार का दमन कर दो 3. प्रसन्न

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३७

# श्री रामराइ दिल्ली प्रवेश प्रसंग

**दोहरा**

सुनति प्रसीदे पिता गुरु अरु कारज को काल ।
कह्यो लेहु अजमत महां जो न सकहि को टाल ॥ १ ॥

**चौपई**

तव रसना पर करि हैं बासा । जो तिस ते हुइ बाक् प्रकाशा ।
कबहुं अंनथा[1] होइ सुनांही । सफलहि ततछिन बाद न जांही ॥ २ ॥
अथिरा होइं थिरा जस कहैं । लहैं अचरता जे चर अहैं ।
जो नित भर्यो रहै, नहिं रितै । सो रित[2] जाइ, नैक जो चितैं ॥ ३ ॥
म्रिग त्रिशना जहिं रेत अनीर । तहिं करि देहिं जलधि[3] गंभीर ।
श्री नानक सतिगुर समरत्थ । इत्तयादिक सभि तिन के हत्थ ॥ ४ ॥
सभि शकतिनि की शकति सरुप । जिनके अचरज चलति अनूप ।
सभि ब्रह्मंड तिन के अनुसारी । आइसु जहिं कहिं टरहि न टारी ॥ ५ ॥
सो तव बचन तेज प्रविशायो । करहु निशंक जथा मन भायो ।
को किस कारन करहु उचारनि । उचितानुचित[4] उचावच टारनि ॥ ६ ॥
जिस छिन जिसबिधि करहु उवाची । तत्छिन सकल भाति हुइ साची ।
अस महिंमा कहि सुतहि सुनाई । उर उतसाह करनि अधिकाई ॥ ७ ॥
पुन दिढ़ता हित बाक् बखाने । 'नौरंग अति बादी जग जाने ।
गुर घर सों मतसरी बिसाला । किस प्रसंग ते जे किस काला ॥ ८ ॥
करहि तरक मन कुटिल कुटेव[5] । निज मत को करिकै अहंमेव ।
असमंजस सुनिकै निज कान । राखनि हेति तुरकपति मान ॥ ९ ॥
तिस अनुसार होइ नहिं कहैं । गुर की लघुता जिम महिं लहैं ।
तबि तुम धीरज धरि उर आछे । कह्यो जथारथ, हुइ हित पाछे ॥ १० ॥

---

1. व्यर्थ, झूठी 2. खाली 3. समुद्र 4. योग्य, अयोग्य 5. बुरे स्वभाव वाला



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तव रसना ते निकसे जैसे। तैसे होइ मिटै नहिं कैसे।
भनहु निसंग राखि गुर ध्याना। जसु प्रापत हुइ है बिधि नाना ॥ ११ ॥
अपने बल भरोस जिस नांही। करनि कुशामत कारज तांही।
सतिगुर शकती पर बिश्वास। सो निशंग रहि सभिहिनि पास ॥ १२ ॥
ऊनो शंकमान हुइ जातो। पूरन नहिं डोलति किस भांतो।
बखस्यो तुहि अनटुट भंडार। खरचनि करहु न शंक बिचार ॥ १३ ॥
तीन लोक महिं आइसु जिम कहिं। सुर नर, नाग सुनति ही हित लहिं।
ततछिन करहिं तिसी बिधि सारे। तोहि बाक् नहिं को हटकारे ॥ १४ ॥
सुनि श्री रामराइ सु प्रसंन। कहिं श्री नानक जी धंन धंन।
तीन लोक महिं महिद प्रताप। चहैं सु करैं उथापनि थाप ॥ १५ ॥
श्री हरिराइ पिता के आगे। वंदन कीनि चरन अनुरागे।
सकल भांति की कीनसि त्यारी। शिवका[1], रथ सुंदर असवारी ॥ १६ ॥
नखशिख सगल शिंगारनि करे। चौकस चपल चारु असु[2] खरे।
निस महिं त्यारी सभि करि राखी। होति प्रभाति गमन के कांखी[3] ॥ १७ ॥
भाई बहिलो के गुरदास। अरु दूसर तारा पिखि पास।
श्री हरिराइ संग इह करे। सभि बिधि समझाए ढिग खरे ॥ १८ ॥
हित सेवा के सेवक आन। करे साथ सतिगुरु सुजान।
पौर बिखै स्यंदन शुभ करी। जगमग चहुंदिशि चमकति ज़री ॥ १९ ॥
नहिं तुरंग तिस जोरनि करे। पार्वाहिं ज़ीन तिनहुं पर खरे।
रामराइ इतने महिं अयो। सुंदर स्यंदन पर चढ़ि गयो ॥ २० ॥
श्री हरिराइ आप पुन आए। लोक हज़ारहुं भे तिस थाएं।
चढ़ि करि चलहिं हेरने काजा। आइ जुर्यो बहु नरनि समाजा ॥ २१ ॥
बिन तुरंग रथ पर असवारे। मुख ते बोल्यो चलहु अगारे।
ततछिन शबद गंभीर उठाइ। स्यंदन मग गमनी सहिसाइ[4] ॥ २२ ॥
किती दूर लगि फेर मुर्यो है। लखि अचरज उर हरख भर्यो है।
अपर लोक हेरति बिसमाए। धंन धंन सतिगुरु अलाए ॥ २३ ॥
बिन तुरंग रथ फिर करि आई। श्री हरिराइ हुते जिस थाईं।
सिख सेवक की भीर खरी है। शकति दिखाइव बुद्धि हरी है ॥ २४ ॥
देखति श्री सतिगुरु अलाई। अज़मत को आगे बहु थाईं।
लग्यो खरचबे चलत्यो घर ते। निकस्यो नांहिन अबि लौ पुरि ते ॥ २५ ॥

1. पालकी 2. सुंदर घोड़े 3. चाहवान् 4. जल्दी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धीरज धरहु थान जिस चाहो। तहिं अज़मत को करि दिखराहो।
अबि तो इस को काज न कोई। दौराई बिन असु रथ जोई।। २६ ।।
सुनि श्री रामराइ ने कह्यो। मैं पतिआवनि को इस चह्यो।
अबि मेरा निशचा टिक गइऊ। अपने ऊपर भरोसा भइऊ।। २७ ।।
जो मैं कहौं होइ सभि साची। निफल न जावहि करौं उबाची।
बहुरो रथ सों जूरे तुरंग। कोतल अपर पालकी संग।। २८ ।।
चमर चारु ढोरति दुति देति। मनहुं मराल उडारी लेति।
सकल मात कहु बंदन करी। हेरति सुत प्रेमातुर खरी।। २९ ।।
पुन सतिगुर जहिं श्री हरिराइ। नमो करी युति प्रेम सु पाइ।
अपर बंदिबे उचित निहारे। क्रम ते चरन बंद करि सारे।। ३० ।।
करति भयो उत्साह चलनि को। सजल करति लोचन पलकनि को।
कीरतिपुरि ते होइ अरुढ़ि। मारग गमन्यो आगं गूढ़।। ३१ ।।
दिल्लीपुरि के सनमुख गवना। सरब सरीर रुप जिस रवना।
डेरा प्रथम सु रोपर कर्यो। खान पान निंद्रा रस ढर्यो।। ३२ ।।
भई प्रभाति कूच करि चले। बाहन नर सेवक संग भले।
इसी प्रकार निसा जबि होइ। करहि सिवर सुख सों रहि सोइ।। ३३ ।।
केतिक दिन मैं क्रम क्रम करिकै। मारग उलंघे देश निहरिकै।
ग्राम नगर जेतिक मग आए। देखति चले जाति अगुवाए।। ३४ ।।
हास बिलास अनंदति होए। दिन गमने निस सुख सों सोए।
नौरंग दूत संग निज लीए। दिल्ली नगर प्रवेशनि कीए।। ३५ ।।
ततछिन दूत अगाऊ गयो। सुध आवनि की देति सु भयो।
जे सतिगुर गादी पर बैसे। इति को सो नहिं आवति कैसे।। ३६ ।।
पुत्र आपनो पठिबे कर्यो। मो संग ऐसो बाक् उचर्यो।
अज़मति शाहु चहै जो लई। सो हमने निज सुत को दई।। ३७ ।।
देख्यो चहै सु सकल दिखै है। इस को कह्यो निफल नहिं ह्वै है।
अपर शाह को काज न कोई। मिलनि हमारो जिस ते होई।। ३८ ।।
शाहि जु बांछति, हम ने भेजा। बिन संसे निज संग सु लेजा।
तिनको पुत्र संग मम आयो। नर बाहन कहु बहु समुदायो।। ३९ ।।
सुनि नौरंग ने रिदे बिचारी। जो हम बांछति रिदे मझारी।
सो दिखरावन को चलि आयो। पिता पुत्र महिं भेद न पायो।। ४० ।।
जे करि इस ते काज न सरै। बहुर हकारनि तिस कहु करैं।
अर्यो न रहै आइ बिन देरि। जिनहुं पठ्यो सुन शकति बडेर।। ४१ ।।
इम बिचारिकै मनुज पठाए। शुभ सथान डेरा करिवाए।
अपर सेव कहु हुकम बखान्यो। बांछति वसतू देहु महान्यो।। ४२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'श्री रामराइ दिल्ली प्रवेश प्रसंग'** बरननं नाम सपतत्रिसती अंशु ।। ३७ ।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

## अंशु ३८

# अज को जिवावन प्रसंग

**दोहरा**

दिल्ली पुरि परवेश कै नंदन[1] श्री हरिराइ ।
कर्यो सिवर शुभ रीति सों रहि मजनूं जिस थाइं ।। १ ।।

**चौपई**

तुरकेशुर बहु रिदै बिचारे । अपनि सलाही सकल हकारे ।
अज़मत देनहार अबि आयो । आप नहीं, निज पुत्र पठायो ।। २ ।।
हम सों बिना मिले इक बारी । करामात कुछ देहि दिखारी ।
हुइ अति कठन जु बन नहिं आवै । दिहु सलाह अति हीनति पावै ।। ३ ।।
क्या कहि पठहिं, कहां करिवाइं ? जिस महिं किम नहिं चलहि उपाइ ।
मिलिबे ते पूरब पतिआवैं । लखहिं उचित तबि निकटि बुलावैं ।। ४ ।।
सुनि काज़ी मुल्लां हरखाए । शाह सराहहिं बाक् सुनाए ।
दानशवंद बिलंद सभिनि मैं । कहि पठवहु जिम रुचि हुइ मन मैं ।। ५ ।।
अषटि सिधिहोवति जिन मांही । लघु दीरघ आदिक बन जाहीं ।
अपर अनेक प्रकारनि बात । सो करि लेति जगत् बख्यात् ।। ६ ।।
अचरज को दिखाइ बिधि नाना । जो बुधि बल ते सकै न जाना ।
सभि ते उलंघि एक है बात । म्रितक जिवावनि की बख्यात ।। ७ ।।
इस महिं एक करहु चतुराई । जिस प्रकार हम कहैं बुझाई ।
होहि म्रितक को देहि जु पर्यो । तिसहि जिवाइ देति करि खर्यो ।। ८ ।।
जे करि देह जाइ दफनाई । किधौं कोइ किस बिधि ले खाई ।
किधौं अगनि के बीच जरावैं । दिख्यो न अबि लौ तांहि जिवावै ।। ९ ।।
यांते छल कीजै इस भांती । दिहु बकरा ज़ाफत[2] कहि बाती ।
अपर वसतु सगरी पहुंचावहु । सनमानहु सभि बिधि हरखावहु ।। १० ।।
रात्रि बिखै तिस आमिख[3] खाइ । नहिं सरीर अज को पुन पाइ ।
होति प्राति के सो मंगवावउ । शहिज़ादे को नाम सुनावउ ।। ११ ।।

1. सपुत्र 2. प्रीति भोजन 3. मास



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इम छल ते बांछति को पावउ। नहिं जीवै तबि शर्हा मनावउ।
करामात अति होइ बडेरी। तबि बचि है नतु परै कुफेरी ॥ १२ ॥
इम सलाह जबि दीनि सलाही। नीकी मानि शाहु मन मांही।
चितवै चित अज[1] क्योंहुं न जीवै। तबि हमरे मत मैं सो थीवै ॥ १३ ॥
सभि वसत् पहुंचावनि कीनसि। खान पान सभि बिधि के दीनसि।
शाहु आपनो अज मंगवायो। महां पुषट बहु सुशट[2] सुहायो ॥ १४ ॥
हित खावनि के सो तहिं भेजा। कह्यो 'सकल वसतू संग लेजा।
जहिं श्री रामराइ किय डेरा। तहिं पहुंचे ले करि सभि हेरा ॥ १५ ॥
शाहु दिशा ते कहि करि दीनसि। 'ज़ाफत पठी मान तुम कीनसि।
सरब सौज इहु लेहु संभारी। लीजै अज करि लेहु अहारी ॥ १६ ॥
शाहु पठ्यो सभि दे करि गए। मति श्री रामराइ लखि लए।
अपनी नरनि सों कहिबो कीनि। हित अहार के बड अज दीनि ॥ १७ ॥
इस को आमिख करहु रसोई। खाल अस्थि[3] नहिं दीजहि खोई।
जबि मारहु इक टंगरी लेहु। बड काज़ी के घर पठि देहु ॥ १८ ॥
सुनि सेवक तस कीनसि कार। कुट्ठयो[4] अज को हेतु अहार।
ले काज़ी के घर महिं गए। रामराइ के आवति भए ॥ १९ ॥
तिन ढिग ज़ाफत भेजी शाहू। इहु आमिख पठ्यो तुम पाहू।
अपर कुशल को बूझनि कह्यो। रावरि साथ मिलनि कहु चह्यो ॥ २० ॥
सुनि काज़ी जिस मन अहंकारे। ले करि आमिख रिदे बिचारे।
करनि कुशामद पास हमारे। पठ्यो मास हित करनि अहारे ॥ २१ ॥
शाहु निकटि नीकी कहि बात। जाननि है इह नित ढिग जाति।
इम चितवति आमिख पकवायो। अपने खाने सों करिखायो ॥ २२ ॥
इति श्री रामराइ तिम कर्यो। असथि खाल इक थल करि धर्यो।
अपर मास खायो बरताइ। खान पान करि सहति सुभाइ ॥ २३ ॥
जामनि बिखै पौढ़ करि सोए। भई प्राति पुन जाग्रनि होए।
करि शनान पढ़ि करि गुरबानी। बैठि रहे सुख सों तिस थानी ॥ २४ ॥
उत नौरंगे सभा लगाई। काज़ी मुल्लां गे समुदाई।
कर्यो ज़िकर अज तहां पठायो। जीवति है कि काट करि खायो ? २५ ॥
भेज्यो नर सुध लैबे कारन। जाइ सु कीनसि नीक निहारनि।
जान्यो सुन्यो रैन मैं खायो। आइ तुरत नौरंग सुनायो ॥ २६ ॥

1. बकरा 2. बलवान् तथा श्रेष्ठ 3. हड्डी 4. काट लिया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शाहु कह्यो बांछति चित होइ। अबि जाचहु अज पठि नर कोई।
शहिजादे को खेलन वारे। भोरे पठ्यो समीप तुमारे॥ २७ ॥
अबि खेलनि के हित सो चाहै। ज़िद करि रुदति अमुदति[1] महां है।
इम समुझाइ पठ्यो निज नर को। कहते कुछुक जनावहु डर को॥ २८ ॥
बाक् चाल सुनि तूर्न आयो। ढिग थित ह्वै करि कूर सुनायो।
शहिज़ादे को अज सो दईए। तिसको पलटो औरे लईए॥ २९ ॥
राति भुलावे मैं दे गयो। अबि तिस की सुधि पावत भयो।
शहिज़ादे बड धूम उठाई। पच हारे परच्यो न रहाई॥ ३० ॥
सुनति शाहु को रिस हुइ आई। झिरके लोक त्रास उपजाई।
तुम लगि खफ़गी[2] जानी जाइ। दीजै अज, सगरी मिटि जाइ॥ ३१ ॥
सुनि श्री रामराइ बच कह्यो। सो अज कुठ्यो जियति नहिं रह्यो।
तिसके पलटे दें हम औग। नहिं अबि पय्यति सो किन ठौर॥ ३२ ॥
अपर खेल शहिजादे लावहु। तिस ते सुंदर अज दिखरावहु।
परच जाइगो ज्यों क्यों करे। सो किम हाथ आइ जो मरे॥ ३३ ॥
शाहु पास पुन जाइ सुनाई। सो तो मर्यो लीनि निस खाई।
कैसे हाथ आइ म्रितु होयो। नहिं उपाइ दैबे कउ जोयो॥ ३४ ॥
पुनहि शाहु ने पठ्यो रिसाई। ज्यों क्यों अज दिहु आज पठाई।
नांहि त शहिज़ादे को ख्याल। रहे टलाइ न टलै बिसाल॥ ३५ ॥
श्री हरिराइ पुत्र ढिग फेर। गए तुरक तागीद बडेर।
कह्यो शाहु को सकल सुनायो। ज्यों क्यों अज दिहु पुन फुरमायो॥ ३६ ॥
रामराइ मन मैं सभि जानी। जिस हित मैं आयो इस थानी।
बिनां मिले चाहै तुरकेश। अचरज करि दिखराउं विशेष॥ ३७ ॥
असथी खाल विखै सभि पाए। वाहिगुरु कहि जल छिरकाए।
उठ्यो जीव अज तो तत्काला। इत उत बिचरति बुलति बिहाला॥ ३८ ॥
तीन चरन जिसके तहिं फिरिही। भी बिसमे सभि लोक निहरिही।
शाहु नरनि के साथ सुनायो। एक चरन काज़ी इस खायो॥ ३९ ॥
कहो शाहु सों लेकरि जाहु। हम ने भेज दीनि तुम पाहु।
चौथे चरन जि चहहु बनावहु। ढिग काज़ी तिस ते बनिवावहु॥ ४० ॥
जितनक हमने कर्यो अहारा[3]। तिनो बनाइ दीनि तस सारा।
जितो नहिं अबि बन्यो निहर्यो। सो सभि काज़ी खावनि कर्यो॥ ४१ ॥

1. उदास 2. नाराज़गी 3. भोजन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इम अचरज पिखि करि ले आए। जहां शाहु अरु नर समदाए।
हेरि हेरि अदभुत बिसमाए। अति कौतंक, गति लखी न जाए ॥ ४२ ॥
तीन चरन किम रहे ? बतायो। एक चरन इन काज़ी खायो।
तिनहि कह्यो तिसने लगवावहु। निज अज को साबत बनवावहु ॥ ४३ ॥
सुनि नौरंग काज़ी दिशि हेरा। मुसकावति कुछ कहि तिस बेरा।
देख्यो हिंदुनि को गुर साचा। कर्यो काज तुम छल सों राचा ॥ ४४ ॥
तिस ते छल करि तोहि दबावा। अबहि बनावहु जस तुम खावा।
देखैं जिम बैठे समुदाई। नांहि त सभि मैं लाज गवाई ॥ ४५ ॥
पसरहि जहिं कहिं इही ब्रितांत। जिस महिं तुम कूरे सभि भांति।
पूरब छल करि अज दिलवायो। एक चरन ले तिसको खायो ॥ ४६ ॥
गुरु ने सो जिंदा करि दियो। तुरकनि ते पग एक न भयो।
इत्तयादिक बहु शाहु बखाना। काजो लज्जित मूढ़ महाना ॥ ४७ ॥
निम्रि नार* करि बाक् न आवा। अचरज सभा शाहु बिसमावा।
अज़मत महां जानि भे मौन। तरक सकहि सतिगुर को कौन ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे **'अज को जिवावन प्रसंग'** बरननं नाम अषटत्रिसंती अंशु ॥ ३८ ॥

---

* गर्दन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ३९

# श्री राम राइ प्रसंग

**दोहरा**

लज्जित काज़ी सभा महिं रह्यो बदन निहुराइ।
हरख भयो नौरंग महां मिलिबे चहि अधिकाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

मति बिसमत ने बाक बखाना। अज़मति इन महिं महिद महाना।
पुन परखनि हित ठानि उपाउ। अज़मति जियें नांहि तु मरि जाउ ॥ २ ॥
पोशिष सूखम बसत्र बनाए। तिन महिं ज़हिर बिसाल लगाए।
छुवति अंग को हानहिं प्राना। ज्यों बिसीअर* डस जाइ महाना ॥ ३ ॥
सगरे बसत्रनि बिखै रचाई। मनुख समीपी हाथ पठाई।
आप बैठि पहिरावउ सारी। केतिक चिर तहिं लेहु निहारी ॥ ४ ॥
लै गमन्यो, गुरसुत ढिग आइव। पोशिष आगे धरी बनाइव।
बहुत प्रसंन शाहु हुइ रह्यो। तुमसों बचन बंदगी कह्यो ॥ ५ ॥
हेतु पहिरबे पोशिष नीकी। पठी मोहि कर शरधा जी की।
महां प्रेम करि बाक उचरो। आप बैठि पहिरावनि करो ॥ ६ ॥
अबहि सफल हुइ पठमनि शाहू। पहिरनि करहु अपनि तन मांहू।
सतिगुर सुत ने लखी खुटाई। तऊ चहति अज़मत दिखराई ॥ ७ ॥
ले करि सगरी पहिरि शरीर। बैठि रहे तैसे धरि धीर।
जिन के देखति बिख बिनसाइ। तिनको सक किम कषट उपाइ ॥ ८ ॥
केतिक चिर सो बैठ्यो रह्यो। बिसम्यो देखति कछू न कह्यो।
एक पहिर बीतावनि करे। पुनि उठि गमन्यो शरधा धरे ॥ ९ ॥
आलमगीर संग सभि भाखी। 'मैं पहिराइ दिखति रहि आंखी।
जिम प्रसंन मुख पहिरनि करी। तिसी प्रकार अबहि दुति धरी ॥ १० ॥

---

* साँप



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एक जाम बीते मैं आयो। निज सुभाउ बोलति बिकसायो।
जिसके अंग पहिरिबे करे। द्वै घटिका[1] न प्रान को धरे॥ ११ ॥
सो तिन नहिं जानी पहिराइ। बैठे बिकसे सहिज सुभाइ।
सुनि नौरंग बिसमै हुइ गयो। स्याने तुरक बुलावति भयो॥ १२ ॥
फाज़ल गन उलमाउ महाने। शर्हा विखे गाढ़े जि मुलाने।
निकटि बिठाइ सकल समझाए। इहु गुर हिंदुनि सिहर[2] कमाए॥ १३ ॥
अबि कैसे इस को हम कहैं। सकल बात ते ऊपर रहै।
जिम नहिं सिहर होइ कुछ ऐसे : बात बनाइ कहहु सभि तैसे॥ १४ ॥
तबि फाज़ल[3] उलमाउ बखाना। हम ते सुनीए शाहु महाना।
प्रथम भयो श्री नानक चंद। बिचर्यो देश बिदेश बिलंद॥ १५ ॥
कर्यो सिहर मक्के महिं जाइ। सकल मुजावर[4] उर बिसमाइ।
जे हज़रत निज दीन बधावहु। चहति शर्हा मैं हिंद चलावहु॥ १६ ॥
तौ सुनि लीजै बात हमारी। इस को आनहु शर्हा मझारी।
हिंदू सभि इन के सिख अहैं। मानहिं पुन, जैसे तुम कहैं॥ १७ ॥
जो घर है गुरु नानक केरा। होता आयहु सिहर घनेरा॥
जहां जाति इह तहां दिखावैं। हिंदुनि को तूरनि भरमावैं॥ १८ ॥
सिहर ज़ोर ते मन बिचलायो। देश बिदेशनि जसु बिदतायो।
इन के सिख हिंदू मति काचे। सिहर देखि करि किम नहिं बाचे॥ १९ ॥
अबि अपनो खाना करिवावहु। अपने दीन बिखै करि पठावहु।
किसू जतन ते तिसे खुलावहु। अपने दीन बिखै करि ल्यावहु॥ २० ॥
अज़मति सिहर जितिक इन केरा। सभि मिठि जाह न लागहि देरा।
सुनति शाहु तैसे करिवायहु। खाना अपना त्यार करायहु॥ २१ ॥
निकटि दरोगा लीनि हकारि। तिह समुझायहु कीनि उचार।
सिफति समेत कहहु तिस जाइ। खानो अपनो देहु खुलाइ॥ २२ ॥
श्री नानक घर महिं इह बाति। है आछी सभि महिं बख्यात।
हिंदू तुरक जाति इक जाने। इक खुदाइ की स्रिषटि पछाने॥ २३ ॥
भा हज़रत के सिदक महाना। करि बहु स्वाद पठ्यो इह खाना।
हज़रत कहिं बहु सिफत तुमारी। फकर खुदाइ पाक[5] बिधि सारी॥ २४ ॥
इत्तयादिक तिस बहु सिखलावा। पठ्यो दरोगा कपट बनावा।
गयो संग ले खाना सोइ। पहुंच्यो गुर सुत के ढिग होइ॥ २५ ॥

1. घड़ी 2. जादू 3. बुद्धिमान् 4. पुजारी 5. पवित्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बैठि समीप कहिनि लगि तैसे। कुमति शाहु सिखराई जैसे।
हज़रत करी बंदगी तुमको। सिदक ठानि करि भेज्यो हम को ॥ २६ ॥
हिंदू तुरक समान तुमारे। पाक अलहु के लखने वारे।
सभि महिं जानहुं एक खुदाइ। भेद नहिं कबि तुमहिं लखाइ ॥ २७ ॥
बड़े शौक ते खाना कर्यो। जाफत को तन मन अनुसर्यो।
तुम को उचित मान को राखनि। करहु तथा हज़रत को भाखनि ॥ २८ ॥
सुनि करि गुर सुत बड़ी खुटाई। ज़िद करि मूरख करति ढिठाई।
कर्यो बचन बासन करि उरे। कहां पठ्यो शरधा उर धरे ॥ २९ ॥
तबे दरोगे धर्यो अगारी। ढांपन[1] खोलहु गिरा उचारी।
सुनि आज्ञा को तिन ततकाला। बासन धर खोल्यो दरहाला[2] ॥ ३० ॥
राइबेल चंबेली कली। लपटैं छुटति जिनहुं ते भली।
उज्जल बरन खिर्यो को फूल। सुखद बिलोचन के अनुकूल ॥ ३१ ॥
करे बिलोकनि बासन मांही। बिसमै भयो लखी कुछ नांही।
सुंदर महां सुफैद निहारे। जनु बूटनि ते अबहि उतारे ॥ ३२ ॥
कह्यो गुरु नंदन तिह समैं। हज़रत पठे पुषप इह समैं ?
बासन[3] भर्यो गरे लगि सारो। को कलिका[4] को खिर्यो निहारो ॥ ३३ ॥
ले गमनहु हज़रत के पास। हम दिशि ते दिहुं कुसम प्रकाश।
गयो दरोगा अचरज होइ। बासन तथा ढांप करि सोइ ॥ ३४ ॥
गन उलमाउनि ब्रिंद मुलाने। बीच सभा उमराउ महांने।
बैठ्यो अवरंग ले तहिं गयो। ढांपन खोलि दिखावति भयो ॥ ३५ ॥
इह क्या आन्हो तहिं ते जाइ। खाना रह्यो, कि दियो खुलाइ।
सुनति दरोगे अरज़ बखानी। तिन की गति कुछ जाइ न जानी ॥ ३६ ॥
कह्यो आप को सकल सुनायो। तबि बासन को निकटि रखायो।
ढांपन मुझसों कहि उतरायो। देखि आप, नहिं हाथ छुहायो ॥ ३७ ॥
ततछिन कलिका कुसम निहारे। सुंदर उज्जल पूरन सारे।
मुझसों कह्यो सु लेहु उठाइ। हम दिशि ते हज़रत दिहु जाइ ॥ ३८ ॥
अस अचरज कुछ करि दिखरायो। नहिं मेरी मति मैं कुछ आयो।
खाना आमिख[5] को विच जेता। कलिका कुसम कर्यो भरि तेता ॥ ३९ ॥
छिन महिं देखति मोहि अगारी। अज़मत किधौं सिहर इह भारी।
सुनि औरंग सभि सभा समेत। भए अचंभे लख्यो न भेत ॥ ४० ॥

1. ढक्कन 2. जल्दी 3. बरतन 4. कली 5. माँस

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बादी महां मुलाने मंद। कहनि लगे इह सिहर बिलंद।
श्री नानक के घर मैं सदा। ठानति रहे सिहर जद कदा ॥ ४१ ॥

जे अबि खाति हमारो खाना। अज़मत सिहर होति सभि हाना।
खायो नहीं, कीनि चतुराई। बच्यो रह्यो निज धरम रखाई ॥ ४२ ॥

सुनि नौरंग कहि 'क्या अबि करैं। आवति नहिं फरेब के तरै।
सिहर कि अज़मति बिखै कमाल। चहति करति बिन बिलम उताल[1] ॥ ४३ ॥

रुक्यो नहीं, ठानैं बिधि कौन। अबि किस बिधि बरतैं संग तौन।
महां मूढ़ हठधारी सरा[2]। नंम्रि न होति अजब अस करा ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे '**श्री रामराइ प्रसंग**' बरननं नाम एकऊनचत्तवारिसती अंशु ॥ ३९ ॥

---

1. जल्दी 2. सरकडा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४०

# कूप पर बैठिके फल मक्के को लिआवन प्रसंग

**दोहरा**

पुन नौरंग विच सभा के बोल्यो बिसमै होइ।
अदभुत् गति को करति है जानी जाइ न कोइ॥ १॥

**चौपई**

जस जस कपट हमहुं न ठाना। करामात ते सभि किछु जाना।
ततछिन सुगम करे दिखराई। अबि तिमको लें निकटि बुलाई॥ २॥
करि सनमान समीप बिठावैं। हित सों बाकनि कहैं कहावैं।
ठानहुं परखनि अपर उपाई। करामात की पूरनताई॥ ३॥
मिलत्यों भी इस को पतीआवैं। निकटि आपने पिखि बिसमावैं।
करहिं कौन बिधि जो बतलावौं। जिस असमंजस होइ, जनावौं॥ ४॥
सुनि मुल्लां बोल्यो तिस काला। इक उपाउ मैं कहौं सुखाला।
कै तो अजमत लिहु पतीआइ। नांहि त मरिहै सो गिर जाइ॥ ५॥
सुंदर कूप निकटि चलि जईऐ। बैठि आप तहिं सभा लगईए।
चहुंदिशि बैठे नर समुदाया। इक सम फरश देहिं थल छाया॥ ६॥
अलख कूप को थल करि देहिं। जिस बिधि आइ सो न लखि लेहि।
सुंदर चादर बिसद[1] बिसाल। छादहु सभि दिशिते तिस नाल॥ ७॥
आवति तहां देहु बैठाइ। बिन अजमत गिरिकै मरि जाइ।
शकति होइ तबि बैठ्यो रहै। तिसको कुछ अचरज नहिं अहै॥ ८॥
महिद[2] अधरमी मूढ़ मुलाने। इम सलाह दीनसि छल साने।
शाहु कही इहु नीक बखानी। दोऊ बिधि मैं जाइ सु जानी॥ ९॥
महां क्रूर नौरंग दुरमती। हेतु परखिबे पुन अजमती।
निकटि कूप के सभा बुलाई। इक सम फरश कीनि चहुंघाई॥ १०॥
छाद्यो कूप करे चतुराई। ऊपर चौंकी मसें टिकाई।
चरन धरै जबि ऊपर आइ। इक ही बार तरै गिर जाइ॥ ११॥

1. सफेद 2. धर्महीन



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शेख मुलाने काज़ी घने। अकल बतावहिं जो कुछ सुने।
उर नौरंग के हरख उपावति। सनमानति हसि मुख दिखरावति ॥ १२ ॥
बनि बनि बैठहिं सभा मझारे। कौतक देखनि चहति उदारे।
ठांढे सूबे अरु उमराव। शरहा बीच जे दिढ़ उलमाव ॥ १३ ॥
पठ्यो बुलावनि को निज दूत। आयो जहिं बैठ्यो गुर-पूत[1]।
हाथ जोरिकै कह्यो सुनाई। 'सिमर्यो[2] शाहु तुमारे ताईं ॥ १४ ॥
चलहु आप दरशन कहु देहो। सभा सहित तुम तिस पिखि लेहो।
सुनि श्री रामराइ हुइ त्यारी। गमनि कीनि अज़मत जुति भारी ॥ १५ ॥
जे गुरदास आदि सिख साथ। गए संग जहिं दिल्ली नाथ।
सनमानति अंतर प्रविशाए। दौरि दौरि नर पिखि बिसमाए ॥ १६ ॥
पसर्यो सुजसु सकल पुरि मांही। देखि देखि कहिं नमो सराहीं।
इस बिधि पहुंचे सभा प्रवेशे। सुंदर बदन सरुप विशेषे ॥ १७ ॥
तबि इक नर तिह होइ अगाऊ। ले चौंकी दिशि को पहुंचाऊ।
तहां मोम-दिल[3] जेतिक अहे। गिरहि कूप मैं त्रासति लहे ॥ १८ ॥
लखि श्री रामराइ खुटिआई। तुरक सभा हिंदुनि दुखदाई।
मूरख अज़मत को पतिआवति। नहिं परलोक भेव को पावति ॥ १९ ॥
'वाहिगुरु' कहि चरन उठावा। तिस चौंकी पर तुरत टिकावा।
दोनहुं पग धरि निशचल बैसा। मनहुं अविनि[4] पर टिकिगा तैसा ॥ २० ॥
देखति ही नौरंग बिसमावा। अनालंब लखि सीस झुकावा।
'रामदास के आवहु भले। आछो बात करी तुम मिले' ॥ २१ ॥
कुशल परसपर बूझनि कीनि। गुर सपूत पिखि प्रेम नवीन।
अति प्रसंन नवरंग तबि भयो। निकटि राखबे को मति ठयो ॥ २२ ॥
शकतिवंत् इहु लखे महाने। अपर न जानौं इनहु समाने।
मोहि काज महिं आवहि तहां। पहुंच न किस की बिखम जु महां ॥ २३ ॥
जिम उर चहौं लहौं मैं तथा। राखहुं इनको हरखहिं जथा।
पुरख न ऐसो किह थल पावै। अज़मत सों जिम चहै बनावै ॥ २४ ॥
निस महिं अज भख्यनि करि लीना। प्राति होति जीवावनि कीना।
अबहि कूप पर बैठ्यो ऐसे। निशचल भयो प्रिथी पर जैसे ॥ २५ ॥
चतुर घटी बैठ्यो तहिं रह्यो। जो बूझ्यो सो उत्तर कह्यो।
द्वैखी जरबर होए छार[5]। नहिं हरखे मतिमंद गवार ॥ २६ ॥

---

1. श्री रामराइ 2. याद किया है 3. कोमल चित 4. धरती 5. जल कर भस्म हो गए

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सभा जीत अजमत के साथ। बिसमावनि करि दिल्लीनाथ।
सहिज सुभाइक उठि करि आए। आनि आपने थान सुहाए ॥ २७ ॥
तिसदिनु ते करि रोज़ बडेरे। बहु धन नित पहुंचावति डेरे।
पुरि सगरे महिं कीरति महां। बातैं करति मिले जहिं कहां ॥ २८ ॥
गुर-सुत आयो शाहु बुलावा। अज भख्यनि करि पुन जीवावा।
पुनहि कूप पर चादर डारे। तिस पर बैठे रहे सुखारे ॥ २९ ॥
दरशन कहु आवति सभि कोई। धरहिं उपाइन निम्रि सुहोई।
सुनि सुनि नर पहुंचहिं उतलावति। सतिगुर सुत को दरशन पावति ॥ ३० ॥
बसत्र दरब भूखन धन घनो। आइ आइ अरपहिं हित सनो।
पसर्यो सुजसु सकल पुरि बीच। दरशन करहिं ऊच अरु नीच ॥ ३१ ॥
बडी भीर हुइ लोकनि केरी। बंदन करहिं चाह सों हेरी।
इस प्रकार रहिबे पुरि लागे। सिख संगति दरसहिं अनुरागे ॥ ३२ ॥
नौरंग शाहि जबै बुलवावै। बैठि पालकी अंतर आवैं।
हरखति करैं परसपर बात। कितिक देर टिकि डेरे जाति ॥ ३३ ॥
एक दिवस अंतर चलि गयो। बचन बिलास अधिक ही भयो।
तिह छिन 'इक मक्के ते हाजी। आयो पुरि सुध[1] दीनसि काज़ी ॥ ३४ ॥
सो अपने तबि निकटि बुलावा। तहि के फल कुछ ले करि आवा।
बूझि तहां की सुधि सभि आछे। फलकि सराहति भा हितबांछे ॥ ३५ ॥
तबि श्रीरामराइ सों कह्यो। इन फल सम न अपर फल लह्यो।
तुम भी पहुंचि सकहु कै नांही। बिना पहुंचि असफल किम खाही ॥ ३६ ॥
पैकंबर की अजमत तहां। हिंदू पहुंचि सकहि नहिं जहां।
फल मधुरे जिन स्वाद बिसाले। अपर न महि महिं[2] बहु हम भाले ॥ ३७ ॥
जेकरि तहां रसीद तुमारी। नहिं अटकहु किस ते बल भारी।
तौ तुम तहिं के फल मंगवावहु। करहिं प्रतीत अबहि दिखरावहु ॥ ३८ ॥
पैकंबर जे मानहिं आन। तौ प्रापत हुइं तुमरे पान।
बोल्यो सतिगुर सुत 'सुनि बात। श्री नानक भे जग बख्यात ॥ ३९ ॥
दुइ सेवक अपने संग लीनि। मक्के सथल पहुंचिबो कीनि।
करामात जो तहां दिखाई। सो सगरे जब महिं बिदताई ॥ ४० ॥
तिस ते भी बहु बिखम सथल को। अवगाहे सभि करि निज बल को।
हम भी दास अहैं तिन केरे। कहहु मंगाइ देहिं बिन देरे ॥ ४१ ॥

4. खबर 1. संसार में

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इम कहित्यो नौरंग के साथ। बहिर निकासे पट[1] ते हाथ।
फल मक्के के तबि दिखराए। लेवहु मधुर स्वाद सों खाए ॥ ४२ ॥

बिसम्यो शाह हाथ निज लीने। प्रथम जु फल सु मिलावनि कीने।
एह तो तुरत सु तोरे अहैं। सो सूके बहु दिन के लहैं ॥ ४३ ॥

बरन अकार स्वाद सम सारो। हेरि हेरि उर अचरज धारों।
बिलम न लगी करति ही बात। फल आने दीखति बख्यात ॥ ४४ ॥

जिन जिन पिखे सभिनि मति हारी। शरधा धरहिं अज़मती भारी।
द्वैखक[2] लज्जा कउ बहु पावैं। दुख पावति कछु बस न बसावै ॥ ४५ ॥

इस प्रकार अज़मत दिखराए। पुन डेरे महिं आनि सुहाए।
बिसमत पुरि के नर सुनि सुनिकै। शरधालू हुइ बड गुन गुनि कै ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे '**कूप पर बैठिके फल मक्के को लिआवन प्रसंग**' बरननं नाम चतवारिंसती अंशु ॥ ४० ॥

---

1. वस्त्र 2. दाघ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४१

# रामराइ प्रसंग

**दोहरा**

इम नौरंग उर हरख कै उत्तम वसतु विशाल ।
नितप्रति भेजति रहित है, सनमानति सभि काल ।। १ ।।

**चौपई**

देश बिदेसनि वसतू आवैं । सतिगुर सुत के निकटि पठावैं ।
ज़रदालू[1] नशपाती सेव । मेवा पठहि करहि बहु सेव ।। २ ।।
भांति भांति के दारम[2] घने । खारक[3], खोपे, जाहिं न गने ।
दिल्ली महिं उपबन ते आवैं । फल दल फूल अनेक पठावै ।। ३ ।।
बहुत मोल के बसत्र सुहावैं । अपरनि को दुरलाभ, नहिं पावैं ।
बरन बरन के सुंदर दीखहिं । भेजति पहिरनि आप सरीखहिं ।। ४ ।।
दरब अधिक रोज़नि को आवै । दिनप्रति अति सनमान व्रिधावै ।
बिसमै बुधि ते बहुत बिचारै । निस बासुर मन मांहि संभारै ।। ५ ।।
कबहि कचहिरी समै बुलावै । कबि एकल ही सुनै सुनावै ।
इक दिन बैठि पालकी आवा । महां प्रेम ते पास बहावा ।। ६ ।।
कहति भयो 'गति गुपत बतावहु । मुझ मन महिं जिम होहि, सुनावहु ।
किस बेगम संग है मम प्यारु । रमो होहि खुश रुप उदारु ।। ७ ।।
तिसको नाम मोहि कहि दीजै । बैस, बरन के पत कहीजै ।
जिस ढिग सगरी निसा बितावों । दिन महिं मन सिमरौं सुख पावों ।। ८ ।।
सभि बेगम ते अधिक सनेह । सो बताइ दीजै मम ग्रेह ।
प्रथम कीनि अजमत तुम जोई । अंत्रजामता तिसै न होई ।। ९ ।।
जबि इहु करहु बतावन स्वामी । तबि जानौं गुर अंतरजामी ।
श्री सतिगुर नंदन सुनि कान । ततछिन कीनसि बाक् बखान ।। १० ।।
तिस बेगम को नाम बतावा । बरन सरुप पुनहि बिदतावा ।
तिन सों रमन कीनि जिस भांती । सकल बताइ दीनि जिम बाती ।। ११ ।।

---

1. अलूचा 2. अनार 3. छुहारे



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किंतिक निसा के पते बताए। बोलनि मिलिनो सभि बिदताए।
सुनति अचंभै नौरंग होवा। कही साच, जिम ढिग थित जोवा ।। १२ ।।
हुती लालसा बीत्यो समो। संगलदीप पदमनी रमो।
रिदे मनोरथ कीनसि तबै। इन ते प्रापति बांछति सबै ।। १३ ।।
इक तौ अज़मत हुइ पतिआवनि। दुतीए करों कामनी पावनि।
इम बिचार करि पुनहि बखाना। शकति जि तुमरी सभिही थाना ।। १४ ।।
बीच संगलादीप बिदत है। होति पदमनी, करति मुदति है।
सुंदर म्रिदुल अंग दुति गौर। जिन पर पुंज गुंजारति भौर ।। १५ ।।
बहुत दिवस की लालस मेरे। पुरवौं उर, लेवौं तिस हेरे।
सिंधु[1] पार जे शकति तुमारी। सो मंगवाइ देहु इक बारी ।। १६ ।।
सुनि श्री राम राइ तिस काल। कह्यो शाहु सों बाक् रसाल।
हम मंगवाइ देहिं सो कामनि। तुझ संग रहै एक ही जामनि[2] ।। १७ ।।
इम कहि के संग दिल्ली पाल। मंगवाई पदमनी बिसाल।
नभ ते परी परी सम आइ। फूलनि के शिंगार सुहाइ ।। १८ ।।
अति बिसतरनि बिलोचन चंचल। तीछन अधिक कटाछ द्रिगंचल[3]।
नंदमंद मुसकावति हेरति। चौका चारु मदन[4] जनु प्रेरति ।। १९ ।।
मध्य देश सूखम[5], कुच ऊचे। सुंदर मुख जोगिनी चित रुचे।
पदम सुबास बिखेरति सारे। मुकर कपोल, केस अहि कारे ।। २० ।।
अपर कहां लगि सुंदरताई। बरनन करौं रूप अधिकाई।
शाहु बिलोकति ही हरखावा। महद अचंभो चित महिं छावा ।। २१ ।।
मन महिं जान्यो इन सम दूजा। नहिं जगमहिं जिसकी हुइ पूजा।
सुनति हुतो हिंदुनि गुर अहै। अबि परखे जिन ते सभि लहै ।। २२ ।।
बहुत प्रसंन शाहु मन भयो। अति सनमानति संसै छयो।
उठि श्री रामराइ गे डेरे। अजमति देति न लावति देरे ।। २३ ।।
त्यों त्यों सुजसु होइ अधिकाई। जहिं तहिं नर मिलि करति बडाई।
अति अचरज की बात करंता। जो न हुइं तिह रचै तुरंता ।। २४ ।।
श्री सतिगुर हरिराइ सुजाना। सौंप्यो सुतहि अतोट खज़ाना।
खरचन महिं सुकचति नहिं कैसे। भूप उदार देति धन जैसे ।। २५ ।।
होइ कठन ते कठन बिलंद। तुरत देति करि श्री गुर नंद।
द्वैषी मुल्लां गन उलमाउ। काज़ी दुखहिं बिलोकि प्रभाउ ।। २६ ।।

1. समुद्र 2. रात 3. आसमान से 4. कामदेव 5. कमर पतली

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनि श्री रामराइ जी कह्यो । इस महिं क्या संसै तुम लह्यो ।
श्री सतिगुर सभि साच बखानी । जती पहुँच नीक करि जानी ।। ११ ।।
जबि साहिब पहुंचे बग़दाद । तहिं के पीर कीनि बहु बाद ।
इस तुक को मानहिं नहिं कैसे । जानहिं तबै, पिखौं चख[1] तैसे ।। १२ ।।
सुनि श्री सतिगुर तिसै दिखाए । गह्यो हाथ कहि नैन मुंदाए ।
हारि गयो देखति अनगन को । संसै शक्ल बिनास्यो मन को ।। १३ ।।
जे तुम भरम करति हो कूर । हम करि दै हैं सगरो दूर ।
अबि दूसर ससि[2] आइ प्रकाशै । सभि के संसै तुरत बिनाशैं ।। १४ ।
इतने महिं सभि को द्रिषटायो । नभ महिं दूसर ससि प्रगटायो ।
जग देखति सगरे बिसमाए । भा अचरज गति लखी न जाए ।। १५ ।।
कबि अकाश मैं भयो न ऐसे । देख्यो नहीं सुन्यो नहिं कैसे ।
पुसतक अनिक किताब मझारे । पठ्यो न किन, भा अचरज भारे ।। १६ ।।
ऊचे चढ़ि चढ़ि पुरि महिं देखहिं । कहहिं परसपर बिसम बिसेखहिं ।
सभा सरब हेरति बिसमाई । बिगसति शाहु सु द्रिषटि लगाई ।। १७ ।।
सभि के मन अचरज नहिं थोरा । इस पर चलहि कहहु किस ज़ोरा ।
द्वैषी मुल्लां अरु उलमाउ । जरि जरि जाहिं बिलोकि प्रभाउ ।। १८ ।।
ससि दूसर पिखि बदन निवायो[3] । हित कहिबे नहिं ऊच उठायो ।
क्या बपुरे अबि बाक बखानैं । अज़मत पर बल चलहि न जानैं ।। १९ ।।
दिढ इरखा, गुरबाक जिनहुं के । परहिं न चरन, कुभाग तिनहुं के ।
इस प्रकार ससि दुती दिखायो । नभ महिं अधिक प्रकाश करायो ।। २० ।।
सतिगुर बाक् जाहिं बल भारी । को टिक सकि है तांहि अगारी ।
'धंन धंन' कहि स्तुति सुनावैं । 'तुम समता को अपर न पावैं ।। २१ ।।
सभा उठि सभि अपने डेरे । चितवति गमने बिसम बडेरे ।
तबि श्री रामराइ चलि आए । सभि के ऊपर जसु जिन छाए ।। २२ ।।
शाहु महां अचरज कउ धारे । पौढ्यो पलंघ बिसाल बिचारे ।
गुर के घर सम दूसर नांही । अस अज़मत नहिं किसके मांही ।। २३ ।।
नभ महिं गमन शकति नहिं किस महिं । इह तों कहां रचहि ससि तिस महिं ।
सुपते पुन प्रभाति हुइ आई । जागे सभि कहिं गुर वडिआई ।। २४ ।।
पुनि केतिक दिन बीत गए हैं । शाहु हकारहि, जाति भए हैं ।
बचन बिलास होति नित रहैं । जथा प्रशन हुइ उत्तर कहैं ।। २५ ।।

---

1. आँख 2. चंद्रमा 3. सिर झुका दिया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इक दिन नौरंग बाक् बखाना। हमरे जेतिक तोशेखाना।
कंचन रुपे के पण[1] जेते। मुझ सों करहु बतावनि तेते॥ २६॥
मुकता[2] हीरे नीलम सबज़े[3]। करहु जनावनि भाखे सबि जे।
मोहि बडन अरु मेरो कर्यो। देहु बताइ सथल जित धर्यो॥ २७॥
जेतिक गिनती मैं, सभि कहो। दरब जवाहर सरब जि लहो।
सुनि श्री रामराइ ले साथ। चले तहां ते दिल्ली नाथ॥ २८॥
जिस थल महिं जेतिक दबवायो। तहां खरे हुइ सकल बतायो।
जिते रजतपन गण दीनारे[4]। प्रिथक् प्रिथक् थल सहित उचारे॥ २९॥
जहिं जहिं दरब संचि कर धर्यो। तहिं तहिं फिर्यो, बतावनि कर्यो।
सुनि सुनि नौरंग अचरज होवा। दिय बताइ, जिम गाडति जोवा॥ ३०॥
इस ते दुरति न कोई बात। आंखनि देखी जिम बख्यात।
किस बिधि कौन अरै तिह संग। करामात ते अधिक उतंग॥ ३१॥
किसी भांति की हुइ कठनाई। इसके आगे अटक न जाई।
मुरदा इक जिंदा करि दीनि। चंद दोइ दिखलावनि कीनि॥ ३२॥
अबि अवनी महिं छपी जि बात। करी बतावनि जिम बख्यात।
कई बार पतीआवनि कीनि। बिलम बिहीन सकल करि दीनि॥ ३३॥
रिदे बिचारति बहु इम शाहू। आए बहुर सभा के मांहू।
अचरज सहित सभिनि महिं कह्यो। गुपत बिदत इन मन महिं लह्यो॥ ३४॥
सकल बतायो तोशेखाना। जेतिक दरब जवाहर खाना।
जहिं जहिं गाड्यो गुपत सथाना। तहिं तहिं पहुंच्यो कीनि बखाना॥ ३५॥
बहुत तरीफ शाहु ने करी। हेरति सुनति सभिनि मति हरी।
सभा उठी निज डेरनि आए। सुजसु नवों नित सभि पर छाए॥ ३६॥
सिक्ख अनेक आनि करि होवैं। सतिगुर महिमा को अति जोवैं।
अरपहिं महां उपाइन आनहिं। पाइनि पदम[5] पखारति पानहि॥ ३७॥
इम चरनांश्रित लेहिं अनेक। नितप्रति होवहिं सिक्ख कितेक।
वसतु हज़ारहुं ले अरपावहिं। चहुंदिशि भीर भरै दरसावहिं॥ ३८॥
अधिक समाज भयो बड डेरा। लंगर बरतहि होति बडेरा।
कवि संतोख सिंह कीरति गुर की। मनहु मालती[6] भी घर घर की॥ ३९॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे नवमि रासे '**रामराइ प्रसंग**' बरननं नाम दोइचतवारिंसती अंशु॥ ४२॥

---

1 सिक्के, मोहर 2. मोती 3. पन्ने 4. मोहर 5. चरण कमल 6. चमेली

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४३

# रामराइ बाज प्रसंग

**दोहरा**

इक दिन चढ़्यो शिकार कौ नौरंग दुषट बिसाल।
पठ्यो हकारनि दूत को ल्याउ तुरत इस काल ॥ १ ॥

**चौपई**

शीघ्र गयो चलि गुर-सुत डेरे। हाथ जोरि हुइ खरो अगेरे।
कह्यो 'शाहु अबि चढ़्यो शिकारा। वहिर ठांढि हुइ तुमहि हकारा ॥ २ ॥
देर न करहु चलहु दरहाला[1]। खरो शाहु चाहै तुम नाला'।
तबि तुरंग पर ह्वै असवार। गमने पंथ शीघ्रता धारि ॥ ३ ॥
जाति अखेर हेतु जित शाहू। पहुंच्यो सतिगुर सुत तित राहू।
खरो भयो नौरंग ने हेरा। दीनसि एक मतंग[2] उचेरा ॥ ४ ॥
हुइ आरुढ़ चले समुदाया। शाह अखेर प्रसंग चलाया।
'को बन को म्रिग मारहिं आज? को हम आगै जै हहिं भाज? ५ ॥
कितने हम ल्यावैं करि घात? सो सागरी बतलावहु वात'।
सुनि श्री रामराइ बच कह्यो। कुछ न हाथ आवै जो चह्यो ॥ ६ ॥
एक शेर निकसै बल भारा। करहु जतन तिस के हित सारा।
तऊन मार खाइ तुम पास। आवहु छूछे हटे निरास' ॥ ७ ॥
सुनति शाहु ने सभिनि सुनायो। 'जे करि आज केहरी[3] आयो।
सभि तुम सुनति हेहु सवधान। ज्यों क्यों करहु प्रान तिह हान ॥ ८ ॥
दिउं बखशीश अधिक कर तांही। करहु जतन जिम भाजहिं नांही।
चहुंदिशि ते घेरहु बरिआई[4]। तीर तुपक तरवार चलाई ॥ ९ ॥
तुंग तुंग[5] जे महद मतंग। करहु बरोबर जाइ न भंग।
दिढ ह्वै रोकहु मिलि करि आगा। इतहु शसत्र जिम जाइ न भागा ॥ १० ॥

---

1. जल्दी 2. हाथी 3. शेर 4. ज़ोर से 5. ऊँचे-ऊँचे



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इत्तयादिक कहि करति सुचेत। चितवहिं जतन शेर हति हेतु।
चढ़े तुरंगनि पर असवार। तिनहुं कीओ सवधान उचारि॥ ११ ॥
कानन ते केहरि निकसै है। इस महिं नहिं संदेह तुमै है।
करहु उपाइ रोकिबे तांही। हतहु बेग असु ते, नहिं जाही॥ १२ ॥
पैंदल प्रिथक् करे समुदाइ। सभिहिन के मन अधिक बधाई।
चलि शिकार गहि बिचर्यो शाहू। खोजनि फिरति बिपन[1] के मांहू॥ १३ ॥
गज बाजनि को परा वंधावा। खिलति अखेर नहीं कुछ पावा।
बिचरति बिचरति व्याकुल भए। इक दुइ जाम बीत जबि गए॥ १४ ॥
निकस्यो केहरि लेति जंभाई[2]। गरज्यो शवद उतंग उठाई।
मूत्र तुरंग मतंगनि गेरा। भाज चले को पावहि घेरा॥ १५ ॥
ललकारति लशकर को मोरा। उमड़ि भए सनमुख तिस ओरा।
ब्रिंद तुफंगैं गुलका मारी। गहि क्रिपान को रुपे अगारी॥ १६ ॥
अंकस मारि मारि गज ढोए। मरु मरु करि असु इत होए।
बन संघन महिं दीसहि थोरा। भयो कुलाहल, सुनिबे घोरा॥ १७ ॥
नर मतंग पर, हती तुफंग। जाइ लगी कुछ केहरि अंग।
ततछिन उछल्यो अधिक भभकि कै। लीनि उतार तिसी कउ बल कै॥ १८ ॥
दियो बगाइ दूरि कित पर्यो। अपरनि को डर कै मुख मुर्यो।
इक दुइ अपरनि कै करि मारा। चल्यो भाग, करि गयो किनारा॥ १९ ॥
किनिक कोस पर पहुंच्यो जाई। पीछे सैना शाहु पवाई।
संघन बन महिं मुशकल चलिबो। कहां होइ केहरि कहु मिलिबो॥ २० ॥
फिरे संझ लगि श्रम[4] को पाए। पसर्यो तम, कहि चमूं हटाए।
लखि श्री रामराइ बच साचा। रिदै अधिक अचरज तबि राचा॥ २१ ॥
मग आवति आरुढ़ि मतंगा। सभि कै संग भनै नौरंगा।
गुर सुत ने जिम गिरा उबाची। हम तुम सों, होई सभि साची॥ २२ ॥
निकस्यो शेर जतन करि हारे। लशकर पच्यो मर्यो नहिं मारे।
बाक् अटल नहिं टार्यो टरै। महां महद अजमत कहु धरै'॥ २३ ॥
इत्तयादिक जसु को बिदतावति। प्रविश्यो दुरग गुरु गुन गावति।
निसा बितीत भई पुन प्रात। सिमरति चित अजमत बख्यात॥ २४ ॥
अगले दिन पुन सभा लगाई। सतिगुर सुत को लियो बुलाई।
बडे बडे सूबे उमराउ। काज़ी मुल्लां गन उलमाउ॥ २५ ॥
पूरन सभा भई चलि आए। गुर सुत दिशि सभि नैन लगाए।
सुंदर बदन रदन दुतिराजैं। पिखि हरखहिं सिख, दुशमनि लाजैं॥ २६ ॥

1. जंगल 2. जम्बई 3. बंदूक 4. थकान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुर जामा बहु मोला चौर। गौर बरन विच दिपहि सरीर।
चौकी चारु चैल[1] सों छाई। बैठि बीच सभि सभा सुहाई ॥ २७ ॥
बाज हाथ पर लीनहु शाहू। करहि गुफतगो[2] हुतो जु पाहू।
तबि श्री रामराइ दिशि नैंन। मुसकावति नौरंग कहि बैन ॥ २८ ॥
'बड कीमत को आयो बाज। करहिं अखेर ब्रित के काज।
जिस पशचात् छोरिबो करीअति। तिस पंछी कहु ततछिन धरीअति ॥ २९ ॥
झपट तरै ते जान न देति। मीर शिकार धाइ गहि लेति।
हम को आमिख बहुत खुवायो। बहु सुंदर मेरे मन भायो ॥ ३० ॥
पाछल जनम कौन इस केरा ? बन्यो बाज किम ? गुन बहुतेरा।
मोहि हाथ पर बैठ्यो घनो। करि राख्यो आडो इन मनो ॥ ३१ ॥
कौन जनम पाछल ? कहि दीजै। संसै इही मिटावनि कीजै'।
सुनि सतिगुर को सुततिस बाती। कहति जनम सभिमहिं बख्याती ॥ ३ ॥
'तोहि पदर को हुतो दिवान। सेवा करतो रहति महान।
एक दिवस इन मास पकावा। डालि मसाले स्वाद बनावा ॥ ३३ ॥
अधिक दरब को खरचनि कीनि। रुचरि देगचा भरि करि लीनि।
करति संकलप ऐसमन मांहू। होइ शराबी जिस छिन शाहू ॥ ३४ ॥
अधिक स्वाद सों तबहि खुवावौं। करि प्रसंन जाचउं सभि पावउं।
करि कै त्यार आपने कर ते। लेकरि गमन कीनि जबि घर ते ॥ ३५ ॥
मारग महिं बिसीअर[3] पग डंसा। बिख बहु चढ़ी प्रान बिध्वंसा।
पहुंच्यो गयो न शाहु के तीर। रह्यो पंथ महिं पर्यो सरीर ॥ ३६ ॥
संकलप मास अचावनि केरा। रिदै रह्यो बसि कै तिस बेरा।
तिस अनुसार जनम इन पायो। हति खग[4] आमिख तुमहि खुवायो ॥ ३७ ॥
जबि लगि इस को रहै सरीर। आमिख आनति है तुम तीर।
तोहि पिता को हुतो वज़ीर। भ्रमको नाम धनाढ गहीर ॥ ३८ ॥
बहुत बरख के बिप्प्र जि अहैं। बूझहु, अहि ते मर्यो सु कहैं।
संग देगचा आमिख केरा। मर्यो निसा महिं अधिक अंधेरा ॥ ३९ ॥
तबि नौरंग बहु बिप्प्र बुलाए। बूझ्यो किम वज़ीर म्रितु पाए ?
त्यों हीं तिनहुं सुनाइसि बात। 'अहि ते मर्यो सभिनि बख्यात' ॥ ४० ॥
सभि के मन प्रतीत तबि आई। बाज जनम को साच बताई।
सभा समेत शाहु बिसमायो। कवि संतोख सिंह भाखि सुनायो ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे **'रामराइ बाज प्रसंग'** बरननं नाम तीनचतवारिंसती अंशु ॥ ४३ ॥

---

1. सुंदर वस्त्र 2. बातचीत 3. साँप 4. पक्षी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४४

# रामराइ प्रसंग

**दोहरा**

सभा उठी निज थल गए नंदन श्री हरिराइ।
अज़मत करति दिखावते देर न तनक लगाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

शाहु अधिक सेवा कउ करिही। देखति अज़मत अचरज धरिही।
पुन उलमाउनि शाहु सिखायो। 'है बहिशत महिं ब्रिच्छ सुहायो ॥ २ ॥
कलम ब्रिच्छ तिह नाम बिदत है। फल तिस के भखि करति मुदत है।
सो मंगवावहु खावहु आप। जिस के भखति हति ह्वैं ताप ॥ ३ ॥
मिलि आपस महिं मुल्लां कहैं। 'तिसको फल प्रापति नहिं इहै।
जाचहि शाहु दिए नहिं जाहिं। शरधा पुन न रहै मन मांहि ॥ ४ ॥
तिन ते सुनति शाहु भल जानी। अस अदभुत् फल आवसि पानी।
वसतु भिशत की आइ भि नांही। जाचौं, जबि प्रापती मुझ पाही ॥ ५ ॥
मन में नौरंग ने द्रिढ़ राखी। सभा लगे गुर सुत को भाखी।
हम ने सुन्यो भिशत के माहिं। कलप ब्रिच्छ सुंदर फल जाहिं ॥ ६ ॥
तिस के गुन ऐसे सुनि पाए। भखनि करे रुधर बन जाए।
सरब देहि महिं पसरहि होइ। उदर बिखै मल होइ न कोइ ॥ ७ ॥
इम तारीफ सनी तिन केरी। कहिं लोचन ते किन गति हेरी।
जितो तोल महिं तिह फल होइ। तितो रुधर* तन, भखहि कोइ ॥ ८ ॥
क्रिपा आप की ते मैं पाऊं। भिशत कलपतरु को फल खाऊं।
ईहां प्रापति कैसे होइ। पठनि किताब सुनति सभि कोइ ॥ ९ ॥
जो बिलोकिबे महिं नहिं आवै। तिसको पाइ कुतो हरखावें।
इह मनसा मम पूरन करो। तुम समरत्थ ऊन को भरो ॥ १० ॥

---

* खून



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिलनि आप को सफलो होइ। जे प्रापति करे देवहु सोइ।
सुनि सतिगुर सुत फल मंगवायो। अपनो ऊपर हाथ उठायो।। ११ ।।
आनि पर्यो ततछिन तिस मांही। तनक बिलंब[1] लगी तबि नांही।
सो फल नौरंग के कर दियो। अदभुत हरख रिदा भरि गयो।। १२ ।।
हेरि हेरि हैरान महाने। सभिनि हरी बुधि, जाइ न जाने।
दुषटनि दाहु, शाहु सुख पावै। अपर हितू सिख गन हरखावैं।। १३ ।।
स्वाद बिसाल शाहु मुख पायो। जो कछु अनंद[2] न जाइ बतायो।
अधिक प्रेम गुर सुत सों ठानै। अंतर गति की बात बखानै।। १४ ।।
जहां जाइ तहिं राखै संग। सनमानहि पिखि हरखहि अंग।
दरब ब्रिंद दस तीन हज़ार। देति रोज़ को करि करि प्यार।। १५ ।।
गुर सुत निकटि नरन की भीर। रहति अधिक नितसैन सधीर।
जिस प्रकार सूबे उमराव। तिस बिधि रहनि बिसाल प्रभाव।। १६ ।।
सदा कचहिरी होइ प्रवेश। ऊचे बैठे बीच बिशेष।
बोलनि मिलनिशाहु बहु करै। प्रेम बढाइ देनि कहु ढरै।। १७ ।।
इक दिन शाहु कह्यो सति भाइ। 'तुम ने तरुनाई[3] अबि पाइ।
मुझको जरा[4] ग्रास करि लीन्यो। सेत शमस अरु सिर करि दीन्यो[5] ।। १८ ।।
उज्जल बार, रुप की हानि। करति असुंदर मन दुखदान।
अपनो बाक् कहो इस बेर। केतिक दिन हुइं श्यामल फेर।। १९ ।।
सुनि श्री रामराइ ने कह्यो। 'रहै बरख इक जिम तुम चह्यो।
श्यामल बार होइ हैं सारे। तरुन पुरख के जिसू प्रकारे।। २० ।।
सभा बिखै बैठे ततकाल। सभि कउ दीखे श्यामल बाल।
मुदति भए नर जेतिक तहां। शाहु सरूप प्रसंसै महां।। २१ ।।
'भले सजे हो' करैं बखान। 'शम सबाल जिम फिरभे जुआन'।
अति प्रसंनता शाहु उपाई। अति अदभुत अज़मति दिखराई।। २२ ।।
तबि को बचन कहे ते रहे। एक बरस लगि श्यामल लहे।
पुनहि सेत तैसे हुइ गयो। जरा ग्रस्यो तन सगरो थियो।। २३ ।।
सतिगुर सुत को ले निज साथ। चल्यो वहिर कौ दिल्ली नाथ।
जमना कूल आइ भा टांढ़ो। नयो, नीर जिस मैं अति बाढो।। २४ ।।
काषट त्रिण अर ग्रामनि छान[6]। बहे सु जाइं प्रवाह महान।
सुनो गुरु सुत! जल असगाह। करैं सैल बिचरैं इस मांहि।। २५ ।।

1. देरी 2. प्रसन्नता 3. यौवन 4. बुढ़ापा 5. दाढ़ी और सिर सफेद हो गया है 6. छप्पर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नवका पर चढि कै हम दोऊ। अवलोकहिं पर तट लौ सोऊ।
जल की लिहु बहार बड बाढा। महां प्रवाह बेग अवि गाढा'॥ २६॥
अस कहि हुकम दीनि तबि शाहु। 'तरनी[1] शीघ्र अनावहु पाहू'।
धाइ गए जबि लैंसु कारन। गुर सुत गहि कर कीनि उचारन॥ २७॥
'लगहि बिलंब तरी कहु आवति। ऐंचि ऐंचि करि मरु सु ल्यावति।
करहिं सैल ह्वै कै पदचारी। सूरय तनिया[2] उलंघहिं सारी॥ २८॥
इम कहि ऐंची बांहु अगारी। शाहु न चलै त्रास उर भारी।
पनही[3] पाइनि पहिरे खरे। जल पर चरन नहीं तविधरे॥ २९॥
गुर सुत कह्यो 'पिछारी मोहि। पनही' पाइ न भीजै तोहि।
होइ निशंक चलहु जल पर को। सने सने हेरति तट पर को॥ ३०॥
जेतिक रुचि तेतिक फिरि आवैं। नहिं सुकचहु जल छुवनि न पावै'।
इम कहि धीरज दे करि भले। महां अगाध नीर पर चले॥ ३१॥
इक दुइ चरन तुरंग उठाए। जल पर चल्यो छुवति नहिं पाए।
अति प्रसंन हुइ धीरज लयो। गुर सुत संग गमन तवि कियो॥ ३२॥
चले जाहिं जमना पर ऐसे। शुषक सथल पर पंथी जैसे[4]।
सुनि करि सूबे गन उमराव। दौरि दौरि देखहिं चित चाव॥ ३३॥
भई नगर महिं सुध जिस काल। धाइ धाइ आवहिं नर जाल।
सरब जाति के नर गन सैना। सुनि अचरज चाहैं पिखि नैना॥ ३४॥
सूरज सुता कूल तिह छावा। निकस्यो नगर बिसमता पावा।
महां कुलाहल दिल्ली पुरि मैं। होति ज़िकर सगरे घर घर मैं॥ ३५॥
दोनहुं जल पर थल जिम जावति। दीखति सभि को चरन उठावति।
मंद मंद धीरज सों जाहिं। बिलसति बातनि आपस मांहि॥ ३६॥
अंतहिपुरि मैं जबि सुध गई। खरी झरोखनि झांकति भई।
बिसमै हेरि हेरि सभि कोऊ। सभिनि लगाई द्रिग दिशि दोऊ॥ ३७॥
नर नारी बालक ब्रिध ज्वान। करहिं परसपर बहु बख्यान।
'जल पर जाति तनक नहिं छुयो। पनही शुषक सुगम मग लयौ॥ ३८॥
सतिगुर सुत की कीरति कहैं। 'इस के सम दूसर नहिं अहै।
जिम चाहति तिम करति सुखारे। पीरनि पीर अज़मती भारे॥ ३९॥
नित अदभुत गति को दिखरावै। कहै शाहु जिम तुरत बनावै'।
पार कूल कालिंद्री[5] गए। सने सने पिखि फिरते भए॥ ४०॥

1. किशती 2. यमुना 3. जूता 4. खुश्क जगह पर जैसे मुसाफिर चलते हैं 5. यमुना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चतुर घटी लगि बिचरनि करे। दिन लघु रह्यो घरनि कहु मुरे।
मंद मंद सभि उलंघि प्रवाहू। आवति भा हरखति उर शाहू।। ४१।।
लाखहुं नर अविलोकनि करे। रंक राउ अचरज उर धरे।
पंडित मूड़ सभिनि मति छली। मिलि मिली भनहिं 'महां इह बली'।। ४२।।
शाहु आइकै दुरग प्रवेशा। मिलहि कहति असचरज विशेषा।
तबि श्री रामराइ निज डेरे। आए, बंदहिं लोक घनेरे।। ४३।।
'धंन धंन' सभि कहिं इक बारी। सिख संगति होवति बलिहारी।
लोक हजारहुं रहैं सु पास। देग चलहि निस बासुर रास।। ४४।।
आमद खरच बिसाल भयो है। बढ़्यो प्रताप महान थियो है।
सिख संगति किछु गिनती नांहि। कवि संतोख सिंह, आवति पाहि।। ४५।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे **'रामराइ प्रसंग'** बरननं नाम चतुरचतवारिंसती अंशु।। ४४।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४५

# रामराइ प्रसंग

### दोहरा

इक दिन बैठे सभा महिं नंदन श्री हरिराइ।
बडी गरज कै घन[1] घटा आइ गैन उमडाइ ॥ १ ॥

### चौपई

बह्यो बेग बहु बायू संग। कड़कहि तड़िता[2] दमक उतंग।
बरखा करका[3] की बडि आई। परनि लगे छिंत शवद उठाई ॥ २ ॥
अधिक तोल महिं गिरैं बडेरे। छादी छित[4], भई सेत घनेरे।
घटा एक सम चहुंदिशि मांही। परहिं जहां कहिं मिटहिं सु नांही ॥ ३ ॥
पिखि नौरंग ने बाक् बखाना। 'सुनहुं गुरु सुत! सगरे थाना।
ओरे परे दीन दुख पावैं। वहिर खेत सभि कौ बिनसावैं ॥ ४ ॥
उपवन महिं फल फूल बिनासहिं। सभि तरुवर की शोभा ग्रासहिं।
वहिर पसू गो आदि घनेरे। तिन पर लगे प्रहार बडेरे ॥ ५ ॥
हिंदू धरम तुमारे सोइ। बचन करहु रच्छा तिन होइ।
नांहि त मरि जावहिंगे घने। अस ओरे नहिं देखे सुने ॥ ६ ॥
वहिर पसू क्या खेत बिसाले। सभि की हानि होइ इन नाले।
करहु बाक् सभि केर भलेरा। सुनि श्री रामराइ तिस बेरा ॥ ७ ॥
कह्यो 'जि इम है तुमरे मन मैं। ओरे परनि मिटहिं इस छिन मैं।
जबि अधरन[5] ते बाक् निकासा। गगन बिखै घन ब्रिंद बिनासा ॥ ८ ॥
कै तो हुतो तिमर सभि दिश मैं। भयो प्रकाश बार इक तिस मैं।
नहिं घन बायु न बरखा कहां। बिमल अकाश भयो जहिं कहां ॥ ९ ॥
देखति मान्यो सभिनि अचंभ। ओरे कहां न बरख्यो अंभ[6]।
पसर्यो सुजसु गुरु सुत केरा। घर घर बीच ब्रितंत बडेरा ॥ १० ॥
जहां कहां कीरति को करिहीं। अचरज नवें हमेश निहरिहीं।
एक मसत हाथी रहि खर्यो। संगल रहैं परे द्रिढ़ कर्यो ॥ ११ ॥

---

1. आकाश 2. बिजली 3. ओले 4. धरती ढकी गई 5. होंठ 6. पानी



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बहु भाले अरु अंकुस लैं कै। नर समीप होवहिं दिढ़ कैं कै।
नांहि त गहि निज सुंडा संग। चीर देति करि आधो अंग ॥ १२ ॥
महां बली, दै हैं बहु खाना। खर्यो रहै सो एक सथाना।
जल बासन तिस निकटि रखावैं। देति दूर ते त्रसति पिलावैं ॥ १३ ॥
दुषटनि नौरंग को सिखलायो। 'इस पर गुर सुत देहु चढायो।
जबि अरुढि मग करै पयाना। हटहि महावति तबिं तिस थाना ॥ १४ ॥
सुनति शाहुं के मन मैं भाई। बहु शराब मंगवाइ पिवाइ।
ब्रिंद महावत हुइ चहुं कोदा[1]। ऊपर कर्यो सुनहिरी हौदा ॥ १५ ॥
ज़री दोज़ को पायहु झूलं। भयो मसत हाथी रहि झूलं।
तोमर[2] भाले अंकस घने। दुरग दिशा ले गमनति हने ॥ १६ ॥
गुर सुत बीच कचहिरी अहै। सभि दिशि देखि शाहु तबि कहै।
'चलहु वहिर उपवन हुइ आवहिं। बिगसे फूल सु छबि दिखरावहिं ॥ १७ ॥
इम कहि उठ्यो चढ्यो असवारी। सतिगुर सुत सों गिरा उचारी।
इस मतंग पर हुइ असवारो। गमनहु संग उतंग उदारो ॥ १८ ॥
तजहु आज सिवका असवारी। शीघ्र चलहिंगे बिलम बिसारी।
जानो दूर दिवस रहि थोरा। आवहिं संध्या लगि घर ओरा' ॥ १९ ॥
सुनि श्री रामराइ सभि जानी। अजहुं पता चहि मूरख मानी।
'वाहिगुरु' मुख ते कहि करिकै। बैठ्यो मसत करी[3] पर चरिकै ॥ २० ॥
गमने पंथ शीघ्रता साथ। निज वाहन कहु दिल्लीनाथ।
बहुत वेग ते चलि पलाइ। हटे महावति जे समुदाइ ॥ २१ ॥
हाथी मसत सुंड कहु फेरति। रकत नेत्र ते इत उत हरति।
फंकारति किलकारति घनो। भए क्रोध ते धावति मनो ॥ २२ ॥
शाहु समाज संग ही दौरा। त्रासति भाजहिं, हुइ जिस ओरा।
गुर सुत हौदे पर चढ़ि रह्यो। हाथ छरी सों प्रेरति रह्यो ॥ २३ ॥
जिस दिशि को चित चहति चलायो। हाथ छरी सों तितहि धवायो[4]।
जिह समीप भाजति हुइ जाइ। दिखनि पलावति, जनु इहु खाइ ॥ २४ ॥
बेख भयानक हाथी केर। जाहिं पलावति करति न नेर।
हेरि हेरि भाजति हैं ज्यों ज्यों। हस हस परै शाहु बहु त्यों त्यों ॥ २५ ॥
कोइक ठांढ़े पिखहिं तमाशा। केतिक उर धरकति करि त्रासा।
'मार्यो हुतो मोहि करि ऐसे। शीघ्र लाइ बच्यो मैं कैसे ॥ २६ ॥

1. और 2. बरछी 3. हाथी 4. दौड़ाया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बहु चिंघारति शवद उठावै। करे कुंडली सुंड[1] भ्रमावै।
लांगुल गाढ़ी अधिक चलाइ। दंत गडावति इत उत जाइ॥ २७॥
गुर सुत हतहि छरी मग प्रेरति। शाहु सहित चहुं दिशि सभि हेरति।
कोसकु लौ चलिकै पुन आए। गमनहि गज मग, जिम गमनाए॥ २८॥
बिनां महावत चहति चलावति। गुर सुतके अनुसारी धावति।
देखि देखि करि त्रास उपावैं। नहिं किसहूं पर चोट चलावै॥ २९॥
संध्या लौ फिरि कै मुरि आयो। द्वार दुरग के गज बैठायो।
सनै सनै उतरे गुर नंद। पुन तजि दीनि मतंग बिलंद॥ ३०॥
तबहि महावत ह्वै समुदाई। गहि तोमर घेर्यो बरिआई।
सने सने निज थल ले आए। खरे दूर नहिं निकटि सिधाए॥ ३१॥
अमल शराब रह्यो गज जावद। नहिं समीप गए नर तावद।
दाव बचाइ श्रिखला[2] पाई। बांधयो द्रिढ़ आगा पिछवाई॥ ३२॥
गुर सुत को सभि लोक सराहैं। सुनि सुनि जसु को पिखनि उमाहैं।
रंक राव सभि आवति डेरे। बंदहिं अरपहिं दरब घनेरे॥ ३३॥
केतिक सिख होहिं धरि भाऊ। करहिं बिलोकन बिदति प्रभाउ।
दरशन हेतु भीर नित रहै। 'धंन धंन' देखति ही कहैं॥ ३४॥
केतिक चाकर हुइ रहि संग। करे खरीदनि ब्रिंद तुरंग।
गहै शसत्र दल वहुत बनायो। सकल समाज सकेलि ब्रिधायो॥ ३५॥
आमद बडी होइ निज पास। पुंज मसंद करहिं अरदास।
कारदार हुइ कितिक बिसाल। वधे मेवड़े ढिग रहिं जाल॥ ३६॥
सरब निकटि धन की अधिकाई। बहु देशनि ते संगति आई।
कबि कबि सभि के बैठहिं बीच। दरशन करहिं ऊच अरु नीच॥ ३७॥
रंक राउ चलि आइ जि कोई। अचहि देग ते भोजन सोई।
गिनती रही नहिं किस भांती। कवि संतोख सिंह बड बख्याती॥ ३८॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे 'रामराइ प्रसंग बरननं नाम पंचचतवारिंसती अंशु॥ ४५॥

---

1. पूंछ 2. जंजीर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४६

# रामराइ प्रसंग

**दोहरा**

इक दिन आए सभा मैं नंदन श्री हरिराइ।
सनमानतिनौरंग ते बैठे मोद उपाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

जे गाढे बिच शर्‌हा हठीले। करत बाद बिसाल कुशीले।
अनिक माइने[1] बकहिं कुराने। दीन[2] बिखै कहिलावहिं स्याने ॥ २ ॥
अधिक समाज तिनहुं कहु होवा। जिनहुं सिखाइ शाहु को खोवा।
शुभ करतूत करन महिं हौरे। झगरनि बिखे से मुखी गौरे ॥ ३ ॥
महां मंदमति, मूरख, मानी। शाहु रिझावहिं धन हित दानी।
सभा मझार प्रसंग चलाए। बहुर गुरु कहु नाम अलाए ॥ ४ ॥
श्री नानक बड भए तुमारे। भेख फकीरी फिरे बिचारे।
नयो आप मारग उपराजा। नहिं हिंदू नहिं तुरक समाजा ॥ ५ ॥
पैकंबर बड भए हमारे। जिनके समसर जगत न सारे।
मिलिनि खुदाइ राहु शुभ कह्यो। चले कहे महिं तिनहूं लह्यो ॥ ६ ॥
जिस सों मिलि मन होइ बिकारी। सो श्री नानक रीति बिथारी।
गावहिं राग बजावहिं ताल। जिस ते जागहिं बिशै बिसाल ॥ ७ ॥
बहुर कहैं हम भिसत[3] सिधाइं। बकैं कुफर कुछ लख्यो न जाइ।
सभि हिंदुनि कै रीति न नीकी। पूजहिं बुतनि भावना जी की ॥ ८ ॥
दोज़क परहिं राह अस गह्यो। नहिं किनहूं खुदाइ मग लह्यो।
सुनि श्री सतिगुर सुत ने कह्यो। 'श्री नानक किन तेज न सह्यो ॥ ९ ॥
बाद बिखै अरु अज़मत मांहि। समसर तांकी कीनसि नांहि।
गोरख आदि, पीर मुलतान। मक्के बहुर मदीने थान ॥ १० ॥

---

1. अर्थ 2. इस्लाम मत में 3. स्वर्ग


CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कौन कौन को गिरिबो करीअहि। पंडित अजमत जुति उर धरीअहि।
सभि को बिजै कीनि फिर ऐसे। सूरज हतहि तिम्र[1] कहु जैसे ॥ ११ ॥
अबि तिनके सिख सुमति विसाले। चहैं सु करहिं अरहि को नाले।
जग महिं तिन की छुपी न बाती। रंक राउ सभि के बख्याती ॥ १२ ॥
जिम सूरज को पाइ प्रकाश। पिखहि बिलोचन लहि सुखरास।
तुम सम पेचक क्या कुछ जाने। अंध होहिं बैठति इक थाने ॥ १३ ॥
जिस सूरज को सरब सराहैं। तमचर[2] किम सुख लहि तिस पाहैं।
तसकर गाढो चहै अंधेरा। तिस प्रकार को मत है तेरा ॥ १४ ॥
सुनि उलमाउ गयो जरबरि कै। लघुता सहि न सकै रिस धरिकै।
बाक् चाल वड सभा मझारे। तबि श्री नानक निंद उचारे ॥ १५ ॥
सहि न सक्यो गुर नंदन जबै। क्रोध होइ तिह सों कहि तबै।
'पुरशोतम श्री नानक गुर हैं। तिनको सुजसु सह्यो नहि उर है ॥ १६ ॥
जिस रसना स्यों निंद बखानी। सो अबि बोलि सकै नहिं बानी।
इही दंड तुझको अबि अहे। अपर जि करै सकल दुख लहैं ॥ १७ ॥
इम श्री रामराइ जबि कह्यो। भयो गुंग बहु बोलनि चह्यो।
मुख रसना अर होठ हिलावै। वहिर शवद चहि, निकस न पावै ॥ १८ ॥
मूरख जिम बोल्यो बुरिआई। भयो दंड तिम बहु दुख पाई।
अनिक उपाव्रन ते नहिं बोला। जबि लगि जीव्यो, रह्यो अबोला ॥ १९ ॥
लोक सभा के सभि बिसमाए। तऊ एक नै बाक् अलाए।
उडगन अबि अकाश मैं नांही। कहां गए आवैं पुन काहीं ? २० ॥
सुनि तिस ते गुर नंद उचारे। 'सभि अकाश मैं अबि हैं तारे।
सूरज दिपत्यो तेज बिसाला। नहिं दीखति उडगन[3] इस काला ॥ २१ ॥
मारतंड[4] पशचम असतावै। तबि तारनि को तेज दिसावै।
सुनि कै पुन उलमाउ बखानी। श्री नानक इम उचरी बानी ॥ २२ ॥

**श्री मुखवाक**

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार।
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥ २ ॥

**चौपई**

सूरज ते गुरु तेज बिसाला। इन तुक महिं अस अरथ सुखाला।
तिस पर प्रशन मोहि इम पावहु। तुम गुर रुप जगत कहिलावहु ॥ २३ ॥

1. अंधेरा 2. उल्लू 3. तारे 4. सूर्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चहीअति है बड तेज तुमारो। होइ न बहु सूरज उजीआरो।
यांते तिस को तेज दबाइ। दिन महिं उडगन देहु दिखाइ ॥ २४ ॥
लखहि तबहि इह साचो बाचा। नांहि त हम जानहिं कहि काचा।
सुनि श्री रामराइ ने भाखा। इस सलोक मैं अरथ जु राखा ॥ २५ ॥
सो तुम नहिं जानति हो नीके। किम शुभ लखहु कुटिल इहु जीके।
इसी अरथ के नहि अधिकारी। यांते हम नहिं करति उचारी ॥ २६ ॥
तुम को तारे दें दिखराइ। श्री नानक जे करि जगराइ।
तीन लोक महिं मानहिं आन। देव दैंत पर सुजसु महान ॥ २७ ॥
तो सूरज को तेज दबाइ। उडगन दिपतहिं नभ दिखराइ'।
इम श्री रामराइ जबि कह्यो। ऊपर गगन दिशा तबि लह्यो ॥ २८ ॥
सूरज जोति मंद हुइ गई। उडगन सभिनि दिखाई दई।
कह्यो 'बिलोकहु अबि असमान। श्री नानक को तेज महान' ॥ २९ ॥
सुनति सभा महि बदन उठाए। दिन महिं उडगन गगन दिखाए।
हेरि हेरि अचरज उर होए। जानति भए तेज़ सभि कोए ॥ ३० ॥
सगरे पुरिमहिं रौरा पर्यो। 'दिन महिं तारनि ब्रिंद निहर्यो।
करामात गुरतात लगाई। सूरज की अबि जोति दबाई' ॥ ३१ ॥
पुन इकदिन महिं सभा मझार। आइओ श्री हरिराइ कुमार।
सादर बैठे सभिहिनि मांहू। खेलहिं चौपर चाह्यो शाहू ॥ ३२ ॥
महद खिलारी निकटि बुलाए। 'सभि तो जितहि जि दाव लगाए।
हम तुम खेलहिं सतिगुरनंद। दाव लगाइ, लगाइ बिलंद ॥ ३३ ॥
सनमुख गुर सुत अरु पतिशाहू। आनि बिछायो चौपर मांहू।
सोलहि नरद रु पासे तीन। लगे जवाहिर कंचन भीन ॥ ३४ ॥
अति सुंदर जो करे बनावनि। चौंपर चारहुं दिशा सुहावनि।
प्रथम गलाह* लगायहु शाहू। धरि दीनार हज़ार सु मांहू ॥ ३५ ॥
पासे लगे गेरिबे दोऊ। कहे गुरु सुत, परि है सोऊ।
नरद चहै मारी, तिस मारहि। जो चहि राखनि तिसहि उबारहि ॥ ३६ ॥
इम निज आठहुं नरद पकाई। घर अंतर बर सगल पुगाई।
काची नरद शाहु की पाछे। लई दिनार जीत करि आछे ॥ ३७ ॥
चप्यो शाहु पुन जुगम हज़ार। धरि कर पासे कहु धर डारि।
पुन गुर नंदन देति रुड़ाई। जुग आनहिधर लउ पहुंचाई ॥ ३८ ॥

*दांव

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शाहु फूटकरि नरद चलावै। पहुंचि दूर ते तिस कउ घावै।
डल गेरनि की विद्या जोति। शाहु रह्यो पचि के करि तेती ॥ ३९ ॥
सतिगुर सुत उचरति, सो आवै। चह्यो दाव नौरंग नहिं पावै।
द्वै सहंस्र भी जीत लई है। शाहु चपहि पुन हार भई है ॥ ४० ॥
त्रै हज़ार पुन धरि दीनार। लगे खेलिवे पासे डारि।
दाव तीसरो प्रथम समान। जीत लीनि करिकै तिस हानि ॥ ४१ ॥
खषट सहंस्र[1] जीत जवि लई। अधिक शाहु के मन चप भई।
वहुरो खषट हज़ार लगाई। जितौं बेर इक, जिती हराई ॥ ४२ ॥
सकल खिलारी करति सहाहि। नहिं किस को इक चलहि उपाइ।
चहैं सु दाव परे नहिं सोई। बैठे घने करे क्या कोई ॥ ४३ ॥
रही तबै भी नरद पिछारी। रचे उपाइ गयो पुन हारी।
रहे उपाइ करति वहुतेरा। नहीं दाव पासे शुभ गेरा ॥ ४४ ॥

**दोहरा**

दस अरु दोइ सहस्र को इम दीनार[2] हराइ।
पुन निवाज को समो लखि उठ्यो शाहु पछुताइ ॥ ४५ ॥
जीति मुहर निज संग लै आयहु सिवर मझार।
सकल सभा बिसमति रही, रही शाहु की हार ॥ ४६ ॥
कवि संतोख सिंह सभिनि ही लख्यो न इन सम आन।
अरै बिजै को नहिं लहै सभि ही रीति महान ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे **'रामराइ प्रसंग'** बरननं नाम खषटचत्तवारिंसती अंशु ॥ ४६ ॥

1. छ: हज़ार 2. मोहर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४७

# रामराइ प्रसंग

**दोहरा**

श्री सतिगुर नंदन तहां बसत्यो समो बिसाल ।
कर्यो बितावनि को जबै मरी परी इक काल ।। १ ।।

**चौपई**

भयो त्रास जबि दिल्ली पुरि मैं। रुदित अमुदति शोक घर घर मैं ।
हाहाकार म्रितू के त्रासा । मरहिं तुरत उपचार[1] न आसा ।। २ ।।
राउ रंक सभि के इक सार । पंडत मूढनि परी पुकार ।
घर घर रोदिति हैं नर नारी । केस उखारहिं मुरछा धारी ।। ३ ।।
दसत, बमन[2] दोऊ लगि जाइ । इक दुइ जाम बिखै म्रितु पाइ ।
करि उपचार बैद पच हारे । नहि बस चलहि सु कौन बिचारे ।। ४ ।।
शाहु सभा महिं नितप्रति बाती । करहिं सभा महिं, म्रितु हित भांती ।
आज पुरी महिं ऐते मरे । वहिर थान शमशाननि भरे ।। ५ ।।
दबहिं सँकरे सँकर जारहिं । आवति जाते रुदति पुकारहिं ।
कहूं बैद फिरते उतलावति । केतिक औखधि दौरति ल्यावति ।। ६ ।।
शाहु निकटि के केतिक मरे । जीवति महां त्रास कहु करे ।
एक बार क्या क्यामत आई । मरहिं हज़ारों नहिं बिलमाई ।। ७ ।।
औखधि दई लगहि नहिं काहूं । बमन दसत लागे दुख मांहू ।
ऊचे चढ्यो शाहु सुनि श्रौन । पीटति रोदति हित कित भौन ।। ८ ।।
तिस छिन चित महिं इम फुरि आई । सतिगुर सुत सों कहौं बुलाई ।
सो इह त्रास मिटावनि जोग । जिस ते बचहिं पुरी के लोग ।। ९ ।।
आइ सभा महिं बैठ्यो शाहु । गुर सुत बुलवाइहु पाहू ।
दीन रीति सों गिरा बखानी । 'परी पुरी महिं मरी महानी ।। १० ।।

---

1. इलाज 2. उल्टी



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस को यतन तुमारे याद। जे करि करहु होहि अहिलाद।
मानव मरे हज़ारहुं अबै। त्रास करति जे जीवति सबै ॥ ११ ॥
सभिहिनि पर तुमरो उपकार। जे अबि इहु संकट दिहु टारि।
जे औखधि को होइ, बतावहु। अपर उपाइ त सो समुझावहु ॥ १२ ॥
सुनि श्री रामराइ ने कह्यो। 'जे म्रितु को दुख सभि ने लह्यो।
तिस को अबि उपाइ कहि देहिं। हमरो चरन धोइ कर लेहिं ॥ १३ ॥
जिसके बमन दसत हुइ जावै। तिसके बदन बेर इक पावैं।
जियति रहै सो मरै न तबैं। इस बिधि संकट हति हुइं सबैं ॥ १४ ॥
सुनति शाहु ने मोद उपावा। सकल सभा महिं भखि सुनावा।
'डिंडम* फेरि देहु पुरि सारे। होइ जु दुखी सु चरन पखारे ॥ १५ ॥
तबहि सभा महिं इक दुइ कह्यो। 'हमरे सदन अबहि दुख लह्यों।
चरन पखारे ततछिन तांहू। पायो शीघ्र दुखी मुख मांहू ॥ १६ ॥
तुरत कषट को दूर बिदारा। आइ शाहि ढिग तिनहिं उचारा।
'चरनांम्रित जबि पावनि कर्यो। सकल कषट ततछिन परहर्यो' ॥ १७ ॥
तबि जे दुरग बिखै दुख भयो। ततकाल चरनांम्रित दयो।
संकट नस्यो भयो नहिं फेर। सुनि सुनि नर आए सच हेरि ॥ १८ ॥
सतिगुर सुत गमन्यो तबि डेरे। धाइ धाइ नर आइं घनेरे।
चरन पखारहिं ले ले जाहिं। दुखीअनि के पावति मुख मांहि ॥ १९ ॥
ततछिन संकट सकल नसावै। बहु श्री रामराइ जसु गावैं।
सनबंधी जे मरे नरन के। पछुतावहिं गुन सिमरि मरन के ॥ २० ॥
हिंदू तुरक रंक कै राऊ। भए प्रसंन बिलोकि प्रभाउ।
'हम ने नहिं चरनांम्रित दए। बचति मरन ते, दुख कहु हए।
सकल पुरी महिं मच्यो रौरा। दौरि दौरि आवति तिस ठौरा ॥ २१ ॥
हिंदू तुरक रंक कै राऊ। भए प्रसंन बिलोकि प्रभाऊ।
पंडित मूढ आइ करि पास। चरनांम्रित लें जीवन आस ॥ २२ ॥
सगली पुरी मरी जो परी। अति दुख करी सु ततछिन हरी।
सकल लोक चरनांम्रित लेति। सीसे पाइ सदन धरि देति ॥ २३ ॥
निज आदिक महिं जबि हुइ चाहू। शीघ्र देति दुखीअनि मुख मांहू।
इस प्रकार पुरि मरी हटाई। घर घर बिखै शांति वरताई ॥ २४ ॥

---

* ढिंढोरा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महद प्रभाउ सभिनि तबि जाना। सतिगुर घर महिं अधिक महाना।
जो इच्छक सोई सुख लहीअति। संकट अनिक प्रकारनि दहीअति ॥ २५ ॥

घर घर सुजसु होइ अविदात। मनहुं चंद्रिका सुंदर राति।
कीरति मनहुं मरालनि पांती[1]। कहहिं परसपर सीतल छाती ॥ २६ ॥

पुन केतिक दिन बीत गए हैं। रामराइ तिम जाति भए हैं।
समा बिखै शोभैं इस भांती। उडगन महिं पूरन ससि[2] राती ॥ २७ ॥

चढ्यो अखेर शाहु इक दिन मैं। गुरसुत लीनि साथ तिस छिन मैं।
अधिक समाज नरनि कउ नांही। चढे तुरंगनि मारग जांही ॥ २८ ॥

तिस तिस छिन निकस्यो हरन अगारी। दोनहुं देखनि चले पिछारी।
बडे बेग ते तुरंग धवाए। गए दूर मारग बिसराए ॥ २९ ॥

पाछे हटे न चहति अखेरा। हत्यो न गयो, भयो नहिं नेरा।
कितिक कोस पर पहुंचे जाइ। मिलि तहिं हत्यो मिरग कउ धाइ ॥ ३० ॥

भए इकाकी दोनहु तहां। संगी एक न पहुंच्यो जहां।
हटि गमने जबि पुरि की ओर। चढ्यो दिवस आतप[3] भी ज़ोर ॥ ३१ ॥

छतरी नहीं करति हित छाया। तुरत शाहु को मुख कुमलाया'।
नौकर नर नहिं निकटी कोऊ। आनि करहि आतप हति जोऊ ॥ ३२ ॥

घने घाम[4] ते बोल्यो शाहू। 'अबि नर निकटि न हम तुम पाहू।
आतप चंड परहित पताई। करहु आप इस केर उपाई ॥ ३३ ॥

हम तुम ऊपर हुई जिम छाया। सुख सों चलहिं नांहि त कुमलाया।'
सुनि श्री रामराइ ततकाला। कहति भयो 'इह घाम कराला ॥ ३४ ॥

इस ते हुइ हम तुम पर छाउं। मिलहिं बिलोकहिं महां प्रभाउ।
तबि छाया दोनहुं पर भई। तपत घाम की सभि मिट गई ॥ ३५ ॥

तुरंग अरुढे गमहि जहां को। छाउं दुहनि पर चलहि तहां को।
नहीं मेघ नहिं छतरी पास। तऊ छाउं होई सुख रास ॥ ३६ ॥

मिलहिं पंथ बिसमहिं अविलोकि। आवहिं साथ दूर दुरि लोक।
देखहु अति अचरज़ इह होवा। छतरी बिना घाम कहु खोवा ॥ ३७ ॥

पुरि महिं प्रविशे दोनहु भले। लोक हज़ारहुं हेरति मिले।
बंदन करहिं निवावहिं सीस। गुर सुत को अरु दिल्ली ईश ॥ ३८ ॥

---

1. हंसों की पंक्ति 2. चन्द्रमा 3. धूप 4. गर्मी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सहिज सुभाइक दुरग प्रवेशे। हेरि हेरि बिसमाहिं अशेषे।
अचरज हरख होइ करि शाहू। बैठ्यो जाइ जबहि घर मांहू ॥ ३९ ॥

छाइआ सो बिलाइ तबि गई। गुर सुत ऊपर तैस्यो भई।
जबि अपने डेरे महिं आयो। सुंदर सदन बिखै प्रविशायो ॥ ४० ॥

मिटी छाउं सभि लोकनि देखी। अति अचरज चित बिसम बिसेखी।
इस प्रकार अज़मत दिखराई। कवि संतोख सिंह कहति बनाई ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे '**रामराइ प्रसंग**' बरननं नाम सपतचतवारिंसती अंशु ॥ ४७ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४८

# रामराइ प्रसंग

**दोहरा**

नौरंग की बेगम हुती गरभवती नव मास।
समें प्रसूतनि के तबै अटक रही दुखरास॥ १॥

**चौपई**

जतन अनेक करति बहु स्याने। टोना टामन कौन बखाने।
आनि हज़ारहुं किय उपचारु। किसहूं ते नहिं कारज सारु॥ २॥

बेगम कषट पाइ अति रही। सुनि बहु बेर शाह सों कही।
अनिक सयाने पुनहि बुलाए। करि उपचार थके समुदाए॥ ३॥
धाइ अनेक नगर ते गई। तऊ प्रसूत न किस ते भई।
अनिक रीति के करति इलाज। पचि पचि हारे बैद समाज॥ ४॥

सभा बिखै जबि गुर सुत जाए। सादर बोलति शाहु बिठाए।
बेगम कै प्रसूत हुइ नांही। लखहु इलाज, करहु अबि तांही॥ ५॥
तुम सम पुरखनि पास हुवंति। ओखधि किधौं जंत कै मंत[1]।
कषट छुड़ावहु बेगम केरा। बहु कलाम ते सुख नहिं हेरा॥ ६॥
सकल सिआने रहि पच हारी। किस को सफल न को उपचारी।
सुनि सतिगुर के नंदन कहै। 'हमरे तौ इक जपुजी अहै॥ ७॥
सगले कषटन कहु निरवारति। भूत प्रेत आदिक सभि हारति।
इस आगे अटकति किछु नांही। अति बलि तीन लोक के मांही॥ ८॥
दुख काटति अरु इच्छा पूरहि। जगके बिघन अगिन कहु चूरहि।
अबि कलजुग के समें मझार। इस की सम नहिं अपर उदार॥ ९॥
यांते जल अबि तुरत मंगवाहु। हम पठि दै हैं, तहां पुचावहु।
ततछिन तिह प्रसूत हुइ जाइ[2]। सुख उपजै दुख सकल बिलाइ'॥ १०॥

1. यंत्र मंत्र 2. बच्चे का जन्म हो जायेगा



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनति शाहु ने नीर मंगावा। गुर सुत के तहिं निकटि रखावा।
जपुजी पाठ संपूरन कीनि। पुन जल अंतर कौ पठि दीन ॥ ११ ॥
बेगम के मुख मैं जबि पायो। तुरत प्रसूत भयो सुत[1] आयो।
भई शांति सभि अंतहिपुर मैं। बजी बधाई नौरंग घर मैं ॥ १२ ॥
राख्यो नाम बहादर शाहू। सभि प्रकार को कर्यो उछाहू।
जबि सतिगुर दसमे पतिशाहू। तिन सों मिल्यो रह्यो करि चाहू ॥ १३ ॥
जपुजी पठे जनम जिस होइ। यांते मिल्यो साथ गुर सोइ।
तारा आज़म पुत्र बिसाल। सो मार्यो सतिगुर सर नाल ॥ १४ ॥
पतिशाहिति अरु सकल समाजा। इसको बखश्यो गुरु महांराजा।
जपुजी ही कारन इस केर। शरन तकी सतिगुर की फेर ॥ १५ ॥
सुनी बात बेगम ने सारी। बहु धन पठिकै बिनै उचारी।
सतिगुर सुत को मानति रही। महिमा अधिक सभिनि ते लही ॥ १६ ॥
कितिक दिवस इम बहुर बिताए। इक दिन सभा बिखै चलि आए।
नौरंग शाहु हरख उर होवा। मल्लयनि की कुशती कहु जोवा ॥ १७ ॥
उज़बकि[2] किसू बलाइत केरा। खाइ बहुत अरु ओज घनेरा।
नहिं मति कछु करिबे बिवहारु। रहै सुपति बहु पाइ अहारु ॥ १८ ॥
जबि कुशती करनी किह साथ। निकटि हकारहि दिल्ली नाथ।
तिसको देखति बाक् बखाना। 'सुनहु गुरु सुत! इह बलवाना ॥ १९ ॥
नहिन बलाइत इस महिं ऐसो। करहि जुद्ध कुशती कहु जैसो।
इस के आगे अरहि न कोई। देखति ही त्रास उर होई ॥ २० ॥
जस नर तन दीरघ बलवाना। तुमने भी देख्यो किस थाना?
सुनि श्री रामराइ बच भाखा। 'हम ने इक चमार अस राखा ॥ २१ ॥
कुशती करति न त्यागै कांहू। तरै गिरावै बहु बल जांहू।
सुनि नौरंग नहिं मानहिं बाती। इसके सम किम हुइ बख्याती ॥ २२ ॥
देखति देहि पलावै सोइ। सनमुख भए सधीर न होइ।
इम नौरंग ने जबि ही कह्यो। गुर सुत ने निज नर दिशि चह्यो ॥ २३ ॥
कह्यो हकारनि ततछिन आवा। तिसै बिलोकि शाहु बिकसावा।
'उज़बक कहां सु कहां चमार। पौसहि अंग दाबि दे मारि ॥ २४ ॥
क्यों इसके तुम प्रान गवावहु। अधिक बली के संग भिरावहु।
मल्लय देश परदेशनि केरे। कितक दरे केतिक हति गेरे ॥ २५ ॥

1. पुत्र 2. उज़बेकिस्तानी पहलवान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इह सभि देशनि बिदति बिसाल। कौन अरहि नर इस के नाल'।
सुनि श्री रामराइ बच कहे। 'दोनहुं अबि हाज़र सति अहे॥ २६॥
देखि लेहु पतीआवनि करिहू। पूरब कहां भरोसा धरिहू।
सभिनि देखते कुशती करैं। को ऊपर को होवहि तरैं॥ २७॥
जे करि मिलि मुकाबले दोइ। कहिबो सुनिबो क्या तिन होइ।
उज़बक को निज हुकम करीजै। कुशती रचैं हेरि अबि लीजै॥ २८॥
आइसु जबहि शाहु ने दीनि। दुहिदिशि दंड बजावनि कीनि।
महां कुरुप ओज महिं भरे। मिले परसपर कुशती करे॥ २९॥
आपस महिं कहि कहि बहु दाव। भिरहिं दिखावहिं रचहिं उपाव।
अंगनि पर अंगनि को मारहिं। भरि भरि कौरी* पाइ पसारहिं॥ ३०॥
कुशती बहुतकाल दिखलाई। पुन उज़बक कउ दीनि गिराई।
तरे डारि पीसे तिस अंग। ब्याकुल कर्यो बहुत बल भंग॥ ३१॥
शाहु मल्ल कहु तरे गिरावा। सभिनि अचंभा करि दिखरावा।
कित चमार कित उज़बक एहु। दुगन तिगुन बल दीरघ देहु॥ ३२॥
कहे शाहि 'अजमत करि डारा। निज अस सेवक दिय बल भारा।
तउ उज़बक को कहां बसावै। नर प्राक्रमि इह तरै गिरावै॥ ३३॥
देश बिदेशनि के बलवान। भिरे आइ, करि दीने हानि।
इस कउ जीत न गमन्यों कोऊ। देखति त्रास उपावति सोऊ॥ ३४॥
तुम तुरंग को दास महाना। अजमत ते होयहु बलवाना'।
हेरि हेरि अचरज उर पावा। कौन करहि इस के संग दावा॥ ३५॥
अजमत महिं पूरन गुर घर है। को नहिं दिखीअति इन समसर है।
तबि श्री रामराइ चलि आए। शाह मल्ल सगरे पछुताए॥ ३६॥
'ओज दरब ते रंक चमार। तिस कुशती करि हम गे हार।
अपर लोक सभि करहिं धिकारी। क्या तुम को होयो इस बारी॥ ३७॥
करहिं सुजसु सगरे पुरि मांही। अनिक उपाइन कहु अरपाहीं।
शाहु पठै फल फूल बिसाला। मेवनि की डाली सभि काला॥ ३८॥

**दोहरा**

सादर बोलि पठावही सादर बाक् बिलास।
कवि संतोख सिंह देति धन करहि काज शुभ रास॥ ३९॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे **'रामराइ प्रसंग'** बरननं नाम अषटचतवारिंसती अंशु॥ ४८॥

*आलिंगन में लेना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ४८

# रामराइ प्रसंग

**दोहरा**

इक दिन वैठे सभा महिं नंदन श्री हरिराइ ।
अपर सभासद अनिक तहिं बोलहिं सहिज सभाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

हुतो अलावदीन बिच बैसा । बातनि को प्रसंग कुछ ऐसा ।
भनहि सभा महिं शाहु सुनावति । निज उत्तमता अधिक जनावति ॥ २ ॥

सहि न सक्यो गुर सुत ने कह्यो । 'निज म्रितु को दिन तैं भी लह्यो ?
चातुरता जुति कहति घनेरे । लखति न काल आइ भा नेरे ॥ ३ ॥

अंतर ते अंधे नहिं दीखहि । वहिर बनति बड पीर सरीखहिं' ।
सुनति शाहु ने गिरा बखानी । 'जे करि तुम ने इस म्रितु जानी ॥ ४ ॥

तौ बताइ दीजै सभि मांही । कबि फरेश्ते इस ले जाही ?
जान्यो जाइ सु बाक् तुमारा' । सुनि करि सतिगुर नंद उचारा ॥ ५ ॥

रही आरबल* अषट दिवस की । जाम जामनी रहि म्रितु इस की ।
शाहु समेत सभा ने सुन्यो । इनहु बाक् कबि कूर न भन्यो ॥ ६ ॥

निशचै म्रितु काल तिस पावैं । बय पूरन ते कौन बचावैं ।
शंकत हुइ अलावदीं आयो । अषट दिवस जबि तहां बितायो ॥ ७ ॥

जाम जामनी बाकी रही । बिती आरबल म्रितु तिह लही ।
मरे तांहि के सुधसुनि शाहू । निशचै धरै अधिक उर मांहू ॥ ८ ॥

सभि पुरि विखै ब्रितंत बिथार । गुरसुत पीरनि पीर उदार ।
जिस को बाक् निफल नहिं होइ । जो उचरै साचो हुइ सोइ ॥ ९ ॥

---

* उमर



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिंदु तुरक मानहिं सभि कोऊ। दरसहिं निकटि बैठकरि सोऊ'।
इक दिन सभा गयो गुरनंदन। देखति करहिं हज़ारहुं वंदन ।। १० ।।

सगल सभा गुर सुत को चीना। उठति शाहु कर सों कर लीना[1]।
सादर निकटि शाहु वैठाए। रीति अनेक प्रसंग चलाए ।। ११ ।।

कहि श्री रामराइ 'सुनि शाहू। हम को सिमर्यो सुपने माहू।
क्या लघु कारज अर्यो तुमारा ? जिस हित सिमरति चलति हकारा' ।। १२ ।।

सुनति शाहु मन मैं बिसमावा। आज निसा महिं सुपनो पावा।
इन को भी सिमर्यो तिस काल। सो इन जानयो सकल हवाल ।। १३ ।।

इन को करौं बूझनो तोऊ। कह्यो शाहु 'निस सुपनो जोऊ।
सगरो कहि कै मोहि सुनावउ। किम किम होयहु सरब जनावउ' ।। १४ ।।

तबि श्री रामराइ कहि सारा। 'जमना गमने सुपन मझारा।
तहिं किशती पर चढि करि तरे। हाथ बिखै बनसी[2] कहु धरे ।। १५ ।।
मारति मीननि बिचरति रहे। तहिं ते इक भी हाथ न लहे।
तबि सिमरन तुम कीनि हमारा। होति जि संग लेति झख[3] मारा ।। १६ ।।

इम सुपनो जामनि महिं आवा। सुनति शाहु सच लखि बिसमावा।
इतने छपी नहीं को बात। सम कर फल के सभि बख्यात ।। ५७ ।।

पुन इक दिन गुर सुतहि बुलाइ। रवितनुजा[4] जल देखनि जाइ।
गए तहां तट पर हुइ खरे। किशतो कौ मंगवावनि करे ।। १८ ।।

इक नौका थी निकटि पुरानी। शीघ्र चहति सोई तबि आनी।
तिस पर वैठे चढिकरि दोऊ। अपर साथ नहिं लीनसि कोऊ ।। १९ ।।

जल जमना को अतिशै बाढा। बहै प्रवाहि बेग जिस गाढा।
गिर के गिर करि काठ[5] बिसाला। बहे जाइं बहु बेग कराला ।। २० ।।

तरी[6] आपनी इनहुं धवाई। बडे काठ संग लागसि जाई।
गई फूट तहिं भए दुखंड। जहां बहिति है नीर प्रचंड ।। २१ ।।
कह्यो शाहु 'गुर सुत ! सुनि लेहु। किशती गई फूट करि एहु।
एक खंड पर मैं रहि गयो। दुतिय खंड पर तुम थित भयो ।। २२ ।।

अस न होहि जल महिं चलि जाइं। जोरहु किशती वाक् अलाइ।
अपर तरी नहिं नेरे कोऊ। जिस पर जाइ चढहिं हम दोऊ ।। २३ ।।

1. हाथों में हाथ लिया 2. मछली पकड़ने का औज़ार 3. मछली 4. यमुना
5. पहाड़ी लकड़ी 6. किशती

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और उपाइ न कोई बने। किशती जुरे, देहु बच भने'।
इम लचार जबि शाहु निहारा। गुर नंदन तबि बाक उचारा॥ २४॥
जुरी तरी ! जिम तरी अगारी। तिम हमरे हित होहु सुखारी।
मिलहिं दुखंड परसपर आइ। हम को ले चालहु तिस भाइ॥ २५॥
इम जबि बाक् कह्यो गुर तात। मिले दुखंड आइ तिस भांति।
पूरब के सम ह्वै करि चली। जहां प्रवाहु बहै बहु बली॥ २६॥
अजमत देखि शाहु सुख पावा। आज नीर ते प्रान बचावा।
अधिक प्रेम करि घर को आए। बार बार देखति पतीआए॥ २७॥
पुन इक दिन सतिगुर सुत आयो। शाहु सभा महिं बैठि सुहायो।
सिद्धनि के प्रसंग तबि चाले। चहैं जाहिं दुर, तन न दिखाले॥ २८॥
आप सभिनि को हेरति अहैं। सो बिचरहिं नहिं कोऊ लहै।
इत्तयादिक है शकति तिनहुं की। सेवा ते प्रापती जिनहुं की॥ २९॥
सुनि उलमाउ बात तबि कही। इह तौ शकति लुकांजन[1] मही।
जो इकबार बिलोचन पावै। बिचरति सभि महिं को न लखावै॥ ४०॥
केतिक इसकहु साधन करैं। प्रापति होति शकति इम धरैं'।
कह्यो शाहु 'गुर सुत ते आन। अपर खोजीअहि कहां महान॥ ३१॥
इह करुना करि देहहिं मोही। पाउं नेत्र दुरबे गति होही।
शाहु लालसा पिखि करि घनी। छपि जैबे की गति हुइ बनी॥ ३२॥
अपनि पास ते दीनसि तांही। लोकांजन शकती जिस मांही।
ले करि शाहु हरख बहु कियो। नेत्रहिं बिखै डारि तबि लियो॥ ३३॥
ततछिन तहां लोप हुइ गयो। अंतहिपुरि को गमनति भयो।
जहिं बेगम निज सहिज सुभाइ। भूखन धरे उतारि बनाइ॥ ३४॥
किसको तहिं ते हार उठायो। करुना भरन[2] किसू को ल्याओ।
किनहुं पंजेब धरी सो लई। सीस फूल लीनसि दुति भई॥ ३५॥
इत्तयादिक भूखन गन ल्याइव। रहनि थान अपने धरिवाइव।
पहिरनि को बेगम जबि चहा। पिखहिं विभूखनि, पावहिं कहां॥ ३६॥
अपने अपने सभिनि संभारे। नहिं करि आए खोजति सारे।
अंतहिपुरि महिं माच्यो रौरा। खोजनि लागि सभे बहु ठौरा॥ ३७॥

---

1. योगियों का विशेष अंजन जिसे आँखों में डाल कर दिखाई नहीं देते
2. कानों का एक भूषण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिन महिं आइ कवन ले गयो। तसकर कौन आवतो भयो।
घरे हुते हम देर न लगी। किधौं लीए दासी को भगी ॥ ३८ ॥
करी संभारि सभिनि बिधि घर की। प्रापति भई न गति तसकर की।
कई लाख के जेवर बने। को ले गयो बिभूखन घने ॥ ३९ ॥
तबै शाहि ढिग सुध पठवाई। अंतहिपुरि बहु रौर मचाई।
गयो आप बेगम सामीप। जाइ दिखाए सकल दिलीप ॥ ४० ॥
लोकांजन मैं पाइ सु आयो। अपने आप न काहु दिखायो।
ले गमन्यो आभरन तुमारे। निकटि फिरति मुझ नहीं निहारे ॥ ४१ ॥
श्री गुर नंदन दीनो जबै। पाइ बिलोचन परख्यो तबै'।
अज़मत दिखराई इस भांति। कहि संतोख सिंह बहु बख्यात् ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे '**श्री रामराइ प्रसंग**' बरननं नाम उनपंचासती अंशु ॥ ४९ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५०

# रामराइ प्रसंग

**दोहरा**

इक दिन उपबन गमन किय शाहु संग गुरनंद।
मनभावति फिर करि भले रिदे अनंद बिलंद ॥ १ ॥

**चौपई**

मारग गमने निकटे दोऊ। पीछे चले आइं सभि कोऊ।
अनिक भांति की बातनि ढले। सतिगुर सुत औ नौरंग मिले ॥ २ ॥

पंथ परी इक म्रितक धेनु[1]। दिल्ली पति देखति भयो नैन।
जिह समीप लघु बत्स[2] खर्यो है। नहिं कबहूं मुख त्रिननि चर्यो है ॥ ३ ॥

अविलोकति नौरंग हुइ खरो। गुर सुत को बच कहिबो करो।
'इस को देखि दया उर आवै। छोटो बत्स अधिक दुख पावै ॥ ४ ॥

हम हैं तुरक द्रव्यो चित हेरे। तुमरे हिंदू धरम बडेरे।
संकट बत्स पाइ बहुनेरा। मिलहि न छीर[3] मात जिस केरा ॥ ५ ॥

हमहिं रहिम जे इतनहु होयहु। तुमहिं अधिक हुइगो इम जोयहु।
इसते परे धरम क्या और। देहु जिवाइ, बरहि पुन पौर[4] ॥ ६ ॥

इह कहि शाहु ठाढ हुई रह्यो। सुनि श्री रामराइ उर लह्यो।
नौरंग हठी हर्यो थित होइ। विनां जिवाए चलहि न कोइ ॥ ७ ॥

तिह छिन जल अनवायहु पाहू। सत्तिनाम' कहि लिए कर मांहू।
छिरक्यो 'वाहिगुरु' मुख भाख्यो। 'जीवहि धेनु' मनोरथ राख्यो ॥ ८ ॥

शाह समाज समेत निहारति। उठी धेनु निज बतस पुकारति।
सभिहिनि मन महिं मानि अचंभा[5]। इन महिं अज़मत बड बिन दंभा ॥ ९ ॥

हरखे बिसमावति बिगसाए। सुन्यो सभिनि गो मरी जिवाए।
पसर्यो पुरी मझार ब्रितांत। मिलि मिलि जसु गावति अवदात ॥ १० ॥

---

1. गऊ 2. बछड़ा 3 दूध 4. दरवाज़ा 5. आश्चर्य



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुरदे को ज़िदा करि देनि। इह तो अलप बात कुछ है न।
जिस पित गुर अस अज़मत दीनि। शाहु समीप पठावनि कीनि ॥ ११ ॥
तिन की अधिक महां वडिआई। कौन सकहि कहि जथा सुहाई।
धंन धंन सतिगुरु सुजान। जिन कहु सुत अति अज़मतवान' ॥ १२ ॥
इम दिल्ली पुर महिं जसु होवा। आगे करहिं सुन्यो जिस जोवा।
देश बिदेशनि महिं ब्रितांत। जहिं कहिं भयो अधिक बख्यात ॥ १३ ॥
पुन निज डेरनि को चलि आए। प्रविश्यो दुरग शाहि हरखाए।
पुन इक दिन महिं सभा प्रवेशे। श्री गुर नंदन सुजसु विशेषे ॥ १४ ॥
तिस निस तसबी[1] नौरंग केरी। अंतहिपुरि महिं खोइ, न हेरी।
लई चुराइ नहीं कित पाई। लाखहुं धन को खरच बनाई ॥ १५ ॥
अनिक जवाहिर जिस महिं लागे। ज़ाहर जगमग जोति सु जागे।
जिह समान कित पय्यति नांही। शाहु जतन ते राखहि पाही ॥ १६ ॥
जबि सतिगुर नंदन ढिग गए। सादर बोलि बिठावति भए।
लग्यो बतावनि 'तसबी गई। अंतहिपुर गमन्यो निस भई ॥ १७ ॥
हुती हाथ महिं जबि मैं गयो। खान पान निंद्रा बसि भयो।
अंतर ही किन लीनि चुराई। जाग्यो बहुरि हाथ नहिं आई ॥ १८ ॥
बेगम आदिक दासी ब्रिंद। कहि सभि सों डर दीनि बिलंद।
नहिं किन मानी, दई न फेर। लाखहुं धन जिह लग्यो बडेर ॥ १९ ॥
तिह समान पय्यति नहिं आन। बडे जतन ते आइसि पान।
आदि नजूमी जेतिक स्थाने। सभि पच रहे. न किस ढिग माने ॥ २० ॥
आप बतावहुगे जबि तांही। तबि प्रापति ह्वै हम कर मांही।
नांहि त गई न पावहि कोई। जिह सम अपर न क्योंहूं होई ॥ २१ ॥
बनहि न तैसी बहु धन लागे। जरे जवाहर ज़ाहर जागे'।
सुनि श्री रामराइ तबि कही। 'अंतहिपुर[2] महिं तसबी रही ॥ २२ ॥
अमकी बेगम ने कर लीनी। धरी चुराइ न किनहूं चीनी।
तिस के घर अंतर घर जोइ। दक्खण दिशि की भीती जोइ ॥ २३ ॥
तहां ताक इक गुपत निहारहु। तिस महिं राखी जाइ संभारहु'।
सकल पते सुनि नौरंग गयो। घर महिं घर सु प्रवेशहि कियो ॥ २४ ॥
खरे होइ सो ताक खुलायो। अंतर ते संपुट[3] निकसायो।
तिस महिं ते तसबी निकसी है। जोत जवाहरि की बिगसी है ॥ २५ ॥

1. माला 2. रनवास 3. डिब्बा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हरख्यो शाहु सभा लै आयो। कर महिं धरि सभि को दिखरायो।
'गुर नंदन जो नहीं बतावै। तौ तसबी इह हाथ न आवै॥ २६॥
ऐसे गुपत सथल महिं धरी। नहिं क्यों हूं जहिं हरनि करी।
इम गुर सुत को करहि सराहनि। जिस ते हुइं दुरजन उर दाहन॥ २७॥
पुन इक दिन महिं सभा लगाई। सभि उमराव मिले समुदाई।
तबि अंग्रेज पुरी महिंआवा। मिलनि शाहि सों भाखि पठावा॥ २८॥
वसतु अजाइब ले करि सोइ। आयो सभा बीच अविलोइ।
दे करि नौरंग को तबि मिल्यो। मोती एक मनहुं किन ढल्यो॥ २९॥
बर्तलाकार[1] एक सम सारो। कर पर धर्यो दिपै उजीआरो।
जे मुकता के गुन समुदाया। सो तिस बिखे महां दिपताया॥ ३०॥
अपर वसतु बहु मोली दै के। मिल्यो शाहु बहु लियो रिझै कै।
जो कारज तिस को करि दीना। पुन अंग्रेज़ पयानो कीना॥ ३१॥
तिस पशचात सु मुकता लै कै। बेगम निकटि गयो हित कै कै।
अधिक सनेह जांहि संग लागा। तिसहि दिखायहु धरि करि आगा॥ ३२॥
भूखन बिखै पहिर इह, प्यारी। जिस ते होइ ज़िबाइश[2] भारी।
दूर देश ते आन्यो एही। अधिक प्यार सभि बेगम तेही॥ ३३॥
देखति ही मुकता हरखाई। अधिक आब सम एक गुलाई।
सुनहु शाहु जी! है इहु नीको। तऊ मनोरथ पुरहु न जी को॥ ३४॥
इक मुकता ते होइ न कामा। नथ महिं क्यों लागहि अभिरामा।
यांते इस जोटी को ग्रोर। करहु खुजावनि है जिस ठौर॥ ३५॥
पुन इह सजहि परहि नथ मांही। सुनति शाहु कहि दूसर नांही।
सागर टापू ते इह आयो। आन सथान नहीं अस पायो॥ ३६॥
चितवति चिस महिं कित ते पाऊं? बिकति होइ, दे दरब[3] मंगाऊं।
बेगम संग कहति भयो शाहू। खुजवावहुं प्रापती थलजाहू॥ ३७॥
तबि अगले दिन सभा लगाई। भए सभासद मिलि समुदाई।
पुन श्री रामराइ चलि ग्रायो। सादर शाहु कह्यो बैठायो॥ ३८॥
देखति ही मन महिं फुरि आई। इन ते मुकता लेहुं मंगाई।
गुर सुत सों तबि स्वाल बखाना। तिस मुकता को धरि निज पाना॥ ३९॥
अस इक अपर मिलै इस साथ। देहि ज़िबाइश परिकै नाथ।
खोजे कितहूं हाथ न आवै। जाच्यो दरब देउं जे पावै॥ ४०॥

1. गोल 2. शोभा, सजावट 3. धन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यांते तुम मुकता इक ल्यावहु। सदन आप के होइ मंगावहु।
तुमरो बड़ो गुरु जो भयो। श्री हरिगोबिंद नाम जु थयो ॥ ४१ ॥

मुहि दादा कहु दीनसि माला। अदभुत् मणके सुने बिसाला।
इक सौ चार हुते गिनती मैं। खोजि बके नहिं कितहुं लही मैं ॥ ४२ ॥

होइ आप के घर मुकता को। इह सम दिहु मंगाइ कहि तांको।
सुनि श्री रामराइ कहि 'दै हैं। प्राति कचहिरी मैं लै अै हैं' ॥ ४३ ॥

अस कहि आगल दिन ले गयो। तिह के सद्रिश मिलावति भयो।
रंग रुप आक्रित महिं जैसे। दूसर दयो शाहु को तैसे ॥ ४४ ॥

नौरंग हरख कर्यो ले गयो। बेगम को पहिरावति भयो।
कवि संतोख सिंह उसतति कीनि। अज़मत को मुकता रचि दीनि ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे '**रामराइ प्रसंग**' बरननं नाम पंचासती अंशु ॥ ५० ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५१

# रामराइ प्रसंग

**दोहरा**

पुन इकदिन आए सभा नंदन श्री हरिराइ।
सनमानति नौरंग ते बैठे मोद उपाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

कहति शाहि 'हम खायो आज। दिहु बताइ सो सभा समाज।
कितिक भांति को आमिख[1] खायो। अपर वसतु क्या मुख महिं पायो ॥ २ ॥

तुम कहु बडी बात नहिं कोई। देहु बताइ त्रिकाल जु होई।
तऊ आज को अच्यो जु खाना। आप सुनावहु सभि के काना ॥ ३ ॥

सुनि श्री रामराइ बच शाहू। करे बतावनि जो किछ खाहू।
'पंच तरहि को आमिख खायो। तीन रीति ओदन[2] मिलवायो ॥ ४ ॥

चारबिधिनि के फल शुभ खाए। इत्तयादिक सभि अपर बताए।
जिती वेर मुख पीयहु पानी। भोजन करति कही जिम बानी ॥ ५ ॥

जे समीप पाचक[3] सु बताए। दास निकटि के से गिनवाए।
बासन[4] धरे अगारी जेते। भिंन भिंन भाखे तबि तेते ॥ ६ ॥
अच्यो जु थोड़ा, सो कहि दीनि। अपर सुनाए ग्रास जि कीनि।
इस प्रकार जबि दियो बताई। सुनि सुनि शाहु सभा बिसमाई ॥ ७ ॥

मनहुं निकटि बैठे इन गने। ज्यों की त्यों सगरी बिधि भने।
महिद शकति कुछ लखी न जाइ। नौरंग सुनि सुनि हरख उपाइ ॥ ८ ॥

पुन फल खैबे की बहु बात। सभा बिखै पर ब्रित्यो ब्रितांत।
को किस फलहि सराहति भयो। किसहूं अपर स्वाद कहि दियो ॥ ९ ॥

1. मांस 2 चावल 3. रसोइया 4. बरतन



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खषट रुतनि के जे फल अहैं। भिंन भिंन स्वाद रु गुन कहैं।
तबि मुसकावति शाहि बखाना। 'सुनहुं गुरु सुत! अज़मतवाना ॥ १० ॥

तुम समान मैं अपर न जाना। चहहु करहु तुम महिद महाना।
इक अभिलाखा मुझ मन मांहू। सो अबि कहों आपके पाहू ॥ ११ ॥

खषट रुतनि के मेवे जेई। फल अरु फूल सकल अबि तेई।
एक बार ही अबि दिखरावहु। मन भावति मुझ देहु खुवावहु ॥ १२ ॥

सुनि श्री रामराइ बच भाखा। हम करि देहिं पूर अभिलाखा।
फल रसाल[1] आदिक मंगवाए। शाहु अगारी भे समुदाए ॥ १३ ॥

निज कर ते गुर सुत धरि देति। होति प्रमोद शाहि सभि लेति।
जामन, खिरणी, रुचिर खजूर। आड़ू, अमरूद फल रुर ॥ १४ ॥

कटल[2], बढल[3] अर सेउ, अनार। खरबूजे, खारक[4], सहकार।
संगतरे, निंबू, नौरंगी। कदली फल, अंगूर सुरंगी ॥ १५ ॥

खोपा, ज़रदालू, नाशपाती। दाख, बदाम, सरस बह जाती।
बदरी फल, तरबूज, बटंक[5]। सरदे मंगवाए इक अंक ॥ १६ ॥

तुरश फालसे, कंदबिदारी। ज़िमीकंद फलहर तिस बारी।
अपर कहां लगि कहिं फल जाती। धरे शाहु आगे बख्याती ॥ १७ ॥

फल समूह बिदताए ज्यों ज्यों। अचरज होति सभिनि मति त्यों त्यों।
ब्रिंद फलनि को शाहु अगारी। दिखति, न लखी जाइ, मति हारी ॥ १८ ॥

बैठे कित ते एह मंगाए। होति बलाइत मैं, से आए।
खषट रुतनि के उपजनवारे। इक दिन भे सभि सभा निहारे ॥ १९ ॥

अधिक प्रसंन शाहु हुइ रह्यो। गुरसुत को जसु बहु मुख कह्यो।
अधिक स्वाद जबि लेकरि खाए। बहुत सराह स्वाद समुदाए ॥ २० ॥

बहु उपबन फल अचे जु आगे। तिनको नहीं स्वाद अस लागे।
अधिक मधुरता अरु तुरशाई[6]। अचहि अजाइब कह्यो न जाई ॥ २१ ॥

कतहुं न शाहि इते फल खाए। रुचि सों अचहि अधिक मधुराए।
सभा बिखै सभिहिनि को दीने। अचहिं स्वाद कुछ परहि न चीने ॥ २२ ॥

---

1. आम 2. कटहल 3. ढ़ेऊ 4. छुहारे 5. एक प्रकार की नाख
6. खटाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हुइ अचरज तबि शाह उचारा। 'कहां लग्यो अस बाग उदारा ?
जिस महिं ते अस फल मंगवाए। खट रुत के इक दिन महिं खाए ॥ २३ ॥
अस उपवन[1] दिखरावहु मोही। तुरश मधुरफल स्वादल होही।
तिसकी पौध लहैं समुदाई। अने बागनि देहुं लगाई ॥ २४ ॥
अधिक दूर हुइ मनुज पठावहुं। हमरे हित लघु बूट मंगावहु।
अदभुत स्वाद लगहि फल जोइ। नित खैवे हित हम को होइं ॥ २५ ॥
सुनि श्री रामराइ ने भाखा। 'जे अस बाग पिखनि अभिलाखा।
सो हम तुम को देहिं दिखाई। तहिं की पौध न किनहूं पाई ॥ २६ ॥
इक सतिगुर के घर ही रहै। अपरनि को अधिकार न अहै।
जस अचरज फल पिखे रु खाए। तस अचरज को बाग लगाए ॥ २७ ॥
सावधान हुइ देखहु नैन। इम कहि कर गुर नंदन बैन।
कुछ अकाश लगि द्रिषटि लगाई। प्रथम सभिनि अगनी द्रिषटाई ॥ २८ ॥
शाहु समेत सभा के देखहिं। हुइ तूशन बिमाइ बिसेखहिं।
अरधकोस लौ ज्वलती आग। तिसके ऊपर सुंदर बाग ॥ २९ ॥
बिगसे रंग रंग के फूल। हरे हरे दल मोटे मूल।
पाके फल के गुच्छे घने। पीत रकत दीखति रस सने ॥ ३० ॥
एकसार तस पंकति ठाढ़ी। ज्वलति अगनि नीचे जिस गाढी।
दल संघने मंजरी जुति सोहे। आंब मौरे जुति पिखि मन मोहे ॥ ३१ ॥
सरब जाति के तरुवरु[2] खरे। नाम कौन ले गिनती करे।
देखति शाहु मोद उपजावति। दिनप्रति अचरज अधिक दिखावति ॥ ३२ ॥
लग्यो आग पर बाग बिसाला। नहिं कुमलाहिं खरे तरु डाला।
फल दल फूल अनेक सुहाए। बिदत सभिनि कहु भले दिखाए ॥ ३३ ॥
कौन कौन गिनीअहिं गुन इन के। अदभुत चलित जानीअहि जिन के।
इस प्रकार जस कहहिं घनेरे। 'सभि पीरन के पीर वडेरे ॥ ३४ ॥
केतिक घरी दिखायहु बाग। बडी प्रकाश रही तर आग।
पुनहि दीखिबे ते रहि गयो। कहहिं परसपर अचरज नयो ॥ ३५ ॥
पुरि सगरे महिं पौरनि पौर। घर घर महिं सभि ठौरहिं ठौर।
गुर नंदन अजमत की बात। मिलि मिलि कहहिं महद बख्यात ॥ ३६ ॥

1. बाग 2 वृक्ष

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खषट रुतनि के जे फल अहैं। भिंन भिंन स्वाद रु गुन कहैं।
तबि मुसकावति शाहि बखाना। 'सुनहुं गुरु सुत! अज़मतवाना ॥ १० ॥

तुम समान मैं अपर न जाना। चहहु करहु तुम महिद महाना।
इक अभिलाखा मुझ मन मांहू। सो अबि कहों आपके पाहू ॥ ११ ॥
खषट रुतनि के मेवे जेई। फल अरु फूल सकल अबि तेई।
एक बार ही अबि दिखरावहु। मन भावति मुझ देहु खुवावहु ॥ १२ ॥
सुनि श्री रामराइ बच भाखा। हम करि देहिं पूर अभिलाखा।
फल रसाल[1] आदिक मंगवाए। शाहु अगारी भे समुदाए ॥ १३ ॥
निज कर ते गुर सुत धरि देति। होति प्रमोद शाहि सभि लेति।
जामन, खिरणी, रुचिर खजूर। आड़ू, अमरूद फल रुर ॥ १४ ॥

कटल[2], बढल[3] अर सेउ, अनार। खरबूजे, खारक[4], सहकार।
संगतरे, निंबू, नौरंगी। कदली फल, अंगूर सुरंगी ॥ १५ ॥

खोपा, ज़रदालू, नाशपाती। दाख, बदाम, सरस बहु जाती।
बदरी फल, तरबूज, बटंक[5]। सरदे मंगवाए इक अंक ॥ १६ ॥

तुरश फालसे, कंदबिदारी। ज़िमीकंद फलहर तिस बारी।
अपर कहां लगि कहिं फल जाती। धरे शाहु आगे बख्याती ॥ १७ ॥

फल समूह बिदताए ज्यों ज्यों। अचरज होति सभिनि मति त्यों त्यों।
ब्रिंद फलनि को शाहु अगारी। दिखति, न लखी जाइ, मति हारी ॥ १८ ॥
बैठे कित ते एह मंगाए। होति बलाइत मैं, से आए।
खषट रुतनि के उपजनवारे। इक दिन भे सभि सभा निहारे ॥ १९ ॥
अधिक प्रसंन शाहु हुइ रह्यो। गुरसुत को जसु बहु मुख कह्यो।
अधिक स्वाद जबि लेकरि खाए। बहुत सराह स्वाद समुदाए ॥ २० ॥
बहु उपबन फल अचे जु आगे। तिनको नहीं स्वाद अस लागे।
अधिक मधुरता अरु तुरशाई[6]। अचहि अजाइब कह्यो न जाई ॥ २१ ॥
कतहुं न शाहि इते फल खाए। रुचि सों अचहि अधिक मधुराए।
सभा बिखै सभिहिनि को दीने। अचहिं स्वाद कुछ परहि न चीने ॥ २२ ॥

1. आम 2. कटहल 3. ढ़ेऊ 4. छुहारे 5. एक प्रकार की नाख
6. खटाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हुइ अचरज तबि शाह उचारा। 'कहां लग्यो अस बाग उदारा ?
जिस महिं ते अस फल मंगवाए। खट रुत के इक दिन महिं खाए ॥ २३ ॥
अस उपबन[1] दिखरावहु मोही। तुरश मधुरफल स्वादल होही।
तिसकी पौध लहैं समुदाई। अने बागनि देहुं लगाई ॥ २४ ॥
अधिक दूर हुइ मनुज पठावहुं। हमरे हित लघु बूट मंगावहु।
अदभुत स्वाद लगहि फल जोइ। नित खैबे हित हम को होइं ॥ २५ ॥
सुनि श्री रामराइ ने भाखा। 'जे अस बाग पिखनि अभिलाखा।
सो हम तुम को देहिं दिखाई। तहिं की पौध न किनहूं पाई ॥ २६ ॥
इक सतिगुर के घर ही रहै। अपरनि को अधिकार न अहै।
जस अचरज फल पिखे रु खाए। तस अचरज को बाग लगाए ॥ २७ ॥
सावधान हुइ देखहु नैन। इम कहि कर गुर नंदन बैन।
कुछ अकाश लगि द्रिषटि लगाई। प्रथम सभिनि अगनी द्रिषटाई ॥ २८ ॥
शाहु समेत सभा के देखहिं। हुइ तूशन बिमाइ बिसेखहिं।
अरधकोस लौ ज्वलती आग। तिसके ऊपर सुंदर बाग ॥ २९ ॥
बिगसे रंग रंग के फूल। हरे हरे दल मोटे मूल।
पाके फल के गुच्छे घने। पीत रकत दीखति रस सने ॥ ३० ॥
एकसार तस पंकति ठाढ़ी। ज्वलति अगनि नीचे जिस गाढी।
दल संघने मंजरी जुति सोहे। आंब मौरे जुति पिखि मन मोहे ॥ ३१ ॥
सरब जाति के तरुवरु[2] खरे। नाम कौन ले गिनती करे।
देखति शाहु मोद उपजावति। दिनप्रति अचरज अधिक दिखावति ॥ ३२ ॥
लग्यो आग पर बाग बिसाला। नहिं कुमलाहिं खरे तरु डाला।
फल दल फूल अनेक सुहाए। बिदत सभिनि कहु भले दिखाए ॥ ३३ ॥
कौन कौन गिनीअहिं गुन इन के। अदभुत चलित जानीअहि जिन के।
इस प्रकार जस कहहिं घनेरे। 'सभि पीरन के पीर बडेरे ॥ ३४ ॥
केतिक घरी दिखायहु बाग। बडी प्रकाश रही तर आग।
पुनहि दीखिबे ते रहि गयो। कहहिं परसपर अचरज नयो ॥ ३५ ॥
पुरि सगरे महिं पौरनि पौर। घर घर महिं सभि ठौरहिं ठौर।
गुर नंदन अजमत की बात। मिलि मिलि कहहिं महद बख्यात ॥ ३६ ॥

1. बाग 2 वृक्ष

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कौन सकै करि अनबन एती। नितप्रति करति दिखावति जेती।
सभि ही शरधा अधिक बधावैं। अरपहिं भेट आनि दरशावैं॥ ३७॥
चरनांम्रित की पाहुल लेति। जथाशकति धन को नर देति।
रहहि भीर* नित दरस करन की। पूर भावना करहिं नरनि की॥ ३८॥

**दोहरा**

बीत गए केतिक दिवस दिल्ली पुरी मझार।
कवि संतोख सिंह रहि तहां अज़मत देति उदार॥ ३९॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे **'रामराइ प्रसंग'** बरननं नाम एक पंचासती अंशु॥ ५१॥

* भीड़

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५२

# रामराइ प्रसंग

**दोहरा**

सभा बिखै इक दिवस मैं बैठे सतिगुर नंद ।
जेठ मास लूवां[1] चलहिं दसदिशि तपत बिलंद ।। १ ।।

**चौपई**

बसत्र बिभूखन सदन उतंग । शीशमहिल अरु चित्रति रंग ।
इत्यादिक सगरे तपताए । नहिं सीतलता कतहूं पाए ।। २ ।।
प्रिथी अकाश सगल तपतायो । मनहुं तेज अगनी दिपतायो ।
सभा बिखै नौरंग ने कह्यो । आज तपत अतिशै जनु दह्यो ।। ३ ।।
गुर नंदन ! निज बाक बखानहु । मिटहि तपत, शीतलता ठानहु ।
सभा बिखै सीतल बहि पौन । जिसते सुखदाइक हुइ भौन ।। ४ ।।
सभिहिनि के चित ब्याकुल अहे । महां घाम[2] जनु तन को दहे ।
सीतल मंद समीर[3] चलावहु । सभि को सुख दिहु तपत मिटावहु ।। ५ ।।
सुनि श्री रामराइ बच कहे । हुइ सीतल जैसे चित चहे ।
त्रैबिधि की समीर अबि आवै । रुति बसंत सभि को बिदतावैं ।। ६ ।।
जिस को हुइ सतरश तन आइ । अधिक मोद चित को उपजाइ ।
ग्रीखम झार मिटेअबि ऐसे । सूरज उदे तिमर[4] गन जैसे ।। ७ ।।
इम कहित्यों सुख दाइक पौन । चाली त्रै बिधि की तिस भौन ।
महद सुगंधति अनंद उपावति । मंद मंद, सीतल चलि आवति ।। ८ ।।
कबहुं न आगे सुनी न हेरी । होति स्परश सुखद तिस बेरी ।
हरख भरे उर सरब बिसाल । बिसमति चित अस बायू चाल ।। ९ ।।
तिस दिन संध्या लगि सो बही । सीत, सुगंधि, मंद गति लही ।
हुइ हरखति उर समां बितायहु । अधिक अनंद शाहु उपजायहु ।। १० ।।
पुन इक बासुर सभा सु आए । लगनि समाधि ब्रितंत चलाए ।
दसमे द्वार पौन थिर होइ । सुध शरीर की लखहि न कोइ ।। ११ ।।

---

1. लू । 2. गर्मी । 3. शीतल पवन । 4. अंधेरा ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इत्यादिक उलमाउ बखाने। अस समाधि जोगी करि जाने।
अषट अंग जिस साधन करे। तबि दस द्वारे बायू थिरे ॥ १२ ॥
अधिक जोग रस प्रापति होई। आरबला चिरजीवी सोइ।
गोरख कठन पंथ उपराजा। सिख्य करे तिन बड बड राजा ॥ १३ ॥
मारग जोग तिनहुं सिखरावा। चिरंजीव करि देहि रखावा।
अपरन महिं इह बात न पईअति। गोरख पंथ बिखैं सिख लईअति ॥ १४ ॥
सुनति शाहु ने तबहिं बखाना। सुनहुं गुरु सुत! तुम भी जाना।
लावति हहु समाधि कै नांही? अउर महिद गुन गन तुम मांही ॥ १५ ॥
सुनि श्री रामराइ ने कह्यो। हमरे श्री नानक जिम चह्यो।
सो बिधि करते रहे बिसाला। करनि समाधि सु पंथ सुखाला ॥ १६ ॥
सतिगुर घर मैं सभि किछु पईअति। भगति ज्ञान महिमा अधिकईअति।
इह तो मुख, गौन हैं आन। चहिंहिं करहिं दिढ, लहिं ब्रह्म ज्ञान ॥ १७ ॥
गुर घर महिं इह जोग समाधि। चहैं सु करैं बिसाल जु साध।
तऊ मुख्यता नहिं इस केरी। ब्रह्म ज्ञान लगि ब्रित बडेरी ॥ १८ ॥
सुनि उलमाउनि पुनहि बखाने। 'इह तो बात नहीं इम मानें।
प्रथम पौन साधे ते बिना। करहि समाधि लेहि रस घना ॥ १९ ॥
महां कठन इह नहीं सुखाले। जिम बिन साधन सिद्ध महां ले।
नौरंग कह्यो सुनहु गुरनंद। कहिं इह सच, है कठन बिलंद ॥ २० ॥
जे तुम पौन लेति हो साध?। लाइ दिखावहु मोहि समाधि।
पुन सभि मानहिं साच उबाची। बिन देखे जानहिं कहिं काची' ॥ २१ ॥
सुनि श्री रामराइ बच भाखा। 'जे करि तुमरे इह अभिलाखा।
एक सथान देहु जहि बैसें। बरजहु तहिं न जाइ को कैसे ॥ २२ ॥
जावद रहैं समाध लगाई। नर बैठहिं दर पर चुकसाई'।
क्यों हूं शबद न तिस थल जाइ। रहैं इकंत पौन ठहिराइ ॥ २३ ॥
सुनति शाहि ने सुंदर भौन। कह्यो न इस थल गमनहि कौन।
तहां जाइकरि कीनसि आसन। नेत्र मूंदिकै पिखि पौनासन ॥ २४ ॥
दसमै द्वार पौन ठहिराई। लगी समाधि अंक न उकसाई।
सभि उलमाउनि जाइ सु परख्यो। नौरंग हेरि अचल को हरख्यो ॥ २५ ॥
पंच दिवस इक आसन रहे। लगी समाधि जोग रस लहे।
द्वैषी देखि देखि दुख दाहैं। भा मित्रनि के अनंद उछाहे ॥ २६ ॥
खषटम बासुर बिकसे नैन। निकसे त्यागयो शाह जु ऐन।
निज डेरे महिं आनि बिराजे। मंदमती द्वैषीगन लाजे ॥ २७ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुन इक दिन चढि नौरंग चल्यो। अमु अरूढि ह्वै गुर सुत मिल्यो।
अधिक समाज संग नहिं लीनहु। दोन्हुं वहिर पयानहु कीनहु ॥ २८ ॥
चढ तुरंगनि वहिर पलावैं। करहिं तेज अरु तुंग कुदावहिं।
बातनि के रस ढले महाने। बिन जाने ही दूर पयाने ॥ २९ ॥
जमना तीर तीर चलि गए। रुचिर स्थान बिलोकति भए।
बहुर शाह ने तुरा[1] पलायो। वेग समीर समान धवायो ॥ ३० ॥
बली बिसाल कर्‌यो बल घोरे। रोक कर्‌यो बहु, मुर्‌यो न मोरे।
शाहु बिवस ह्वै चढ्यो सु जावति। करि उपाइ ऐंचति उतलावति ॥ ३१ ॥
इतने महिं जमना जल आवा। रुक्यो न कैसिहुं, समुख पलावा।
त्रसति[2] होइ रोकति बहु शाहू। गयो ओज करि सलिता[3] मांहू ॥ ३२ ॥
प्रविश्यो असु, को बस न बसायो। रुक्यो जाइ जल महिं, न पलायो।
सकल समाज भीज करि गयो। शसत्र बसत्र कछु बचति न भयो ॥ ३३ ॥
बहुत मोल को ज़ीन बिगारा। इक चिर जल निमगन करि सारा।
बहुबल ते बाहर निकसायो। तब्रि श्रीरामराइ ढिग आयो ॥ ३४ ॥
चक्रित चित भै करि बच भाख्यो। आज खुदाइ हाथ दै राख्यो।
नांहि ते जाति जि बड जल मांही। तहां उबार होति किम नांही ॥ ३५ ॥
बडे ओज ते रुकि असु रह्यो। होति प्रवेश त्रास बहु लह्यो।
सभि किछु जल के बिखै भिगोवा। आगे मैं न त्रास अस जोवा ॥ ३६ ॥
त्रास नहीं मुझ अपर सथल ते। शंकति चित भा प्रविशति जल ते।
तुम अबि क्रिपा करहु निज ऐसे। भै नहिं करवि नीर ते जैसे ॥ ३७ ॥
अस असु को दीजहि करि जतन। अति गुन सहित होहि जिम रतन।
जो जल पर तरि जहि सुवारे। नहिं भीजहि ऊपर असवारे ॥ ३८ ॥
शुषक समाज राखिकै बाज। चलहि नदी पर दिहु असु साज।
तुमहिं न दुरलभ इह कछु जाना। हुइ प्रापति मुझ. कहहु बखाना ॥ ३९ ॥
ऐसी कुछ न लखउं जग मांही। कहे आप के होइ जि नांहीं।
अस निशचै मेरे मन महाँ। पतिआवनि कीनसि जहिं कहां ॥ ४० ॥
सुनि श्री रामराइ हरखाइ। कह्यो 'जि शरधा इम उपजाइ।
तौ तुरंग पावहु दरिआई। तरहि नदी जल छ्वै न सकाई ॥ ४१ ॥
बरन पुरी को बली बिसाला। अस तुरंग निकसहु ततकाला।
सलिता जल ते आवहु बाहर। शाहु चड़ावहु हुइ करि ज़ाहर' ॥ ४२ ॥

1. घोड़ा। 2. भयभीत। 3 नदी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इम जबि रामराइ ने कह्यो। जल ते असु निकस्यो सभि लह्यो।
बिसद बरन सुंदर, बल भर्यो। नख शिख ते जनु संचै ढर्यो॥ ४३॥
मणि मय ज़ीन प्रकाश करंता। अति चंचल जनु नाच करंता।
देखति शाहि प्रमोद न थोरा। आगे कबि न पिख्यो अस घोरा॥ ४४॥
गहि करि बाग चढ्यो ततकाला। सतिगुर नंद सराहि बिसाला।
'जल महिं ते निकसाइ तुरंग। मुझ को दियो एक बच संग॥ ४५॥
आइ सभा महिं सतुति बखानी। सुनि सुनि सकल मानि हैरानी।
'अति अचरन की बात करंता। अजमत सभि ते अधिक धरंता'॥ ४६॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे 'रामराइ' प्रसंग बरनंन नाम दोइपंचासती अंशु॥ ५२॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५३

# श्री रामराइ प्रसंग

**दोहरा**

कीनि शरईअनि मंत्र मिलि इक हिंदू सभि मांहि ।
ऊचो बैठहि गरब करि इह लाइक कछु नांहि ॥ १ ॥

**चौपई**

गन उलमाउ मुलाने काजी । दुखहिं देखि करि मूढ सदा जी ।
होइ न आवति है किम समता । तिस अज़मत को सभि जग नमता ॥ २ ॥
तिस को लेश न मूढ मतन मैं । एक शर्हा गहि गाढे मन मैं कहैं ।
परसपर शाहु सुनावहु । तुम क्यों शर्हा वहिर पग पावहु ॥ ३ ॥
सरब तुरक कर जोरहिं खरे । साथ अदाब सभा महिं बरे ।
को बैठति हुइ नीचे थान । नांहि त खरे रहैं डर मांनि ॥ ४ ॥
इक हिंदू आवति हंकारति । तिसको सभि ते ऊच बिठारति ।
कहै न कलमा दीन न मानहिं । अपने मत को महिद बखानहि ॥ ५ ॥
यांते तुमने शर्हा बिगारी । इम चलि भाखहु शाहु अगारी ।
करि मसलत नौरंग ढिग आए । पूरब अपर प्रसंग चलाए ॥ ६ ॥
पुन निज मत को मता बखाना । सुनहु शाहु जी ! बड़ बुधिवाना ।
शर्हा वहिर जे हिंदुनि मत है । तिस कहु नित सनमानति अति है ॥ ७ ॥
जिनको बोलिनि मिलिनि स दोषा । तिस पर सादर रखहु भरोसा ।
तुरक लोक गन खेत बिसाला । सिंचनहार आप सभि काला ॥ ८ ॥
शर्हा बार चहुंदिशि महिं यांके । करता पुषट सदा तुम तांके ।
जे न लेहु सुध देहु बिगारी । अपर ख्याल लगि रिदे बिसारी ॥ ९ ॥
तबि न थिरहि, इह तुरत बिनाशी । होहि कुतो पुन जगत प्रकाशी ।
मुसलमान की सभा मझारी । प्रविशहि आनि हिंदू हंकारी ॥ १० ॥
तुम सभि ते तिह ऊच बिठावउ । नितप्रति प्रेम बिसाल बधावउ ।
इह अजोग हुइ रिदे बिचारहु । शर्हा बार को नहिंन बिगारहु ॥ ११ ॥
करति तुरक तकरार तहकीकी । किसहुं न मन कहु लागहि नीकी ।
सुनति शाहु ने तिनहिं सुनायो । 'अज़मत ओज अजब अज़मायो ॥ १२ ॥



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिम हम बिखम बखानहिं तांहि। करि दिखाइ तनक न बिलमाहि।
अपनी करामात के ओज। बैठहि सभि ते ऊचो रोज़॥ १३॥
नहिं किसहूं ते हटै हटायो। जिसको जसु सभिहिनि पर छायो।
करि करि बंदन होवहिं सिख्य। सो गति भाखति भूत भविख्य'॥ १४॥
शाहु साथ पुन तुरक बखानैं। 'हम सम तुरक न तिन कहु मानहिं।
अज़मत रोज़ हज़ारहुं करैं। तनक न निशचा क्यों हूं धरैं॥ १५॥
हम तो शर्हा बीच रहिं ठाढे। अपने मत कहु राखैं गाढे।
तुम जे अज़मत ओज बतावहु। आज न चौंकी बीच डसावहु॥ १६॥
सभि मैं बैठि जाइगो सोइ। नांहि त आगै ठांढो होइ।
इम करि अपनो दोष मिटावहु। गन तुरकिन महिं भले कहावहु॥ १७॥
इत्यादिक बहु कहि समुझायहु। निशचा रिदे शाहि मिटवायहु।
तिस दिन सभा लगी जबि आइ। तहां न चौंकी दई बिछाइ॥ १८॥
अपनो समो जानि करि मन मैं। गुरु नंदन आयो तिस छिन मैं।
देखि सभा कउ सभिनि खुटाई। कहि कहिं शाहु लीनि भरमाई॥ १९॥
गन तुरकनि कहु दोष बिचारा। बहु मूरख मतिमंद गवारा।
देखी सुजनी[1] जहां डसाई। तहिं ते ऊची भूमि उठाई॥ २०॥
चौंकी के सम उरध उठाइ। सभि ते ऊचे हुइ अधिकाइ।
सम हमेश के भयो उतंग। बैठि गयो सभि महिं दुति संगि॥ २१॥
बिगस्यो शाहु रूमाल बदन दे। निशचै बिखै अधिक ही मन दे।
क्या अबि कहैं न बस सु बसावैं। कौन कूमूढ हुइ तेरे बिगावैं॥ २२॥
चौंकी सम ऊची करि धरनी। बैठ्यो अज़मत की करि करनी।
सभि ते ऊचो बैठि सुहावति। महह शकति जुति सभा दबावति॥ २३॥
किम ज़मीन ऊची ह्वै गई। सकल सभा पिखि त्रिसमै भई।
सभि ते ऊचो आइ बिराजै। देखि देखि दुपटनि गन लाजै॥ २४॥
सनमानति नौरंग कहि बात। करहि कुटिलता नहिं बख्यात।
सभा उठी पुन डेरनि आए। मिलि मिलि कहे रहे बिसमाए॥ २५॥
अगले दिन पुन गए मुलाने। 'पिख्यो ओज तिन[2] ? शाहु बखाने।
'अज़मति महिं बिसाल तभि रीति। कहहु कौन किम लेवहि जीती ?॥ २६॥
गुपत रिदनि को अंतरजामी। करहि बिखम ते बिखम जु कामी'।
सुनति शरीयनि पुनहि बखानी। 'इक बिधि सों अज़मत हुइ हानी॥ २७॥

---

1. एक वस्त्र, जिस पर कढाई की गई होती है और नीचे बिछाया जाता है।
2. उसका बल देखा ?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लिख्यो ग्रंथ साहिब है जोई। तिन सभिहिनि कहु गुर है सोई।
चौंकी ऊपर सुजनी तरे। कतरहु पतरे तहिं दिहु धरे ॥ २८ ॥
करहि अवज्ञा गुर की जबिहूं। करामात हति होइसु तबिहूं।
तिसके ऊपर बैठहि आइ। पीछे हास रचहु मन भाइ ॥ २९ ॥
शाहु सिखायो सो बिधि कीनि। पुरि महिं ते मंगवाइ सु लीनि।
जितन ग्रंथ साहिब की कतरी। प्रिथक प्रिथक सँची किय पतरी ॥ ३० ॥
केतिक लैं कैं करि चतुराई। संची सुजनी तरे दबाई।
इक समान चौंकी पर रक्खी। जो कैसे करि जाइ न लक्खी ॥ ३१ ॥
इस बिधि करि पुन सभा लगाई। मिलि उमराउ भए समुदाई।
तबि सतिगुर नंदन चलि आयो। उतरि पालकी ते प्रविशायो ॥ ३२ ॥
जाइ सभा मैं ठाढो रह्यो। लखी खुटाई मूढनि, कह्यो।
खोटो काज आज बड कर्यो। सुजनी तरे नाम सति धर्यो ॥ ३३ ॥
करता हरता सभि जग केरो। सत्तिनाम तिह बडो बडेरो।
सो हमरे गुरु बरनन कर्यो। गुरु ग्रंथ साहिब मैं धर्यो ॥ ३४ ॥
सो हमरे सतिगुरु समान। राखहिं निसदिन महिं बहु मान।
तिसु के पतरे छेदनि करे। हमरी सुजनी के तर धरे ॥ ३५ ॥
महां अयोग कर्यो तुम काजू। अबि लौ ठानहु परखनि काजू।
इम कहि पतरे हाथ उठाए। नमसकार करि पास रखाए ॥ ३६ ॥
बिसम रहे मूरख मन मानी। बिनां भने किम लीनसि जानी।
हमरे दाव तरे नहिं आवति। जो हम करहिं सु पूरब पावति ॥ ३७ ॥
बचन बिलास सभा महिं भए। करहिं प्रशन जिम उत्तर दए।
उर अचरज को धारि बिसाला। उठे सभासद सभि तिस काला ॥ ३८ ॥
अपने अपने डेरे गए। मिलि मिलि अपरनि सों कहि दए।
कवि संतोख सिंह कीरति सेत। पुरि महिं पसरी सरब निकेत ॥ ३९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे '**श्री रामराइ** प्रसंग बरननं नाम तीन पंचासती अंशु ॥ ५३ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५४

# रामराइ प्रसंग

**दोहरा**

शाहु सिखावनि पुन कीयो 'अस नर अज़मत साथ।
होहि तुरक कैसे जबहि बधहि दीत की गाथ ॥ १ ॥

**चौपई**

जिस मत महि ऐसो नर होइ। रहि अनुसार हेरि सभि कोइ।
तिस मत को मानहिं मन मानव। ग्रहन करहिं शरधा उर ठानव ॥ २ ॥
सरब प्रकार ब्रिधावन करैं। तुम को इतो जतन नहिं परैं।
इही एक जग तुरक बनावैं। दे शरधा अज़मत दिखरावैं ॥ ३ ॥
अचरज करहि बिलोकहि जबिहूं। सभि उठि पाइन परि हैं तबिहूं।
जिस बिधिकी सिख्या सिखरावहि। नीके धारहिं, निशचा ल्यावहिं ॥ ४ ॥
बल छल ते इस तुरक बनावहु। रावर मन बांछति को पावहु।
बधहि दीन हुइ शर्हा मझारी। कलमा पठहि हरख करि भारी' ॥ ५ ॥
सुनति शाहु मन ते ललचावा। तुरक बनहि, को रचहिं उपावा।
सभि सुखेन तबि हुइ मन भाई। इस पीछे बनि हैं समुदाई ॥ ६ ॥
आज निसा महि सभा लगाइ। रोकहि दुरग बिखैं नहिं जाइ।
अपनो खाना पुनहि खवावहिं। ज्यों क्यों करि इस धरम गिरावहिं ॥ ७ ॥
दरवाननि संग शाहु उचारे। 'गुर सुत अंतर रखि, दिहु तारे[1]।
निकसनि कउ जबि तुम ढिग आवहि। नहिं खोलहु, तबि अटक रहावहि ॥ ८ ॥
तुम कहि देहु न तारी[2] इहां। पहुंची शाहु सुथित है जहां।
इम कहि, तूशनि हुइ करि रहो। निकसनि थान पांइ नहिं लहो ॥ ९ ॥
सादर कहहु, न बोलहु फेर। हटक रहहिगो तारो हेरि।
इम सलाह नौरंग नै करी। मूढ मुलान कहे मत हरी ॥ १० ॥
सभा जामनी बिखैं लगाई। आनि भए मानव समुदाई।
तबि श्री रामराइ चलि आए। जिस प्रताप तुरकनि परछाए ॥ ११ ॥

---

1. ताले लगा दो । 2. चाबी ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उतरि पालकी ते तहिं गयो। शाह सभा महिं हेरति भयो।
सनमानति कहि शाहु बिठावा। सभिनि बिखै ऊचो दुति पावा ॥ १२ ॥
अनिक प्रकारनि केरि प्रसंग। बोलति सुनति सरब हित संग।
रहनि सभा को समय जितेक। बिगसति दियो बिताइ तितेक ॥ १३ ॥
सने सने पुन उठि करि चाले। जे उमराव समाज बिसाले।
रामराइ संग बातनि छिर्यो। समां बितावनि अधिकै कर्यो ॥ १४ ॥
दोनहुं रहि गए बोलति जबै। सरब पौर तारे दिय तबै।
लघु दीरघ को रोकनि करे। दिढ सांकर कपाट बड खरे ॥ १५ ॥
सभिनि पिछेरे घटी बिताई। उठ्यो शाहु मन मोद उठाई।
अंतहपुरि को कीयिसि पयाना। पहुंचे अपर आपने थाना ॥ १६ ॥
गुरसुत सिवका पर असवार। गमनयो निज डेरे हुइ त्यार।
जबहि पौर आयो क्या हेरा। कर्यो असंजति तारो भेरा ॥ १७ ॥
दरवाननि सों गुर सुत भाखा। हम कहु क्यों तुम अंतर राखा ?
सांकुर मोचहु गमनहिं डेरे। बहुर लेहु इसही बिधि भेरे' ॥ १८ ॥
ऊचो चढ्यो कहै दरवान। 'अबि नहिं तारी है इस थान।
जबि सभि पौरनि तारे भेरे। सभि तारी अंतर इस बेरे ॥ १९ ॥
अपर उपाइ नहीं अबि जाने। अंतर ही रहीऐ किस थाने।
बहुत पौर किम खुलहिं सु नांही। तारि गई बिखम थम जांही ॥ २० ॥
इम दरवाननि गिरा अलाई। गुरसुत जानी सगल खुटाई।
अति मतिमंद न समझहिं कैसे। सभि निकसे रोक्यो मुझ ऐसे ॥ २१ ॥
कर्यो बचन छूटहिं सभि तारे। निकसहिं सांकर, खुलहिं किवारे।
हम सुखेन जिम डेरनि जाहिं। सकलपौर इस रीति खुलाहिं ॥ २२ ॥
इम कहि निज दासनि कहु प्रेरे। चलहु पालकी करहु अगेरे।
जबि गमने दर निकटी भयो। छुटि सांकर तारो खुल्हि गयो ॥ २३ ॥
चली निकसि सिवका[1] जबि पौर। सभि बिसमाइ रहे तिस ठोर।
शाहु समीप जाइ सुध दई। अचरज गति कुछ लखी न गई ॥ २४ ॥
आपहि छुटि सांकर खुल्हि तारे। गुरसुत गमन्यो वहिर सुखारे।
जिम तुम कहहु करहिं तिम जाइ'। सुनति शाहु हरख्यो बिसमाइ ॥ २५ ॥
थित सुध हित अंतहिपुर बाहर[2]। अज़मति अति जुति इह जग ज़ाहिर।
कहां रुकहि गति बड बलवाना। दरवाननिसों पुनहिं बखाना ॥ २६ ॥

1. पालकी। 2. बादशाह खबर लेने के लिए बाहर खड़ा था।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कछू न बोलहु जाने देहु। पौर अराइ तिसी बिधि लेहु।
गुर सुत आइ सैन कहु कीना। तुरक उपाइ निफल करि दीना ॥ २७ ॥
भई पाति उलमाउ हकारे। निस बृतांत तिन पास उचारे।
रह्यो न रुक्यो गयो निज डेरे। सांकर तारे खुल्हे घनेरे ॥ २८ ॥
तबि उलमाउनि शाहु सुनायो। 'हम कउ अचरज बड उर आयो।
सुन्यो किसू ते कैंफ[1] रु मास। निन खावति है करति बिलास ॥ २९ ॥
नहिं मानउ तउ इक दिन चलउ। तहिं अहार देखहु निर मिलउ'।
सुनिकै शाहु कह्यो 'हम जैहैं। जु कछु खाइ औचक[2] पिखि लै हैं ॥ ३० ॥
इक जसूस तहि राखहु लाइ। सध अहार की जो कहि आइ।
सुनति शरीअनि तैसे कीनसि। सुध लैबे हित नर पठि दीनसि ॥ ३१ ॥
भोजन करनि लगयो जिस छिन मैं। आइ जसूस कही स सभिनि मैं।
उलमाउनि सुध शाहु सुनाई। 'चलहु आप अबि देखहु जाई ॥ ३२ ॥
अजमतवंत कहावति जोड। करनि कुकरमनि दग करि मोड।
सभिहिनि मैं दरवेश कहावै। करहि बंदगी सभिनि जनावै' ॥ ३३ ॥
कहति सुनति इम आपस मांहि। पहुंचे गर सत डेरे जांहि।
बोतल धरी देखिकै शाह। कह्यो 'कहां है इसके मांह ? ॥ ३४ ॥
तुमरे दरवेशनि को बेष। इह दूर करि क्या करहु हमेश।
हम ने आज सुनी तुम रीति। देखी आइ करहु बिप्रीत ॥ ३५ ॥
रहिनी संतन की शुभ कहां। तप भखयति जिम बिशई महां।
करामात किम तुप को होई ?। चलित आप को शुभ नहिं कोई ॥ ३६ ॥
तबि श्री रामराइ तिन कह्यो। 'क्या बोतल मैं तुमने लह्यो ?।
खोलि बदन जबि पाइ कटोरे। निकस्यो दूध हेरि भए हौरे ॥ ३७ ॥
आमिख की कोई तरकारी। बिंतारक[3] की फांक सधारी।
तूशनि भए न कुछ बस चाला। हेरि हेरि हैरान बिसाला ॥ ३८ ॥
कुछ ते कुछ करि कै दिखरावति। कोइ न सरवर इह संग आवति।
बहुर शाहु हसिबे की बात। करति रह्यो केतिक बख्यात ॥ ३९ ॥
होइ परसपर महद प्रसंन। कहति भयो 'तुम मतिगुर धंन।
जिन की समता करहि न कोई'। करि संतोख सिंह 'दीरघ[4] सोई' ॥ ४० ॥

### दोहरा

बिसमावति सभि नरनि युति शाह दुरग महिं आइ।
क्यों हूं होति न तरे इहु-पच हारे समुदाइ ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे **'रामराइ'** प्रसंग बरननं नाम चतुर-पंचासती अंशु ॥ ५४ ॥

---

1. शराब। 2. अचानक। 3. बैंगन। 4. महान।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५५

# श्री रामराइ प्रसंग

**दोहरा**

सतिगुर पुत्र प्रसंन अति अजमति परम दिखाइ ।
सभि कूरे बहु बार किय हारे मूढ उपाइ ॥ १ ॥

**चौपई**

अधिक रह्यो सभिहिनि पर बली । शाहु समेत सभिनि मति छली ।
'किम इह हारहि तुरक बनावहिं । मूढ मुलाने शाहु सिखावहिं ॥ २ ॥
नहिं बस चल्यो उपाइ निफलते । पच पच हारे सतिगुर बलते !
तीन लोक महिं अस नहि कोई । जीत सकै गुर घर कहु जोई ॥ ३ ॥
तुरक बापुरे गिनती क्या हैं । अर कं'र मूरख समता चाहैं ।
आज्ञा सभि ब्रहमंड के मांही । नित अनुसारि, बिपरजै[1] नांही ॥ ४ ॥
जिम सतिगुर के उर कहु भावैं । तिस प्रकार निज चलित दिखावैं ।
चौदहि लोक बिखै चहिं जैसे । उचितानुचित रचति तबि तैसे ॥ ५ ॥
जे करिबो नहिं चहित गुसाईं । सिर हरिबो लगि मौन रहाईं ।
श्री सतिगुर पूरन भगवान । शुभ सरवज्ञ उतंग महान ॥ ६ ॥
निज सुत की रसना पर बासे । जिम बोलहि तिम करति प्रकाशे ।
बिलम न लगहि बनहि ततकालहि । तीन लोक पर आयसु[2] चालहि ॥ ७ ॥
पुन श्री रामराइ मन जाना । सभा लगी चाह्यो प्रसथाना ।
असवारी सिवका मंगवाई । नहिं कहार ढिग, गए किथांई ॥ ८ ॥
कुछक बिलम तिन आवति लागहि । कहति दास मैं ल्यावहुं भागहिं ।
गुर नंदन मन मैं इह ठाना । बिन कहार मैं करिव पयाना ॥ ९ ॥
देखि देखि दुख दुषटनि दहै । अपर जि नर सु अचंभै रहैं ।
महिमा महां होइ बिसतारा । बनहिं सिख सुनि आइं हजारां ॥ १० ॥
हुइ संगति जहिं कहिं बहु मेरी । कहैं कीरति सभिनि बडेरी ।
रिदे मनोरथ करते ऐसे । बीच पालकी के चढि बैसे ॥ ११ ॥

---

1. उलट । 2. आज्ञा ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुख ते कह्यो कहार बिहीनी। चलहि पालकी रीति नवीनी।
तिस छिन शिवका उठि करि चाली। दिपत जवाहर लगे बिसाली ।। १२ ।।
चमतकार निज अज़मत संग। चहुंदिशि कीनसि अदभुत रंग।
आगैं नर ढलैत[1] कुछ चाले। अपर सिख सेवक गन नाले ।। १३ ।।
'धंन धंन श्री सतिगुरु धंन'। बोलहिं चहुंदिशि भए प्रसंन।
चली बीथका कुछक अगारी। सिवका बिनां कहार निहारी ।। १४ ।।
अद्भुत भए मनुज गन मिले। हेरि हेरि करि पीछे चले।
कारन बहुतनि को दिखरावनि। मंद मंद ही करहिं चलावनि ।। १५ ।।
उत्तम पोशिश अंगनि धरे। बैठ्यो बीच सु आसन करे।
नेत्र बिसाल कमल दल मनो। बहु बिसत्रिति सु छबि के सनो ।। १६ ।।
दीरघ दरशन बदन सुहावति। भर्‍यो अनंद मनहुं मुसकावति।
श्यामल वेश सु बेस अशेश। जनु राकापति[2] तिमर प्रवेश ।। १७ ।।
सकल देह दीरघ दुतिवंति। आयुत छाती भुजा सुभंति।
गौर रंग तपनीय[3] समान। रुचिर बिभूखन पहिरे नाना ।। १८ ।।
ब्रिंद मसंद मेवड़े दास। संग सिख शुभ संगति रास।
चामर चारु दुरति चहुंदिशि मैं। उडति मराल संभावनि जिस मैं ।। १९ ।।
शोभति सूरज मुखी अगारी। चमकति चारु तरनि अनुहारी।
दिपति बीजना लगे जवाहर। करति अनिक शोभा कहु ज़ाहर ।। २० ।।
बोलति जाति नक़ीब अगारी। चहुंदिशि नर गन ह्वै परवारी।
शरधा जुति जोरति जुग हाथ। दिखरावहिं निज निम्री माथ ।। २१ ।।
पंथ पालकी चलति निहारैं। हारैं मति बहु रिदै विचारैं।
चारैं दिशि चितवति पधारैं। धारैं अचरज, बचन उचारैं ।। २२ ।।
सनै सनै गमनति मग बीच। भए हज़ारहुं ऊच अरु नीच।
बिसमावहिं सुनि धावति आवहिं। मिलि मिलि देखहिं सीस झुकावहिं ।। २३ ।।
हीरे सुंदर मुकता लरी। लरी बिसालनि दिपतहिं ज़री।
जरीदोज़ ते शोभा खरी। खरी होति चित चाहे तुरी ।। २४ ।।
घर घर महिं सुध सुनि सुनि दौरे। मिलि मिलि हेरि हेरि तिस ठौरे।
करि करि बंदन चलि चलि साथ। हरख हरख उर कहि कहि गाथ ।। २५ ।।
पुरी बीथका[4] बींच बजार। पर्‍यो रौर सुनि धाइ हज़ार।
चलहि पालकी बिना नरन ते। बिसमति सकल अचरज करन ते ।। २६ ।।

---

1. शूरवीर। 2. चद्रमा। 3. सोना। 4. गली।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भई भीर सघनी चहूं ओर। खरो होनि नहि पय्यति ठौर।
धनी रंक आवति समुदाए। पंडित मूरख सभि दरसाए॥ २७॥

हिंदू तुरक समूह उमाहति। एक बार हेरनि चित चाहति।
कोठनि बीच झरोखनि बाला। अविलोकति उतलावति जाला॥ २८॥

आगे ते बड भीर हटावैं। तरु न ढलैत उतंग अलावैं।
'बंदन करि करि गमनहु घर को। दरशन करि लीनहु सुत गुर को॥ २९॥

तजहु पंथ इत उत को होवहु। शरधा धरहु नम्रि रेइ जोवहु।
इम सुनि 'धंन धंन गुर' कहैं। सुठ सूरति लखि तज्यो न चहैं॥ ३०॥

मुकता जुगत जि गुफे जरी। बीच पालकी लरकति लरी।
निज कर महिं गहि सतिगुर नंदन। देखहि इत उत करतिहु बंदन॥ ३१॥

सने सने गमनति इम गए। दुरग पौर लौ पहुंचति भए।
लोक हज़ारनि की संग भीर। किनहूं कह्यो शाहु के तीर॥ ३२॥

'गुर सुत आवति सभि विसमावति। बिन कहार सिवका गमनावति।
नगर संग जिस को दरसावति। अबि सुनि सुनि धावती उतलावति॥ ३३॥

कह्यो शाहु हरखति हुइ चीत। 'मम ढिग लगि आवै तिसि रीति।
पिखहि कचहिरी अज़मत भारी। नर बिहीन सिवका असवादी॥ ३४॥

पौर दुरग[1] के जबहि प्रवेशा। भीर नरनि की संग विशेषा।
सावधान भे उठि दरवान। बरजन कीनसि तरजि महान॥ ३५॥

दुरग द्वार पर भीर हटाई। शाहु निकटि सिवका गमनाई।
ऊची ऊची चलि नर हीनी। शाहु सभा जुति सभि ने चीनी॥ ३६॥

देखि देखि बिसमावति सारे। इस की अज़मत तोट न पारे
जबि सभिहिनि अविलोक लई है। अननी पुनहि टिकाइ दई है॥ ३७॥

तजि सिवका को सभा प्रवेशा। चौकी ऊच सभिनि ते बैसा।
बूझ्यो शाहु 'आज इह थांए। नर हीनी सिवका चढि आए'॥ ३८॥

सुनि श्री रामराइ ने कह्यो। 'समो कचहिरी को हम लह्यो।
निकटि कहार नहीं तबि पाए। हम अरूढि करि इम चलि आए॥ ३९॥

मुख ते कह्यो कहार जि नांही। सिवका आप चलै मग तांही।
बाक हमारे ते गमनाई। हेरि हेरि भे नर समुदाई॥ ४०॥

---

1. किले का दरवाजा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इत्यादिक जे बाक बिलास। बैठे करति शाहु के पास।
सभा उठनि को समा जि होवा। शाहु समाज समेत[1] खरोवा ॥ ४१ ॥
अपने अपने गए सथान। बिसमति करते बाक बखानि।
सतिगुर सुत आयो निज डेरे। बंदति जे नर मग महिं हेरे ॥ ४२ ॥
तिस छिन जिस न बिलोक्यो तैसे। पछुतावति जिम कहूं ठगे से।
कवि संतोख सिंह इसी प्रकार। करामात दिखराइ अपार ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे 'श्री रामराइ' प्रसंग बरननं नाम पंचपंचासती अंशु ॥ ५५ ॥

1. सभा के साथ ही।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५६

# श्री रामराइ प्रसंग

दोहरा

पुनि इक दिन गमने सभा, नंदन श्री हरिराइ।
बैठे ऊचे जाइ करि जिस प्रताप रह्यो छाइ ।। १ ।।

चौपई

सरब रीति ते सरब हटाए। दोखी दुषट बिसाल दबाए।
करि न सकहि कैसिउ बुरिआई। बार बर अजमति पतिआई ।। २ ।।
सूरज सम प्रताप को करिकै। तुरक तेज तारन तुल हरिकै।
अचल सुजसु अपनो बिसतारा। सभि के ऊपर भयो अपारा ।। ३ ।।
शाहु कर्यो अपने अनुसारी। दोखी दुखहिं देखि दुति[1] भारी।
भरी कचहिरी बैठ्यो शाहू। तबि सुगात आई चलि पाहू ।। ४ ।।
किसी देश ते पठई काहूं। वसतु अमोलक देखहि ताहूं।
कचन के कंकन शुभ बने। जिस पर लगे जवाहर घने ।। ५ ।।
हीरे जटति दमक बड उठे। पहिरनि शाहु हेतु किन पठे।
सभा बिलोकति रहे लुभाए। पिखहि नुरंगा हाथ उठाए ।। ६ ।।
तबि श्री रामराइ बच कहे। कंकन अजब आज इहु लहे।
हम कहु देहु पहिर हैं हाथ। ले करि तुम ते दिल्ली नाथ ! ।। ७ ।।
नहीं अपर थल ऐसे होइ। नतु करवाइ लेति इम दोइ।
यांते भए पसद हमारे। पहिरहिं हाथनि शुभति उदारें ।। ८ ।।
सुनि नौरंग मन बिखै बिचारे। इह तो राखनि उचित हमारे।
इन पर गुर सुत कीनि सवाल। कैसे देउं इनहुं कहु टालि ।। ९ ।।
अंतरजामी जानहि मन की। नहि मानहि इह टाल बचन की।
मोल बिसाल जवाहर लागे। अदभुत जोति सभिनि की जागे ।। १० ।।
नहि जबि देउं बिरस हुइ जाइ। इन बहु दीनी वसतु मंगाइ।
क्रिपन[2] लखहि मोकहु मन छोटो। जिसते दुतिय न कारज खोटो ।। ११ ।।

---

1. शोभा। 2. कंजूस।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इम बिचारि करि रिदै बडेरा। देति भयो कंकन तिस बेरा।
गुरनंदन निज हाथनि पाए। इत उत डोलति दुति दमकाए॥ १२ ॥
देखति दुषट दहे दुखिआरे। हितू हेरि करि भए सुखारे।
उठी सभा पुन डेरनि गए। मिलति परसपर भाखति भए॥ १३ ॥
केतिक दिन सो कंकन पहिरति। शाह समीप आइ रहि नितप्रति।
अधिक समाज बध्यो बहु रीती। सिख्य अनेक होति चित प्रीती॥ १४ ॥
ब्रिंद तुरंग सैन संग होई। शसत्र बसत्र महिं शोभति जोई।
नर अनेक आगू पिछवाए। सनमानति सभि सुजसु अलाए॥ १५ ॥
जहिं तहिं संगति भई घनेरी। अरपहिं आनि उपाइन फेरी।
आदि अमावस परब बडेरे। दरशन करनि आइं बहुतेरे। १६ ॥
दीपक माल.[1] दुसहिरा, होरी। दरसहिं संगति करि कर जोरी।
बहु अरदास मेवड़े[2] करिहीं। संगति अग्र मसंद सु थिरिहीं॥ १७ ॥
नितप्रति बड समाज बिरधावै। लोक अनेक दरब अरपावैं।
केतिक समों बितावन करे। एक दिवस गमनति पुरि चरे॥ १८ ॥
संग ढलैत नकीब बुलंता। बहु नर भीर पाछ गमनंता।
रीति समाज राज संग चालहिं। जाति बजारनरनि अलबालहिं[3]॥ १९ ॥
हुतो बेनवा एक फकीर। तिन पिखि सतिगुरसुत संग भीर।
हेरति बोल्यो ऊच अवाज। 'करामात साहिब सुनि आज॥ २० ॥
शाहुनशाह कछु दिलवावहु। श्री सतिगुर नंदन! जसु पावहु।
नहीं आप के अपर समान। हमहिं खराइत, देहु महान॥ २१ ॥
सुनि श्री रामराइ जसु काने। शाहुन शाहु महान बखाने।
जे अवरंग ते कंकन लए। कर निकासि बेनव को दए॥ २२ ॥
बहु मोले गन लाइसि हीरा। चमतकार कोरन करि चीरा।
शाहु लुभायो हेरति जोइ। जाचे दए बेनवे सोइ॥ २३ ॥
लाखहुं धन खर्चयो जिह कारन। पठे शाह करि है कर धारन।
रहि लुभाइ दे सकहि न कोइ। जाचे दए बेनवे सोइ॥ २४ ॥
जाचति सुन्यो तुरक गन तहां। मिलि मिलि कहहिं जरहिं दुख महां।
'देखहु करति बधीकी बात। शाहनशाहु कहाइ बख्यात॥ २५ ॥
नौरंग ते जो कंकन लीने। अलप जानि बेनव को दीने।
नहीं त्रास कुछ मन महिं ठाना। बध्यो बिसाल रिदे गरबाना॥ २६ ॥

---

1. दीवाली। 2. सेवक। 3. आदमियों द्वारा घिरे हुए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शाहुनशाहि कहावहि जैसे। नहिं चवगत्ता को सुध ऐसे।
अबि हम चलहिं सुनावहिं शाहू। सुनहि, उपवहि रिस उर मांहू'॥ २७॥
इम्र काजी उलमाउ मुलाने। हुइ इकट्ठे ढिग शाह बखाने।
मिलि करि सभिनि सुनावनि कीनसि। 'रावर कटक' जराऊ दीनसि॥ २८॥
आप कहायहु शाहिन शाहू। दिए निकासि बेनवे पाहू।
नहिं रावर को त्रास करंता। तुम ते अधिक आप जानंता॥ २९॥
इत्यादिक दूती बहु करी। जिस ते शाहु रिदै रिस[1] भरी।
जबहि कचहिरी शाहु लगाई। आइ सभासद भे समुदाई॥ ३०॥
गुर नंदन तबि चलि करि आवा। सभा प्रवेश्यो बैठि सुहावा।
कितिक बार पीछे कहि शाहू। 'कंकन आज नहीं तुम पाहू॥ ३१॥
किस कारन करि कर नहिं पाए? छूछे आज सभा महिं आए।
सुनि गुर नंदन बचन उचाचा। 'हमे बेनवे ने मग जाचा॥ ३२॥
तिस कहु दोनहुं दे करि आए। भयो आप को जसु अधिकाए।
ले करि बहु प्रसंन मन होवा। अदभुत सभिनि पदारथ जोवा'॥ ३३॥
रिस करि कुछ नौरंग उचारा। 'कंकन जोरी मोल उदारा।
जागति जोति जवाहर जांहु। मैं हित करि दीने तुम पाहू॥ ३४॥
लेकरि अपर थान सो दीनि। मोहि त्रास नहि रंचक कीनि।
अबि कंकन सोई मुझ देहु। मंगवावहु नहिं बिलम करेहु॥ ३५॥
उचित पहिरबे कर बर मेरे। नांहि त रहति हाथ महिं तेरे।
अपरन की लाइक सो नांही। वसतु अमोलक नहिं किस पाही'॥ ३६॥
सुनि श्री रामराइ ने भाखा। 'अबि तिन की क्या करहु भिलाखा।
जाचति दीनि दए करि दान। पुन किम लेहुं आपने पान॥ ३७॥
अपर जि हांति, देति भी फेर। लिए बेनवे क्रूर बडेर।
जाचे तिस ते हाथ न आवहिं। बल ते छीनहि तऊ न पावहि॥ ३८॥
यांते रिदे बिसारहु सोइ। नहिं अबि लोभहु उचित न कोइ'।
पुनहि शाहु ने कह्यो सुनाई। 'इम मेरे मन महिं नहिं आइ॥ ३९॥
मोहि सभा महिं कंकन सोई। तुम पहिरहु कै मुझ ढिग होइ।
अबि मंगवाइ देहु मुझ तांई। जिम जानहु तिम रचहु उपाई॥ ४०॥
तिन बिन मोहि प्रसंनता नांही। वसतु अमोल रंक के पाही।
अनिक बात किम कहउ कहावउ। सो कंकन बिन बिलम मंगावउ'॥ ४१॥

---

1. गुस्सा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इम रुख लखि करि नौरंग केरा। गुरसुत अज़मत करि तिस बेरा।
जिह सथान कंकन शुभ धरे। बहुत जतन ते गुपती करे॥ ४२॥
इक दुइ राखे तिस थल रहैं। मणि की सम पंनग नित लहैं।
गुरसुत ने तहिं ते निकसाए। आगे धरि करि शाहु दिखाए॥ ४३॥
बैठे तहां मंगावनि करे। पिखे शाहु कुछ समता धरे।
तजी बिखमता बोलति जैसे। तऊ लग्यो बूझति कहि ऐसे॥ ४४॥
'क्यो तुम शाहुनशाहु कहावउ ?। सुनि सुनि, दरब देहु हरखावउ।
किस प्रकार तुम शाहिनशाहू ?। इह उत्तर दीजै मुझ पाहू'॥ ४५॥
तबि श्री रामराइ ने कह्यो। इस को अरथ नहीं तुम लह्यो।
निकस्यो साहु आइ कै नांही। अस निमचा हमरे मन मांही॥ ४६॥
यांते 'साहु न साहु' कहंते। इस बिधि हमरो मतो लखंते।
कवि संतोख सिंह रुख लखि शाहु। गए सकल निज डेरनि मांहु॥ ४७॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे **'श्री रामराइ'** प्रसंग बरननं नाम खषटपंचासती अंशु॥ ५६॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५७

## श्री रामराइ प्रसंग

दोहरा

पुन इक दिन गमने सभा नंदन श्री हरिराइ ।
उमरावनि महिं शाहु ढिग बैठ्यो ऊची थाइं ॥ १ ॥

चौपई

पूरब दषटनि शाहु सिखायो । 'श्री नानक निज शबद बनायो ।
तिस महिं कर्‌यो तुरक मति खंडन । हिंदुनि मति को कीनसि मंडन ॥ २ ॥
प्रिथी बिखै जु तुरक दफनावैं । सो भी जरहिं अगनि दिपतावैं ।
बूझहु रामराइ के आए । क्या उत्तर इस कहु बतलाए ॥ ३ ॥
इत्यादिक कहि शाहु सिखायो । जबि श्री रामराइ चलि आयो ।
अपर प्रसंग अनेक चलाए । जे उलमाउ तहां समुदाए ॥ ४ ॥
जुकति उकति करि मति चतुराई । शाहु सुनावहिं हरख उपाई ।
चले प्रसंग बूझनो चह्यो । 'श्री नानक जी इह क्या कह्यो ॥ ५ ॥

श्री मुखवाक

मिट्टी मुसलमान की पेड़ै पई कुमिआर ।
घड़ि भांडे इटा कीआं जलदी करे पुकार ।
जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर ।
नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥ २ ॥

चौपई

करहु माइना सभिनि सुनाई । इह क्या कह्यो देहु समुझाइ ?' ।
सुनि श्री रामराइ मन जाना । गन दोखी सिखराइ महाना ॥ ६ ॥
कहैं वासतव अरथ जि अबै । दोखी तरक बधावहिं सबै ।
जिस ते शाहु फरक उर पावै । तिम इह दुषट कुबाद[1] उठावैं ॥ ७ ॥

1. झगड़ा ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शर्हा बिखै मन बंध्यो शाहू। ठानहि द्वैष अधिक मन मांहू।
बनी बात मेरी बिगरै है। बहुर किसू बिधि नहिं सुधरै है ॥ ८ ॥
करति रहे नितप्रति दुशटाई। मैं अजमत के जोर बचाई।
मुझ को धन लाखहुं इह देति। बिगर जाइ पुन रहै न हेत ॥ ९ ॥
इत्यादिक उर बहुत बिचारे। पद के अच्छर अपर[1] उचारे।
'मिट्टी बेइमान की कही। सकल तुरक की इह गति नहीं ॥ १० ॥
बेइमान की निंद्या सारे। विच कुरान भी कह्यो तुमारे।
क्या संसै होयहु इस मही। बेइमान की दुरगति कही ॥ ११ ॥
सभि गुन मूल धरम है एक। होति धरम ते रिदै बिबेक।
सथित जगत को धरम रखंता। धरम सदा सुख को उपजंता ॥ १२ ॥
हमरे तुमरे सकल स्थान। निंदति हैं जिन तज्यो इमान।
सभि को मतो एक विधि कहैं। ज्यों क्यों धरम भले निरबहैं ॥ १३ ॥
धरम रूप है खेत बिसाला। सति संतोख बीज सभि काला।
समता, सुचता, मुदता, खिमा। शरधा, दया करति इन जमां ॥ १४ ॥
प्रानी जीवहि जग महिं जावद। रच्छ्या धरम करति है तावद।
त्यागै प्रान म्रितक जबि कोइ। चलहि बडे मग एकल होइ ॥ १५ ॥
तबहि सहाइक धरम अशोक। सभि सुख देति बीच परलोक।
यांते शुभ इमान सभि ही को। तजहि न कबहूं चहि सुख जी को ॥ १६ ॥
बेइमान दुख दोनहुं लोक। बेइमान के सद ही शोक।
बेइमान दोज़क महिं जाइ। बेइमान की गोर[2] जलाइ ॥ १७ ॥
इत्यादिक गुरसुत ने कह्यो। शाहु कुशामद को चित चह्यो।
आपने बल की सुध बिसराई। सतिगुर गिरा[3] दीनि उलटाई ॥ १८ ॥
अदब न समझ्यो पहिले गुर को। खोटो कर्यो मनोरथ उर को।
गंढ[4] शाहु सों मेरो रहै। लाखहुं दरब देति नित अहै ॥ १९ ॥
तिस दिन ते टूट्यो गुर दिशि ते। करे खुशामत पलट्यो जिस ते।
अपर प्रसंग अनेक चले हैं। उत्तर सभि को दिये भले हैं ॥ २० ॥
सभा उठी पुन आयहु डेरे। खान पान करि हरख बडेरे।
आगे जेतिक अजमत दई। लिखि लिखि सकल पठावनि कई ॥ २१ ॥
इह बृतांत सुनि कै सिख कोई। लिखि अरदास चल्यो ले सोई।
सकल कुशल की गाथ पठाई। शाहु साथ जिम, लिख्यो तथाई ॥ २२ ॥

1. और। 2. कब्र। 3. बाणी। 4. मेल।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिल्ली ते चलिकें सिख तूरन। क्रम ते उलंघ्यो पंथ सपूरन।
कीरतिपुरि सतिगुर हरिराइ। तिन ढिग पहुंच्यो बंदे पाइ ॥ २३ ॥
सकल कुशल अरदास सुनाई। अपर हकीकत पुनहि बुझाई।
'अंतरजामी रावर सारे। बिनां कहे जानहु जुग कारे' ॥ २४ ॥
श्री हरिराइ निकटि सिख संगति। बैठे हुते निकटि करि पंगति।
सभिहिनि के सुनाइबे कारन। सिख सों सतिगुर कीनि उचारनि ॥ २५ ॥
'कहु ब्रितांत दिल्ली महि जैसा। तुरकेशुर बरतै. कहु कैसा ?।
रामराइ को मिलिबो भयो। किस प्रकार पूरब चलि गयो ॥ २६ ॥
बचन सुप्रशन कैसे कीए ?। किंम उत्तर बादी कहु दीए ?।
लेनि देनि को किम बिवहार ?। किम सनमान अमान, उचार ? ॥ २७ ॥
कितिक दिवस महि मेल करंते ?। करामात किम तिसै दिखंते ?।
किम सतिगुर वर की वडिआई। राखहि शाहु की बाद उठाई ? ॥ २८ ॥
आगै भी सुधि आवति रही। जिम बीती नर गन तिम कही।
तऊ समीपी तूं नित रहैं। अलप अधिक गति सभिहूं लहैं ॥ २९ ॥
जबि के दिल्ली नगर प्रवेशे। तबि को सभि ब्रितांत कहु तैसे।
इम सतिगुर ते सुनि सिख सोइ। करी अरदास बंदि कर दोइ ॥ ३० ॥
जबि के पुरी प्रवेशे जाइ। रहे तहां आनंद उपजाइ।
अज़मत जाचति जिप तुरकेश। पुत्र आप को दे तिम बेश ॥ ३१ ॥
दस अरु तीन हज़ार दरब दे। नितप्रति बांछति अपर सरब दे।
बध्यो समाज तुरंगम आदि। डिग सिख संगति बहु अहिलाद ॥ ३२ ॥
सिख हज़ारहुं होए आनि। अधिक प्रताप भयो तिस थान।
निकटि नुरंगे के [illegible] जाति। सनमानति कहि माधुर बात ॥ ३३ ॥
वसतु अमोलक अरपनि करै। अज़मत देखि भाउ उर धरै।
चढहि कितहुं निज साथ चढावहि। शुभ बातनि कहु रहै कहावहि ॥ ३४ ॥
ब्रिति अखर जाति है संग। गज सिवका कै चढहि तुरंग।
गुर अरजन श्री हरिगोबिंद। इन को भा जिम मान बिलंद ॥ ३५ ॥
तिसी रीति रावर के सुत को। करहि शाहु अरु राखहि हित को।
बहिलो के भाई गुरदास। इत्यादिक सिख सभि रहि पास ॥ ३६ ॥
बडी भीर नितप्रति ढिग होवै। धरहि भाव दरशन कहु जोवैं।
बहु धन धरहि उपाइन अरपहि। बर को जाचि श्राप ते डरपहि ॥ ३७ ॥
जै जैकार गुरनि को सारे। नमो करहि अरु बिनै उचारें।
जानति हो बरतै जग जिती। अजमत दीनि कहीं अबि तिती ॥ ३८ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

### कबित्त

अज को जिवाइ, बैठे कूप पर जाइ, फल मक्के ते मंगाइ, हितु बेबम बताईअै ।
पदमनी आनि, चंद दूजो असमान भयो, तोशे खाने थान करि गिनती सुनाईअै ।
केहरी अखेर को, जनम बाज पूरब को, फल देवरुख के, चिकर स्यामताईअै ।
जमना पै फिरे, ओरे हरे, मत्य करी चरे, जीह ठाक, तारे दिन, धन जीत पाईअै ॥ ३९ ॥
मरी को हटाइ, छाउ छाई पै, प्रसूत सिस, उजबक ढाहि, अलावदीन मृतु उकता ।
सुपनो बताइ, नौका जोरिकै, लुकांजनदे, धेनु को जिवाइ, दई तसबी, सु मुकता ।
खायो सो बतायो, खट रितु फल एकठै कै, आग पर बाग भा, समाधि संग जुगता ।
अस्व दरिआई, जेठ सीतल चलाई बाउ, भूमको उचाई, कहि संतोख सिंह बकता ॥ ४० ॥
पत्तरे निकासे तरे सुजनी ते बैठे पुन, पौरनि के तारे पाट सांकर छुटावने ।
आमिख सुरा को कर्यो चावर दुगध तबि, पालकी चलाई बिना नर दिखरावने ।
कंचन के कंकन मंगाइ तातकाल ढिग नौरंग को दियो हेतु रस को रखावने ।
जग बिसमायो देखि सुनि कै लुभाए बहु शाह के सढि सभा अचरज पावने[1] ॥ ४१ ॥

### चौपई

इम अजमत बहु बार दिखाई । तऊ तुरक जे बाद उठाई ।
करते रहे द्वैष बहुतेरे । फसे शर्हा महिं मूढ बडेरे ॥ ४२ ॥
करामात के ज़ोर दबाए । सभा बिखे नहिं बोलनि पाए ।
दून चऊनी बहु वडिआई । रावर के सुत नितप्रति पाई ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे **'श्री रामराइ'** प्रसंग बरननं नाम सपत पंचासति अंशु ॥ ५७ ॥

---

1. दिखाई गई करामातों की संक्षिप्त सूची है ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५८

# श्री सतिगुर हरिराइ पुत्र तिआगन प्रसंग

**दोहरा**

'काज़ी गन उलमाउ जे करति दवैख की बात ।
कई बार तरकति रहैं करि दलील वख्यात ।। १ ।।

**चौपई**

करति बाद दुइ चंद दिखाए । दिवस बिखै तारे निकसाए ।
इत्यादिक अज़मति तिन कारन । साहिबज़ादे करी दिखारनि ।। २ ।।
पुन इक दिन बहु बाद उठावा । श्री नानक को शबद अलावा ।
'मिट्टी मुसलमान की' जोइ । इसको अरथ कहो किम होइ ? ।। ३ ।।
एव शरईअनि शाहु सिखायो । सो प्रसंग बिच सभा चलायो ।
तबिही तुमरे पुत्र बिचारा । अरथ वासतव करें उचारा ।। ४ ।।
बिगरहि शाहु शर्हा मैं गाढो । हिंदुनि संग बाद जिस बाढो ।
यांते नहीं जथारथ कह्यो । रस नौरंग सों राखनि चह्यो ।। ५ ।।
अधिक दरब तिंह ते नित आवै । बड डेरे की कार चलावै ।
मान राखिबे कारन शाहू । नातुर[1] बहस परति रिस मांहू ।। ६ ।।
तौर कचहिरी को पिखि करिकै । अपर रीति सों शबद उचरिकै ।
राख्यो शाहु संग रस नीको । बोलति होति भए नहिं फीको ।। ७ ।।
मिट्टी बेइमान की अहै । सगल तुरक की नहिं गति इहै ।
पुन इमान की सतुती बखानी । इम दलील कीनसि तिन हानी ।। ८ ।।
इम सुनि श्री सतिगुर हरिराइ । सुत दिशि ते कुछ रिस मन ल्याइ ।
गुरता उचित नहीं शुभ लह्यो । 'भयो नलाइक धीर न रह्यो ।। ९ ।।
तुरकेशुर को राख्यो मान । शबद बिपरजै[2] कीनि बखानि ।
पहिले पातशाहि के बाक् । फेर सकहि को इन मति रांक ।। १० ।।
बान अमोघ तजै धनु धारी । जिम तिस को न सकहि किम टारी ।
ब्रह्म असत्र जिम सफल सदाई । जिन महिं पूरन शकति महांई ।। ११ ।।

---

1. नहीं तो । 2. उलट ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पीर मीर सिध साधिक ब्रिंद। जे अज़मत को धरति बिलंद।
तिन के बचन सभिनि सिर धरे। को अस मूढ तरक जो करे॥ १२॥
औचक[1] दंड मिलै तिस तांई। दुख ते दुख पावै सभि थांई।
चक्क्रवरति न्रिप जथा दुहाई। नहिं मानहिं जो करि दुषटाई॥ १३॥
तिस को जहां कहां गहि लेहिं। मूढ जानि तिह संकट देहिं।
तिम श्री नानक देश बिदेश। मेरु आदि गिर सथल विशेष॥ १४॥
सिंधु दीप केतिक सभि गिनीअहिं। बडे शकति जुति हुते सु जनीअहि।
जिन जिन कर्यो बाद सभि जीते। भरे गरब सों कीनसि रीते[2]॥ १५॥
है अस कौन जु तिन पद फेरे। अपनी कुशल होनि पुति हेरे।
हम नै कर्यो पठावनि जबै। न्रिभै कर्यो कहि करि बिधि सबै॥ १६॥
तेरो कह्यो निफल नहिं होइ। जो चित चहहि बनहि विधि सोइ।
शाहु खुशामद करहु न कैसे। होइ जथारथ बोलहु तैसे॥ १७॥
मिट्टी मुसलमान की जोइ। कर कुलाल के प्रापति होइ।
ईटं रु भांडे घरि घरि धरै। पुन चहुंदिशि पात्रक[3] पर जरै॥ १८॥
इस महिं असमंजस क्या जाना। जिस ते पद उलटाइ बखाना।
श्री नानक को अदब न राखा। तुरक मान हित बिप्प्रै भाखा॥ १९॥
इक तो इह असमंजन कीनि। गुरता उचित नहीं लखि लीनि।
दुतीए जबि के दिल्ली गयो। बार बार अज़मत को दयो॥ २०॥
बिन कारज ते करति रह्यो है। इस महिं इम अनुमान लह्यो है।
जाची वसतु लेति जिम कोइ। नहिं अपनी पहिचानति सोइ॥ २१॥
जितनो लाभ लीयो तिस जाइ। तितो लेति, नहिं धीर धराइ।
मुझ ढिग रहै न जानै ऐसे। खरच लेउं मैं जैसे कैसे॥ २२॥
अस पुरशनि ढिग इह पहुंचै हैं। नहिं दिखराइ, सीसकउ दैहै।
पूरब श्रीगुर अरजन भए। रुके कैद, दुख तन पर लए॥ २३॥
प्रान हान लौ सरब सहारी। महां शकति जुति धीरज धारी।
तऊ न अज़मत कितहुं दिखाई। क्रिपन दरब लौ दुलंम दुराई॥ २४॥
आगै भी गुरता अस लहैं। सिर देवहिं, धीरज धरि रहैं।
तिनके उचित देन कहु इही। करहिं दुरावनि बहु जहिं कहीं॥ २५॥
त्रितीए और सुनहु तिस बात। जिम कीनसि, सभि को बख्यात।
कीरतिपुरि ते जबि को गयो। आइ नहीं पुन देखति भयो॥ २६॥

1. अचानक ही। 2. खाली। 3. आग। 4. अनबन।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन मैं लखि जु है ढिग मेरे। मिलौं जाइ, सो लेहि न फेरे।
जित जित को गमन्यो नौरंग। गयो आप तिस मारग संग ॥ २७ ॥
करि करि कहूं कहूं बिसराम। पुन पहुंच्यो दिल्ली पुरि धाम।
उत ही बिचरहि आवति जाते। मिल्यो न क्यों हूं धन मन राते ॥ २८ ॥
बड अैश्वरज हेर करि फूला। आशै सतिगुर[1] उर ते भूला।
अबि हमरे मुख लागहि नांही। रहहु आप तुरकेशुर पाही ॥ २९ ॥
छोरहि अबि ते मेल हमारो। करि ऐश्वरज को रहो सुखारो।
दरसहि नहिं दरसावहि दरशन। करहु तुरक लछमी जु सपरशन ॥ ३० ॥
इति मुख करि इस देश न आवहु। उत ही बसि करि बैस[2] बितावहु।
अपराधी श्री नानक केर। हम सों नेर होइ किम फेर ॥ ३१ ॥
निज मन ते हम त्यागनि कर्‍यो। गुरता पद ते सो परहर्‍यो।
जिस को धुर ते बखशिश करी। तिस को हुइ प्रापति, ले जरी ॥ ३२ ॥
अजर वसतु को जो जहि जावै। तिह प्रापति हुइ, अपर न पावै।
रिदा गंभीर सधीरज होइ। खिमा आदि गुण संग्रहि जोइ ॥ ३३ ॥
सो इस को बासन[3] अति सूचा। करहि पचावनि, अति पद ऊचा।
दुगध शेरनी को जु निकारे। कंचन को बासन तिस धारे ॥ ३४ ॥
अपर पात्र को करि निज जोर। पर्‍यो देति है ततछिन फोरि।
तिम अति शुद्ध रिदा ह्वै जांही। उचित अहै, सो बहुतो नांही ॥ ३५ ॥
जरहि अजर नहिं किसहि दिखावहि। सीस हान लगि सिरर[4] पुगावहि।
निज धीरज ते चलहि न ऐसे। लगे बाउ गिर मेरु जैसे ॥ ३६ ॥
इत्यादिक सुत के लखि दोख। त्याग्यो श्री हरिराइ सरोख।
दंड बिसाल न इस ते परे। मिलिकै कबहुं न दरशन करे ॥ ३७ ॥
हुतो पुत्र बड परम सु प्यारो। देश बिदेशनि जसु बिसतारो।
ऐश्वरज पूरब ते बिरधायो। आपा तुरकनि बिखै जनायो ॥ ३८ ॥
सिख करे जहिं कहिं समुदाया। अपनो अधिक प्रताप बधाया।
बुधि बिसाल लौकिक बिवहारु। गिनौं कहा लगि गुन जु उदारु ॥ ३९ ॥
तऊ सु निशचै बीच कचाई। तन हंता[5] महिं जिस चपलाई।
सतिगुर रिदै न रंचक भायो। अतिसैता[6] महिं जिन चित लायो ॥ ४० ॥
जगत पदारथ लखि मनि नीके। जिसते पर्‍यो गुरु दिसि फीके।
तृण समान प्रिय सुत को त्यागा। फेर्‍यो शबद न आछो लागा ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे 'श्री सतिगुर हरिराइ पुत्र तिआगन' प्रसंग बरननं अषटपंचासति अंशु ॥ ५८ ॥

1. गुरु का मंतर्थ। 2. उमर। 3. बरतन 4. दृढ़ता। 5. अहं। 6. बरहुल्य।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ५९

## श्री हरिराइ सुत परखन प्रसंग

### दोहरा

पूरब भी परखे हुते दोनहुं पुत्र बिसाल।
जग गुरता के उचित को, ले सिख करहि निहाल ।। १ ।।

### चौपई

श्रोता इम सुनिकै सुख पाइ। बूझनि लगे कथा इस भाइ।
'दोनो सुत परखे तिम कहो। तुम सरवज्ञ सरब कहु लहो ।। २ ।।
को पूरा उतर्यो को छूछा ?। कहो प्रसंग सभिनि हम पूछा।
श्री गुरबखस सिंह सुनि ऐसे। कथा कहनि लगि बीती जैसे ।। ।।

### श्री गुरबखश सिंह उवाच

### चौपई

सुनहुं कथा बांछति फल दानी। श्री सतिगुर शरधा रजधानी।
जिस ते जनम मरन कटि जाइ। अबचल पदवी ब्रिखै समाइ ।। ४ ।।
एक समें सतिगुर के तीर। एक सिख्य आयहु मति धीर।
ब्रिंद संगति संग लगाए। दरशन करनि हेतु चलि आए ।। ५ ।।
अनिक उपाइन अरपनि कीनि। अघनाशन[1] चरननि चित दीनि।
बिकस्यो रिदा कमल अनुहारी। सतिगुर सूरज दरस निहारी ।। ६ ।।
श्री हरिराइ मयंक[2] मनिंद। चख चकोर भे सिख्यनि ब्रिंद।
म्रिदुल चरन सुंदर अरबिंदु। मन दासनि के थिरे मलिंद[3] ।। ७ ।।
बचन सुननि अरु दरश करनि की। बधी लालसा तिनहुं उरनि की।
केतिक दिन समीप ही रहे। नितप्रति सतिगुर दरशन लहे ।। ८ ।।
इक दिन बैठे श्री हरिराइ। निकट सिख्य गन मुद उपजाइ।
चल्यो प्रसंग सभा महिं कोई। हाथ जोरि सिख बूझति सोई ।। ९ ।।

---

1. पाप नाश करने वाला। 2 चंद्रमा। 3. भंवर।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दोनहुं सुंदर साहिबजादे। जिनहुं बिलोकति चित अहिलादं।
शुभ गुन के सपंन म्रिदु मूरति। भागनि ते पूरत शुभ सूरति ॥ १० ॥
जग गुरता के उचितै कौन ?। सरबरीति से समहैं दौन।
अजर जरन को धीरज जोइ। इक महिं होइ, कि जुग[1] महिं होइ ॥ ११ ॥
को ले सरबोतम वडिआई ?। करहु क्रिपा इहु देहु बताई।
हम विदेश ते आवहिं कबै। सुनति होइ मम द्रिढ़ता तबै ॥ १२ ॥
जदपि गोप इह राखनि चहौ। मुझ परदेशी लखिकरि कहौ।
हौं नहिं करौं कहूं बख्याती। राखौं मेल तथा मणि थाती[2] ॥ १३ ॥
हम रावर के दास कदीमी। सिमरहिं धरि शरधा सुख सीमी।
आप क्रिपाल दास रखवारे। दुखति लोक ते लेहु उबारे ॥ १४ ॥
पुत्र आप के दोइन मांही। जिह सों प्रीति ब्रिधै इम चाही।
मन महिं सिमरहिं शरधा धारहिं। बिघन बिशाल अनेकनि टारहिं ॥ १५ ॥
इम सुनि सिख ते श्री हरिराइ। कह्यो म्रिदुल मुख ते मुसकाइ।
'चित महिं चहित जु असु बिरतांत। पावहिं निशचो होति प्रभाति' ॥ १६ ॥
सुनि श्री मुख ते सीस निवायहु। समो जानि निज डेरे आयहु।
बीती रिदे बिचारति राती। सुच शनान उठि कीनसि प्राती ॥ १७ ॥
सिख्यनि बिखै मुख्य पुन गयो। बंदति चरन गुरनि के भयो।
शरधा सलिता को मन मीन। पुनह नेत्र भरि दरशन कीनि ॥ १८ ॥
पिख सतिगुर सिख की अभिलाखा। निरनै करनि बिखै अस भाखा।
द्वै साहिलज़ादे इक थानी। पठहिं ग्रंथ साहिब बर बानी ॥ १९ ॥
एक सूचका[3] निज कर लेहु। जाहु तहाँ तुम दरस करेहु।
बंदन करि बैठहु तिन तीर। बानी सुनहु पठहिं जुग बीर ॥ २० ॥

### दोहरा

श्री ग्रंथ साहिब तरे रुचिर पंघूरे जेय।
तिन पावे बिच सूचका संचरावहु कर लेय ॥ २१ ॥

### चौपई

जिस पावे बिचि संचरि जाइ। शबद पठति काषट नरमाइ।
पाहन आदि मोम सम होइ। गुरता की लाइक लखि सोइ ॥ २२ ॥
इम सुनि गुर ते सिख सुजाना। गमन्यो तहिं ते चाउ महानां।
जहिं श्री रामराइ जी बैसे। पूरब जाइ सथान प्रवेशे ॥ २३ ॥

---

1. दोनों। 2. जैसे मणि थैली में गुप्त रखी जाती है। 3. सूई।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कीनि बंदना सीस निवाइ। बैसि समीप सुनति चित लाइ।
पठहि ग्रंथ साहिब की बानी। भागति बिराग ज्ञान गुन सानी ।। २४ ।।
जबि सूची संचरावनि लागो। नहिं पावे महिं प्रविशहि आगो।
परखति केतिक चिर तहिं रह्यो। गुरता पद नहिं लाइक लह्यो ।। २५ ।।
करि बंदन को तबि उठि गयो। गुर सुत लघु ढिग पहुंचति भयो।
पठति ग्रंथ साहिब की बानी। म्रिदुल रिदा सरबज्ञ सु ज्ञानी ।। २६ ।।
सिख्य नमो करि बैठ्यो जाइ। सुनति शबद सगरे सुखदाइ।
पुन श्री ग्रंथ पंघूरो पावा। लीनि सूचका नोक चुभावा ।। २७ ।।
हुतो मोम सम, सभि गडि गई। रह्यो निकास बीच लैं भई।
तूशनि रह्यो न कछू बखाना। गुरता के लाइक पहिचाना ।। २८ ।।
शरधा धरि करि, कर जुग जोरे। निंम्रि होइ करि चरन निहोरे।
श्री हरि क्रिषन, क्रिषन अवतार। इही सहारहिं गुरता भार ।। २९ ।।
श्री हरिराइ निकटि सिख आवा। दोनहुं केर ब्रितंत बतावा।
काषट होयहु मैन[1] समाना। उचित क्रिपा तुमरी ते जाना ।। ३० ।।
जिनकै शबद बिखै अति शकति। होइ कठन मन सोभी सुधरति।
म्रिदुल रिदनि की क्या है गिनती। उधरहिं सेवक करि करि बिनती ।। ३१ ।।
निरनै करि निशचै मन ठाना। जो होवहि सतिगुरु सुजाना।
नहिं ब्रितंत बहु तिन बिदतावा। जान्यो चहि सु जानि हरखावा ।। ३२ ।।
कितिक दिवस रहि सतिगुर पास। पुन रुखसद हुइ गयो अवास[2]।
इस प्रकार परखे सुत गुर के। तिस प्रापत हुइ, भाग जु धुर के ।। ३३ ।।
श्री सतिगुर हरिराइ सुजाना। सुत त्यागनि को जबहि बखाना।
तबि ते रामराइ इत आवनि। नांहिन कीनसि मन ललचावन ।। ३४ ।।
भयो निरास पिता की दिशि ते। गुरता चहिति हुतो नित जिस ते।
रिदै बिचारति मैं सभि लाइक। भए हजारहुं सिख धनदाइक ।। ३५ ।।
सकल समाज बध्यो अधिकाइ। सैना आदिक बहुत सहाइ।
धन की कमी नहीं कुछ मेरे। अबि अरु आगे आइ घनेरे ।। ३६ ।।
तुरकेशुर संग रस[3] मैं राखा। देति मोहि को जो अभिलाखा।
इत ही दिशि मैं करौं अवास। क्या हुइ जौ न जाउं पित पास ।। ३७ ।।
सभि बिधि मैं बिसाल समरत्थ। करौं चहौं चित सभि मम हत्थ।
इक तौ सिखी बहु जग मेरी। शाहु संग रस रीति घनेरी ।। ३८ ।।

1. मोम की तरह। 2. घर। 3. मेलजोल।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आज कमी किस बात न मोही। नित प्रति सकल अधिकता होही।
इत्यादिक गिनती कहु करिकै। उत ही रह्यो पुरि महिं थिरिकै ॥ ३९ ॥
अधिक दरब नित आवहि पास। ल्याइ उपाइन संगति रास।
जिम सतिगुर के घर की रीति। तिम गुर बन्यो करति रहि नीत ॥ ४० ॥
ब्रिद मसंद मेवड़े भए। सिख्यनि ते नित धन को लए।
अज़मत ब्रिंद देखिबे करिकै। बहु संगति भी सुजसु उचरिकै ॥ ४१ ॥
गाइं रबाबी शबद हमेश। बैठहि मंजी हुइ शुभ बेश।
करति खरे अरदास अगारी। सहित प्रेम के हुइ बलिहारी ॥ ४२ ॥
इक सतिगुर सुत होवनि करिकै। गुर कहाइ अज़मत सु दिखरिकै।
अधिक समाज वध्यो सभि भांति। देश बिदेशनि भा बख्याती ॥ ४३ ॥
नौरंग निकटि रह्यो चिरकाल। पहुंचहि ढिग नित आदर नाल।
बादी दुषट बिसाल दबाए। चहैं बुरो, पर बस न बसाए ॥ ४४ ॥
जिम सूबे पतिशाही आवति। सिवका रूढ सदा तिम जावति।
कबि संतोख सिंह सतिगुर नंद। सकल समाज, बधाइ बिलंद ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे 'श्री हरिराइ सुत परखन' प्रसंग बरनन नाम एकोनसषटी अंशु ॥ ५९ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# अंशु ६०

# श्री रामराइ प्रसंग

दोहरा

पुन केतिक दिन बित गए हठ ते फिर्यो सुभाइ।
बडता पित की सिमरि उर मिलनि चाहि उपजाइ ॥ १ ॥
श्री सतिगुर निज पिता को क्रोध सुन्यो दुखपाइ।
कहां बात बिप्री[1] भई निसदिन बहु पछुताइ ॥ २ ॥

चौपई

अबि कर्त्तव्य अहै क्या मोही। रिदे बिचारति संकट होही।
जावों पित समीप इक वारी। बखशावौं कर जोरि[2] अगारी ॥ ३ ॥
इम निशचे करिकै बहुभाइ। गुरसुन रामराइ पछुताइ।
नौरंग संग कह्यो बच ऐसे। अबि रुखसद दिहु जैसे कैसे ॥ ४ ॥
शाहु न मानै कहै बनाइ। तुमरे दरशन की मुझ चाहि।
रहहु कितिक दिन इहां गुजारहु। मोहि हरख करि पुनहि पधारहु ॥ ५ ॥
चतुरपंच दिन बूझति रहे। रुखसद करनि शाहु नहिं कहे।
तबि श्री रामराइ अकुलाए। हमहिं जरूर बनहि तहिं जाए ॥ ६ ॥
इक दिन शाहु शिकार सिधायहु। बालि गूरु सुत संग रलायहु।
जहां शिकारगाह तहिं गए। जीव घात[3] हित बिचरति भए ॥ ७ ॥
तबि श्री रामराइ रिस आई। महांघटा घन की[4] घुमडाई।
अधिक वेग ते पवन चलायहु। महां धूल जुति डर उपजायहु ॥ ८ ॥
ओरनि की बरखा बड भई। लगहि दइ पर पीरा दई।
अवरंग कहूं महिद अकुलावा। लशकर भग्यो महां दुख पावा ॥ ९ ॥
नहीं शाहि कित पाइव ठौर। पवन धूल ओरनि ते बौर।
जहिं श्री रामराइ थिर रहे। तहिं नहिं ओरा, पवन न बहे ॥ १० ॥

---

1. उलटी। 2. हाथ जोड़ कर। 3. जानवर मारने के लिए। 4. बादलों की घटा।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कितिक काल लौ इत उत फिरिकै। आवति भा समीप सुत गुर कै।
देखि शाहु ने रिदे बिचारा। इनहुं क्रोध कुछ मो पर धारा ॥ ११ ॥
रुखसद मांगति मैं नहिं दीनि। यांते मम ऐसी गति कीनि।
नंम्रि होइ करि बाक् बखाना। 'शौक दरस को मोहि महाना ॥ १२ ॥
यांते मैं रुखसद नहिं करे। अबि तिम करहु जथा उर धरे।
पुन तूरन ही दरशन दीजै। अपने सदन बिखैं गमनीजै ॥ १३ ॥
तबि श्री रामराइ मुसकाने। तुव मन बहु हंकार को ठाने।
जिस सैना ते लखैं वडेरे। सो अबि कहां, न दीखति नेरे ॥ १४ ॥
यांते सभि खुदाइ के हाथ। कहां होइ धन दल बल साथ।
अबि हम पित सतिगुर ढिग जावैं। दरशन देखहिं सीस निवावैं ॥ १५ ॥
दाता सास गिरास हमारो। सरब भांति समरथ गुर भारो।
पुरि दिल्ली महिं तबि चलि आए। शाहु पदारथ बहु अरपाए ॥ १६ ॥
जो बहु मोले बसत्र अभरन[1]। दिए शाहु हित रुखसद करनि।
दरब तुरंगम ब्रिंद पठाए। गुर नंदन डेरे कहु आए ॥ १७ ॥
रिदा उदास बहुत जिन केरा। हरख न करहि कबहुं तिस बेरा।
सकल समाज तहां ही छोरा। ले करि संग आपने थोरा ॥ १८ ॥

दिल्ली पुर निज सिख्य टिकाए। राख्यो सभि समाज समुदाए।
अलप नरनि सों कीनसि प्याना। चलति बिसूरति रिदे महाना ॥ १९ ॥
मारग आवति कीरति पुरिके। रिदे बिचारति चरित जि गुर के।
क्रम ते कर्यो उलघनि सारो। द्वादश कोस पंथ रहि सारो ॥ २० ॥
डेरा कर्यो टिकावनि तहीं। गुरबच को चितव्यो चित महीं।
मुख न दिखावो अपुनो जाइ। यांते नहिं गमन्यो अगुवाइ ॥ २१ ॥

रिदै बिखे गिनि गिनि बहु गिनती। लिखी पत्रिका निज करि बिनती।
रावर की आज्ञा जिम होइ। करी जाइ सभि हू ते सोइ ॥ २२ ॥
बिन मरजी मैं निकट न आयो। दरशन को हियरा[2] ललचायो।
जिम आइसु अबि तैसे करौं। अपनो दोष आप ही भरौं ॥ २३ ॥
इत्यादिक लिखि पत्र पठाई। श्री सतिगुर के ढिग पहुंचाई।
देखति श्री हरिराइ सुजाना। सुत को सरब ब्रितांत पछाना ॥ २४ ॥
कह्यो तांहि जो पत्री ल्यायो। 'हम मिलिबे किम चित ललचायो ?।
हुकम अदूली करि अपराधू। कैसे बनयो चहै अबि साधू ? ॥ २५ ॥

1. गहने। 2. हृदय।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गमन समैं हम बहु समझायो। सिख्य नहीं नैकु मन ल्यायो।
इक तौ बार बार करि अज़मत। बिनां प्रयोजन ठानि जित कित ॥ २६ ॥
तुरकेशुर सों सूत रखैबे। करि मुलाहज़ा कीनि फरेबे।
श्री नानक पति चौदहिं लोक। तिन को आशै बीच शलोक ॥ २७ ॥
सो छिपाइ कै अनत सुनायो। हुतो अपर तिस अपर[1] बुझायो।
कहां त्रास तुरकेशु केरा। जिसको मान्यो जानि वडेरा ॥ २८ ॥
सदा सहाइक हम तिस केरे। चहैं सु करति न लागति देरे।
माटी तुरकनि की जिम जलै। बीच पजावे[2] आवैं बलैं ॥ २९ ॥
अज़मत बल ते तिस अगवाई। माटी जलती क्यों न दिखाई।
हुती वासतव दिखति बिदति है। बास न तनक जि तुरक जिदति है ॥ ३० ॥
यांते हमैं न दरस दिखावहु। जित दिशि मुख तित ही चलि जावहु।
सतिगुर की रिस जुति सुनि बानी। हट्यो सु सिख जिस पत्री आनी ॥ ३१ ॥
तुरत गमन करि तहिं ते आयहु। जहिं श्री रामराइ उतरायहु।
खरे हुते तबि सहिज सुभाइ। चित महिं चिंता बहु उपजाइ ॥ ३२ ॥
श्री सतिगुर सरबस गुन खानी। पिता धीर क्या करहिं बखानी।
बखशहिं मोहि कि नहिं अपराधू। लखि न सक्यो मैं रिदा। अगाधू ॥ ३३ ॥
इतने महिं सिख सो चलि आयो। गुर को कहिबो सकल सुनायो।
'जित दिशि सुख तित ही चलि जावहु। म ढिग आइ न दरस दिखावहु ॥ ३४ ॥
सुन्यो पिता को अस जबि मतो[3]। लवपुरि[4] दिशि तबि तिस मुख हुतो।
हाथ जोरि धर पर धरि माथा। मान्यो हुकम प्रेम के साथ ॥ ३५ ॥
भयो अरुढि ठानि करि त्यारी। गमन्यो लवपुरि पंथ मझारी।
सनै सनै डेरा करि जाति। अपनी खोट को लखि पछुतात ॥ ३६ ॥
सुनी सरब सुध श्री हरिराइ। 'हुकम मानि लवपुरि को जाइ'।
लिख्यो हुकमनामा तिस काला। सिख संगति तहिं रहै बिसाल ॥ ३७ ॥
तिन पर हुकम सु अस फुरमाइव। 'सिख हमारो जौन कहाइव।
पैसा कौडी अंस जु गुरकी। अपरहि गन शरधा धरि उरकी ॥ ३८ ॥
पुरि महिं रामराइ जब आवहि। नहीं कार[5] कोइस अरपावहि।
कासद ले गुर को जबि गयो। सुनि करि सभिनि अचंभा भयो ॥ ३९ ॥
गुर चरित्र कछु लख्यो न जाई। प्यारे सुत की पूज हटाई।
लाइक के अज़मत महिं भारे। होति तथा मुख जथा उचारे ॥ ४० ॥

---

1. और का और। 2. आवा। 3. विचार। 4. लाहौर। 5. भेट।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सतिगुर अंस अहैं अवतारा। सिखसंगति इम भए हजारा।
जे हम दरस करनि नहिं जावैं। करे कोप को मारि मिटावैं॥ ४१ ॥
छूछे मिलें जाइ करि कैसे। उत गुर बाक भयंकर तैसे।
बनी कठन, को करहिं उपाई ?। मिलि संगति इकठी समुदाई॥ ४२ ॥
गटी गिनति बहु करैं बिचारनि। किम दुइ दिशि ते होइ उबारनि।
कितिक समें महिं इम ठहिराई। उबरहिं दुहिदिशि एव उपाई॥ ४३ ॥
पैसा कौडी गुरु उचारा। नहिं को सिख दे अंस हमारा।
कंचन रजत[1] बचन महिं नांही। सो ले चलहु गुरु सुत पाही॥ ४४ ॥
कौडी पैसा दोनहुं छोरि। मुहर रजतपण[2] करि इक ठोर।
उतरे रामराइ जिस थान। तबि गमने ले भेट महांन॥ ४५ ॥
करि करि बंदन निज करि बंदे। लहि दरशन को रिदे अनंदे।
यहि ब्रितंत सतिगुर जी सुन्यो। बिगसे बहुत, बदन ते भन्यो॥ ४६ ॥
लवपुरि की संगति समुदाई। मान्यो बाक न, कीनि खुटाई।
ठानि कपट की जुगति महाना। बरजे रहे न मोकहु जाना॥ ४७ ॥
इह अंतरि ते खोटे रहैं। मुख ते मिशट गिरा[3] को कहैं।
गुर बच माने सिख ह्वै सोई। इन की मति ले कबहुं न कोई'॥ ४८ ॥
इम कहि सतिगुर तूशन भए। प्यारो पुत्र त्याग ही दए।
अपनि समीप न आवनि दीनि। पिख्यो दोष जो कीनसि पीन॥ ४९ ॥
नवमि रासि पूरन अबि भई। श्री हरिराइ कथा रसमई।
जेतिक सुनी लिखी पठि सारी। सार कथ्यो गुरु कीरति भारी॥ ५० ॥
पापनि पुंज पलावनि हारी। जिम सुरसरी बिमल बर बारी[4]।
श्री सतिगुर के चरन मनाइ। पूरन रास करी सुखदाइ॥ ५१ ॥
कवि संतोख सिंह गहि गुरशरनी। मति अनुसार कथा बर बरनी।
गुर जसु पावन करता कह्यो। है बिअंत पर जेतिक लह्यो॥ ५२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ नवमि रासे 'श्री रामराइ' प्रसंग बरननं नाम कवि संतोख सिंह बिरचतायां भाखायां नवमि रास संपूरनमसत् शुभमसतु नाम षष्टी अंशु ॥ ६० ॥

**नवम रासि समापति होई।**

---

१. सोना चांदी। 2. रुपया। 3. मीठी बात। 4. जैसे गंगा का निरमल जल।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

# संज्ञा-कोष

**उसमान खां** — गुरु हरि गोबिंद की सेना के सेनापति पैंदे खां का यह जामाता था। इसने गुरु हरि गोबिंद जी के सुपुत्र बाबा गुरुदित्ता का बाज़ चुरा लिया था। इसी कारण करतारपुर में युद्ध हुआ, जिसमें यह मारा गया।

**औरंगज़ेब** — मुग़ल बादशाह शाहजहाँ का बेटा जो अपने पिता को कैद करके 1658 ई० में दिल्ली के तख्त पर बैठा और 91 वर्ष की आयु में दक्षिण के अहमद नगर में 1707 ई० में देहान्त हुआ। औरंगज़ेब इस्लाम के अतिरिक्त किसी धर्म को जीवित नहीं देखना चाहता था। इसलिए उसने हिन्दुओं पर घोर अत्याचार किए और लाखों लोगों को जबरदस्ती मुसलमान बनाया। सिख लहर को यह बुरी नज़र से देखता था, इसलिए उसने गुरु तेग बहादुर को दिल्ली में प्राणदंड दिया तथा गुरु गोबिंद सिंह से घोर युद्ध किए परन्तु यह उन पर नियंत्रण करने में सफल न हुआ।

**शमस बेग** — गुरु हरि गोबिंद पर चढ़ाई करके आने वाले मुग़ल सेनापति मुख़लस का एक सरदार जो अमृतसर के युद्ध में (1685 वि) लड़ा था।

**सरमद** — एक ईरानी सूफ़ी फकीर, जो दिल्ली में रहता था और दाराशकोह से मित्रता रखता था। जब औरंगज़ेब गद्दी पर बैठा, उसने इस पर शरिअत के विरुद्ध बातें करने का इल्ज़ाम लगा कर इसे 1661 ई० में कत्ल कर दिया। यह बड़ा अच्छा शायर था, इसका 'दीवान' मिलता है।

**साईंदास** — ज़िला फ़िरोज़पुर के एक गाँव डरोली का रहने वाला एक सिख, जो गुरु हरिगोबिंद का साढु था। इसकी धर्मपत्नी रामो, षष्ठमगुरु हरिगोबिंद की पत्नी दमोदरी, की बहिन थी।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

**शाहजहां** — मुग़ल बादशाह जहाँगीर का बेटा जो 1628 ई० में दिल्ली के तख्त पर बैठा। इसे इमारतें बनाने का खास शौक था। ताज महल इसी के शौक तथा योजना का नतीजा है। इसके पुत्र औरंगज़ेब ने इसे 1658 ई० में कैद करके आगरे के किले में नज़रबंद कर दिया तथा वहाँ ही 1666 ई० में इसका प्राणांत हुआ।

**साधु** — गुरु हरिगोबिंद जी के प्रेमी सिख भाई रूपे का पिता। साधु के पिता का नाम सादा था।

**सिरीचन्द** — गुरु नानक साहब के बड़े पुत्र (1551—1591 वि०) जो आयु भर अतीत वैराग्यवान् रहे। इन्होंने शादी नहीं की। उदासी साधु इनका विशेष आदर करते हैं।

**श्री हरिगोबिन्दपुर** — ज़िला गुरदासपुर का एक गाँव जो गुरु अर्जुन देव जी ने आबाद किया था परन्तु पीछे इस पर भगवान दास घेरड़ ने कब्जा जमा लिया। गुरु हरिगोबिंद साहब ने युद्ध करके पुन. इसे वापिस लिया।

**सुन्दरशाह** — गुरु हरिगोबिंद का प्रेमी सिख जो कि बिधीचन्द से विशेष स्नेह रखता था। कीर्तपुर में रहने वाले साईं बुड्ढनशाह का भी श्रद्धालु था। इसका देहांत देउ नगर में हुआ।

**सरजमल्ल** — गुरु हरिगोबिंद का पुत्र जिसका जन्म माता महादेवी के उदर से 1674 वि० में अमृतसर में हुआ। इसकी संतान आनन्दपुर वासी सोढी हैं।

**करतारपुर** — ज़िला जालंधर का एक नगर जिसे गुरु अर्जुन ने 1593 ई० में आबाद किया। 1634 ई० में यहाँ ही गुरु हरिगोबिंद साहब का पैंदे खां से युद्ध हुआ। इसके पश्चात् गुरु साहब कीर्तपुर चले गए थे।

**करीम बख्श** — बादशाह शाहजहाँ की सेना का एक पदाधिकारी, जो कि श्री हरि गोबिंद पुर के युद्ध में 1630 ई० में, भाई बिधि चन्द के हाथों मारा गया था।

**कंबर बेग** — बादशाह शाहजहाँ की सेना का एक सरदार जो 1631 ई० में गुरुसर मराझ की जंग में राइ जोध की बरछी से मारा गया था।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

| | |
|---|---|
| कासम बेग | बादशाह शाहजहाँ के सेनापति लल्ला बेग का बेटा जो 1631 ई० में गुरुसर मराझ की जंग में भाई लखु की बरछी से हताहत हुआ था। |
| काबली बेग | बादशाह शाहजहाँ की सेना का एक अधिकारी जो 1631 ई० में गुरुसर मराझ की जंग में मारा गया। |
| काले खां | बादशाह शाहजहाँ का एक हाकिम जो गुरु हरिगोबिंद को पकड़ने हेतु आया था लेकिन उनके हाथों मारा गया। |
| कीतंपुर | ज़िला रोपड़ में एक पुराना नगर जिसको गुरु हरिगोबिंद साहब ने 1673 वि० में आबाद किया। बाबा गुरदित्ता इसका निर्माण कराते रहे, युद्धों के पश्चात् गुरु साहिब स्वयं यहां आ गए और यहाँ ही जोती जोति समाए। इनके उपरांत गुरु हरिराय तथा गुरु हरिकृष्ण भी यहाँ ही निवास रखते रहे। |
| कुतबख़ान | बादशाह शाहजहाँ के समय यह जालन्धर का हाकिम था जो पैंदे खां के चचा का बेटा था। इसने पैंदा खां को गुरु हरिगोबिंद पर चढ़ाई करने के लिए भड़काया और स्वयं रणभूमि में मारा गया। |
| खडूर | ज़िला अमृतसर का एक छोटा नगर। यहाँ द्वितीय गुरु अंगद रहा करते थे। |
| खोजा अनवर | शाहजहाँ का एक सेनाधिकारी। |
| गढिया | गुरु हरिगोबिंद का प्रेमी सिख जो कश्मीर में धर्म प्रचार किया करता था। |
| गुरदास (भाई) | एक सुविख्यात सिख विद्वान् जो कि गुरु अर्जन देव जी का मामा था, इसने गुरु रामदास, गुरु अर्जन देव तथा गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय धर्म-प्रचार किया। इसकी पंजाबी रचना 40 वारें तथा हिन्दी रचना 556 कवित्त सवैये प्रसिद्ध हैं। आदि-ग्रंथ के सम्पादन में इसने महत्त्वपूर्ण योग दान दिया था। |
| गुरदित्ता (बाबा) | गुरु हरिगोबिंद साहब के ज्येष्ठ पुत्र जिनका जन्म 1670 वि० में माता दमोदरी के उदर से गाँव भाई की डरोली (जि० फिरोज़पुर) में हुआ तथा देहांत 1695 वि० में कीर्तपुर में। वैराग्यमय वृत्ति के कारण इन्हें पहले से ही 'बाबा' कहा जाता था। |

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

| | |
|---|---|
| गोइंदवाल | ज़िला अमृतसर का एक नगर जिसे गुरु अमरदास जी ने व्यास दरिया के किनारे आबाद किया। |
| जाती मलक | गुरु हरिगोबिंद साहब का एक प्रेमी सिख जो ब्राह्मण जाति में से था। इसने अमृतसर के युद्ध में अच्छी शूरबीरता दिखाई। इसका सुपुत्र दयाराम भी महान् योद्धा था। जाती मलक का देहान्त 1699 वि० में कीर्तपुर हुआ। |
| जैठा | गुरु हरि गोबिंद का बहादुर सिख जो कि गुरुसर मराझ के युद्ध में शत्रुओं को हनन् करता हुआ आप भी शहीद हो गया। |
| जोधराइ | कांगड़ा का सरदार जो कि अपनी स्त्री की प्रेरणा से गुरु हरि-गोबिन्द का सिख बना। यह धालीवाल गोत्र का तथा चौधरी महर मिठा के वंश से था। गुरसर मराझ की जंग में इसने गुरु हरिगोबिन्द साहब की यथायोग्य सहायता की थी। इसी के पौत्र शमीर तथा लखमीर थे जिन्होंने गुरु गोबिन्द सिंह की सेवा की। |
| डरोली | ज़िला फिरोज़पुर का एक गाँव जहाँ गुरु हरिगोबिन्द साहब का साढु भाई साईं दास. निवास रखता था। गुरु साहब उसे मिलने के लिए कई बार यहाँ आए। बाबा गुरुदित्ता का जन्म इसी जगह हुआ। भाई रूपचन्द के हाथ से शीतल जल गुरु साहब ने यहाँ ही पान किया था। |
| ताराचन्द | गुरु हरिगोबिन्द साहब का मसंद जो अफ़गानिस्तान की ओर धर्म प्रचार करता था। |
| ताराचन्द (राजा) | शिवालिक पहाड़ियों में कहलूर का राजा जो गुरु हरिगोबिन्द साहब में श्रद्धा रखता था। |
| दमोदरी | गुरु हरिगोबिन्द साहब की महिला जो कि डल्ला निवासी भाई नारायण दास की सुपुत्री थी। 1661 वि० में इसकी शादी हुई और 168↿ वि० में गाँव डरोली में देहान्त हुआ। |
| दाराशकोह | मुगल बादशाद शाहजहाँ का बड़ा पुत्र जिसका जन्म 20 मार्च, 1651 ई० को हुआ और जिसे इसके छोटे भाई औरंगज़ेब ने 30 अगस्त, 1659 ई० को कत्ल करा दिया। यह सूफी विचारों का धारणी था, इसने 50 उपनिषदों को फारसी में अनूदित करवाया। गुरु हरिराइ इस से प्रेम रखते थे। जब इसे |

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भागना पड़ा तो गुरु हरिराइ जी ने अपनी सुरक्षा-सेना, ब्यास दरिया पास खड़ी कर शाही लशकार की मार से इसे बचाया।

**दौलाशाह** गुजरात (पंजाब) का रहने वाला एक फकीर जो गुरु हरिगोबिन्द का प्रेमी था। भाई गाड़या भी इस फकीर से विशेष स्नेह रखता था।

**धीरमल** बाबा गुरदित्ता का पुत्र तथा गुरु हरिगोबिन्द जी का पौत्र, गुरु बनना चाहता था परन्तु बन नहीं सका। इसलिए अयोग्य ढंग से गुरु गद्दी चलाने का यत्न करता रहा परन्तु सफल नहीं हुआ। अन्त औरंगज़ेब ने इसे रणथम्भौर के किले में नज़रबन्द करके मरवा दिया।

**नानकी** गुरु हरिगोबिन्द साहब की धर्म पत्नी जो कि बकाला निवासी हरिचन्द की बेटी थी। 1670 वि० में इसकी शादी हुई और इसी के उदर से गुरु तेग बहादुर का जन्म हुआ। माता नानकी का देहान्त 1735 वि० में कीर्तपुर हुआ।

**फेरू** एक सुप्रसिद्ध सिख जो कि गुरु हरिराइ साहब का प्रेमी था। पीछे यह मसंद बन कर काम चलाता रहा। इसकी उपाधि 'संगत साहब' थी। उदासी साधु इसका विशेष आदर करते हैं।

**बख्तमल्ल** गुरु हरिगोबिन्द का एक मसंद, जो अफ़गानिस्तान की ओर धर्म-प्रचार का कार्य करता था।

**बाबक** गुरु हरिगोबिन्द साहब का रबाबी जो वीर योद्धा भी था। इसका देहान्त 1699 वि० में कीर्तपुर में हुआ।

**बालू हसना** गुरु हरिगोबिन्द का एक त्यागी वैरागी सिख जिसका जन्म श्रीनगर (काश्मीर) में हुआ। यह पीछे बाबा गुरदित्ता के साथ रहने लगा और उदासी साधुओं का प्रतिष्ठित पुरुष बन गया। इसका देहान्त देहरादून में 1717 वि० में हुआ।

**बिधीचंद** गुरु हरिगोबिन्द का एक वीर सिख जो कि गाँव सुर सिंह जिला लाहौर का रहने वाला था। इसने लाहौर के किले में से घोड़े निकाल कर गुरु साहब की सेवा में प्रस्तुत किए थे, जो मुगल अहलकारों ने सिखों से बलात् छीन लिए थे।

**बुड्ढणशाह** एक मुस्लिम फकीर जो कि कीर्तपुर के पास रहता था। बाबा गुरदित्ता से इसका अधिक प्रेम था और यह गुरु हरिगोबिन्द साहब का विशेष आदर करता था। गुरु साहब भी इस

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

| | |
|---|---|
| | बुजुर्ग से स्नेह रखते थे, इसकी समाधि कीर्तपुर के बाहर बनी हुई है। |
| भगत भगवान | गुरु हरिराइ साहब का एक सिख, जो पीछे उदासी साधुओं में अधिक माननीय हुआ। |
| भगवान दास | इसने हरिगोबिन्दपुर गाँव पर कब्ज़ा कर लिया था लेकिन गुरु हरिगोबिन्द के सिख सेनानियों ने इसे रणभूमि में मार डाला और गाँव पुन: अपने नियन्त्रण में ले लिया। |
| भगतू | गुरु अरजन साहब का एक सिख, जो गुरु हरिराइ के समय पर्यन्त जीवित रहा। |
| महादेवी मरवाही | गुरु हरि गोविन्द साहब की धर्मपत्नी जो मंडियाली निवासी भाई दयाराम मरवाहा की पुत्री थी। इसकी शादी गुरु जी से 1672 वि० में हुई, देहान्त 1702 वि० में कीर्तपुर में हुआ। इसका असली नाम महादेवी था लेकिन गोत्र नाम से मरवाही अधिक प्रसिद्ध था। |
| मिरज़ा बेग | बादशाह शाहजहाँ की सेना का एक पदाधिकारी जो मुखलस खां से मिल कर अमृतसर की जंग में गुरु हरिगोबिन्द जी से लड़ा था। |
| रामराय | गुरु हरिराय के बड़े पुत्र जिनका जन्म 1703 वि० में कीर्तपुर में हुआ। जब औरंगज़ेब ने गुरु जी को दिल्ली बुलाया तो आपने रामराय को वहाँ भेजा। रामराय ने बादशाह को अद्भुत करामातें दिखला कर प्रसन्न कर लिया। एक दिन काज़ियों ने पूछा, गुरु नानक ने 'मिट्टी मुसलमान की' क्यों लिखा है तो रामराय ने बताया, पाठ 'मिट्टी बेईमान की' है। जब गुरु जी ने यह बात सुनी उन्हें बहुत रोष हुआ और कहा, 'हमारे माथे मत लगना'। क्योंकि तुमने गुरु नानक का वाक्य बदल डाला है। रामराय देहरादून चला गया और वहाँ ही उसका 1744 वि० में देहान्त हुआ। |
| रामो | गुरु हरिगोबिन्द की धर्मपत्नी दमोदरी की बड़ी बहन जो डरोली में साईंदास के साथ ब्याही हुई थी। |
| लल्ला बेग | बादशाह शाहजहाँ का एक फौजी सरदार जो गुरु सर मराझ के मैदान में गुरु हरिगोबिन्द के साथ युद्ध करने हेतु गया और वहाँ मारा गया। |

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha